भूमिका

'व्याकरण-दर्शिका' का पूर्णतः संशोधित *नवीन संस्करण आप लोगों के समक्ष है। 'व्याकरण-दर्शिका'* व्यावहारिक व्याकरण का संकलन है। इसकी रचना केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा सेकेंडरी स्कूल परीक्षा के निर्धारित पाठ्यक्रम 'बी' पर आधारित है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें हर अंश को पाठ्यक्रम 'बी' के अनुसार, अहिंदी भाषी विद्यार्थियों के लिए सरल और सुग्राह्य बनाने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक पाठ्यक्रम 'बी' का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी।

देखा जाए तो आज हिंदी व्याकरण की पुस्तकों की कमी नहीं है, लेकिन पाठ्यक्रम 'बी' के विद्यार्थियों के लिए हमें एक ऐसी व्यावहारिक व्याकरण की पुस्तक की आवश्यकता महसूस हुई जो विद्यार्थियों को हिंदी भाषा का शुद्ध लिखना, पढ़ना, बोलना एवं व्यवहार करना सिखा सके। *'व्याकरण-दर्शिका' में मैंने व्याकरण के सिद्धांतों, नियमों व उपनियमों को व्याख्या के माध्यम से अधिकाधिक स्पष्ट, सरल तथा सुबोधक बनाने का प्रयास किया है। इसके पीछे मेरा एक ही उद्देश्य रहा है कि अहिंदी भाषी लोगों को राष्ट्रभाषा का सम्यक् ज्ञान हो तथा उनकी व्याकरण संबंधी समस्याओं का उचित समाधान हो।* यही नहीं, हिंदी भाषी विद्यार्थी भी इससे पूरा लाभ उठा सकते हैं। प्रश्नों का निर्माण करते समय **CBSE द्वारा निर्धारित सात उद्देश्यों (पुनरावृत्ति, समास, अनुप्रयोग, विश्लेषण, मूल्यांकन, सृजनात्मक, संश्लेषण) तथा जटिलता के तीनों स्तरों (उच्च, औसत, सरल)** का भी ध्यान रखा गया है।

खंड-2 और खंड-4 के अंत में **व्याकरण के अभ्यास प्रश्न-पत्रों** को भी विद्यार्थियों के अभ्यास के लिए जोड़ा गया है।

अंततः यही कहना चाहूँगी कि मेरा यही प्रयास रहा है कि *'व्याकरण-दर्शिका'* भाषा प्रयोग को सटीक तथा अर्थपूर्ण बनाने में विद्यार्थियों की सहायता करे तथा उन्हें नई दिशा से परिचित कराए। हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक सहायक होगी। वे हिंदी भाषा की प्रकृति और उसके व्याकरण से परिचित हो सकेंगे। उनको इस भाषा का व्यवहार समझने में भी कठिनाई नहीं होगी। इस पुस्तक से यदि विद्यार्थी थोड़ा भी लाभ उठा सकें, तो मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूँगी।

–लेखिका

कक्षा नौवीं हिंदी 'ब'–परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

परीक्षा हेतु भार विभाजन

	विषयवस्तु	उप भार	कुल भार
1.	**पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर लघु प्रश्न एवं अति लघु प्रश्न**		15
	(अ) अपठित गद्यांश (200 से 250 शब्दों के) (2×4) (1×1)	9	
	(ब) अपठित काव्यांश लघु प्रश्न (100 से 150 शब्दों के) (2×3)	6	
2.	**व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न पूछे जाएँगे।** (1×15)		15
	1. वर्ण विच्छेद (2 अंक)	02	
	2. अनुस्वार (1 अंक), अनुनासिक (1 अंक)	02	
	3. नुक्ता (1 अंक)	01	
	4. उपसर्ग-प्रत्यय (3 अंक)	03	
	5. संधि (4 अंक)	04	
	6. विराम चिह्न (3 अंक)	03	
3.	**पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-1 व पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-1**		25
	(अ) गद्य खंड	10	
1.	विद्यार्थियों की साहित्य को पढ़कर समझ पाने की क्षमता के आकलन पर आधारित पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के गद्य पाठों के आधार पर लघु प्रश्न (2+2+1)	05	
2.	हिंदी के माध्यम से अपने अनुभवों को लिखकर सहज अभिव्यक्ति कर पाने की क्षमता का आकलन करने पर आधारित पाठ्यपुस्तक स्पर्श के निर्धारित पाठों (गद्य) पर एक निबंधात्मक प्रश्न (1×5) (विकल्प सहित)	05	
	(ब) काव्य खंड	10	
1.	कविताओं के विषय, काव्य बोध, अर्थ, बोध व सराहना को सरल शब्दों में अभिव्यक्ति करने की क्षमता पर आधारित पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के काव्य खंड के आधार पर लघु प्रश्न (2+2+1)	05	
2.	कविताओं के अपने अनुभवों को लिखकर सहज अभिव्यक्ति कर पाने की क्षमता का आकलन करने पर एक निबंधात्मक प्रश्न (1×5) (विकल्प सहित)	05	
	(स) पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-1	**05**	
	पूरक पाठ्यपुस्तक 'संचयन' के निर्धारित पाठों से एक प्रश्न (1×5)	05	
4.	**लेखन**		25
	(अ) संकेत बिंदुओं पर आधारित विषयों एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद (1×5) (विकल्प सहित)	05	
	(ब) अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित एक अनौपचारिक विषय पर पत्र (1×5) (विकल्प सहित)	05	
	(स) चित्र वर्णन (20–30 शब्दों) (1×5)	05	
	(द) किसी एक स्थिति पर 50 शब्दों के अन्तर्गत संवाद लेखन (1×5)	05	
	(इ) विषय में संबंधित 25-50 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन-लेखन (1×5)	05	
	कुल		80

कक्षा दसवीं हिंदी 'ब'–परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

<table>
<tr><th colspan="4">परीक्षा भार विभाजन</th></tr>
<tr><th></th><th>विषयवस्तु</th><th>उप भार</th><th>कुल भार</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर लघु प्रश्न एवं अति लघु प्रश्न</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>(अ) अपठित गद्यांश (200 से 250 शब्दों के) (2×4) (1×2)</td><td>10</td><td>10</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न पूछे जाएँगे। (1×16)</td><td></td><td rowspan="6">16</td></tr>
<tr><td></td><td>1. शब्द व पद में अंतर (1 अंक)</td><td>01</td></tr>
<tr><td></td><td>2. रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर (3 अंक)</td><td>03</td></tr>
<tr><td></td><td>3. समास (4 अंक)</td><td>04</td></tr>
<tr><td></td><td>4. अशुद्धि शोधन (4 अंक)</td><td>04</td></tr>
<tr><td></td><td>5. मुहावरे (4 अंक)</td><td>04</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2 व पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-2
(अ) गद्य खंड</td><td>11</td><td rowspan="9">28</td></tr>
<tr><td>1.</td><td>विद्यार्थियों की साहित्य को पढ़कर समझ पाने की क्षमता के आकलन पर आधारित पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के गद्य पाठों के आधार पर लघु प्रश्न (2+2+2)</td><td>06</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>हिंदी के माध्यम से अपने अनुभवों को लिखकर सहज अभिव्यक्ति कर पाने की क्षमता का आकलन करने पर आधारित पाठ्यपुस्तक स्पर्श के निर्धारित पाठों (गद्य) पर एक निबंधात्मक प्रश्न (1×5) (विकल्प सहित)</td><td>05</td></tr>
<tr><td></td><td>(ब) काव्य खंड</td><td>11</td></tr>
<tr><td>1.</td><td>कविताओं के विषय, काव्य बोध, अर्थ, बोध व सराहना को सरल शब्दों में अभिव्यक्ति करने की क्षमता पर आधारित पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के काव्य खंड के आधार पर लघु प्रश्न (2+2+2)</td><td>06</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>कविताओं के अपने अनुभवों को लिखकर सहज अभिव्यक्ति कर पाने की क्षमता का आकलन करने पर एक निबंधात्मक प्रश्न (1×5) (विकल्प सहित)</td><td>05</td></tr>
<tr><td></td><td>(स) पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-2</td><td>06</td></tr>
<tr><td></td><td>पूरक पाठ्यपुस्तक 'संचयन' के निर्धारित पाठों से एक प्रश्न (1×3) + (1×3)</td><td>06</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>4.</td><td>लेखन</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>(अ) संकेत बिंदुओं पर आधारित विषयों एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद (1×6)</td><td>06</td><td rowspan="5">26</td></tr>
<tr><td></td><td>(ब) अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित एक अनौपचारिक विषय पर पत्र (1×5)</td><td>05</td></tr>
<tr><td></td><td>(स) एक विषय 20–30 शब्दों में सूचना लेखन (1×5)</td><td>05</td></tr>
<tr><td></td><td>(द) किसी एक स्थिति पर 50 शब्दों के अन्तर्गत संवाद लेखन (1×5)</td><td>05</td></tr>
<tr><td></td><td>(इ) विषय में संबंधित 25-50 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन-लेखन (1×5)</td><td>05</td></tr>
<tr><td></td><td>कुल</td><td></td><td>80</td></tr>
</table>

प्रश्नपत्र का प्रश्नानुसार विश्लेषण एवं प्रारूप
हिंदी पाठ्यक्रम–ब
कक्षा-नौवीं एवं दसवीं

समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

क्रम सं०	प्रश्नों का प्रारूप	दक्षता परीक्षण/ अधिगम परिणाम	अति लघूत्तरात्मक (1 अंक)	लघूत्तरात्मक (2 अंक)	लघूत्तरात्मक (3 अंक)	निबंधात्मक (5 अंक)	निबंधात्मक (6 अंक)	कुल योग
(क)	अपठित बोध	अवधारणात्मक बोध, अर्थग्रहण, अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, शब्दज्ञान व भाषिक कौशल	2	4				10
(ख)	व्यावहारिक व्याकरण	व्याकरणिक संरचनाओं का बोध और प्रयोग, विश्लेषण एवं भाषिक कौशल	16					16
(ग)	पाठ्यपुस्तक	संकेत बिंदुओं का विस्तार, अपने मत की अभिव्यक्ति, सोदाहरण समझाना, औचित्य निर्धारण, भाषा में प्रवाहमयता, सटीक शैली, उचित प्रारूप का प्रयोग, अभिव्यक्ति की मौलिकता एवं जीवन मूल्यों की पहचान।		6	2	2		28
(घ)	रचनात्मक लेखन (लेखन कौशल)	संकेत बिंदुओं का विस्तार, अपने मत की अभिव्यक्ति, सोदाहरण समझाना, औचित्य निर्धारण, भाषा में प्रवाहमयता, सटीक शैली, उचित प्रारूप का प्रयोग, अभिव्यक्ति की मौलिकता एवं जीवन मूल्यों की पहचान।				4	1	26
		कुल	18 × 1 = 18	10 × 2 = 20	2 × 3 = 6	6 × 5 = 30	1 × 6 = 6	80

विषय-सूची

खंड-1 : अपठित-बोध (IX-X)

1. अपठित गद्यांश 1-26
2. अपठित काव्यांश 27-44

खंड-2 : व्यावहारिक-व्याकरण (IX)

1. वर्ण-विच्छेद 47-70
   - वर्ण 47
   - वर्णमाला 47
   - 'र्' के विभिन्न रूप 49
   - बिंदु-चंद्रबिंदु 51
   - अनुस्वार का निषेध 53
   - अद्र्धचंद्राकार 54
   - नुक्ता 55
   - वर्ण-विच्छेद 58
   - पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' में प्रयुक्त वर्ण-विच्छेद शब्द 60
   - उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ और उनका निराकरण 65
2. उपसर्ग और प्रत्यय से शब्द निर्माण 71-89
   - **उपसर्ग** (परिभाषा, प्रमुख उपसर्गों के उदाहरण अर्थसहित) 71
   - संस्कृत के उपसर्ग 71
   - हिंदी के उपसर्ग 72
   - उर्दू के उपसर्ग 72
   - पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' में प्रयुक्त उपसर्ग युक्त शब्द 73
   - पूरक पुस्तक 'संचयन' में प्रयुक्त उपसर्ग युक्त शब्द 75
   - **प्रत्यय** (परिभाषा, प्रमुख प्रत्ययों के उदाहरण अर्थसहित) 79
   - पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' में प्रयुक्त प्रत्यय युक्त शब्द 81
   - पूरक पुस्तक 'संचयन' में प्रयुक्त प्रत्यय युक्त शब्द 84
3. संधि 90-109
   - संधि का अर्थ एवं परिभाषा 90
   - संधि-विच्छेद 90
   - संधि के भेद 90
   - हिंदी की संधियाँ 104
   - पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श-1' में प्रयुक्त संधि शब्द 105
4. विराम-चिह्न 110-119
   - विराम-चिह्नों का महत्त्व 110
   - हिंदी के प्रमुख विराम-चिह्न 111

- अभ्यास प्रश्न-पत्र 120-126

खंड-3 : रचनात्मक-बोध (IX–X)

मौखिक अभिव्यक्ति 129–154

1. श्रवण 130–133

श्रवण संबंधी मूल्यांकन 133

मूल्यांकन के आधार 133

2. वाचन 134–154

भाषण, आशुभाषण, परिचर्चा, वाद-विवाद, मूल्यांकन 134

कविता वाचन 139

वार्तालाप 141

कार्यक्रम-प्रस्तुति 143

कथा, कहानी अथवा घटना सुनाना 144

चित्र देखकर कहानी सुनाना 145

परिचय देना और परिचय प्राप्त करना 148

संवाद-वाचन 149

वाचन का मूल्यांकन 150

पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक पर आधारित कुछ रचनात्मक गतिविधियों के सुझाव 151

खंड-4 : व्यावहारिक-व्याकरण (X)

1. शब्द और पद 157–175

शब्द और पद 157

शब्द (पद) के भेद 157

संज्ञा तथा संज्ञा के भेद 158

लिंग 161

लिंग परिवर्तन संबंधी नियम 162

वचन 165

कारक एवं कारक के भेद 169

कर्म कारक तथा संप्रदान कारक में अंतर 172

करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर 172

2. सर्वनाम 176–179

परिभाषा एवं भेद 176

3. विशेषण 180–185

विशेषण के भेद 180

संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर 181

सार्वनामिक विशेषण तथा सर्वनाम 182

विशेषणों की अवस्थाएँ 182

प्रविशेषण 183

4. क्रिया 186–195
क्रिया की रचना ... 186
प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद ... 186
संरचना की दृष्टि से क्रिया के अन्य भेद ... 187
वाच्य ... 191
वाच्य परिवर्तन ... 192
काल एवं उसके प्रकार ... 193
5. अव्यय 196–202
अव्यय शब्दों के भेद ... 196
क्रियाविशेषण ... 196
संबंधबोधक ... 198
समुच्चयबोधक ... 199
विस्मयादिबोधक ... 200
निपात ... 201
6. रचना के आधार पर वाक्य-रूपांतर 203–222
वाक्य, वाक्य के अंग ... 203
उद्देश्य और विधेय का विस्तार ... 204
रचना के आधार पर वाक्य-भेद ... 207
उपवाक्य ... 208
वाक्य-संश्लेषण ... 208
वाक्य-रूपांतरण ... 210
7. समास 223–234
परिभाषा एवं विग्रह ... 223
समास के भेद ... 223
विभिन्न समासों में अंतर ... 229
समास (पाठ्यपुस्तक पर आधारित) ... 230
संधि और समास में अंतर ... 231
8. अशुद्ध वाक्यों का शोधन (पदक्रम और अन्वय) 235–247
पदों का क्रम एवं नियम ... 235
पदों का अन्वय एवं नियम ... 236
वाक्यगत अशुद्धियाँ ... 237
वाक्यों की अशुद्धियाँ ... 238
क्रम दोष ... 238
पुनरुक्ति दोष ... 239
संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ ... 239
लिंग संबंधी अशुद्धियाँ ... 240

वचन संबंधी अशुद्धियाँ 240
सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ 241
विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ 242
क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ 242
क्रियाविशेषण संबंधी अशुद्धियाँ 243
कारकीय परसर्गों की अशुद्धियाँ 243
मुहावरे संबंधी अशुद्धियाँ 244

9. मुहावरे **248–264**

परिभाषा 248
वाक्यों में मुहावरों के प्रयोग से संबंधित कुछ विशेष बातें 248
प्रमुख मुहावरे और उनका वाक्यों में प्रयोग 249
कुछ अन्य मुहावरे 257
पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' में प्रयुक्त मुहावरे 258

• **अभ्यास प्रश्न-पत्र** **265–270**

खंड-5 : लेखन (IX-X)

1. अनुच्छेद-लेखन **273–314**

• **पर्व, त्योहार, मेला व यात्रा**
1. त्योहारों का जीवन में महत्त्व 273
2. जन्माष्टमी 274
3. होली 274
4. नवरात्र 275
5. वाह ! क्या मेला था वह 275
6. यात्रा जिसे मैं भुला नहीं पाता 275

• **सूक्तिपरक**
7. सहकारिता 276
8. समाज सेवा 276
9. पर उपदेश कुशल बहुतेरे 277
10. नर हो न निराश करो मन को 277
11. संतोष धन सर्वोपरि 277
12. मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना 278
13. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत 278
14. करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान 279
15. शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले 279
16. यदि फूल नहीं बो सकते, तो काँटे भी मत बोओ 280
17. दया धर्म का मूल है 280
18. परतंत्रता एक अभिशाप 280
19. भाग्य और पुरुषार्थ 281
20. वाणी का महत्त्व : मधुर भाषण 281
21. संघर्ष ही जीवन है 281
22. संतोष धन 282
23. साँच बराबर तप नहीं 282

• **नैतिक मूल्य एवं आदर्श**
24. सादा जीवन उच्च विचार 283
25. साहित्य और समाज 283
26. भारतीय नारी 284
27. मित्रता 284
28. स्वावलंबन 285
29. परोपकार 285
30. आत्मविश्वास 285
31. वृक्षारोपण 286
32. अनुशासन का महत्त्व 286
33. श्रम का महत्त्व 287
34. समय का महत्त्व 287

• **विज्ञान संबंधी**
35. दूरदर्शन 288
36. विज्ञापन कला 288
37. विज्ञान और स्वास्थ्य 288
38. इंटरनेट की दुनिया 289
39. मोबाइल फोन : सुविधा या असुविधा 290

• **राष्ट्रीय महत्त्व**

40. हिमालय: भारत का मुकुट 290
41. अध्ययन का आनंद 290
42. हमारे गाँव 291
43. जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी 291
44. भारत की सांस्कृतिक एकता 292
45. हमारे राष्ट्रीय त्योहार 292
46. हमारा राष्ट्रीय झंडा 293

• **विविध समस्याओं संबंधी**

47. बेरोज़गारी की समस्या 293
48. बढ़ती जनसंख्या : एक भयानक समस्या 293
49. भारतीय समाज और अंधविश्वास 294
50. अपहरण और मासूम बच्चे 294
51. प्रदूषण की समस्या 295
52. भ्रष्टाचार : एक समस्या 295
53. कमरतोड़ महँगाई 296
54. दहेज : एक समस्या 296
55. भारत में आतंकवाद 297
56. आरक्षण : कितना उचित, कितना अनुचित 297
56. प्लास्टिक की दुनिया 298
58. चाँदनी रात का वर्णन 298
59. प्रकृति का क्रूर परिहास 'बाढ़' 299
60. प्रात:कालीन भ्रमण 299

• **विद्यार्थी जीवन**

61. विद्यालय में वन-महोत्सव 300
62. मेरे जीवन का लक्ष्य 300
63. खेल और व्यायाम 300
64. विद्यार्थी जीवन 301
65. युवा चेतना और समाज 301
66. विद्यार्थी और अनुशासन 302
67. पुस्तकालय 302
68. समाचार-पत्र 302

• **अन्य**

69. कलम और तलवार 303
70. कल्पना चावला 303
71. स्वस्थ जीवन के लिए व्यायाम 304
72. नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका 304
73. भारतीय जनतंत्र का भविष्य 305
74. मदर टेरेसा 306
75. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई 306
76. महात्मा गांधी 307
77. डिजिटल इंडिया 308
78. स्वच्छ भारत अभियान 308

2. पत्र-लेखन **315-368**

पत्र-लेखन की विशेषताएँ 315

पत्र का प्रारूप 315

पत्रों के प्रकार 316

1. अनौपचारिक-पत्र (IX) (पारिवारिक-पत्र, सगे-संबंधी एवं मित्रों को लिखे जाने वाले पत्र) 317

निमंत्रण-पत्र 317

संवेदना-पत्र 319

बधाई-पत्र 322

धन्यवाद-पत्र 325

शुभकामना-पत्र 327

सूचना, सद्भावना व अन्य पत्र 329

2. औपचारिक-पत्र (X)

(सरकारी, गैर-सरकारी तथा अर्धसरकारी-पत्र, आवेदन-पत्र, संपादक को पत्र एवं व्यावसायिक-पत्र) 337

आवेदन-पत्र 337

शिकायती-पत्र 346

संपादकीय-पत्र 357

पूछताछ संबंधी-पत्र 362

3. चित्र-वर्णन 369-381

चित्र-लेखन की विशेषताएँ 369

चित्र-लेखन के उदाहरण 370

4. संवाद-लेखन 382-388

उदाहरण 382

5. विज्ञापन-रचना 389-407

परिभाषा 389

विज्ञापन की आवश्यकता 389

विज्ञापन के उद्देश्य 390

विज्ञापन के माध्यम 391

विज्ञापन के प्रकार 392

विज्ञापन कॉपी लेखन 400

विज्ञापन कॉपी की भाषा 402

श्रृंगारिक भाषा का प्रयोग 402

विशेषणों का प्रयोग 403

6. सूचना-लेखन 408-420

परिभाषा 408

सूचना-लेखन के नमूने 409

खंड-1

अपठित-बोध (IX–X)

अंक विभाजन-IX

1. **अपठित गद्यांश** (200 से 250 शब्दों के)
2. **अपठित काव्यांश लघु प्रश्न** (100 से 150 शब्दों के)

अंक विभाजन-X

		निर्धारित अंक : 10
1. **अपठित गद्यांश** (200 से 250 शब्दों के)	(2×4) (2×1)	10

1 अपठित गद्यांश (Unseen Prose Passages)

(क) लघुत्तरीय प्रारूप (10 अंक)

अपठित का शाब्दिक अर्थ है—जो कभी पढ़ा नहीं गया। जो पाठ्यक्रम से जुड़ा नहीं है और जो अचानक ही हमें पढ़ने के लिए दिया गया हो। अपठित गद्यांश में गद्यांश से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार इस विषय में यह अपेक्षा की जाती है कि पाठक दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे संबद्ध प्रश्नों के उत्तर उसी अनुच्छेद के आधार पर संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करें। प्रश्नों के उत्तर पाठक को स्वयं अपनी भाषा-शैली में देने होते हैं।

अपठित गद्यांश के द्वारा पाठक की व्यक्तिगत योग्यता तथा अभिव्यक्ति क्षमता का पता लगाया जाता है। अपठित का कोई विशेष क्षेत्र नहीं होता। कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र किसी भी विषय पर गद्यांश हो सकता है। ऐसे विषयों के निरंतर अभ्यास और प्रश्नों के उत्तर देने से हमारा मानसिक स्तर उन्नत होता है और हमारी अभिव्यक्ति क्षमता में प्रौढ़ता आती है।

विधि एवं विशेषताएँ

1. प्रस्तुत अवतरण को मन-ही-मन एक-दो बार पढ़ना चाहिए।
2. अनुच्छेद को पुन: पढ़ते समय विशिष्ट स्थलों को रेखांकित करना चाहिए।
3. अपठित के उत्तर देते समय भाषा एकदम सरल, व्यावहारिक और सहज होनी चाहिए। बनावटी या लच्छेदार भाषा का प्रयोग करना एकदम अनुचित होगा।
4. अपठित से संबंधित किसी भी प्रश्न का उत्तर लिखते समय कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए।
5. शीर्षक देते समय संक्षिप्तता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

उदाहरण

निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1 अपने देश की सीमाओं की दुश्मन से रक्षा करने के लिए मनुष्य सदैव सजग रहा है। प्राचीन काल में युद्ध क्षेत्र सीमित होता था तथा युद्ध धनुष-बाण, तलवार, भाले आदि द्वारा होता था, परंतु आज युद्धक्षेत्र सीमाबद्ध नहीं है। युद्ध में अंधविश्वास से हटकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। आज विज्ञान ने लड़ाई को एक नया मोड़ दिया है। अब हाथी, ऊँट, घोड़ों का स्थान रेल, मोटरगाड़ियों और हवाई जहाजों ने ले लिया है। धनुष-बाण आदि का स्थान बंदूक व तोप की गोलियों और रॉकेट, मिसाइल, परमाणु तथा प्रक्षेपास्त्रों ने ले लिया है और उनके अनुसार राष्ट्र की सीमाओं के प्रहरियों में अंतर आया है।

अब मानव प्रहरियों का स्थान बहुत हद तक यांत्रिक प्रहरियों ने ले लिया है जो मानव से कहीं अधिक सजग, त्रुटिहीन और क्षमतावान् हैं। आधुनिक प्रहरियों में रेडार, सौनार, लौरान, शौरान आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। यहाँ रेडार का वर्णन किया जाता है।

रेडार का उपयोग द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रारंभ हुआ। 'रेडार' शब्द 'रेडियो डिटेक्शन एंड रेंजिंग के प्रथम अक्षरों से बना है। इसका अर्थ यह भी है कि किसी भी रेडार से एक निश्चित क्षेत्र के अंदर ही वायुयान की स्थिति ज्ञात की जा सकती है। यदि जहाज उस 'रेंज' से बाहर है तो पता नहीं लगाया जा सकता।

रेडार एक अति लाभदायक व महत्त्वपूर्ण प्रहरी है, जिसमें विद्युत चुंबकीय तरंगों की मदद से उड़ते हुए शत्रु के विमानों की सही स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

(क) प्राचीन काल और आज के युद्ध में क्या अंतर है? 2

उत्तर–प्राचीन काल में युद्ध सीमित होता था तथा युद्ध धनुष-बाण, तलवार, भाले आदि से किया जाता था, परंतु आज का युद्ध क्षेत्र सीमाबद्ध नहीं है। आज वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर युद्ध किया जाता है।

(ख) विज्ञान की लड़ाई ने कैसा मोड़ लिया है? 2

उत्तर–अब हाथी, ऊँट, घोड़ों का स्थान रेल, मोटर गाड़ियों व हवाई जहाज ने ले लिया है। धनुष-बाण, आदि का स्थान बंदूक व तोप की गोलियों और रॉकेट, मिसाइल, परमाणु तथा प्रक्षेपास्त्रों ने ले लिया है।

(ग) मानव प्रहरियों का स्थान अब किसने ले लिया है? 2

उत्तर–मानव प्रहरियों का स्थान अब रैजर, सौनार, लौरान-शौरान आदि ने ले लिया है जो मानव से कहीं अधिक सजग, त्रुटिहीन व क्षमतावान है।

(घ) 'रेडार' का मुख्य रूप से क्या प्रयोग है? 2

उत्तर–किसी भी रेडार से एक निश्चित क्षेत्र के अंदर ही वायुयान की स्थिति ज्ञात की जा सकती है। यदि जहाज उस 'रेंज' से बाहर है तो पता नहीं लगाया जा सकता।

(ङ) 'त्रुटिहीन' शब्द का वर्ण-विच्छेद कीजिए। 1

उत्तर–त् + र् + उ + ट् + इ + ह् + ई + न् + अ।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'आधुनिक सजग प्रहरी'।

2 यों तो मानव के इतिहास के आरंभ से ही इस कला का सूत्रपात हो गया था। लोग अपने कार्यों या विचारों के समर्थन के लिए गोष्ठियों या सभाओं का आयोजन किया करते थे। प्रचार के लिए भजन-कीर्तन मंडलियाँ भी बनाई जाती थीं। परंतु उनका क्षेत्र अधिकतर धार्मिक, दार्शनिक या भक्ति संबंधी होता था।

वर्तमान विज्ञापन कला विशुद्ध व्यावसायिक कला है और आधुनिक व्यवसाय का एक अनिवार्य अंग है। विज्ञापन के लिए कई साधनों का उपयोग किया जाता है; जैसे–हैंडबिल, रेडियो और दीवार-पोस्टर, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, बड़े-बड़े साइनबोर्ड और दूरदर्शन।

जब से छपाई का प्रचार-प्रसार बढ़ा तब से इश्तिहार या हैंडबिल का विज्ञापन के लिए प्रयोग आरंभ हुआ। कागज और मुद्रण सुविधा के सुलभ होने से विज्ञापन के इस माध्यम का उपयोग बहुत अधिक लोकप्रिय हुआ। मान लीजिए, साड़ियों की दो समान दुकानें एक ही बाजार में हैं। इनमें से 'क' तो इश्तिहार (हैंडबिल) गली-मोहल्ले में बँटवाता है और 'ख' हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता है, तो परिणाम यह होगा कि 'क' का नाम लोगों के मुँह पर चढ़ जाएगा। वह अधिक लोकप्रिय हो जाएगा और उसके माल की बिक्री बहुत बढ़ जाएगी।

बहुत से व्यापारी बहुत बड़े-बड़े विज्ञापन छपवाकर नगर की दीवारों पर चिपकवा देते हैं। बहुत से तो दीवारों पर ही विज्ञापन लिखवा देते हैं। इससे आते-जाते लोगों की नजर उनपर पड़ती है और वह विज्ञापनकर्ता की सेवाओं या वस्तुओं से परिचित हो जाता है। फिर जब उसे आवश्यकता पड़ती है तो विज्ञापनकर्ता का नाम ही उसकी स्मृति में उभरता है।

(क) इतिहास के आरंभ में विज्ञापन कला का क्या स्वरूप था? 2

उत्तर–लोग अपने कार्यों या विचारों के समर्थन के लिए गोष्ठियों या सभाओं का आयोजन किया करते थे। प्रचार के लिए भजन-कीर्तन मंडलियाँ भी बनाई जाती थीं।

(ख) वर्तमान में विज्ञापन कला का क्या स्वरूप है? 2

उत्तर–आज के समय में यह एक विशुद्ध व्यावसायिक कला है। आधुनिक व्यवसाय का यह एक अभिन्न अंग है। आज इसके लिए कई तरह के साधनों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) इश्तहार या हैंडबिल के प्रयोग से विक्रेता को क्या लाभ होता है? 2

उत्तर–साड़ियों की दो दुकानें एक समान एक ही बाजार में हैं। यदि उसमें से एक दुकानदार इश्तहार या हैंडबिल का प्रयोग कर अपनी दुकान का प्रचार करेगा तो निश्चित ही उसकी दुकान सामने वाली दुकान से अधिक मशहूर होगी।

(घ) दीवारों पर छपे या लिखे हुए विज्ञापनों से क्या फायदा होता है? 2

उत्तर–आते-जाते लोगों की नजर उस पर पड़ती है और वह विज्ञापनकर्ता की वस्तुओं से परिचित हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर उसका नाम उसके जहन में आ जाता है। इसी प्रकार उसका व्यापार बढ़ जाता है।

(ङ) 'विज्ञापन' शब्द का वर्ण-विच्छेद कीजिए। 1

उत्तर–व् + इ + ग् + ञ् + आ + प् + अ + न् + अ।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'विज्ञापन कला'।

3 मानव जीवन के लिए मनोरंजन की अत्यंत आवश्यकता है। मनोरंजन के कार्य तथा साधन कुछ क्षण के लिए मानव जीवन के गहन बोझ को कम करके व्यक्ति में उत्साह का संचालन कर देते हैं। मानव सृष्टि के आरंभ से ही मनोरंजन की आवश्यकता प्राणियों ने अनुभव की होगी और जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया वैसे-वैसे नवीनतम खोज इस अभाव को पूरा करने के लिए की गई।

वर्तमान काल में चारों ओर विज्ञान की तूती बोल रही है। मनोरंजन के क्षेत्र में जितने भी सुंदर अन्वेषण एवं आविष्कार हुए हैं, उनमें सिनेमा (चलचित्र) भी एक है।

चलचित्र का आविष्कार 1890 ई० में टामस एल्वा एडीसन द्वारा अमेरिका में किया गया। जनसाधारण के सम्मुख सिनेमा पहली बार लंदन में 'लुमेर' द्वारा उपस्थित किया गया। भारत में पहले सिनेमा के संस्थापक 'दादा साहब फाल्के' समझे जाते हैं। उन्होंने पहला चलचित्र 1913 में बनाया। भारतीय जनता ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। आज इस व्यवसाय पर करोड़ों रुपया लगाया जा रहा है और विश्व में भारत का स्थान इस क्षेत्र में प्रथम है।

पहले-पहल चलचित्र जगत में केवल मूक चित्रों का ही निर्माण होता था। बाद में इसमें ध्वनिकरण होता गया। चलचित्र निर्माण में कैमरे का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह कैमरा एक विशेष प्रकार का बना होता है।

(क) मानव जीवन के लिए मनोरंजन क्यों आवश्यक है? 2

उत्तर–मनोरंजन के साधन कुछ क्षण के लिए मानव जीवन के गहन बोझ को कम कर देते हैं। व्यक्ति में उत्साह का संचार कर देते हैं। उनके दुखों को खत्म कर देते हैं।

(ख) चलचित्र का आविष्कार कब और किसने किया? 2

उत्तर–चलचित्र का आविष्कार 1890 ई० में 'थामस एल्वा एडीसन' द्वारा किया गया। इन्होंने 'लुमैर' नामक पहली फिल्म बनाई।

(ग) भारत में सिनेमा के पहले संस्थापक कौन थे तथा कैसे? 2

उत्तर–भारत में सिनेमा के पहले संस्थापक 'दादा साहब फाल्के' थे। उन्होंने पहला चलचित्र 1913 में बनाया। जिसकी प्रशंसा भारत के सभी लोगों ने की।

(घ) पहले-पहल किस प्रकार की फिल्मों का निर्माण किया गया? 2

उत्तर–सबसे पहले मूक फिल्मों का निर्माण किया गया। बनने के बाद इसमें ध्वनिकरण किया गया। ध्वनि का प्रयोग स्वयं गायक-गायिका अपनी आवाज़ में किया करते थे।

(ङ) निम्नलिखित वर्षों की संख्या को शब्दों में लिखिए–
1890, 1913 1

उत्तर–1890–अठारह सौ नब्बे, एक हजार आठ सौ नब्बे।
1913–उन्नीस सौ तेरह, एक हजार नौ सौ तेरह।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'चलचित्र का इतिहास'।

4 मेरी माँ कहती है कि जिस तरफ़ दुनिया चल रही है, हमें भी उसी तरफ़ चलना चाहिए। उसने कभी स्वतंत्रता पर अंकुश नहीं लगाया, बल्कि खुद को उन्होंने मेरे अनुरूप बदला है। एक रूढ़िवादी परिवार से ऊँचा उठकर उन्होंने सोचा, जिया और हमें जीना सिखाया। मुझे यह कहते हुए ज़रा भी संकोच नहीं होता कि मेरे माता-पिता मुझसे कहीं ज्यादा आधुनिक विचारधारा वाले व्यक्ति हैं और मुझे उन पर गर्व है। मुझे लगता है कि अपने बच्चों के लिए हर माँ सबसे ज्यादा साहसी और निर्भीक होती है। वह सबसे ज्यादा तरक्कीपसंद होती है। वह नए ज़माने की माँ

हो या पुराने ज़माने की, अपने बच्चों को वह तमाम बंधनों से मुक्त करना चाहती है और उन्हें आज़ाद परिंदों की तरह खुला आसमान देना चाहती है।

माँएँ अपनी फ़ितरत से ही तरक्कीपसंद होती हैं, क्योंकि वे बच्चे के साथ-साथ दोबारा विकसित होती हैं। यह बच्चे को पालने और उसे विकसित करने की उनकी मूल प्रवृत्ति है जो उन्हें अपनी आदतों और अपने मूल्यों को नए सिरे से गढ़ने के लिए प्रेरित करती है। आपने शायद गोर्की का उपन्यास 'माँ' पढ़ा हो। वह माँ अनपढ़ है, लेकिन इसके बावजूद वह समझ पाती है कि उसका बेटा क्या कर रहा है और क्यों कर रहा है।

मेरा ख़याल है कि माँ को नए या पुराने मॉडल में रखकर नहीं देखा जा सकता है। हाँ, औरत की अपनी निजी शख्सियत को देखा जा सकता है—वह ब्रिटेन की होगी तो स्कर्ट पहन सकती है; बेतिया की होगी तो साड़ी पहन सकती है और यदि बेंगलूरु की होगी तो पढ़ी-लिखी इंजीनियर हो सकती है। बनारस की होगी तो किसी मंदिर में पूजा करती हो सकती है, लेकिन माँ के तौर पर तो वह एक जैसी ही होगी। अपने शिशु का चेहरा देखकर उसकी ज़रूरतों को जान लेने की उसकी मूल प्रवृत्ति होती है।

(क) अपनी माँ के विषय में लेखक ने क्या कहा है? 2

उत्तर–लेखक कहते हैं कि माँ जिस तरफ दुनिया चल रही है, हमें भी उसी तरफ चलने को कहती हैं। उन्होंने सदैव एक रूढ़िवादी परिवार से ऊँचा उठकर सोचा, जिया और हमें जीना सिखाया।

(ख) अपने बच्चों के लिए माँ कैसी होती है? 2

उत्तर–अपने बच्चों के लिए हर माँ सबसे ज्यादा साहसी और निर्भीक होती है। वह सबसे ज्यादा तरक्की पसंद होती है। वह बच्चों को तमाम बंधनों से मुक्त करना चाहती है।

(ग) बच्चों के जीवन के साथ माँ के जीवन में क्या परिवर्तन आता है? 2

उत्तर–माँ बच्चों के साथ-साथ दोबारा विकसित होती हैं। यह बच्चे को पालने और उसे विकसित करने की उनकी मूल प्रवृत्ति है जो उन्हें अपनी आदतों और मूल्यों को नए सिरे से गढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

(घ) माँ को सदैव किस रूप में देखा जा सकता है? 2

उत्तर–चाहे ब्रिटेन की हो या बेतिया की या बेंगलूरु की, माँ के तौर पर तो सब एक जैसी ही होती हैं। माँ में अपने शिशु का चेहरा देखकर उसकी ज़रूरतों को जान लेने की मूल प्रवृत्ति होती है।

(ङ) 'विकसित' तथा 'शख्सियत' शब्दों में से प्रत्यय और मूल शब्द अलग कीजिए। 1

उत्तर–विकास + इत, शख्स + इयत।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'मेरी माँ'।

5 हर व्यक्ति में एक समूचा ब्रह्मांड वैसे ही बसा है जैसे छोटे से बीज में पूरा वृक्ष छिपा है। आदमी इस ब्रह्मांड की रचनात्मक और क्रियात्मक इकाई है। इस बात से विज्ञान भी सहमत है। वैज्ञानिक कहते हैं कि विश्व के प्रत्येक जीव की क्रिया और उसका स्वभाव अलग-अलग होता है। किन्हीं भी दो में एकरूपता नहीं होती। विभिन्न प्राणियों का समावेश ही संसार है।

इसी प्रकार से करोड़ों कोशिकाओं (सेल्स) से इस शरीर का निर्माण हुआ है। प्रत्येक का स्वभाव तथा कर्म भिन्न है, फिर भी यह मानव शरीर बाहर से एक दिखाई पड़ता है। प्रत्येक कोशिका जीवित है। कुछ सुप्त अवस्था में हैं, तो कुछ जाग्रत में। जैसे ही कुछ कोशिकाएँ मरती हैं, उनका स्थान दूसरी कोशिकाएँ स्वत: ले लेती हैं। सभी अपने-अपने काम में सतत लगी हुई हैं। वे कभी विश्राम नहीं करतीं। यदि इनमें से एक भी कोशिका काम करना बंद कर दे, तो इस शरीर का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। हालाँकि ये कोशिकाएँ कार्य में तथा व्यवहार में एक-दूसरे से भिन्न हैं, परंतु ध्यान की विधि द्वारा इनमें उसी प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है जैसे सूर्य की किरणें चारों तरफ़ फैली होने के बावजूद, वे सौर बैटरी द्वारा एकत्र कर विद्युत तरंगों में बदली जा सकती हैं। जिस प्रकार आप इन्हें एक जगह एकत्र कर, केंद्रित और नियंत्रित कर बड़े-से-बड़ा काम ले सकते हैं ठीक उसी तरह से आदमी ध्यान के माध्यम से शरीर की सभी कोशिकाओं की ऊर्जा को एकत्र कर ऊर्ध्वगामी

कर लेता है। यदि एक क्षण के लिए भी ऐसा कर पाया तो उतने में ही वह नई शक्ति, नए ओज से भर जाता है। जैसे-जैसे ध्यान की अवधि बढ़ने लगती है, ध्यान टिकने लगता है, वैसे-वैसे उसमें परिवर्तन होने लगता है।

(क) हर व्यक्ति में क्या बसा है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर–हर व्यक्ति में एक समूचा ब्रह्मांड वैसे ही बसा है जैसे छोटे से बीज में पूरा वृक्ष छिपा है। आदमी इस ब्रह्मांड की रचनात्मक और क्रियात्मक इकाई है। इस बात से विज्ञान भी सहमत है।

(ख) वैज्ञानिक किस बात से सहमत हैं? 2

उत्तर–वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि प्रत्येक जीव की क्रिया और स्वभाव दोनों समान होते हैं। किन्हीं भी दो जीवों में एकरूपता नहीं होती। विभिन्न प्राणियों का समावेश ही संसार है।

(ग) कोशिकाओं के बारे में परिच्छेद में क्या बताया गया है? 2

उत्तर–हमारे शरीर में करोड़ों कोशिकाएँ हैं। प्रत्येक का स्वभाव तथा कर्म भिन्न है। प्रत्येक कोशिका जीवित है। कुछ सुप्त अवस्था में हैं तो कुछ जाग्रत। वे कभी विश्राम नहीं करतीं।

(घ) व्यक्ति नए ओज और नई शक्ति से किस प्रकार भर जाता है? 2

उत्तर–व्यक्ति ध्यान के माध्यम से शरीर की सभी कोशिकाओं की ऊर्जा को एकत्र कर ऊर्ध्वगामी कर एक ही क्षण में नई ओज और नई शक्ति से भर जाता है। जैसे-जैसे ध्यान की अवधि बढ़ने लगती है, ध्यान टिकने लगता है, वैसे-वैसे उसमें परिवर्तन होने लगता है।

(ङ) 'वैज्ञानिक' तथा 'एकरूपता' शब्दों में से मूल शब्द तथा प्रत्यय अलग करके लिखिए। 1

उत्तर–विज्ञान + इक तथा एकरूप + ता।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'ध्यान का महत्व'।

6 शीलयुक्त व्यवहार मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है। उत्तम, प्रशंसनीय और पवित्र आचरण ही शील है। शीलयुक्त व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकर है। इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। शीलवान व्यक्ति सबका हृदय जीत लेता है। शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है। इससे आशंका और संदेह की स्थितियाँ कभी उत्पन्न नहीं होतीं। इससे ऐसे सुखद वातावरण का सृजन होता है, जिसमें सभी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को सुप्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्वपूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती।

अधिकारी-अधीनस्थ, शिक्षक-शिक्षार्थी, छोटों-बड़ों आदि सभी के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है। शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। शीलवान अधिकारी या कर्मचारी में आत्मविश्वास की वृद्धि स्वत: ही होने लगती है और साथ ही उनके व्यक्तित्व में शालीनता आ जाती है। इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच, शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं और प्रत्येक वर्ग की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। इस गुण के माध्यम से छोटे-से-छोटा व्यक्ति बड़ों की सहानुभूति अर्जित कर लेता है।

शील कोई दुर्लभ और दैवी गुण नहीं है। इस गुण को अर्जित किया जा सकता है। पारिवारिक संस्कार इस गुण को विकसित और विस्तारित करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। मूल भूमिका तो व्यक्ति स्वयं अदा करता है। चिंतन, मनन, सत्संगति, स्वाध्याय और सतत अभ्यास से इस गुण की सुरक्षा और इसका विकास होता है।

(क) शीलयुक्त व्यवहार की क्या विशेषता है? 2

उत्तर–शीलयुक्त व्यवहार व्यक्ति के लिए हितकर होता है। इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। वह सबका हृदय जीत लेता है। शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है।

(ख) शीलवान व्यक्ति की क्या विशेषता होती है? 2

उत्तर–शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को सुप्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्वपूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती।

(ग) किस-किस के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है? 2

उत्तर–अधिकारी–अधीनस्थ, शिक्षक-शिक्षार्थी, छोटों-बड़ों आदि सभी के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है। शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता।

(घ) शालीनता जैसे गुण की उपस्थिति के क्या फायदे हैं? 2

उत्तर–इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच, शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं तथा कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।

(ङ) शील को विकसित और विस्तारित करने में सबसे बड़ी भूमिका कौन अदा करता है? 1

उत्तर–शील को विकसित और विस्तारित करने में पारिवारिक संस्कार सबसे बड़ी भूमिका अदा करता है। मूल भूमिका व्यक्ति स्वयं अदा करता है।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'शील का जीवन में महत्व'।

7 तानाशाह जनमानस के जागरण को कोई महत्त्व नहीं देता। उसका निर्माण ऊपर से चलता है, किंतु यह लादा हुआ भार-स्वरूप निर्माण हो जाता है। सच्चा राष्ट्र-निर्माण वह है, जो जनमानस की तैयारी पर आधारित रहता है। योजनाएँ शासन और सत्ता बनाएँ, उन्हें कार्यरूप में परिणत भी करें; किंतु साथ ही उन्हें चिर-स्थायी बनाए रखने एवं पूर्णतया उद्देश्य-पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जनमानस उन योजनाओं के लिए तैयार हो। स्पष्ट शब्दों में हम कह सकते हैं, कि सत्ता राष्ट्र-निर्माण रूपी फसल के लिए हल चलाने वाले किसान का कार्य तो कर सकती है, किंतु उसे भूमि जनमानस को ही बनानी पड़ेगी। अन्यथा फसल या तो हवाई होगी या फिर गमलों की फसल होगी; जैसा आजकल 'अधिक अन्न उपजाओ' आंदोलन के कर्णधार भारत के मंत्रिगण कराया करते हैं। इस फसल को किस-किस बुभुक्षित के सामने रखेगी शासन-सत्ता? यह प्रश्न मस्तिष्क में चक्कर ही काटा करता है। इस विवेचन से हमने राष्ट्र-निर्माण में जनमानस की तैयारी का महत्त्व पहचान लिया है। यह जनमानस किस प्रकार तैयार होता है? इस प्रश्न का उत्तर आपको समाचार-पत्र देगा। निर्माण-काल में यदि समाचार-पत्र सत्समालोचना से उतरकर ध्वंसात्मक हो गया तो निश्चित रूप से वह कर्त्तव्यच्युत हो जाता है, किंतु सत्समालोचना निर्माण के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितना निर्माण का समर्थन। जनमानस को तैयार करने के लिए समाचार-पत्र किस नीति को अपनाएँ? यह प्रश्न अपने में एक विवाद लिए हुए है; क्योंकि भिन्न-भिन्न समाचार-पत्र भिन्न-भिन्न नीतियों को उद्देश्य बनाकर प्रकाशित होते हैं। यहाँ तक कि राष्ट्र-निर्माण की योजनाएँ भी उनके मस्तिष्क में भिन्न-भिन्न होती हैं।

(क) सच्चा राष्ट्र-निर्माण किसे कहा गया है? 2

उत्तर–सच्चा-राष्ट्र-निर्माण वही होता है जो जनमानस की तैयारी पर आधारित रहता है। इस बात का भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जनमानस उन सभी योजनाओं के लिए मन से तैयार हो।

(ख) शासन और सत्ता को लेखक ने क्या हिदायत दी है? 2

उत्तर–लेखक के अनुसार शासन और सत्ता योजनाएँ अवश्य बनाएँ, उन्हें कार्यरूप में परिणत भी करें; किंतु साथ ही उन्हें चिर-स्थायी बनाए रखने एवं पूर्णतया उद्देश्य-पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जनमानस उन योजनाओं के लिए तैयार हों।

(ग) राष्ट्र-निर्माण में जनमानस की आवश्यकता पर लेखक क्या कहते हैं? 2

उत्तर–लेखक के अनुसार सत्ता राष्ट्र-निर्माण रूपी फसल के लिए हल चलाने वाले किसान का कार्य तो कर सकती है, किंतु उसे भूमि जनमानस को ही बनाना होगा। अन्यथा फसल या तो हवाई होगी या फिर गमलों की फसल।

(घ) समाचार-पत्र जनमानस किस प्रकार तैयार करता है? 2

उत्तर–जनमानस तैयार करने के लिए समाचार-पत्र सत्समालोचना का सहारा लेकर आगे बढ़े। यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह कर्त्तव्यच्युत हो जाता है, क्योंकि सत्समालोचना निर्माण के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितना निर्माण का समर्थन।

(ङ) 'इत' प्रत्यय से बने दो शब्द परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए। 1

उत्तर–आधारित, प्रकाशित।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'राष्ट्र-निर्माण में जनमानस'।

8 मैं इस निर्णय पर पहुँच चुका हूँ कि उस आदमी से समूची मनुष्य जाति की तरफ़ से प्रार्थना करूँ कि वह यह वसीयत करे कि मेरी लाश जलाई न जाए, बल्कि मेडिकल इंस्टीट्यूट को अध्ययन के लिए दे दी जाए। पूरी बात पढ़ लेने के बाद आप भी इसी निर्णय पर पहुँचेंगे।

एक जगह चार-पाँच आदमी बैठे हैं। बात उसी आदमी की हो रही है, जिसकी गिनती शहर के खास लखपतियों में है।

पहला कहता है—'शहर में किसी को यह गौरव हासिल नहीं है कि उसे उस आदमी ने चाय पिलाई हो, पर मैं उसकी चाय पी चुका हूँ।'

सब भौचक्के रह जाते हैं। कहते हैं—'असंभव! ऐसा हो ही नहीं सकता। उस आदमी ने किसी को धूल का एक कण भी नहीं खिलाया।'

पहला कहता है—'पर यह सच है। उसने प्रसन्नता से मुझे चाय पिलाई।' हुआ यह कि मैं उसके भाई की मृत्यु पर शोक प्रकट करने पहुँचा। तुम लोग जानते ही हो, प्रॉपर्टी को लेकर इसका भाई से मुकदमा चल रहा था। इस बीच भाई की मृत्यु हो गई और प्रॉपर्टी इसे मिल गई। मैंने सोचा, आखिर भाई था। इसे दुख तो हुआ ही होगा। मैं फाटक में घुसा तो उसने पूछा—'कैसे आए?' मैंने उदास होकर कहा—'आपके भाई की मृत्यु हो गई, ऐसा सुना है।' वह बोल पड़ा—'अगर उसकी मौत पर दुख प्रकट करने आए हो तो फाटक के बाहर हो जाओ, पर तुम्हें दुख नहीं है, तो मैं चाय पिला सकता हूँ।' मैंने कहा—'अगर आपको दुख नहीं है, तो मुझे दुख मनाने की क्या पड़ी है। चलो, चाय पिलाओ।' कुत्ते भी रोटी के लिए झगड़ते हैं, पर एक के मुँह में रोटी पहुँच जाए तो झगड़ा खत्म हो जाता है। आदमी में ऐसा नहीं होता। प्रेम से चाय पिलाई जाती है, तो नफ़रत के कारण भी। घृणा भी आदमी को उदार बना देती है।

(क) उसकी गिनती शहर के खास लखपतियों में क्यों होती होगी? 2

उत्तर–उस व्यक्ति ने रूखे और कंजूस व्यवहार के कारण इतनी संपत्ति जमा कर ली होगी, इसलिए उसे खास लखपति माना जाता होगा।

(ख) पहला व्यक्ति उस आदमी के साथ चाय पीकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव क्यों कर रहा था? 2

उत्तर–वह व्यक्ति बहुत कंजूस था। वह किसी को धूल का कण भी नहीं देता था। पहला व्यक्ति ही एकमात्र वह व्यक्ति था, जिसने उसके हाथ की चाय पी थी, इसलिए वह अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा था।

(ग) कुत्ते और मनुष्य में क्या अंतर है? 2

उत्तर–जब एक कुत्ते को रोटी मिल जाती है तो वे झगड़ा समाप्त कर देते हैं, पर इसके विपरीत जब एक मनुष्य को संपत्ति मिल जाती है तो वहाँ झगड़ा व घृणा और बढ़ जाती है।

(घ) 'पूरी बात, पढ़ लेने पर आप भी इसी निर्णय पर पहुँचेंगे।' क्या आप लेखक से सहमत हैं? कैसे? 2

उत्तर–हाँ, हम लेखक से सहमत हैं, क्योंकि प्राय: मनुष्यों का व्यवहार इतना रूखा नहीं होता। उसकी लाश पर शोध करके उसके असामान्य व्यक्तित्व के कारणों का पता लगाया जा सकता है।

(ङ) पाँचों की बात सुनकर लेखक ने क्या निर्णय लिया? 1

उत्तर–पाँचों की बात सुनकर लेखक को वह आदमी मनुष्य जाति की अमूल्य निधि लगा, जिस पर मनोवैज्ञानिक दिमाग का अध्ययन कर सकेंगे।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'घृणा से उपजा प्रेम'।

9 काव्य-कला गतिशील कला है; किंतु चित्रण-कला स्थायी कला है। काव्य में शब्दों की सहायता से क्रियाओं और घटनाओं का वर्णन किया जा सकता है। कविता का प्रवाह समय द्वारा बँधा हुआ नहीं है। समय और कविता दोनों ही प्रगतिशील हैं; इसलिए कविता समय के साथ परिवर्तित होने वाली क्रियाओं, घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन समुचित रूप से कर सकती है। चित्रण-कला स्थायी होने के कारण समय के केवल एक पल को—पदार्थों के केवल एक रूप को—अंकित कर सकती है। चित्रण-कला में केवल पदार्थों का चित्रण हो सकता है। कविता में परिवर्तनशील परिस्थितियों, घटनाओं और क्रियाओं का वर्णन हो सकता है, इसलिए कहा जा सकता है कि कविता का क्षेत्र चित्रकला से विस्तृत है। कविता द्वारा व्यक्त किए हुए एक-एक भाव और कभी-कभी कविता के एक शब्द के लिए अलग चित्र उपस्थित किए जा सकते हैं। किंतु पदार्थों का अस्तित्व समय से परे तो है नहीं, उनका भी रूप समय के साथ बदलता रहता है और ये बदलते हुए रूप बहुत अंशों में समय का प्रभाव प्रकट करते हैं। इसी प्रकार क्रिया और गति, बिना पदार्थों के आधार के संभव नहीं। इस भाँति किसी अंश में कविता पदार्थों का सहारा लेती है और चित्रण-कला प्रगतिवान समय द्वारा प्रभावित होती है, पर यह सब गौण रूप से होता है।

हमने लिखा है कि पदार्थों का चित्रण चित्रकला का काम है, कविता का नहीं। इस पर कुछ लोग आपत्ति कर सकते हैं कि काव्य-कला के माध्यम से अधिक शब्द सर्वशक्तिमान हैं, उनसे जो काम चाहे लिया जा सकता है; पदार्थों के वर्णन में वे उतने ही काम के हो सकते हैं जितने क्रियाओं के, पर यह स्वीकार करते हुए भी कि शब्द बहुत कुछ करने में समर्थ हैं, यह नहीं माना जा सकता कि वे पदार्थों का चित्रण उसी सुंदरता से कर सकते हैं जिस सुंदरता से चित्र।

(क) कविता का क्षेत्र चित्रकला से किस प्रकार विस्तृत है ? 2

उत्तर–चित्रण-कला स्थायी होने के कारण पदार्थों के केवल एक रूप को तथा समय के एक पल को ही चित्रित कर सकती है, जबकि काव्यकला गतिशील होने के कारण उसमें परिवर्तनशील परिस्थितियों, घटनाओं और क्रियाओं का वर्णन हो सकता है।

(ख) 'पदार्थों का चित्रण चित्रकला का काम है, कला का नहीं।' कैसे ? 2

उत्तर–शब्द पदार्थों का चित्रण उतनी सुंदरता से नहीं कर सकते जितना चित्र कर सकते हैं। पदार्थों को शब्दों द्वारा वर्णित करके चित्र जैसा सुसंबद्ध प्रभाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता।

(ग) काव्य-कला और चित्रकला में मुख्य अंतर क्या है ? 2

उत्तर–काव्य-कला गतिशील है, जबकि चित्रण-कला स्थायी कला है।

(घ) इस पर कुछ लोगों को आपत्ति क्यों हो सकती है कि पदार्थों का चित्रण चित्रकला का काम है, कविता का नहीं ? 2

उत्तर–आपत्ति का कारण उनका यह सोचना हो सकता है कि काव्य-कला के माध्यम से अधिक, शब्द सर्वशक्तिमान होते हैं, वे क्रियाओं के समान पदार्थों के वर्णन भी प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। अत: कविता भी चित्रकला के समान पदार्थों का चित्रण कर सकती है।

(ङ) चित्र को देखकर मन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? 1

उत्तर–चित्र को देखते ही हम चित्र को भूलकर चित्रित पदार्थ को अपनी आँखों के सामने देखने लगते हैं।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'काव्य कला की विशेषता'।

10 हरिद्वार स्टेशन पर श्यामलाकांत जी का बड़ा लड़का दीनानाथ मुझे लेने आया था। उसे अपनी पढ़ाई पूरी किए दो वर्ष हो गए हैं, तभी से नौकरी की तलाश में भटक रहा है। मैंने पूछा—'अब तो जगह-जगह रोज़गार कार्यालय खुल गए हैं, उनकी सहायता क्यों नहीं लेते ?' कहने लगा—चाचा जी वहाँ भी गया था, पूरे दिन लाइन में खड़ा रहने पर जब मेरी बारी आई तो अफ़सर बोला—'भाई! नाम तो तुम्हारा लिख लेता हूँ, पर जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा मत करना। तुम्हारी योग्यता के हज़ारों व्यक्ति पहले से इस कार्यालय में नाम दर्ज करा चुके हैं।' मैं सोचने लगा जब एक छोटे शहर का यह हाल है, तो पूरे देश में बेरोज़गारों की कितनी भीड़ भटक रही होगी ?

घर पहुँचा तो छोटे-से मकान में सामान की ठूसमठास और बच्चों की भीड़ देखकर मेरा दम घुटने लगा। मैंने श्यामला बाबू से पूछा—'क्या तुम्हारे पास यही दो कमरे हैं ?' वे बोले—'क्या करूँ मित्र! दो वर्ष पहले इस शहर में आया था। तभी से मकान की तलाश में भटक रहा हूँ।

अब यही देखिए न! मेरी तबीयत भी ढीली ही रहती है। सोचा था विवाह के कपड़े दरज़ी से सिलवा लूँगा। बड़े बेटे को दरज़ी के यहाँ भेजा, लेकिन वह जिस किसी भी दुकान पर गया, हर दरज़ी ने पहले से सिलने आए कपड़ों का ढेर दिखाकर अपनी मज़बूरी ज़ाहिर कर दी। पहले ग्राहक का स्वागत होता था, अब उसे भी चिरौरी-सी करनी पड़ती है, फिर भी समय पर काम नहीं होता। दुकानें पहले से कहीं अधिक खुल गई हैं, लेकिन ग्राहकों की बढ़ती हुई भीड़ के लिए वे अब भी कम पड़ रही हैं।'

(क) दीनानाथ की बात सुनकर अफसर ने क्या कहा? 2

उत्तर–अफसर ने कहा–भाई! नाम तो तुम्हारा लिख लेता हूँ, पर जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा मत करना। तुम्हारी योग्यता के हजारों व्यक्ति पहले से इस कार्यालय में नाम दर्ज़ करा चुके हैं।

(ख) श्यामलाकांत ने लड़के को क्या सुझाव दिया और लड़के ने क्या कहा? 2

उत्तर–श्यामलाकांत ने लड़के से कहा कि अब तो जगह-जगह रोजगार कार्यालय खुल गए हैं, उनकी सहायता लीजिए। इस बात पर लड़के ने उन्हें अफ़सर द्वारा कही गई बात बताई।

(ग) श्यामलाकांत के घर पहुँचकर लेखक का दम क्यों घुटने लगा था? 2

उत्तर–लेखक का दम घुटने लगा था, क्योंकि श्यामलाकांत के छोटे से घर में सामान का अंबार व केवल बच्चों की भीड़ ही दिखाई दे रही थी। दो कमरे के घर में पैर रखने को भी जगह नहीं थी।

(घ) शादी के लिए कपड़े क्यों नहीं सिल पा रहे थे? 2

उत्तर–हर दरज़ी के पास पहले से ही सिलने वाले कपड़ों का ढेर लगा था। सबके पास समय की कमी थी। ग्राहकों की बढ़ती हुई भीड़ के लिए दुकानें अब भी कम पड़ रही थीं।

(ङ) सब समस्याओं का कारण क्या है? 1

उत्तर–सब समस्याओं का कारण बढ़ती हुई अनियंत्रित आबादी है।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'बढ़ती जनसंख्या : एक अभिशाप'।

11 यह वास्तव में आश्चर्य का विषय है कि हम अपने साधारण कार्यों के लिए करने वालों में जो योग्यता देखते हैं, वैसी योग्यता भी शिक्षकों में नहीं ढूँढ़ते। जो हमारी बालिकाओं, भविष्य की माताओं का निर्माण करेंगे उनके प्रति हमारी उदासीनता को अक्षम्य ही कहना चाहिए। देश-विशेष, समाज-विशेष तथा संस्कृति-विशेष के अनुसार किसी के मानसिक विकास के साधन और सुविधाएँ उपस्थित करते हुए उसे विस्तृत संसार का ऐसा ज्ञान करा देना ही शिक्षा है, जिससे वह अपने जीवन में सामंजस्य का अनुभव कर सके और उसे अपने क्षेत्र-विशेष के साथ ही बाहर भी उपयोगी बना सके। यह महत्त्वपूर्ण कार्य ऐसा नहीं है जिसे किसी विशिष्ट संस्कृति से अनभिज्ञ चंचल चित्त और शिथिल चरित्र वाले व्यक्ति सुचारु रूप से संपादित कर सकें, परंतु प्रश्न यह है कि इस महान उत्तरदायित्व के योग्य व्यक्ति कहाँ से लाए जाएँ? पढ़ी-लिखी महिलाओं की संख्या उँगलियों पर गिनने योग्य है और उनमें भी भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षिताएँ बहुत कम हैं, जो हैं उनके जीवन के ध्येयों में इस कर्त्तव्य की छाया का प्रवेश भी निषिद्ध समझा जा सकता है। कुछ शिक्षिका वर्ग की उच्छृंखलता समझी जाने वाली स्वतंत्रता के कारण और कुछ अपने संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण अन्य महिलाएँ अध्यापन कार्य तथा उसे जीवन का लक्ष्य बनाने वालियों को अवज्ञा और अनादर की दृष्टि से देखने लगी हैं, अत: जीवन के आदि से अंत तक कभी किसी अवकाश के क्षण में उनका ध्यान इस आवश्यकता की ओर नहीं जाता, जिसकी पूर्ति पर उनकी संतान का भविष्य निर्भर है। अपने सामाजिक दायित्वों को समझा जाना चाहिए। यह समाज में आज सबसे बड़ी कमी है।

(क) हम कैसी योग्यता भी अपने शिक्षकों में नहीं ढूँढ़ते? 2

उत्तर–साधारण से लोगों में पाई जाने वाली योग्यता भी हम अपने शिक्षकों में नहीं ढूँढ़ते।

(ख) शिक्षा वास्तव में क्या है? 2

उत्तर–मानसिक विकास के साधन उपलब्ध कराते हुए विस्तृत संसार का ज्ञान करा देना जिससे वह अपने जीवन में सामंजस्य का अनुभव कर सके उसे शिक्षा कहते हैं।

(ग) भारत में शिक्षित महिलाओं की संख्या कितनी है? 2

उत्तर–भारत में शिक्षित महिलाओं की संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती है।

(घ) आज समाज में सबसे बड़ी कमी क्या है? 2

उत्तर–आज समाज में सबसे बड़ी कमी है कि लोग व्यक्तिगत स्वार्थों को महत्त्व देते हैं, सामाजिक दायित्व को नहीं।

(ङ) 'ता' प्रत्यय से बनने वाले दो शब्द गद्यांश से छाँटकर लिखिए। 1

उत्तर–स्वतंत्रता, आवश्यकता।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'स्त्रिओं का सामाजिक दायित्व'।

12 जनसंख्या की वृद्धि भारत के लिए आज एक विकट समस्या बन गई है। यह समाज की सुख-संपन्नता के लिए एक भयंकर चुनौती है। महानगरों में कीड़े-मकोड़ों की भाँति अस्वास्थ्यकर घोंसलों में आदमी भरा पड़ा है। न धूप, न हवा, न पानी, न दवा। पीले-दुर्बल, निराश चेहरे। यह संकट अनायास नहीं आया है। संतान को ईश्वरीय विधान और वरदान माननेवाला भारतीय समाज ही इस रक्तबीजी संस्कृति के लिए ज़िम्मेदार है। चाहे खिलाने को रोटी और पहनाने को वस्त्र न दें, शिक्षा को शुल्क और रहने को छप्पर न हो, लेकिन अधभूखे, अधनंगे बच्चों की कतार खड़ी करना हर भारतीय अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष एक आस्ट्रेलिया यहाँ की जनसंख्या में जुड़ता चला जा रहा है। यदि इस जनवृद्धि पर नियंत्रण न हो सका तो हमारे सारे प्रयोजन और आयोजन व्यर्थ हो जाएँगे। धरती पर पैर रखने की जगह नहीं बचेगी।

जब किसी समाज के सदस्यों की संख्या बढ़ती है, तो उसे उनके भरण-पोषण के लिए जीवनोपयोगी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है। परंतु वस्तुओं का उत्पादन तो गणितीय क्रम से होता है और जनसंख्या रेखागणित की दर से बढ़ती है। फलस्वरूप जनसंख्या और उत्पादन दर में चोर-सिपाही का खेल शुरू हो जाता है। आगे-आगे जनसंख्या दौड़ती है और पीछे-पीछे उत्पादन-वृद्धि। वास्तविकता यह है कि उत्पादन-वृद्धि के सारे लाभ को जनसंख्या की वृद्धि व्यर्थ करा देती है। देश वहीं-का-वहीं पड़ा रहता है। वस्तुएँ अलभ्य हो जाती हैं। महँगाई निरंतर बढ़ती है। जीवन-स्तर गिरता जाता है। गरीबी, अशिक्षा, बेकारी बढ़ती चली जाती है।

बड़ा परिवार एक 'ओवर लोडेड' गाड़ी के समान होता है, जिसे खींचने वाले कमाऊ घोड़े अपनी ज़िंदगी की रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता में होम कर देते हैं, फिर भी पेट खाली-के-खाली, परिजन नंगे-के-नंगे दिखाई देते हैं। पारिवारिक जीवन क्लेशमय हो जाता है। आखिर समाज के मंगल की इस विनाशिका जनसंख्या-वृद्धि से कैसे मुक्ति मिले? सीधा-सा उत्तर है कि जनसंख्या पर नियंत्रण हो। कम संतानें पैदा हों। इस देश के रूढ़िग्रस्त और अंधविश्वासी समाज को यह विचार चौंकाने वाला और ईश्वरीय अपराध तुल्य प्रतीत होना ही चाहिए, क्योंकि उन्हें तो बताया गया है कि संतान तो भगवान की देन है।

(क) जनसंख्या में वृद्धि आज विकट समस्या कैसे बन गई है? 2

उत्तर–बढ़ती जनसंख्या से आज हमारे समाज की सुख-संपन्नता भी खोती जा रही है। महानगरों में कीड़े-मकोड़ों की भाँति अस्वास्थ्यकर घोंसलों में रहते आदमी, न धूप, न हवा, न पानी, न दवा।

(ख) भारत में बढ़ती जनसंख्या के लिए कौन ज़िम्मेदार है? 2

उत्तर–संतान को ईश्वरीय विधान और वरदान मानने वाला भारतीय समाज ही भारत में बढ़ती जनसंख्या के लिए ज़िम्मेदार है।

(ग) जनसंख्या और महँगाई में क्या रिश्ता है? 2

उत्तर–जनसंख्या बढ़ने पर उत्पादन वृद्धि पीछे रह जाती है। उत्पादन वृद्धि के सारे लाभ को जनसंख्या की वृद्धि व्यर्थ कर देती है। वस्तुएँ अलभ्य हो जाती हैं और महँगाई निरंतर बढ़ती जाती है।

(घ) बड़ा परिवार सुविधाजनक क्यों नहीं है? 2

उत्तर–बड़ा परिवार सुविधाजनक इसलिए नहीं है, क्योंकि इसे खींचने वाले कमाऊ घोड़े अपनी ज़िंदगी को रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता में होम कर देते हैं। फिर भी सभी को सुख प्राप्त नहीं होता। पारिवारिक जीवन क्लेशमय हो जाता है।

(ङ) संतान को किसकी देन बताया गया है? 1

उत्तर–संतान को भगवान की देन बताया गया है।

(च) परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर–बढ़ती जनसंख्या : एक अभिशाप।

13 सद्वृत्ति, उत्तम स्वभाव, सद्व्यवहार, आचरण, हृदय की कोमलता आदि गुणों से युक्त व्यक्ति को ही हम शीलवान कह सकते हैं। ये ही सद्गुण जीवन के लिए परम आवश्यक है। मानव को मानव बनाने वाली यही पूर्णता पालि में 'पारमिता' के नाम से जानी जाती है। मनुष्य में शील का होना आवश्यक ही नहीं, वरन इसकी पूर्णता भी आवश्यक है।

शीलयुक्त व्यवहार मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है। उत्तम, प्रशंसनीय और पवित्र आचरण ही शील है। शीलयुक्त व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकर है। इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। शीलवान व्यक्ति सबका हृदय जीत लेता है। शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है। इससे आशंका और संदेह की स्थितियाँ कभी उत्पन्न नहीं होतीं। इससे ऐसे सुखद वातावरण का सृजन होता है, जिसमें सभी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को सुप्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्वपूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती।

अधिकारी-अधीनस्थ, शिक्षक-शिक्षार्थी, छोटों-बड़ों आदि सभी के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है। शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। शीलवान अधिकारी या कर्मचारी में आत्मविश्वास की वृद्धि स्वतः ही होने लगती है और साथ ही उनके व्यक्तित्व में शालीनता आ जाती है। इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच, शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं और प्रत्येक वर्ग की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। इस गुण के माध्यम से छोटे-से-छोटा व्यक्ति बड़ों की सहानुभूति अर्जित कर लेता है।

(क) कैसे व्यक्ति को हम शीलवान कह सकते हैं? 2

उत्तर–जो व्यक्ति सद्वृत्ति, उत्तम स्वभाव, सद्व्यवहार, आचरण, हृदय में कोमलता आदि गुणों से युक्त हो उसे शीलवान कह सकते हैं।

(ख) शीलयुक्त व्यवहार से मनुष्य को क्या लाभ होते हैं? 2

उत्तर–शीलयुक्त व्यवहार से मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। वह लोगों का हृदय जीत लेता है, आशंका व संदेह की स्थितियाँ खत्म होती हैं तथा सुखद वातावरण का सृजन होता है।

(ग) शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो उसे क्या हानि होगी? 2

उत्तर–शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता।

(घ) शालीन व्यवहार से समाज में क्या परिवर्तन देखे जा सकते हैं? 2

उत्तर–इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच, शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं और प्रत्येक वर्ग की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।

(ङ) शील गुण की क्या विशेषता है? 1

उत्तर–इस गुण के होने पर छोटे-से-छोटा व्यक्ति बड़ों की सहानुभूति अर्जित कर लेता है।

(च) परिच्छेद का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर–'शीलं परं भूषणम्'।

14 सत्य हमारी कल्पना से गढ़ी गई कथाओं से कहीं अधिक विचित्र और विस्मयकारी होता है, इस उक्ति का यह आदमी चलता-फिरता दृष्टांत है। मैं जब भी नैनीताल जाता हूँ, इनसे ज़रूर मिलता हूँ। अजीब-सा सुकून मिलता है मुझे इनके पास बैठकर। कितने सरल-निष्कपट, कितने विनोदी और ज़िंदादिल! कौन कहेगा, इस व्यक्ति ने ऐसी मर्मांतिक पीड़ाएँ झेली हैं! मुझे मेरे भाई ने बताया था, जो पिछले पचीस बरस से इनका सहयोगी है। एक ही स्कूल में पढ़ाते हैं दोनों। जन्म देने वाली माँ ही जिसके प्रति इतनी निष्ठुर रही हो–अविश्वसनीयता की हद तक–उसके दुख की कहीं कोई थाह मिलेगी? इस दुख को पचा चुकने के बाद फिर ऐसा कौन-सा दुख बचता है जो आपको तोड़ सके!

माँ की ममता से वंचित (मातृहीन बालक की वंचना से भी कहीं अधिक तोड़ने वाली वेदना), पत्नी की सहानुभूति से भी वंचित, समाज में भी अपनी योग्यता और अर्जित सामर्थ्य से नीचे, बहुत नीचे के स्तर पर पूरी ज़िंदगी गुज़ार देने को अभिशप्त यह व्यक्ति आखिर किस पाताल-स्रोत से अपनी जिजीविषा और मानसिक संतुलन

खींच पाता होगा! अच्छे-खासे यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसरों को लजा दे, ऐसा इल्म और तेज़ दिमाग है इस स्कूल मास्टर का, पर उस असामान्य दिमाग का परिचय अपने-आप नहीं मिलेगा। बहुत उकसाए कोई, तभी मिलेगा। नहीं, उन्हें अपने इल्म के प्रदर्शन में रत्ती भर भी रुचि नहीं। अपने ज़माने में हॉकी के बेहतरीन खिलाड़ी रह चुके वे, आज भी उसी युवकोचित उत्साह के साथ घंटों मैच देखते हैं–पूरे तादात्म्य और 'पैशन' के साथ। मैं इंग्लैंड जा रहा हूँ और एक वेल्श मित्र के यहाँ ठहरूँगा–यह पता चलने पर उन्होंने वेल्श लोगों के इतिहास और सांस्कृतिक विशेषताओं के बारे में ऐसी-ऐसी बातें बताईं कि मैं दंग रह गया। केल्टिक लिटरेचर के बारे में उन्हें वह सब पता था, जो कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग का अध्यक्ष भी न जानता होगा। कब पढ़ा होगा उन्होंने यह सब! और इस तरह की समझ सिर्फ़ पढ़ने से नहीं आती, गुनने से आती है। जाने किस ज़माने के बी०ए० भर तो हैं वे। घर की हालत अच्छी होती, एम०ए० कर पाते तो किसी यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर होते। मगर ... क्या हुआ होता, यह वे शायद खुद भी नहीं सोचते। किसी तरह की शिकायत या कुंठा उनके भीतर नहीं।

(क) सत्य कल्पना से अधिक विचित्र होता है, इसका बोध लेखक को कब हुआ? 2

उत्तर–जब लेखक ने अपने भाई के साथ नैनीताल के एक स्कूल में पढ़ाने वाले उसके सहयोगी को देखा तो उन्हें ऐसा लगा। लेखक को इनके पास बैठकर अजीब-सा सुकून मिलता था। वे सरल-निष्कपट, विनोदी और ज़िंदादिल थे।

(ख) उस अध्यापक ने कैसे दुख झेले थे? 2

उत्तर–अध्यापक माँ की ममता तथा पत्नी की सहानुभूति से वंचित रहा था तथा अपनी योग्यता और सामर्थ्य से बहुत नीचे के स्तर की ज़िंदगी गुजार देने को अभिशप्त वह जीवन को जीने की शक्ति पता नहीं कहाँ से लाता था।

(ग) मास्टर जी के बौद्धिक स्तर का परिचय क्यों नहीं मिल पाता था? 2

उत्तर–उन्हें अपने ज्ञान के प्रदर्शन में कोई रुचि नहीं थी, स्कूल में भी उसकी आवश्यकता नहीं थी, अत: उनके बौद्धिक स्तर का परिचय नहीं मिल पाता था। यदि कोई उन्हें बहुत उकसाए तो, यह संभव हो सकता था।

(घ) लेखक मास्टर जी की किस जानकारी से दंग रह गया? 2

उत्तर–वेल्श लोगों के इतिहास और सांस्कृतिक विशेषताओं के बारे में मास्टर जी की जानकारी से दंग रह गया। केल्टिक लिटरेचर के बारे में उन्हें वह सब पता था, जो कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग का अध्यक्ष भी न जानता होगा।

(ङ) यह गद्यांश साहित्य की कौन-सी विधा है? 1

उत्तर–डायरी लेखन।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'सत्य का विचित्र और विस्मयकारी रूप'।

15 जब से आदमी ने होश संभाला, अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का निर्माण करता गया। मेरे विचार से आदिकाल से ही आदिमानव महान थे, जिन्होंने आग, पहिया और कृषि का आविष्कार किया। पहिया एक ऐसा मूलभूत आधार उपकरण सिद्ध हुआ, जिसके बिना किसी भी उपकरण की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रत्येक चल वस्तु या उपकरण में हर वैज्ञानिक तथा आविष्कारक ने आदिमानव द्वारा आविष्कृत सरल लेकिन बहुत प्रयोजनशील अनुसंधान की सहायता ली। आज का युग प्रतिस्पर्द्धा का युग है और प्रतिस्पर्द्धा सभी वर्गों, विषयों, विभागों और क्षेत्रों में व्याप्त है। प्रस्तुत युग में विज्ञान का सर्वाधिक बोलबाला है।

सृष्टि की उत्पत्ति से संबंधित एक धारणा सन 1905 में प्रस्तुत की गई जो महान वैज्ञानिक आइंस्टीन के सापेक्षवाद पर आधारित थी। बेल्जियम के वैज्ञानिक ऐवे लमेत्रे के अनुसार ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक विशाल मौलिक अणु से हुई है। प्रस्तुत महाअणु के विस्फोट से इसके अंदर विद्यमान सभी पदार्थ इधर-उधर छितरा गए और ब्रह्मांड को अपना मूल वर्तमान रूप मिला।

इस तरह ब्रह्मांड के सभी तत्व धीरे-धीरे प्रकाश में आए। तारों और ग्रहों के निर्माण में करोड़ों वर्ष लगे। मनुष्य के वर्तमान स्वरूप में आने में लगभग 30 अरब वर्षों का समय लगा। अर्थात् कुछेक वैज्ञानिकों का अभिमत इससे बिल्कुल भिन्न है। उनके अनुसार ब्रह्मांड में कहीं-न-कहीं पदार्थ राशि का निर्माण होता रहता है, जो स्वत: प्रेरित है। ब्रह्मांड के विस्तार की दर के आधार पर हिसाब लगाया गया था कि ब्रह्मांड का जन्म 7 अरब वर्ष से

20 अरब वर्ष के बीच होना चाहिए। शिकागो विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों ने गणना की है कि ब्रह्मांड का जन्म 20 अरब वर्ष पहले हुआ था।

आकाशगंगा का उदय ब्रह्मांड के जन्म से 10-11 करोड़ वर्षों बाद हुआ माना जाता है। इस तरह गुणा-भाग और जोड़-तोड़ से वैज्ञानिकों का अनुमान है कि ब्रह्मांड का जन्म लगभग 20 अरब वर्ष पहले सम्पन्न हुआ।

(क) ब्रह्मांड के विस्तार को लेकर भिन्न-भिन्न वैज्ञानिकों के क्या मत हैं? 2

उत्तर–कुछेक वैज्ञानिक कहते हैं कि ब्रह्मांड में कहीं-न-कहीं पदार्थ राशि का निर्माण होता रहता है, जो स्वत: प्रेरित है। कुछ वैज्ञानिकों का सोचना था कि ब्रह्मांड का जन्म 7 अरब वर्ष से 20 अरब वर्ष के बीच होना चाहिए। कुछेक वैज्ञानिक ब्रह्मांड का जन्म 20 अरब वर्ष पहले भी मानते हैं।

(ख) पहिए के आविष्कार के आधार पर लेखक क्या कह रहे हैं? 2

उत्तर–लेखक के अनुसार पहिया एक ऐसा मूलभूत आधार उपकरण सिद्ध हुआ, जिसके बिना किसी भी उपकरण की कल्पना नहीं की जा सकती। लेखक के अनुसार प्रत्येक चल वस्तु में मानव के द्वारा आविष्कार की गई सरल लेकिन प्रयोजनमूलक वस्तुओं की सहायता लेकर जीवन को सरल बनाया गया।

(ग) वैज्ञानिक ऐवे लमेत्रे ने ब्रह्मांड के बारे में क्या जानकारी दी? 2

उत्तर–बेल्जियम के वैज्ञानिक ऐवे लमेत्रे ने बताया था कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक विशाल मौलिक अणु से हुई है। प्रस्तुत महाअणु के विस्फोट से इसके अंदर विद्यमान सभी पदार्थ इधर-उधर छितरा गए और ब्रह्मांड को अपना मूल वर्तमान रूप मिला।

(घ) वैज्ञानिकों का ब्रह्मांड के वर्तमान स्वरूप के बारे में क्या कहना है? 2

उत्तर–महाअणु के विस्फोट के बाद में ब्रह्मांड के सभी तत्व धीरे-धीरे प्रकाश में आए। तारों और ग्रहों के निर्माण में करोड़ों वर्ष लगे। मनुष्य के वर्तमान स्वरूप में आने में लगभग 30 अरब वर्षों का समय लगा।

(ङ) लेखक के अनुसार आदिकाल से ही मानव क्यों महान थे? 1

उत्तर–जब से आदमी ने होश संभाला अपनी आवश्यकताओं का निर्माण करना आरंभ कर दिया। उन्होंने अपनी आवश्यकता के अनुसार आग, पहिया और कृषि का आविष्कार कर लिया था।

(च) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर–'अंतरिक्ष-विज्ञान'।

• अभ्यास-प्रश्न •

निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1 जब बंगला के श्रेष्ठ कवि रविंद्रनाथ ठाकुर को उनकी पुस्तक 'गीतांजलि' पर नोबेल पुरस्कार मिला, तब से हिंदी कवियों को भी उसी प्रकार की रचनाएँ लिखने की प्रेरणा मिली और अर्थ-अनर्थ का बहुत विवेक किए बिना अनेक कवियों ने अनेक रहस्यवादी रचनाओं का सृजन किया, जिनमें से अधिकांश शीघ्र ही काल के प्रवाह में बहकर समाप्त हो गईं। केवल गिनती के दो-चार कवि इस क्षेत्र में टिक पाए।

परंपरागत अर्थों में रहस्यवाद आत्मा और परमात्मा के संबंध में रचित काव्य है, पर आज की रहस्यवादी रचनाओं को समग्रत: ऐसा नहीं कहा जा सकता। इस सृष्टि में आकर मनुष्य अपने चारों ओर जो कुछ देखता है, वह एक विचित्र रहस्य से आवृत है। बड़े-बड़े मनीषी भी युगों तक खोज करके इस समस्त विश्व-प्रपंच के रहस्य का उद्घाटन नहीं कर पाए हैं, किंतु दीर्घकाल तक विचार और साधना करने के पश्चात् उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि इस समस्त संसार का संचालन किसी अदृश्य सत्ता द्वारा हो रहा है। इस अदृश्य सत्ता को ब्रह्म या परमात्मा भी कहा जा सकता है। उस अदृश्य सत्ता को खोजने और उससे मिलने के लिए वे साधक बेचैन हो उठे। जब एक बार उस सत्ता का ज्ञान हो गया, फिर उससे मिले बिना चैन कहाँ? ऐसी दशा में विरह की व्याकुलता का वर्णन अनेक साधकों ने बड़े मर्मस्पर्शी शब्दों में किया है, किंतु इसमें कठिनाई यह है कि जिस ब्रह्म या अज्ञात सत्ता के प्रेम में वे पागल हो उठे हैं; उसके गुणों का या रूप का कुछ वर्णन कर पाना संभव नहीं है। सभी साधकों ने एक स्वर से यही बात कही है वह बुद्धि और तर्क से परे हैं। उसे इंद्रियों द्वारा जाना नहीं जा सकता, किंतु हृदय द्वारा उसका अनुभव किया जा सकता है, परंतु वह अनुभव गूँगे के गुड़ के समान है। उस अनुभव का आनंद तो लिया जा सकता है, किंतु उसका वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता। उसके लिए उपयुक्त शब्द ही भाषा में नहीं।

(क) हिंदी कवियों को रहस्यवादी रचनाएँ लिखने की प्रेरणा कैसे मिली? 2

(ख) रहस्यवाद क्या है? 2

(ग) चिंतन-मनन के बाद मनीषियों को क्या अनुभव हुआ? 2

(घ) ब्रह्म का वर्णन करने में कठिनाई क्या है? 2

(ङ) 'गूँगे का गुण' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करें? 1

(च) गद्यांश का शीर्षक लिखिए। 1

2 इंग्लैंड में होमर लेन एक चिंतनशील व्यक्ति था। उसे प्रेम शक्ति पर अटूट विश्वास था। उसकी प्रयोगसिद्ध अनुभूत वाणी थी। प्रेम कठोरता को कोमलता में बदल सकता है। वह पत्थर को नवनीत, आग को पानी, परुष को पुरुष, दानव को मानव बना सकता है।

वह कठोरतम अपराधी बालक को आश्रम में भर्ती करता था। वह धीरे-धीरे प्रेमपूर्ण हल्की थपकियों से उसके कोमल अंकुरों को सहलाता था। इससे उसकी कठोरता शनैः-शनैः सूख जाती थी और कोमलता अंकुरित हो उठती थी।

एक बार एक कोर्ट में ऐसा लड़का उपस्थित किया गया, जो तीन बार चोरी कर चुका था। न्यायाधीश ने उसे तीन वर्ष की जेल का हुक्म दिया।

जब होमर को ज्ञात हुआ। वह कोर्ट में पहुँचा। उसे आश्रम में भर्ती करने की माँग की। न्यायाधीश ने उसके लिए स्वीकृति दी। होमर उस उद्दंड लड़के जॉन को अपने साथ आश्रम में ले आया, लेकिन उसकी तोड़-फोड़ की वृत्ति से आश्रम के सारे लड़के कुछ दिनों में ही तंग आ गए।

एक दिन छात्र एवं अध्यापक शिकायत के प्रश्न लेकर होमर लेन के पास आए और कहने लगे आप यह आफ़त की पुड़िया यहाँ कहाँ से ले आए? अगर आपको आश्रम चलाना है, तो इसे आश्रम से मुक्ति-पत्र दे दीजिए।

होमर ने कहा—इसलिए मुझे इस पर अनुकंपा आती है। ऐसा ज्ञात होता है इसे प्रेम नहीं मिला। जिसे प्रेम नहीं मिलता है वह नीरस, रूखा, कठोर एवं उद्दंड बन जाता है। मुझे विश्वास है। उसे प्रेम का प्याला पिलाने से वह शिष्ट, समझदार एवं शालीन बन जाएगा।

होमर उसे अपने घर ले आया है। भोजन के समय होमर ने कहा—जॉन, अपने खाने की प्लेटें ले आओ। उनको टेबल पर लगा दो।

जॉन ने विकृत आकृति में उत्तर दिया—'क्या मैं तुम्हारा गुलाम हूँ, जो मैं तुम्हारी गुलामी करता फिरूँ?'

होमर—अच्छा—मैं इन प्लेटों को ले आता हूँ। कल तुम उठा लोगे?

जॉन—'वाह, मैं क्यों उठाऊँगा? यह नौकरों का काम है।'

होमर—तुम खानदानी बालक हो। कल अपनी खानदानी का परिचय दोगे ना?

जॉन बाहर से पत्थर लेकर आया। वह उससे प्लेटें फोड़ने लगा।

(क) प्रेम में क्या विशेषता होती है? 2

(ख) होमर लेन क्या करता था? 2

(ग) होमर ने किसे आश्रम में भर्ती करने की माँग की? 2

(घ) छात्र एवं अध्यापक होमर के पास क्या शिकायत लेकर पहुँचे? 2

(ङ) होमर ने जॉन से क्या कहा? 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

3 साहित्यकार को जीवन के संबंध में स्वतंत्र विचार रखने और भिन्न-भिन्न साहित्य-सारणियों में चलने के अधिक-से-अधिक अधिकार मिलने चाहिए। उसके अध्ययन, उसकी परिस्थिति और उसके विकास को हम सामयिक आवश्यकताओं और उस संबंध की अपनी धारणाओं से ही नहीं परख सकते। हमें उसकी दृष्टि से देखना और उसकी अनुभूतियों से सहानुभूति रखना सीखना होगा। हम कवियों और लेखकों के नैतिक और चरित्र संबंधी स्खलन ही न देखें, प्रचलित सामाजिक अथवा राजनीतिक कार्यक्रम से उनकी तटस्थता की ही निंदा न करें, यदि वास्तव में उन्होंने अपनी साहित्य-सृष्टि द्वारा नवीन शैली, नवीन सौंदर्य-कल्पना और भव्य भाव-जगत की रचना की है। रवि बाबू स्वदेश प्रेम को संपूर्ण मनुष्यता और

विश्वप्रेम के धरातल पर उठाकर रखने में समर्थ हुए हैं, उन्होंने स्वदेश की प्रादेशिक सीमा के जड़त्व का नाश किया है—अपनी उदार अनुभूतियों और अपनी विराट कल्पना की सहायता से। उन्होंने संसार की शांति और साम्य के लिए एक व्यापक आदर्श की सृष्टि की है, जिसकी संभावनाएँ भविष्य में अपार हैं। इसके लिए यदि हम उनके कृतज्ञ नहीं होते और यह ज़रूरी समझते हैं कि वे जनता के नेता का रूप धारण करें, तो यह हमारी ही संकीर्ण भावना है, जो हमें प्रकृति की अनेकरूपता को समझने नहीं देती।

साहित्य और जीवन में घनिष्ठ-से-घनिष्ठ संबंध स्थापित होने पर भी दोनों में अंतर रहेगा ही। जीवन तो एक धारा-प्रवाह है, साहित्य में उसकी प्राणदायिनी और रमणीय बूँदें एकत्र की जाती हैं। जीवन के अनंत आकाश में साहित्य के विविध नक्षत्र आलोक विचरण करते हैं। सामयिक जीवन तो अनेक नियमित-अनियमित, ज्ञात-अज्ञात घटनावली का समष्टि रूप है, साहित्य में कुछ नियम भी अपेक्षित हैं। यह अवश्य है कि हम जिस हवा में साँस लेते हैं, प्रत्येक क्षण उसके परमाणु हममें प्रवेश पाते हैं, तथापि हमारा साहित्य केवल इन परमाणुओं का संग्रह होकर ही नहीं रह सकता। प्रत्येक सभ्य और प्रतिभाशाली मनुष्य वर्तमान में रहता हुआ अतीत और भविष्य में भी रहता है।

(क) साहित्यकार को कैसे अधिकार मिलने चाहिए? 2

(ख) साहित्यकार के साहित्य को हमें किस दृष्टि से देखना होगा और क्यों? 2

(ग) रवि बाबू ने अपनी उदार अनुभूतियों व विराट कल्पना की सहायता से क्या किया? 2

(घ) साहित्य और जीवन में क्या अंतर है? 2

(ङ) प्रत्येक सभ्य और प्रतिभाशाली मनुष्य की क्या विशेषता होती है? 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

4 रावण के लिए यह आवश्यक नहीं हुआ कि वह अपने मालिक को हौले से कुहनी लगाकर आगाह करे, क्योंकि ब्राऊन उसी समय समझ गया था कि वह क्षण आ पहुँचा है जिसकी वे बेताबी से प्रतीक्षा कर रहे थे। एक लंबी काली छाया चुपचाप से मृत भैंसे की ओर बढ़ी। अतिथि आ पहुँचा। धीरे से एक लंबा डग भरा। अब महाराज अपने खज पर खड़ा था।

आज ही अथवा कभी नहीं, मुझे यह अवसर मिलना, ब्राऊन ने सोचा और धीरे से अपनी विश्वस्त राइफल को कंधे पर उठाई। प्रकाश जैसा वह चाहता था उतना ही अच्छा था, उस विशाल भारी भरकम सिर के ऊपर कान के पीछे एक मोती-सा चित्रित करते हुए उसने धीमे से ट्रिगर दबाया। उस घने मौन खड़े जंगल से जैसे ही राइफल के तीव्रतम शब्द का गुंजन समाप्त हुआ कि वह विशालकाय पशु चेतनाहीन पड़ा देखा गया। वह पत्थर के समान लुढ़क पड़ा था। अत: दूसरा शॉट बिल्कुल अनावश्यक जान पड़ा। विख्यात महाराज अपनी अंतिम बलि पा गया।

दोनों व्यक्ति और थोड़ी देर को मचान पर निश्चल बैठे रहे ताकि आश्वस्त हो लें कि उनकी विजय को कोई छीन नहीं सकता। काफ़ी देर बाद ब्राऊन अपने साथी की ओर मुड़ा और उससे पूछा कि क्या वह संतुष्ट नहीं है कि आखिरकार महाराज गिरा दिया गया? ''रावण, तुम और तुम्हारे गाँव वालों की कल रात बड़ी भारी दावत होगी। जैसा कि मैंने वचन दिया था कि तुम्हें दावत मिलेगी जैसे ही मैं इस जानवर का शिकार कर लूँगा। आओ हम नीचे उतरकर गाँव चलें और वहाँ से आदमियों को भेजें जो इसे उठा लाएँ।''

''अवश्य जैसा आप कहें हजूर, परंतु मचान इतना कष्टप्रद नहीं है कि इस पर रात न बिताई जा सके, कैंप पर लौटने से कोई लाभ नहीं है, महाराज को कल तक तो रखना ही है।''

''ताज्जुब है रावण कि तुम अँधेरे से डर रहे हो। हमें क्या नुकसान पहुँच सकता है?''

''हाँ हजूर सच कहते हैं आप, यहाँ कोई चीज़ जीवित तो नहीं है जो हमें नुकसान पहुँचाए। मैं अँधेरे से तो नहीं डरता। फिर भी जाने क्यूँ मृत महाराज के निकट से होकर गुजरने का विचार मुझे जँच नहीं रहा है। आपने अवश्य ही उसे मार डाला परंतु मुझे विश्वास है कि जंगल का देवता जो आज रात उसके साथ नहीं रहा, वह अपना वाहन खोजने इधर आ जाएगा और वह हमें हानि पहुँचा सकता है। आज रात यहीं रह जाएँ साहब।''

(क) ब्राऊन क्या समझ गया था और उसने क्या सोचा? 2

(ख) दूसरा शॉट बिल्कुल अनावश्यक क्यों जान पड़ रहा था? 2

(ग) दोनों व्यक्ति मचान पर निश्चल क्यों बैठे रहे? 1

(घ) ब्राउन ने रावण से किस वचन के बारे में कहा? 2

(ङ) रात मचान पर बिताने की क्या वजह रावण ने बताई? 2

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

5 मानव के विचार अथवा अनुभव में जो कुछ भी श्रेष्ठ है, उदात्त है, वह इसका अथवा उसका नहीं है, जातिगत अथवा देशगत नहीं है, वह सबका है, सारे विश्व का है। समस्त ज्ञान, विज्ञान और सभ्यता सारी ही मानवता की विरासत है। भले ही एक विचार का जन्म किसी अन्य देश में भिन्न भाषा-भाषी लोगों के द्वारा हुआ हो, वह हमारा भी है, सबका है। पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के भेद, अक्षांश और देशांतर का भेद तथा जलवायु और भौगोलिक सीमा के भेद सर्वथा निराधार हैं। संप्रदाय, समुदाय और जाति के नाम पर आदर्शों, मूल्यों की प्रस्थापना करना संकीर्णता के वातावरण में मानवता का दम घोटना-सा है। जो कुछ भी उपलब्धि है, वह चाहे जिस भू-भाग की उपज हो, मानव की है, सभी की है; महापुरुष परस्पर विरोधी नहीं होते हैं, एक-दूसरे के पूरक होते हैं। महापुरुषों में अपने युग और देश की विशेषताएँ होती हैं। विवेकशील मनुष्य नम्रतापूर्वक महापुरुषों से शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को प्रकाशित करने का प्रयत्न करता है। समस्त मानवता उसके प्रति कृतज्ञ है, किंतु अब हमें उनसे आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि ज्ञान की इतिश्री नहीं होती है तथा किसी का शब्द अंतिम नहीं होता है। संसार एक खुली पाठशाला है, जीवन एक खुली पुस्तक है। सदैव सीखते ही रहना चाहिए तथा सीखना ही आगे बढ़ने के लिए नए रास्ते खोलता है। विकास की क्रिया के मूल में मानव की पूर्ण बनने की अपनी प्रेरणा है। विकास के लिए समन्वय की भावना होना परम आवश्यक होता है। यदि हम विभिन्न विचारधाराओं एवं उनके जन्मदाता महापुरुषों का पूर्ण खंडन अथवा पूर्ण मंडन करें तो विकास-पथ अवरुद्ध हो जाएगा। अतएव समन्वय की भावना से युक्त होकर, सब ओर से सार वस्तुओं को ग्रहण करते हुए हम उनका लाभ उठा सकते हैं। किसी धर्म विशेष या मान्यता के खूँटे के साथ संकीर्ण भाव से बँधकर तथा परंपराओं और रूढ़ियों से जकड़े हुए रहकर हम नहीं बढ़ सकते हैं।

मानव को मानव के रूप में सम्मानित करके ही हम जातीयता, प्रांतीयता, क्षुद्र राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता के भेद को तोड़ सकते हैं। आज मानव मानव से दूर हटता जा रहा है। वह भूल चुका है कि देश, धर्म और जाति के भिन्न होते हुए भी हम सर्वप्रथम मानव हैं और समान हैं तथा सभी की भावनाएँ और लक्ष्य एक ही हैं। आज धर्म, देश, सत्ता, धन आदि का भेद होने से एक मानव दूसरे मानव को मानव ही नहीं मानता है।

(क) जातिगत तथा देशगत आधार पर किन बातों को सर्वथा निराधार माना है ? 2

(ख) महापुरुष परस्पर विरोधी नहीं होते हैं, एक-दूसरे के पूरक होते हैं, कैसे ? 2

(ग) संसार को पाठशाला क्यों कहा गया है ? 2

(घ) मानव को मानव के रूप में सम्मानित करना क्यों आवश्यक है ? 2

(ङ) 'ता' प्रत्यय के योग से बने दो शब्द परिच्छेद से छाँटकर लिखिए। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

6 हिंदी भाषा के कवियों में बाबू हरिश्चंद्र का स्थान बहुत ऊँचा समझा जाता है। यह ठीक है कि उन्हें तुलसी, सूर, बिहारी या केशव की-सी लोकप्रियता नहीं प्राप्त हुई मगर इसका कारण यह नहीं कि वे योग्यता में इन कवियों से घटकर थे। तुलसीदास पद्य-बद्ध आख्यायिका के सम्राट थे। सूर ने अध्यात्म और बिहारी ने सौंदर्य और प्रेम को कमाल पर पहुँचाया। कबीर ने संसार की निस्सारता का राग गाया। हरिश्चंद्र ने हर रंग की कविता की। वह काव्य-प्रतिभा जो किसी एक रंग को बहुत ऊँचाई तक पहुँचा सकती थी, बिखर गई। इसलिए ये कवि ऊँचाई और गंभीरता में यद्यपि हरिश्चंद्र से बढ़े हुए हैं मगर काव्य-विस्तार की दृष्टि से हरिश्चंद्र का स्थान बहुत ऊँचा है। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी और उनको गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार था। गद्य में तो उन्हें मार्गदर्शक का स्थान प्राप्त है। उनके पहले राजा लक्ष्मण सिंह और राजा शिवप्रसाद ने हिंदी गद्य में ख्याति पाई थी मगर राजा लक्ष्मण सिंह की योग्यता के अधिकतर अनुवादों में खर्च हुई और राजा शिवप्रसाद की हिंदी में उर्दू शब्द बड़ी संख्या में रहते थे। शुद्ध हिंदी की नींव भारतेंदु ही की कलम ने डाली और उस ज़माने से अब तक हिंदी गद्य ने बहुत कुछ तरक़्क़ी हासिल कर ली है मगर आज भी हरिश्चंद्र के हिंदी गद्य की

प्रौढ़ता, चुलबुलापन और शुद्धता प्रशंसनीय है। उनकी सबसे अधिक स्मरणीय और स्थायी साहित्यिक पूँजी उनके नाटक हैं। इस मैदान में कोई उनका प्रतियोगी नहीं। हिंदी नाट्यकला के वे प्रवर्तक हैं। उनके पहले हिंदी भाषा में नाटकों का अस्तित्व न था। राजा लक्ष्मण सिंह ने कालिदास की 'शकुंतला' का अनुवाद अवश्य किया था, पर वह केवल अनुवाद था। मौलिक नाटक अप्राप्य थे।

(क) सूर, तुलसी, बिहारी, केशव आदि से भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्य किस प्रकार भिन्न है? 2

(ख) भारतेंदु को हिंदी नाट्यकला का प्रवर्तक क्यों कहा जाता है? 2

(ग) भारतेंदु की सर्वाधिक स्मरणीय साहित्यिक पूँजी क्या है? 2

(घ) शुद्ध हिंदी की नींव कब और कैसे डली? बाबू हरिश्चंद्र के संदर्भ में स्पष्ट करें। 2

(ङ) गद्यांश में से वे शब्द छाँटिए, जिनके अर्थ हैं—रास्ता दिखाने वाला, आरंभ करने वाला। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

7 वह माह नवंबर की शुरूआत थी और टॉम कैनेडी भी अन्य अफ़सरों की तरह से शरदकालीन लंबे दौरे पर विविध पुलिस स्टेशनों के निरीक्षण हेतु बाहर था। सर्दी के दिनों में कैंप का जीवन एक लंबे पिकनिक के समान हुआ करता था। भारत की कष्टदायक गर्मियों के बाद इन दिनों की ताज़गी आनंदवर्धक होती थी, परंतु कर्तव्य की कभी अवहेलना नहीं होती थी, क्योंकि अपने अधीनस्थ पदाधिकारियों के कार्यों और गतिविधियों के निरीक्षण के अतिरिक्त सुपरिंटेंडेंट से अपेक्षा की जाती थी कि वह पूरे ज़िले की स्थिति की वाक़िफ़ियत हासिल करे, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पनपने वाले क्राइम की। उसको इन दौरों के मध्य शिकार के उत्तम अवसर मिला करते थे। येलोपुर में चूँकि कुछ अच्छे जंगल थे। अत: कैनेडी यहाँ बेहतर शिकार की आशा में आया था।

उस दिन उसके तंबू हिंदूपुर नामक एक छोटे गाँव में चले आए थे और अब वे एक चौड़ी कृषि प्रधान घाटी में गाड़े गए थे जो कुछ घने जंगलयुक्त पहाड़ियों से घिरी थी, आम्र वृक्षों के एक झुरमुट के नीचे जो गाँव के सम्मुख था। इन जंगलों में जंगली भैंसा और साँभरों का रहना बताया जाता था और कुछ शेर व भालू भी थे। कैनेडी को अपने सप्ताह भर के कैंप में अच्छा शिकार कर पाने की आशा थी। श्रीमती कैनेडी अपने पति के कार्य और जीवन में संपूर्ण मन से रुचि लेती थीं और भारत के अन्य तमाम अंग्रेज़ अफ़सरों की पत्नियों की भाँति दौरों पर अपने पति के संग रहती थीं, जो उनकी मधुर संगत के अभाव में अक्सर सूने मन और थकावटपूर्ण लगते थे।

(क) टॉम कैनेडी बाहर क्यों था? 2

(ख) सर्दी के दिनों में कैंप टॉम कैनेडी को क्यों अच्छे लगा करते थे? 2

(ग) कैनेडी किस आशा में आए थे? 2

(घ) कैनेडी को अपने सप्ताह भर के कैंप में अच्छा शिकार कर पाने की आशा क्यों थी? 2

(ङ) श्रीमती कैनेडी को समय काटना कठिन क्यों प्रतीत नहीं होता था? 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

8 प्रकृति ने इतर प्राणियों को जिस रूप में बनाया है, विश्व में वे उसी रूप में विचरण करते हैं। फिर मनुष्य ने वस्तुओं को गरदन, बाहु, कमर तथा पैर में लटकाकर या मस्तक पर धारण कर अपने को सजाना क्यों शुरू किया? हम अनेक कारणों की कल्पना कर सकते हैं। यदि किसी साधारण शक्ति-संपन्न या बहादुर मनुष्य ने असामान्य रूप से विशाल भालू को मारने में सफलता प्राप्त की थी तो क्या उसके मन में यह विचार न आया होगा कि वह उस भालू के किसी दाँत को धारदार चक्रमक से छेदकर अपने गले के ऊपर बाँध ले, जिससे इस महान उपलब्धि का उसे स्मरण होता रहे और अपने मित्रों को यह दिखा सके कि वह कैसा महान व्यक्ति रहा है। धीरे-धीरे उसके कबीले के सभी शक्ति-संपन्न और बहादुर शिकारियों में भालू के दाँत को धारण करने की प्रथा चल पड़ी होगी और उसे धारण न करना अपमानजनक तथा अल्पवय या दुर्बलता का प्रतीक माना गया होगा।

कोई अन्य मनुष्य रंगीन सीप या पत्थर का आभूषण बना सकता है, क्योंकि वह सिर्फ़ उसे पसंद आ गया अथवा उसका आकार किसी वस्तु का स्मरण कराता है। यदि वह जब उसे धारण किए हुए था तब किसी संकट से बच जाता है, तो वह सोच सकता है कि इसमें उस आभूषण का कोई हाथ था या उसमें जादुई विशेषताएँ थीं। उसके मित्र तथा संबंधी तब तक संतुष्ट नहीं हुए होंगे, जब तक वैसा ही आभूषण उन्होंने प्राप्त नहीं कर लिया होगा।

मनुष्य पंख, सींग, चमड़ा और तरह-तरह की अन्य वस्तुएँ अपने शरीर पर क्यों बाँधते हैं? इसका अन्य कारण यह है कि वे पशुओं या भिन्न कबीलों के लोगों के सामने ज़्यादा क्रूर और अधिक भयानक दिखना चाहते हैं।

(क) लेखक किस प्रश्न को लेकर चिंतित नज़र आते हैं? 2

(ख) अपनी वीरता का प्रदर्शन सबसे पहले इंसान ने कैसे किया होगा? 2

(ग) आभूषण पहनने की शुरुआत किस प्रकार हुई होगी? 2

(घ) मनुष्य पंख, सींग, चमड़ा और तरह-तरह की अन्य वस्तुएँ अपने शरीर पर क्यों बाँधते हैं? 2

(ङ) परिच्छेद से चुनकर साधारण वाक्य का एक उदाहरण लिखिए। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

9 अपनी सभ्यता का जब मैं अवलोकन करता हूँ तब लोगों को काम के संबंध की उनकी विचारधारा के अनुसार विभाजित करने लगता हूँ। एक वर्ग में वे लोग आते हैं, जो काम को उस घृणित आवश्यकता के रूप में देखते हैं, जिसकी उनके लिए उपयोगिता है, सिर्फ़ धन हासिल करना। वे अनुभव करते हैं कि जब दिनभर का श्रम समाप्त हो जाता है, तब वे जीना सचमुच शुरू करते हैं और अपने-आप में होते हैं। जब वे काम में लगे होते हैं, तब उनका मन भटकता रहता है। काम को वे अपना उत्तमांश देने का कभी विचार नहीं करते, क्योंकि आमदनी के लिए ही उन्हें सिर्फ़ काम की आवश्यकता है। दूसरे वर्ग के लोग अपने काम को आनंद और आत्मपरितोष पाने के एक सुयोग के रूप में देखते हैं। वे धन इसलिए कमाना चाहते हैं, ताकि अपने काम में अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें। जिस काम में वे संलग्न होते हैं, उसकी पूजा करते हैं।

पहले वर्ग में केवल वे लोग ही नहीं आते हैं, जो बहुत कठिन और अरुचिकर काम करते हैं। उसमें बहुत-से संपन्न लोग भी सम्मिलित हैं, जो वास्तव में कोई काम नहीं करते हैं। धनवान, जो अपनी आमदनी पर निष्प्रयोजन जीता है, वह आदमी जो बिना श्रम किए धन पाने की आशा में जुआ खेलता है, वह नारी जो केवल घर-गृहस्थी का आरामदेह जीवन पाने के लिए विवाह करती है—ये सभी धन को ऐसा कुछ समझते हैं, जो उन्हें काम करने के अभिशाप से बचाता है। इसके सिवाय कि उनका भाग्य अच्छा रहा है, वे अन्यथा उन कारखानों के मज़दूरों की तरह ही हैं, जो अपने दैनिक काम को जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप समझते हैं। उनके किए काम कोई घृणित वस्तु है और धन वांछनीय; क्योंकि काम से छुटकारा पाने के साधन का वह प्रतिनिधित्व करता है। यदि काम को वे टाल सकें और फिर भी धन पा जाएँ, तो खुशी से यही करेंगे।

(क) सभ्यता का अवलोकन करने पर लेखक क्या महसूस करता है? 2

(ख) पहले वर्ग के लोगों में अपने कार्य के प्रति कैसी भावना होती है? 2

(ग) दूसरे वर्ग के लोगों के बारे में लेखक क्या बताते हैं? 2

(घ) पहले वर्ग में कैसे लोग नहीं आते? 2

(ङ) दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए– 1

विभाजित, गृहस्थी।

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

10 चंचलता शिशु की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यह चंचलता, सक्रियता उसके अंदर विद्यमान कर्म-शक्ति की द्योतक है। शिशु की इस कर्म-शक्ति को सही दिशा देते हुए, उसे रचनात्मक कार्यों की ओर उन्मुख करना शिक्षा-योजना का सबसे प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। बालक की कर्म-शक्ति का सही दिशा में मार्गांतरण न होने से वह ध्वंसात्मक भी

सिद्ध हो सकती है। बालक की यह ध्वंसात्मक प्रवृत्ति आगे चलकर राष्ट्र की समृद्धि और सुख-शांति के लिए प्रश्नचिह्न बन जाती है। कर्म-शक्ति के साथ ही शिशु की एकाग्रता की शक्ति को जाग्रत करना भी आवश्यक है। एकाग्रता के गुण के बल पर ही वह अपने कार्य का संपादन ठीक तरह से कर पाएगा और भावी जीवन में गंभीर विषयों पर चिंतन-मनन करने की शक्ति का विकास भी शनैः-शनैः यहीं से प्रारंभ होगा। एक मन से अपनी कर्म-शक्ति का उपयोग करने वाला शिशु राष्ट्र का एक प्रबुद्ध नागरिक बनेगा और अपने उत्तरदायित्वों का सही रूप से निर्वाह करने में वह कहीं भी चूक नहीं करेगा। राष्ट्र के विकास में ऐसे नागरिकों का योगदान स्वयंसिद्ध है।

शिशु को यदि हम राष्ट्र की अमूल्य निधि के रूप में देखना चाहते हैं तो उसे एक ऐसा आदर्श वातावरण प्रदान करना पड़ेगा, जिसमें निर्बाध गति से उसका चहुँमुखी विकास हो सके। स्वच्छ, शांत, भयमुक्त और स्वास्थ्यप्रद वातावरण में ही शिशु की कोमल भावनाएँ सुरक्षित रह सकती हैं। शिशु की सुकोमल भावनाओं को आघात पहुँचाना सामाजिक अपराध है। राष्ट्र का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह प्रत्येक बालक को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराए कि उसमें हीन भावना न पनपने पाए। हीन भावना से ग्रसित शिशु बड़ा होने पर समाज के प्रति अपने कर्तव्य का सही रूप में निर्वाह नहीं कर सकता। यही उपयुक्त अवस्था है, जिसमें हम बच्चे को संकीर्णता से उबार सकते हैं।

(क) शिक्षा-योजना का सबसे प्रमुख उद्देश्य क्या होना चाहिए? 2

(ख) एकाग्रता के गुण से बच्चों को क्या फ़ायदा होगा? 2

(ग) राष्ट्र का पुनीत कर्तव्य क्या होना चाहिए? 2

(घ) शिशु की कोमल भावनाओं के लिए लेखक के क्या विचार हैं? 2

(ङ) निम्नलिखित समस्तपद का विग्रह कर समास का नाम लिखिए– 1

अमूल्य, देशभक्ति।

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

11 हिंदी तलवार की नहीं, मनुहार की भाषा है। यह अधिकार की नहीं, सहज स्वीकार की भाषा है। यही हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति है और भविष्य में भी इसी शक्ति के बल पर हिंदी भाषा बढ़ सकेगी। हिंदी भाषा का इतिहास इस बात का गवाह है कि इसकी यात्रा साम्राज्य-विस्तार की यात्रा नहीं रही, बल्कि एक ऐसी सहज और सरल संस्कृति की यात्रा रही है, जो बिना सोचे-विचारे नदी की तरह बहती रही और बाद में उसके दोनों ओर तट बनते चले गए। हम देखते हैं कि यूरोपीय राष्ट्रों की आज जो भाषाएँ अन्य देशों में प्रचलित हैं, उन सबका मूल कारण रहा है—उपनिवेशवादी शक्ति। स्वाभाविक रूप से पराजित राष्ट्र विजित राष्ट्र की राजनीतिक सत्ता को ही स्वीकार नहीं करता, बल्कि हीन कुंठा से ग्रसित होकर, उसकी भाषा और संस्कृति को भी स्वीकार करता है।

विश्व के मानचित्र पर हिंदी भाषा के अस्तित्व को तीन रूपों में देखा जा सकता है। पहले वे देश हैं, जहाँ शताब्दियों पूर्व भारतीय संस्कृति अपनी समन्वयात्मक शक्ति के बल पर इन देशों में गई; बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा कि स्वयं इन देशों के द्वारा भारतीय संस्कृति को अपने यहाँ ले जाया गया। दक्षिण-पूर्व एशिया के देश इसके अंतर्गत आते हैं। 'रामचरितमानस' तथा संस्कृत साहित्य की पहुँच ने वहाँ पहले से ही हिंदी के लिए एक उपजाऊ भूमि तैयार कर दी थी। सांस्कृतिक संबंधों का यह सूत्र तब से लेकर आज तक बना हुआ है। ऐसी स्थिति में वर्तमान में हिंदी की प्रधानता स्वाभाविक ही है। यही कारण है कि इंडोनेशिया की भाषा का नाम है—'भाषा इंडोनेशिया' और वहाँ की भाषा के करीब बीस प्रतिशत शब्द संस्कृत या हिंदी के हैं। इन देशों में हिंदी फिल्में जितनी लोकप्रिय हैं, वह हिंदी की संभावना का स्पष्ट संकेत देती हैं।

(क) हिंदी को कैसी भाषा का दर्जा दिया गया है? 2

(ख) हिंदी की यात्रा कैसी रही है? 2

(ग) आज विश्व में हिंदी की स्थिति कैसी है? 2

(घ) 'रामचरितमानस' व 'संस्कृत साहित्य' ने हिंदी को बढ़ाने में अपना क्या योगदान दिया ? 2

(ङ) 'यूरोपीय' तथा 'स्वाभाविक' शब्दों में से मूल शब्द तथा प्रत्यय अलग कीजिए। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

12 अपने इतिहास के अधिकांश कालों में भारत एक सांस्कृतिक इकाई होते हुए भी पारस्परिक युद्धों से जर्जर होता रहा। यहाँ के शासक अपने शासन-कौशल में धूर्त एवं असावधान थे। समय-समय पर यहाँ दुर्भिक्ष, बाढ़ तथा प्लेग के प्रकोप होते रहे, जिससे सहस्त्रों व्यक्तियों की मृत्यु हुई। जन्मजात असमानता धर्मसंगत मानी गई, जिसके फलस्वरूप नीच कुल के व्यक्तियों का जीवन अभिशाप बन गया। इन सबके होते हुए भी हमारा विचार है कि पुरातन संसार के किसी भी भाग में मनुष्य के मनुष्य तथा मनुष्य के राज्य से ऐसे सुंदर एवं मानवीय संबंध नहीं रहे हैं। किसी भी अन्य प्राचीन सभ्यता में गुलामों की संख्या इतनी कम नहीं रही जितनी भारत में और न ही 'अर्थशास्त्र' के समान किसी प्राचीन न्याय ग्रंथ ने मानवीय अधिकारों की इतनी सुरक्षा की। मनु के समान किसी अन्य प्राचीन स्मृतिकार ने युद्ध में न्याय के ऐसे उच्चादर्शों की घोषणा भी नहीं की। हिंदू कालीन भारत के युद्धों के इतिहास में कोई भी ऐसी कहानी नहीं है जिसमें नगर-के-नगर तलवार के घाट उतारे गए हों अथवा शांतिप्रिय नागरिकों का सामूहिक वध किया गया हो। असीरिया के बादशाहों की भयंकर क्रूरता, जिसमें वे अपने बंदियों की खालें खिंचवा लेते थे, प्राचीन भारत में पूर्णतः अप्राप्य है। निःसंदेह कहीं-कहीं क्रूरता एवं कठोरतापूर्ण व्यवहार था, परंतु अन्य प्रारंभिक संस्कृतियों की अपेक्षा यह नगण्य था। हमारे लिए प्राचीन भारतीय सभ्यता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी मानवीयता है।

(क) भारत का इतिहास कैसा रहा और क्यों ? 2

(ख) भारत के इतिहास में किस तरह की घटनाएँ अप्राप्य हैं ? 2

(ग) भारतीय सभ्यता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता क्या है ? 2

(घ) प्राचीन भारत संबंधी दूसरा सामान्य मत क्या है ? 2

(ङ) निम्नलिखित के विपरीत शब्द लिखिए– 1

आलस्य, मौखिक।

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

13 कलाकार सौंदर्य-प्रिय होता है। राष्ट्र पर मँडराती युद्ध की घनघोर घटाओं के बीच में, कलाकार की वाणी ही बिजली की तरह पथ-प्रदर्शक बनती और गुमराहों को राह दिखला जाती है।

अंतर्तम की सुंदरतम अनुभूति को अभिव्यक्त करने की क्षमता ही कलाकार का आदर्श हैं। इसी में राष्ट्र-हितों की सम्यक् साधना का समावेश कर देना एक अत्युच्च आदर्श। किसी भी कलाकार का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि अपने समकक्षीय मानव के प्रति उसमें अद्भुत, किंतु मानवीय सहानुभूति अवश्य ओत-प्रोत रहती है। उसमें एक ऐसी प्रवृत्ति पाई जाती है, जो मानव-मात्र का कल्याण चाहती है और भेदभाव अथवा ऊँच-नीच के दूषित वातावरण की उसमें कहीं कोई गंध नहीं रहती।

प्राचीन भारत के स्वर्णिम युग का अध्ययन करने से हमें विदित होता है कि जब संसार के अन्यान्य देश कला के नाम से सर्वथा अनभिज्ञ थे, तब हमारा देश कला की महत्ता को पूर्णतः समझता था। कला की रक्षा के लिए प्राचीन भारत ने कुछ उठा नहीं रखा था। क्या अमीरों और क्या फकीरों, सभी के लिए कला की आवश्यकता समान रूप से स्वीकार की जाती थी—यहाँ तक कि धार्मिक और राजनीतिक संघर्षों के समय भी कला का स्वरूप अक्षुण्ण रखा जाता था। कला का चतुर्मुखी विकास भारतवर्ष के प्रत्येक युग में हुआ और उसके विकास-पथ में किसी प्रकार का रोड़ा नहीं अटकाया गया। यही कारण है कि प्राचीन भारत का इतिहास हमारी तत्कालीन स्वतंत्रता का यश-गान अपने वक्ष से आज भी चिपकाए, हमें कला का वास्तविक सम्मान करने की प्रेरणा दे रहा है। यह बात दूसरी है कि इस प्रेरणा से हम प्रेरित हों या नहीं।

(क) कलाकार की वाणी में क्या शक्ति होती है ? 2

(ख) कलाकार में कैसी प्रवृत्ति पाई जाती है ? 2

(ग) प्राचीन भारत में कला का क्या स्थान था ? 2

(घ) प्राचीन भारत के इतिहास के बारे में लेखक क्या कह रहा है? 2

(ङ) 'अभिव्यक्त' और 'अनभिज्ञ' शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

14 एक दिन गुरु नानक यात्रा करते-करते भाई लालो नाम के एक बढ़ई के घर ठहरे। उस गाँव का भागो नामक रईस बड़ा मालदार था। उस दिन भागो के घर ब्रह्मभोज था। दूर-दूर से साधु आए हुए थे। गुरु नानक का आगमन सुनकर भागो ने उन्हें भी निमंत्रण भेजा। गुरु ने भागो का अन्न खाने से इंकार कर दिया। इस बात पर भागो को बड़ा क्रोध आया। उसने गुरु नानक को बुलवाया और उनसे पूछा—आप मेरे यहाँ का अन्न क्यों नहीं ग्रहण करते ? गुरुदेव ने उत्तर दिया—भागो, अपने घर का हलवा-पूरी ले आओ, तो हम इसका कारण बतला दें। वह हलवा-पूरी लाया, तो गुरु नानक ने लालो के घर से भी उसके मोटे अन्न की रोटी मँगवाई। भागो की हलवा-पूरी उन्होंने एक हाथ में और भाई लालो की मोटी रोटी दूसरे हाथ में लेकर दोनों को जो दबाया, तो एक से लहू टपका और दूसरी से दूध की धारा निकली। बाबा नानक का यही उपदेश हुआ। जो धारा भाई लालो की मोटी रोटी से निकली थी, वही समाज का पालन करने वाली दूध की धारा है, यही धारा शिव जी की जटा से और यही धारा मज़दूरों की उँगलियों से निकलती है।

मज़दूरी करने से हृदय पवित्र होता है; संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं। हाथ की मज़दूरी ही से सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है। जापान में मैंने ऐसी कलावती कन्याओं और स्त्रियों को देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी दस्तकारी की बदौलत हज़ारों की कीमत का बना देती हैं; नाना प्रकार के प्राकृतिक पदार्थों और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती हैं।

(क) गुरु नानक जब लालो के घर पहुँचे तो गाँव में क्या था ? 2

(ख) भागो को क्रोध क्यों आया और उसने क्या किया ? 2

(ग) गुरु नानक ने भागो के मन की शंका के समाधान के लिए क्या किया ? 2

(घ) मज़दूरी करने से क्या होता है ? 2

(ङ) दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार तथा नुक्ते का प्रयोग कीजिए– 1

हजारों, इन्कार।

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

15 स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता दोनों का वास्तविक अर्थ एक ही है। वह अर्थ है अपना अवलंब अर्थात् आश्रय या सहारा आप बनना, किसी दूसरे पर बोझ न बनकर या निर्भर अर्थात् आश्रित न रहकर अपने-आप पर निर्भर या आश्रित रहना। इस प्रकार दोनों शब्द परावलंबन या पराश्रिता त्यागकर, स्वयं परिश्रम करके, सब प्रकार के दुख-कष्ट सह कर भी अपने पैरों पर खड़े रहने की शिक्षा और प्रेरणा देने वाले शब्द हैं।

संसार में परावलंबी यानी दूसरों पर आश्रित हो या निर्भर रहना एक प्रकार का पाप, सर्वाधिक हीन कर्म और आदमी के अंत:बाह्य व्यक्तित्व को एकदम हीन तथा बौना बनाकर रख देने वाला हुआ करता है। पराश्रित या परावलंबी को हमेशा आश्रय आधार देने वालों के अधीन बनकर रहना पड़ता है। उनके इशारों पर नाचने की बाध्यता और विवशता रहा करती है। उनकी अपनी इच्छा पहले तो होती ही नहीं, होने या रहने पर भी उसका कोई मूल्य और महत्त्व नहीं रहा करता। वह चाह कर भी उसके अनुसार न तो कार्य ही कर सकता है और न उसे कभी पूर्ण होते हुए ही देख सकता है। तनिक-सी इच्छा और बात के लिए उसे पराया मुँह देखना पड़ता है। अपना मन जान-बूझ कर मारना पड़ता है। इसी कारण पराधीनता या परावलंबन को घोर पाप और निकृष्ट माना गया है। इसके विपरीत स्वाधीनता एवं स्वावलंबन को स्वर्ग का द्वार, पुण्य-कार्यों का परिणाम और सब प्रकार से श्रेष्ठ स्वीकार किया गया है।

स्वावलंबी या आत्मनिर्भर व्यक्ति ही सही अर्थों में जान पाया करता है कि दु:ख-पीड़ा क्या होती है और सुख-सुविधा का क्या मूल्य एवं महत्त्व, कितना आनंद और आत्मसंतोष हुआ करता है। संसार और समाज में व्यक्ति का क्या मूल्य और महत्त्व हुआ

करता है, मान-सम्मान किसे कहते हैं, अपमान की पीड़ा क्या होती है, अभाव किस तरह से व्यक्ति को मर्माहत किया करते या कर सकते हैं।

(क) स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता दोनों का वास्तविक अर्थ एक ही क्यों है ? 2

(ख) परावलंबी जीवन कैसा होता है ? 2

(ग) पराधीनता को घोर पाप क्यों माना गया है ? 2

(घ) स्वावलंबी या आत्मनिर्भर व्यक्ति क्या जान पाता है ? 2

(ङ) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए– 1

परावलंबन, स्वाधीनता।

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

16 शिवाजी के बढ़ते प्रताप से आतंकित बीजापुर के शासक आदिलशाह जब शिवाजी को पकड़ न पाए , तो इनके पिता शाह जी को ही गिरफ़्तार कर लिया पता चलने पर शिवाजी आग-बबूला हो उठे। नीति और साहस से काम ले, छापामारी का सहारा लेकर जल्दी ही पिता जी को मुक्त करा लिया। तब बीजापुर के शासक ने इन्हें जीवित अथवा मृत पकड़ लाने का आदेश देकर अपने चुस्त एवं मक्कार सेनापति अफ़ज़लखाँ को भेजा। उसने सुलह और भाईचारे का नाटक रचकर शिवाजी को बाहों के घेरे में लेकर मारना चाहा; पर नीतिज्ञ और समझदार शिवाजी के हाथ में छिपे बघनखे का शिकार होकर स्वयं मारा गया। उसकी सेनाएँ शिवाजी की सेनाओं के समझे-बूझे आक्रमण का शिकार होकर या तो मारी गईं या दुम दबाकर भाग जान बचाने को विवश हो गईं।

दक्षिण के राज्यों पर अपना दबदबा बैठा लेने के बाद छत्रपति शिवाजी का ध्यान उधर स्थित मुग़लों के अधीनस्थ राज्यों-किलों की ओर गया। एक के बाद एक किला अधीन होते देख औरंगज़ेब ने जयपुर के महाराजा जयसिंह को शिवाजी पर आक्रमण करने भेजा। वे शिवाजी को समझा-बुझा कर अपने साथ आगरा ले गए, लेकिन शिवाजी को उनके योग्य स्थान देने के स्थान पर जब दस-बीस हज़ारियों के साथ बैठाना चाहा, तो इसे अपना अपमान मानकर शिवाजी कटु वचन कहकर दरबार से चले गए। औरंगज़ेब ने आगरा किले में इन्हें नज़रबंद करवा दिया, लेकिन शिवाजी भी कम नीतिवान नहीं थे। ये मिठाई के टोकरे में बैठ किले से बाहर आ गए, जहाँ घोड़े इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन पर सवार हो चालाकी से मुग़ल राज्य की सीमाएँ पार करते हुए सुरक्षित अपने स्थान पर आ पहुँचे।

(क) आदिलशाह ने शिवाजी के पिता शाह जी को क्यों पकड़ा ? 2

(ख) औरंगज़ेब ने महाराजा जयसिंह को क्या काम सौंपा और क्यों ? 2

(ग) शिवाजी दरबार से क्यों चले गए ? 2

(घ) शिवाजी आगरा के किले से किस प्रकार मुक्त हुए ? 2

(ङ) परिच्छेद से अनुस्वार, अनुनासिक तथा नुक्ते का एक-एक उदाहरण छाँटकर लिखिए। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

17 कालिदास उसी डाली को काट रहे थे, जिस डाली पर बैठे थे। विद्योत्तमा नामक विदुषी राजकन्या का मान भंग करने का षड्यंत्र कर रहे तथाकथित विद्वान वर्ग को वह व्यक्ति (कालिदास) सर्वाधिक जड़मति और मूर्ख लगा। सो वे उसे ही कुछ लाभ-लालच दे, कुछ ऊटपटाँग सिखा-पढ़ा, महापंडित के वेश में सजा-धजा कर राजदरबार में विदुषी राजकन्या विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करने के लिए ले गए। उस मूर्ख के ऊटपटाँग मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या कर षड्यंत्रकारियों ने उस विदुषी से विवाह करा ही दिया, लेकिन प्रथम रात्रि में ही वास्तविकता प्रकट हो जाने पर पत्नी के ताने से घायल होकर ज्यों घर से निकले, कठिन परिश्रम और निरंतर साधना-रूपी रस्सी के आने-जाने से घिस-पिटकर महाकवि कालिदास बन कर घर लौटे। स्पष्ट है कि निरंतर अभ्यास ने तपा कर उन की जड़मति को पिघला कर बहा दिया और जो बाकी बचा था, वह खरा सोना था।

संसार के इतिहास में और भी इस प्रकार के कई उदाहरण खोजे एवं दिए जा सकते हैं। हमें अपने आस-पास के प्राय: सभी जीवन-क्षेत्रों में इस प्रकार के लोग मिल जाते हैं कि जो देखने-सुनने में निपट अनाड़ी और मूर्ख प्रतीत होते हैं। वे

अकसर इधर-उधर मारे-मारे भटकते भी रहते हैं, फिर भी हार न मान अपनी वह सुनियोजित भटकन अनवरत जारी रखा करते हैं। तब एक दिन ऐसा भी आ जाता है कि जब अपने अनवरत अध्यवसाय से निखरा उनका रंग-रूप देखकर प्राय: दंग रह जाना पड़ता है। इससे साफ़ प्रकट है कि संसार में जो आगे बढ़ते हैं, किसी क्षेत्र में प्रगति और विकास किया करते हैं, वे किसी अन्य लोक के प्राणी न होकर इस हमारी धरती के, हमारे ही आस-पास के लोग हुआ करते हैं।

(क) पंडित विद्योत्तमा की शादी कालिदास से क्यों करवाना चाह रहे थे? 2

(ख) कालिदास महाकवि कालिदास किस प्रकार बने? 2

(ग) पंडितों ने क्या षड्यंत्र रचा? 2

(घ) हमें अपने आस-पास प्राय: कैसे लोग मिल जाते हैं? 2

(ङ) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग व प्रत्यय अलग कीजिए– 1

सुनियोजित, असफलता।

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

18 हरिदास भीतर गए। सारा घर भौतिक निस्सारता का परिचायक था। सुर्खी, कंकड़, ईंटों के ढेर चारों ओर पड़े हुए थे। विनाश का प्रत्यक्ष स्वरूप था। केवल दो कोठरियाँ गुज़र करने लायक थीं। मगन सिंह ने एक कोठरी की ओर उन्हें इशारे से बताया। हरिदास भीतर गए, तो देखा कि वृद्धा सड़े हुए काठ के टुकड़े पर पड़ी कराह रही है। उनकी आहट पाते ही उसने आँखें खोलीं और अनुमान से पहचान गई, बोली—आप आ गए, बड़ी दया की। आपके दर्शनों की बड़ी अभिलाषा थी। मेरे अनाथ बालक के नाथ अब आप ही हैं। आपने जैसे अब तक उसकी रक्षा की है, वह निगाह उस पर सदैव बनाए रखिएगा। एक दिन घर में लक्ष्मी का वास था। अदिन आए तो उन्होंने भी आँखें फेर लीं। पुरखों ने इसी दिन के लिए कुछ थाती धरती माता को सौंप दी थी। उसका बीजक बड़े यत्न से रखा था; पर बहुत दिनों से उसका कहीं पता न लगता था। मगन के पिता ने बहुत खोजा पर पा न सके, नहीं तो हमारी दशा इतनी हीन न होती। आज तीन दिन हुए मुझे वह बीजक आप-ही-आप रद्दी कागज़ों में मिल गया। तब से उसे छिपाकर रखे हुए हूँ, मगन बाहर है। मेरे सिरहाने जो संदूक रखी है, उसी में वह बीजक है। उसमें सब बातें लिखी हैं। उसी से ठिकाने का भी पता चलेगा। अवसर मिले तो उसे खुदवा डालिएगा। मगन को दे दीजिएगा। यही कहने के लिए आपको बार-बार बुलवाती थी। आपके सिवा मुझे किसी पर विश्वास न था। संसार से धर्म उठ गया। किसकी नीयत पर भरोसा किया जाए?

हरिदास ने बीजक का समाचार किसी से न कहा। उनकी नीयत बिगड़ गई। दूध में मक्खी पड़ गई। बीजक से ज्ञात हुआ कि धन उस घर से 500 डग पश्चिम की ओर एक मंदिर के चबूतरे के नीचे है।

(क) जब हरिदास भीतर गए तो उन्होंने क्या देखा? 2

(ख) हरिदास की आहट पाकर बुढ़िया ने क्या कहा? 2

(ग) बीजक के संदर्भ में बुढ़िया ने हरिदास से क्या कहा? 2

(घ) बीजक पाकर हरिदास के मन में क्या परिवर्तन आया? 2

(ङ) इस गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

19 पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार, कुछ सोते, कुछ जागते चले आ रहे थे। अचानक कई गाड़ीवानों ने घबराए हुए आकर उन्हें जगाया और बोले—महाराज! दारोगा ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुला रहे हैं।

पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं वैसे ही नचाती हैं। लेटे ही लेटे गर्व से बोले—चलो हम आते हैं। यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले—बाबू जी आशीर्वाद! कहिए , हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गईं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए।

वंशीधर रुखाई से बोले—सरकारी हुक्म!

पं० अलोपीदीन ने हँसकर कहा, हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आप से बाहर हो सकते हैं ? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ाएँ! मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था। वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नई उमंग थी। कड़ककर बोले, हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। कायदे के अनुसार आपका चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलूसिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।

पं० अलोपीदीन स्तंभित हो गए। गाड़ीवानों में हलचल मच गई। पंडित जी के जीवन में कदाचित् यह पहला ही अवसर था कि पंडित जी को ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं।

(क) लेखक ने किसे लक्ष्मी के खिलौने कहा है और क्यों? 2

(ख) पंडित अलोपीदीन ने दारोगा से क्या कहा? 2

(ग) पंडित अलोपीदीन ने दारोगा को खुश करने के लिए क्या कहा? 2

(घ) वंशीधर पर अलोपीदीन की बातों का क्या प्रभाव पड़ा? 2

(ङ) अलोपीदीन को गाड़ीवानों ने क्या कहकर उठाया? 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

20 आचार्य बसु ने सोचा कि अगर जड़ पदार्थ से ही जीवन का प्रादुर्भाव हुआ है और जीव-तत्व या चेतन का बीज किसी अन्य नक्षत्र से नहीं आया तो संभव है कि जिसे हम जड़ कहते हैं वह नितांत जड़ नहीं है, चेतनगर्भा है। इसका पता बाहर से प्रदान की गई उत्तेजनाओं के प्रति जड़ पदार्थ की प्रतिक्रियाओं का परीक्षण करके ही लगाया जा सकता था।

बिजली के करेंट का जड़ पदार्थ भी प्रत्युत्तर देते हैं यानी वे उसकी गति का आघात महसूस करते हैं, यह तो वह देख ही चुके थे। अब उन्होंने देखा कि बाहर की उत्तेजना की मात्रा यदि अत्यधिक हो तो जड़ पदार्थ भी थकान का अनुभव करते हैं और विश्राम करने के बाद पुनः अपनी पूर्वावस्था में आ जाते हैं। उन्होंने परीक्षण करके यह भी देखा कि तीव्र उत्तेजक द्रव्यों के जड़ पदार्थों में भी तीव्र प्रतिक्रिया होती है और उनपर ज़हरीले द्रव्यों का प्रभाव वैसा ही होता है, जैसा चेतन प्राणियों पर। अपने परीक्षणों से उन्हें यह विश्वास हो गया कि जड़ और चेतन की प्रतिक्रियाएँ बहुत कुछ समान होती हैं, तब उन्होंने जीव-जगत की ओर दृष्टि घुमाई।

आचार्य बसु ने देखा कि जड़ और चर जगत् के बीच के वे उद्‌भिज प्राणी भी हैं जो अपनी जगह पर अचल खड़े रहते हैं, वहीं अंकुरित होते, पल्लवित-पुष्पित और फलित होते हैं और सूखकर मर जाते हैं। हवा चलती है तो हिलते-डुलते हैं, नहीं तो देखने में जड़ वस्तुओं की तरह चुपचाप खड़े या पड़े रहते हैं। वनस्पति-जगत् के इन असंख्य उद्‌भिजों में आँख, कान व नाक जैसी ज्ञानेंद्रियाँ या हाथ-पाँव जैसी कर्मेंद्रियाँ भी नहीं होतीं, जिससे यह अनुमान किया जा सके कि वे अपना आहार जुटाने के लिए कोई प्रयत्न करते हैं या बाह्य परिस्थितियों की अनुकूलता-प्रतिकूलता अनुभव करते हैं।

(क) 'जड़ पदार्थ से ही जीवन का प्रादुर्भाव हुआ है।' इस आधार पर आचार्य बसु ने क्या सोचा ? 2

(ख) बिजली के करेंट और उत्तेजक द्रव्यों का जड़ पदार्थों पर क्या प्रभाव पड़ा ? 2

(ग) आचार्य बसु ने क्या देखा? 2

(घ) वनस्पति जगत् की किस कमी की ओर बसु का ध्यान गया? 2

(ङ) 'योजक चिह्न' के प्रयोग वाले दो शब्द परिच्छेद से छाँटकर लिखिए। 1

(च) परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए। 1

2 अपठित काव्यांश (Unseen Poetry Passages)

(क) लघुत्तरीय प्रारूप

अपठित काव्यांश से अभिप्राय उस काव्यांश से है, जो पहले पढ़ा हुआ न हो। कविता का ऐसा अंश जो पहले कभी पढ़ा न हो उसे अपठित काव्यांश कहते हैं। इसके द्वारा विद्यार्थी की कविता को समझने की क्षमता का विकास होता है।

अपठित गद्यांश की भाँति अपठित काव्यांश को भी पहले दो-तीन बार पढ़ना चाहिए, ताकि उसका अर्थ एवं भाव अच्छी तरह से समझ में आ जाए। तत्पश्चात् प्रश्नों के उत्तर लिखने चाहिए। उत्तर लिखते समय ध्यान रखना चाहिए कि वे सरल व स्पष्ट हों। कविता की पंक्तियों का प्रयोग उत्तर के लिए नहीं करना चाहिए वरन् उन्हें अपनी भाषा में लिखना चाहिए। इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

उदाहरण

निम्नलिखित काव्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1

जाने क्यों तुमसे मिलने की आशा कम, विश्वास बहुत है।
सहसा भूली याद तुम्हारी उर में आग लगा जाती है,
विरहातप भी मधुर-मिलन के सोये मेघ जगा जाती है।
मुझको आग और पानी में रहने का अभ्यास बहुत है।
जाने क्यों तुमसे मिलने की आशा कम, विश्वास बहुत है।
धन्य-धन्य मेरी लघुता को जिसने तुम्हें महान बनाया,
धन्य तुम्हारी स्नेह-कृपणता जिसने मुझे उदार बनाया।
मेरी अंध भक्ति को केवल इतना मंद प्रकाश बहुत है।
जाने क्यों तुमसे मिलने की आशा कम, विश्वास बहुत है।
अगणित शलभों के दल एक ज्योति पर जलकर मरते।
एक बूँद की अभिलाषा में कोटि-कोटि चातक तप करते,
शशि के पास सुधा थोड़ी है पर चकोर की प्यास बहुत है।
जाने क्यों तुमसे मिलने की आशा कम, विश्वास बहुत है।
ओ! जीवन के थके पखेरू, बढ़े चलो हिम्मत मत हारो,
पंखों में भविष्य बन्दी है मत अतीत की ओर निहारो,
क्या चिन्ता धरती यदि छूटी उड़ने को आकाश बहुत है।
जाने क्यों तुमसे मिलने की आशा कम, विश्वास बहुत है।

(क) कवि अपने मन के विश्वास को किस प्रकार अभिव्यक्त कर रहा है? 2

उत्तर–कवि अपने प्रिय से विश्वास के साथ कह रहा है कि प्रिय की याद अचानक उसके मन में आकर मिलने की इच्छा जगा देती है। विरह व्यथा भी मधुर-मिलन के सोये मेघों को जगा देती है। ऐसी स्थिति में उसे प्रिय से मिलने की आशा से अधिक विश्वास है।

(ख) अपने और प्रिय के विषय में कवि क्या कह रहे हैं? 2

उत्तर–कवि कह रहे हैं कि उनकी लघुता ने प्रिय को महान बना दिया और प्रिय की स्नेह-कृपणता ने उन्हें उदार बना दिया है। प्रिय के प्रति अपार भक्ति के लिए प्रिय का थोड़ा-सा ध्यान ही कवि के लिए काफी है।

(ग) किन उदाहरणों से कवि का विश्वास और भी अधिक दृढ़ हो जाता है? 2

उत्तर–एक ज्योति के पीछे अगणित पतंगों का जलकर मरना, एक बूँद पानी के लिए करोड़ों चातकों का तप करना तथा चाँद के लिए चकोर का अपने जीवन को दाव पर लगाना यही उदाहरण कवि के विश्वास को अधिक दृढ़ कर रहे हैं।

2

न छेड़ो मुझे, मैं सताया गया हूँ,
हँसाते-हँसाते रुलाया गया हूँ।
सताए हुए को सताना बुरा है,
तृषित की तृषा को बढ़ाना बुरा है।
करूँ बात क्या दान या भीख की मैं
सँजोया नहीं हूँ, लुटाया गया हूँ!
न स्वीकार मुझको नियन्त्रण किसी का
अस्वीकार कब है निमन्त्रण किसी का
मुखर प्यार के मौन वातावरण में
अखरता अनोखा समर्पण किसी का।
प्रकृति के पटल पर नियति तूलिका से
अधूरा बनाकर मिटाया गया हूँ।
क्षितिज पर धरा व्योम से नित्य मिलती,
सदा चाँदनी में चकोरी निकलती।
तिमिर यदि न आह्वान करता प्रभाव का
कभी रात भर दीप की लौ न जलती।
करो व्यंग मत व्यर्थ मेरे मिलन पर
मैं आया नहीं हूँ, बुलाया गया हूँ।
न छेड़ो मुझे, मैं सताया गया हूँ।

(क) कवि क्या प्रार्थना कर रहा है और क्यों? 2

उत्तर–कवि चाहता है कि उसे कोई भी ना छेड़े, क्योंकि उसे पहले ही काफी सताया गया है। उसे हँसाते-हँसाते रुलाया गया है। सताए हुए को और अधिक सताना बुरा है और प्यासे व्यक्ति की प्यास को और भी अधिक बढ़ाना बुरा है।

(ख) नियति की तुलिका से कवि को क्या शिकायत है? 2

उत्तर–कवि ने कभी परतंत्र होकर जीना स्वीकार नहीं किया है। किसी के प्यार भरे निमंत्रण को अस्वीकार भी नहीं किया है। प्यार के मुखरित वातावरण में किसी का किया अनोखा समर्पण कवि को इसलिए अखरता है क्योंकि, नियति की तूलिका ने उसके भाग्य को अधूरा लिखकर छोड़ दिया है।

(ग) दीप की लौ के माध्यम से कवि क्या कहना चाह रहे हैं? 2

उत्तर–कवि के अनुसार, जब तक सामने से किसी का इशारा नहीं मिलता तब तक सामने वाला कुछ करने के लिए उत्सुक नहीं होता। चाँद और चकोर तथा अंधकार और दीप की लौ का उदाहरण कवि ने इसी संदर्भ में दिया है।

3

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण—
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि किसकी छाया को न छूने की बात करता है और क्यों? 2

उत्तर–कवि मनुष्य को बीते लम्हों की याद ना कर भविष्य की ओर ध्यान देने को कह रहा है। कवि कहते हैं कि अपने अतीत को याद कर किसी मनुष्य का भला नहीं हुआ है बल्कि मन और दुखी हो जाता है।

(ख) यथार्थ कैसा है? 2

उत्तर–कवि कहते हैं कि मनुष्य सारी ज़िंदगी यश, धन-दौलत, मान, ऐश्वर्य के पीछे भागते हुए बिता देता है जो की केवल एक भ्रम है। कवि कहते हैं कि ये ठीक उसी प्रकार है जैसे रेगिस्तान में पशु पानी की तलाश में भटकता है।

(ग) शरद-रात के चाँद के माध्यम से कवि क्या कहते हैं? 2

उत्तर–कवि कहते हैं कि जिस प्रकार शरद पूर्णिमा की रात को चाँद न निकले तो उसका सारा सौंदर्य और महत्त्व समाप्त हो जाता है उसी प्रकार अगर मनुष्य को जीवन में सुख-संपदा नहीं मिलती तो इसका दुख उसे जीवन भर सताता है।

4

कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ठोकर मार, पटक मत माथा
तेरी राह रोकते पाहन
कुछ भी बन बस कायर मत बन
युद्ध देही कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर
या तो जीत प्रीति के बल पर
या तेरा पथ चूमे तस्कर
प्रति हिंसा भी दुर्बलता है
पर कायरता अधिक अपावन
कुछ भी बन बस कायर मत बन
ले-देकर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने तुझको सींचा
बहा युगों तक खून-पसीना।
कुछ न करेगा? किया करेगा–
रे मनुष्य! बस कातर क्रंदन?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन
तेरी रक्षा का ना मोल है
पर तेरा मानव अमोल है
यह मिटता है वह बनता है
यही सत्य की सही मोल है।
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

(क) कवि क्या करने की प्रेरणा दे रहा है? 2

उत्तर–कवि कहते हैं कि तेरे सामने कैसी भी विपत्ति क्यों न आए तुझे कायर बनकर पीठ नहीं दिखानी है। परिस्थितियों से लड़ते हुए, रास्ते में आने वाली मुश्किलों को ठोकर मारते हुए कवि कायर न बनने की प्रेरणा दे रहे हैं।

(ख) कवि के अनुसार किस तरह का जीवन व्यर्थ है? 2

उत्तर–कवि के अनुसार मनुष्य को समझौता करके जीवन नहीं जीना है। केवल आँसू बहाते हुए जीवन को व्यर्थ नहीं गँवाना है। जब तक गम को ठोकर मारकर मानवता की सेवा करते हुए उसके लिए खून-पसीना बहाते हुए यदि न जीया तो जीवन व्यर्थ है।

(ग) सत्य की सही मोल कवि ने किसे कहा है? 2

उत्तर–कवि कहते हैं कि मनुष्य के भीतर की मानवता का कोई मोल नहीं। जीवन में बनना और मिटना तो लगा रहता है। मनुष्य के आगे सब कुछ अर्पण करना सही है लेकिन दुष्ट के आगे आत्म-समर्पण नहीं करना चाहिए।

5

एक सुनहली किरण उसे भी दे दो
भटक रहा जो अँधियाली के वन में
लेकिन जिसके मन में
अभी शेष है चलने की अभिलाषा
एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।
मौन, कर्म में निरत,
बद्ध पिंजर में व्याकुल,
भूल गया जो दुख जतलाने वाली भाषा
उसको भी वाणी के कुछ क्षण दे दो।
तुम जो सजा रहे हो
ऊँची फुनगी पर के ऊर्ध्वमुखी
नव-पल्लव पर आभा की किरणें
तुम जो जगा रहे हो
दल के दल कमलों की आँखों के
सब सोये सपने,
तुम जो बिखराते हो भू पर
राशि-राशि सोना
पथ को उद्भासित करने एक किरण से
उसका भी माथा आलोकित कर दो।
एक स्वप्न
उसके भी सोये मन में
जागृत कर दो।
एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।
भटक गया जो अंधियारे के वन में।

(क) कवि एक सुनहरी किरण किसे देने की बात कर रहा है? 2

उत्तर–जो अँधेरे वन में भटक तो रहा है लेकिन अभी भी उसमें आगे बढ़ने तथा कुछ कर गुजरने की इच्छा है। उसे कवि सुनहरी किरण देने की बात कर रहा है।

(ख) कवि वाणी के क्षण किसे देने की बात कर रहा है? 2

उत्तर–जो मौन रहकर लगातार कर्मरत है, पराधीनता से व्याकुल है, जो अपने दुखों को अभिव्यक्त करना भूल गया है, जिसके पास शब्द शेष नहीं रह गए हैं, कवि उसे वाणी देने की बात कर रहा है।

(ग) कवि किसके सोये मन में स्वप्न जागृत करने को कह रहा है? 2

उत्तर–कवि कह रहे हैं कि तुम्हें तो ऊँचे-ऊँचे सपनें सजाने की आदत है। तुम लोगों की आँखों में सपने भी जगा रहे हो। उनमें जीवन के सुखों को पाने के सोये सपनों को जन्म दे रहे हो। एक किरण उस उदास मन को दो और उसका भी पथ आलोकित करो।

6

नदी को रास्ता किसने दिखाया?
सिखाया था उसे किसने
कि अपनी भावना के वेग को
उन्मुक्त बहने दे?
कि वह अपने लिए
खुद खोज लेगी
सिंधु की गंभीरता
स्वच्छंद बहकर!
इसे हम पूछते आए युगों से
और सुनते भी युगों से आ रहे उत्तर नदी का:
मुझे कोई कभी आया नहीं था राह दिखलाने;
बनाया मार्ग मैंने आप ही अपना,
ढकेला था शिलाओं को;
गिरी निर्भीकता से मैं कई ऊँचे प्रपातों से;
वनों में कंदराओं में
भटकती, भूलती मैं
फूलती उत्साह से प्रत्येक बाधा-विघ्न को
ठोकर लगाकर, ठेलकर,
बढ़ती गई आगे निरंतर
एक तट को दूसरे से दूरतर करती;
बढ़ी संपन्नता के
और अपने दूर तक फैले हुए साम्राज्य के अनुरूप

गति को मंद कर,
पहुँची जहाँ सागर खड़ा था
फेन की माला लिए
मेरी प्रतीक्षा में।

(क) कवि के अनुसार हम नदी से किस तरह के प्रश्न करते आ रहे हैं? **2**

उत्तर–कवि के अनुसार हम नदी से प्रश्न करते आ रहे हैं कि उसे बहना किसने सिखाया और सागर से जाकर मिलने का रास्ता किसने दिखाया।

(ख) सागर से मिलने के लिए नदी ने क्या कठिनाइयाँ उठाईं? **2**

उत्तर–सागर से मिलने के लिए नदी वनों और गुफाओं से होकर बहती हुई आगे बढ़ी। उसने बाधाओं और मुश्किलों को ढकेला और उत्साह के साथ आगे बढ़ी।

(ग) इस संघर्ष में नदी को क्या प्राप्त हुआ? **2**

उत्तर–इस संघर्ष के कारण नदी आगे बढ़ती हुई संपन्न होती चली गई। अपने साम्राज्य के अनुरूप अपनी गति को तीव्र और मंद करते हुए आगे बढ़ती रही और संघर्ष करते हुए वह सागर से जा मिली।

7

कब सोचा था डिग जाऊँगा
मैं बस, पहिली ही मंज़िल में?
उस पार! अरे उस पार कहाँ?
है अंतहीन इस पार प्रिये!
पैरों में ममता का बंधन,
सिर पर वियोग का भार प्रिये!
अब असह अबल अभिलाषा का
है सबल नियति से संघर्षण;
आगे बढ़ने का अमिट नियम;
पग पीछे पड़ते हैं प्रतिक्षण;
पर यदि संभव ही हो सकता,
केवल पल-भर पीछे हटना–
तो बन जाता वरदान अमर,
यह सबल तुम्हारा आकर्षण!
मैं एक दया का पात्र अरे,
मैं नहीं रंच स्वाधीन प्रिये!
हो गया विवशता की गति में
बँधकर हूँ मैं गतिहीन प्रिये!
शशि एकाकी मिटता रहता,
रवि एकाकी जलता रहता,
तरु एकाकी आहें भरता,
हिम एकाकी गलता रहता;
कोयल एकाकी रो देती,
कलि एकाकी मुरझा जाती,
एकाकीपन में बनने का,
मिटने का क्रम चलता रहता!

(क) कवि अपनी प्रिये से क्या बात कह रहा है? **2**

उत्तर–कवि अपनी विवशता, अपनी कमज़ोरी की बात करते हुए कह रहा है कि उसे इस बात का कभी अहसास नहीं था कि वह सफर के आरंभ में ही अपनी हार को स्वीकार कर लेगा।

(ख) कवि ने अपने गतिहीन होने का क्या कारण बताया है? **2**

उत्तर–कवि के पैरों में ममता का बंधन है और सिर पर वियोग का भार है। नियति के प्रहार का मारा कवि आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है, लेकिन फिर वापस लौटना पड़ता है। विवशता के बंधन ने उसे गतिहीन बना दिया है।

(ग) किस-किस को एकाकीपन के बंधन में बंधकर कवि ने विवश बताया है? **2**

उत्तर–एकाकीपन में चाँद मिटता रहता है तो सूर्य जलता रहता है। तरु आहें भरता है तो हिम पिघलता रहता है। कोयल रोती है तो कलि मुरझा जाती है।

8

तेरी पाँखों में नूतन बल,
कंठों में उबला गीत तरल,
तू कैसे हाय, हुआ बंदी, वन-वन के कोमल कलाकार।

क्या भूल गया वह हरियाली!
अरुणोदय की कोमल लाली?
मनमाना फुर-फुर उड़ जाना, नीले अंबर के आर-पार!
क्या भूल गया बंदी हो के
सुकुमार समीरण के झोंके
जिनसे होकर तू पुलकाकुल बरसा देता था स्वर हज़ार?
रे, स्वर्ण-सदन में बंदी बन
यह दूध-भात का मृदु भोजन–
तुझको कैसे भा जाता है, तज कर कुंजों का फलाहार!
तू मुक्त अभी हो सकता है,
अरुणोदय में खो सकता है,
झटका देकर के तोड़ उसे, पिंजरे को कर यदि तार-तार!
पंछी! पिंजरे के तोड़ द्वार।

(क) कवि को किस बात का दुख है? **2**

उत्तर–कवि पक्षी के पिंजरे में कैद हो जाने पर दुखी है क्योंकि उसने पक्षी को सदैव खुले आसमान में उड़ते और मधुर गीत गाते सुना है और अब वह पिंजरे में कैद मौन हो गया है।

(ख) कवि पंछी को क्या-क्या याद दिला रहा है? **2**

उत्तर–प्रकृति में फैली हरियाली, सुबह-सुबह चंद्रमा के उदित होने पर चारों ओर फैली लालिमा, नीले अंबर के आर-पार उड़ने का आनंद तथा हवा के मधुर झोंकों की याद कवि पंछी को दिला रहा है।

(ग) कवि पंछी को किस बात की उम्मीद दिलाकर आगे बढ़ने को कह रहा है? **2**

उत्तर–कवि वनों के सुख की याद दिलाकर पक्षी को यह उम्मीद दिला रहा है कि यदि वह चाहे तो मुक्त होकर सुबह की लालिमा में खो सकता है। लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए उसे साहस के साथ पिंजरे का द्वार तोड़ना होगा।

9 विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आयी थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खायी थी,
काना और मन्दरा सखियाँ रानी के संग आयी थीं,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचायी थी,
पर, पीछे ह्यूरोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह,
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।
तो भी रानी मार काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,

घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक शत्रु बहुतेरे होने लगे वार पर वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह,
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

(क) इस पद्यांश में किसे मर्दानी कहा गया है और क्यों? 2

उत्तर–इस पद्यांश में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को मर्दानी कहा गया है, क्योंकि उन्होंने वीरता और साहस के साथ अंग्रेजों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किया था।

(ख) रानी और उसकी सखियों ने अंग्रेज़ों के साथ किस प्रकार युद्ध किया था? 2

उत्तर–रानी तथा उनकी सखियों काना और मन्दरा ने युद्धक्षेत्र में अंग्रेज़ों का सामना करते हुए भारी मार मचायी थी। जनरल स्मिथ को इन सभी से मुँह की खानी पड़ी थी। लेकिन पीछे से ह्यूरोज ने आकर रानी को घेर लिया था।

(ग) रानी के शहीद होने का क्या कारण था? 2

उत्तर–रानी जिस घोड़े पर सवार थी वह घोड़ा नया था। नाला आने पर वह अड़ गया। इतने में पीछे से अंग्रेजों के सवार आ गए। रानी अकेली थी और शत्रु बहुत सारे थे। सभी के वारों ने रानी को घायल कर दिया।

10

गरमी की दोपहरी में
तपे हुए नभ के नीचे।
काली सड़कें तारकोल की
अंगारे-सी जली पड़ी थीं।
छाँह जली थी पेड़ों की भी
पत्ते झुलस गए थे।
नंगे-नंगे दीर्घकाय, कंकालों-से वृक्ष खड़े थे
हों अकाल के ज्यों अवतार।

एक अकेला ताँगा था दूरी पर
कोचवान की काली-सी चाबुक के बल पर
वो बढ़ता था।
घूम-घूम जो बलखाती थी सर्प सरीखी।
बेदर्दी से पड़ती थी दुबले घोड़े की गर्म
पीठ पर।
भाग रहा वह तारकोल की जली
अँगीठी के ऊपर से।

कभी एक ग्रामीण धरे कन्धे पर लाठी
सुख-दुख की मोटी-सी गठरी
लिये पीठ पर
भारी जूते फटे हुए
जिन में से थी झाँक रही गाँवों की आत्मा
ज़िन्दा रहने के कठिन जतन में
पाँव बढ़ाये आगे जाता।

(क) गरमी की दोपहर के लिए कवि ने क्या लिखा है? 2

उत्तर–गरमी की दोपहर में तपे हुए नभ के नीचे तारकोल से बनी काली सड़कें अंगारों-सी जल रही हैं। पेड़ों की छाँह भी झुलस रही है और वृक्ष नंगे-नंगे विशाल काय, कंकालों के जैसे खड़े हैं।

(ख) ताँगा किस प्रकार आगे बढ़ रहा था? 2

उत्तर–ताँगा कोचवान की काली-सी चाबुक के बल पर आगे बढ़ रहा था। वह चाबुक जो उसके शरीर पर साँप की तरह बल खाती-सी पड़ रही है। वह तारकोल की जलती अंगीठी पर भाग रहा है।

(ग) ग्रामीण का चित्रण कवि ने कैसे किया है? 2

उत्तर–उसके कंधे पर लाठी और मोटी गठरी लदे हुए हैं तथा उसके जूते भी फटे हुए हैं। ज़िंदा रहने के कठिन जतन में वह पाँव बढ़ाकर आगे चला जा रहा है।

11

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते॥
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे॥
परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है।
हा! यह प्यारा बाग़ खून से सना पड़ा है॥
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना॥

वायु चले पर मंद चाल से उसे चलाना।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना॥
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे॥
लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले॥
किंतु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना।
स्मृति में पूजा-हेतु यहाँ थोड़े बिखराना॥

(क) कवि ने बाग़ का दृश्य किन शब्दों में चित्रित किया है? 2

उत्तर–कवि कहते हैं कि इस बाग़ में कोयल के मीठे स्वर नहीं, बल्कि कौवे का कर्कश शोर सुनाई देता है। बाग़ में इधर-उधर घूमने वाले काले कीट, भँवरों का भ्रम उपस्थित करते हैं। आधी खिली हुई कलियाँ, काँटों की झाड़ियों से मिल गई हैं। बाग़ में उगे हुए पौधे ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो सूख गए हैं या झुलस गए हैं।

(ख) कवि ऋतुराज से क्या प्रार्थना कर रहा है? 2

उत्तर–कवि बसंत से कह रहा है कि इस बाग़ में तुम जब भी आना बहुत-ही धीमे से आना। यह शोक-स्थान है, यहाँ शोर मत मचाना। यह पूरा बाग़ खून से सना हुआ है।

(ग) कवि पुष्पों के लिए बसंत को क्या हिदायत दे रहे हैं और क्यों? 2

उत्तर–कवि बसंत से कहते हैं कि जो पुष्प तुम अपने साथ लेकर आओ, वह अधिक सजीले व गहरे रंग के ना हों। उनकी खुशबू भी मंद हो तथा वे ओस से भीगे हुए हों। इन पुष्पों को लाते समय उपहार का भाव प्रदर्शित न करते हुए पूजा का भाव दर्शाना, क्योंकि यहाँ अनेक लोगों की हत्या की गई थी। यह सारा बाग़ उन्हीं के खून से सना हुआ है।

12

देखो प्रिय, विशाल विश्व को आँख उठाकर देखो,
अनुभव करो हृदय से यह अनुपम सुषमाकर देखो।
यह सामने अथाह प्रेम का सागर लहराता है,
कूद पड़ूँ तैरूँ इसमें, ऐसा जी में आता है॥
प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंग निराला,
रवि के सम्मुख थिरक रही है नभ में वारिद-माला।
नीचे नील समुद्र मनोहर ऊपर नील गगन है,
घन पर बैठ बीच में बिचरूँ यही चाहता मन है॥

रत्नाकर गर्जन करता है मलयानिल बहता है,
हरदम यह हौसला हृदय में प्रिये! भरा रहता है।
इस विशाल, विस्तृत, महिमामय रत्नाकर के घर के,
कोने-कोने में लहरों पर बैठ फिरूँ जी भर के॥
निकल रहा है जलनिधि-तल पर दिनकर-बिंब अधूरा,
कमला के कंचन-मंदिर का मानो कांत कँगूरा।
लाने को निज पुण्यभूमि पर लक्ष्मी की असवारी,
रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण-सड़क अति प्यारी॥

(क) कवि आँख उठाकर किसे देखने को कह रहा है और क्यों? 2

उत्तर–कवि विशाल विश्व को आँख उठाकर देखने के लिए कह रहा है। कवि स्वयं प्रकृति की सुंदरता को देख प्रसन्नता से झूमने लगता है। सुंदरता के सागर में तैरने लगता है, अत: वह चाहता है कि सभी इस आनंद का अनुभव करें।

(ख) कवि का मन क्या चाहता है? 2

उत्तर–कवि आसमान में बादलों के बने भिन्न-भिन्न रूपों से अत्यधिक प्रभावित है। नीचे नीले रंग का बहता हुआ विशाल समुद्र और फैला अनंत नीला आसमान देख कवि का मन चाहता है, वह बादलों में बैठकर इस पूरे विश्व का चक्कर लगाएँ।

(ग) उगते हुए सूर्य को देख कवि क्या कल्पना कर रहा है? **2**

उत्तर–उगते हुए सूर्य को देख कवि कहता है कि समुद्र के ऊपर उगता हुआ सूर्य का अधूरा बिंब लक्ष्मी के मंदिर के चमकते गुंबद के समान लग रहा है। उगते हुए सूर्य की परछाई जो सागर में पड़ रही है, उसे देख ऐसा लग रहा है, मानो लक्ष्मी की सवारी को पुण्य धरती पर लाने के लिए सागर ने सोने की सड़क का निर्माण कर दिया है।

13

आज की यह सुबह है बहुत प्रीतिकर,
कह रही उठ नया काम कर, नाम कर।
जो अधूरी रही वह सुबह कल गई,
मान ले अब यही कुछ कमी रह गई,
ले नई ताज़गी यह सुबह आ गई,
कह रही–मीत उठ, बात कर कुछ नई,
ओ सृजन-दूत तू, शक्ति-संभूत तू,
क्यों खड़ा राह में अश्व यों थाम कर।
दूसरों की बनाई डगर छोड़ दे,
तू नई राह पर कारवाँ मोड़ दे,
फोड़ दे तू शिलाएँ चुनौती भरी–
क्रूर अवरोध को निष्करुण तोड़ दे,
व्यर्थ जाने न पाए महापर्व यह–
जो स्वयं आ गया आज तेरी डगर।
अब नए मार्ग पर रथ नए हाँकने,
हर अँधेरे से दीपक लगे झाँकने,
बंद, अज्ञात थी आज तक जो दिशा–
उस दिशा को नए नाम हैं बाँटने,
मोड़ लो सूर्य का रथ, विपथ पथ बने–
बढ़ चलो विघ्न व्यवधान सब लाँघ कर।

(क) आज की सुबह क्या पैगाम दे रही है? **2**

उत्तर–आज की सुबह बहुत ही सुखकर है। वह पैगाम दे रही है कि कुछ नया काम करो और कुछ ऐसा करो जिससे तुम्हारा नाम हो।

(ख) ताज़गी भरी सुबह मानव से क्या कह रही है? **2**

उत्तर–ताज़गी भरी सुबह मानव से कह रही है कि कल की अधूरी सुबह का ख्याल छोड़ दो। आज की यह सुबह तुम्हें नया पैगाम दे रही है। अपनी सृजनात्मकता को जगाकर आगे बढ़ो।

(ग) कवि किस चुनौती को स्वीकारने की बात कर रहा है? **2**

उत्तर–कवि दूसरों की बनाई मंज़िल को त्यागकर स्वयं अपने द्वारा बनाई डगर पर चलने को कह रहा है। कवि हाथ में आए अवसर को व्यर्थ न गँवाने की सलाह दे रहा है। हाथ आए अवसर का पूरा लाभ उठाने के लिए कवि मानव को उकसा रहा है।

14

तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात...
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल?
तुम मुझे पाए नहीं पहचान?
देखते ही रहोगे अनिमेष!
थक गए हो?

आँख लूँ मैं फेर?
क्या हुआ यदि हो सके परिचित न पहली बार?
यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न पाता जान
धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य।
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य।
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क।

(क) 'दंतुरित मुसकान' से कवि का क्या आशय है? 2

उत्तर–'दंतुरित मुसकान' से कवि का आशय उस शिशु की सहज और निश्छल मुस्कान से है, जिसके अभी नए-नए दाँत आए हैं।

(ख) 'छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात'–पंक्ति में 'झोंपड़ी' और 'जलजात' शब्दों का प्रयोग कवि ने किस-किसके लिए किया है? 2

उत्तर–'झोंपड़ी' से कवि का तात्पर्य अपने छोटे-से घर से है और 'जलजात' शब्द का प्रयोग कवि ने कमल समान शिशु के लिए किया है।

(ग) कवि आँख फेर लेने की बात क्यों करता है? 2

उत्तर–कवि सोचता है कि संभवतः शिशु उसे अपलक देखते-देखते थक गया है। अतः पहली बार में ही परिचय हो, ऐसा आवश्यक न जानकर वह आँख फेर लेने की बात करता है।

15

जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक-न-एक सभी को, सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन-भर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है॥

रवि जग में शोभा सरसाता, सोम सुधा बरसाता।
सब हैं लगे कर्म में, कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता।
है उद्देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अंत कर्ममय तन का।

तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्देश्य-रहित हो जग में, तुमने कभी विचारा?
बुरा न मानो, एक बार सोचो तुम अपने मन में।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिया तुमने निज जीवन में?

जिस पर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है।
जिसका खाकर अन्न, सुधा-सम नीर, समीर पिया है।
वह स्नेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?

(क) 'प्रकृति में जड़ वस्तुएँ भी कर्मरत हैं' कवि किन उदाहरणों से स्पष्ट कर रहा है? 2

उत्तर–कवि कहता है कि प्रकृति में सभी को एक-न-एक धुन है तथा वे अपने कर्म में लगे हैं। पेड़ का छोटा-सा पत्ता अपने छोटे-से जीवन में सूर्य के तेज़ ताप को सहता है तथा धरती को उसके ताप से बचाता है। चाँद भी जग को सुंदरता प्रदान कर रहा है तथा अमृत-रस बरसा रहा है। एक छोटा-सा तिनका भी कर्म करते हुए अपने छोटे-से जीवन को जी रहा है।

(ख) कवि मनुष्य से क्या विचार करने को कह रहा है? 2

उत्तर–कवि मनुष्य से कह रहा है कि ईश्वर ने तुम्हें बुद्धिपूर्ण जीवन दिया है। क्या इस जीवन को उद्देश्य रहित ही जी लोगे? कवि मनुष्य को अपने मन में विचारने के लिए कह रहा है कि क्या उसने अपने कर्तव्य को समाप्त कर लिया है।

(ग) कवि धरती माता के प्रति किस भावना को मन में उजागर कर रहे हैं? 2

उत्तर–कवि मनुष्य से पूछ रहे हैं कि जिस धरती पर तुमने जन्म लिया है, जिसका अन्न-जल खाया है, जिसका अमृत के समान जल पिया है, उस माता तुल्य धरती के प्रति क्या तुम्हारा कोई कर्तव्य शेष तो नहीं रह गया है।

• अभ्यास-प्रश्न •

निम्नलिखित काव्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले,
आए बनकर उल्लास अभी
आँसू बनकर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?
किस ओर चले? यह मत पूछो
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,
दो बात कही, दो बात सुनी।
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।
हम भिखमंगों की दुनिया में
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निशानी-सी उर पर
ले असफलता का भार चले,
हम मान रहित, अपमान रहित
जी भरकर खुलकर खेल चुके,
हम हँसते-हँसते आज यहाँ
प्राणों की बाज़ी हार चले।

(क) कवि ने दीवानों की क्या हस्ती बताई है? 2
(ख) कवि के हँसने और रोने का क्या कारण है? 2
(ग) कवि के मन में असफलता का भार क्यों है? 2

2

अब न चलेगा काम इससे करो ये प्रण,
साथियों से अब भूल के भी न लड़ेंगे हम।
छोटा-बड़ा धनी या कि निर्धन निरीह ही हो,
सेवा त्याग से ही मूल्यांकन करेंगे हम।
साम्राज्यवादी शक्तियों को कर देंगे नष्ट,
जैसे भी बनेगा प्रण पूरा ये करेंगे हम।
देश के लिए ही हम जीवित रहेंगे 'दीप',
और निज देश के ही ऊपर मरेंगे हम।
मत की विभिन्नता में होंगे जो यथार्थ भेद,
सत्यता से यक्ष प्रतिपादन करेंगे हम।
अपने विचारों का प्रचार भी करेंगे किंतु,
दूसरों के साथ अनाचार न करेंगे हम।
देश की स्वतंत्रता में देंगे जो सहर्ष साथ,
भाई के समान प्रेम उनको करेंगे हम।
तन, मन, धन औ, सदैव कर्म से भी 'दीप'
साथी देशभक्तों की सहायता करेंगे हम।

(क) कवि क्या प्रण ले रहा है? 2
(ख) देश के प्रति कवि अपनी किस भावना को अभिव्यक्त कर रहा है? 2
(ग) दूसरों के प्रति कवि के क्या भाव हैं? 2

3

सम्राटों की सत्ता काँपी, भूपों के सिंहासन डोले।
गणतंत्र तुम्हारे आते ही, जन-मन जागे, कण-कण बोले।
गणतंत्र तुम्हारे स्वागत में, प्राणों के पुष्प बिछाए हैं,
आजादी के परवानों ने, हँस-हँस कर शीश चढ़ाए हैं।
आओ-आओ निज जननी को, जुग-जुग गणतंत्र निहाल करो,
फिर गौरवशाली माता का, भू-तल पर उन्नत भाल करो।
डग-डग पर डगमग करने को, पग-पग पर पड़े प्रलोभन हैं,
पथभ्रष्ट कहीं मत हो जाना, मोहक रमणी, धरणी जन हैं।
गण-गण में गुण-गण विकसित हों, कण-कण से कायरता भागे,
मन-मन में भद्र भाव उमगे, जन-जन में नैतिकता जागे।
समता, स्वतंत्रता बंधु भाव से गूँज उठे पृथ्वी सारी,
यह लोक 'सत्य शिव सुंदर' हो, मानवता हो मंगलकारी।

(क) गणतंत्र के आने पर क्या हुआ? 2
(ख) भारतमाता का भाल किस प्रकार उन्नत किया जा सकता है? 2
(ग) कवि ने प्रलोभनों को लेकर क्या बात कही है? 2

4

क्या प्रिय स्वदेश को हम स्वाधीन कर सकेंगे?
फिर मान-शैल शिर पर आसीन कर सकेंगे?
हाँ, क्यों न कर सकेंगे, उद्योग जब करेंगे,
जिस देश में जिए हैं, उसके लिए मरेंगे!

ले ढाल दृढ़ क्षमा की, असि सत्य की स्वकर में–
रिपु-वर्ग से लड़ेंगे अविराम शम-समर में।
उसके अनात्म-भौतिक बल से नहीं डरेंगे,
जिस देश में जिए हैं, उसके लिए मरेंगे!

अन्याय की गढ़ी को जड़ खोद ढाएँगे हम,
नए की विजय-पताका नभ में उड़ाएँगे हम।
भयभीत भाइयों की भय-भावना हरेंगे,
जिस देश में जिए हैं, उसके लिए मरेंगे!

सर्वस्व जानते हैं जब देश का सदा हम,
उस पर करें निछावर तब क्यों न संपदा हम।
माँ का दिया चुकावें, जग से तभी तरेंगे।
जिस देश में जिए हैं, उसके लिए मरेंगे!

(क) कवि के मन में क्या शंका उभर रही है? 2
(ख) अपने दुश्मन से किस प्रकार लड़ने की बात कही गई है? 2
(ग) जग से कब तर सकते हैं? 2

5

मधुप गुनगुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास,
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास।
तब भी कहते हो–कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे–यह गागर रीती।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की,
अरे खिलखिलाकर हँसते होने वाली उन बाधाओं की।
मिला कहाँ वो सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया?
आलिंगन में आते-आते मुसकाकर जो भाग गया।
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?
क्या ये अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे–मेरी भोली आत्म-कथा?
अभी समय बही नहीं–थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(क) 'मधुप' को प्रतीक बनाकर कवि क्या कहना चाह रहा है? 2
(ख) कवि अपनी असमर्थता को क्या कहकर अभिव्यक्त कर रहा है? 2
(ग) कवि को किस बात का अफसोस हो रहा है? 2

6

विवश नहीं वे विकल नहीं हैं
घने अंधकार में
चमकते ज्योति कण हैं।
नहीं ज्योति आँखों की
फिर भी क्या कमी दृष्टि की?
देख सकते हैं खूब
ज्ञान की रोशनी से;

जग की रीत, न्याय, अन्याय, सच-झूठ।
विवेक व्यवहार से प्रकाशित उनका जीवन
ज्योतित है अंतर्मन।
विवश नहीं हाथों के अभाव में
कर सकते हैं काम वे सब
करने की जो मन में ठान लें।
छोड़ नहीं देते अधूरा काम वे

जिसे एक बार हाथ से थाम लें।
मनोबल जिनका बाहुबल से
है कहीं ज़्यादा
अक्षमताएँ नहीं रोक सकतीं
उनका अटल इरादा।
पैरों से हैं पंगु मगर वे
पार कर सकते हैं पर्वत श्रेणियाँ
फैला कर अपने पंख सपनों के।
नहीं प्रतिभा पर कोई प्रतिबंध
कौन रोके मन की उड़ान निर्बंध।
पाते नहीं बाधा कार्य साधन में
नहीं अशक्त गतिमान हैं वे।

(क) दृष्टि की कमी वाले लोगों की विशिष्टता की ओर कवि ने संकेत किया है? 2

(ख) लूले लोगों की किस विशेषता की ओर कवि हमारा ध्यान खींचते हैं? 2

(ग) लँगड़े लोगों की किस प्रतिभा ने उन्हें विशिष्ट बना दिया है? 2

7

जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था
तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

(क) 'आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ'–से कवि का क्या अभिप्राय है? 2

(ख) 'संगतकार' नौसिखिए का साथ क्यों देता था? 2

(ग) संगतकार का मुख्य गायक के पीछे सुरों का साथ देना उसकी क्या विशेषता बताता है? 2

8

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डरकर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्‌यम से; श्रमजल से।
ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा
करते निरुद्‌यमी प्राणी,
धोते वीर कुअंक भाल का
बहा भ्रुवों से पानी।
भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का,
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।
पूछो किसी भाग्यवादी से,
यदि विधि-अंक प्रबल है,
पद पर क्यों देती न स्वयं
वसुधा निज रतन उगल है?
उपजाता क्यों विभव प्रकृति को
सींच-सींच वह जल से?
क्यों न उठा लेता निज संचित
कोष भाग्य के बल से?

(क) प्रकृति कैसे मनुष्य से डरकर झुकती है? 2

(ख) निरुद्‌यमी प्राणियों के लिए कवि क्या कहते हैं? 2

(ग) कवि भाग्यवादी व्यक्ति से क्या प्रश्न पूछना चाहता है? 2

9

जन्म लेते हैं जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक-ही-सी चाँदनी है डालता॥
मेघ उन पर है बरसता एक-सा,
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बही।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उन के एक-से होते नहीं॥
छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,
भौंरे का है बेध देता श्याम तन॥
फूल लेकर तितलियों को गोद में
भौंरे को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों औ निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला॥
है खटकता एक सब की आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-शीश पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर॥

(क) कवि ने प्रकृति की किस विशेषता को यहाँ चित्रित किया है? 2

(ख) काँटें की किस क्रूरता को कवि ने चित्रित किया है? 2

(ग) फूल सभी को क्यों प्यारा लगता है? 2

10

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल,
सबका लिया सहारा।
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो, कहाँ कब हारा।
क्षमाशील हो रिपु समक्ष,
तुम हुए विनत जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको,
कायर समझा उतना ही॥
अत्याचार सहन करने का
कुफल यही होता है
पौरुष का आतंक मनुज
कोमल होकर खोता है।
क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पथ माँगते,
रघुपति सिंधु-किनारे।
बैठे पढ़ते रहे छंद,
अनुनय के प्यारे-प्यारे॥
उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सच पूछो, तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की
संधि-वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।

(क) सुयोधन ने किस-किस का सहारा लिया और क्यों? उसका परिणाम क्या हुआ? 2

(ख) कौरवों की किस कमी की ओर कवि ने संकेत किया है? 2

(ग) संधि वचन किसका पूजनीय है और क्यों? 2

11

विवश नहीं वे विकल नहीं हैं
घने अंधकार में
चमकते ज्योति कण हैं।
नहीं ज्योति आँखों की
फिर भी क्या कमी दृष्टि की?
देख सकते हैं खूब
ज्ञान की रोशनी से;
जग की रीत, न्याय, अन्याय, सच-झूठ।
विवेक व्यवहार से प्रकाशित उनका जीवन
ज्योतित है अंतर्मन।
विवश नहीं हाथों के अभाव में
कर सकते हैं काम वे सब
करने की जो मन में ठान लें।
छोड़ नहीं देते अधूरा काम वे

जिसे एक बार हाथ से थाम लें।
मनोबल जिनका बाहुबल से
है कहीं ज़्यादा
अक्षमताएँ नहीं रोक सकतीं
उनका अटल इरादा।
पार कर सकते हैं पर्वत श्रेणियाँ
फैला कर अपने पंख सपनों के।
नहीं प्रतिभा पर कोई प्रतिबंध
कौन रोके मन की उड़ान निर्बंध।
पाते नहीं बाधा कार्य साधन में
नहीं अशक्त गतिमान हैं वे।

(क) दृष्टि की कमी वाले लोगों की किस विशिष्टता की ओर कवि ने संकेत किया है? **2**

(ख) लूले लोगों की किस विशेषता की ओर कवि हमारा ध्यान खींचते हैं? **2**

(ग) लँगड़े लोगों की किस प्रतिभा ने उन्हें विशिष्ट बना दिया है? **2**

12

हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।
यद्यपि हमें इतिहास अपना प्राप्त पूरा है नहीं,
हम कौन थे, इस ज्ञान को, फिर भी अधूरा है कहें।
हम दूसरों के दुख को थे दुख अपना मानते;
हम मानते कैसे नहीं, जब थे सदा यह जानते–
''जो ईश कर्ता है हमारा दूसरों का है वही,
हैं कर्म भिन्न परंतु सब में तत्व-समता हो रही।''
बिकते गुलाम न थे कहाँ, हममें न ऐसी रीति थी,
सेवक-जनों पर भी हमारी नित्य रहती प्रीति थी।
वह नीति ऐसी थी कि चाहे हम कभी भूखे रहें,
पर बात क्या जीते हमारे जी कभी वे दुख सहें।
आए नहीं थे स्वप्न में भी जो किसी के ध्यान में,
वे प्रश्न पहले हल हुए थे एक हिंदोस्तान में।
सिद्धांत मानव-जाति के जो विश्व में वितरित हुए,
बस, भारतीय तपोवनों में थे प्रथम निश्चित हुए।

(क) कवि किस समस्या पर विचार करने को कह रहा है और क्यों? **2**

(ख) कवि ने किन भारतीय विचारधाराओं तथा भावनाओं को श्रेष्ठ बताया है? **2**

(ग) भारतीय संस्कृति की किस श्रेष्ठता को कवि ने उभारा है? **2**

13

था कली के रूप शैशव में अहो, सूखे सुमन।
हास्य करता था, खिलाती अंक में तुझको पवन॥
खिल गया जब पूर्ण तू, मंजुल सुकोमल पुष्प बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँड़राने लगे, उड़ते भ्रमर॥
स्निग्ध किरणें चंद्र की तुझको हँसाती थीं सदा।
ओस मुक्ता-जाल से शृंगारती थी सर्वदा॥
वायु पंखा झल रही निद्रा-विवश करती तुझे।
यत्न माली का रहा आनंद से भरता तुझे॥
कर रहा अठखेलियाँ इतरा सदा उद्यान में।
अंत का यह दृश्य आया था कभी क्या ध्यान में॥
सो रहा अब तू धरा पर शुष्क बिखराया हुआ।
गंध-कोमलता नहीं मुख-मंजु मुरझाया हुआ॥
आज तुझको देखकर, चाहक भ्रमर आता नहीं।
वृक्ष भी खोकर तुझे हा! अश्रु बरसाता नहीं।
जिस पवन ने अंक में ले, प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला उसने तुझे भू पर दिया॥
कर दिया मधु और सौरभ दान सारा एक दिन।
किंतु रोता कौन है तेरे लिए दानी सुमन॥

(क) खिले हुए कोमल पुष्प की सुंदरता को कवि ने किस प्रकार चित्रित किया है? **2**

(ख) मुरझाए हुए फूल की विडंबना का चित्रण कवि ने किन शब्दों में किया है? **2**

(ग) कवि ने सुमन को दानी क्यों कहा है? **2**

14

सागर के उर पर नाच-नाच, करती हैं लहरें मधुर गान।
जगती के मन को खींच-खींच,
निज छवि के रस से सींच-सींच

जल कन्याएँ भोली अजान,
सागर के उर पर नाच-नाच, करती हैं लहरें मधुर गान।
प्रात: समीर से हो अधीर,
छूकर पल-पल उल्लसित तीर,
कुसुमावलि-सी पुलकित महान,
सागर के उर पर नाच-नाच, करती हैं लहरें मधुर गान।
संध्या से पाकर रुचिर रंग,
करती-सी शत सुर-चाप भंग,
हिलतीं नव तरु-दल के समान,
सागर के उर पर नाच-नाच, करती हैं लहरें मधुर गान।
करतल-गत कर नभ की विभूति,
पाकर शशि से सुषमानुभूति,
तारावलि-सी मृदु दीप्तिमान,
सागर के उर पर नाच-नाच, करती हैं लहरें मधुर गान।

(क) 'कवि ने लहरों में मानवीय संभावनाओं को चित्रित किया है।' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2
(ख) कवि ने लहरों की तुलना किस-किससे की है? 2
(ग) लहरों को कवि ने जल कन्याएँ क्यों कहा है? 2

15 नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें।
भीनी-भीनी खुशबू वाले
रंग-बिरंगे
यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था।
पकी सुनहली फसलों से जो
अबकी यह खलिहान भर गया
मेरी रग-रग के शोणित की बूँदें इसमें मुसकराती हैं
नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें।

(क) 'मेरी भी आभा है इसमें' से कवि का क्या तात्पर्य है? 2
(ख) फूलों की सुंदरता को लेकर कवि क्या कहते हैं? 2
(ग) सुनहली फसलों के लिए कवि क्या भावना व्यक्त कर रहा है? 2

16 मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में।
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।
मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू,
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में।
बनकर किसी के आँसू मेरे लिए बहा तू,
आँखें लगी थीं मेरी तब मान और धन में।
बेबस गिरे हुओं के तू बीच में खड़ा था,
मैं स्वर्ग देखता था झुकता कहाँ चरन में।
तूने दिए अनेकों अवसर न मिल सका मैं,
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में।
कैसे तुझे मिलूँगा, जब भीड़ इस कदर है,
हैरान होके भगवन, आया हूँ मैं सरन में।

(क) उपर्युक्त काव्यांश में 'मैं' और 'तू' सर्वनाम का प्रयोग किस-किस के लिए हुआ है? 2
(ख) ईश्वर किस-किस रूप में सामने आया और 'मैं' उसे पहचान न सका? 2
(ग) 'मैं' किसे ढूँढ़ रहा था और कहाँ-कहाँ? 2

17

थाल सजा कर किसे पूजने
चले भोर ही मतवाले?
कहाँ चले तुम राम-नाम का
पीतांबर तन पर डाले?

चले झूमते मस्ती से तुम,
क्या अपना पथ आए भूल?
कहाँ तुम्हारा दीप जलेगा,
कहाँ चढ़ेंगे माला-फूल?

इधर प्रयाग न गंगासागर,
इधर न रामेश्वर, काशी,
यहाँ किधर है तीर्थ तुम्हारा,
कहाँ चले तुम संन्यासी?

मुझे न जाना गंगासागर,
मुझे न रामेश्वर, काशी,
तीर्थ-राज चित्तौड़ देखने
को मेरी आँखें प्यासी।

अपने अचल स्वतंत्र दुर्ग पर
सुन कर बैरी की बोली,
निकल पड़ीं ले कर तलवारें
जहाँ जवानों की टोली।

जहाँ आन पर माँ-बहनों की
जला-जला पावन होली,
वीर-मंडली ने गर्वित हो
जय-जय-जय माँ की बोली।

सुंदरियों ने जहाँ देश-हित
जौहर-व्रत करना सीखा,
स्वतंत्रता के लिए जहाँ
बच्चों ने भी मरना सीखा।

वहीं जा रहा पूजा करने,
लेने सतियों की पद-धूल,
वहीं हमारा दीप जलेगा,
वहीं चढ़ेगा माला-फूल।

(क) कवि संन्यासी से कौन-कौन से प्रश्न कर रहा है? 2

(ख) 'कहाँ चले तुम संन्यासी' प्रश्न पूछने के पीछे कवि का क्या तात्पर्य है? 2

(ग) संन्यासी का दीप कहाँ जलेगा और फूल कहाँ चढ़ेंगे? 2

18

मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।
अंबर पर जितने तारे, उतने वर्षों से,
मेरे पुरखों ने धरती का रूप सँवारा।
धरती को सुंदरतम करने की ममता में,
बिता चुका है कई पीढ़ियाँ वंश हमारा।
और अभी आगे आने वाली सदियों में,
मेरे वंशज धरती का उद्धार करेंगे।
इस प्यासी धरती के हित मैं ही लाया था,
हिमगिरि चीर, सुखद गंगा की निर्मल धारा।
मैंने रेगिस्तानों की रेती धो-धोकर,
वंध्या धरती पर भी स्वर्णिम पुष्प खिलाए।
मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?
अपने नहीं अभाव मिटा पाया जीवन-भर,
पर औरों के सभी अभाव मिटा सकता हूँ।
तूफ़ानों-भूचालों की भयप्रद छाया में,
मैं ही एक अकेला हूँ, जो गा सकता हूँ।
मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझ-से अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है,
मैं खंडहर को फिर से महल बना सकता हूँ।
जब-जब भी मैंने खंडहर आबाद किए हैं,
प्रलय-मेघ, भूचाल देख मुझको शरमाए।
मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?

(क) मज़दूर का धनिक वर्ग की बस्ती से कोई सरोकार क्यों नहीं है? 2

(ख) मज़दूर धरती का रूप किस प्रकार सँवारते रहे हैं? 2

(ग) मज़दूर के जीवन की विडंबना क्या है? 2

19

सुख नहीं यह, नींद में सपने सँजोना,
दुख नहीं यह, शीश पर गुरु भार ढोना।
शूल तुम जिसको समझते थे अभी तक,
फूल मैं उसको बनाने आ रहा हूँ।
देखकर मँझधार को घबरा न जाना,
हाथ ले पतवार को घबरा न जाना।
मैं किनारे पर तुम्हें थकने न दूँगा,
पार मैं तुमको लगाने आ रहा हूँ।

तोड़ दो मन में कसी सब शृंखलाएँ,
तोड़ दो मन में बसी संकीर्णताएँ।
बिंदु बनकर मैं तुम्हें ढलने न दूँगा,
सिंधु बन तुमको उठाने आ रहा हूँ।
तुम उठो, धरती उठे, नभ शिर उठाए,
तुम चलो गति में नई गति झनझनाए।
विपथ होकर मैं तुम्हें मुड़ने न दूँगा,
प्रगति के पथ पर बढ़ाने आ रहा हूँ।

(क) उपर्युक्त काव्यांश का भाव अपने शब्दों में लिखिए। 2

(ख) 'पार मैं तुमको लगाने आ रहा हूँ।'–इन शब्दों द्वारा कवि किस परिस्थिति में सहायक बनने का आश्वासन दे रहा है? 2

(ग) प्रगति के पथ पर बढ़ने की बात कवि किन लोगों के संबंध में कह रहा है? 2

20

सिंधु-मिलन की चाह नहीं, बस
मुझको तो बहते जाना है!
दो पुलिनो से बँधकर भी
कितनी स्वतंत्र है जीवन-धारा!
रोक रखेगी मुझको कब तक
पत्थर चट्टानों की कारा?
अपनी तुंग-तरंगों का ही
रहता इतना बड़ा भरोसा;
लौट-लौटकर नहीं देखता,
मुझको तो बहते जाना है!
राह बनाकर चलना पड़ता,
इसीलिए रुक-रुक चलता हूँ,
झुकना शील-स्वभाव, शिलाओं को
पथ को चंचल, खलता हूँ!
"आसपास में औरों के,
मेरी भी एक धार लहराए"–
यह विचारने की कब फुरसत?
मुझको तो बहते जाना है!

(क) कवि क्यों बहते जाना चाहता है? 2

(ख) अपनी तरंगों के ऊपर कवि को क्या विश्वास है? 2

(ग) रुक-रुक कर चलने तथा अपने स्वभाव के बारे में कवि क्या कह रहा है? 2

खंड-2

व्यावहारिक-व्याकरण (IX)

अंक-विभाजन

निर्धारित अंक : 15

1. वर्ण-विच्छेद	2 अंक
अनुस्वार	1 अंक
अनुनासिक	1 अंक
नुक़्ता	1 अंक
2. उपसर्ग-प्रत्यय	3 अंक
3. संधि	4 अंक
4. विराम-चिह्न	3 अंक
(व्याकरण पाठ्यपुस्तक पर आधारित होगी)	15 अंक

1 वर्ण-विच्छेद ('र' के विभिन्न रूप, अनुस्वार, अनुनासिक, नुक्ता (आगम ध्वनियाँ))

वर्ण (Letter)

वर्ण-विच्छेद को समझने से पहले, आइए जानें, वर्ण किसे कहते हैं?

परिभाषा–'लिखित भाषा की उस छोटी-से-छोटी मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।' मूल रूप में वर्ण वे चिह्न होते हैं, जो हमारे मुख से निकली हुई ध्वनियों के लिखित रूप होते हैं। यह भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है और इसके खंड नहीं किए जा सकते। उदाहरण के लिए–'राम बाज़ार गया।' यदि इस वाक्य का विश्लेषण करें तो–(र् + आ, म् + अ) (ब् + आ, ज् + आ, र् + अ) (ग् + अ, य् + आ) प्राप्त होंगे। इससे आगे इसके खंड नहीं किए जा सकते। अत: इन्हें ही वर्ण कहा जाता है।

वर्णमाला (Alphabet)

वर्णों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहा जाता है। हिंदी भाषा में मुख्य रूप से निम्नलिखित वर्ण प्रयुक्त किए जा रहे हैं :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। (स्वर)

अं, अँ, अः। (अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग)

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त्, थ्, द्, ध्, न्
प्, फ्, ब्, भ्, म् } ड़ ढ़ व्यंजन

य्, र्, ल्, व् — अंतस्थ व्यंजन

श्, ष्, स्, ह् — ऊष्म

हल-चिह्न (्)–व्यंजनों के नीचे लगा हल-चिह्न स्वर के न होने का चिह्न है। सभी व्यंजन स्वर के बिना होते हैं। परंतु उनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता। जब भी व्यंजन का उच्चारण होता है तो स्वर की सहायता से ही; जैसे–म् + अ = म, म् + आ = मा, म् + इ = मि। स्वरों का योग हो जाने के कारण ये व्यंजन अक्षर कहलाते हैं।

ऑ–अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों के प्रयोग के लिए हिंदी भाषा ने 'ऑ' ध्वनि को भी हिंदी वर्णमाला में स्वीकार कर लिया है; जैसे–डॉक्टर, कॉलेज, कॉफ़ी।

ड़, ढ़–इन दो ध्वनियों का प्रयोग भी हिंदी भाषा में बहुतायत से होता है। इनका संबंध संस्कृत के ड और ढ से तो कदापि नहीं है। इसकी विशेषता यह है कि यह ध्वनि शब्द के आरंभ में नहीं आती; जैसे–बूढ़ा, गढ़ा, पहाड़, चढ़ाई, साड़ी। ड और ढ शब्द के प्रारंभ में आते हैं; जैसे–डाल, ढाल, डरपोक आदि।

कुछ पूर्णतया विदेशी ध्वनियाँ वर्ण के रूप में अपने शब्द भंडार के साथ हिंदी में प्रविष्ट हुई हैं; जैसे–क़, ख़, ग़, ज़ और फ़। ये ध्वनियाँ अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि भाषाओं की हैं, परंतु हिंदी में फ़ारसी के द्वारा ही आई हैं; जैसे–

क़–क़ौम, ख़–ख़ुदा, ग़–ग़रीब, ज़–ज़रूरत, फ़–फ़न।

विद्वानों द्वारा क्ष, त्र, ज्ञ, श्र को हिंदी वर्णमाला में सम्मिलित नहीं किया जाता, क्योंकि ये वर्ण नहीं 'संयुक्त वर्ण' कहलाते हैं। इन वर्णों की उत्पत्ति दो वर्णों के मेल से हुई है :

क्ष = क् + ष् + अ   त्र = त् + र् + अ   ज्ञ = ज् + ञ् + अ   श्र = श् + र् + अ

इसलिए सामान्य रूप से इनकी गणना वर्णमाला में करना युक्तिसंगत नहीं होगा।

उच्चारण के आधार पर वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है :

वर्ण (Letter)

- स्वर (Vowels)
- व्यंजन (Consonants)

स्वर (Vowels)

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा मुख विवर से बिना किसी रुकावट के निकल जाती है, वे स्वर कहलाते हैं। अतः स्वर स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। इनकी कुल संख्या ग्यारह है :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

उच्चारण में लगे समय के आधार पर स्वरों के तीन वर्ग बनते हैं :

1. ह्रस्व 2. दीर्घ 3. प्लुत।

1. ह्रस्व स्वर (Short Vowels)–जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है, वे 'ह्रस्व स्वर' कहलाते हैं। हिंदी में अ, इ, उ, ऋ ये चार ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर (Long Vowels)–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है, वे 'दीर्घ स्वर' कहलाते हैं। हिंदी में आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ये सात दीर्घ स्वर हैं।

3. प्लुत स्वर (Longer Vowels)–जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ से दुगुना तथा ह्रस्व से तिगुना समय लगता है, वे 'प्लुत स्वर' कहलाते हैं; जैसे–हे रा३म, ओ३म् आदि।

उच्चारण-स्थान के आधार पर स्वरों के दो भेद किए जाते हैं–अनुनासिक तथा निरनुनासिक स्वर।

व्यंजन (Consonants)

'व्यंजन उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण स्वर की सहायता से होता है।' इनका उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकली वायु को मुँह में विभिन्न स्थानों पर पूरा या आंशिक रूप से रोका जाता है। कुछ व्यंजनों के उच्चारण में वायु मार्ग इतना संकरा होता है कि हवा रगड़ खाकर बाहर निकलती है। उच्चारण करते समय हवा को किसी भी रूप में रोका जाता है तथा जिस स्थान पर हवा रगड़ खाती है, उस स्थान को व्यंजन विशेष का उच्चारण स्थान कहते हैं। व्यंजनों के निम्नलिखित तीन भेद हैं :

1. स्पर्श व्यंजन (Mutes-Consonants)–क् से लेकर म् तक के 25 वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। इन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के भिन्न-भिन्न भागों का स्पर्श करती है। इसके कुल पाँच वर्ग हैं और प्रत्येक वर्ग अपने वर्ग के प्रथम वर्ण के नाम से जाना जाता है।

क् वर्ग – क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च् वर्ग – च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
ट् वर्ग – ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त् वर्ग – त्, थ्, द्, ध्, न्
प् वर्ग – प्, फ्, ब्, भ्, म्

2. अंतस्थ व्यंजन (Semi-Consonants)–इन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के किसी भी भाग को स्पर्श नहीं करती। इनका उच्चारण स्वर तथा व्यंजन का मध्यवर्ती-सा होता है। ये कुल चार हैं–य्, र्, ल्, व्।

3. ऊष्म व्यंजन (Sibiliants-Consonants)–इन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा के रगड़ खाने से एक प्रकार की ऊष्मा-सी उत्पन्न होती है। ये कुल चार हैं–श्, ष्, स्, ह्।

संयुक्त और द्‌वित्व व्यंजन

संयुक्त व्यंजन–दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से संयुक्त ध्वनियाँ बनती हैं। हिंदी में स्वर रहित व्यंजन को आगे वाले व्यंजन से मिला दिया जाता है।

संयुक्त व्यंजन बनाने के कुछ नियम इस प्रकार हैं :

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप बनाने के लिए पाई को हटा दिया जाता है; जैसे:

बच्चा (च्‍ + च = च्च)	सज्जा (ज्‍ + ज = ज्ज)
प्रख्यात (ख्‍ + य = ख्य)	मग्न (ग्‍ + न = ग्न)
विघ्न (घ्‍ + न = घ्न)	पत्ता (त्‍ + त = त्त)
पथ्य (थ्‍ + य = थ्य)	ध्वस्त (ध्‍ + व = ध्व, स्‍ + त = स्त)
न्याय (न्‍ + य = न्य)	प्याला (प्‍ + य = प्य)
लम्ब (म्‍ + ब = म्ब)	सभ्यता (भ्‍ + य = भ्य)
स्वस्थ (स्‍ + व = स्व, स्‍ + थ = स्थ)	व्यवहार (व्‍ + य = व्य)

(ख) क और फ के संयुक्ताक्षर बनाते समय इनका पीछे वाला भाग हटा दिया जाता है; जैसे:

पक्का (क्‍ + क = क्क) रफ्तार (फ्‍ + त = फ्त)

नई मानक वर्तनी के अनुसार 'पक्का' का स्वरूप 'पक्‍का' मान्य नहीं है।

(ग) बिना पाई वाले व्यंजनों (ट्, ठ्, ड्, ढ्, द्, ह्, ङ्) के संयुक्ताक्षरों में हल् चिह्न का प्रयोग होना चाहिए; जैसे–

वाङ्मय = ङ् + म	लट्टू = ट् + ट
पाठ्य = ठ् + य	बुड्ढा = ड् + ढ
विद्या = द् + य	ब्राह्मण = ह् + म

(घ) हिंदी में 'र्' वर्ण के भी अनेक रूप हैं।

ऋ शब्द का प्रयोग केवल संस्कृत से लिए गए तत्सम शब्दों में ही होता है अन्यत्र नहीं। इस प्रकार के प्रयोग में विद्यार्थी विशेष रूप से भूल कर डालते हैं। इन भूलों का निराकरण अभ्यास पर ही आधारित है। फिर भी कुछ नियमों की जानकारी हम आगे लेंगे।

'र्' के विभिन्न रूप

हिंदी वर्णमाला में र् की स्थिति दूसरे वर्णों से भिन्न है। इसकी स्थिति वर्णमाला में विशेष है, क्योंकि इसके लेखन में विविधता है।

– रेफ (र्‍) लेखन की स्थिति :

र् जब हलंत अर्थात् स्वर रहित होता है तो उसके नीचे हल्-चिह्न नहीं लगता। ऐसी स्थिति में 'र्' रेफ (र्‍) बनकर अगले व्यंजन के सिर पर लगता है।

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
पर्‌व	पर्व	वर्‌ष	वर्ष
गर्‌व	गर्व	अर्‌घ्‌य	अर्घ्य
सर्‌व	सर्व	धर्‌मार्‌थ	धर्मार्थ

पर्‌व शब्द में 'व' वर्ण के पहले आने के कारण यह 'व' के शीर्ष पर लगेगा; जैसे–पर्व।

अर्‌घ्‌य में चूँकि र् के बाद घ् भी हलंत सहित है, अतः यह घ् के बाद आने वाले वर्ण य के शीर्ष पर लगेगा; जैसे–अर्घ्य। धर्‌मार्‌थ में 'र्' अगले वर्ण 'मा' तथा 'थ' पर लगा है; जैसे–धर्मार्थ।

रेफ (र्) के अन्य उदाहरण :

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
कर्‌म	कर्म	चर्‌म	चर्म	कर्‌म	कर्म
चर्‌म	चर्म	कर्‌तव्य	कर्तव्य	आर्शीवाद	आशीर्वाद
फॉर्‌म	फॉर्म	पदार्‌थ	पदार्थ	वार्‌षिक	वार्षिक
दीर्‌घ	दीर्घ	विद्यार्‌थी	विद्यार्थी	धर्‌म	धर्म
कीर्‌ति	कीर्ति	दुर्‌गा	दुर्गा	पर्‌दा	पर्दा
कोर्‌ट	कोर्ट	मार्‌ग	मार्ग	धार्‌मिक	धार्मिक
फर्‌क	फर्क	मूर्‌ति	मूर्ति	चार्‌ट	चार्ट
कार्‌ड	कार्ड	अर्‌थ	अर्थ	वर्‌ग	वर्ग
वर्‌ण	वर्ण	कार्‌य	कार्य	वर्‌णित	वर्णित

जब 'र' से पहला व्यंजन हलंत होता है और इसका उच्चारण प्रयुक्त वर्ण के बाद होता है तो 'र' से पहला वर्ण पूरा लिखा जाता है और 'र' का रूप विकृत हो जाता है।

–पाई वाले व्यंजनों के बाद प्रयुक्त 'र' पाई के नीचे तिरछा होकर प्रयुक्त हो जाता है; जैसे :

क् + र = क्र = क्रोध, क्रम, चक्र प् + र = प्र = प्रकाश, प्रथम, प्रकार

ग् + र = ग्र = ग्रस्त, ग्राम, ग्रंथ स् + र = स्र = हिस्र, मिस्र

ब् + र = ब्र = कब्र, सब्र

पाई रहित व्यंजनों के बाद 'र' का लेखन :

–बिना पाई वाले व्यंजनों के बाद प्रयुक्त 'र' व्यंजन के नीचे (्र) के रूप में प्रयुक्त हो जाता है; जैसे :

ट् + र = ट्र = ट्रक, ट्राम, ट्रस्ट ड् + र = ड्र = ड्रामा, ड्रम

द् तथा ह् के बाद 'र' का लेखन :

द् के बाद आने वाले 'र' का संयुक्त रूप पाई वाले व्यंजनों के समान ही होता है : द् + र = द्र = दरिद्र, कद्र

ह् के बाद आने वाला 'र' का रूप इस प्रकार होता है : ह् + र = ह्र = ह्रस्व, ह्रास

त् और श् के बाद 'र' का लेखन :

त् के बाद 'र' आने पर संयुक्ताक्षर त्र बनता है : त् + र = त्र = त्रिभुज, त्रिशूल, त्रिकाल

श् के बाद 'र' आने पर संयुक्ताक्षर श्र बनता है : श् + र = श्र = श्रम, श्राप, श्रमिक

ध्यान रहे श् + र को श्र लिखना अशुद्ध होगा।

र के साथ उ या ऊ की मात्रा :

र के साथ उ की मात्रा लगने पर रु बनता है : र् + उ = रु = गुरु, रुपया

र के साथ ऊ की मात्रा लगने पर रू बनता है : र् + ऊ = रू = शुरू, रूप, रूढ़, शुरूआत

'र' और 'ऋ' की मात्राओं में अंतर :

पदेन र् (्र) और ऋ (ृ) की मात्रा में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। दोनों के प्रयोग पूर्ण रूप से भिन्न हैं तथा इनके प्रयोग से शब्दों के अर्थ में भी अंतर हो जाता है; जैसे :

ग् + र = ग्र = ग्राम, ग्रसित, ग्रह

ग् + ऋ = गृ = गृहणी, गृह

ग्रह–आकाश में घूमने वाला एक पिंड

गृह–घर

ग्रह की जगह गृह का प्रयोग अशुद्ध होता है। उसी प्रकार जाग्रत की जगह जागृत, क्रम की जगह कृम, कृपा की जगह क्रपा या शृंगार की जगह श्रंगार अशुद्ध होता है।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित शब्दों में 'र' की अशुद्धियों को दूर कर शब्द फिर से लिखिए :

1. कर्मधार्य	....	11. पवित्तर	....	21. मरतबान	....
2. कबर	....	12. करमठ	....	22. कार्यकर्म	....
3. सार्मथ्य	....	13. ब्रह्मा	....	23. कर्मश:	....
4. तीवर	....	14. वर्णन	....	24. समुन्दर	....
5. दरव्य	....	15. स्रोत	....	25. उत्तीरण	....
6. पर्दा	....	16. श्रेय	....	26. प्रीक्षा	....
7. सहस्त्र	....	17. मूरख	....	27. करिपा	....
8. अरथ	....	18. आर्शीवाद	....	28. कायार्लय	....
9. परसन्न	....	19. परसाद	....	29. परणाम	....
10. फरक	....	20. किरया	....	30. चन्दर	....

2. निम्नलिखित वाक्यों में 'र' से संबंधित वर्तनी की अशुद्धियों को छाँटकर उन्हें शुद्ध कीजिए :

(क) बच्चों की आत्मा पवित्तर होती है। ....

(ख) फ़ारम पर हस्ताक्षर कर दो। ....

(ग) हमें अपनी संस्कृति पर गरव है। ....

(घ) अचार मरतबान में रखा है। ....

(ङ) सानिया मिरज़ा की कीर्ति चारों ओर फैल गई है। ....

(च) विद्यार्थी को संयम के साथ जीवन जीना चाहिए। ....

(छ) चितर् का वर्णन करो। ....

(ज) यह कार्यालय कल खुला रहेगा। ....

(झ) हमें जागरुक होकर जीवन जीना चाहिए। ....

(ञ) मेरा मितर कल मेरे घर आएगा। ....

अनुनासिक स्वर

इन स्वरों के उच्चारण में ध्वनि मुख के साथ-साथ नासिका-द्वार से भी निकलती है। अत: अनुनासिकता को प्रकट करने के लिए शिरोरेखा के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग किया जाता है, परंतु जब शिरोरेखा के ऊपर स्वर की मात्रा भी लगी हो तो सुविधा के लिए (स्थानाभाव के कारण) चंद्रबिंदु (ँ) की जगह मात्र बिंदु (ं) लगा दिया जाता है; जैसे–हैं, क्योंकि, गेंद, मैं आदि।

अनुनासिक स्वर (ँ) और अनुस्वार (ं) में अंतर

अनुनासिक और अनुस्वार में मूल अंतर यह है कि अनुनासिक स्वर 'स्वर' है, जबकि अनुस्वार मूलत: व्यंजन है। अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग में कहीं-कहीं अर्थ भेद पाया जाता है; जैसे– हँस – हँसना, हंस – एक पक्षी। इसलिए अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग में सावधानी की आवश्यकता है।

बिंदु-चंद्रबिंदु

हिंदी भाषा के लेखन में बिंदु (ं) अनुस्वार का प्रयोग बहुत महत्त्वपूर्ण है। बिंदु का प्रयोग विभिन्न रूपों में होता है। हम निम्नलिखित तीन स्थितियों पर विशेष ध्यान देंगे :

1. 'अं'-अनुस्वार के रूप में बिंदु का प्रयोग
2. नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर बिंदु का प्रयोग
3. अनुनासिक के स्थान पर बिंदु का प्रयोग

1. अनुस्वार के रूप में बिंदु का प्रयोग :

हिंदी की वर्णमाला में स्वरों के पश्चात् दो अयोगवाह आते हैं : (1) अं (अनुस्वार) (2) अः (विसर्ग)
अनुस्वार व विसर्ग का प्रयोग 'अ' आदि स्वरों की सहायता से ही संभव हो सकता है; जैसे-संताप

इस शब्द का यदि वर्ण-विच्छेद करें तो इसमें स् + अं + त् + आ + प् + अ वर्ण आते हैं। उच्चारण से यह स्पष्ट होता है कि इस शब्द में अनुस्वार 'अं' का उच्चारण (अ + न्) की तरह हुआ है, लेकिन भिन्न-भिन्न शब्दों में 'अं' के उच्चारण के बदलते रूपों को देखा जा सकता है; जैसे-

संरचना = स् + अं (अ + न्) + र् + अ + च् + अ + न् + आ
संवाद = स् + अं (अ + म्) + व् + आ + द् + अ
संचार = स् + अं (अ + न्) + च् + आ + र् + अ
संहार = स् + अं (अ + ङ्) + ह् + आ + र् + अ
संचय = स् + अं (अ + न्) + च् + अ + य् + अ
संगम = स् + अं (अ + म्) + ग् + अ + म् + अ

'अं' की इस विविधता के कारण ही यह नियम बना है कि अंतस्थ (य, र, ल, व) और ऊष्म (श, ष, स, ह) व्यंजनों से पूर्व आने वाले अनुस्वार में बिंदु का प्रयोग होगा।

बिंदु के प्रयोग के अन्य उदाहरण :

कंगाल	कंठ	कंकाल	खंड	चंद	बंद
छंद	गंदा	संवेदना	संवाद	चंपा	चंचल
मंद	रंग	जंजाल	कांच	संन्यासी	संहार
संशोधन	हंस	संस्कार	संभव	रंक	संशय
संयुक्त	संसार	संबंध	सुंदर	जंगल	ठंड

2. नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर बिंदु का प्रयोग :

नासिक्य व्यंजनों का उच्चारण भिन्न-भिन्न स्थितियों में भिन्न-भिन्न तरह से किया जाता है। यही कारण है कि इनके लिपि चिह्न भी भिन्न ही हैं; जैसे-

अङ्क, शङ्ख, गङ्गा	(क वर्ग से पहले 'ङ्')
चञ्चल, मञ्जू	(च वर्ग से पहले 'ञ्')
ठण्डा, कण्ठ, मण्डल	(ट वर्ग से पहले 'ण्')
पन्त, पन्थ, चन्द, धन्धा	(त वर्ग से पहले 'न्')
कम्पन, गुम्फ, चम्बा, गम्भीर	(प वर्ग से पहले 'म्')

हिंदी के बदलते रूप व सरलीकरण के उद्देश्य से अब यह नियम बन गया है कि उपर्युक्त भिन्न-भिन्न नासिक्य व्यंजनों की जगह बिंदु प्रयोग किया जाए। संस्कृत में इनका रूप इसी तरह बना रहे, किंतु हिंदी में इनकी जगह बिंदु प्रयोग को मान्यता दी जाए। अब उपर्युक्त शब्दों का रूप इस प्रकार होगा :

अंक, शंख, गंगा
चंचल, मंजू
ठंडा, कंठ, मंडल
पंत, पंथ, चंद, धंधा
कंपन, गुंफ, चंबा, गंभीर

ध्यान रहे कि ङ्, ञ्, ण्, न् और म् ये पाँचों पंचमाक्षर कहलाते हैं। इनके लिखने की विधियाँ तुमने ऊपर देखीं–इसी रूप में या अनुस्वार के रूप में। इन्हें दोनों में से किसी भी तरीके से लिखा जा सकता है और दोनों ही शुद्ध माने जाते हैं।

यदि एक पंचमाक्षर जब दो बार आता है तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया जाता; जैसे–
चक्का, पन्ना, कुत्ता, कच्चा, अम्मा आदि।

इसी प्रकार इन वर्गों के बाद यदि अंतस्थ य, र, ल, व और ऊष्म श, ष, स, ह आदि आए तो अनुस्वार का प्रयोग किया जाएगा, परंतु उसका उच्चारण पंचम वर्णों में से किसी भी एक वर्ण की भाँति हो सकता है; जैसे–संशय तथा संरचना में 'न्' का उच्चारण, संवाद में 'म्' का उच्चारण तथा संहार में 'ङ्' का उच्चारण।

इस बात का भी ध्यान रहे कि अनुस्वार 'ं' का प्रयोग व्यंजन के साथ होता है और अनुनासिक 'ँ' का स्वर के साथ।

3. अनुनासिक के स्थान पर बिंदु का प्रयोग :

हिंदी में अनुनासिकता को प्रकट करने के लिए शिरोरेखा के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग किया जाता है, परंतु जब शिरोरेखा के ऊपर स्वर की मात्रा भी लगी हो तो सुविधा के लिए (स्थानाभाव के कारण) चंद्रबिंदु की (ँ) जगह मात्र बिंदु (ं) लगा दिया जाता है; जैसे : बिँदू, कहीँ, गोँद, छौँक, मैँ, मेँ
ऊपर दिए गए शब्दों में इँ, ईँ, ओँ, औँ, एँ, ऐँ की मात्राएँ हैं

बिँदू	= ब् + इँ + द् + ऊ	छौँक	= छ् + औँ + क् + अ
कहीँ	= क् + अ + ह् + ईँ	मैँ	= म् + ऐँ
गोँद	= ग् + ओँ + द् + अ	मेँ	= म् + एँ

ऐसे स्थलों पर चंद्रबिंदु का प्रयोग अटपटा लगता है। अत: केवल बिंदु का प्रयोग शुद्ध माना जाने लगा है। ऊपर के शब्दों को यों लिखा जाना मान्य है : बिंदू, कहीं, गोंद, छौंक, मैं, में
परंतु अ, आ, उ, ऊ तथा ऋ स्वर वाले शब्दों में अनुनासिक अर्थात् चंद्रबिंदु का ही प्रयोग होगा (ँ); जैसे–

शुद्ध (मानक)	अशुद्ध (अमानक)	शुद्ध (मानक)	अशुद्ध (अमानक)
हँस (हँसने की क्रिया)	हंस	कुँवारा	कुंवारा
अँग	अंग	खूँटा	खूंटा
आँगन	आंगन	घूँघट	घूंघट

अनुस्वार का निषेध

जिन शब्दों में अनुस्वार के पश्चात्, य, र, ल, व, ह आता है, वहाँ अनुस्वार अपने मूल रूप में ही रहता है; जैसे–

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
पुण्य	पुंय	कण्व	कंव	अन्य	अंय	समन्वय	समंवय
कन्हैया	कंहैया	मान्यता	मांयता	तुम्हें	तुंहे		

यदि अनुस्वार के पश्चात् कोई पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) आ जाए तो अनुस्वार अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होता है। यहाँ बिंदु का प्रयोग अमान्य होता है; जैसे–

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
वाङ्मय	वांमय	उन्मुख	उंमुख	जन्म	जंम	तन्मय	तंमय
सम्मान	संमान	उन्नति	उंनति	सम्मिलित	संमिलित		

अपवाद–'सम्' उपसर्ग का 'सं' हो जाता है; जैसे–

सम् + योग = संयोग		सम् + कल्प = संकल्प
सम् + यंत्र = संयंत्र		सम् + चय = संचय
सम् + रचना = संरचना		सम् + बंध = संबंध
सम् + वाद = संवाद		सम् + सार = संसार

यदि अनुस्वार के द्वित्व (एक जैसे दो अनुस्वार) वर्णों का प्रयोग हो तो ऐसे स्थलों पर अनुस्वार का बिंदु नहीं बनता; जैसे–

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
सम् + मान = सम्मान	संमान	उत् + नति = उन्नति	उंनति
सम् + मेलन = सम्मेलन	संमेलन	उत् + नायक = उन्नायक	उंनायक

ऊष्म व्यंजनों (श, ष, स) से पहले अनुस्वार की जगह बिंदु का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

वंश, दंश, हंस, बांसुरी, विध्वंस।

- **पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श-1' में प्रयुक्त अनुस्वार शब्द**

परंतु	शृंगार	निमंत्रण	बंधन	अंदाजा	अधिकांश	उन्हें
तंबू	ठंडी	हिमपुंज	संतुलन	घंटे	अत्यंत	तुरंत
घुटनों	बिंदु	अंकित	आशंका	संभावना	संक्रमण	पंक्ति
संसर्ग	निर्द्वंद्व	गंध	अंतर	पंखुड़ी	संपत्ति	संस्कृति
रंग	बंद	नंगा	खंड	संपूर्ण	तंबू	शंकु
संभावना	अंदर	आशंका	कंधे	संबंध	गुंजायमान	घंटा
अंक	साइंस	संस्था	अंश	नारंगी	नंबर	संभावना
संरचना	संश्लेषण	ढंग	अंदर	सिद्धांत	अनुसंधान	संदेश
आरंभ	सुंदर	पसंद	गंगा	खंभात	प्रपंच	संसार
चंद्र	गांधीजी	पंजाब	तंगी	अंग्रेज़	यंग	इंडिया
संपादक	संपादन	प्रांतों	धुरंधर	संवाददाता	एंग्लो	इंडियन
शरदचंद्र	संगठनों	संचालक	ग्रंथकार	लंबे	गंगा	संस्कार
संपन्न	चंदन	पंक	कंठ	संध्या	वृंद	अंजलि
मंदिर	दंड	पंजर	बंधु	अंडे	गंदे	

अद्र्धचंद्राकार (ॅ) (आगत ध्वनि)

हिंदी की आगत ध्वनियों में से एक है अद्र्धचंद्राकार (ॅ)। हिंदी में स्थान पाने वाले अंग्रेज़ी शब्दों में यह ध्वनि प्रयुक्त की जाती है; जैसे–कॉलेज, डॉक्टर, फॉर्म।

उपर्युक्त शब्दों में प्रयुक्त ध्वनियाँ कॉ, डॉ तथा फॉ का उच्चारण का, डा या फो के समान नहीं है। इन ध्वनियों का उच्चारण आ तथा ओ के बीच का है। इनका उच्चारण करते समय मुँह आधा खुलता है। अतः हिंदी में इनके उच्चारण को ठीक से व्यक्त करने के लिए अद्र्धचंद्राकार का प्रयोग किया जाता है। अद्र्धचंद्राकार के अन्य उदाहरण :

हॉट	(Hot)	हॉल	(Hall)	गॉड	(God)	फ़ॉर्म	(Form)
कॉटेज	(Cottage)	क्लॉक	(Clock)	कॉमन	(Common)	कॉलम	(Column)
कॉटन	(Cotton)	डॉलर	(Dollar)				

अद्र्धचंद्राकार (ॅ) और चंद्रबिंदु (ँ) में अंतर

अद्र्धचंद्राकार व चंद्रबिंदु दोनों ही भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ हैं।

- अद्र्धचंद्राकार अंग्रेज़ी शब्दों के लिए प्रयुक्त होता है जबकि चंद्रबिंदु हिंदी की अनुनासिक ध्वनि है।
- अद्र्धचंद्राकार का उच्चारण करते समय होठ गोल हो जाते हैं जबकि अनुनासिक का उच्चारण नाक से होता है।
- दोनों बिल्कुल भिन्न ध्वनियाँ हैं।
- अद्र्धचंद्राकार केवल 'आ' स्वर के ऊपर लगता है, जबकि चंद्रबिंदु केवल उन्हीं स्वरों में लगता है, जिसकी मात्रा शिरोरेखा के ऊपर नहीं होती है।

शब्दों में अंतर को निम्न उदाहरणों द्वारा समझें :

अद्‍र्धचंद्राकार वाले शब्द–कॉटन, कॉलेज, गॉड, फॉर, फॉर्म, पॉप

चंद्रबिंदु वाले शब्द–काँटा, मुँह, गाँव, फाँदना, फाँटा, पूँछ

- **पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श-1' में प्रयुक्त अनुनासिक शब्द**

आँखों	गाँव	मुँह	धुँधले	चाँद	अँधेरे	बाँट
साँप	फूँकना	पहुँचे	बाँधना	ऊँचाई	साँस	जाएँगे
धुआँ	कहाँ	यहाँ	भावनाएँ	सकूँगा	वहाँ	माँसपेशियाँ
कुआँ	भाँति	माँ	पहुँचने	हँस	पाँच	हाँ
चाहूँगा	हूँ	काँप	आँख	पाँचवाँ	पहुँचता	बाँधकर
कारवाँ	मियाँ	टाँग	जालियाँवाला	पहुँचा	ऊँचे	उसाँस
अँग	गाँठ	खुतबाख्वाँ	जूतियाँ	राशियाँ	चिताएँ	लूँ
आँखें	गूँज	आँगन	वहाँ	सदियाँ	बाएँ	

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर बिंदु (अनुस्वार) व चंद्रबिंदु (अनुनासिक) लगाकर शब्द फिर से लिखिए :

1. बद	....	10. अधेरा	....	19. दूगा	....
2. चाद	....	11. हीग	....	20. बिब	....
3. बासुरी	....	12. पाचवा	....	21. आतक	....
4. सिचाई	....	13. सैतीस	....	22. साप	....
5. ऊट	....	14. चद्रिका	....	23. सन्यासी	....
6. फेक	....	15. फस	....	24. सीग	....
7. अश	....	16. हसमुख	....	25. ठडा	....
8. बिदु	....	17. अगुली	....	26. काच	....
9. कगाल	....	18. नीव	....	27. साय	....

नुक़्ता

अंग्रेज़ी भाषा की तरह उर्दू भाषा से अरबी, फ़ारसी शब्दों का भी हिंदी भाषा में समावेश किया गया है। अरबी, फ़ारसी के इन शब्दों के शुद्‍ध उच्चारण के लिए व्यंजनों के नीचे बिंदी लगाई जाती है। व्यंजनों के नीचे लगने वाली यह बिंदी 'नुक़्ता' कहलाती है। नुक्ता लगने पर उस अक्षर का उच्चारण परिवर्तित होकर किसी अन्य व्यंजन का हो जाता है; जैसे–'ज' के नीचे नुक़्ता लगाने से 'ज़' बन जाता है।

नुक़्ता 'संस्कृत' या 'हिंदी' के मूल शब्दों में नहीं लगता, क्योंकि संस्कृत या हिंदी में वैसी ध्वनियाँ हैं ही नहीं। उर्दू में नुक़्ता वाले उच्चारण सिर्फ़ ये पाँच हैं–क़, ख़, ग़, ज़ और फ़।

नुक़्ता के प्रयोग से उस वर्ण के उच्चारण पर अधिक दबाव आ जाता है; जैसे–'खुदा' का अर्थ हिंदी में 'खुदी हुई ज़मीन' है और इसी शब्द में 'ख' के नीचे नुक़्ता लग जाने पर 'ख़ुदा' का अर्थ 'भगवान' हो जाता है। ध्यान रहे, नुक़्ते वाले शब्द अंग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी या किसी भी भाषा के हो सकते हैं पर भारतीय मूल के शब्द नहीं।

नुक़्ते का उच्चारण

जैसा हमने ऊपर बताया है कि नुक़्ते का प्रयोग केवल पाँच ही व्यंजन वर्णों में होता है—क़, ख़, ग़, ज़ और फ़। इनमें से 'क़, ख़, ग़' व्यंजन वर्णों के उच्चारण में कंठ में ज़रा ज़्यादा दबाव देना पड़ता है। 'ज़' व्यंजन वर्ण का उच्चारण अंग्रेज़ी के 'Z' की तरह होता है और 'फ़' के उच्चारण में होठों से ऊष्म वायु अधिक मात्रा में निकलती है।

नुक़्ते के प्रयोग से शब्दों के अर्थ में परिवर्तन

ज़रा (थोड़ा)	जरा (बुढ़ापा)
फ़न (कौशल)	फन (साँप का शीर्ष भाग)
सज़ा (दंड)	सजा (सजाना)
तेज़ (द्युत)	तेज (चमक)
गज़ (नापने की इकाई)	गज (हाथी)
गरज़ (मज़बूरी)	गरज (बादलों का गरजना)
ज़ाली (नकली)	जाली (झीनीदार कपड़ा)
ज़माना (दुनिया)	जमाना (ठंडा करना)
राज़ (रहस्य)	राज (शासन)

नुक़्ते का प्रयोग

1. यदि शब्द मूल रूप से हिंदी का है, तो उसमें नुक़्ता का प्रयोग शब्द को अशुद्ध कर देगा। यदि 'सफल' शब्द के 'फ़' के नीचे यदि नुक़्ता लग जाए तो वर्तनी अशुद्ध हो जाएगी। स + फल का अर्थ है फल सहित।
2. जिन अंग्रेज़ी शब्दों की वर्तनी में F, PH या Z आता है उन्हीं के नीचे नुक़्ते का प्रयोग किया जाता है। F और PH - फ बनता है तथा Z - ज में परिवर्तित होता है। अतः इन दोनों के नीचे नुक़्ता लगाया जाएगा। ध्यान रहे, अंग्रेज़ी में 'फ' का उच्चारण है ही नहीं।
3. उर्दू में ऊपर बताए क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ वर्ण पर ही नुक़्ते का प्रयोग होगा।
4. इस्लामी देशों के जिन नामों में अंग्रेज़ी का Q अक्षर आता है, वहाँ 'क़' का प्रयोग होता है; जैसे—
   क़ाजी (Qazi)   क़ुतुब (Qutab)   इराक़ (Iraq)
5. दूसरा उच्चारण 'ख़' है। इस उच्चरण को 'KH' से व्यक्त किया जाता है; जैसे—
   ख़ान (Khan)   ख़ुशबू (Khusbu)   ख़ादिम (Khadin)
6. तीसरा उच्चारण 'ग़' जिसे अंग्रेज़ी में 'GH' से व्यक्त करते हैं, उसके नीचे नुक़्ता लगाया जाएगा; जैसे—
   ग़ुलाम (Ghulam)   गज़ल (Ghazal)   ग़ालिब (Ghalib)   असग़र (Asghar)
7. चौथा उच्चारण है 'ज़' जिसे अंग्रेज़ी में 'Z' से व्यक्त करते हैं, उसके नीचे नुक़्ता लगाया जाएगा; जैसे—
   हज़रत (Hazrat)   ज़ोहरा (Zohra)   ज़ीरो (Zero)   ज़ेबरा (Zebra)
8. पाँचवाँ और अंतिम उच्चारण है 'फ़' का। ध्यान रहे कि उर्दू नामों में केवल 'F' ही 'फ़' का उच्चारण देता है। 'Ph' से उर्दू में 'फ' का उच्चारण ही होता है।
   अफ़रोज (Afroz)   फ़ैज़ल (Faizal)

ज़ तथा फ़ युक्त उर्दू शब्द

दरवाज़ा	इस्तीफ़ा	तूफ़ान	मर्ज	फ़तवा	फ़रमान	ज़रूर	क़ौम
ख़ुदा	फ़कीर	फ़ाका	फ़र्श	फ़र्ज़	मज़बूर	क़रीब	फ़ारसी
फ़िदा	रफ़ू	मज़दूर	ज़ुल्म	ताज़ा	फ़ीता	ज़ाफ़रानी	फ़िलहाल
मरीज़	ज़मींदार	ज़ोर	फ़रमाइश	मारफ़त	फ़ायदा	कर्ज़	ज़ेवर

ज़ब्त	फ़रेबी	फ़रियादी	फ़रामोश	ज़ुल्म	ज़ोरदार	ज़मानत	मज़दूर
मज़बूर	ज़हर	ज़रूरत	ज़मीन	रफ़्तार	फ़ारसी	फ़ौरन	ज़मानता
फ़ैसला	कमज़ोर	तूफ़ान	ज़रूर	इस्तीफ़ा	ज़ुल्म	फ़ानवा	ताज़ा
फ़कीर	फर्ज़	ज़ेवर	ज़ोर	इज़्ज़त	फ़रमान		

कुछ मिले-जुले शब्द

क़द	क़िताब	क़रार	क़ौल	क़ालीन	क़तरा	ख़सरा	ख़ुदा
ख़र	ख़ाना	ख़ार	ग़ल्ला	ग़रज	ग़ुल	ग़ौर	गज़
ग़श	राज़	ज़िला	ज़रा	ज़माना	ज़ीना	ज़ंग	ज़िरह
ज़री	ज़रब	ज़लाल	ज़लील	ज़ार	ज़ारी	तेज़	ताक़
ताज़	दर्ज़	दफ़ा	फ़लक	बेबाक़	हज़	हक़	हज़्म
हैज़ा	अक़्ल	सज़ा	मुक़र्रर	मुक़द्दर	माक़ूल	बाग़	

ज़ तथा फ़ युक्त उर्दू शब्द

मेज़र	फ़ीचर	फ़ीस	फ़्री	कफ़	फ़्रिज	ज़ीरो	पीज़ा
ज़ूम	रिवीज़न	फ़ाइन	फ़िल्म	फ़ार्म	फ़ादर	यूज़	क्विज़
डिवीज़न	ट्रेज़डी	ब्लेज़र	फ़ुटबाल	फ़्राँस	फ़ादर	फ़्रेंच	फ़्रेक्चर
प्राइज़	क्रेज़ी	यूज़	रफ़	फ़ील	क्विज़		

विशेष–'क', 'ख', और 'ग' में नुक्ता का प्रयोग ऐच्छिक है। इसे हिंदी में अनिवार्य नहीं माना जाता है। हाँ 'ज़' और 'फ़' में नुक्ता लगाना आवश्यक है। इसका लेखन और उच्चारण आवश्यक है।

- **पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श-1' में प्रयुक्त नुक़्ते वाले शब्द**

साफ़	ज़माना	खरबूज़ों	दर्ज़ा	बर्फ़	काफ़ी	मज़बूत
बाज़ार	तेज़	तूफ़ानों	तरफ़	बर्फ़ीली	ज़ोरदार	नज़दीक
मेहमाननवाज़ी	चीज़	शराफ़त	ज़्यादा	ज़िंदा	बोल्शेविज़्म	मज़हब
एतराज़	नमाज़	अंदाज़ा	दफ़्तर	साफ़तौर	आज़ादी	गिरफ़्तार
फ़ौजी	रोज़	अंग्रेज़ी	सफ़ेद	हफ़्ते	ताज़ी	फ़र्क
मुफ़लिस	ज़रदार	वज़ीर	दिलवज़ीर	ज़मीन		

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर नुक्ते का प्रयोग कीजिए :

1. जोर	....	11. जिला	....	21. फैसला	....
2. मजदूर	....	12. फौरन	....	22. जिल्लत	....
3. जमानत	....	13. फारसी	....	23. जरूरत	....
4. फायदा	....	14. जर्रा	....	24. फरमाइश	....
5. रफ्तार	....	15. जहर	....	25. जोरदार	....
6. जिंदगी	....	16. पीजा	....	26. जमींदार	....
7. जबान	....	17. फलसफा	....	27. रफू	....
8. रिवीजन	....	18. फरेबी	....	28. फाका	....
9. जुल्फ	....	19. मेजर	....	29. जमीन	....
10. मजबूर	....	20. फौज	....	30. फ्रिज	....

वर्ण-विच्छेद (Letter-disjoint)

वर्ण-विच्छेद से तात्पर्य है–किसी भी शब्द या ध्वनि समूह के वर्णों को पृथक्-पृथक् कर लिखना।

जैसे–निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद पर ध्यान दें :

कमल	–	क् + अ + म् + अ + ल् + अ
महाराज	–	म् + अ + ह् + आ + र् + आ + ज् + अ
मेहमान	–	म् + ए + ह् + अ + म् + आ + न् + अ
पर्यावरण	–	प् + अ + र् + य् + आ + व् + अ + र् + अ + ण् + अ
मक्खन	–	म् + अ + क् + ख् + अ + न् + अ
प्रधानाध्यापक	–	प् + र् + अ + ध् + आ + न् + आ + ध् + य् + आ + प् + अ + क् + अ
संस्कृति	–	स् + अं + स् + क् + ऋ + त् + इ
शीतलता	–	श् + ई + त् + अ + ल् + अ + त् + आ
न्योछावर	–	न् + य् + ओ + छ् + आ + व् + अ + र् + अ
प्रकृति	–	प् + र् + अ + क् + ऋ + त् + इ
सर्वाधिक	–	स् + अ + र् + व् + आ + ध् + इ + क् + अ
अर्जुन	–	अ + र् + ज् + उ + न् + अ
क्षत्रिय	–	क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ
ज्ञानी	–	ज् + ञ् + आ + न् + ई

वर्ण-विच्छेद करने से पूर्व निम्नलिखित तथ्यों को जानना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है :

सभी व्यंजनों की संरचना का ज्ञान होना।

सभी स्वरों की मात्राओं का ज्ञान होना। प्राय: 'इ' की मात्रा का वर्ण-विच्छेद करने में त्रुटि की संभावना देखी जाती है। यह मात्रा लिखी पहले जाती है, किंतु बोली बाद में जाती है। अत: ध्यान रहे कि हमेशा वर्ण-विच्छेद उच्चारण के अनुसार होना चाहिए न कि लिखित स्वरूप के अनुसार; जैसे–'किनारा' शब्द में 'इ' की मात्रा (ि) लिखी तो 'क' के पहले जाती है, किंतु बोली बाद में जाती है। अत: इसका वर्ण-विच्छेद निम्न प्रकार से होगा : किनारा = क् + इ + न् + आ + र् + आ

संयुक्त व्यंजनों की संरचना को जानना :

क्ष = क् + ष् + अ	त्र = त् + र् + अ	ज्ञ = ज् + ञ् + अ	श्र = श् + र् + अ

दो व्यंजनों के संयोग से संयुक्त व्यंजन बनते हैं :

क्लांत	= क् + ल् + आं + त् + अ	प्यास	= प् + य् + आ + स् + अ
ख्याल	= ख् + य् + आ + ल् + अ	न्याय	= न् + य् + आ + य् + अ

अनुस्वार के बिंदु-रूप तथा व्यंजन रूप को जानना; जैसे–

अङ्क	= अ + ङ्+ क् + अ	कण्ठ	= क् + अ + ण् + ठ् + अ
अंक	= अं + (अ + ङ्) + क् + अ	पंथ	= प् + अं (अ + न्) + थ् + अ
चंचल	= च् + अं + (अ + ञ्) + च् + अ + ल् + अ	पन्थ	= प् + अ + न् + थ् + अ
चञ्चल	= च् + अ + ञ् + च् + अ + ल् + अ	कंठ	= क् + अं (अ + ण्) + ठ् + अ
कंपन	= क् + अं (अ + म्) + प् + अ + न् + अ	कम्पन	= क् + अ + म् + प् + अ + न् + अ

'र' के विविध रूपों को जानना : जैसे–'ऋ' और 'रि' के अंतर को जानना

कृपण = क् + ऋ + प् + अ + ण् + अ

अरि = अ + र् + इ

'रु' तथा 'रू' के अंतर को जानना

गुरु = ग् + उ + र् + उ

शुरू = श् + उ + र् + ऊ

'द' के साथ संयुक्त होने वाले व्यंजनों को जानना; जैसे–

पद्मा = प् + अ + द् + म् + आ

द्वारा = द् + व् + आ + र् + आ

युद्ध = य् + उ + द् + ध् + अ

दरिद्र = द् + अ + र् + इ + द् + र् + अ

दृश्य = द् + ऋ + श् + य् + अ

उद्देश्य = उ + द् + द् + ए + श् + य् + अ

'ह' के विभिन्न संयुक्त रूपों को जानना; जैसे–

हृदय = ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ

आह्लाद = आ + ह् + ल् + आ + द् + अ

आह्वान = आ + ह् + व् + आ + न् + अ

ब्राह्मण = ब् + र् + आ + ह् + म् + अ + ण् + अ

चिह्न = च् + इ + ह् + न् + अ

बाह्य = ब् + आ + ह् + य् + अ

निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद को देखिए :

अँगार = अँ + ग् + आ + र् + अ
अंबर = अं + ब् + अ + र् + अ
अँगूर = अँ + ग् + ऊ + र् + अ
अक्षर = अ + क् + ष् + अ + र् + अ
अग्नि = अ + ग् + न् + इ
अनुपम = अ + न् + उ + प् + अ + म् + अ
अश्व = अ + श् + व् + अ
अमृत = अ + म् + ऋ + त् + अ
आभूषण = आ + भ् + ऊ + ष् + अ + ण् + अ
ईश्वर = ई + श् + व् + अ + र् + अ
उन्नति = उ + न् + न् + अ + त् + इ
उद्यान = उ + द् + य् + आ + न् + अ
कपड़ा = क् + अ + प् + अ + ड़् + आ
कामदेव = क् + आ + म् + अ + द् + ए + व् + अ
किनारा = क् + इ + न् + आ + र् + आ
कोयल = क् + ओ + य् + अ + ल् + अ
कर्मठ = क् + अ + र् + म् + अ + ठ् + अ
कंकड़ = क् + अं (अ + ङ्) + क् + अ + ड़् + अ
कुबेर = क् + उ + ब् + ए + र् + अ
कृष्ण = क् + ऋ + ष् + ण् + अ
कृत्रिम = क् + ऋ + त् + र् + इ + म् + अ
कौशल = क् + औ + श् + अ + ल् + अ
क्रोध = क् + र् + ओ + ध् + अ
क्षमा = क् + ष् + अ + म् + आ
कक्षा = क् + अ + क् + ष् + आ
गणेश = ग् + अ + ण् + ए + श् + अ

गतिविधि = ग् + अ + त् + इ + व् + इ + ध् + इ
गद्यांश = ग् + अ + द् + य् + आं + श् + अ
गुरुद्वारा = ग् + उ + र् + उ + द् + व् + आ + र् + आ
गृह = ग् + ऋ + ह् + अ
घृणा = घ् + ऋ + ण् + आ
धंधा = ध् + अं + ध् + आ
चतुर = च् + अ + त् + उ + र् + अ
चंद्रमा = च् + अं + द् + र् + अ + म् + आ
चाँदनी = च् + आँ + द् + अ + न् + ई
चट्टान = च् + अ + ट् + ट् + आ + न् + अ
चतुर्भुज = च् + अ + त् + उ + र् + भ् + उ + ज् + अ
चित्र = च् + इ + त् + र् + अ
चिह्नित = च् + इ + ह् + न् + इ + त् + अ
चुनौती = च् + उ + न् + औ + त् + ई
जंगल = ज् + अं + ग् + अ + ल् + अ
जमुना = ज् + अ + म् + उ + न् + आ
बंदर = ब् + अं + द् + अ + र् + अ
ब्राह्मण = ब् + र् + आ + ह् + म् + अ + ण् + अ
भयानक = भ् + अ + य् + आ + न् + अ + क् + अ
भुलावा = भ् + उ + ल् + आ + व् + आ
जिज्ञासा = ज् + इ + ज् + ञ् + आ + स् + आ
जिह्वा = ज् + इ + ह् + व् + आ
ज्ञात = ज् + ञ् + आ + त् + अ
ड्रामा = ड् + र् + आ + म् + आ
डंड = ड् + अं + ड् + अ
ढक्कन = ढ् + अ + क् + क् + अ + न् + अ
तलवार = त् + अ + ल् + अ + व् + आ + र् + अ

तारा = त् + आ + र् + आ
तालाब = त् + आ + ल् + आ + ब् + अ
तीर = त् + ई + र् + अ
तृष्णा = त् + ऋ + ष् + ण् + आ
तेल = त् + ए + ल् + अ
तैयार = त् + ऐ + य् + आ + र् + अ
त्रिकोण = त् + र् + इ + क् + ओ + ण् + अ
त्रिभुज = त् + र् + इ + भ् + उ + ज् + अ
दंडित = द् + अं + ड् + इ + त् + अ
दिवार = द् + इ + व् + आ + र् + अ
दुकान = द् + उ + क् + आ + न् + अ
दुर्ग = द् + उ + र् + ग् + अ
दृग = द् + ऋ + ग् + अ
द्रवित = द् + र् + अ + व् + इ + त् + अ
द्वार = द् + व् + आ + र् + अ
द्वेष = द् + व् + ए + ष् + अ
न्याय = न् + य् + आ + य् + अ
नास्तिक = न् + आ + स् + त् + इ + क् + अ
निगाह = न् + इ + ग् + आ + ह् + अ
नुकसान = न् + उ + क् + अ + स् + आ + न् + अ
पराग = प् + अ + र् + आ + ग् + अ
पाप = प् + आ + प् + अ
पिता = प् + इ + त् + आ
पीपासा = प् + ई + प् + आ + स् + आ
परीक्षा = प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ
पुस्तक = प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ
प्रभाव = प् + र् + अ + भ् + आ + व् + अ
प्रकृति = प् + र् + अ + क् + ऋ + त् + इ
प्रसिद्ध = प् + र् + अ + स् + इ + द् + ध् + अ
फसल = फ् + अ + स् + अ + ल् + अ
भूमि = भ् + ऊ + म् + इ
मकान = म् + अ + क् + आ + न् + अ
मानस = म् + आ + न् + अ + स् + अ

मिट्टी = म् + इ + ट् + ट् + ई
मीठा = म् + ई + ठ् + आ
मृदु = म् + ऋ + द् + उ
मोमबत्ती = म् + ओ + म् +अ + ब् + अ + त् + त् +ई
यज्ञ = य् + अ + ज् + ञ् + अ
योगी = य् + ओ + ग् + ई
रँगना = र् + अँ + ग् + अ + न् + आ
रसद = र् + अ + स् + अ + द् + अ
रुकावट = र् + उ + क् + आ + व् + अ + ट् + अ
ललाट = ल् + अ + ल् + आ + ट् + अ
लालिमा = ल् + आ + ल् + इ + म् + आ
लौकी = ल् + औ + क् + ई
वीरांगना = व् + ई + र् +आ+ ङ् + ग् +अ+ न् + आ
वृक्ष = व् + ऋ + क् + ष् + अ
वैज्ञानिक = व् + ऐ + ज् + ञ् + आ + न् +इ+ क् +अ
व्यवसाय = व् + य् + अ + व् + अ + स् +आ +य् +अ
श्मशान = श् + म् + अ + श् + आ + न् + अ
शत्रु = श् + अ + त् + र् + उ
शुरुआत = श् + उ + र् + उ + आ + त् + अ
संसार = स् + अं + स् + आ + र् + अ
सृष्टि = स् + ऋ + ष् + ट् + इ
सुंदर = स् + उ + न् + द् + अ + र् + अ
सौभाग्य = स् + औ + भ् + आ + ग् + य् + अ
स्वर्ग = स् + व् + अ + र् + ग् + अ
हिंसा = ह् + इ + न् + स् + आ
हिंदू = ह् + इ + न् + द् + ऊ
हस्ताक्षर = ह् + अ + स् + त् + आ + क् + ष् + अ + र् + अ
फिक्र = फ् + इ + क् + र् + अ
वंदना = व् + अं + द् + अ + न् + आ
विचार = व् + इ + च् + आ + र् + अ
विरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द् + ध् + अ
विज्ञान = व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ

- **पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' में प्रयुक्त शब्दों का वर्ण-विच्छेद**

धूल

सुंदर = स् + उ + अं + द् + अ + र् + अ
कीमती = क् + ई + म् + अ + त् + ई
शिशु = श् + इ + श् + उ
शृंगार = श् + ऋ + अं + ग् + आ + र् + अ
पार्थिवता = प् + आ + र् + थ् + इ + व् + अ + त् + आ
प्रसाधन = प् + र् + अ + स् + आ + ध + अ + न् + अ

सामग्री = स् + आ + म् + अ + ग् + र् + ई
धुँधले = ध् + उ + ँ + ध् + अ + ल् + ए
विज्ञापित = व् + इ + ज् + ञ् + आ + प् + इ + त् + अ
दुर्भाग्य = द् + उ + र् + भ् + आ + ग् + य् + अ
निर्द्वंद्व = न् + इ + र् + द् + व् + अं + द् + व + अ
श्रद्धा = श् + र् + अ + द् + ध् + आ

दुख का अधिकार

श्रेणियों = श् + र् + ए + ण् + इ + य् + ओ + ँ
अनुभूति = अ + न् + उ + भ् + ऊ + त् + इ
फुटपाथ = फ् + उ + ट् + अ + प् + आ + थ् + अ
उम्र = उ + म् + र् + अ
तख्तों = त् + अ + ख् + त् + ओ + ँ
व्यवधान = व् + य् + अ + व् + अ + ध् + आ + न् + अ
दियासलाई = द् + इ + य् + आ + स् + अ + ल् + आ + ई
दुकान = द् + उ + क् + आ + न् + अ
तेईस = त् + ए + ई + स् + अ
कछियारी = क् + अ + छ् + इ + य् + आ + र् + ई
निर्वाह = न् + इ + र् + व् + आ + ह् + अ
विश्राम = व् + इ + श् + र् + आ + म् + अ
बुढ़िया = ब् + उ + ढ़् + इ + य् + आ
दक्षिणा = द् + अ + क् + ष् + इ + ण् + आ
वियोगिनी = व् + इ + य् + ओ + ग् + इ + न् + ई
मृत्यु = म् + ऋ + त् + य् + उ
द्रवित = द् + र् + अ + व् + इ + त् + अ

एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

एवरेस्ट = ए + व् + अ + र् + ए + स् + ट् + अ
अग्रिम = अ + ग् + र् + इ + म् + अ
सर्वप्रथम = स् + अ + र् + व् + अ + प् + र् + अ + थ् + अ + म् + अ
विचित्र = व् + इ + च् + इ + त् + र् + अ
उपनेता = उ + प् + अ + न् + ए + त् + आ
ग्लेशियर = ग् + ल् + ए + श् + इ + य् + अ + र् + अ
अनुकूल = अ + न् + उ + क् + ऊ + ल् + अ
श्रेणियों = श् + र् + ए + ण् + इ + य् + ओ + ँ
संपूर्ण = स् + अ + म् + प् + ऊ + र् + ण् + अ
स्थिति = स् + थ् + इ + त् + इ
विस्तृत = व् + इ + स् + त् + ऋ + त् + अ
हिमपुंज = ह् + इ + म् + अ + प् + उ + न् + ज् + अ
मुश्किल = म् + उ + श् + क् + इ + ल् + अ
स्ट्रेचर = स् + ट् + र् + ए + च् + अ + र् + अ
मुलाकात = म् + उ + ल् + आ + क् + आ + त् + अ
कृतज्ञतापूर्वक = क् + ऋ + त् + अ + ज् + ञ् + अ + त् + आ + प् + ऊ + र् + व् + अ + क् + अ
दृढ़ता = द् + ऋ + ढ़् + अ + त् + आ
श्रमसाध्य = श् + र् + अ + म् + अ + स् + आ + ध् + य् + अ
दक्षिणी = द् + अ + क् + ष् + इ + ण् + ई
प्रोत्साहित = प् + र् + ओ + त् + स् + आ + ह् + इ + त् + अ

तुम कब जाओगे, अतिथि

चतुर्थ = च् + अ + त् + उ + र् + थ् + अ
आतिथ्य = आ + त् + इ + थ् + य् + अ
अतिथि = अ + त् + इ + थ् + इ
आग्रह = आ + ग् + र् + अ + ह् + अ
स्वागत = स् + व् + आ + ग् + अ + त् + अ
सत्कार = स् + अ + त् + क् + आ + र् + अ
भावभीनी = भ् + आ + व् + अ + भ् + ई + न् + ई
अप्रत्याशित = अ् + प् + र् + अ + त् + य् + आ + श् + इ + त् + अ
मार्मिक = म् + आ + र् + म् + इ + क् + अ
सामीप्य = स् + आ + म् + ई + प् + य् + अ
राक्षस = र् + आ + क् + ष् + अ + स् + अ
निर्मूल = न् + इ + र् + म् + ऊ + ल् + अ
फिल्मी = फ् + इ + ल् + म् + ई
राजनीति = र् + आ + ज् + अ + न् + ई + त् + इ
रिश्तेदारी = र् + इ + श् + त् + ए + द् + आ + र् + ई
रूपांतरित = र् + ऊ + प् + आं + त् + अ + र् + इ + त् + अ
अदृश्य = अ + द् + ऋ + श् + य् + अ
संक्रमण = स् + अं + क् + र् + अ + म् + अ + ण् + अ

वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन्

समुद्र = स् + अ + म् + उ + द् + र् + अ
प्रकृति = प् + र् + अ + क् + ऋ + त् + इ
वैज्ञानिक = व् + ऐ + ज् + ञ् + आ + न् + इ + क् + अ
जिज्ञासा = ज् + इ + ज् + ञ् + आ + स् + आ
भौतिकी = भ् + औ + त् + इ + क् + ई
परीक्षा = प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ
प्रसिद्ध = प् + र् + अ + स् + इ + द् + ध् + अ
समर्पित = स् + अ + म् + अ + र् + प् + इ + त् + अ
तैनाती = त् + ऐ + न् + आ + त् + ई
मुखर्जी = म् + उ + ख् + अ + र् + ज् + ई

शैक्षणिक = श् + ऐ + क् + ष् + अ + ण् + इ + क् + अ
समुद्र = स् + अ + म् + उ + द् + र् + अ
परिवर्तन = प् + अ + र् + इ + व् + अ + र् + त् + अ + न् + अ
एकवर्णीय = ए + क् + अ + व् + अ + र् + ण् + ई + य् + अ
तीव्रगामी = त् + ई + व् + र् + अ + ग् + आ + म् + ई
अंतर्राष्ट्रीय = अं + त् + र् + र् + आ + ष् + ट् + र् + ई + य् + अ
आह्लादित = आ + ह् + ल् + आ + द् + इ + त् + अ
प्रतिमूर्ति = प् + र् + अ + त् + इ + म् + ऊ + र् + त् + इ

कीचड़ का काव्य

आकर्षक = आ + क् + अ + र् + ष् + अ + क् + अ
सहानुभूति = स् + अ + ह् + आ + न् + उ + भ् + ऊ + त् + इ
सौंदर्य = स् + औ + ँ + द् + अ + र् + य् + अ
कलाभिज्ञ = क् + अ + ल् + आ + भ् + इ + ज् + ञ् + अ
खूबसूरत = ख् + ऊ + ब् + अ + स् + ऊ + र् + अ + त् + अ
पद्चिह्न = प् + अ + द् + अ + च् + इ + ह् + न् + अ
तृप्ति = त् + ऋ + प् + त् + इ
सर्वत्र = स् + अ + र् + व् + अ + त् + र् + अ
महिषकुल = म् + अ + ह् + इ + ष् + अ + क् + उ + ल् + अ
अल्पोक्ति = अ + ल् + प् + ओ + क् + त् + इ
घृणास्पद = घ् + ऋ + ण् + आ + स् + प् + अ + द् + अ
युक्तिशून्य = य् + उ + क् + त् + ई + श् + ऊ + न् + य् + अ
वासुदेव = व् + आ + स् + उ + द् + ए + व् + अ
मातुश्री = म् + आ + त् + उ + श् + र् + ई

धर्म की आड़

यथार्थ = य् + अ + थ् + आ + र् + थ् + अ
दुरुपयोग = द् + उ + र् + उ + प् + अ + य् + ओ + ग् + अ
नेतृत्व = न् + ए + त् + ऋ + त् + व् + अ
सिद्धि = स् + इ + द् + ध् + इ
अनियंत्रित = अ + न् + इ + य् + अं + त् + र् + इ + त् + अ
दृढ़ता = द् + ऋ + ढ़् + अ + त् + आ
स्वाधीनता = स् + व् + आ + ध् + ई + न् + अ + त् + आ
विरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द् + ध + अ
धर्माचार्यों = ध् + अ + र् + म् + आ + च् + आ + र् + य् + ओ + ँ
शक्तिशाली = श् + अ + क् + त् + इ + श + आ + ल् + ई
बेईमानी = ब् + ए + ई + म् + आ + न् + ई

रुकावट = र् + उ + क् + आ + व् + अ + ट् + अ
कसौटी = क् + अ + स् + औ + ट् + ई
धार्मिक = ध् + आ + र् + म् + इ + क् + अ

शुक्रतारे के समान

नक्षत्र = न् + अ + क् + ष् + अ + त् + र् + अ
शुक्रतारे = श् + उ + क् + र् + अ + त् + आ + र् + ए
राष्ट्रीय = र् + आ + ष् + ट् + र् + ई + य् + अ
संक्षिप्त = स् + अं + क् + ष् + इ + प् + त् + अ.
सत्याग्रह = स् + अ + त् + य् + आ + ग् + र् + अ + ह् + अ
प्रकाशित = प् + र् + अ + क् + आ + श् + इ + त् + अ
साप्ताहिक = स् + आ + प् + त् + आ + ह् + इ + क् + अ
आश्रम = आ + श् + र् + अ + म् + अ
श्रीमती = श् + र् + इ + म् + अ + त् + ई
भ्रमण = भ् + र् + अ + म् + अ + ण् + अ
प्रार्थना = प् + र् + आ + र् + थ् + अ + न् + आ
मंत्रमुग्ध = म् + अं + त् + र् + अ + म् + उ + ग् + ध् + अ
वार्तालाप = व् + आ + र् + त् + आ + ल् + आ + प् + अ
साहित्यिक = स् + आ + ह् + इ + त् + य् + इ + क् + अ
संबंधित = स् + अ + म् + ब् + अ + न् + ध् + इ + त् + अ
संपर्क = स् + अ + म् + प् + अ + र् + क् + अ
मृत्यु = म् + ऋ + त् + य् + उ

• अभ्यास-प्रश्न •

1. **निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए :**

1. प्रतीक्षा = ...
2. दुर्घटना = ...
3. सीमित = ...
4. क्षेत्र = ...
5. सहायता = ...
6. शरीर = ...
7. मानसिक = ...
8. मानवीय = ...
9. दुकानदार = ...
10. मक्खियाँ = ...
11. नियंत्रण = ...
12. विविधता = ...

13. आभूषण = ...
14. परोपकारी = ...
15. सुविधा = ...
16. चुनौती = ...
17. लांछित = ...
18. व्यवसाय = ...
19. इच्छाशक्ति = ...
20. चेतावनी = ...
21. विज्ञापन = ...
22. इस्तेमाल = ...
23. तकनीक = ...
24. सामाजिक = ...
25. जातीयता = ...
26. योग्यता = ...
27. राष्ट्र = ...
28. आर्थिक = ...
29. आमूल = ...
30. पूर्ण = ...

2. निम्नलिखित वर्णों के मेल से शब्द-निर्माण कीजिए :

1. श् + र् + ई + म् + आ + न् + अ = ...
2. स् + अं + र् + अ + च् + अ + न् + आ = ...
3. स् + अ + म् + म् + इ + ल् + इ + त् + अ = ...
4. ब् + उ + ध् + अ + व् + आ + र् + अ = ...
5. व् + ऐ + ज् + ञ् + आ + न् + इ + क् + अ = ...
6. व् + आ + क् + य् + आं + श् + अ = ...
7. ल् + अ + क् + ष् + म् + ई = ...
8. म् + ओ + म् + अ + ब् + अ + त् + त् + ई = ...
9. भ् + ऊ + म् + इ + क् + आ = ...
10. प् + र् + अ + स् + इ + द् + ध् + अ = ...
11. म् + इ + ठ् + आ + स् + अ = ...
12. प् + र् + अ + य् + उ + क् + त् + अ = ...
13. प् + अ + र् + व् + अ + त् + अ = ...
14. च् + अ + त् + उ + र् + भ् + उ + ज् + अ = ...
15. क् + र् + अ + म् + इ + क् + अ = ...
16. ग् + र् + आ + म् + ई + ण् + अ = ...
17. च् + उ + न् + औ + त् + ई = ...
18. क् + आ + र् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ = ...

19. आ + प् + ऊ + र् + त् + इ = ...

20. द् + र् + अ + व् + इ + त् + अ = ...

21. त् + र् + इ + क् + ओ + ण् + अ = ...

22. न् + आ + ग् + अ + र् + इ + क् + अ = ...

23. व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ = ...

24. ब् + उ + द् + ध् + अ = ...

25. म् + ऋ + ण् + आ + ल् + अ = ...

उच्चारण और वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ और उनका निराकरण

भाषा को शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध उच्चारण का अत्यंत महत्त्व है। हिंदी के संदर्भ में तो यह बात और भी सत्य है, क्योंकि यह भाषा जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। हिंदी में जो अशुद्धियाँ दिखाई देती हैं, उसका मुख्य कारण अशुद्ध उच्चारण ही है। नीचे उन शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं, जिनके उच्चारण में सामान्यत: अशुद्धियाँ होती हैं :

1. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	अनाधिकार	अनधिकार	अद्वितिय	अद्वितीय
अत्याधिक	अत्यधिक	अनुकुल	अनुकूल	आधीन	अधीन
अनुसूया	अनसूया	अलोकिक	अलौकिक	अतिथी	अतिथि
अहिल्या	अहल्या	अहार	आहार	आजकाल	आजकल
आयू	आयु	आशिर्वाद	आशीर्वाद	ईशवर	ईश्वर
उन्नती	उन्नति	एक्य	ऐक्य	ओद्योगिक	औद्योगिक
कवी	कवि	कवियित्री	कवयित्री	कृतघन	कृतघ्न
केंद्रिय	केंद्रीय	क्षत्रीय	क्षत्रिय	क्योंकी	क्योंकि
कृपालू	कृपालु	गुरू	गुरु	चहिए	चाहिए
चहर दीवारी	चहारदीवारी	तत्कालिक	तात्कालिक	त्यौहार	त्योहार
दयालू	दयालु	दिवाली	दीवाली	दिक्षा	दीक्षा
दावात	दवात	निरिह	निरीह	निरिक्षण	निरीक्षण
नदीयाँ	नदियाँ	नराज	नाराज	निरसता	नीरसता
निरोग	नीरोग	परिवारिक	पारिवारिक	पुरूष	पुरुष
पुर्व	पूर्व	पुज्य	पूज्य	पुजनिय	पूजनीय
पत्नि	पत्नी	परिक्षा	परीक्षा	पितांबर	पीतांबर
पशू	पशु	परिणती	परिणति	परलौकिक	पारलौकिक
पूर्ती	पूर्ति	पुर्ण	पूर्ण	प्राप्ती	प्राप्ति
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	प्रशन	प्रश्न	प्रभू	प्रभु
बिमार	बीमार	बुद्धी	बुद्धि	मुनी	मुनि
मधू	मधु	व्यक्ती	व्यक्ति	श्रीमति	श्रीमती
शक्ती	शक्ति	शुन्य	शून्य	शिशू	शिशु
साधू	साधु	सुर्य	सूर्य	सामिग्री	सामग्री
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	संसारिक	सांसारिक	हानी	हानि

2. संधि-नियमों के उल्लंघन की अशुद्धियाँ

अनाधिकारी	अनधिकारी	अत्याधिक	अत्यधिक	अत्योक्ति	अत्युक्ति
इतिहासिक	ऐतिहासिक	उतपात	उत्पात	उपरोक्त	उपर्युक्त
छत्रछाया	छत्रच्छाया	जगनाथ	जगन्नाथ	जगतगुरू	जगद्गुरु
तदोपरांत	तदुपरांत	दुशील	दुश्शील (दुःशील)	देविंद्र	देवेंद्र
दुरवस्था	दुरावस्था	निश्वास	निःश्वास	निरस	नीरस
महिंदर	महेंद्र	मनोस्थिति	मनःस्थिति	मनहर	मनोहर
सन्हार	संहार	सम्मार्ग	सन्मार्ग	सन्मुख	सम्मुख

3. यी-ई, ये-ए आदि की अशुद्धियाँ

अव्यईभाव	अव्ययीभाव	आए	आय	उठाये	उठाए
गयी	गई	चाहिये	चाहिए	जायें	जाएँ
जाये	जाए	दाइत्व	दायित्व	देखिये	देखिए
नयी	नई	बताइये	बताइए	महिलाऐं	महिलाएँ
स्थाई	स्थायी				

4. अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजनों की अशुद्धियाँ

अभीष्ठ	अभिष्ट	कनिष्ट	कनिष्ठ	गढ्ढा	गड्ढा
घनिष्ट	घनिष्ठ	जिव्हा	जिह्वा	झूट	झूठ
धंदा	धंधा	धोका	धोखा	पथ्थर	पत्थर
बघ्घी	बग्घी	ब्राम्हण	ब्राह्मण	भूक	भूख
मख्खन	मक्खन	मिष्टान्न	मिष्ठान्न	लठ्ठा	लट्ठा
वृध्दा	वृद्धा	श्रेष्ट	श्रेष्ठ	सीधा-साधा	सीधा-सादा

5. अनावश्यक स्वर या व्यंजन जोड़ने की अशुद्धियाँ

इस्टेशन	स्टेशन	इस्त्री	स्त्री	इस्कूल	स्कूल
इस्थिति	स्थिति	पारक	पार्क	महत्वता	महत्ता
श्रृंगार	शृंगार	स्राप	शाप	स्वरग	स्वर्ग

6. अक्षर लोप की अशुद्धियाँ

अध्यन	अध्ययन	अनुछेद	अनुच्छेद	उधरण	उद्धरण
परिछेद	परिच्छेद	निश्चिता	निश्चितता	विछिन्न	विच्छिन्न

7. व-ब संबंधी अशुद्धियाँ

बिलास	विलास	पूर्ब	पूर्व	बन	वन
बनस्पति	वनस्पति	बिष	विष	बैदेही	वैदेही
बाणी	वाणी	बृष्टि	वृष्टि	बर्षा	वर्षा

8. ऋ और र की अशुद्धियाँ

किरपा, क्रपा	कृपा	क्रिशि	कृषि	क्रितज्ञ	कृतज्ञ
ग्रहस्थ	गृहस्थ	ग्रहीत	गृहीत	घ्रणा	घृणा
द्रष्टी	दृष्टि	पैत्रिक	पैतृक	प्रथक	पृथक
भृष्ट	भ्रष्ट	मात्रि	मातृ	रिण	ऋण
रिषि	ऋषि	रितु	ऋतु	श्रंगार	शृंगार
स्रष्टि	सृष्टि	स्मिरति	स्मृति	ह्रदय	हृदय

9. 'र' के प्रयोग की अशुद्धियाँ

अरथ	अर्थ	आर्शीवाद	आशीर्वाद	उत्तीरण	उत्तीर्ण
करम	कर्म	कार्यकर्म	कार्यक्रम	कर्मशः	क्रमशः
कर्मधार्य	कर्मधारय	चन्दर	चंद्र	तीवर	तीव्र
धरम	धर्म	परसाद	प्रसाद	परसन्न	प्रसन्न
परणाम	प्रणाम	परतिज्ञा	प्रतिज्ञा	परसिद्ध	प्रसिद्ध
परापत	प्राप्त	प्रमात्मा	परमात्मा	प्रीक्षा	परीक्षा
पवित्तर	पवित्र	मरयादा	मर्यादा	मूरख	मूर्ख
वजर	वज्र	श्रेय	श्रेय	सौहार्द्र	सौहार्द
सहस्त्र	सहस्र	समुन्दर	समुद्र	स्रोज	सरोज
स्त्रोत	स्रोत	सार्मथ्य	सामर्थ्य	हिंस्त्र	हिंस्र

10. ज्ञ और ग्य की अशुद्धियाँ

आग्या	आज्ञा	कृतग्य	कृतज्ञ	ग्यापन	ज्ञापन
ग्यान	ज्ञान	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा	भाज्ञ	भाग्य
यग्य	यज्ञ	योज्ञ	योग्य	विग्यान	विज्ञान

11. न, ड़ और ण की अशुद्धियाँ

आक्रमन	आक्रमण	आचरन	आचरण	कारन	कारण
किरन	किरण	गँड़ेश	गणेश	गड़ित	गणित
गनेश	गणेश	गुन	गुण	गनित	गणित
तृन	तृण	निरीक्षन	निरीक्षण	पुन्य	पुण्य
प्रान	प्राण	प्रनाम	प्रणाम	वेंड़ी	वेणी
रनभूमि	रणभूमि	रामायन	रामायण	वर्निक	वर्णिक
शरन	शरण	स्मरन	स्मरण	टिप्पनी	टिप्पणी
चरन	चरण				

12. र, ल, ड़ के उच्चारण में अशुद्धियाँ

उजारना	उजाड़ना	लराई	लड़ाई	लरकी	लड़की

13. श, ष तथा स की अशुद्धियाँ

असोक	अशोक	अमावश्या	अमावस्या	आदर्स	आदर्श
देस	देश	नास	नाश	नमश्कार	नमस्कार
पुस्प/पुश्प	पुष्प	प्रशाद	प्रसाद	प्रसंसा	प्रशंसा
भविश्य/भविस्य	भविष्य	रास्ट्र	राष्ट्र	विस्वास	विश्वास
शाशन	शासन	शंकट	संकट	शुशोभित	सुशोभित
साखा	शाखा	सासन	शासन	सर्म	शर्म
सक्ति	शक्ति	साम	शाम	साम	सायं

14. ट के स्थान पर ठ, अथवा ठ के स्थान पर ट

अभीष्ठ	अभीष्ट	घनिष्ट	घनिष्ठ	निष्टा	निष्ठा
विशिष्ठ	विशिष्ट	शिलष्ठ	शिलष्ट	संतुष्ठ	संतुष्ट

15. क्ष के स्थान पर छ

छमा	क्षमा	छेम	क्षेम	छेत्र	क्षेत्र
नच्छत्र	नक्षत्र	लछमी	लक्ष्मी	लच्छन	लक्षण

16. य, ज की अशुद्धियाँ

अजोध्या	अयोध्या	जोनि	योनि	जमराज	यमराज
जजमान	यजमान	जोग्य	योग्य	जोग	योग

17. पंचम अक्षर की अशुद्धियाँ

अन्ग	अंग	कन्ठ	कंठ	कन्व	कण्व
कुन्डली	कुंडली	घन्टा	घंटा	दन्डित	दंडित
पन्क	पंक	पन्खा	पंखा	मन्डल	मंडल
मयन्क	मयंक	शन्ख	शंख	सन्सार	संसार
सन्कट	संकट	सून्ड	सूँड़	हिन्सा	हिंसा

18. ड़ और ढ़ की अशुद्धियाँ

काड़ना	काढ़ना	खिढ़की	खिड़की	चड़ना	चढ़ना
टेड़ा	टेढ़ा	दृड़	दृढ़	प्रौड़ा	प्रौढ़ा
फाढ़ना	फाड़ना	बूड़ा	बूढ़ा	मड़ना	मढ़ना

19. चंद्रबिंदु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ

अँगुली	अंगुली	अंधेरा	अँधेरा	आंख	आँख
ऊंचा	ऊँचा	ऊंट	ऊँट	कँस	कंस
कँगन	कंगन	कँगाल	कंगाल	कँचन	कंचन
कांच	काँच	गंवार	गँवार	गूंगा	गूँगा
चांद	चाँद	जहां	जहाँ	जँग	जंग
ठँडा	ठंडा	तँग	तंग	दांत	दाँत
दूंगा	दूँगा	पांचवां	पाँचवाँ	पँख	पंख
बांसुरी	बाँसुरी	रँग	रंग	रँक	रंक
वहां	वहाँ	शँकर	शंकर	सँगम	संगम
सन्यासी	संन्यासी	संवारना	सँवारना	हंसमुख	हँसमुख

20. व्यंजन गुच्छों में अशुद्धियाँ

अगिनि	अग्नि	उपलक्ष	उपलक्ष्य	उदे्श्य	उद्देश्य
उज्वल	उज्ज्वल	कृप्या	कृपया	गवाले	ग्वाले
चिन्ह	चिह्न	द्वंद	द्वंद्व	परारंभ	प्रारंभ
परसिद्ध	प्रसिद्ध	ब्राम्हण	ब्राह्मण	महात्म	महात्म्य
मध्यान्ह	मध्याह्न	वांगमय	वाङ्मय	शुद्द	शुद्ध
सकूल	स्कूल	सटेशन	स्टेशन	सकंध	स्कंध
स्वाथ्य	स्वास्थ्य				

21. नुक्ते (क़, ख़, ज़, फ़) के प्रयोग की अशुद्धियाँ

कौम	क़ौम	जरूरत	ज़रूरत	खुदा	ख़ुदा
राज	राज़ी	फन	फ़न	फीस	फ़ीस

कई बार बिंदु नुक्ता न लगाने से अर्थ में भी परिवर्तन हो जाता है :

ख़ुदा (ईश्वर)	खुदा (खोदना)	फन (साँप का)	फ़न (कला)	राज (शासन)	राज़ (रहस्य)
जरा (बुढ़ापा)	ज़रा (थोड़ा)	गज (हाथी)	गज़ (एक नाप)	गौर (गोरा)	ग़ौर (ध्यान)

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए :

1. सुसोभित	....	17. आधीन	....	33. अत्याधिक	....
2. हानी	....	18. संसारिक	....	34. सन्मुख	....
3. निरस	....	19. धंदा	....	35. बताइये	....
4. छमा	....	20. चड़ना	....	36. पुन्य	....
5. परसाद	....	21. रितु	....	37. बनस्पति	....
6. स्वरग	....	22. भूक	....	38. धोका	....
7. ग्यान	....	23. हिन्सा	....	39. रानि	....
8. किरन	....	24. विगयान	....	40. स्कुल	....
9. कवियत्री	....	25. कल्यान	....	41. दूंगा	....
10. ऊंट	....	26. वहां	....	42. कांच	....
11. गुड़	....	27. आयू	....	43. साधू	....
12. पुर्व	....	28. अंधेरा	....	44. कवी	....
13. पत्नि	....	29. निरोग	....	45. परती	....
14. बिमारी	....	30. पन्डित	....	46. रँक	....
15. बिष	....	31. देस	....	47. सासन	....
16. झूट	....	32. द्रष्ठा	....		

2. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध मानक रूप लिखिए :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
1. चाहिये	....	14. पराप्त	....
2. वजर	....	15. विद्या	....
3. चिह्न	....	16. विग्यान	....
4. सुखदाई	....	17. ब्रम्हा	....
5. परताप	....	18. स्थाई	....
6. करम	....	19. ग्रहस्थी	....
7. देखिये	....	20. कंगाल	....
8. जिव्हा	....	21. गूंगा	....
9. गयी	....	22. शुद्ध	....
10. सहस्त्र	....	23. आयी	....
11. श्रृंगार	....	24. पढ़ायी	....
12. स्वास्थ	....	25. यग्य	....
13. परसन्न	....	26. जाये	....

3. सही वर्तनी पर ○ लगाइए :

1. उद्भव	उद्धभव	ऊदभ	5. ईर्श्या	ईर्शा	ईर्ष्या
2. एश्वर्य	ऐष्वर्य	ऐश्वर्य	6. अधर्म	अर्धम	अधरम
3. आकांछा	आंकाछा	आकांक्षा	7. राशी	राषी	राशि
4. अनिर्वाय	अनीवार्य	अनिवार्य	8. करम	कर्म	कृम

9. धनूश	धनुष	धनूष
10. रोस	रोष	रोश
11. निरजीव	निर्व्रीव	निर्जीव
12. परिक्रमा	परिकर्मा	प्ररिक्रमा
13. प्रर्दशनी	पृदर्शनी	प्रदर्शनी
14. ब्राह्मण	ब्राम्हण	बृाम्हण
15. तिरभुवन	त्रिभुवान	त्रिभुवन
16. रचइता	रचियता	रचयिता
17. आशीवार्द	आशीर्वाद	आशिर्वाद
18. अश्चर्य	आर्श्चय	आश्चर्य
19. निरदोस	निर्दोश	निर्दोष
20. मूरती	मूर्ति	मूरति
21. प्रत्यक्ष	प्रत्यक्ष्य	प्रत्यछ
22. लक्षिमी	लक्छमी	लक्ष्मी
23. क्षत्रीय	क्षत्रिय	छत्रीय
24. राष्ट्रीय	राष्ट्रिय	राश्ट्रीय
25. सर्वज्ञ	सर्वग्य	सर्वग
26. औषधि	औशधि	औषधी
27. दरपन	दपर्ण	दर्पण
28. पृकृति	पृकिती	प्रकृति
29. दरिद्र	दरिर्द	दर्रिद
30. यज्ञ	यग्य	यज्य
31. स्फुर्ति	स्फूर्ती	स्फूर्ति
32. तृशणा	त्रिष्णा	तृष्णा
33. ब्रम्हचर्य	ब्रह्मर्चय	ब्रह्मचर्य
34. यथाशक्ति	यथासक्ति	यथाशक्ती
35. द्वंद्व	द्वन्द	दन्द्व
36. अंताक्षरी	अन्त्याछरी	अन्त्याक्षरी
37. इक्षुक	इच्छुक	इक्क्षुक
38. दीर्घायु	दीर्घायुं	दीघार्यु
39. क्रितज्ञ	कृतज्ञ	क्रतज्ञ
40. ओजस्वी	ओजश्वी	ओज्स्वी
41. एकागृ	एकार्ग	एकाग्र
42. निष्काम	निश्काम	निस्काम
43. क्रोंध्र	क्रोंध्र	क्रोध
44. वक्र	वकृ	वक्र
45. पृारंभ	प्रारम्भ	पृांरंभ
46. उत्तपति	उत्पती	उत्पत्ति
47. आतिथ्य	आतिथ्थ	आथित्य
48. दुर्बुद्धि	दुर्बिद्ध	दुर्बुधि
49. ग्रहस्थ	ग्रिहस्थ	गृहस्थ
50. फुतीला	फुर्तीला	फुर्तिला
51. स्म्रति	सृमिति	स्मृति
52. विस्तृित	विस्त्रित	विस्तृत
53. आगृह	आर्गह	आग्रह
54. सत्कर्म	सतक्रम	सतक्रम
55. पैत्रिक	पैत्रक	पैतृक
56. वर्ज	वज्र	वज्‌
57. प्रर्यटन	पर्यटन	पृयर्टन
58. चतुदर्शी	चर्तुदशी	चतुर्दशी
59. धम्र	धरम	धर्म
60. पृथिवी	पृथिवी	पृथ्वी
61. प्रवीर्ण	प्रवीण	परवीण
62. ध्रूर्त	ध्रुर्त	धूर्त
63. ध्रुव	ध्रुर्व	ध्रुर्व
64. निरमल	निमर्ल	निर्मल
65. नृतक	न्रतक	नर्तक

❑❑

2 उपसर्ग और प्रत्यय से शब्द निर्माण (Construction of Words with Prefix and Suffix)

व्युत्पत्ति के आधार पर मुख्य रूप से शब्द के दो मूल रूप होते हैं, रूढ़ और यौगिक। रूढ़ शब्द किसी के मेल से नहीं बनते, ये स्वतंत्र होते हैं; लेकिन यौगिक शब्दों की रचना रूढ़ शब्द के आदि व अंत में जुड़ने वाले शब्दांशों से होती है। ये शब्दांश रूढ़ शब्द से मिलकर इसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं; जैसे :

श्रम से बने ये शब्द : परि + श्रम = परिश्रम

परि + श्रमी = परिश्रमी

श्रम + इक = श्रमिक

श्रम + जीवी = श्रमजीवी

श्रम + शील = श्रमशील

इस प्रकार नए शब्दों की रचना होती है। यही 'शब्द-रचना' कहलाती है। शब्द-रचना के मुख्य तीन प्रकार हैं :

1. उपसर्ग 2. प्रत्यय 3. समास।

उपसर्ग (Prefix)

शब्दों के आदि में जुड़कर शब्दों के अर्थ में विशेषता लाने वाले शब्दांश 'उपसर्ग' कहलाते हैं। इन उपसर्गों का अलग से प्रयोग नहीं किया जा सकता अर्थात् स्वतंत्र रूप में इनका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता। हिंदी में मुख्य रूप से संस्कृत तत्सम शब्द पाए जाते हैं। इसके अलावा हिंदी तथा उर्दू तत्सम शब्दों का भी प्रयोग होता है।

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप
अ	(नहीं, अभाव, हीन, विपरीत)	अखंड, अनाथ, अथाह, अधर्म, अदृश्य, अडिग, अचल, अलौकिक।
अन्	(नहीं, अभाव)	अनाचार, अनपढ़, अनादि, अनमोल, अनेक, अनावश्यक, अनिच्छा, अनुपस्थिति।
अधि	(ऊपर, समीप, बड़ा)	अधिकरण, अधिकार, अधिपति, अधिनायक।
अति	(अधिक, ऊपर)	अतिशय, अतिरिक्त, अतिक्रमण, अतिचार, अत्यधिक।
अनु	(पीछे, समान)	अनुकरण, अनुगामी, अनुकंपा, अनुशीलन, अनुराग, अनुज, अनुगमन।
अभि	(तरफ, सामने, समीप)	अभियोग, अभिनेता, अभिमान, अभिनव, अभिमुख।
अप	(बुरा, हीन, अभाव, विपरीत)	अपव्यय, अपकीर्ति, अपमान, अपयश, अपवाद, अपशब्द।
अव	(बुरा, नीचा, हीन)	अवगुण, अवनति, अवशेष, अवनत, अवसान।
आ	(तक, पूर्ण)	आगमन, आमरण, आजीवन, आग्रह, आकृति, आदान, आचरण, आकर्षण।
उप	(समीप, छोटा, गौण)	उपमा, उपनिवेश, उपकरण, उपचार, उपभेद, उपनाम, उपदेश, उपसंहार।
उत्	(ऊँचा, श्रेष्ठ)	उत्कर्ष, उत्थान, उत्पत्ति, उत्तम, उत्कंठा, उत्पन्न।
कु	(बुरा, हीन)	कुरूप, कुकर्म, कुमंत्रणा, कुचाल।

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप
चिर	(सदैव, बहुत)	चिरकाल, चिरायु, चिरंतन।
तत्	(उसके जैसा)	तत्काल, तत्पर, तत्पश्चात्।
दुर्	(बुरा, कठिन)	दुराचार, दुरवस्था, दुर्गति, दुर्गुण, दुर्बल, दुर्जन, दुर्भाग्य, दुर्गम।
नि	(निषेध, बाहर, भीतर, अभाव)	निषेध, निकृष्ट, निरूपण, निवास, नियुक्त, निदान, निवारण।
निर्	(निषेध, रहित, बाहर)	निर्भय, निर्वासन, निर्दोष, निर्वाह, निराश, निर्जीव, निरपराध।
परा	(सीमा से अधिक, उलटा)	पराजय, पराक्रम, पराधीन, पराकाष्ठा, परामर्श।
परि	(आसपास, चारों ओर, पूर्ण)	परिकल्पना, परिणाम, परिचर्या, परिच्छेद, परिवेश, परिक्रमा।
प्र	(अधिक, आगे, ऊपर)	प्रगति, प्रक्रिया, प्रवाह, प्रयत्न, प्रतिष्ठा, प्रबल, प्रहार, प्रयोग।
प्रति	(ओर, विरुद्ध, सामने, प्रत्येक)	प्रतिकूल, प्रतिहिंसा, प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रतिनिधि, प्रतिवादी, प्रतिध्वनि।
वि	(विशेष, उलटा, विशेषता)	वियोग, विभाग, विज्ञान, विक्रय, विमुख, विधवा, विनम्र, विनत।
सम्	(संयोग, अच्छा, पूर्णता)	संपत्ति, सम्मान, सम्मेलन, संपूर्ण, संबंध, सम्मुख, संभव, संतोष।
स	(साथ)	सफल, सरल, सरस, सजीव, सपरिवार, सक्रिय।
सु	(अच्छा, अधिक, सहज)	सुपुत्र, सुकर्म, सुगम, सुमन, सुलभ, सुदूर, सुकन्या, सुकुमार, सुशिक्षित।
स्व	(अपना)	स्वराज्य, स्वतंत्र, स्वच्छंद, स्वभाव।

हिंदी के उपसर्ग

अध	(आधा)	अधजला, अधमरा, अधपका, अधखिला, अधखाया।
उ	(अभाव, रहित)	उऋण, उजड़ा, उनींदा।
कु	(बुरा, बुराई, निचला)	कुपात्र, कुख्यात, कुचाल, कुकर्म, कुमार्ग, कुअवसर।
दु	(बुरा, हीन)	दुबला, दुस्सह, दुकाल, दुसाध्य, दुर्जन, दुर्गम।
बिन	(निषेध के बिना)	बिनदेखा, बिनब्याहा, बिनजाना, बिनबोया, बिनखाया।
भर	(पूरा, ठीक)	भरपूर, भरमार, भरपेट।
स, सु	(अच्छा, उत्तम)	सपूत, सरल, सजग, सचेत, सरस, सुगम, सुकन्या, सुफल।

उर्दू के उपसर्ग

कम	(थोड़ा)	कमसिन, कमज़ोर, कमबख़्त, कमउम्र।
ना	(नहीं, अभाव)	नापसंद, नासमझ, नालायक, नाजायज़, नाबालिग, नामुमकिन।
बद	(बुरा)	बदकिस्मत, बदचलन, बदतमीज़, बदनाम, बदसूरत।
खुश	(प्रसन्न)	खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशख़बरी, खुशनसीब, खुशबू।
बे	(बिना)	बेकसूर, बेरहम, बेईमान, बेनकाब, बेचारा, बेइज़्ज़त।
ला	(बिना)	लापरवाह, लाइलाज, लावारिस, लाजवाब, लाचार।
हर	(प्रत्येक)	हररोज़, हरपल, हरसाल, हरदिन।
हम	(समान)	हमशक्ल, हमदर्द, हमराह, हमराज़, हमसफ़र, हमवतन, हमदर्दी।

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' में प्रयुक्त उपसर्ग युक्त शब्द

1. धूल

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अनावश्यक	–	अन्	+	आवश्यक	अभिजात	–	अभि	+	जात
उपमान	–	उप	+	मान	दुर्लभ	–	दुर्	+	लभ
दुर्भाग्य	–	दुर्	+	भाग्य	निद्वंद्व	–	निर्	+	द्वंद्व
प्रवास	–	प्र	+	वास	संचालन	–	सम्	+	चालन
संसर्ग	–	सम्	+	सर्ग	संस्कृति	–	सम्	+	कृति

2. दुख का अधिकार

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अधिकार	–	अधि	+	कार	अनुभूति	–	अनु	+	भूति
निर्वाह	–	निर्	+	वाह	परलोक	–	पर	+	लोक
परिस्थिति	–	परि	+	स्थिति	बेहया	–	बे	+	हया
विभिन्न	–	वि	+	भिन्न	वियोग	–	वि	+	योग
विश्राम	–	वि	+	श्राम	संभ्रांत	–	सम्	+	भ्रांत

3. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अत्यंत	–	अति	+	अंत	अभियान	–	अभि	+	यान
अवगत	–	अव	+	गत	अवसाद	–	अव	+	साद
अस्थायी	–	अ	+	स्थायी	आपूर्ति	–	आ	+	पूर्ति
आरोहण	–	आ	+	रोहण	आरोही	–	आ	+	रोही
उपयोग	–	उप	+	योग	दुर्गम	–	दुर्	+	गम
प्रगति	–	प्र	+	गति	प्रतिदिन	–	प्रति	+	दिन
प्रतिकूल	–	प्रति	+	कूल	परिचय	–	परि	+	चय
प्रत्येक	–	प्रति	+	एक	विख्यात	–	वि	+	ख्यात
प्रसिद्ध	–	प्र	+	सिद्ध	विचित्र	–	वि	+	चित्र
विशेष	–	वि	+	शेष	संसार	–	सम्	+	सार
संपूर्ण	–	सम्	+	पूर्ण	सफल	–	स	+	फल
सपाट	–	स	+	पाट	सुरक्षा	–	सु	+	रक्षा
सुपुत्री	–	सु	+	पुत्री					

4. तुम कब जाओगे, अतिथि

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अतिथि	–	अ	+	तिथि	अदृश्य	–	अ	+	दृश्य
अनुमान	–	अनु	+	मान	अज्ञात	–	अ	+	ज्ञात
आगमन	–	आ	+	गमन	आग्रह	–	आ	+	ग्रह
आघात	–	आ	+	घात	आशंका	–	आ	+	शंका
उपवास	–	उप	+	वास	निर्मूल	–	निर्	+	मूल

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
निस्संकोच	–	निस् (निः)	+	संकोच	अदृश्य	–	अ	+	दृश्य
प्रदान	–	प्र	+	दान	बावजूद	–	बा	+	वजूद
विगत	–	वि	+	गत	विश्वास	–	वि	+	श्वास
संक्रमण	–	सम्	+	क्रमण	संभावना	–	सम्	+	भावना
सत्कार	–	सत्	+	कार	सपरिवार	–	स	+	परिवार
सम्मान	–	सम्	+	मान	स्वागत	–	सु	+	आगत
सादर	–	स	+	आदर	सुलभ	–	सु	+	लभ

5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन्

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अक्षुण्ण	–	अ	+	क्षुण्ण	अनुसंधान	–	अनु	+	संधान
अनेक	–	अन्	+	एक	अभाव	–	अ	+	भाव
असंख्य	–	अ	+	संख्य	उन्नत	–	उत्	+	नत
उपकरण	–	उप	+	करण	उपयोगी	–	उप	+	योगी
उपस्थित	–	उप	+	स्थित	परिणाम	–	परि	+	णाम
परिमाण	–	परि	+	माण	परिवर्तन	–	परि	+	वर्तन
परिहास	–	परि	+	हास	प्रकृति	–	प्र	+	कृति
प्रचार	–	प्र	+	चार	प्रतिमूर्ति	–	प्रति	+	मूर्ति
प्रदर्शन	–	प्र	+	दर्शन	प्रभाव	–	प्र	+	भाव
प्रयोग	–	प्र	+	योग	प्रसार	–	प्र	+	सार
बेचैन	–	बे	+	चैन	विदेशी	–	वि	+	देशी
विराट	–	वि	+	राट	विज्ञान	–	वि	+	ज्ञान
संपादन	–	सम्	+	पादन	संभव	–	सम्	+	भव
संस्थान	–	सम्	+	स्थान	सटीक	–	स	+	टीक
सशक्त	–	स	+	शक्त					

6. कीचड़ का काव्य

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
उत्तम	–	उत्	+	तम	तिरस्कार	–	तिरस्	+	कार
समतल	–	सम	+	तल					

7. धर्म की आड़

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अत्यंत	–	अति	+	अंत	अपवित्र	–	अ	+	पवित्र
आचरण	–	आ	+	चरण	उत्पात	–	उत्	+	पात
उत्साह	–	उत्	+	साह	उद्योग	–	उत्	+	योग
दुरुपयोग	–	दुर्	+	उपयोग	निस्संदेह	–	निस् (निः)	+	संदेह
प्रकार	–	प्र	+	कार	प्रपंच	–	प्र	+	पंच

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
प्रयत्न	–	प्र	+	यत्न	बेचारा	–	बे	+	चारा
लामजहब	–	ला	+	मजहब	विरुद्ध	–	वि	+	रुद्ध
संग्राम	–	सम्	+	ग्राम	सदाचार	–	सत् + आ	+	चार
सुगम	–	सु	+	गम					

8. शुक्रतारे के समान

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अकाल	–	अ	+	काल	अक्षर	–	अ	+	क्षर
अत्याचार	–	अति	+	आचार	अनगिनत	–	अन	+	गिनत
अनवरत्	–	अन्	+	अवरत	अनायास	–	अन्	+	आयास
अनुभव	–	अनु	+	भव	अनुवाद	–	अनु	+	वाद
असत्य	–	अ	+	सत्य	आग्रह	–	आ	+	ग्रह
उपकारी	–	उप	+	कारी	निडर	–	नि	+	डर
निर्मल	–	निर्	+	मल	प्रतिकूल	–	प्रति	+	कूल
प्रतिनिधि	–	प्रति	+	निधि	परिचय	–	परि	+	चय
प्रवचन	–	प्र	+	वचन	प्रसंग	–	प्र	+	संग
विदेश	–	वि	+	देश	विनय	–	वि	+	नय
विभाग	–	वि	+	भाग	विवाद	–	वि	+	वाद
संगठन	–	सम्	+	गठन	संपादक	–	सम्	+	पादक
संवाद	–	सम्	+	वाद	समान	–	स	+	मान

पूरक पुस्तक 'संचयन' में प्रयुक्त उपसर्ग युक्त शब्द

1. गिल्लू

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अतिरिक्त	–	अति	+	रिक्त	अपवाद	–	अप	+	वाद
अवतीर्ण	–	अव	+	तीर्ण	अवमानना	–	अव	+	मानना
आहत	–	आ	+	हत	आहार	–	आ	+	हार
उपचार	–	उप	+	चार	निश्चेष्ट	–	निस् (निः)	+	चेष्ट
परिचारिका	–	परि	+	चारिका	प्रभात	–	प्र	+	भात
प्रयुक्त	–	प्र	+	युक्त	विचित्र	–	वि	+	चित्र
विवेचन	–	वि	+	वेचन	विश्वास	–	वि	+	श्वास
संतोष	–	सम्	+	तोष	सघन	–	स	+	घन
समान	–	स	+	मान	सुलभ	–	सु	+	लभ

2. स्मृति

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अचूक	–	अ	+	चूक	अनुमान	–	अनु	+	मान
अनेक	–	अन्	+	एक	आक्रमण	–	आ	+	क्रमण
आशंका	–	आ	+	शंका	उपहास	–	उप	+	हास
दुधारी	–	दो	+	धारी	दुविधा	–	दो	+	विधा

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
निर्भर	–	निर्	+	भर	निश्चय	–	निस्	+	चय
प्रकोप	–	प्र	+	कोप	प्रतिद्वंद्वी	–	प्रति	+	द्वंद्वी
प्रतिदिन	–	प्रति	+	दिन	प्रतिध्वनि	–	प्रति	+	ध्वनि
प्रतीक्षा	–	प्रति	+	ईक्षा	प्रतिवर्ष	–	प्रति	+	वर्ष
प्रवृत्ति	–	प्र	+	वृत्ति	प्रारंभ	–	प्र	+	आरंभ
बेहाल	–	बे	+	हाल	संकल्प	–	सम्	+	कल्प
संभावना	–	सम्	+	भावना	सजल	–	स	+	जल
समकोण	–	सम्	+	कोण	सम्मुख	–	सम्	+	मुख

3. कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अछूत	–	अ	+	छूत	अनुरोध	–	अनु	+	रोध
अनुसार	–	अनु	+	सार	असमर्थ	–	अ	+	समर्थ
असाधारण	–	अ	+	साधारण	आकृष्ट	–	आ	+	कृष्ट
दरअसल	–	दर	+	असल	दुर्गम	–	दुर्	+	गम
निरक्षर	–	निर्	+	अक्षर	निर्माण	–	निर्	+	माण
निर्यात	–	निर्	+	आयात	प्रकृति	–	प्र	+	कृति
प्रतिशत	–	प्रति	+	शत	प्रपात	–	प्र	+	पात
प्रमुख	–	प्र	+	मुख	प्रवास	–	प्र	+	वास
प्रसिद्ध	–	प्र	+	सिद्ध	विचार	–	वि	+	चार
विक्षिप्त	–	वि	+	क्षिप्त	संतुलन	–	सम्	+	तुलन
संदर्भ	–	सम्	+	दर्भ	सम्मान	–	सम्	+	मान

4. मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अदम्य	–	अ	+	दम्य	अनिच्छा	–	अन्	+	इच्छा
अनुपात	–	अनु	+	पात	अनुभव	–	अनु	+	भव
अनुवाद	–	अनु	+	वाद	अनेक	–	अन्	+	एक
अवरोध	–	अव	+	रोध	असहाय	–	अ	+	सहाय
नापसंद	–	ना	+	पसंद	नासमझ	–	ना	+	समझ
पुनर्जीवन	–	पुनः (पुनर्)	+	जीवन	परिश्रम	–	परि	+	श्रम
प्रकार	–	प्र	+	कार	प्रतिशत	–	प्रति	+	शत
प्रयोग	–	प्र	+	योग	विक्रेता	–	वि	+	क्रेता
विरुद्ध	–	वि	+	रुद्ध	विश्राम	–	वि	+	श्राम
संकलन	–	सम्	+	कलन					

5. हामिद खाँ

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अधेड़	–	अ	+	धेड़	निर्माण	–	निर्	+	माण
परदेश	–	पर	+	देश	परिवर्तन	–	परि	+	वर्तन
प्रवेश	–	प्र	+	वेश	बदबू	–	बद	+	बू
बेखटके	–	बे	+	खटके	स्वागत	–	सु	+	आगत

6. दीये जल उठे

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
अनुमान	–	अनु	+	मान	अभियान	–	अभि	+	यान
अभिव्यक्ति	–	अभि	+	व्यक्ति	आग्रह	–	आ	+	ग्रह
उल्लेख	–	उत्	+	लेख	कुशासन	–	कु	+	शासन
पुरस्कार	–	पुरः (पुरस्)	+	कार	प्रतिक्रिया	–	प्रति	+	क्रिया
संक्षिप्त	–	सम्	+	क्षिप्त					

• अभ्यास-प्रश्न •

1. **निम्नलिखित उपसर्गों से तीन-तीन शब्द बनाइए :**

1. अभि	....	....	....
2. उत्	....	....	....
3. निर्	....	....	....
4. बिन	....	....	....
5. खुश	....	....	....
6. नि	....	....	....
7. अव	....	....	....
8. बद	....	....	....
9. चिर	....	....	....
10. प्रति	....	....	....
11. अति	....	....	....
12. अधि	....	....	....
13. अनु	....	....	....
14. परा	....	....	....
15. उप	....	....	....
16. दुर	....	....	....
17. अप	....	....	....
18. सु	....	....	....
19. प्र	....	....	....
20. सम्	....	....	....
21. अन्	....	....	....

22. पुनर्	....	....	....
23. सह	....	....	....
24. अध	....	....	....
25. बा	....	....	....
26. हम	....	....	....
27. हर	....	....	....
28. चौ	....	....	....
29. कु	....	....	....
30. अ	....	....	....

2. **निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए :**

	उपसर्ग	मूलशब्द		उपसर्ग	मूलशब्द
1. अतिरिक्त	....	....	25. उपकरण	....	....
2. अपशब्द	....	....	26. दुराचार	....	....
3. अवगुण	....	....	27. निरपराध	....	....
4. अनुरोध	....	....	28. निषेध	....	....
5. विलास	....	....	29. पराजय	....	....
6. परिक्रमा	....	....	30. प्रकृति	....	....
7. निबंध	....	....	31. प्रतिकार	....	....
8. उत्सव	....	....	32. विकल	....	....
9. बदनाम	....	....	33. संकल्प	....	....
10. लाइलाज	....	....	34. सुगम	....	....
11. हमउम्र	....	....	35. अंतरात्मा	....	....
12. बाकायदा	....	....	36. अनंत	....	....
13. सजीव	....	....	37. कुकर्म	....	....
14. असफल	....	....	38. पुनर्जन्म	....	....
15. प्रतिक्षण	....	....	39. पुनरागमन	....	....
16. पराक्रम	....	....	40. बहिष्कार	....	....
17. उच्चारण	....	....	41. समकोण	....	....
18. अनुकरण	....	....	42. उनतीस	....	....
19. अवरोहण	....	....	43. चौमासा	....	....
20. चिरपरिचित	....	....	44. अभ्यागत	....	....
21. अपकार	....	....	45. अवशेष	....	....
22. अभिमान	....	....	46. उन्नति	....	....
23. अवकाश	....	....	47. उपकार	....	....
24. उच्चारण	....	....	48. नियम	....	....

प्रत्यय (Suffix)

शब्दों के अंत में जुड़कर शब्दों के अर्थ में विशेषता लाने वाले शब्दांश, 'प्रत्यय' कहलाते हैं। प्रमुख प्रत्यय नीचे दिए जा रहे हैं :

संज्ञा बनाने वाले प्रमुख प्रत्यय

आई	–	चढ़ाई, पढ़ाई, लिखाई, धुलाई, पिटाई, सिलाई।
आहट	–	मुस्कराहट, घबराहट, चिल्लाहट, कड़वाहट।
आवट	–	मिलावट, लिखावट, दिखावट, सजावट।
आन	–	उड़ान, मिलान, लगान, उफान, उठान।
आव	–	छिपाव, बहाव, खिंचाव, लगाव।
ई	–	मज़दूरी, तैराकी, नथनी, कथनी, तेज़ी, झिड़की।
अक	–	चालक, पालक, पावक, गायक, नायक।
ती	–	गिनती, बढ़ती, धरती, भरती, फबती।
ना	–	पढ़ना, लिखना, देखना, खेलना, सोना।
नी	–	कतरनी, धौंकनी, छननी, ओढ़नी।
ता	–	शिशुता, मनुष्यता, दानवता, मानवता, दासता।
त्व	–	पुरुषत्व, बंधुत्व, स्त्रीत्व, नारीत्व, व्यक्तित्व।

विशेषण बनाने वाले प्रमुख प्रत्यय

आ	–	भूला, भटका, भूखा, मैला, प्यारा, दुलारा।
आऊ	–	कमाऊ, टिकाऊ, बिकाऊ, खाऊ।
आवना	–	लुभावना, डरावना, सुहावना।
इक	–	धार्मिक, नागरिक, सामाजिक, नैतिक, पौराणिक।
इत	–	आनंदित, समाहित, हृषत।
इया	–	घटिया, बढ़िया, जड़िया।
ई	–	असली, नकली, सरकारी, क्रोधी, शहरी।
ईय	–	भारतीय, प्रांतीय, जातीय, राष्ट्रीय, दर्शनीय।
ईला	–	रसीला, चमकीला, रोबीला, सजीला, ज़हरीला।
ऊ	–	बाज़ारू, चालू, झाड़ू।
मान	–	अभिमान, बुद्धिमान, गतिमान।
वाला	–	खानेवाला, पीनेवाला, पढ़नेवाला, फलवाला।
वान	–	धनवान, भाग्यवान, मूल्यवान।
ला	–	अगला, निचला, पहला, धुँधला।

क्रिया बनाने वाले प्रत्यय

ता	–	डूबता, चढ़ता, आता, जाता, रोता।
आ	–	जागा, बैठा, लेटा, उठा।
कर	–	सोकर, उठकर, बैठकर, लेटकर, लिखकर, खाकर।
ना	–	दौड़ना, खेलना, सोना, जागना, रोना, खाना।

भाववाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय

पा	–	मोटापा, आपा, बुढ़ापा।
आई	–	मोटाई, गोलाई, ऊँचाई।
ता	–	सुंदरता, कुरूपता, दुष्टता, मनुष्यता।
त्व	–	बंधुत्व, स्त्रीत्व, व्यक्तित्व, अस्तित्व।
औती	–	मनौती, चुनौती।

कर्तृवाचक प्रत्यय

आर	–	कुम्हार, लुहार, सुनार।
इया	–	रसोइया, सुखिया, दुखिया।
अक	–	पाठक, सुधारक, लेखक।
कार	–	कलाकार, पत्रकार, कहानीकार, नाटककार, साहित्यकार।
एरा	–	चितेरा, लुटेरा, सपेरा, ठठेरा।
गर	–	सौदागर, जादूगर, बाज़ीगर, कारीगर।
दार	–	दुकानदार, कर्ज़दार, ईमानदार।
वाला	–	लिखनेवाला, पढ़नेवाला, गाड़ीवाला, घरवाला।

कर्मवाचक प्रत्यय

वाँ	–	पाँचवाँ, सातवाँ, आठवाँ।
सरा	–	दूसरा, तीसरा।
हरा	–	इकहरा, दुहरा, तिहरा।

स्त्रीलिंगवाचक प्रत्यय

आ	–	प्रिया, बाला, शिष्या, सुता।
ई	–	देवी, शेरनी, लड़की, बेटी, चाची, मामी।
इन	–	धोबिन, सुनारिन, मालिन।
आनी	–	देवरानी, जेठानी।

क्रियाविशेषण बनाने वाले प्रत्यय

पूर्वक	–	सफलतापूर्वक, शांतिपूर्वक, धैर्यपूर्वक, प्रेमपूर्वक।
तः	–	साधारणतः, विशेषतः, सामान्यतः, फलतः।
शः	–	पंक्तिशः अक्षरशः, वाक्यशः।

उपसर्ग और प्रत्यय का एक साथ प्रयोग

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनमें उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग होता है; जैसे :

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द		प्रत्यय
अमानवीयता	–	अ	+	मानवीय	+	ता
बेकारी	–	बे	+	कार	+	ई
ईमानदारी	–	ई	+	मान	+	दारी
निर्दयता	–	निर्	+	दय	+	ता
अनुदारता	–	अन	+	उदार	+	ता

बदचलनी	–	बद	+	चलन	+	ई
परिपूर्णता	–	परि	+	पूर्ण	+	ता
अपमानित	–	अप	+	मान	+	इत
स्वाभाविक	–	स्व	+	भाव	+	इक
अभिमानी	–	अभि	+	मान	+	ई
निलंबित	–	नि	+	लंब	+	इत
बेवफाई	–	बे	+	वफा	+	ई
बेहोशी	–	बे	+	होश	+	ई
स्वदेशी	–	स्व	+	देश	+	ई
अनजानी	–	अन	+	जान	+	ई
हमदर्दी	–	हम	+	दर्द	+	ई

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' में प्रयुक्त प्रत्यय युक्त शब्द

1. धूल

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अमरता	–	अमर	+	ता	कीमती	–	कीमत	+	ई
चाँदनी	–	चाँद	+	नी	जवानी	–	जवान	+	ई
नकली	–	नकल	+	ई	प्रचलित	–	प्रचलन	+	इत
पार्थिवता	–	पार्थिव	+	ता	प्रेमी	–	प्रेम	+	ई
बचपन	–	बच्चा	+	पन	बड़प्पन	–	बड़ा	+	पन
भिन्नता	–	भिन्न	+	ता	वंचित	–	वंच	+	इत
वास्तविक	–	वास्तव	+	इक	व्यंजित	–	व्यंजन	+	इत
सभ्यता	–	सभ्य	+	ता					

2. दुख का अधिकार

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
तरावट	–	तर	+	आवट	दुखी	–	दुख	+	ई
द्रवित	–	द्रव	+	इत	निचली	–	नीचे	+	ली
बुढ़िया	–	बूढ़ा	+	इया					

3. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अग्रिम	–	अग्र	+	इम	आकर्षित	–	आकर्षण	+	इत
आरोही	–	आरोह	+	ई	आनंदित	–	आनंद	+	इत
ऊँचाई	–	ऊँचा	+	ई	ऊपरी	–	ऊपर	+	ई
कठिनतम	–	कठिन	+	तम	कठिनाई	–	कठिन	+	आई
कर्मठता	–	कर्मठ	+	ता	खुदाई	–	खोद	+	आई

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
गहरी	–	गहरा	+	ई
चिंतित	–	चिंता	+	इत
ज़ोरदार	–	ज़ोर	+	दार
ढलान	–	ढल	+	आन
दक्षिणी	–	दक्षिण	+	ई
नगरीय	–	नगर	+	ईय
पर्वतीय	–	पर्वत	+	ईय
पूर्वी	–	पूर्व	+	ई
फुसफुसाया	–	फुसफुस	+	आया
भारतीय	–	भारत	+	ईय
रंगीन	–	रंग	+	ईन
हवाई	–	हवा	+	ई
शारीरिक	–	शरीर	+	इक
चढ़ाई	–	चढ़	+	आई
चिह्नित	–	चिह्न	+	इत
ढलाऊ	–	ढल	+	आऊ
तैयारी	–	तैयार	+	ई
दृश्यता	–	दृश्य	+	ता
निश्चित	–	निश्चय	+	इत
पहाड़ी	–	पहाड़	+	ई
प्रोत्साहित	–	प्रोत्साहन	+	इत
महत्त्वपूर्ण	–	महत्त्व	+	पूर्ण
सख़्ती	–	सख़्त	+	ई
साहसिक	–	साहस	+	इक
हिचकिचाहट	–	हिचकिचा	+	आहट

4. तुम कब जाओगे, अतिथि

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अंकित	–	अंक	+	इत
आखिरी	–	आखिर	+	ई
औपचारिक	–	उपचार	+	इक
देवता	–	देव	+	ता
धुलकर	–	धुल	+	कर
निजी	–	निज	+	ई
परिचित	–	परिचय	+	इत
प्रेमिका	–	प्रेम	+	इका
फ़िल्मी	–	फ़िल्म	+	ई
मार्मिक	–	मर्म	+	इक
रंगीन	–	रंग	+	ईन
रूपांतरित	–	रूपांतर	+	इत
व्यक्तित्व	–	व्यक्ति	+	त्व
सहनशीलता	–	सहनशील	+	ता
शानदार	–	शान	+	दार
अकेलापन	–	अकेला	+	पन
आर्थिक	–	अर्थ	+	इक
गोलाकार	–	गोला	+	कार
देवत्व	–	देव	+	त्व
नम्रता	–	नम्र	+	ता
नौकरी	–	नौकर	+	ई
पत्रिका	–	पत्र	+	इका
फड़फड़ाती	–	फड़फड़	+	आती
महँगाई	–	महँगा	+	आई
मुस्कराहट	–	मुस्करा	+	हट
रिश्तेदारी	–	रिश्ते	+	दारी
विदाई	–	विदा	+	ई
सम्मानपूर्ण	–	सम्मान	+	पूर्ण
स्थापित	–	स्थापना	+	इत

5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन्

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
आंतरिक	–	अंतर	+	इक
आणविक	–	अणु	+	इक
आयोजित	–	आयोजन	+	इत
आह्लादित	–	आह्लाद	+	इत
घटिया	–	घट	+	इया
तैनाती	–	तैनात	+	ई
दिली	–	दिल	+	ई
आकर्षित	–	आकर्षण	+	इत
आयोजक	–	आयोजन	+	क
आलोकित	–	आलोक	+	इत
उपयोगी	–	उपयोग	+	ई
चलाऊ	–	चल	+	आऊ
दिलचस्पी	–	दिलचस्प	+	ई
नागरिकता	–	नगर + इक	+	ता

नीली	–	नील	+	ई	परमाणविक	–	परमाणु	+	इक
परिवर्तित	–	परिवर्तन	+	इत	प्रकाशित	–	प्रकाशन	+	इत
प्रतिभावान	–	प्रतिभा	+	वान	प्रतिष्ठित	–	प्रतिष्ठा	+	इत
प्रभावित	–	प्रभाव	+	इत	प्रमाणित	–	प्रमाण	+	इत
प्रायोगिक	–	प्रयोग	+	इक	प्रेमी	–	प्रेम	+	ई
बचपन	–	बच्चा	+	पन	बदलाव	–	बदल	+	आव
भावुक	–	भौ	+	अक	भौतिकी	–	भौतिक	+	ई
भेदन	–	भेद	+	न	रवेदार	–	रवे	+	दार
वर्णीय	–	वर्ण	+	ईय	वाहक	–	वहन	+	अक
वैज्ञानिक	–	विज्ञान	+	इक	सदस्यता	–	सदस्य	+	ता
समर्पित	–	समर्पण	+	इत	समुद्री	–	समुद्र	+	ई
सम्मानित	–	सम्मान	+	इत	सरकारी	–	सरकार	+	ई
सृजित	–	सृजन	+	इत	स्थापना	–	स्थापन	+	आ
स्वाभाविक	–	स्वभाव	+	इक	शाकाहारी	–	शाक + आहार	+	ई
शुरुआती	–	शुरुआत	+	ई	शिक्षक	–	शिक्षा	+	क

6. कीचड़ का काव्य

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अंकित	–	अंक	+	इत	कीमती	–	कीमत	+	ई
तटस्थता	–	तटस्थ	+	ता	प्रसन्नता	–	प्रसन्न	+	ता
मलिन	–	मल	+	इन	रंगी	–	रंग	+	ई
वर्णन	–	वर्ण	+	न					

7. धर्म की आड़

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
ईश्वरत्व	–	ईश्वर	+	त्व	कमाई	–	कमा	+	ई
चालाक	–	चाल	+	आक	दीनदार	–	दीन	+	दार
धार्मिक	–	धर्म	+	इक	पागलपन	–	पागल	+	पन
बढ़ाई	–	बढ़	+	आई	बड़प्पन	–	बड़ा	+	पन
भावना	–	भाव	+	ना	मनुष्यत्व	–	मनुष्य	+	त्व
मज़हबी	–	मज़हब	+	ई	रुकावट	–	रुक	+	आवट
शक्तिशाली	–	शक्ति	+	शाली					

8. शुक्रतारे के समान

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अंग्रेज़ी	–	अंग्रेज़	+	ई	अधिकतर	–	अधिक	+	तर
उत्तराधिकारी	–	उत्तराधिकार	+	ई	ईश्वरीय	–	ईश्वर	+	ईय
ग्रंथकार	–	ग्रंथ	+	कार	चौथाई	–	चौथा	+	आई
जिगरी	–	जिगर	+	ई	दैनिक	–	दिन	+	इक
नाटिका	–	नाटक	+	इका	पीड़ित	–	पीड़ा	+	इत
प्रशंसक	–	प्रशंसा	+	क	बैठक	–	बैठ	+	क
मासिक	–	मास	+	इक	मिलान	–	मिल	+	आन

राजनीतिक	–	राजनीति	+	इक	राष्ट्रीय	–	राष्ट्र	+	ईय
लिखावट	–	लिख	+	आवट	लेखक	–	लेख	+	क
लेखन	–	लेख	+	न	संपादक	–	संपादन	+	क
संबंधित	–	संबंध	+	इत	साप्ताहिक	–	सप्ताह	+	इक
साहित्यिक	–	साहित्य	+	इक	स्वर्गीय	–	स्वर्ग	+	ईय
स्वतंत्रता	–	स्वतंत्र	+	ता	श्रीमती	–	श्री	+	मती

पूरक पुस्तक 'संचयन' में प्रयुक्त प्रत्यय युक्त शब्द

1. गिल्लू

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अपनापन	–	अपना	+	पन	आकर्षित	–	आकर्षण	+	इत
आवश्यक	–	अवश्य	+	अक	उछलता	–	उछल	+	ता
उष्णता	–	उष्ण	+	ता	कठिनाई	–	कठिन	+	आई
कूदता	–	कूद	+	ता	गरमी	–	गरम	+	ई
चमकीली	–	चमक	+	ईली	ठंडक	–	ठंड	+	क
दूरस्थ	–	दूर	+	स्थ	फूलदान	–	फूल	+	दान
बचपन	–	बच्चा	+	पन	बैठना	–	बैठ	+	ना
लगाव	–	लग	+	आव	लौटकर	–	लौट	+	कर
वासंती	–	वसंत	+	ई	विस्मित	–	विस्मय	+	इत
सफ़ाई	–	साफ	+	आई	समझदारी	–	समझ	+	दारी
स्वर्णिम	–	स्वर्ण	+	इम	हरीतिमा	–	हरा + इत	+	इमा

2. स्मृति

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अगला	–	आगे	+	ला	उठाई	–	उठ	+	आई
एकाग्रचित्तता	–	एकाग्रचित्त	+	ता	क्रोधपूर्ण	–	क्रोध	+	पूर्ण
क्रोधित	–	क्रोध	+	इत	गहराई	–	गहरा	+	आई
घटना	–	घट	+	ना	घबराहट	–	घबरा	+	आहट
चिट्ठियाँ	–	चिट्ठी	+	इयाँ	ज़िम्मेदारी	–	ज़िम्मे	+	दारी
तोड़कर	–	तोड़	+	कर	थकावट	–	थक	+	आवट
धुनाई	–	धुन	+	आई	धोतियाँ	–	धोती	+	इयाँ
पतीली	–	पतीला	+	ई	बंधुत्व	–	बंधु	+	त्व
बढ़ाया	–	बढ़	+	आया	बुढ़ापा	–	बूढ़ा	+	आपा
बुद्धिमत्ता	–	बुद्धिमत्	+	ता	बेड़ियाँ	–	बेड़ी	+	इयाँ
बोली	–	बोल	+	ई	भयंकरता	–	भयंकर	+	ता
मज़बूती	–	मज़बूत	+	ई	मूर्खता	–	मूर्ख	+	ता
मोहनी	–	मोह	+	नी	योग्यता	–	योग्य	+	ता
रोज़ाना	–	रोज़	+	आना	सरकाया	–	सरक	+	आया
शिकारी	–	शिकार	+	ई					

3. कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अंतिम	–	अंत	+	इम	अगरबत्तियाँ	–	अगरबत्ती	+	इयाँ
अलसाई	–	अलसा	+	आई	आवश्यकता	–	आवश्यक	+	ता
उत्सुकता	–	उत्सुक	+	ता	ऊर्जादायी	–	ऊर्जा	+	दायी
कबीलाई	–	कबीला	+	आई	घरेलू	–	घर	+	एलू
चिह्नित	–	चिह्न	+	इत	चित्रित	–	चित्र	+	इत
जवानी	–	जवान	+	ई	जानकारी	–	जान	+	कारी
जुड़ाव	–	जुड़	+	आव	ज़्यादातर	–	ज़्यादा	+	तर
दिखावेबाज़	–	दिखावा	+	बाज़	नाटकीय	–	नाटक	+	ईय
निचली	–	नीचे	+	ली	पारंपरिक	–	परंपरा	+	इक
प्रतीकित	–	प्रतीक	+	इत	बाहरी	–	बाहर	+	ई
बुआई	–	बो	+	आई	बुनियादी	–	बुनियाद	+	ई
भयावना	–	भय	+	आवना	मेहरबानी	–	मेहरबान	+	ई
मौलिक	–	मूल	+	इक	लंबाई	–	लंबा	+	आई
लगाव	–	लग	+	आव	विशेषज्ञता	–	विशेषज्ञ	+	ता
समूची	–	समूचा	+	ई	सामाजिक	–	समाज	+	इक
स्थानीय	–	स्थान	+	ईय	शब्दशः	–	शब्द	+	शः
शक्तिशाली	–	शक्ति	+	शाली	शांतिपूर्ण	–	शांति	+	पूर्ण
स्वच्छता	–	स्वच्छ	+	ता					

4. मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अंग्रेज़ी	–	अंग्रेज़	+	ई	अनूदित	–	अनुवाद	+	इत
आर्थिक	–	अर्थ	+	इक	कमाया	–	कमा	+	आया
कहानियाँ	–	कहानी	+	इयाँ	किताबें	–	किताब	+	एँ
खरीदारी	–	खरीद	+	दारी	घोषित	–	घोष	+	इत
चिंतक	–	चिंता	+	क	चिंतित	–	चिंता	+	इत
चलना	–	चल	+	ना	झालरदार	–	झालर	+	दार
नाविक	–	नौ	+	इक	नियमित	–	नियम	+	इत
नौकरी	–	नौकर	+	ई	पढ़ना	–	पढ़	+	ना
पढ़ाई	–	पढ़	+	आई	पत्रिकाएँ	–	पत्रिका	+	एँ
पुस्तकें	–	पुस्तक	+	एँ	बचपन	–	बच्चा	+	पन
बोलना	–	बोल	+	ना	रोमांचक	–	रोमांच	+	क
लिखाया	–	लिख	+	आया	लेखक	–	लेख	+	क
व्यक्तित्व	–	व्यक्ति	+	त्व	सरकारी	–	सरकार	+	ई
साप्ताहिक	–	सप्ताह	+	इक	साहित्यिक	–	साहित्य	+	इक
सुधारवादी	–	सुधार	+	वादी	स्थापित	–	स्थापना	+	इत

5. हामिद खाँ

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
ईमानदारी	–	ईमान	+	दारी	कड़कड़ाती	–	कड़कड़	+	आती
गुड़गुड़ाहट	–	गुड़गुड़	+	आहट	गोलाकार	–	गोला	+	कार
चपातियाँ	–	चपाती	+	इयाँ	दक्षिणी	–	दक्षिण	+	ई
दढ़ियल	–	दाढ़ी	+	इयल	दुकानदार	–	दुकान	+	दार
ध्यानपूर्वक	–	ध्यान	+	पूर्वक	नियमित	–	नियम	+	इत
पौराणिक	–	पुराण	+	इक	बढ़िया	–	बढ़	+	इया
मुस्कराहट	–	मुस्करा	+	आहट	रक्षक	–	रक्षा	+	क
सच्चाई	–	सच्चा	+	आई	सांप्रदायिक	–	संप्रदाय	+	इक

6. दीये जल उठे

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
कठिनतम	–	कठिन	+	तम	गिरफ़्तारी	–	गिरफ़्तार	+	ई
चौकीदार	–	चौकी	+	दार	दलदली	–	दलदल	+	ई
पारित	–	पार	+	इत	मंडलियाँ	–	मंडल	+	इयाँ
मालवीय	–	मालव	+	ईय	राक्षसी	–	राक्षस	+	ई
रियासतदार	–	रियासत	+	दार	रेतीली	–	रेत	+	ईली
सत्याग्रही	–	सत्याग्रह	+	ई	स्थगित	–	स्थगन	+	इत
स्वाभाविक	–	स्वभाव	+	इक					

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित प्रत्ययों से तीन-तीन शब्द बनाइए :

1. वाला ....
2. पूर्वक ....
3. त्व ....
4. ता ....
5. आवट ....
6. इक ....
7. मान ....
8. ईला ....
9. नी ....
10. आई ....
11. आन ....
12. आव ....

13. कार	....	....	....
14. खोर	....	....	....
15. शाली	....	....	....
16. ऐया	....	....	....
17. ईय	....	....	....
18. आवना	....	....	....
19. ईया	....	....	....
20. आऊ	....	....	....
21. आना	....	....	....
22. पन	....	....	....
23. इया	....	....	....
24. ईली	....	....	....
25. आ	....	....	....
26. कर	....	....	....
27. आनी	....	....	....
28. आहट	....	....	....
29. कूमा	....	....	....
30. इस	....	....	....

2. **निम्नलिखित शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए :**

	मूलशब्द	प्रत्यय		मूलशब्द	प्रत्यय
1. थकावट	....	....	14. चौगुना	....	....
2. पागलपन	....	....	15. अपनापन	....	....
3. डिबिया	....	....	16. औपचारिक	....	....
4. नकली	....	....	17. कुम्हार	....	....
5. शारीरिक	....	....	18. पुजारिन	....	....
6. कड़ुवाहट	....	....	19. दुकानदार	....	....
7. वृद्धा	....	....	20. कलाकार	....	....
8. दुगुना	....	....	21. मरियल	....	....
9. तेजस्वी	....	....	22. देवरानी	....	....
10. दीवानगी	....	....	23. लुभावना	....	....
11. लड़कपन	....	....	24. लालची	....	....
12. भाग्यशाली	....	....	25. गायिका	....	....
13. चतुराई	....	....	26. बुढ़ापा	....	....

27. लिखाई	....	....	39. मुस्कराहट	....	....
28. उड़ान	....	....	40. कवित्व	....	....
29. बहाव	....	....	41. मेहतरानी	....	....
30. दिखावा	....	....	42. लेखिका	....	....
31. खिलौना	....	....	43. शांतिपूर्वक	....	....
32. पुरुषत्व	....	....	44. सुनवाई	....	....
33. कमाऊ	....	....	45. अफीमची	....	....
34. कथाकार	....	....	46. देनदार	....	....
35. शक्तिशाली	....	....	47. सालाना	....	....
36. मिलनसार	....	....	48. रिक्शावाला	....	....
37. रंगीन	....	....	49. सर्वहारा	....	....
38. सपेरा	....	....			

3. ऐसे दस शब्द लिखिए जिनमें उपसर्ग व प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ हो।

1.	6. ....
2.	7. ....
3.	8. ....
4.	9. ....
5.	10. ....

4. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग व प्रत्यय निकालकर मूल शब्द को अलग कीजिए :

	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
1. प्रसिद्धि	....	....	....
2. प्रतिनिधित्व	....	....	....
3. सुकर्मी	....	....	....
4. सजीवता	....	....	....
5. स्वदेशी	....	....	....
6. बददिमागी	....	....	....
7. गैरज़िम्मेदारी	....	....	....
8. प्रतिकूलता	....	....	....
9. स्वच्छंदता	....	....	....
10. विदेशी	....	....	....
11. सहयोगी	....	....	....
12. अशक्तता	....	....	....

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(क) 1. 'अनुभव' (उपसर्ग बताइए)। ....

2. 'वि' उपसर्ग से एक शब्द बताइए। ....

3. 'होनहार' शब्द में प्रत्यय बताइए। ....

4. 'पन' प्रत्यय से एक शब्द बनाइए। ....

(ख) 1. 'सम्मेलन' (उपसर्ग बताइए)। ....

2. 'अधि' उपसर्ग से एक शब्द बनाइए। ....

3. 'घटिया' शब्द में प्रत्यय बताइए। ....

4. 'आव' प्रत्यय से एक शब्द बनाइए। ....

(ग) 1. 'उद्घाटन' उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए। ....

2. 'अति' उपसर्ग से एक शब्द बनाइए। ....

3. 'सजावट' मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए। ....

4. 'एलू' प्रत्यय से एक शब्द बनाइए। ....

(घ) 1. 'अधिकृत' (उपसर्ग लिखिए)। ....

2. 'परि' उपसर्ग से एक शब्द बनाइए। ....

3. 'घटिया' प्रत्यय लिखिए। ....

4. 'आन' प्रत्यय से एक शब्द बनाइए। ....

(ङ) 1. 'निर' उपसर्ग से एक शब्द बनाइए। ....

2. 'चमकीला' मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए। ....

3. 'इय' (प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)। ....

4. कमज़ोर (उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए)। ....

❑❑

3 संधि (Joining)

संधि का अर्थ एवं परिभाषा

संधि शब्द का शाब्दिक अर्थ है, जोड़ या मेल। मुख्य रूप से वर्णों के मेल या जोड़ को ही संधि कहते हैं; जैसे :

देव + आलय = देवालय
उत् + लास = उल्लास
दुः + जन = दुर्जन

परिभाषा : दो समीपवर्ती वर्णों के पास-पास आने के कारण उनमें जो विकार सहित मेल होता है, उसे 'संधि' कहते हैं।

संधि-विच्छेद

यदि संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को अलग-अलग करके संधि से पहले की स्थिति में पहुँचा दिया जाए तो इसे 'संधि-विच्छेद' कहा जाता है। 'संधि' में दो ध्वनियों का मेल होता है, तो विच्छेद में उसे अलग-अलग करके दिखाया जाता है; जैसे :

शब्द		संधि-विच्छेद	शब्द		संधि-विच्छेद
महेश	=	महा + ईश	निषेध	=	निः + सेध
उच्चारण	=	उत् + चारण	निश्चल	=	निः + चल
संलाप	=	सम् + लाप	गणेश	=	गण + ईश

संयोग और संधि में अंतर–संयोग में वर्णों का मेल होता है, उनमें परिवर्तन नहीं होता, परन्तु संधि के कारण वर्णों में परिवर्तन हो जाता है; जैसे :

संयोग	संधि
मनुष्य + ता = मनुष्यता	जगत् + नाथ = जगन्नाथ
पशु + त्व = पशुत्व	दुः + गम = दुर्गम

संधि के भेद (Kinds of Joining)

संधि के तीन भेद माने जाते हैं :

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

संधि
स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

1. स्वर संधि (Joining of Vowel with a Vowel)

स्वर के बाद स्वर के मेल से उनमें जो विकार-सहित परिवर्तन होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं; जैसे :

परम + अणु = परमाणु

देव + आलय = देवालय

स्वर संधि के निम्नलिखित पाँच भेद हैं :

(क) दीर्घ संधि

(ख) गुण संधि

(ग) वृद्धि संधि

(घ) यण संधि

(ङ) अयादि संधि

(क) दीर्घ संधि–दो सवर्ण स्वर जब पास-पास आते हैं तो दोनों मिलकर उसी वर्ण का दीर्घ स्वर बन जाते हैं, इसे 'दीर्घ संधि' कहते हैं।

संधि (भेद)	परिवर्तन (नियम)	उदाहरण
दीर्घ संधि (स्वर संधि)	अ + अ = आ	निम्न + अंकित = निम्नांकित
	अ + आ = आ	भोजन + आलय = भोजनालय
	आ + अ = आ	शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी
	आ + आ = आ	कारा + आवास = कारावास
	इ + इ = ई	कवि + इंद्र = कवींद्र
	इ + ई = ई	परि + ईक्षा = परीक्षा
	ई + इ = ई	योगी + इंद्र = योगींद्र
	ई + ई = ई	जानकी + ईश = जानकीश
	उ + उ = ऊ	अनु + उदित = अनूदित
	उ + ऊ = ऊ	साधु + ऊर्जा = साधूर्जा
	ऊ + उ = ऊ	भू + उत्सर्ग = भूत्सर्ग
	ऊ + ऊ = ऊ	वधू + ऊर्मि = वधूर्मि

उदाहरण :

अ + अ = आ

परम + अर्थ = परमार्थ	स्व + अर्थ = स्वार्थ
मत + अनुसार = मतानुसार	राम + अवतार = रामावतार
शास्त्र + अर्थ = शास्त्रार्थ	शस्त्र + अस्त्र = शस्त्रास्त्र
शरण + अर्थी = शरणार्थी	परम + अणु = परमाणु
धर्म + अर्थ = धर्मार्थ	देव + अर्चन = देवार्चन
स्व + अधीन = स्वाधीन	वेद + अंत = वेदांत
भाव + अर्थ = भावार्थ	सत्य + अर्थ = सत्यार्थ
धर्म + अधर्म = धर्माधर्म	सूर्य + अस्त = सूर्यास्त
सत्य + असत्य = सत्यासत्य	चर + अचर = चराचर
अन्य + अर्थ = अन्यार्थ	

अ + आ = आ

देव + आलय = देवालय	रत्न + आकर = रत्नाकर
हिम + आलय = हिमालय	नव + आगत = नवागत
धर्म + आत्मा = धर्मात्मा	शिव + आलय = शिवालय
पुस्तक + आलय = पुस्तकालय	छात्र + आलय = छात्रालय
विस्मय + आदि = विस्मयादि	सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
प्राण + आयाम = प्राणायाम	सचिव + आलय = सचिवालय
देव + आगम = देवागम	नील + आकाश = नीलाकाश
नित्य + आनंद = नित्यानंद	गज + आनन = गजानन

आ + अ = आ

रेखा + अंश = रेखांश	परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी
विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास	यथा + अर्थ = यथार्थ
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी	सीमा + अंकित = सीमांकित
सीमा + अंत = सीमांत	विद्या + अध्ययन = विद्याध्ययन
सीता + अर्थ = सीतार्थ	दीक्षा + अंत = दीक्षांत
परा + अस्त = परास्त	यथा + अवसर = यथावसर

आ + आ = आ

विद्या + आलय = विद्यालय	महा + आत्मा = महात्मा
वार्ता + आलाप = वार्तालाप	कारा + आवास = कारावास
दया + आनंद = दयानंद	महा + आशय = महाशय
दिवा + आकर = दिवाकर	श्रद्धा + आनंद = श्रद्धानंद
कृपा + आलु = कृपालु	श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

इ + इ = ई

कवि + इंद्र = कवींद्र	मुनि + इंद्र = मुनींद्र
गिरि + इंद्र = गिरींद्र	कपि + इंद्र = कपींद्र
रवि + इंद्र = रवींद्र	अभि + इष्ट = अभीष्ट
अति + इव = अतीव	शशि + इंद्र = शशींद्र

इ + ई = ई

कवि + ईश्वर = कवीश्वर	गिरि + ईश = गिरीश
फणि + ईश्वर = फणीश्वर	मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
कवि + ईश = कवीश	हरि + ईश = हरीश
कपि + ईश = कपीश	रवि + ईश = रवीश
परि + ईक्षा = परीक्षा	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा

ई + इ = ई

अवनी + इंद्र	=	अवनींद्र		मही + इंद्र	=	महींद्र
देवी + इच्छा	=	देवीच्छा		शची + इंद्र	=	शचींद्र
नदी + इंद्र	=	नदींद्र		नारी + इच्छा	=	नारीच्छा
नारी + इंद्र	=	नारींद्र		पत्नी + इच्छा	=	पत्नीच्छा

ई + ई = ई

मही + ईश	=	महीश		नारी + ईश्वर	=	नारीश्वर
योगी + ईश्वर	=	योगीश्वर		नदी + ईश	=	नदीश
रजनी + ईश	=	रजनीश		सती + ईश	=	सतीश
जानकी + ईश	=	जानकीश		श्री + ईश	=	श्रीश

उ + उ = ऊ

गुरु + उपदेश	=	गुरूपदेश		सु + उक्ति	=	सूक्ति
लघु + उत्तर	=	लघूत्तर		भानु + उदय	=	भानूदय
अनु + उदित	=	अनूदित		विधु + उदय	=	विधूदय
बहु + उद्देशीय	=	बहूद्देशीय		लघु + उपदेश	=	लघूपदेश

उ + ऊ = ऊ

सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि   लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

ऊ + उ = ऊ

वधू + उत्सव = वधूत्सव   भू + उद्धार = भूद्धार

ऊ + ऊ = ऊ

वधू + ऊर्मि = वधूर्मि   भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

(ख) गुण संधि–जब अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों के स्थान पर 'ए', यदि उ या ऊ हो तो दोनों के स्थान पर 'ओ' और यदि ऋ हो तो 'अर्' हो जाता है।

संधि (भेद)	परिवर्तन (नियम)	उदाहरण
गुण संधि (स्वर संधि)	अ + इ = ए	नर + इंद्र = नरेंद्र
	अ + ई = ए	कमल + ईश = कमलेश
	आ + इ = ए	यथा + इष्ट = यथेष्ट
	आ + ई = ए	महा + ईश्वर = महेश्वर
	अ + उ = ओ	वन + उत्सव = वनोत्सव
	अ + ऊ = ओ	जल + ऊर्मि = जलोर्मि
	आ + उ = ओ	गंगा + उत्सव = गंगोत्सव
	आ + ऊ = ओ	दया + ऊर्मि = दयोर्मि
	अ + ऋ = अर्	राज + ऋषि = राजर्षि
	आ + ऋ = अर्	ब्रह्मा + ऋषि = ब्रह्मर्षि

जैसे :

1. अ या आ के बाद इ या ई मिलकर 'ए' होता है :

अ + इ = ए

स्व + इच्छा = स्वेच्छा	नग + इंद्र = नगेंद्र
देव + इंद्र = देवेंद्र	पूर्ण + इंद्र = पूर्णेंद्र
सुर + इंद्र = सुरेंद्र	वीर + इंद्र = वीरेंद्र
गज + इंद्र = गजेंद्र	नर + इंद्र = नरेंद्र
धर्म + इंद्र = धर्मेंद्र	भारत + इंदु = भारतेंदु
सत्य + इंद्र = सत्येंद्र	योग + इंद्र = योगेंद्र

अ + ई = ए

गण + ईश = गणेश	परम + ईश्वर = परमेश्वर
राम + ईश्वर = रामेश्वर	सुर + ईश = सुरेश
नर + ईश = नरेश	सोम + ईश = सोमेश
योग + ईश = योगेश	देव + ईश्वर = देवेश्वर
लोक + ईश = लोकेश	दिन + ईश = दिनेश

आ + इ = ए

महा + इंद्र = महेंद्र	रमा + इंद्र = रमेंद्र
यथा + इष्ट = यथेष्ट	राजा + इंद्र = राजेंद्र

आ + ई = ए

महा + ईश = महेश	महा + ईश्वर = महेश्वर
रमा + ईश = रमेश	राका + ईश = राकेश
राजा + ईश = राजेश	उमा + ईश = उमेश

2. अ या आ के बाद उ या ऊ मिलकर 'ओ' होता है :

अ + उ = ओ

नर + उत्तम = नरोत्तम	सूर्य + उदय = सूर्योदय
चंद्र + उदय = चंद्रोदय	सर्व + उदय = सर्वोदय
पर + उपकार = परोपकार	लोक + उक्ति = लोकोक्ति
वीर + उचित = वीरोचित	हित + उपदेश = हितोपदेश
पुरुष + उत्तम = पुरुषोत्तम	उत्तर + उत्तर = उत्तरोत्तर
मद + उन्मत = मदोन्मत	अछूत + उद्धार = अछूतोद्धार
भाग्य + उदय = भाग्योदय	प्रश्न + उत्तर = प्रश्नोत्तर
देव + उत्सव = देवोत्सव	सर्व + उत्तम = सर्वोत्तम

अ + ऊ	= ओ					
नव + ऊढ़ा	= नवोढ़ा		सागर + ऊर्मि	= सागरोर्मि		
जल + ऊर्मि	= जलोर्मि		समुद्र + ऊर्मि	= समुद्रोर्मि		

आ + उ	= ओ		
महा + उदय	= महोदय	महा + उत्सव	= महोत्सव
गंगा + उदक	= गंगोदक	महा + उदधि	= महोदधि
आ + ऊ	= ओ		
गंगा + ऊर्मि	= गंगोर्मि	रंभा + ऊरु	= रंभोरु

3. अ या आ के बाद ऋ मिलकर 'अर्' होता है :

अ + ऋ	= अर्		
देव + ऋषि	= देवर्षि	ब्रह्म + ऋषि	= ब्रह्मर्षि
सप्त + ऋषि	= सप्तर्षि	वसंत + ऋतु	= वसंतर्तु
आ + ऋ	= अर्		
महा + ऋषि	= महर्षि	राजा + ऋषि	= राजर्षि

(ग) वृद्धि संधि–जब अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान पर 'ऐ'; यदि ओ या औ हो तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

संधि (भेद)	परिवर्तन (नियम)	उदाहरण
वृद्धि संधि	अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक
(स्वर संधि)	अ + ऐ = ऐ	परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य
	आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव
	आ + ऐ = ऐ	विद्या + ऐश्वर्य = विद्यैश्वर्य
	अ + ओ = औ	परम + ओज = परमौज
	आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी
	अ + औ = औ	वीर + औदार्य = वीरौदार्य
	आ + औ = औ	महा + औषध = महौषध

जैसे :

1. अ या आ के बाद ए या ऐ मिलकर 'ऐ' होता है :

अ + ए	= ऐ		
एक + एक	= एकैक	लोक + एषण	= लोकैषण
अ + ऐ	= ऐ		
मत + ऐक्य	= मतैक्य	राज + ऐश्वर्य	= राजैश्वर्य

आ	+	ए	=	ऐ						
तथा	+	एव	=	तथैव		सदा	+	एव	=	सदैव
आ	+	ऐ	=	ऐ						
महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य		राजा	+	ऐश्वर्य	=	राजैश्वर्य

2. अ या आ के बाद ओ या औ मिलकर 'औ' होता है :

अ	+	ओ	=	औ						
जल	+	ओध	=	जलौध		दंत	+	ओष्ठ	=	दंतौष्ठ
अधर	+	ओष्ठ	=	अधरौष्ठ		परम	+	ओज	=	परमौज
आ	+	ओ	=	औ						
महा	+	ओज	=	महौज		महा	+	ओध	=	महौध
अ	+	औ	=	औ						
परम	+	औषध	=	परमौषध		वन	+	औषध	=	वनौषध
अत्यंत	+	औदार्य	=	अत्यंतौदार्य		वीर	+	औदार्य	=	वीरौदार्य
जल	+	औध	=	जलौध		परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य
आ	+	औ	=	औ						
महा	+	औदार्य	=	महौदार्य		महा	+	औषध	=	महौषध

(घ) यण संधि–जब इ या ई के बाद इ वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो इ–ई के स्थान पर 'य्'; यदि उ या ऊ के बाद उ वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो, उ या ऊ का 'व्' तथा ऋ के बाद ऋ के अतिरिक्त कोई भिन्न स्वर आता है तो, ऋ का 'र्' हो जाता है।

संधि (भेद)	परिवर्तन (नियम)	उदाहरण
यण संधि	इ + अ = य्	अति + अंत = अत्यंत
(स्वर संधि)	इ + आ = या	अभि + आगत = अभ्यागत
	ई + अ = य्	सखी + अपराध = सख्यापराध
	ई + आ = या	सखी + आगमन् = सख्यागमन
	इ + उ = यु	प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर
	इ + ऊ = यू	वि + ऊह = व्यूह
	ई + उ = यु	नदी + उद्गम = नद्युद्गम
	ई + ऊ = यू	नदी + ऊर्जा = नद्यूर्जा
	इ + ए = ये	अधि + एषणा = अध्येषणा
	ई + ऐ = यै	नदी + ऐश्वर्य = नद्यैश्वर्य

	इ + अ = य्	प्रति + अंग = प्रत्यंग
	उ + अ = व्	सु + अच्छ = स्वच्छ
	उ + आ = व्	गुरु + आदेश = गुर्वादेश
	ऊ + आ = वा	वधू + आगमन = वध्वागमन
	उ + इ = वि	अनु + इत = अन्वित
	उ + ई = वी	अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण
	उ + ए = वे	अनु + एषण = अन्वेषण
	ऋ + अ = र्	मातृ + अनुमति = मात्रानुमति
	ऋ + आ = रा	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
	ऋ + उ = रु	पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश
	ऋ + इ = रि	पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

1. इ या ई के बाद इ वर्ण के अतिरिक्त अन्य स्वर आए तो इ या ई का 'य्' हो जाता है :

इ + अ = य्

यदि + अपि = यद्यपि   अति + अधिक = अत्यधिक
अति + अंत = अत्यंत   गति + अवरोध = गत्यवरोध

इ + आ = या

इति + आदि = इत्यादि   अति + आचार = अत्याचार
वि + आप्त = व्याप्त   अति + आनंद = अत्यानंद
परि + आवरण = पर्यावरण   अभि + आगत = अभ्यागत

ई + अ = य्

नदी + अर्पण = नद्यर्पण   देवी + अर्पण = देव्यर्पण

ई + आ = या

देवी + आगम = देव्यागम   सखी + आगमन = सख्यागमन
देवी + आलय = देव्यालय

इ + उ = यु

अभि + उदय = अभ्युदय   प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
उपरि + उक्त = उपर्युक्त   प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर

इ + ऊ = यू

नि + ऊन = न्यून   प्रति + ऊष = प्रत्यूष
वि + ऊह = व्यूह

ई + उ = यु						
सखी	+ उचित	= सख्युचित				
ई + ऊ = यू						
नदी	+ ऊर्मि	= नद्यूर्मि				
इ + ए = ये						
प्रति	+ एक	= प्रत्येक	अधि	+ एता	= अध्येता	
ई + ऐ = यै						
नदी	+ ऐश्वर्य	= नद्यैश्वर्य	सखी	+ ऐश्वर्य	= सख्यैश्वर्य	
इ + अं = यं						
प्रति	+ अंग	= प्रत्यंग	प्रति	+ अंचा	= प्रत्यंचा	

2. उ या ऊ के बाद उ वर्ण के अतिरिक्त अन्य स्वर आए तो उ या ऊ का 'व्' हो जाता है :

उ + अ = व्						
अनु	+ अय	= अन्वय	सु	+ अच्छ	= स्वच्छ	
सु	+ अल्प	= स्वल्प	सु	+ अस्ति	= स्वस्ति	
मधु	+ अरि	= मध्वरि	मनु	+ अंतर	= मन्वंतर	अ + अं = वं
उ + आ = वा						
मधु	+ आलय	= मध्वालय	सु	+ आगत	= स्वागत	
ऊ + आ = वा						
वधू	+ आगमन	= वध्वागमन				
उ + इ = वि						
अनु	+ इत	= अन्वित	अनु	+ इति	= अन्विति	
उ + ई = वी						
अनु	+ ईक्षण	= अन्वीक्षण				
अनु	+ ईक्षक	= अन्वीक्षक				
उ + ए = वे						
अनु	+ एषण	= अन्वेषण	अनु	+ ऐषक	= अन्वेषक	

3. ऋ के बाद ऋ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आने पर ऋ का 'र्' हो जाता है :

ऋ + अ = र्

पितृ + अनुमति = पित्रानुमति

ऋ + आ = रा

पितृ + आदेश = पित्रादेश पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
मातृ + आदेश = मात्रादेश पितृ + आलय = पित्रालय
मातृ + आनंद = मात्रानंद भ्रातृ + आज्ञा = भ्रात्राज्ञा
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

ऋ + उ = रु

पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश

ऋ + इ = रि

मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा
पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

(ङ) अयादि संधि : ए या ऐ के बाद ए वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो ए का 'अय्' तथा ऐ का 'आय्' हो जाता है। यदि ओ या औ के बाद ओ वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो ओ का 'अव्' तथा औ का 'आव्' हो जाता है। इसे 'अयादि संधि' के नाम से जाना जाता है।

संधि (भेद)	परिवर्तन (नियम)	उदाहरण
अयादि संधि	ए + अ = अय्	चे + अन = चयन
(स्वर संधि)	ऐ + अ = आय्	सै + अक = सायक
	ऐ + इ = आयि	नै + इका = नायिका
	ओ + अ = अव्	भो + अन = भवन
	ओ + इ = अवि	भो + इष्य = भविष्य
	औ + अ = आव्	पौ + अक = पावक
	नौ + इक = आवि	नौ + इक = नाविक
	औ + उ = आवु	भौ + उक = भावुक

1. 'ए' के बाद अ आए तो 'अय्' बन जाता है :

ने + अन = नयन चे + अन = चयन
शे + अन = शयन

2. ऐ के बाद अ आए तो 'आय्' बन जाता है :

नै + अक = नायक गै + अन = गायन
गै + अक = गायक

3. ऐ के बाद इ आए तो 'आयि' बन जाता है :

गै + इका = गायिका, नै + इका = नायिका

4. ओ के बाद आया अ 'अव्' बन जाता है :

हो + अन = हवन

पो + अन = पवन

भो + अन = भवन

5. ओ के बाद इ आए तो 'अवि' बन जाता है :

भो + इष्य = भविष्य

पो + इत्र = पवित्र

6. औ के बाद आया अ 'आव्' बन जाता है :

पौ + अन = पावन

पौ + अक = पावक

7. औ के बाद इ आए तो 'आवि' बन जाता है :

नौ + इक = नाविक

8. औ के बाद उ आए तो 'आवु' बन जाता है :

भौ + उक = भावुक

2. व्यंजन संधि (Joining of Consonant with a Vowel or a Consonant)

व्यंजन के बाद यदि किसी स्वर या व्यंजन के आने से उस व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, वह 'व्यंजन संधि' कहलाता है।

'व्यंजन संधि' के कुछ नियम इस प्रकार हैं :

1. वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन

क्, च्, ट्, त्, प् के पश्चात् यदि किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण (*ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ*) *य, र, ल, व, ह* या कोई स्वर आ जाए तो वह अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है अर्थात् क् का ग्, च् का ज्, ट् का ड्, त् का द् और प् का ब् हो जाता है; जैसे :

क् को ग्

दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन	दिक् + गज = दिग्गज	दिक् + अंबर = दिगंबर
वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता	दिक् + अंत = दिगंत	वाक् + ईश = वागीश

च् का ज्

अच् + अंत = अजंत

ट् का ड्

षट् + आनन = षड्‌ानन

त् का द्

जगत् + ईश = जगदीश	तत् + अनुसार = तदनुसार	तत् + भव = तद्भव
उत् + घाटन = उद्घाटन	सत् + भावना = सद्भावना	उत् + यम = उद्यम
भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति	जगत् + अंबा = जगदंबा	सत् + धर्म = सद्धर्म
सत् + वाणी = सद्वाणी	भगवत् + भजन = भगवद्भजन	सत् + गति = सद्गति
भगवत् + गीता = भगवद्गीता	उत् + धार = उद्धार	सत् + उपयोग = सदुपयोग

प् का ब्

अप् + ज = अब्ज

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

किसी वर्ग के **पहले** या **तीसरे** व्यंजन के बाद यदि कोई नासिक्य व्यंजन (ङ, ञ, ण, न, म) आ जाता है तो **पहले/तीसरे** व्यंजन के स्थान पर अपने ही वर्ग का **नासिक्य व्यंजन** आ जाता है अर्थात् **क्** का **ङ**, **च्** का **ञ**, **द्** का **ण**, **त्** का **न्** और **प्** का **म्** हो जाता है; जैसे :

वाक् + मय = वाङ्मय	जगत् + नाथ = जगन्नाथ	सत् + मार्ग = सन्मार्ग
तत् + नाम = तन्नाम	दिक् + नाग = दिङ्नाग	सत् + नारी = सन्नारी
उत् + मत्त = उन्मत्त	षट् + मास = षण्मास	उत् + नायक = उन्नायक
सत् + मित्र = सन्मित्र	चित् + मय = चिन्मय	षट् + मुख = षण्मुख
सत् + मति = सन्मति	तत् + मय = तन्मय	उत् + नयन = उन्नयन
उत् + मेष = उन्मेष	उत् + नायक = उन्नायक	उत् + नति = उन्नति

3. 'त' संबंधी विशेष नियम

(*i*) **'त्'** व्यंजन के बाद **च/छ** हों तो **'च्'**; **ज/झ** हों तो **'ज्'**; **ट/ठ** हों तो **'ट्'**; **ड/ढ** होने पर **'ड्'** और **'ल'** होने पर **'ल्'** हो जाता है; जैसे :

उत् + लास = उल्लास	उत् + चारण = उच्चारण	सत् + चरित्र = सच्चरित्र
उत् + छिन्न = उच्छिन्न	उत् + चरित = उच्चरित	सत् + चित् = सच्चित्
सत् + जन = सज्जन	शरत् + चंद्र = शरदचंद्र	जगत् + छाया = जगच्छाया
विपत् + जाल = विपज्जाल	जगत् + जननी = जगज्जननी	वृहत् + टीका = वृहट्टीका
उत् + ज्वल = उज्ज्वल	तत् + टीका = तट्टीका	उत् + लेख = उल्लेख
तत् + लीन = तल्लीन	उत् + डयन = उड्डयन	

(*ii*) यदि **त्** के बाद **'श'** आए तो **त्** का **'च्'** तथा **'श'** का **'छ'** हो जाता है; जैसे :

उत् + श्वास = उच्छ्वास	तत् + शिव = तच्छिव	सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र
उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट	तत् + शंकर = तच्छंकर	

(*iii*) यदि **त्** के बाद **'ह'** व्यंजन आए तो **'त्'** का **'द्'** (त् → द्) तथा **'ह'** का **ध** (ह → ध)हो जाता है; जैसे :

उत् + हार = उद्धार	उत् + हरण = उद्धरण	तत् + हित = तद्धित
पद् + हति = पद्धति	उत् + हत = उद्धत	

4. 'छ' संबंधी नियम

यदि किसी स्वर के बाद **छ** वर्ण आ जाए तो **छ** से पहले **च्** वर्ण जुड़ जाता है; जैसे :

संधि + छेद = संधिच्छेद	स्व + छंद = स्वच्छंद	परि + छेद = परिच्छेद
वि + छेद = विच्छेद	वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया	आ + छादन = आच्छादन
अनु + छेद = अनुच्छेद	लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया	छत्र + छाया = छत्रच्छाया

5. 'म' संबंधी नियम

(*i*) **म्** के बाद जिस वर्ग का व्यंजन आता है, अनुस्वार उसी के वर्ग का **नासिक्य** (ङ, ञ, ण, न, म) अथवा **अनुस्वार** बन जाता है; जैसे :

अहम् + कार = अहंकार	सम् + कीर्ण = संकीर्ण	सम् + कल्प = संकल्प
सम् + भव = संभव	सम् + गत = संगत	सम् + ताप = संताप
सम् + जय = संजय	सम् + चित = संचित	सम् + पूर्ण = संपूर्ण
सम् + जीवनी= संजीवनी	सम् + भाषण = संभाषण	हृदयम् + गम = हृदयंगम
किम् + कर = किंकर	किम् + चित् = किंचित्	सम् + बंध = संबंध

परम् + तु = परंतु	सम् + ध्या = संध्या	सम् + चय = संचय
सम् + गम = संगम	किम् + तु = किंतु	सम् + तोष = संतोष
सम् + घर्ष = संघर्ष		

(ध्यान रखें– शब्द के अंत में अनुस्वार सदैव 'म्' का रूप ही लेता है। अत: सम् को हम 'सं' भी लिख सकते हैं।)

(*ii*) **'म्'** के बाद यदि **य, र, ल, व, स, श, ह** व्यंजन हों तो **'म्'** का **अनुस्वार** हो जाता है; जैसे :

सम् + हार = संहार	सम् + योग = संयोग	सम् + रचना = संरचना	सम् + वद्र्धन = संवद्र्धन
सम् + शय = संशय	सम् + वाद = संवाद	सम् + लाप = संलाप	सम् + वत = संवत
सम् + लग्न = संलग्न	सम् + सार = संसार	सम् + शोधन = संशोधन	सम् + यम = संयम
सम् + रक्षा = संरक्षा	सम् + रक्षण = संरक्षण	सम् + विधान = संविधान	सम् + रक्षक = संरक्षक
सम् + वहन= संवहन	सम् + युक्त = संयुक्त	सम् + स्मरण = संस्मरण	

(*iii*) **म्** से परे यदि **म** वर्ण आए तो **म्** का **द्वित्व** हो जाता है; जैसे :

सम् + मान = सम्मान	सम् + मुख = सम्मुख	सम् + मानित = सम्मानित
सम् + मोहन = सम्मोहन	सम् + मिश्रण = सम्मिश्रण	सम् + मिलित = सम्मिलित
सम् + मति = सम्मति		

6. न् का ण्

यदि **ऋ, र** तथा **ष** के बाद **'न'** व्यंजन आता है, तो उसका **'ण'** में परिवर्तन हो जाता है। भले ही बीच में क-वर्ग, प-वर्ग, अनुस्वार, य, व, ह आदि में से कोई भी वर्ण क्यों न आ जाए*; जैसे :

परि + मान = परिमाण	भूष् + अन = भूषण	शोष् + अन = शोषण	प्र (पर्) + मान = प्रमाण
तृष् + ना = तृष्णा	परि + नाम = परिणाम	भर + न = भरण	हर + न = हरण
कृष् + न = कृष्ण	ऋ + न = ऋण	विष् + नु = विष्णु	पूर् + न = पूर्ण

7. स् का ष्

यदि **'स'** व्यंजन से पूर्व **अ, आ** से भिन्न कोई भी स्वर आ जाता है, तो **'स'** का परिवर्तन **'ष'*** में हो जाता है; जैसे :

अभि + सेक = अभिषेक	सु + सुप्ति = सुषुप्ति	नि + सेध = निषेध	अभि + सिक्त = अभिषिक्त
वि + सम = विषम	अनु + संगी = अनुषंगी	नि + सिद्ध = निषिद्ध	

विशेष–ऊपर के संधियुक्त शब्दों के अतिरिक्त निम्नलिखित फुटकर शब्द उल्लेखनीय हैं :

उत् + स्थान = उत्थान	सम् + कृति = संस्कृति	अन् + आचार = अनाचार
निर् + उद्यम = निरुद्यम	पुनर् + ईक्षण = पुनरीक्षण	

3. विसर्ग संधि (Joining of Visarga (:) with a Vowel and Consonant)

विसर्ग के बाद किसी स्वर अथवा व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, वह 'विसर्ग संधि' कहलाता है।

विसर्ग संधि की निम्नलिखित स्थितियाँ दिखाई देती हैं :

1. विसर्ग का श्, ष्, स्

यदि विसर्ग के बाद **'च/छ'** व्यंजन हों तो विसर्ग का **'श्', ट/ठ** व्यंजन हों तो **'ष्'** तथा **त/थ** व्यंजन हों तो **'स्'** हो जाता है; जैसे :

नि: + चल = निश्चल	नि: + ठुर = निष्ठुर	धनु:+ टंकार = धनुष्टंकार

* चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, **श्** और **स्** का व्यवधान होने पर **न्** का **ण्** नहीं होता; जैसे–दुर्जन, अर्जुन, रसना, दर्शन, पर्यटन, अर्चना, रतन आदि।

* **अपवाद :** अनु + सरण = अनुसरण, वि + स्मरण = विस्मरण, अनु + स्वार = अनुस्वार।

निः + छल = निश्छल	मनः + ताप = मनस्ताप	निः + चिंत = निश्चिंत
निः + चय = निश्चय	दुः + चरित्र = दुश्चरित्र	दुः + चक्र = दुश्चक्र
हरिः + चंद्र = हरिश्चंद्र	दुः + तर = दुस्तर	निः + तेज = निस्तेज
निः + तार = निस्तार	नमः + ते = नमस्ते	

2. विसर्ग में कोई परिवर्तन न होना

(*i*) यदि विसर्ग के बाद 'श/ष/स' में से कोई व्यंजन आए तो विसर्ग यथावत बना रहता है अथवा विसर्ग आगे के व्यंजन का रूप ले लेता है; जैसे :

दुः + शासन = दुःशासन (दुश्शासन)	निः + संदेह = निःसंदेह (निस्संदेह)
दुः + साहस = दुःसाहस (दुस्साहस)	दुः + सह = दुःसह (दुस्सह)
निः + संतान = निःसंतान (निस्संतान)	निः + संग = निःसंग (निस्संग)
निः + संकोच = निःसंकोच (निस्संकोच)	

(*ii*) विसर्ग के बाद यदि क/ख अथवा प/फ व्यंजन आएँ तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे :
रजः + कण = रजःकण, अंतः + करण = अंतःकरण, पयः + पान = पयःपान, प्रातः + काल = प्रातःकाल
लेकिन यदि विसर्ग के पहले 'इ/उ' स्वर हों तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है; जैसे :

निः + कपट = निष्कपट	निः + फल = निष्फल	दुः + कर्म = दुष्कर्म
निः + पाप = निष्पाप	चतुः+ पाद = चतुष्पाद	निः + कलंक = निष्कलंक
दुः + कर = दुष्कर।		

3. विसर्ग को र्*

यदि विसर्ग से पहले 'अ/आ' से भिन्न कोई स्वर आए और विसर्ग के बाद किसी स्वर, किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'र्' में परिवर्तन हो जाता है; जैसे :

दुः + उपयोग = दुरुपयोग	दुः + लभ = दुर्लभ	निः + आशा = निराशा	दुः + वासना = दुर्वासना
दुः + गुण = दुर्गण	निः + भय = निर्भय	निः + अर्थक = निरर्थक	निः + धन = निर्धन
निः + मल = निर्मल	निः + गुण = निर्गुण	दुः + बल = दुर्बल	दुः + जन = दुर्जन
निः + आहार = निराहार	दुः + आचार = दुराचार	बहिः + मुख = बहिर्मुख	दुः + बुद्धि = दुर्बुद्धि
निः + उपमा = निरुपमा	निः + यात = निर्यात	दुः + आशा = दुराशा	आशीः + वाद = आशीर्वाद
निः + उत्साह = निरुत्साह	निः + जन = निर्जन	पुनः + जन्म = पुनर्जन्म	निः + उत्तर = निरुत्तर
निः + विघ्न = निर्विघ्न	निः + आमिष = निरामिष	निः + बल = निर्बल	अंतः + गत = अंतर्गत

4. 'अ', 'अः' के स्थान पर ओ

यदि विसर्ग के पहले 'अ' स्वर और आगे 'अ' अथवा कोई सघोष व्यंजन (किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण) अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो 'अ' और विसर्ग (अः) के बदले 'ओ' हो जाता है; जैसे :

मनः + योग = मनोयोग	अधः + गति = अधोगति	मनः + हर = मनोहर
तमः + गुण = तमोगुण	अधः + पतन = अधोपतन	तपः + बल = तपोबल
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध	यशः + दा = यशोदा	रजः + गुण = रजोगुण
मनः + विकार = मनोविकार	मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान	पयः + द = पयोद
मनः + रथ = मनोरथ	मनः + विनोद = मनोविनोद	मनः + रंजन = मनोरंजन
मनः + बल = मनोबल	तपः + वन = तपोवन	अधः + भाग = अधोभाग
मनः + अनुकूल = मनोनुकूल	तेजः + राशि = तेजोराशि	मनः + कामना = मनोकामना

* **अपवाद** : पुनः + मिलन = पुनर्मिलन, अंतः + गत = अंतर्गत।

5. **विसर्ग का लोप और पूर्व स्वर दीर्घ**

(*i*) यदि विसर्ग के आगे 'र' व्यंजन हो तो **विसर्ग का लोप** हो जाता है और उसके पहले का **ह्रस्व स्वर दीर्घ** हो जाता है; जैसे :

नि: + रोग = नीरोग नि: + रज = नीरज नि: + रस = नीरस नि: + रव = नीरव।

(*ii*) यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' स्वर हों और बाद में कोई भिन्न स्वर आए तो **विसर्ग का लोप** हो जाता है; जैसे : अत: + एव = अतएव।

(*iii*) कुछ शब्दों में विसर्ग का 'स्' हो जाता है; जैसे :

नम: + कार = नमस्कार भा: + कर = भास्कर पुर: + कार = पुरस्कार।

हिंदी की संधियाँ

हिंदी के अपने तद्भव तथा आगत दोनों ही प्रकार के शब्दों पर संस्कृत के संधि नियम लागू नहीं होते। हिंदी में अपने कुछ संधि नियम विकसित हुए हैं, जो इस प्रकार हैं :

1. **महाप्राणीकरण तथा अल्पप्राणीकरण** : यदि किसी शब्द के अंत में अल्पप्राण ध्वनि हो और उसके आगे 'ह' ध्वनि आ रही हो तो **अल्पप्राण** ध्वनि **महाप्राण** हो जाती है; जैसे :

सब + ही = सभी अब + ही = अभी तब + ही = तभी इन + ही = इन्ही।

2. अनेक शब्दों में शब्दांत में आने वाली महाप्राण ध्वनि उच्चारण में अल्पप्राण हो जाती है; जैसे :

पढ़ = पड़ कभी = कबी दूध = दूद छठा = छटा।

3. **लोप** : (क) कभी-कभी कुछ शब्दों में संधि होने पर किसी एक ध्वनि का लोप हो जाता है; जैसे :

'ही' में 'ह्' व्यंजन का लोप :

यह + ही = यही (ह् → ø) किस + ही = किसी वह + ही = वही उस + ही = उसी।

(ख) कभी-कभी यह लोप दोनों शब्दों की ध्वनियों में भी हो सकता है; जैसे :

कहाँ + ही = कहीं यहाँ + ही = यहीं वहाँ + ही = वहीं।

यहाँ पहले शब्द से 'आ' स्वर का लोप तथा दूसरे से 'ह' व्यंजन का लोप हो रहा है तथा पहले स्वर की अनुनासिकता दूसरे स्वर पर पहुँच जाती है।

(क् + अ + ह् + आँ) + (ह् + ई) = (क् + अ + ह + ईं = कहीं)

↓ ↓

ø ø

4. **आगम** : हिंदी में प्राय: एक साथ दो स्वर उच्चरित नहीं होते। यदि किसी शब्द में दो स्वर एक साथ आ जाते हैं तो

दोनों के बीच एक व्यंजन 'य' का आगम हो जाता है; जैसे :

ला + आ = लाया कवि + ओं = कवियों पी + आ = पिया लड़की + ओं = लड़कियों।

5. **ह्रस्वीकरण** : समस्त पदों में पहले पद का दीर्घ स्वर अधिकतर शब्दों में ह्रस्व हो जाता है; जैसे :

हाथ + कड़ी = हथकड़ी	आधा + खिला = अधखिला	बच्चा + पन = बचपन
लड़का + पन = लड़कपन	कान + कटा = कनकटा	काठ + पुतली = कठपुतली
लकड़ी + आँ = लकड़ियाँ	मीठा + बोला = मिठबोला	बहू + एँ = बहुएँ
डाकू + ओं = डाकुओं	हिंदू + ओं = हिंदुओं	दवाई + याँ = दवाइयाँ

6. **स्वरों में परिवर्तन** : समस्त पदों में भी प्राय: स्वरों में परिवर्तन हो जाता है; जैसे :

घोड़ा + सवार = घुड़सवार	छोटा + भैया = छुटभैया	मोटा + पा = मुटापा
लकड़ी + हारा = लकड़हारा	पानी + घाट = पनघट	लोटा + इया = लुटिया

• पाठ्यपुस्तक (स्पर्श-1) में प्रयुक्त संधि शब्द :

प्रति + एक = प्रत्येक	सम् + कृति = संस्कृति	सर्व + अधिक = सर्वाधिक
अधिक + अंश = अधिकांश	पर्वत + आरोही = पर्वतारोही	सु + आगत = स्वागत
गोल + अकार = गोलाकार	दुः + गम = दुर्गम	कठिन + आई = कठिनाई
दुः + लभ = दुर्लभ	सम् + भव = संभव	सम् + सार = संसार
परम् + तु = परंतु	सम् + बंध = संबंध	अति + अंत = अत्यंत
सदा + एव = सदैव	सम् + मान = सम्मान	निः + संकोच = निस्संकोच
सम् + भावना = संभावना	सम् + पूर्ण = संपूर्ण	

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

1. जीर्णोद्धार	....	24. भानूदय	....
2. वनौषधि	....	25. उपर्युक्त	....
3. चंद्रोदय	....	26. महौदधि	....
4. युगादि	....	27. लोकैषणा	....
5. धर्मात्मा	....	28. अत्यधिक	....
6. वार्षिकोत्सव	....	29. अधरौष्ठ	....
7. यद्यपि	....	30. प्रत्येक	....
8. अत्याचार	....	31. मुनीश	....
9. वनौषध	....	32. स्वल्प	....
10. मतैक्य	....	33. रेखांकित	....
11. अन्वेषण	....	34. सूर्योदय	....
12. अत्यानंद	....	35. महौषध	....
13. अत्याचार	....	36. गत्यवरोध	....
14. परमैश्वर्य	....	37. दंतौष्ठ	....
15. प्रत्युत्तर	....	38. प्रत्यागमन	....
16. महेश्वर्य	....	39. महौदार्य	....
17. नारीश्वर	....	40. अधिकांश	....
18. मदोन्मत्त	....	41. स्वागत	....
19. प्रत्युपकार	....	42. नदीश	....
20. तथैव	....	43. चिकित्सालय	....
21. रजनीश	....	44. महोदय	....
22. परमेश्वर	....	45. नवोदित	....
23. सदैव	....	46. एकैक	....

47. शुभोदय ....
48. महामात्य ....
49. अध्यादेश ....
50. राजर्षि ....
51. हिमालय ....
52. वाचनालय ....
53. सूक्ति ....
54. शशांक ....
55. राकेश ....
56. पूर्णेन्दु ....
57. सीमांत ....
58. अरुणोदय ....
59. प्राचार्य ....
60. महेंद्र ....
61. अनाथालय ....
62. औषधालय ....
63. अन्वित ....
64. वेदांत ....
65. यथार्थ ....
66. नारीश्वर ....
67. सदुपाय ....
68. नवोदय ....
69. लोकोपकार ....
70. महाशय ....
71. महोदय ....
72. दिव्यौषध ....
73. परमौदार्य ....
74. लघूत्तर ....
75. परोपकार ....
76. पर्यावरण ....
77. हिमांशु ....
78. स्वेच्छा ....
79. कृतार्थ ....
80. धनादेश ....
81. अत्यंत ....
82. शीतोदक ....
83. भाग्योदय ....
84. हितैषी ....
85. कालावधि ....
86. सत्याग्रह ....

2. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए :

1. उदय + अंचल ....
2. शब्द + अर्थ ....
3. पुष्प + अंजलि ....
4. वार्षिक + उत्सव ....
5. वन + औषधि ....
6. नव + आगत ....
7. प्रति + उत्तर ....
8. धन + एषणा ....
9. एक + एक ....
10. महा + उदय ....
11. सु + अल्प ....
12. मंत्र + आलय ....
13. महा + उदधि ....
14. उप + आसना ....
15. भाव + अर्थ ....
16. गज + इंद्र ....
17. वीर + उचित ....
18. महा + आशय ....
19. अभि + इष्ट ....
20. सोम + ईश ....
21. वार्ता + आलाप ....
22. मद + उन्मत्त ....

23. सीमा + अंत ....
24. राम + अवतार ....
25. वेद + अंत ....
26. सोम + इंद्र ....
27. शची + इंद्र ....
28. परम + ईश्वर ....
29. महा + औदार्य ....
30. मनु + अंतर ....
31. अधि + ईश्वर ....
32. आनंद + उत्सव ....
33. महा + ऐश्वर्य ....
34. विस्मय + आदि ....
35. राज + ईश्वर ....
36. अति + अधिक ....
37. मत + ऐक्य ....
38. चरण + अमृत ....
39. पूर्ण + इंदु ....
40. योग + अभ्यास ....
41. शुभ + इच्छा ....
42. इति + आदि ....
43. स्व + अधीन ....
44. अति + अंत ....
45. महा + इंद्र ....
46. विस्मय + आदि ....
47. अधर + ओष्ठ ....
48. सदा + एव ....
49. रत्न + आकर ....
50. लोक + इंद्र ....
51. कुश + आसन ....
52. परम + अणु ....
53. देह + अंत ....
54. सर्व + उदय ....
55. लघु + उत्तर ....
56. प्रति + अक्षर ....
57. प्रतीक्षा + आलय ....
58. सत् + जन ....
59. अधिक + अधिक ....
60. गृह + उपयोगी ....
61. वाचन + आलय ....
62. परम + औषधि ....
63. अनु + स्वार ....
64. सत्य + अन्वेषी ....
65. प्रति + उपकार ....
66. चंद्र + उदय ....
67. नव + उदय ....
68. यथा + अवसर ....
69. सुर + ईश ....
70. सु + आगत ....
71. महत् + आकार ....
72. तथा + एव ....
73. इति + आदि ....
74. एक + अधिकार ....
75. अति + उत्तम ....
76. अधि + ऐता ....
77. पद + उन्नति ....
78. स्व + अर्थ ....
79. प्रति + एक ....
80. महा + उत्सव ....
81. परम + औषध ....
82. जीर्ण + उद्धार ....
83. जगत + नाथ ....
84. दंत + ओष्ठ ....
85. अति + आधुनिक ....
86. प्र + आयोजक ....
87. विशेष + अधिकार ....
88. अति + आवश्यक ....

89. वृक्ष + आरोपण ....

90. लोक + आचार ....

91. अभि + उत्थान ....

92. अरुण + अंचल ....

93. सु + आग ....

94. पीत + अंबर ....

95. भानु + उदय ....

96. मत + अधिकार ....

97. अति + आचार ....

3. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

1. अहंकार ....
2. परिच्छेद ....
3. तल्लीन ....
4. संगम ....
5. निरुत्साह ....
6. सद्भावना ....
7. जगदीश ....
8. संस्कृति ....
9. उल्लेख ....
10. संयम ....
11. मनोविज्ञान ....
12. संचय ....
13. दिगंबर ....
14. शुभोदय ....
15. संरचना ....
16. उन्मेष ....
17. निसंदेह ....
18. निर्बल ....
19. संध्या ....
20. अनंत ....
21. उद्धार ....
22. पर्यावरण ....
23. संभाषण ....
24. पद्धति ....
25. निष्पाप ....
26. उन्नायक ....

4. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए :

1. अधिक + अधिक ....
2. सत् + मति ....
3. दुः + कर्म ....
4. दुः + चरित्र ....
5. निः + उपमा ....
6. सम् + तोज्ञ ....
7. नि + सिद्ध ....
8. निः + यात ....
9. प्र + मान ....
10. निः + जन ....
11. उत् + स्थान ....
12. दुः + चक्र ....

13. गृह + उपयोगी	....	21. नि: + धन	....
14. छत्र + छाया	....	22. किम् + कर	....
15. सम् + वहन	....	23. परम् + तु	....
16. दु: + वासना	....	24. नि: + अर्थक	....
17. उत् + श्वास	....	25. नम: + कार	....
18. कृष् + न	....	26. सम् + मति	....
19. हरि: + चंद्र	....	27. सम् + ध्या	....
20. वृक्ष + छाया	....	28. सम् + लाप	....

❑❑

4 विराम-चिह्न (Punctuation Marks)

विराम का अर्थ है–रुकना या ठहरना। मनुष्य अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में रुकता है। यह अलग बात है कि तुलनात्मक दृष्टि से हम कहीं अधिक रुकते हैं और कहीं कम। किसी शब्द के उच्चारण में हम अधिक बल देते हैं तो किसी के उच्चारण में कम। इतना ही नहीं कभी-कभी एक ही वाक्य का उच्चारण हम अलग-अलग अनुतान के साथ भी करते हैं; जैसे :

1. सोनिया मुंबई जाएगी। (सामान्य कथन)
2. सोनिया मुंबई जाएगी! (आश्चर्य भाव के साथ)
3. सोनिया मुंबई जाएगी? (प्रश्न के रूप में)

इस प्रकार मौखिक भाषा की ऐसी अनेक युक्तियों (जैसे : कहीं रुकना, कहीं बल देना, कहीं भिन्न-भिन्न अनुतान के साथ बोलना आदि) को जब लिखित भाषा में प्रयुक्त करना होता है तो उसके लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए जाते हैं, यही चिह्न विराम-चिह्न कहलाते हैं।

लिखित भाषा में प्रयुक्त किए जाने वाले लिखित चिह्नों या संकेतों को 'विराम-चिह्न' कहा जाता है।

विराम-चिह्नों का महत्त्व

भाषा में विराम-चिह्नों का बहुत महत्त्व है। यदि सही विराम-चिह्नों का प्रयोग न किया जाए तो कभी-कभी अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है; जैसे : एक पत्नी ने अपने पति को पत्र लिखा। उस पत्र में वह विराम-चिह्न लगाना भूल गई थी और याद आने पर जल्दी-जल्दी विराम-चिह्न लगा दिए। पत्र इस तरह है :

प्रिय अमित,

प्रणाम। आपके चरणों में क्या चक्कर है? आपने कई दिनों से पत्र नहीं लिखा मेरी सखी रीना को। नौकरी से निकाल दिया है हमारी गाय ने। बछड़ा दिया है दादा जी ने। सिगरेट पीनी शुरू कर दी मैंने। बहुत पत्र डाले तुम नहीं आए कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गया है चीनी। घर आते वक्त ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी नई सहेली बन गई है माधुरी। इस समय टी०वी० पर गा रही है हमारी भैंस। बेच दी है तुम्हारी दादी। तुम्हें याद करती है तुम्हारी पड़ोसन। मुझे तंग करती है तुम्हारी बहन। सिरदर्द से लेटी है बिल्ली। पागल हो गई है तुम्हारी ज़मीन। गेहूँ उग आए हैं चाचा जी के सिर पर। सिकरी हो गई है मेरी पाँव में। चोट लग गई है तुम्हारे पत्र को। हर वक्त तरसती रहती है।

तुम्हारी
कामिनी

इस प्रकार विराम-चिह्नों का गलत प्रयोग करने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उपरोक्त पत्र में विराम-चिह्नों का सही प्रयोग करने पर इसका निम्नलिखित रूप बनेगा :

प्रणाम आपके चरणों में। क्या चक्कर है आपने कई दिनों से पत्र नहीं लिखा? मेरी सखी रीना को नौकरी से निकाल दिया है। हमारी गाय ने बछड़ा दिया है। दादा जी ने सिगरेट पीनी शुरू कर दी। मैंने बहुत पत्र डाले तुम नहीं आए। कुत्ते के बच्चे भेड़िया खा गया है। चीनी घर आते वक्त ले आना। एक खूबसूरत औरत मेरी नई सहेली बन गई है। माधुरी इस समय टी०वी० पर गा रही है। हमारी भैंस बेच दी है। तुम्हारी दादी तुम्हें याद करती है। तुम्हारी पड़ोसन मुझे तंग करती है। तुम्हारी बहन सिरदर्द से लेटी है। बिल्ली पागल हो गई है। तुम्हारी ज़मीन गेहूँ उग आए हैं। चाचा जी के सिर पर सिकरी हो गई है। मेरी पाँव में चोट लग गई है। तुम्हारे पत्र को हर वक्त तरसती रहती है।

तुम्हारी
कामिनी

हिंदी के प्रमुख विराम-चिह्न

हिंदी में निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है :

नाम	चिह्न
1. पूर्ण विराम (Full Stop)	[।]
2. अद्र्ध विराम (Semi Colon)	[;]
3. अल्प विराम (Comma)	[,]
4. उपविराम (Colon)	[:]
5. प्रश्नवाचक चिह्न (Question Mark)	[?]
6. विस्मयवाचक चिह्न (Sign of Exclamation)	[!]
7. योजक या विभाजक (Hyphen)	[-]
8. निर्देशक (Dash)	[–]
9. अवतरण या उद्धरण चिह्न (Inverted Comma)	[“ ”]
10. विवरण चिह्न (Colon Dash)	[:-]
11. कोष्ठक (Brackets)	(){}[]
12. हंसपद या त्रुटिपूरक	[^λ]
13. लाघव चिह्न या संक्षेपसूचक (Sign of Abbreviation)	[॰]

1. पूर्ण विराम (।) : हम बोलते समय वाक्य की समाप्ति पर कुछ समय के लिए विराम देते या रुकते हैं तब अगला वाक्य आरंभ करते हैं। इसी प्रकार लिखते समय भी प्रत्येक वाक्य (सरल, संयुक्त अथवा मिश्र) के बाद (केवल प्रश्नवाचक तथा विस्मयवाचक वाक्यों को छोड़कर) 'पूर्ण विराम' चिह्न लगाते हैं तथा फिर नया वाक्य आरंभ करते हैं; जैसे :

'बच्चे खेल रहे थे। अचानक बारिश आ गई। सभी लोग भींगने लगे। अचानक एक बच्चे का पैर फिसल गया। सब बच्चे उसके पास आकर इकट्ठे हो गए।'

दोहा, सोरठा, चौपाई, छंदों में भी पूर्ण विराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। पहले चरण के अंत में एक पूर्ण विराम (।) तथा दूसरे चरण के अंत में दो पूर्ण विराम (॥) लगाए जाते हैं; जैसे :

आगे चले बहुरि रघुराया। ऋष्यमूक पर्वत नियराया॥

आजकल कुछ पत्र-पत्रिकाओं (सरिता, मुक्ता आदि) में पूर्ण विराम (।) के स्थान पर रोमन के 'फुल स्टॉप' चिह्न (.) का प्रयोग किया जाने लगा है, परंतु यह हमारी भाषाओं और लिपियों की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। अतः स्वीकृत नहीं हो सका है।

2. अद्र्ध विराम (;) : जब कभी पूर्ण विराम की तुलना में थोड़ी कम अवधि के लिए रुका जाता है, वहाँ अद्र्ध विराम चिह्न का प्रयोग होता है। अद्र्ध विराम (;) का प्रयोग हमें निम्नलिखित स्थितियों में दिखाई देता है :

- **संयुक्त वाक्य के समानाधिकृत उपवाक्यों के बीच;** जैसे :

  मदन स्कूल से सीधे घर पहुँचा; हाथ-मुँह धोकर उसने नाश्ता किया; अपनी साइकिल उठाई और चल पड़ा मटरगश्ती करने।

- **मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों में विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले उपवाक्यों के बीच;** जैसे :

  1. वह हाथ जोड़ता रहा; वे लोग उसे पीटते रहे। 2. मैं उसे प्यार करता हूँ; वह मुझसे नफ़रत करती है।

- **मिश्र वाक्य में प्रधान उपवाक्य तथा कारणवाची क्रियाविशेषण उपवाक्य के बीच;** जैसे :

  1. वे लोग सारी रात दवाई की खोज में इधर से उधर भटकते रहे पर दवाई न मिली; क्योंकि यह दवाई विदेश से ही आती है।

2. शीला के पिता ने बहुत कोशिश की कि कोई अच्छा लड़का मिल जाए पर ऐसा हो न सका; क्योंकि शीला पढ़ी-लिखी न थी।

- **किसी वाक्य में उदाहरण सूचक 'जैसे' के पहले :**

लिखित भाषा में रुकने अथवा विराम के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग होता है उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं; जैसे-पूर्ण विराम (।), अद्‌र्ध विराम (;), अल्प विराम (,) आदि।

- **विभिन्न उपवाक्यों में अधिक बल देने के लिए;** जैसे :

1. सदैव आगे बढ़ते रहो; रुकना मृत्यु का नाम है।

3. **अल्प विराम (,)** : जब वाक्य के मध्य में अद्‌र्ध विराम की तुलना में कुछ कम समय के लिए रुका जाता है तब 'अल्प विराम' चिह्न का प्रयोग किया जाता है। अल्प विराम चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :

- **किसी वाक्य में दो या दो से अधिक समान पद वाले शब्दों या पदबंधों में अलगाव दिखाने के लिए;** जैसे :

1. 'गणतंत्र दिवस की परेड में बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सभी एकत्रित हुए।' (समान पद वाले शब्द)
2. 'शराब पीना, सिगरेट पीना, जुआ खेलना, चोरी करना, झूठ बोलना और जाने कितने ऐब थे उनमें।' (पदबंध)

- **वाक्य के बीच विभिन्न उपवाक्यों में अलगाव दिखाने के लिए;** जैसे :

'एक दिन की बात है, एक शिकारी जंगल में आया और मेरे ख्याल से, इसी पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।'

- **उपाधियों में अलगाव के लिए;** जैसे :

(*i*) बी०ए०, एम०ए०, पी-एच०डी०।

(*ii*) बी०एस-सी०, एम०एस-सी०, पी-एच०डी०; डी०लिट्०।

- **हाँ/नहीं के बाद;** जैसे :

नहीं, मैं नहीं चल सकता। हाँ, तुम जाना चाहो तो चले जाओ।

- **उद्धरण चिह्न के पूर्व;** जैसे :

माता जी बोलीं, ''मैं आपके साथ नहीं रहूँगी।''

- **शब्दों/वाक्यांशों की पुनरावृत्ति होने पर;** जैसे :

1. चलो, चलो निकलो यहाँ से।
2. क्या करता, क्या न करता, कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था।

- **एक ही वाक्य में अनेक प्रश्नसूचक उपवाक्य होने पर प्रश्नसूचक चिह्न अंत में आता है तथा प्रश्नों के बीच में अल्प विराम का प्रयोग होता है;** जैसे :

मैं कौन हूँ, कहाँ जा रहा हूँ, किससे मिलता हूँ, इससे आपको क्या मतलब?

- **महीने की तारीख़ और सन् को अलग-अलग करने के लिए;** जैसे :

26 जनवरी, सन् 1999......।

- **वाक्य में आए शब्द-युग्मों में अलगाव दिखाने के लिए;** जैसे :

'पाप और पुण्य, सच और झूठ, बेईमानी और ईमानदारी ये सब सामाजिक मूल्य हैं।'

- **समानाधिकरण शब्दों/पदबंधों के बीच;** जैसे :

अध्यापक आए, पुस्तक निकाली, ज़ोर-ज़ोर से पढ़ाने लगे।

- **विशेषण उपवाक्य का प्रयोग वाक्य के मध्य में होने पर; जैसे :**
  1. वह लड़का, जो यहाँ आया था, पकड़ा गया।
  2. वह किताब, जिसे मैंने खरीदा था, फट गई।
- **संबोधन शब्द के बाद, यदि संबोधन शब्द मध्य में हो तो उसके पहले तथा बाद में; जैसे :**
  1. मित्रों, मैं तो आप लोगों का भला ही चाहता हूँ।
  2. सुनो भाइयों, मेरी बात सुनो।
- **पत्र लिखते समय, अभिवादन लिखते समय, समापन के समय तथा पता लिखते समय; जैसे :**
  अभिवादन–पूज्य माता जी, प्रिय बंधु।
  समापन–भवदीय, आपका ही।

4. **उपविराम (:)** : इसे अपूर्ण विराम भी कहा जाता है। इसका प्रयोग निर्देश देने, संवाद-लेखन तथा शीर्षकों आदि में किया जाता है; जैसे :

शीर्षक	–	माँ	:	ममता की प्रतिमूर्ति
संवाद	–	सुमित	:	चलिए, आपको यमराज से मिलवाऊँ।
		अमित	:	भाई, अभी मेरी उनसे मिलने की उम्र नहीं हुई।

5. **प्रश्नवाचक चिह्न (?)** : प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :
- **जब वक्ता वाक्य में प्रश्नवाचक शब्दों, जैसे कब, कहाँ, कैसे, क्यों, आदि का प्रयोग करते हुए प्रश्न पूछता है; जैसे :**
  1. **क्या** आप जा रही हैं? 2. वह **कहाँ** मिलेगी आपको? 3. आपने उसे **क्यों** बुलाया?
- **संरचना की दृष्टि से सामान्य विधानवाचक (कथनात्मक) वाक्यों को प्रश्न, संदेह या अनिश्चय के भाव के साथ अनुतान परिवर्तन कर जहाँ बोला जाता है; जैसे :**
  1. वह जाएगा दिल्ली? 2. वह ईमानदार? मैं नहीं मान सकता। 3. मैं झूठ बोल रहा हूँ?
- **व्यंग्यात्मक भाव प्रकट करने के लिए भी सामान्य कथन के बाद कोष्ठक में अंत में; जैसे :**
  उनके जैसा धर्मात्मा पैदा ही नहीं हुआ (?)

  विशेष : प्राय: छात्र वाक्य में जहाँ भी प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग देखते हैं प्रश्नवाचक चिह्न लगा देते हैं। ऐसा हर जगह नहीं हो सकता, क्योंकि प्रश्नवाचक शब्द हर स्थान पर प्रश्न पूछने के लिए ही प्रयुक्त नहीं होते। उदाहरण के लिए कुछ वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द डाँटने के लिए प्रयुक्त होते हैं; जैसे : क्या बक रहे हो, चले जाओ यहाँ से **या** कहीं ये संबंधसूचक का कार्य करते हैं; जैसे : वे क्या कह रहे थे, मैं तो समझा ही नहीं। **ध्यान रखिए** ऐसे स्थानों पर प्रश्नवाचक चिह्न नहीं लगाया जाता।

6. **विस्मयवाचक चिह्न (!)** : प्राय: आश्चर्य, घृणा, प्रसन्नता आदि मनोभावों को प्रकट करने वाले विस्मयवाचक शब्दों के बाद ही इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है; जैसे :
- **विस्मयवाचक शब्दों (पदों), पदबंधों अथवा वाक्यों के अंत में; जैसे :**

1. अरे! वह चली गई।	(आश्चर्य)	2. तुम जाओगे दिल्ली!	(आश्चर्य)
3. छि:! तुमने तो नाम ही डुबो दिया।	(धिक्कार)	4. वाह! कितना सुंदर दृश्य है।	(प्रसन्नता)

- **संबोधन में भी संबोधन शब्द के बाद; जैसे :**
  1. भाइयो और बहिनो! मैं आपके लिए एक समाचार लाया हूँ। 2. मित्रो! मुझे अफ़सोस है कि···· इस प्रकार जहाँ भी किसी मनोभाव का प्रदर्शन होता है प्राय: विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे : अफ़सोस! बहुत अफ़सोस है मुझे।

- प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में मनोवेग प्रदर्शित करने के लिए; जैसे :
  1. सुन क्यों नहीं रहे, बहरे हो क्या!

7. योजक या विभाजक (-) : इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :

- तत्पुरुष तथा द्वंद्व समास में दोनों पदों के मध्य :
  गीत-संगीत, माता-पिता, भाई-बहिन, स्त्री-पुरुष, खरा-खोटा।
- मध्य के अर्थ में; जैसे-(*i*) कृष्ण-सुदामा चरित्र (*ii*) कालका-हावड़ा मेल।
- शब्दों के द्वित्व रूपों में; जैसे-कभी-कभी, धीरे-धीरे, हँसते-हँसते, चलते-चलते, सोते-सोते।
- तुलना-सूचक सा/सी/से के पहले-तुम-सा, मीरा-सी भक्त, लक्ष्मण-सा भाई।
- विभिन्न शब्द-युग्मों में-भीड़-भाड़, डर-वर, पानी-वानी, नाच-वाच।
- संख्याओं तथा उनके अंशों को शब्दों में लिखते समय-तीन-चौथाई, दो-तिहाई आदि।

8. निर्देशक (–) : निर्देशक चिह्न भी पड़ी लकीर के रूप में होता है पर योजक चिह्न से इसका आकार बड़ा होता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :

- किसी वाक्यांश/पद की व्याख्या या उसको स्पष्ट करने के लिए; जैसे :
  ''तुम्हें एक अच्छा नागरिक बनना है''–परिश्रम, लगन, निष्ठा और कार्यकुशलता से।
- किसी व्यक्ति के द्वारा कहे गए कथन को उद्धृत करने के पहले; जैसे :
  गांधी जी ने कहा था–''सत्य और अहिंसा से ही हम देश को आज़ाद करा सकते हैं।''
- संवादों/वार्तालापों में नामों के बाद :
  शीला – कहिए क्या हाल है?
  मदन – ठीक हूँ।
  शीला – कब आए दिल्ली से वापस?
  मदन – कल।
- 'निम्नलिखित' शब्द के बाद; जैसे :
  1. निम्नलिखित कथन पर ध्यान दीजिए–
  2. निम्नलिखित गद्यांश का अर्थ लिखिए–
- किसी अवतरण या अंश को लिखकर उसके लेखक का नाम लिखना हो तो इस चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे :
  1. 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है'–बालगंगाधर तिलक।
  2. 'मैया मैं नहिं माखन खायो'–सूरदास।
- निक्षिप्त पदों के आगे-पीछे; जैसे :
  1. राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी–भगत सिंह–को कौन नहीं जानता।
  2. हिंदी कहानी के सम्राट–मुंशी प्रेमचंद–भारत में ही नहीं विश्व में भी अमर हो गए।

9. अवतरण या उद्धरण चिह्न ('' '') :

- किसी के द्वारा कहे गए कथन या किसी महापुरुष की वाणी को उद्धृत करते समय; जैसे :
  1. माँ ने कहा था, ''अगर स्वामी जी नहीं आए तो वे मंदिर कभी नहीं जाएँगी।''
  2, तिलक ने कहा था, ''स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।''
  3. रहीम ने सत्य ही कहा है : ''रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
  पानी गए न ऊबरे मोती, मानुस, चून॥''

- किसी व्यक्ति का नाम या उपनाम या किसी पुस्तक का नाम इकहरे उद्धरण चिह्न (' ') द्वारा लिखा जाता है; जैसे :

  1. छायावाद के चार प्रमुख कवि हैं–'प्रसाद', 'निराला', 'पंत' तथा 'महादेवी'।
  2. 'गोदान' भारतीय कृषक-जीवन की व्यथा है।

10. **विवरण चिह्न (:–)** : वाक्यांशों के विषय में कुछ सूचना, निर्देश आदि देना हो तो विवरण चिह्न प्रयुक्त होता है; जैसे :

    1. अब हम अपनी बात नीचे दिए गए उदाहरणों से स्पष्ट करेंगे :–
    2. भाषा के दो प्रमुख रूप हैं :–

       (क) उच्चरित भाषा

       (ख) लिखित भाषा।

11. **कोष्ठक (), {}, [ ]** : कोष्ठकों का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है :

    - किसी कठिन शब्द को स्पष्ट करने के लिए; जैसे :

      1. लौकिक (सांसारिक) तथा परलौकिक (ईश्वरीय) शक्तियों की टकराहट से मनुष्य कहाँ तक बचेगा।
      2. जब पंडित जी (पं० नेहरू) वहाँ पहुँचे तो नेता जी (सुभाषचंद्र बोस) ने उठकर उनका स्वागत किया।

    - तीनों प्रकार के कोष्ठकों का प्रयोग गणित में होता है।
    - ( ) कोष्ठक का प्रयोग विकल्प दिखाने के लिए भी होता है; जैसे :

      हिंदी वाक्यों की मूल संरचना इस प्रकार की होती है :

      (*i*) कर्ता (कर्म) क्रिया

      नाटक तथा एकांकी में भाव और संकेत आदि प्रकट करने के लिए "राजन, (अनुरोध भरे संवाद में) आप मेरे लिए भी ऐसी घड़ी देंगे न!"

      अर्थात् यहाँ कर्म को कोष्ठक में रखने का अर्थ है कि कर्म तभी आएगा जब क्रिया सकर्मक होगी। अकर्मक क्रिया वाले वाक्य में कर्म नहीं होगा।

    - क्रमसूचक अंकों/अक्षरों के साथ :

      (क), (ख), (ग), (10), (11), (12)

12. **हंसपद या त्रुटिपूरक (^ λ)**: इसे त्रुटिपूरक भी कहा जाता है। लिखते समय जब कोई शब्द या अंश छूट जाता है तो इस चिह्न को लगाकर उस शब्द को ऊपर लिख दिया जाता है; जैसे :

    हमने आपसे पहले ^ही^ कह दिया था कि इस समय डॉक्टर नहीं मिलेंगे।

13. **लाघव चिह्न या संक्षेपसूचक (०)** : किसी बड़े अंश का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए संक्षेपसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे :

अर्जित अवकाश	अ०अ०	कार्यालय अधीक्षक	का०अ०	कार्यालय आदेश	का०आ०
कृपया पृष्ठ पलटिए	कृ०पृ०प०	मास्टर ऑफ आर्ट्स	एम०ए०	डॉक्टर	डॉ०

• अभ्यास-प्रश्न •

1. विराम-चिह्न किसे कहते हैं?
2. अल्प विराम और अर्ध विराम में क्या अंतर है? दोनों का एक-एक उदाहरण दीजिए।
3. योजक चिह्न का प्रयोग कहाँ किया जाता है? उदाहरण देकर समझाइए।
4. पूर्ण विराम का प्रयोग कहाँ किया जाता है? उदाहरण देकर समझाइए।

5. निम्नलिखित चिह्नों को पहचान कर उनके नाम लिखिए तथा इनका प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए :

(क) ? (ख) ! (ग) :- (घ) () (ङ) ; (च) , (छ) λ

6. प्रश्नवाचक, योजक, उद्धरण, कोष्ठक और अल्प विराम का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।

7. पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' की इन पंक्तियों में उचित स्थान पर विराम-चिह्न लगाइए :

1. हीरे के प्रेमी तो शायद उसे साफ़ सुथरा खरादा हुआ आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ देखना पसंद करेंगे
2. अभिजात वर्ग ने प्रसाधन सामग्री में बड़े बड़े आविष्कार किए लेकिन बालकृष्ण के मुँह पर छाई हुई वास्तविक गोधूलि की तुलना में वह सभी सामग्री क्या धूल नहीं हो गई
3. जिसने लिखा था धन्य धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की उसने भी माने। धूल भरे हीरों का महत्व कम करने में कुछ उठा न रखा था
4. धन्य धन्य में ही उसने बड़प्पन को विज्ञापित किया फिर मैले शब्द से अपनी हीनभावना भी व्यंजित कर दी अंत में ऐसे लरिकान कहकर उसने भेद बुद्धि का परिचय भी दे दिया
5. रूप रस गंध स्पर्श इन्हें कौन संभव करता है
6. धूलि धूलि धूली धूरि आदि की व्यंजनाएँ अलग अलग हैं
7. खरबूज़ों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी खरबूज़े बिक्री के लिए थे परंतु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता।
8. अरे इन लोगों का क्या है ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं इनके लिए बेटा बेटी खसम लुगाई धर्म ईमान सब रोटी का टुकड़ा है
9. झाड़ना फूँकना हुआ नागदेव की पूजा हुई पूजा के लिए दान दक्षिणा चाहिए घर में जो कुछ आटा और अनाज था दान दक्षिणा में उठ गया
10. बुढ़िया रोते रोते आँखें पोंछते पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूज़े डलिया में समेट कर बाज़ार की ओर चली और चारा भी क्या था
11. तभी कर्नल खुल्लर मेरी तरफ़ मुड़कर कहने लगे क्या तुम भयभीत थीं
12. मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ इसीलिए इस दल में आई हूँ
13. मैंने जवाब दिया नहीं जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए
14. उन्होंने मुझे गले से लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाया दीदी तुमने अच्छी चढ़ाई की मैं बहुत प्रसन्न हूँ
15. मुझे बधाई देते हुए उन्होंने कहा मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता पिता को बधाई देना चाहूँगा
16. तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ
17. किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं जल्दी धुल जाएँगे मैंने कहा मन ही मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है
18. बार बार यह प्रश्न उठ रहा है तुम कब जाओगे अतिथि
19. कल पत्नी ने धीरे से पूछा था कब तक टिकेंगे ये
20. तुम लौट जाओ अतिथि इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे उसके पूर्व तुम लौट जाओ
21. यही जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है कुछ और क्यों नहीं
22. बैंजनी के बाद क्रमशः नीले आसमानी हरे पीले नारंगी और लाल वर्ण का नंबर आता है इस प्रकार लाल वर्णीय प्रकाश की ऊर्जा सबसे कम होती है
23. हम आकाश का वर्णन करते हैं पृथ्वी का वर्णन करते हैं जलाशयों का वर्णन करते हैं पर कीचड़ का वर्णन भी किसी ने किया है

24. फिर जब कीचड़ ज़्यादा सूखकर ज़मीन ठोस हो जाए तब गाय बैल पाड़े भैंस भेड़ बकरे इत्यादि के पदचिह्न उस पर अंकित होते हैं उसकी शोभा और ही है

25. वे कहेंगे कि आप वासुदेव की पूजा करते हैं इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते हीरे का भारी मूल्य देते हैं किंतु कोयले या पत्थर का नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं किंतु उसकी मातुश्री को गले में नहीं बाँधते

26. पाश्चात्य देशों में धनी लोगों की गरीब मज़दूरों की झोंपड़ी का मज़ाक उड़ाती हुई अट्टालिकाएँ आकाश से बातें करती हैं गरीबों की कमाई ही से वे मोटे पड़ते हैं और उसी के बल से वे सदा इस बात का प्रयत्न करते हैं कि गरीब सदा चूसे जाते रहें

27. हमारे देश में इस समय धनपतियों का इतना ज़ोर नहीं है यहाँ धर्म के नाम पर कुछ इने गिने आदमी अपने हीन स्वार्थों की सिद्धि के लिए, करोड़ों आदमियों की शक्ति का दुरुपयोग किया करते हैं

28. धर्म और ईमान मन का सौदा हो ईश्वर और आत्मा के बीच का संबंध हो आत्मा को शुद्ध करने और ऊँचे उठाने का साधन हो

29. परंतु उनकी बात के उड़ने से पहले प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है कि वह भलीभाँति समझ ले कि महात्माजी के धर्म का स्वरूप क्या है

30. वह अपने पवित्र नाम पर अपवित्र काम करने वालों से यही कहना पसंद करेगा मुझे मानो या न मानो तुम्हारे मानने से ही मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा दया करके मनुष्यत्व को मानो पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो

31. मित्रों के बीच विनोद में अपने को गांधीजी का हम्माल कहने में और कभी कभी अपना परिचय उनके पीर बावर्ची भिश्ती खर के रूप में देने में वे गौरव का अनुभव किया करते थे

32. यंग इंडिया के पीछे पीछे नवजीवन भी गांधी जी के पास आया और दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकलने लगे

33. चित्रांगदा कच देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित विदाई का अभिशाप शीर्षक नाटिका शरद बाबू की कहानियाँ आदि अनुवाद उस समय की उनकी साहित्यिक गतिविधियों की देन है

34. बड़े बड़े देशी विदेशी राजपुरुष राजनीतिज्ञ देश विदेश के अग्रगण्य समाचार पत्रों के प्रतिनिधि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के संचालक पादरी ग्रंथकार आदि गांधी जी से मिलने के लिए आते थे

35. जाते आते पूरे 11 मील चलते थे रोज़ रोज़ का यह सिलसिला लंबे समय तक चला कुल मिलाकर इसका जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा उनकी अकाल मृत्यु के कारणों में वह एक कारण माना जा सकता है

8. निम्नलिखित में विराम-चिह्न लगाइए :

1. रमेश ने सोहन को पुकारा सोहन ओ सोहन पर सोहन ने कोई ध्यान न दिया वह सोचता सोचता राम श्यामू और मोहन के खेतों के पार निकल गया
2. जो व्यक्ति बुद्धिमानी की बात नहीं करते सहानुभूति के गुणों से रहित हैं हमें कर्तव्य का बोध भी नहीं कराते ऐसे मित्रों का न होना ही भला है
3. सभी त्योहार होली दीवाली ईद क्रिसमस मिलकर मनाओ
4. मैंने फिर संक्षेप में निवेदन किया देवी क्या आज्ञा है देवी ने क्षीण कंठ से कहा चलो
5. अरे मूर्ख तू समझता क्यों नहीं राजा ने क्रोध से कहा यह हमारे मान अपमान का प्रश्न है अत: सोच समझकर बोल
6. मैं तो ठहर गया बोल तू कब ठहरेगा गौतम ने कहा
7. हैं हमारी सेना हार गई राजा ने आश्चर्य से कहा जी हाँ यह सच है मंत्री ने विनीत भाव से उत्तर दिया
8. वह सुशील मिलनसार योग्य और सुंदर है किंतु थोड़ा सनकी है

9. महाराज ने कहा इन भोले भाले बच्चों को छोड़ दो इन्हें भरपेट बेर खिलाओ यह बेचारे इन्हीं के लिए तो ढेले मार रहे थे
10. (क) कुछ बातें सुनी सुनाई होती हैं और कुछ मनगढ़ंत और कुछ आपबीती (ख) जो पत्र आज आया है कहाँ है
11. ऐसे व्यक्ति समाज में बहुत मिल जाएँगे जो शराब गाँजा अफीम चरस आदि के बिना नहीं रह सकते
12. सभी नारे लगाने लगे महात्मा गांधी की जय
13. नेता जी ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा
14. स्वतंत्र भारत का संपूर्ण उत्तरदायित्व आज युवकों पर है क्योंकि आज जो युवक हैं वे ही कल भारत के नागरिक होंगे
15. भगवान सेबका भला करे जो दे उसका जो न दे उसका भी
16. मुहाने पर खड़ा कोई पुकार रहा है अजी उधर कहाँ जा रहे हैं आप लोग चंडी मंदिर तो इधर है
17. वह फिर बोले कुछ लोग जूते में डाल लेते हैं जूते उतारकर झाड़े मगर टिकट नदारद
18. हाय मेरे भाग्य में यही था मैं कमल रोशन तथा नरेंद्र तीनों में से एक को भी न पढ़ा पाया पर क्यों क्या यही ईश्वर का न्याय है
19. वे बोले सुन तू सदा सच बोल तुझे कोई कमी नहीं रहेगी क्या भगवान का नाम लेती है यदि नहीं तो लिया कर
20. अरे कमला कब गई जब मैं मिला था वह कुछ नहीं बोली
21. अच्छा तुम आ गए मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था क्योंकि तुम मेरे साथ चलोगे
22. तब श्री व्यास जी ने कहा नारद जी तुम छोटे से थे तुम्हारी माँ मर गई तुम वहाँ पहुँच कर क्या रोए थे नारद जी बोले नहीं छोटा ज़रूर था पर सत्संग का प्रभाव था इसलिए रोया नहीं
23. तुम फिर घूमने चल दिए पढ़ने की भी सूचता है कि नहीं जब देखो मित्रों के साथ घूमते फिरते हो खाते पीते हो और इधर उधर की हाँकते हो क्या यही है तुम्हारी ज़िंदगी का लक्ष्य बेटे अभी भी समय है होश में आओ वरना पीछे पछताना पड़ेगा
24. जीवन कर्म क्या है सोचता हूँ तो एक ही उत्तर मिलता है युद्ध जीवन युद्ध है युद्ध से घबराना जीवन से बचना है पर कैसा युद्ध
25. नारद ने कहा कैसे भेजता चपरासी सो रहा है कल भेजूँगा
26. छी: चोरी करते हो क्या तुम्हारे माता पिता और भाई ने यही सिखाया है
27. हाय बेचारा मर गया यदि वह अस्पताल जाता तो क्या बच न जाता
28. रमेश ने उत्तेजित होकर कहा मैं कुछ चाहता हूँ आप कुछ और मैं चाहता हूँ प्रार्थना करना आप चाहते हैं बाजा बजाना दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकती
29. भारतवासी सोचने लगे अरे हमारी संस्कृति में ऐसी चीज़ें भी भरी पड़ी हैं क्या

9. निम्नलिखित में उचित स्थानों पर विराम-चिह्न लगाइए :

1. (क) लहरें आएँगी और जाएँगी ये लहरें विद्रोह क्यों नहीं कर देतीं इनसे अच्छी तो नदियाँ हैं
   (ख) पर वह सागर जहाँ है वहीं है उसकी अपनी नियति है बेचारा सागर
   (ग) वहाँ अनेक प्रकार की बेलें फैली हैं सेम लोबिया केंवाच लौकी आदि की
2. (क) माँ ने पूछा ये आम अमरूद और जामुन कहाँ से लाया
   (ख) लड़का बोला ये कबूतर खरगोश और बंदर किसके हैं
3. देखो कौन आया है उसे कुर्सी सोफा या पलंग पर बिठाओ
4. आचार्य ने पूछा कि कौन सी कक्षा में रमेश नरेश और सुरेश को चोट आई है सुनकर वह चुपचाप मुस्कराता रहा उसने कोई उत्तर न दिया

5. हिमालय जैसे अटल अडिग भारतवासियों का मस्तक किसी के सामने झुकने वाला नहीं है कोई ऐसा उनसे लोहा लेने वाला हो तो बताओ
6. हमारे व्यवहार से ही जब कोई मित्र और शत्रु हो सकता है क्यों न अपने सद्व्यवहार से अपने पराए सभी को हम मित्र बनाएँ सही कहा न
7. बच्चो शोर क्यों मचा रहे हो कविता कहानी या नाटक याद करो
8. हाय मेरे भाग्य में यही लिखा था मैं कमल को नहीं पढ़ा पाया पर क्यों
9. महात्मा गांधी ने गाय करुणा की कविता है ऐसा क्यों कहा यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है।
10. अरे मोहन तुम आ गए सौरभ अमन और भानु को कहाँ छोड़ आए
11. अरे कमल यहाँ क्यों खड़े हो घर जाकर खाना खाओ पढ़ाई करो और सो जाओ
12. वाह तुमने तो बाज़ी मार ली क्या इसी दिन के इंतज़ार में मकान दुकान और बैठक छोड़ बैठे थे
13. सुनो वह क्या हो रहा है अपनी पुस्तकों वस्त्रों और मकान की रक्षा करो
14. अरे मोहन यहाँ कब आए कमरे में बैठो नाश्ता करो और थोड़ा विश्राम कर लो
15. अच्छा यह वही व्यक्ति है जो तुमसे पूछ रहा था कि मेरी पत्नी मेरे बच्चे तथा मेरे घर का सामान कहाँ है
16. वाह बेटा तुमने तो कमाल कर दिया एक हाथ में ही कलम तलवार ले आए
17. सरोज ने कहा कैसे भेजती नौकरानी सो रही है कल भेजूँगी
18. अजी वाह आपने खूब कहा मैं मोहन और रमेश क्या लड़ेंगे
19. (क) आरिफ़ ने कहा सुनो मुझे तो गुड़िया ही चाहिए
    (ख) नेता जी ने कहा बहनो और भाइयो हम आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहेंगे
    (ग) पिता ने कहा बेटे आज तुम्हें मेरे साथ पुस्तक मेला देखने जाना है तैयार हो जाओ
20. किसी ने कहा है जो दूसरों की सहायता करता है उसकी सहायता ईश्वर करता है
21. (क) दादाजी ने समझाया नहीं बेटे पूर्व हो या पश्चिम ईश्वर तो सर्वत्र रहता है
    (ख) मित्र ने कहा देखो यार काली सी मूर्ति इधर ही आ रही है
    (ग) चंद्रकांत ने कहा नहीं यह कैसे हो सकता है
22. (क) कवि ने कहा प्रिय मित्रो मेरी कविता सुनो समझो और आनंद लो
    (ख) अशोक कौन सा शो देखने चलोगे दोपहर का शाम का या रात का
    (ग) स्नेहा क्या तुम बता सकती हो कि कफ़न पूस की रात और नमक का दारोगा कहानियाँ किसने लिखीं
23. अध्यापक ने छात्र से कहा बहुत प्रसन्नता की बात है कि तुम परीक्षा में पास हो गए हो
24. अरे तुम यहीं हो तुम्हारी तो घर पर प्रतीक्षा हो रही है जल्दी पहुँचो शिक्षक ने छात्र से कहा
25. सच्चा मित्र वही है जो संकट के समय मित्र की मदद करता है ये महान व्यक्तियों के विचार हैं
26. आचार्य शुक्ल ने लिखा है श्रद्धा हमारी वह मनोवृत्ति है जो निष्ठा भक्ति विश्वास तीनों से युक्त होकर किसी पूज्य या बड़े की ओर उन्मुख होती है

❑❑

अभ्यास प्रश्न-पत्र

खंड–2

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

1. **निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए :** 2
अलौकिक, वैज्ञानिक

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :**
 (क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1
 चन्दन, चम्पा
 (ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1
 धुआ, काच
 (ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1
 मजदूर, जोर

3. **(क) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त उपसर्गों को अलग-अलग करके लिखिए :** 1
 विख्यात, संक्रमण
 (ख) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग-अलग करके लिखिए : 1
 व्यंजित, फड़फड़ाती
 (ग) दिए गए उपसर्ग और प्रत्यय से एक-एक शब्द बनाइए : 1
 प्रति (उपसर्ग), ता (प्रत्यय)

4. **(क) संधि-विच्छेद कीजिए :** 2
 नवागत, सदैव, सत्याग्रह, विद्यालय
 (ख) संधि कीजिए : 2
 एक + एक, उत् + लाल, आ + छादन, सम् + मान

5. **निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग कीजिए :** 3
श्रद्धा भक्ति स्नेह इनकी चरम व्यंजना के लिए धूल से बढ़कर और कौन साधन है यहाँ तक कि घृणा असूया आदि के लिए भी धूल चाटने धूल झाड़ने आदि की क्रियाएँ प्रचलित हैं

अभ्यास प्रश्न-पत्र–2

1. **निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए :** 2
विद्यालय, धर्मात्मा

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :**
 (क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1
 सम्बन्ध, वृताना

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1

मास, घुघराला

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1

फर्ज, जिम्मेदारी

3. (क) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त उपसर्गों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

निर्मूल, दुरुपयोग

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

क्रोधपूर्ण, लौटकर

(ग) दिए गए उपसर्ग और प्रत्यय से एक-एक शब्द बनाइए : 1

अनु (उपसर्ग), इक (प्रत्यय)

4. (क) संधि-विच्छेद कीजिए : 2

मतानुसार, अभ्यागत, सदैव, राजेंद्र

(ख) संधि कीजिए : 2

नि + ऊन, मही + ईश, निः + कपट, सम् + यम

5. निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग कीजिए : 3

मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ इसीलिए इस दल में आई हूँ शारीरिक रूप से मैं ठीक हूँ

अभ्यास प्रश्न-पत्र–3

1. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए : 2

मीनाक्षी, कृतज्ञतापूर्वक

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1

सन्दिग्ध, दन्ड

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1

आञ्चल, आसू

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1

फर्ज, जाफरानी

3. (क) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त उपसर्गों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

निर्यात, संसर्ग

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

लुभावना, चमकीला

(ग) दिए गए उपसर्ग और प्रत्यय से एक-एक शब्द बनाइए : 1

प्र (उपसर्ग), ई (प्रत्यय)

4. (क) संधि-विच्छेद कीजिए : 2

सर्वोदय, नवागत, भारतेंदु, वनौषध

(ख) संधि कीजिए : 2

देव + उत्सव, परम + अर्थ, परि + मान, दुः + गुण

5. निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग कीजिए : 3

उन्होंने मुझे गले से लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाया दीदी तुमने अच्छी चढ़ाई की मैं बहुत प्रसन्न हूँ

अभ्यास प्रश्न-पत्र–4

1. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए : 2

युधिष्ठिर, प्रोत्साहित

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1

अम्बर, डण्डा

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1

आगन, फदा

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1

फन, राज

3. (क) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त उपसर्गों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

अनुसार, अवमानना

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

वास्तविक, बुढ़िया

(ग) दिए गए उपसर्ग और प्रत्यय से एक-एक शब्द बनाइए : 1

वि (उपसर्ग), दारी (प्रत्यय)

4. (क) संधि-विच्छेद कीजिए : 2

एकैक, स्वेच्छा, दिवाकर, पर्यावरण

(ख) संधि कीजिए: 2

सम् + लग्न, दुः + बल, मातृ + इच्छा, अति + अधिक

5. निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग कीजिए : 3

किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं जल्दी धुल जाएँगे मैंने कहा मन ही मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है

अभ्यास प्रश्न-पत्र–5

1. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए : 2

प्रसिद्ध, परिच्छेद, अप्रत्याशित

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1

पञ्जाब, गुम्बद

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1

बाध, सूघनी

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1

जरा, फौरन

3. (क) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त उपसर्गों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

प्रत्येक, संचालन

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों व प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग-अलग करके लिखिए : 1

कबीलाई, समझदारी

(ग) दिए गए उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग से एक-एक शब्द बनाइए : 1

अभि (उपसर्ग), दार (प्रत्यय)

4. (क) संधि कीजिए : 2

पुस्तक + आलय, महा + उत्सव, गति + अवरोध, अनु + इति

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए : 2

मतानुसार, सप्तर्षि, संबंध, दुर्जन

5. निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग कीजिए : 3

यही जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है कुछ और क्यों नहीं

अभ्यास प्रश्न-पत्र–6

1. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए : 2

प्रतिध्वनि, पर्याप्त

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1

गन्दा, सम्बन्ध

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1

सांस, चांद

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1

अंदाजा, बर्फ

3. **(क) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग व प्रत्यय छाँटकर लिखिए :** 1

अनुभव, सामाजिक

(ख) निम्नलिखित उपसर्ग व प्रत्यय से दो-दो शब्द बनाइए : 2

प्रति (उपसर्ग), त्व (प्रत्यय)

4. **(क) संधि-विच्छेद कीजिए :** 2

अत्यानंद, स्वागत, चिकित्सालय, परोपकार

(ख) संधि कीजिए : 2

इति + आदि, दिक् + गज, मनः + रथ, वृक्ष + छाया

5. **निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग कीजिए :** 3

उस आदमी ने कहा बंदूक की कोई ज़रूरत नहीं है साहब आप थोड़ी देर रुकिए मैं अभी आया

अभ्यास प्रश्न-पत्र–7

1. **वर्णों को जोड़कर शब्द बनाइए :** 2

क् + आ + म् + अ + न् + आ

आ + म् + अ

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :**

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1

खन्डों, खुम्भु

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1

गाँव, माँ

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1

साफ, तरफ

3. **(क) निम्नलिखित उपसर्ग व प्रत्यय से बने दो-दो शब्द लिखिए :** 2

उप (उपसर्ग), इत (प्रत्यय)

(ख) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग व प्रत्यय अलग कीजिए : 1

अधिनायक, घबराहट

4. **(क) संधि कीजिए :** 2

परम + औषध, रवि + ईश, तपः + बल, सम् + मान

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए : 2

भाग्योदय, तथैव, नायिका, एकैक

5. **निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न लगाइए :** 3

क्या क्या जनरल साहब के भाई साहब पधार चुके हैं उसने पूछा

अभ्यास प्रश्न-पत्र–8

1. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए: 2
कृष्ण, विश्राम

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए: 1
गन्ध, पन्द्रह

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए: 1
मांसपेशियां, चांदनी

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए: 1
अंदाजा, सब्जी

3. (क) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग तथा प्रत्यय अलग कीजिए : 1
अनुराग, नागरिक

(ख) निम्नलिखित 'उपसर्ग' व 'प्रत्यय' के योग से दो-दो शब्द बनाइए : 2
'प्र' (उपसर्ग), 'ता' (प्रत्यय)

4. (क) संधि-विच्छेद कीजिए : 2
परमार्थ, भानूदय, अत्यधिक, सोमेश

(ख) संधि कीजिए : 2
सम् + यम, निः + ठुर, उत् + नति, महा + उदय

5. प्रश्नवाचक तथा विस्मयसूचक चिह्नों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य लिखिए। 3

अभ्यास प्रश्न-पत्र–9

1. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए: 2
ऐतिहासिक, विज्ञापन

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए: 1
बिन्दु, सस्था

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए: 1
आंख, पांचवां

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए: 1
चीज, साफ तौर

3. (क) 'अधार्मिक' तथा 'प्रमाणित' शब्दों से उपसर्ग व प्रत्यय अलग कीजिए। 1

(ख) 'अति' (उपसर्ग) तथा 'इया' (प्रत्यय) के प्रयोग से दो-दो शब्द बनाइए। 2

4. (क) संधि कीजिए : 2

श्रद्धा + आलु, प्रश्न + उत्तर, परम + ओज, अति + अंत

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए : 2

यद्यपि, संख्यागमन, वागीश, मनोरंजक

5. निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न लगाइए : 3

वाह पुजारी जी बड़ा सुंदर स्थान है एकांत में प्रभु की साधना का आनंद ही अलग है

अभ्यास प्रश्न-पत्र—10

1. वर्णों को जोड़कर शब्द बनाइए : 2

र् + आ + म् + अ + ल + ई + ल् + आ

प् + र् + अ् + स् + त् + उ + त् + इ

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए : 1

नारगी, सन्गीत

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त स्थानों पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए : 1

बांधना, पहुचना

(ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ता का प्रयोग करके शब्द पुनः लिखिए : 1

नमाज, रोज

3. (क) 'अधि' (उपसर्ग) तथा 'कर' (प्रत्यय) से दो-दो शब्द बनाइए। 2

(ख) 'निरअपराध' तथा 'झगड़ालू' शब्द से क्रमशः उपसर्ग तथा प्रत्यय अलग कीजिए। 1

4. (क) संधि-विच्छेद कीजिए : 2

स्वागत, रजनीश, सूर्योदय, अत्यावश्यक

(ख) संधि कीजिए : 2

नर + ईश, वयः + वृद्ध, सम् + ध्या, वाक + ईश

5. निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिह्न लगाइए : 3

उसने कहा यह तो ना इनसाफ़ी है

❑❑

खंड-3

रचनात्मक-बोध (IX–X)

अंक विभाजन

निर्धारित अंक : 10

1. श्रवण (सुनना) (150 शब्द)
2. वाचन (बोलना)

1 मौखिक-अभिव्यक्ति (Oral Expression)

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, भाषा संप्रेषण का माध्यम है। इसके दो रूप हैं–मौखिक और लिखित। समाज में किसी भी भाषा के मौखिक रूप का महत्त्व सर्वाधिक होता है। सामान्यत: भाव एवं विचार-संप्रेषण के लिए मनुष्य भाषा के मौखिक रूप का ही प्रयोग करते हैं।

बच्चा जब सर्वप्रथम भाषा सीखता है तो वह उसके मौखिक रूप का ही प्रयोग करता है, उसे सिखाया भी मौखिक रूप से ही जाता है, पर यह भाषा का बहुत ही साधारण रूप होता है। भाषा का विशेष ज्ञान या भाषा का कौशल के रूप में विकास, विशेष प्रयास ही दे सकता है। भाषा के अध्ययन का उद्देश्य उसके चार कौशल–श्रवण, पठन, वाचन और लेखन ही होता है, जिनमें से वाचन और श्रवण का संबंध भाषा के मौखिक रूप से है। भाषा सीखते समय इन दो कौशलों पर भी विशेष ध्यान देना अपेक्षित है।

भाषा की मौखिक-अभिव्यक्ति के विभिन्न प्रकार होते हैं–कुछ औपचारिक और कुछ अनौपचारिक। इनमें से कुछ हैं–वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, कविता पाठ, कथा-वाचन आदि।

इन कौशलों का विकास करने के लिए अभ्यास अपेक्षित है। अभ्यास किया जाए पर कैसे? आरंभ में लिखकर और उसे मन में बिठाकर, फिर कुछ बिंदुओं को याद करके और उनके आधार पर बोलकर। अभ्यास करने के लिए कुछ सामान्य निर्देशों को ध्यान में रखा जा सकता है।

यह विशेष ध्यान देने योग्य है कि ये निर्देश ही हो सकते हैं, निश्चित नियम नहीं। इनका पालन करके अपनी अभिव्यक्ति को अधिक सुंदर एवं संप्रेषणीय बनाया जा सकता है, किंतु शब्दों को बिल्कुल वैसा ही सीखकर उनका ज्यों-का-त्यों प्रयोग करना अपेक्षित नहीं। वस्तुत: ऐसा प्रयास करने पर भी यह संभव नहीं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग पहचान होती है, अपना निजी व्यक्तित्व और उसी के अनुरूप अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति होती है। इस विशिष्टता को क्षति नहीं पहुँचनी चाहिए, क्योंकि यही एक व्यक्ति को दूसरे से भिन्न दिखाती है। यह न होने पर सभी रिकार्ड की तरह एक जैसा बोलते दिखाई देंगे। सामान्य बातचीत में भी जैसे व्यक्ति का व्यक्तित्व झलकता है, वैसे ही मौखिक-अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों में व्यक्तित्व की विशिष्टता झलकनी चाहिए।

किसी भी भाषा में अभिव्यक्ति के लिए यह अपेक्षित होता है कि उसी भाषा में सोचा भी जाए। आज विभिन्न कारणों से हिंदी भाषा के विद्यार्थियों की यह विडंबना है कि वे सोचते तो हैं अंग्रेज़ी में और लिखना बोलना चाहते हैं हिंदी में। परिणाम यह होता है कि या तो उन्हें सही शब्द नहीं मिल पाते या फिर वे अंग्रेज़ी के शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं, जिससे हिंदी भाषा के स्वरूप को क्षति पहुँचती है। अभ्यास से ही इसे दूर किया जा सकता है, जिसके लिए सरल से कठिन की ओर जाना चाहिए। पहले यह देखें कि आप क्या बोलते हैं, फिर यह कि उसमें क्या परिवर्तन किया जा सकता है और अच्छी हिंदी में कैसे बोला जा सकता है। उदाहरणत:

1. **कल ये lesson read करके आना है।**

   कल यह पाठ पढ़कर आना है।

2. **मेरे father आए हैं।**

   मेरे पापा आए हैं।

   मेरे पिता जी आए हैं।

1. श्रवण (सुनना)

हम सब निरंतर ध्वनियाँ सुनते रहते हैं, किंतु विशेष रूप से सुनकर अर्थग्रहण करने के लिए अभ्यास की अपेक्षा होती है। वाचन संबंधी सभी गतिविधियों को करते समय श्रवण का अभ्यास भी किया जा सकता है। इसके लिए यह अपेक्षित होता है कि श्रोता ध्यानपूर्वक सुने, सुनकर अर्थग्रहण करे और फिर किसी भी प्रकार से अपने उस ज्ञान का परिचय दे सके। इसके लिए छात्रों को विभिन्न प्रकार से अभ्यास कराया जा सकता है :

1. (क) सुबह की प्रार्थना सभा में दिए गए किसी भाषण से संबंधित प्रश्न।
   (ख) प्रार्थना सभा में प्रस्तुत विचार क्या था?
   (ग) क्या विशेष सूचनाएँ दी गई थीं?
2. अध्यापिका ने कक्षा में क्या संदेश भिजवाया था?
3. कक्षा में पिछले दिन क्या निर्देश दिए गए थे?
4. कोई कहानी या भाषण सुनकर छात्र उसे समझ पाएँ और उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाएँ।

यह ध्यान देने योग्य है कि ये अंश छात्रों के स्तर के होने चाहिए, उनकी क्षमता के अनुरूप कठिनाई का स्तर होना चाहिए और ऐसे विषयों का चुनाव किया जाना चाहिए, जो छात्रों के जीवन से सीधे जुड़ते हों।

एक ही कक्षा में होते हुए भी छात्रों में जो विभिन्नताएँ होती हैं, उनका भी ध्यान रखना चाहिए।

परीक्षक के द्वारा पढ़े गए वार्तालाप, भाषण या कविता को ध्यान से सुनें और दिए गए प्रश्नों के उचित शीर्षक दें। परीक्षक के द्वारा किसी भी पंक्ति को दोहराया नहीं जाएगा। आवश्यकता है पूरा ध्यान केंद्रित कर परीक्षक को सुनकर प्रश्नों के उत्तर देने की।

वार्तालाप को सुनकर उससे संबंधित दिए गए प्रश्नों के उत्तर देना :

अलीबेग : सरदार सच फरमाते हैं।

जफ़र : और फिर, दो दिनों के बाद इतना अच्छा खाना नसीब हुआ है। भूख-प्यास से बुरा हाल है। अगर इस तरह मरना ही है, तो मिठाई खाकर क्यों न मरें!

अलीबेग : सरदार ने क्या बात कही है! मिठाई खाकर क्यों न मरें, वाह... वाह...।

मुबारक : सच बात है सरदार! भूख से तो मरना ही है तो यह चीज़ फिर क्यों छोड़ी जाए!

जफ़र : इसीलिए मैं खा रहा हूँ। (खाते हुए) वाह, क्या कहना है! यहाँ के लोग मिठाइयाँ बनाना भी खूब जानते हैं।

अलीबेग : सरदार, मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि वे लोग हम लोगों के लिए ही ये मिठाइयाँ बनाकर छोड़ गए हैं।

मुबारक : ये कैसे?

अलीबेग : ये ऐसे कि उन्होंने यह समझा होगा कि ये मिठाइयाँ खाकर हम लोगों का गुस्सा कम हो जाएगा। लूट-मार कम करेंगे।

जफ़र : (हँसते हुए) ह ह ह ह ह ह! हम लोगों का गुस्सा कम हो जाएगा! लूट-मार कम करेंगे! (सब लोगों की सम्मिलित हँसी)

नेपथ्य में : (तीव्र स्वर में) चुप रहो, कमबख्तो!

(तैमूरलंग का प्रवेश। वह लँगड़ाते हुए आगे बढ़ता है। उसे देखते ही सब चौंक पड़ते हैं। मिठाइयाँ ज़मीन पर फेंककर फ़ौजी ढंग से तनकर खड़े हो जाते हैं। सन्नाटा छा जाता है। तैमूरलंग बारी-बारी से तीनों को घूरता हुआ आगे बढ़ता है)

तैमूर : (तीव्र स्वर में) बदबख्तो! इसी तरह तुम हिंदुस्तान की दौलत गाजी तैमूर के खजाने में भरोगे? जब तुम्हें कत्ल करना चाहिए, तब तुम आराम से तख्त पर बैठते हो। जब तुम्हें जवाहरात ढूँढ़ने चाहिए, तब तुम

नाश्ता करते हो और जब तुम्हें धावा बोलना चाहिए, तब तुम लोग मिलकर कहकहे लगा रहे हो! जवाब दो। (कोई कुछ नहीं बोलता, निस्तब्धता)

तैमूर : (फिर तीव्र स्वर में) मैंने अफगानिस्तान के बाद हिंदुस्तान का रुख इसलिए किया था कि मेरे सिपाही दौलत लूटने के बदले आराम से खाना ढूँढ़ते फिरें! मैं बिना जतलाए देखना चाहता था कि तुम किस तरह मेरे हुक्म को अंजाम दे रहे हो। इसीलिए मैंने अपने सब सिपाहियों को बाहर छोड़ दिया है। मैं देखता हूँ कि तुमने मेरे जिहाद को चटोरेपन का तमाशा बना दिया है। तुम यहाँ मौज से खाना खाओ और गाजी तैमूर तीन दिनों से भूखा रहे और रात-दिन हुक्म देता रहे! मैंने तुम्हें क्या हुक्म दिया था?

प्रश्न 1. जफ़र सामने रखी मिठाई क्यों नहीं छोड़ना चाहता था?

उत्तर– दो दिनों से उन्हें खाने को कुछ भी नहीं मिला था। अतः जफ़र सामने रखी मिठाई को छोड़ना नहीं चाहता था।

प्रश्न 2. अलीबेग जफ़र को क्या कहकर संबोधित करता है?

उत्तर– अलीबेग जफ़र को सरदार कहकर संबोधित करता है।

प्रश्न 3. अलीबेग सामने रखी मिठाई से संबंधित क्या सोच रखता है?

उत्तर– मिठाइयाँ यहाँ इसलिए रखी गई हैं ताकि हम इन्हें खाए, हमारा गुस्सा कम हो और हम लूट-मार कम करें।

प्रश्न 4. तैमूरलंग क्या कहकर भीतर प्रवेश करता है?

उत्तर– चुप रहो, कमबख्तो!

प्रश्न 5. तैमूर के आते ही सभी सिपाहियों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर– चारों ओर सन्नाटा छा गया।

प्रश्न 6. तैमूर सभी सिपाहियों से क्यों नाराज़ है?

उत्तर– सभी उसके हुक्म को अंजाम न देकर सिर्फ खाने के पीछे पड़े हैं।

प्रश्न 7. तैमूर ने अफगानिस्तान के बाद कहाँ का रुख किया?

उत्तर– तैमूर ने अफगानिस्तान के बाद हिंदुस्तान का रुख किया।

प्रश्न 8. तैमूर बिना सूचना के क्यों आया था?

उत्तर– तैमूर देखना चाहता था कि सभी उसके हुक्म को किस प्रकार अंजाम दे रहे हैं।

कविता पाठ सुनना और उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना :

मैंने पूछा शहर में एक ग्रामीण से...
आखिर क्यूँ जाते हो शहरों की ओर,
प्रतिउत्तर मिलता है...
गाँवों में न शिक्षा है, न काम है,
प्रकृति भी नहीं देती साथ है,
पेट भरने की आशा व
नए समय के नए सपनों को
सँजोने के लिए गाँव के लोग...
अगर गाँव यूँ ही खाली होते रहे
तो हमारी सभ्यता व संस्कृति
लुप्त हो जाएगी,
ढहती दीवारों की खिड़कियों से
बह जाएगी मानवता;
कौन जोड़ेगा लोकगीत?

कौन करेगा, त्योहारों का स्वागत?
खेतों की रौनक भी तो न रहेगी।
सुनो, मेरे गाँव के गोपालो!
गाँव को खाली कर
न जाओ शहरों की ओर।

प्रश्न 1. कवि ने किससे प्रश्न किया?

उत्तर– ग्रामीण से।

प्रश्न 2. कवि ने क्या प्रश्न किया?

उत्तर– आखिर क्यों जाते हो शहरों की ओर।

प्रश्न 3. गाँव की आज स्थिति क्या है?

उत्तर– गाँव में शिक्षा और काम दोनों ही नहीं हैं। प्रकृति भी साथ नहीं देती है कि खेती कर ली जाए।

प्रश्न 4. गाँवों के खाली होने पर क्या होगा?

उत्तर– हमारी सभ्यता व संस्कृति लुप्त हो जाएगी। मानवता भी समाप्त हो जाएगी।

प्रश्न 5. हमारे गाँवों की क्या विशेषता है?

उत्तर– गाँवों में त्योहार मनाए जाते हैं तथा खेतों में रौनक रहती है।

प्रश्न 6. कवि गाँव के लोगों से क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर– कवि गाँवों के लोगों से प्रार्थना कर रहा है कि वे शहर की ओर न जाएँ।

प्रश्न 7. लोग गाँव से शहरों की ओर क्यों जाते हैं?

उत्तर– नए समय के नए सपनों को संजोने के लिए लोग गाँवों से शहरों की ओर जाते हैं।

लेख सुनना तथा उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना :

जहाज़ पर मेरी पोशाक लोगों के कौतूहल का केंद्र बनी रही। एक पारसी दंपत्ति और एक अंग्रेज़ सज्जन मेरी ओर विशेष आकर्षित हुए। गांधी जी की खादी और शाकाहार के संबंध में बातचीत करने में समय आसानी से कट गया।

रास्ते में मुझे ज्ञात हुआ कि जब तक जहाज़ स्वेज़ नहर से गुजरता है, थॉमस-कुक कंपनी की ओर से ऐसा प्रबंध रहता है कि जो यात्री चाहे वह मोटरगाड़ी द्वारा जाकर कैरो नगर देखकर आ सकता है। मैंने यह देख आना अच्छा समझा। मेरे साथ कुछ और यात्रियों ने भी वहाँ जाने का प्रबंध कर लिया था। हम लोग सवेरे पाँच बजे जहाज़ से उतरकर मोटरगाड़ी पर कैरो चले गए। कैरो पहुँचने पर मुँह-हाथ धोने और नाश्ता करने के लिए हमें एक होटल में ले जाया गया। फिर हम कैरो का अजायबघर देखने गए। वहाँ पिरामिडों की खुदाई से निकली वस्तुएँ अब तक सुरक्षित रखी गई हैं। प्राचीन मिस्र के कितने ही बड़े नामी और प्रतापी बादशाहों के ममी अर्थात् शव जो पिरामिडों से निकले हैं, वहाँ सुरक्षित रखे गए हैं। अब देखने में वे काले पड़ गए हैं, पर उनके चेहरे और हाथ-पैर ज्यों के त्यों हैं। वे जिस कपड़े में लपेटकर गाड़े हुए थे, वह कपड़ा भी अभी तक वैसा ही लिपटा हुआ है। वह कपड़ा बहुत ही बारीक हुआ करता था। कहते हैं, उन कपड़ों का निर्यात भारतवर्ष से ही हुआ करता था। उन दिनों वहाँ के निवासियों का विश्वास था कि आराम के सभी सामान यदि निर्जीव शरीर के साथ गाड़ दिए जाएँ, तो परलोक में भी उन सामानों से वह आराम पा सकता है। इसी विश्वास के अनुसार, पिरामिडों के अंदर, शव के साथ सभी आवश्यक वस्तुएँ गाड़ी जाती थीं। पहनने के कपड़े और गहने, बैठने के लिए चौकी, खाने के लिए अन्न, श्रृंगार का सामान, सवारी के लिए रथ और नाव तक रखे जाते थे। उन्हें देखने से ज्ञात होता है कि उस समय भी लोग सोने का व्यवहार जानते थे।

सुना है कि इसी प्रकार की खुदाई में मोहनजोदड़ो (सिंध) में जो गेहूँ निकला है, वह बो देने पर उग गया। संग्रहालय की वस्तुओं और विशेषकर प्रतापी राजाओं के शव देखकर यह मालूम होने लगता है कि हम जो कुछ अपने बड़प्पन के मद में करते हैं, वह सब कितना तुच्छ और अस्थायी है।

प्रश्न 1. जहाज़ पर क्या वस्तु कौतूहल का केंद्र-बिंदु बनी रही?

उत्तर– लेखक की पोशाक जहाज़ पर कौतूहल का केंद्र-बिंदु बनी रही।

प्रश्न 2. सफर का समय आसानी से कैसे कट गया?

उत्तर– खादी और शाकाहार के संबंध में बातचीत करते हुए सफर का समय आसानी से कट गया।

प्रश्न 3. जहाज़ पर थॉमस-कुक कंपनी के द्वारा क्या प्रबंध किया गया था?

उत्तर– मोटरगाड़ी द्वारा कैरो नगर देखकर आने का प्रबंध किया गया था।

प्रश्न 4. लेखक कैरो में क्या देखने गए?

उत्तर– अजायबघर।

प्रश्न 5. ममी पर लिपटा कपड़ा कैसा हुआ करता था?

उत्तर– बहुत ही बारीक।

प्रश्न 6. किस विश्वास के साथ पिरामिडों के अंदर शव के साथ आवश्यक वस्तुएँ भी गाड़ी जाती थीं?

उत्तर– ऐसी मान्यता थी कि परलोक में भी उनसे आराम पा सकते हैं।

प्रश्न 7. संग्रहालय की वस्तुओं व प्रतापी राजाओं के शव देखकर क्या मालूम होने लगता है?

उत्तर– सब कुछ कितना तुच्छ और अस्थायी है।

प्रश्न 8. खुदाई किस शहर में की गई थी?

उत्तर– मोहनजोदड़ो (सिंध) में।

श्रवण संबंधी मूल्यांकन

श्रवण संबंधी कौशल का मूल्यांकन करते समय परीक्षक को कुछ बिंदु ध्यान में रखने चाहिए :

1. विद्यार्थी सुनकर अर्थग्रहण कर सकें।
2. वॄणत या कथित विषय का मूल्यांकन कर सकें।
3. वॄणत या कथित विषय पर अपनी टिप्पणी दे सकें।
4. अभिव्यक्ति के ढंग को जान सकें।
5. यदि मूल्यांकन लिखित रूप से किया जा रहा है; तो प्रश्न छोटे होने चाहिए; जैसे–एक शब्द में उत्तर, बहुविकल्पी, रिक्त स्थान, सत्य, असत्य आदि।

मूल्यांकन के आधार

मूल्यांकन करते समय परीक्षक कुछ आधार बना सकता है; जैसे :

1. प्रयुक्त शब्दों को समझने की सामान्य योग्यता है, पर सुसंबद्ध आशय को नहीं समझ पाता।
2. छोटे सुसंबद्ध कथनों को समझने की योग्यता है।
3. परिचित संदर्भों में ही समझने की योग्यता रखता है।
4. अपरिचित संदर्भ होने पर भी स्पष्ट रूप से अर्थग्रहण कर पाता है।
5. लघु/दीर्घ कथनों को पर्याप्त शुद्धता से समझ पाता है और उपयुक्त निष्कर्ष निकाल पाता है।
6. कठिन और जटिल कथनों को समझ सकने की योग्यता रखता है।
7. पठित या कथित अंशों में से अपने अनुकूल सामग्री का उचित उपयोग करने की क्षमता रखता है।
8. निर्देशों को वैसे-का-वैसा प्रस्तुत तो कर देता है, पर समझ नहीं पाता।
9. प्रार्थना सभा आदि में कही गई बातों को स्पष्टता से समझ लेता है और अपने ढंग से प्रस्तुत करता है।

2. वाचन (बोलना)

वाचन या बोलना भाषा का वह रूप है–जिसका प्रयोग सर्वाधिक होता है, तो भी हम इसे अनायास नहीं सीख पाते। वाचन के विभिन्न प्रकारों का अभ्यास करना पड़ता है, तभी उनमें दक्षता प्राप्त होती है। मौन वाचन का संबंध जहाँ द्रुतबोधन से है वहाँ सस्वर वाचन के अभ्यास से मौखिक-अभिव्यक्ति की कुशलता विकसित होती है। संवाद और भावात्मक अंश इसके लिए अधिक उपयुक्त होते हैं। पाठ्यपुस्तक या अन्य स्रोतों से गद्यांशों को चुनकर उनका अभ्यास किया जा सकता है।

कथन संबंधी विभिन्न गतिविधियों की चर्चा यहाँ विस्तार से की जा रही है।

मौखिक-अभिव्यक्ति में दक्षता प्राप्त करने के लिए कुछ बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए :

1. मानक एवं शुद्ध भाषा का प्रयोग
2. सही उच्चारण
3. विनीत एवं स्पष्ट भाषा
4. स्थान एवं अवसरानुकूल भाषा का प्रयोग–व्यावहारिकता अधिक
5. विषयानुरूप प्रभावशाली भाषा।

1. भाषण, आशुभाषण, परिचर्चा, वाद-विवाद, मूल्यांकन

(क) भाषण

यह सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना का युग है। भारत एक लोकतंत्रीय देश है। यहाँ अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने और जनमत को अपने पक्ष में करने में भाषण अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विद्यालयी परिवेश में छात्रों को ऐसे अनेक अवसर मिलते हैं, जब वे इस कला का विकास करने में प्रयत्नशील हो सकते हैं।

ये गतिविधियाँ विद्यालयों में प्रायः प्रतियोगिताओं के रूप में आयोजित की जाती हैं। भाषण प्रार्थना सभाओं तथा विभिन्न कार्यक्रमों में भी प्रस्तुत किए जाते हैं। भाषण किसी भी विषय से संबंधित हो सकते हैं; जैसे–पर्यावरण संबंधी, देशभक्ति संबंधी, नैतिक मूल्यों से संबंधित आदि। प्रतियोगिताओं में भाषण देने के लिए एक ही विषय पर सभी वक्ताओं को बोलना होता है या फिर कुछ विषयों में से किसी एक का चुनाव करना होता है। बोलने का समय प्रायः दो से पाँच मिनट का होता है।

भाषण की तैयारी

भाषणकर्ता को विषय से संबंधित तैयारी पहले से ही करके जाना चाहिए, इससे कुछ विशेष लाभ होते हैं :

1. आत्मविश्वास बना रहता है।
2. बीच में रुककर सोचना नहीं पड़ता।
3. भाषण में गति बनी रहती है।
4. क्रम होने के कारण श्रोताओं का आकर्षण बना रहता है।

भाषण की तैयारी करते समय ध्यान देने योग्य बातें :

1. विषय के सभी पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए।
2. भावना एवं विचार दोनों का मेल होना चाहिए।
3. विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।
4. निष्कर्ष अवश्य निकलना चाहिए अर्थात् आप जो कहना चाहते हैं, वह श्रोतागण की समझ में आ जाना चाहिए।
5. कोई भी कथन विषय से हटकर नहीं होना चाहिए।
6. आरंभ आकर्षक होना चाहिए। इसके लिए उदाहरण, उद्धरण आदि से आरंभ किया जा सकता है।
7. विषय किसी भी प्रकार का क्यों न हो, उसे जीवन से जोड़ना चाहिए–घटनाओं, प्रयोगों आदि के माध्यम से।

8. अवसरानुकूल चुटकुलों, कविता आदि को प्रस्तुत किया जा सकता है।
9. प्रस्तुति को सजीव बनाने के लिए चित्रण शैली का प्रयोग हो सकता है।

प्रस्तुति

- भाषण की प्रस्तुति करते समय आरंभ में उपस्थित श्रोताओं को संबोधित किया जाता है; जैसे–आदरणीय अध्यक्ष महोदय एवं मेरे प्रिय साथियो!
- मुख्य अतिथि के लिए आदरणीय, सम्माननीय, पूज्य, माननीय आदि और अध्यापकों के लिए श्रद्धेय गुरुजन, आदरणीय अध्यापकगण आदि संबोधनों का प्रयोग किया जा सकता है।
- आदरणीय व्यक्तियों के संबोधन के साथ जी का प्रयोग भी किया जाता है; जैसे माननीय सभापति जी।
- संबोधनों का प्रयोग भाषण के बीच में भी यथावसर किया जा सकता है। इससे श्रोताओं की रुचि बनी रहती है।
- श्रोताओं को बाँधे रखने के लिए बीच-बीच में इस तरह के प्रश्न भी किए जा सकते हैं–क्या आप सहमत नहीं होंगे? मैं आपसे पूछता हूँ, आप ऐसा करना पसंद करेंगे?
- भाषा उपस्थित श्रोतागण के अनुरूप होनी चाहिए, किंतु एक स्तर अवश्य बनाए रखना चाहिए। भाषा कभी भी इतनी कठिन न हो कि क्या कहा गया–यह समझ में ही न आए।
- आवाज़ तेज़ और स्पष्ट होनी चाहिए।
- आवश्यक उतार-चढ़ाव होना चाहिए, कभी जोश, कभी लय की गति और कभी शांत स्वर।
- मंच पर आते समय चाल सीधी और विश्वास से भरी होनी चाहिए।
- किसी एक पाँव पर ही बल देकर खड़ा नहीं होना चाहिए।
- भावों को पुष्ट करने के लिए मुख-मुद्राओं व शरीर की भंगिमाओं का भी सहारा लिया जा सकता है।

उदाहरण–विषय : समय की हानि जीवन की हानि है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, निर्णायकगण एवं प्रिय साथियो!

का वर्षा जब कृषि सुखाने। समय चूकि पुनि का पछताने।

जी हाँ, जब फसल सूख जाए, तब वर्षा का क्या लाभ, जब अवसर निकल जाए तब पछताने से क्या होता है। यह बात सब समयों में, हर युग में उतनी ही सत्य है जितनी आज से कई सौ वर्ष पहले थी।

अध्यक्ष महोदय, समय तो बहती धारा के समान है। पानी निरंतर बहता रहता है। जहाँ उसमें ठहराव आया, वहीं उसका मरण है, उसी प्रकार जिस व्यक्ति के जीवन में समय रुक गया, उसका जीवन मृत-तुल्य है। एक प्रसिद्ध कहावत है–जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है।

महोदय! समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। हमें अकसर ऐसे कथन सुनने को मिलते हैं–क्या करें, समय ही नहीं मिला; करना तो चाहते, पर क्या करें आदि। यदि ऐसे व्यक्तियों की दिनचर्या को देखा जाए तो ये वास्तव में उनकी अकर्मण्यता के सूचक कथन हैं। समय का उपयोग कहाँ, कैसे करना है, यह हमें पता होना चाहिए।

समय हमारे पास ईश्वर द्वारा प्रदत्त वरदान है। यदि हमें इसका उपयोग करना आ गया तो सफलता हमारे कदम चूमेगी, किंतु यदि कार्य करने के स्थान पर बैठे-बैठे सपने देखा करेंगे तो वैसा ही होगा जैसा महादेवी जी की ये पंक्तियाँ बताती हैं :

तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता।
तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा।

समय को व्यर्थ गँवाकर मनुष्य की ऐसी अवनति होती है कि उसका बाहर निकलना असंभव हो जाता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हर महान व्यक्ति यह जानता था कि उसका लक्ष्य क्या है और उसे पूरा करने के लिए उसे समय का सदुपयोग कैसे करना है।

फ्रैंकलिन का कहना है–अगर तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि जीवन इसी से बनता है।

अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए, अपने समाज को ऊँचा उठाने के लिए, अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यकता है–कर्म करने की, समय का महत्त्व पहचानने की। गया धन वापस आ सकता है, पर बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता।

इसलिए समय की महत्ता को जानो, उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको नहीं।

धन्यवाद।

(ख) आशुभाषण

भाषण और आशुभाषण में मुख्य अंतर यह है कि भाषण में विषय पहले से ज्ञात होता है और छात्रों के पास यथोचित तैयारी करने का पूरा समय होता है–जबकि आशुभाषण का विषय तत्काल दिया जाता है। वक्ता के पास दो से लेकर पाँच मिनट तक का समय होता है। उसे उसी समय में अपने विचारों को सुसंबद्ध करके प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना होता है। भाषण कला में पारंगत होने पर ही आशुभाषण दिया जा सकता है। इसके लिए आवश्यकता है–आत्मविश्वास, धैर्य, विविध विषयों का ज्ञान, तुरंत सोच सकने की क्षमता आदि। जैसे ही विषय मिले तुरंत उस पर विचार आरंभ कर देना और विषय में मुख्य क्या है, उसे पकड़ने का प्रयास करना चाहिए; जैसे :

विषय–समय की हानि जीवन की हानि है।

इस विषय में मुख्य यह है कि हमारा जीवन बहुत थोड़ा है, अतः बहुमूल्य है। समय नष्ट करके अपने जीवन को हानि पहुँचाना अत्यंत शोचनीय है।

(ग) परिचर्चा

किसी एक विषय पर जब कुछ विशेषज्ञ मिलकर विचार-विमर्श करते हैं, तब वह परिचर्चा कहलाती है। एक व्यक्ति संचालन करता है और विषय को आरंभ करता है। बाकी सभी बारी-बारी से अपने विचार व्यक्त करते हैं। संचालक परिचर्चा को बहस में बदलने से बचाता है। आवश्यकता पड़ने पर विषय से भटक रहे वक्ताओं को पुनः विषयानुरूप चर्चा में वापस लाता है। अंत में संचालक सभी सदस्यों की चर्चाओं का संक्षेप में निष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है।

विद्यालय में परिचर्चा के अनेक विषय हो सकते हैं; जैसे–अनुशासन, पुस्तकालय, परीक्षा-प्रणाली, स्वच्छता आदि।

(घ) वाद-विवाद

वाद-विवाद और भाषण में थोड़ी भिन्नता होती है। इसमें किसी विवादास्पद विषय को लिया जाता है और वक्ता विषय के पक्ष-विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। अतः ऐसा विषय होना चाहिए जो एक कथन के रूप में हो; जैसे–सदन की सम्मति में–'आधुनिकता की दौड़ में आज भारतीयता कहीं खो गई है।'

1. वाद-विवाद प्रतियोगिता में एक दल में कम-से-कम दो छात्र होते हैं; जिनमें से एक पक्ष में, दूसरा विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करता है।
2. वक्ताओं को केवल अपने ही पक्ष को मज़बूती से प्रस्तुत करना होता है। इसकी तैयारी करने के लिए विषय के प्रत्येक शब्द पर ध्यान देना और विचार करना अपेक्षित होता है। उन्हें ऐसी कोई भी बात नहीं कहनी चाहिए जो विपक्ष को लाभ पहुँचाए, बल्कि उन्हें प्रतिपक्षी के तर्कों को काटते हुए अपने पक्ष के समर्थन में बोलना होता है, जिससे श्रोताओं को पूरी तरह से सहमत कराया जा सके।
3. प्रतियोगियों को सभा को ही संबोधित करना होता है, ठीक वैसे ही जैसे भाषण में। इसमें एक-दूसरे को संबोधित नहीं किया जाता। कभी-कभी बीच में आवश्यकता पड़ने पर इस प्रकार संबोधित करना चाहिए; जैसे–मैं जानना चाहूँगी, अपने विपक्षी वक्ताओं से। मुझसे पूर्व बोलकर जाने वाले वक्ता महोदय, आपके अनुसार तो...। आदि।

4. विपक्ष के तर्कों को काटना बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसलिए तैयारी करते समय ही ऐसे बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए, जिन्हें विपक्षी बोल सकते हैं, उसी समय विपक्षियों के कथनों को सुनकर काटने के लिए काफ़ी अभ्यास की अपेक्षा होती है।
5. प्राय: पक्ष के वक्ता शांत आवाज़ में अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं, जबकि विपक्षी तर्कों को काटने के उद्देश्य से अधिक आक्रामक होते हैं।
6. वाद-विवाद में मर्यादा का पालन करना चाहिए। किसी भी वक्ता की व्यक्तिगत रूप से निंदा नहीं करनी चाहिए। न ही किसी को अपमानित करना चाहिए। तर्कों की लड़ाई केवल विषय तक ही सीमित रहनी चाहिए, व्यक्तिगत कटाक्षों के रूप में नहीं। उदाहरणत:-अभी-अभी मेरे माननीय प्रतिपक्षी वक्ता ने कहा... पर मैं उनसे यह कहना चाहता हूँ कि आज के समय में ऐसा कहना क्या मूर्खतापूर्ण नहीं होगा...। अत: मेरा उनसे अनुरोध है कि वे ज़रा शांत चित्त हो पुनर्विचार करें।
7. यह विशेष ध्यान देने योग्य है कि वाद-विवाद और बहस में अंतर होता है। बहस में आप बिना कोई तर्क दिए हाँ या न के माध्यम से एक पक्ष से जुड़े रह सकते हैं, जबकि वाद-विवाद में, अपनी बात को तर्कों एवं उदाहरणों के माध्यम से प्रकट करना अति आवश्यक होता है।
8. वाद-विवाद की तैयारी करते समय भाषण संबंधी सभी बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए।

उदाहरण–विषय : सदन की राय में–'देश में आधुनिकता लाने के लिए हिंदी को जाना होगा'

(*i*) **पक्ष**

माननीय अध्यक्ष महोदय, निर्णायक मंडल एवं प्रिय मित्रो! मैं रचित भटनागर विषय के पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ। 'हिंदी जिसके माथे पर बिंदी' पर आज ज़माना बिंदी का नहीं है, जमाना है टैटूस का। भारत को आधुनिक बनाना है तो हिंदी को तो जाना ही होगा।

हिंदी जुड़ी है हमारी प्राचीन संस्कृति से। यह बिल्कुल ठीक है कि यदि हमें अपनी पुरानी मान्यताओं, रीति-रिवाजों, पौराणिक कथाओं का ज्ञान प्राप्त करना है तो हिंदी को ही माध्यम बनाना आवश्यक है, पर इन सबके लिए अवकाश ही कहाँ है। अगर आज की दुनिया में हमें अपना अस्तित्व कायम रखना है तो ज़रूरत है–विज्ञान की, कंप्यूटर और मोबाइल को समझने की और इसका एकमात्र सरल माध्यम है–अंग्रेज़ी।

कब तक अपने ही घेरे में बंद हम कुएँ के मेंढक की तरह बैठे रहेंगे और अपनी संस्कृति के नाम पर संपूर्ण विश्व में आ रही आधुनिकता की क्रांति से कन्नी काटते रहेंगे।

मुझसे पूर्व बोलकर जाने वाले वक्ता का कहना है कि हिंदी भी सक्षम है–आधुनिकता को वहन करने में और उनका तर्क है कि हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके आधुनिकता को वहन करने की क्षमता विद्‌यमान है। पर मैं उनसे पूछना चाहूँगा कि ऐसा करके हिंदी अपना हिंदीपन नहीं खो रही। अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके वह कितने प्रतिशत हिंदी रह पाई है।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि यदि हमें संपूर्ण विश्व के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर आगे बढ़ना है तो हिंदी को छोड़ अंग्रेज़ी को अपनाना होगा। उसी के सुर में अपना सुर मिलाकर हमारा सुर बनेगा जो पूरे विश्व के साथ होगा। धन्यवाद।

(*ii*) **विपक्ष**

मिले सुर मेरा-तुम्हारा
न रहे मेरा न तुम्हारा।

बड़े ज़ोर-शोर से अंग्रेज़ी की वकालत करने वाले मेरे पूर्व वक्ता यह भूल गए कि हिंदी को छोड़कर हम अपनी जड़ों से उखड़ जाएँगे और जब जड़ ही नहीं रहेगी तो पल्लवन, कुसुमन कहाँ से होगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, निर्णायकगण एवं प्रिय साथियो! मैं ईशान प्रकाश विषय के विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं अपने विरोधी वक्ताओं के कथनों से बिल्कुल भी सहमत नहीं हूँ।

हिंदी हमारी युगों की संस्कृति को वहन करने वाली भाषा है। संस्कृत से लेकर खड़ी बोली तक की जो परंपरा है उसने बड़ी सफलतापूर्वक भारतीय संस्कृति के गौरव को बनाए रखा है और उसे हर आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाया है, माननीय वक्ता उसी से दूर हो जाने की बात कर रहे हैं और आधुनिकता के नाम पर भारतीयता से ही मुँह मोड़ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं उनसे यह पूछना चाहता हूँ कि जब हम भारतीय ही नहीं रहे तो हमारा अस्तित्व ही कहाँ है? हम किस मुँह से अपने देश को आगे बढ़ाने की बात करेंगे? कोई भी भाषा विकास को तभी प्राप्त करती है, जब वह निरंतर अपने शब्द-भंडार को समृद्ध करती है और यह होता है अन्य भाषाओं से शब्दों को लेकर तथा आधुनिक शब्दों के लिए नए पर्याय खोजकर। अध्यक्ष महोदय, हिंदी में यह क्षमता पूरी तरह से विद्यमान है और अनेक नए शब्द इस बात का प्रमाण हैं कि हिंदी केवल परंपरा को ही वहन नहीं कर रही, अपितु आधुनिकता की दौड़ में भी आगे है।

हिंदी में आजकल कंप्यूटर पर काम हो रहा है। विज्ञान के कार्यों के लिए हिंदी में शब्दावली मौजूद है और जापान जैसे राष्ट्र अपनी भाषा का प्रयोग करके क्या उन्नति नहीं कर रहे? क्या हम उन्हें आधुनिकता की दौड़ में पिछड़ा हुआ मान सकते हैं? तो क्यों हम हिंदी को लेकर चिंतित हैं? क्यों हम आधुनिकता की अँधी दौड़ में इस प्रकार आँख बंद करके शामिल होना चाहते हैं कि पता ही न चले कि हम आखिर जाएँ कहाँ?

यदि हम हिंदी के माध्यम से अपनी ज़मीन से जुड़े रहें और अपनी आँखें खुली रखकर हिंदी को आधुनिकता की दृष्टि से गतिशील रखें तो किसकी हिम्मत है कि हमारी हिंदी को हमसे छीन सके। माथे पर बिंदी लगाकर हम उसे ही आधुनिकता की पहचान बना सकते हैं। धन्यवाद।

टिप्पणी

विषय के पक्ष-विपक्ष में अन्य अनेक तर्क भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं, किंतु यह ध्यान देने योग्य है कि जहाँ अपने तर्कों को प्रस्तुत किया जाए, वहाँ विपक्षियों के तर्कों को भी मज़बूती से काटा जाए।

(*iii*) प्रश्न पूछना

वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में एक वक्ता के बोलने के पश्चात् पूछे गए प्रश्नों का भी महत्त्व होता है। प्रायः दो प्रश्न पूछे जा सकते हैं। ये प्रश्न श्रोताओं में से कोई भी पूछ सकता है। प्रश्न का उपयुक्त उत्तर देने पर अतिरिक्त अंक मिलते हैं। सर्वोत्तम प्रश्नकर्ता को भी पुरस्कृत किया जाता है।

प्रश्नकर्ता को प्रश्न पूछते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न उपयुक्त एवं स्पष्ट हो। प्रश्न बिल्कुल सीधा, सटीक एवं संक्षिप्त होना चाहिए। प्रश्न के उत्तर के उपरांत पुनः प्रश्न नहीं किया जा सकता।

उदाहरण

1. माननीय महोदय, मैं आरुषि, सातवीं कक्षा की छात्रा पक्ष में बोलकर जाने वाले वक्ता रचित से यह प्रश्न करना चाहती हूँ कि उन्होंने बड़े ज़ोर-शोर से हिंदी को हटा देने की बात कही। अपना भाषण हिंदी में प्रस्तुत करके क्या वे स्वयं को बहुत हीन मान रहे हैं, आधुनिकता की दौड़ में बिल्कुल पीछे।

2. अध्यक्ष महोदय, मैं निखिल, दसवीं 'ए' का छात्र हूँ और विपक्षी वक्ताओं से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या केवल हिंदी का प्रयोग करके वे अंतरिक्ष में प्रवेश पा सकते हैं। वैसे वह तो बहुत दूर की बात है, क्या इंजीनियरिंग या मेडिकल में प्रवेश पा लेंगे?

(ङ) मूल्यांकन

भाषण एवं वाद-विवाद का मूल्यांकन करते समय मुख्य रूप से तीन बिंदुओं को ध्यान में रखा जाता है–विषय की प्रस्तुति, भाषा-शैली एवं प्रस्तुति अर्थात् वक्ता ने विषय को कितनी भली प्रकार प्रस्तुत किया है। भाषा-विषय एवं श्रोताओं

के स्तर के कितने अनुकूल है। किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है। आत्मविश्वास, हाव-भाव, स्पष्टता आदि के आधार पर भी मूल्यांकन किया जाता है।

2. कविता वाचन

कविता वाचन एक कला है, जो जन्मजात होती है, किंतु निरंतर अभ्यास से सीखा भी जा सकता है। कविता पाठ करते समय कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए :

1. कविता गद्य से भिन्न होती है। उसमें अंतर्निहित लक्ष्य उसकी विशेषता होती है। इसे पकड़ने का प्रयास अपेक्षित है।
2. कविता में भावाभिव्यक्ति होती है, अत: इसका वाचन भी भावानुकूल ही हो। भक्ति रस की कविता और वीर रस की कविता के वाचन में अंतर होना ही चाहिए।
3. प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अभ्यास से भी पूर्व कविता को समझने और अनुभव करने की आवश्यकता है।
4. अभ्यास करते हुए कविता को मन में बिठाना होगा, उसके उपरांत बोलकर अभ्यास करना चाहिए।
5. कविता सुनाते समय आवाज़ इतनी ऊँची अवश्य होनी चाहिए कि श्रोतागण उसे आराम से सुन सकें। यदि आपकी धीमी आवाज़ के कारण श्रोताओं को सारा ध्यान सुनने में ही केंद्रित करना पड़े तो भावानुभूति में बाधा होगी। उसी प्रकार बहुत तेज़ आवाज़ भी बाधा पहुँचाती है।
6. कविता की प्रस्तुति करते समय उसमें भावों के अनुरूप स्वर का उतार-चढ़ाव होना चाहिए।
7. पंक्तियों के अंत में या बीच में कहाँ, कितने विराम की अपेक्षा है यह ध्यान में रखना चाहिए।
8. भावानुकूल हाव-भाव चेहरे पर भी आने चाहिए। इससे भावाभिव्यक्ति एवं भावानुभूति दोनों में सहायता मिलती है।
9. पंक्तियों को आवश्यकतानुसार दोहराया भी जा सकता है।
10. कविता पाठ और गायन में अंतर है। वाचन करते समय गायन की अपेक्षा नहीं की जाती। यह विशेष अवसरों पर हो सकता है।

उदाहरण

विभिन्न भावों की कुछ कविताओं के नमूने :

1. पद

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई।
तात-मात, भ्रात-बंधु, आपनो न कोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करि है कोई।
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई, आणंद फल होई।
भगति देखि राजि भई, जगत देखि रोई।
दासी मीराँ लाल गिरधर, तारो सब मोही — *मीराबाई*

2. प्रयाण-गीत

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती-
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती-
'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।'

असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के-रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में-सुवाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो-बढ़े चलो, बढ़े चलो।

-जयशंकर प्रसाद

3. यह धरती कितना देती है!

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और, फूल-फल कर, मैं मोटा सेठ बनूँगा!
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला!
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गए!
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर!
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोए थे,
ममता को सौंपा, तृष्णा को सींचा था!

-सुमित्रानंदन पंत

4. छुट्टी का घंटा बजते ही...

छुट्टी का घंटा बजते ही स्कूलों से
निकल-निकल आते हैं जीते-जागते बच्चे,
हँसते-गाते चल देते हैं, पथ पर ऐसे
जैसे भास्वर भाव वही हों कविताओं के
बंद किताबों से बाहर छंदों से निकले
देश-काल में व्याप रही है जिनकी गरिमा।
मैं निहारता हूँ उनको, फिर-फिर अपने को,
और भूल जाता हूँ अपनी क्षीण आयु को!

-केदारनाथ अग्रवाल

5. मत कहो, आकाश में कुहरा घना है

मत कहो, आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

सूर्य हमने भी नहीं देखा सुबह से,
क्या करोगे, सूर्य का क्या देखना है।

इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछी है,
हर किसी का पाँव घुटनों तक सना है।

'पक्ष औ' प्रतिपक्ष संसद में मुखर हैं,
बात इतनी है कि कोई पुल बना है।

रक्त वर्षों से नसों में खौलता है,
आप कहते हैं, क्षणिक उत्तेजना है।

हो गई हर घाट पर पूरी व्यवस्था,
शौक से डूबे जिसे भी डूबना है।
दोस्तो! अब मंच पर सुविधा नहीं है,
आजकल नेपथ्य में संभावना है। *–दुष्यंत कुमार*

3. वार्तालाप

हम सभी बातचीत में अपना बहुत-सा समय व्यतीत करते हैं। एक-दो व्यक्तियों के साथ हुई बातचीत ही असली बातचीत होती है, क्योंकि इसी में अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाई जा सकती है। यह बातचीत का अनौपचारिक रूप होता है और इसके कोई नियम नहीं होते।

अनौपचारिक बातचीत में कोई बनावट नहीं होती। अपने मित्रों या परिवार में अपने भाई-बहनों के साथ हम ऐसी ही बात करते हैं। एक कहता है, दूसरा सुनता है, फिर दूसरा कहता है और पहला सुनता है। इस प्रकार बातचीत का सिलसिला निरंतर आगे बढ़ता रहता है। इसमें बनावट नहीं होती और दिल खोलकर बात की जाती है। इस बातचीत का अपना आनंद होता है और घंटों बीत जाएँ तो भी पता नहीं चलता। विशेष रूप से मित्रों की बातचीत में तो मस्ती का ही पुट रहता है।

परंतु बातचीत कला भी है। ऐसी कला जिसमें अभ्यास से महारथ हासिल की जा सकती है। अनौपचारिक बातचीत में भी मर्यादा का ध्यान तो रखना ही चाहिए। ऐसी कोई बात नहीं की जानी चाहिए जो आपके मित्र के दिल को चोट पहुँचाए। यदि उसकी भलाई के लिए उसकी आलोचना करने की आवश्यकता पड़े तो भी इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए कि बात संप्रेषित भी हो जाए और चोट भी न पहुँचे। उदाहरणत:

उत्सव : हैलो! अविरल कैसे हो?
अविरल : ओ उत्सव! आओ बैठो।
उत्सव : क्या पढ़ाई कर रहे थे?
अविरल : नहीं, कल वाद-विवाद प्रतियोगिता है न, उसी की तैयारी कर रहा था।
उत्सव : अविरल एक बात कहूँ, तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा।
अविरल : नहीं, नहीं, बोलो।
उत्सव : तुम मंच पर बोलते तो बहुत अच्छा हो, पर जब तुम खड़े होते हो तो एक पैर पर सारा बल देकर खड़े होते हो। यह देखने में अच्छा नहीं लगता। अगर तुम सीधे खड़े रहो तो प्रभाव अच्छा पड़ेगा।
अविरल : धन्यवाद उत्सव! मैंने तो कभी इस बारे में सोचा ही नहीं था।
उत्सव : मेरा ऐसा कहना तुम्हें ख़राब तो नहीं लगा न।
अविरल : अरे नहीं, नहीं। बल्कि मुझे खुशी हुई कि तुमने अपना समझकर मेरी गलती मुझे बताई।

इसी बात को अगर उत्सव अविरल को चिढ़ाते हुए कहता कि पता है अविरल, जब तुम मंच पर टेढ़े होकर खड़े होते हो, तो बिल्कुल लंगड़े लगते हो। ठीक से खड़े हुआ करो। ऐसी स्थिति में भी बात तो संप्रेषित हो जाती पर अविरल को सुनने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता और कई बार ऐसे कथनों से मित्रता में दरार भी पड़ जाती है।

पड़ोसियों के साथ की गई बातचीत भी अनौपचारिक ही होती है। आजकल की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हमारे पास इतना समय ही नहीं होता कि पड़ोसियों के साथ समय व्यतीत कर सकें, किंतु यह हम सब जानते हैं कि ज़रूरत पड़ने पर पड़ोसी ही सबसे पहले हमारे काम आते हैं। अत: अपने पड़ोसियों से मित्रता अवश्य रखनी चाहिए, परंतु इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि इस मित्रता की अपनी एक मर्यादा होती है। इसी के आधार पर पड़ोसियों से वार्तालाप करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. यदि पड़ोसी हमउम्र है तो नाम लिया जा सकता है, यदि कुछ बड़े हैं, तो उनके उपनाम के साथ जी लगाकर; जैसे–

गुप्ता जी, जैन साहब आदि कहा जा सकता है और यदि उम्र अधिक है तो किसी उचित संबोधन का प्रयोग करना चाहिए; जैसे–चाचा जी, मौसी जी आदि।

2. पड़ोसी मित्रों को यथोचित सम्मान दें।
3. उचित अभिवादन करें।
4. उनकी निजी ज़िंदगी में उतना ही झाँकें जितना वे चाहें।
5. अपना सुख-दुख उनसे बाँटे और उनसे भी पूछें।
6. बातचीत में आत्मीयता झलकनी चाहिए।
7. उनकी परेशानी के समय अपनी सेवाएँ उन्हें प्रस्तुत करें।
8. बातचीत में दोनों लोगों का समान महत्त्व होता है, अतः स्वयं इतना न बोलें कि सामने बैठा व्यक्ति उकता जाए। उसे बोलने का अवसर ही न मिले और वह आपसे कन्नी काटने लगे। न ही इतना कम बोलें कि सामने बैठा व्यक्ति यह समझ ही न पाए कि आप उसकी बातों में रुचि ले रहे हैं या नहीं।

संबंधियों के साथ बातचीत करते समय संबंधों की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए। बड़ों के साथ बात करते समय उन्हें सम्मान देना चाहिए। उनके साथ यार, तू और सुना जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

जब भी हम किसी से मिलते हैं, तो वार्तालाप ही करते हैं, पर विभिन्न व्यक्तियों के साथ किए वार्तालापों में भिन्नताएँ होती हैं; जैसे–अध्यापक और छात्र की बातचीत में वैसी अनौपचारिकता नहीं होगी जैसी दो मित्रों की बातचीत में। यहाँ स्नेह, संबंध होने पर भी 'गुरु के सम्मान' को बनाए रखना होगा।

दफ़्तर के अधिकारियों के साथ बातचीत करते समय औपचारिकता ही बनाए रखनी चाहिए। वार्तालाप को केवल काम तक ही सीमित रखना चाहिए। यदि ऊँचे पद के अधिकारियों से निजी जीवन से संबंधित प्रश्न करना ही हो तो भी औपचारिकता के साथ, जैसे–"सर! आपकी तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही। क्या मैं कुछ मदद कर सकता हूँ?"

साक्षात्कार के समय की गई बातचीत पूरी तरह से औपचारिक होती है। इसमें सामने बैठे व्यक्तियों को उचित अभिवादन दिया जाता है। आवश्यकतानुसार सभी निर्देशों का पालन किया जाता है। पूछे गए प्रश्नों का ही उत्तर देना होता है, जितना पूछा जाए उसी के अनुकूल उत्तर देना होता है। भावुकता का यहाँ स्थान नहीं होता। यह वार्तालाप पूरी तरह से औपचारिक होता है। अतः धन्यवाद, मैं आपका सदा आभारी रहूँगा जैसे–औपचारिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

इसी के साथ साक्षात्कार देते या लेते समय निर्भीकता एवं आत्मविश्वास का होना भी अत्यंत आवश्यक है। यदि आप उचित बात भी कह रहे हों, परंतु घबराकर तो उसका प्रभाव नहीं पड़ता और सामने वाला व्यक्ति आपके प्रति अपनी राय सकारात्मक नहीं बना पाता।

हम बस में, रेलों में यात्रा करते समय भी वार्तालाप करके अपने मित्र बनाया करते हैं, लेकिन ऐसे लोगों से मित्रता थोड़े ही समय की होती है। अतः इसमें बहुत भावुक होकर अपने निजी जीवन को पूरा खोलकर प्रस्तुत नहीं किया जाता।

बातचीत किसी से भी की जाए, व्यक्तित्व की विशिष्टता उसमें झलकती ही है, झलकनी भी चाहिए, किंतु कुछ सामान्य निर्देशों को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए जिससे वार्तालाप प्रभावशाली हो; जैसे :

1. उचित संबोधन एवं अभिवादन का प्रयोग।
2. उम्र एवं पद के अनुरूप मर्यादा एवं सम्मान को बनाए रखना चाहिए।
3. बातचीत अवसरानुकूल होनी चाहिए–प्रसन्नता एवं दुख जैसे संवेदनों से भरपूर।
4. अनौपचारिक बातचीत में बनावटीपन नहीं होना चाहिए, मन की बात कह देनी चाहिए, किंतु जहाँ कुछ औपचारिकता हो वहाँ अवसर के अनुकूल सोच-समझकर अपनी बात कहनी चाहिए।
5. संबंधों की सुगंध बातचीत में झलकनी चाहिए। छोटों को स्नेह और बड़ों के प्रति सम्मान व्यक्त होना चाहिए।
6. बातचीत किसी भी विषय पर की जा सकती है, लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे विषय लें जिनमें अन्य लोगों को भी रस आए। बातचीत उनके लिए बोझ न बने और वे वहाँ से उठकर चले जाने की न सोचने लगें।
7. बातचीत भाषण नहीं है, इसलिए सबको बोलने का अवसर मिलना चाहिए।

4. कार्यक्रम-प्रस्तुति

वाद-विवाद, भाषण आदि की प्रस्तुति के समान कार्यक्रम प्रस्तुति भी एक कला है। कुशल संचालक कार्यक्रम में जान डाल देता है और दर्शकों के भीतर उत्साह उत्पन्न कर देता है। यदि कार्यक्रम की प्रस्तुति सफल न हो तो एक अच्छा कार्यक्रम भी नीरस हो जाता है। ये कार्यक्रम मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं–प्रतियोगिताएँ और मनोरंजक या ज्ञानवर्धक कार्यक्रम। कार्यक्रम कैसा भी हो, उद्घोषक को कुछ सामान्य नियमों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. उद्घोषक को केवल कुछ वाक्यों को रटकर ही नहीं आना चाहिए, अपितु आवश्यकता पड़ने पर स्वयं बोलना भी आना चाहिए। उसमें यह क्षमता होनी चाहिए कि वह परिस्थिति के अनुसार स्वयं बोल सके, खाली समय को भर सके, दर्शकों का ध्यान आकर्षित किए रहे, हाज़िर-जवाब हो और इस प्रकार समस्त कार्यक्रम को रोचक बना सके।
2. प्रस्तुतकर्ता को शालीन वेशभूषा में मंच पर आना चाहिए।
3. उसे कार्यक्रम से संबंधित पूर्ण जानकारी होनी चाहिए, केवल जानकारी ही नहीं, उसे पूरी तैयारी करके आना चाहिए।
4. दर्शकों का उचित अभिवादन एवं स्वागत करने के उपरांत कार्यक्रम से संबंधित जानकारी दी जानी चाहिए।
5. यह जानकारी अत्यंत संक्षिप्त होनी चाहिए क्योंकि इसका उद्देश्य केवल जानकारी देना है, दर्शकों को उकताना नहीं।
6. मुख्य अतिथि के स्वागत-परिचय के उपरांत जब एक-एक करके कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएँ तो उनकी भूमिका इस प्रकार बाँधी जाए कि दर्शकों का ध्यान आकर्षित हो जाए और वे आने वाले कार्यक्रम को देखने के लिए उत्सुक हो जाएँ।
7. कार्यक्रम पूरा होने पर अध्यक्षीय भाषण और धन्यवाद ज्ञापन होता है। अध्यक्षीय भाषण में अध्यक्ष का अपना मत हो सकता है, कार्यक्रम के विषय में उल्लेख हो सकता है या पूर्ववक्ताओं के विचारों का। धन्यवाद ज्ञापन में महत्त्व के अनुसार क्रमश: उन सभी व्यक्तियों का नामोल्लेख होना चाहिए, जिनके सहयोग से कार्यक्रम संपन्न हुआ है।
8. कलाकारों/कार्यक्रमों का परिचय देते समय कविता की पंक्तियों, सूक्तियों आदि का सहारा लिया जा सकता है।
9. एक वक्ता के बोलकर जाने के उपरांत धन्यवाद ज्ञापन किया जाना चाहिए।
10. सभा का ध्यान कार्यक्रम में बना रहे और कलाकारों का उचित सम्मान हो–इसके लिए दर्शकों को शांत रखना और ताली बजवाना भी उद्घोषक का ही काम है, पर यह आदेश के रूप में नहीं, अनुरोध के रूप में होना चाहिए; जैसे : 'और आइए; अब ज़ोरदार तालियों से स्वागत करें, अपने इन नन्हे-मुन्ने कलाकारों का जो अपनी कलाकारी से आपका मन मोह लेंगे।'
11. यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है कि उद्घोषक को अवसरानुकूल अपनी वाणी में उतार-चढ़ाव तथा भिन्न भावों का प्रयोग करना आता हो। अतिथियों का स्वागत करते समय वाणी में विनम्रता एवं शालीनता, सरस्वती वंदना या दीप प्रज्वलित करते समय श्रद्धा, हास्य के कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय हल्की गुदगुदाती भाषा, गंभीर विषयों में गंभीरता और ठोस शब्दों का प्रयोग अपेक्षित होता है।

उदाहरण

1. अतिथि का स्वागत करते समय :

यह हमारा सौभाग्य है कि आज माननीय फादर नोवर्ट हमारे बीच उपस्थित हैं। मैं विद्यालय की प्रबंधक सिस्टर एलिजाबेथ से अनुरोध करती हूँ कि वे मंच पर आएँ और फादर का हम सब से परिचय करवाएँ।

2. छोटे बच्चों द्वारा कार्यक्रम की प्रस्तुति के उपरांत :

वाह! क्या नृत्य था, संगीत की ताल पर थिरकते ये बच्चे कितनी सरलता से हमारा मन मोह रहे थे, कैसा जोश था इनमें, कैसी उमंग, बहुत सुंदर, बहुत सुंदर।

3. हास्य नाटिका से पूर्व :

जो हँस नहीं सका, वह जी नहीं सका। आज की इस व्यस्त ज़िंदगी में जब कहीं हँसी के फव्वारे फूट पड़ते हैं तो तनाव से मुक्ति मिल जाती है। आइए देखें, दसवीं कक्षा की ये छात्राएँ कैसे हमें गुदगुदाती हैं। आ रही हैं.....

4. **पर्यावरण संबंधी गंभीर नाटिका से पूर्व :**

पर्यावरण हम सबकी ज़िम्मेदारी है। आज जाने-अनजाने हम सब पर्यावरण को इतना नुकसान पहुँचा चुके हैं कि वह हमारे लिए ही नुकसानदायक हो रहा है। इसकी सुरक्षा ही अब एकमात्र उपाय है। हम जागरूक हों, सचेत हों और एक सजग प्रयास करें तभी इस नष्ट होती सृष्टि को बचाया जा सकता है। देखते हैं एक नाटिका के माध्यम से नवीं कक्षा के छात्र हमसे क्या कहना चाहते हैं।

5. **नाटिका के उपरांत :**

इस लघु नाटिका ने तो हमारी आँखें खोल दी हैं। मेरे साथ-साथ आप सब भी कुछ सोचने के लिए विवश हुए होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

5. कथा, कहानी अथवा घटना सुनाना

मौखिक-अभिव्यक्ति की कुशलता विकसित करने के लिए घटनाओं, उत्सवों, दृश्यों, मनोरंजक या दुखद प्रसंगों का वर्णन करने का अभ्यास भी अपेक्षित होता है। इसके लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है; जैसे–विषय की विस्तृत जानकारी, सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता जिससे वर्णन में हर बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जा सके, क्रमबद्धता, विषय के बारे में अपना दृष्टिकोण, विषयानुरूप स्पष्ट एवं प्रभावी भाषा।

कहानी कही जाती है, पर यदि ठीक ढंग से न कही जाए तो वांछित प्रभाव नहीं पड़ता और श्रोताओं का मनोरंजन भी नहीं होता।

1. कहानी कहने वाले को कहानी पूरी याद होनी चाहिए। सभी पात्रों के नाम और घटनाओं का क्रम स्पष्ट होना चाहिए। 'उसने उससे कहा कि उसे वह करना था' जैसे वाक्य प्रभाव को कम करते हैं।
2. कहानी में स्पष्टता होनी चाहिए। बड़ी कहानी को भी सुलझे रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। अनावश्यक वर्णन, उपदेश आदि नहीं होने चाहिए।
3. वर्णन और संवाद दोनों की कहानी कहने में आवश्यकता होती है। दोनों में संतुलन होना चाहिए।
4. छोटे बच्चों को कहानी सुनाते समय उसमें नाटकीयता अधिक होनी चाहिए।
5. भाषा का स्तर श्रोताओं के स्तर के अनुरूप होना चाहिए।
6. ध्यान कहानी में बना रहे, इसके लिए आवश्यक है कि आवाज़ इतनी ऊँची हो कि सबको आराम से सुनाई दे।
7. आवाज़ में आवश्यक उतार-चढ़ाव होना चाहिए। जोश के समय आवाज़ ऊँची और दुख के समय आवाज़ नीची होनी चाहिए, किंतु इतनी भी कम-ज़्यादा नहीं कि श्रोताओं को सुनने में बाधा पहुँचे।
8. ऐसी कहानी का चुनाव करना चाहिए जिसका कोई उद्देश्य हो, जो किसी निष्कर्ष की ओर ले जाती हो। यह शिक्षा कहानी से स्वयं स्पष्ट होनी चाहिए। यदि बच्चे बहुत छोटे हों तो कहानी के उपरांत उनसे पूछा भी जा सकता है या स्वयं बताया जा सकता है।

उदाहरण

कहानी की कौन-सी प्रस्तुति अधिक प्रभावकारी होगी, इसका फैसला स्वयं करें :

1. "हाथी और बंदर नदी की ओर दौड़ पड़े, परंतु नदी गहरी और पानी अधिक होने के कारण बंदर डरने लगा और उसने हाथी से कहा–"नदी गहरी है, मैं तैरकर नदी के उस पार नहीं जा सकता हूँ" तब हाथी ने बंदर से कहा–"तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ, क्योंकि मैं ताकतवर हूँ तथा गहरे पानी में तैर सकता हूँ।"
2. यह सुनते ही हाथी और बंदर नदी की तरफ़ दौड़ पड़े, पर नदी बहुत गहरी थी, उसमें इतना ढेर सारा पानी था कि बंदर को तो डर ही लगने लगा। उसने हाथी से कहा–"हाथी! हाथी! मुझे डर लग रहा है।" इतने गहरे पानी को मैं तैरकर कैसे पार करूँगा?" हाथी बड़ा था, उसे बिल्कुल डर नहीं लग रहा था, उसने बंदर से कहा..."अरे बंदर, डरो मत, तुम बस मेरी पीठ पर चढ़ जाओ। मैं ताकतवर हूँ, आराम से नदी पार कर लूँगा।"

6. चित्र देखकर कहानी सुनाना

किसी प्रसिद्ध घटना या कहानी से संबंधित चित्रों को देखकर उससे जुड़ी कहानी या घटना को अपने शब्दों में सुनाना एक कला है। इसमें सबसे पहले स्मरण-शक्ति से उन चित्रों को जाँचा व परखा जाता है। उसके बाद कल्पनाशीलता से उस घटना कहानी को रचा जाता है। रची हुई घटना को उचित संवादों व भावों के साथ अपने शब्दों में अभिव्यक्त किया जाता है।

आइए, ऐसी ही कुछ चित्रात्मक कहानी व घटनाओं को हम देखें :

चित्रावली–1

द्रोणाचार्य अपनी धनुर्विद्या के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। अनेक राजा तथा राजपुत्र उनसे धनुर्विद्या सीखने की इच्छा रखते थे। एक बार भील बालक एकलव्य भी उनके पास आया। द्रोणाचार्य ने उसे शिष्य बनाने से इंकार कर दिया। उन्होंने सोचा, यह भील है। यदि यह धनुर्विद्या में प्रवीण हो गया, तो अपनी विद्या का दुरुपयोग करेगा तथा लोगों को कष्ट पहुँचाएगा।

द्रोणाचार्य के मना करने पर एकलव्य उन्हें प्रणाम कर वन में चला आया। वहाँ उसने द्रोणाचार्य की मिट्टी की एक मूर्ति बनाई और अभ्यास करना आरंभ कर दिया। इस प्रकार श्रद्धा और पूर्ण एकाग्रता से अभ्यास करते-करते वह बाण चलाने में प्रवीण हो गया।

एक दिन कौरव और पांडव वन में शिकार खेलने निकले। उनके साथ एक कुत्ता भी था। राजकुमार शिकार के लिए वन में इधर-उधर भटक रहे थे। कुत्ता घूमता-घामता भील-कुमार की ओर जा निकला।

भील-कुमार को देखकर कुत्ता भौंकने लगा। भील-कुमार ने बड़ी फुर्ती से एक साथ कई तीर कुत्ते पर छोड़े। वह भी इस कौशल से कि उसका मुँह तीरों से भर गया और भौंकना बंद हो गया, परंतु एक भी तीर उसके मुँह या शरीर में नहीं लगा। कुत्ता उसी दशा में राजकुमारों के पास आया। उसे देखकर राजकुमारों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वे बाण मारने वाले के इस अद्भुत कौशल की प्रशंसा करने लगे। वे तीर मारने वाले को ढूँढ़ते हुए एकलव्य के पास पहुँचे और पूछा–"तू कौन है, और किससे तूने धनुर्विद्या सीखी?"

एकलव्य बोला–"वीरो, मैं भीलराज हिरण्यधनुष का पुत्र और द्रोणाचार्य का शिष्य हूँ। मेरा नाम एकलव्य है। यहाँ धनुर्विद्या का अभ्यास करता हूँ।"

राजकुमारों ने घर पहुँचकर पूरी बात गुरु द्रोणाचार्य को सुना दी। द्रोणाचार्य को चिंता हुई; यदि यह भील-बालक बाणविद्या में इतना निपुण हो जाएगा, तो अपनी इच्छा से काम करेगा और इसे कोई जीत भी न सकेगा। यह सोचकर वह तुरंत वन में गए।

एकलव्य ने द्रोणाचार्य को देखकर प्रणाम किया और हाथ जोड़कर बोला–"महाराज, मैं आपका शिष्य एकलव्य हूँ।" द्रोणाचार्य ने कहा–"यदि तू मेरा शिष्य है, तो मेरी गुरु-दक्षिणा दे।"

एकलव्य प्रसन्न होकर बोला–"महाराज, जो आज्ञा करें भेंट करूँ।"

द्रोणाचार्य ने कहा–"मुझे अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काटकर दे।"

द्रोण की ऐसी कठोर आज्ञा सुनकर एकलव्य ज़रा भी न घबराया। बिना किसी हिचक के उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने सीधे हाथ का अँगूठा काटकर द्रोणाचार्य को दे दिया।

उस दिन से एकलव्य केवल उँगलियों से ही अभ्यास करने लगा, परंतु अँगूठे के न होने से वह धनुर्विद्या में अर्जुन से बढ़कर न हो सका।

चित्रावली–2

महाभारत का युद्ध हो रहा था। गुरु द्रोणाचार्य कौरव सेना का नेतृत्व कर रहे थे। पांडव बहुत चिंतित थे, क्योंकि द्रोण उनके भी गुरु थे। वे शस्त्रकला में बहुत निपुण थे। अत: कुंती के पुत्र जानते थे कि युद्ध में उन्हें पराजित करना बहुत कठिन होगा।

युद्ध का डंका बजते ही दोनों विशाल सेनाएँ एक-दूसरे के समक्ष खड़ी हो गईं। पांडवों ने अपने गुरु को प्रणाम किया और उनका आर्शीवाद लिया, फिर युद्ध आरंभ हो गया। दोनों सेनाएँ एक-दूसरे पर टूट पड़ीं। दोनों ओर महान योद्धा थे। अत: वार पर वार होने लगे, किंतु गुरु द्रोण के नेतृत्व में कौरवों ने पांडवों के छक्के छुड़ा दिए। उनके युद्ध-कौशल के कारण न भीम की गदा का कुछ प्रभाव हो रहा था, न तो अर्जुन के तीर सही लग रहे थे।

जब शत्रुओं ने अर्जुन को घायल कर दिया, तो उनके सारथी, श्री कृष्ण ने रथ मोड़ लिया। वे शीघ्रता से अर्जुन के बड़े भाई युधिष्ठिर के पास गए और बोले, ''धर्मराज! जब तक आचार्य द्रोण युद्ध-भूमि से नहीं हटेंगे, तब तक पांडवों की विजय असंभव है। अब आपको ही अपनी सेना की रक्षा करनी पड़ेगी।''

युधिष्ठिर बहुत चिंतित थे। घायल अर्जुन को देखकर उनकी आँखों में आँसू आ गए। वे चिंतित स्वर में बोले, ''हे भगवन्! जब मेरे शक्तिशाली भाई भीम और अर्जुन की शस्त्र-कला किसी काम नहीं आई, तो मैं सेना की रक्षा कैसे कर सकता हूँ?''

उनका धैर्य बँधाते हुए कृष्ण बोले, ''तुम्हें एक चाल चलनी होगी। सबसे तुम यह कह दो कि अश्वत्थामा मारा गया। अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार पाते ही आचार्य युद्ध-भूमि छोड़ देंगे।''

आश्चर्यचकित होकर युधिष्ठिर बोले, ''हे ईश्वर...! आप मुझसे झूठ बोलने को कह रहे हैं! नहीं, नहीं, धर्म के विरुद्ध कार्य, मैं नहीं करूँगा।''

''लेकिन इस समय धर्म का नहीं, पांडव-सेना की विजय का प्रश्न है'' कृष्ण ने समझाया। ''नहीं, स्वामी!'' युधिष्ठिर ने हाथ जोड़कर नम्रता से कहा ''चाहे कुछ भी हो जाए, मैं झूठ नहीं बोलूँगा। असत्य से मिली विजय मुझे नहीं चाहिए।''

उसी समय भीम ने अपनी गदा से एक हाथी को मार दिया। उस हाथी का नाम भी अश्वत्थामा था। भीम गदा उठाकर ज़ोर से चिल्लाया, ''अश्वत्थामा मारा गया।'' यह सुनते ही आचार्य द्रोण बहुत दुखी हो गए, लेकिन उनके मन में संदेह था। ''शायद भीम ने युद्ध-क्षेत्र से मुझे हटाने के लिए यह कहा हो। मैं युधिष्ठिर से पूछता हूँ। वह तो कभी झूठ नहीं बोलता।''

यह सोचकर गुरु युधिष्ठिर के पास गए। क्या भीम ने ठीक कहा है? उन्होंने पूछा।

युधिष्ठिर के लिए, यह एक संकट का समय था। वे धर्म के पुजारी थे। अतः असत्य नहीं बोल सकते थे, किंतु सच बोलने का परिणाम भी उन्हें मालूम था-पांडव-सेना की पराजय।

श्री कृष्ण उनकी चिंता को समझ गए। उन्होंने धीरे से कहा, ''युधिष्ठिर! अश्वत्थामा नाम का हाथी तो मारा ही गया है। इसलिए तुम आचार्य से कह दो कि अश्वत्थामा मारा गया है, किंतु वह गुरु-पुत्र नहीं, हाथी था।''

युधिष्ठिर ने सोचा, ''यह तो सत्य है। इसे कहने में क्या हानि है?'' इसलिए उन्होंने आचार्य से वही कह दिया।

कृष्ण उनके पास खड़े थे। जैसे ही युधिष्ठिर ने कहा अश्वत्थामा मारा गया है वैसे ही, उन्होंने शंख बजा दिया। शंख ध्वनि के कारण गुरु द्रोण उनका दूसरा वाक्य नहीं सुन सके। युधिष्ठिर के मुख से सुनकर उन्हें विश्वास हो गया कि उनके पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु हो गई है। वे शस्त्र छोड़कर चले गए। उनके जाते ही पांडवों ने कौरवों को पराजित कर दिया।

7. परिचय देना और परिचय प्राप्त करना

परिचय देना और परिचय प्राप्त करना ऐसी क्रिया है, जिसका उपयोग हम अपने प्रतिदिन के जीवन में, विभिन्न अवसरों पर तो करते ही रहते हैं, साक्षात्कार के समय या अन्य विशेष अवसरों पर भी इसकी औपचारिक रूप से आवश्यकता होती है। यह परिचय औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार का हो सकता है। मंच पर खड़े होकर मुख्य अतिथि का स्वागत करने के उपरांत उनका औपचारिक रूप से परिचय दिया जाता है। मित्र-मंडली में किसी नए सदस्य के आगमन पर उसका परिचय अनौपचारिक होता है। निजी परिचय किसी सभा या साक्षात्कार में औपचारिक और अन्यत्र अनौपचारिक होता है।

अवसर चाहे कोई भी हो, किसी का भी परिचय दिया जा रहा हो, कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए :

1. जिसका परिचय दिया जाना है, उससे संबंधित संपूर्ण जानकारी आपके पास हो।
2. नाम से पूर्व कोई विशेषण या उपाधि लगती हो तो उसका प्रयोग ज़रूर करना चाहिए।
3. नाम के बाद जी, महोदय जैसे सम्मानबोधक शब्दों का प्रयोग यथावसर करना चाहिए।
4. परिचय संक्षिप्त किंतु सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए।
5. जन्म, जन्म स्थान, शिक्षा प्राप्ति के स्थलों आदि पर बल देने के बजाय व्यक्तित्व की विशेषताओं और उपलब्धियों पर बल अधिक देना चाहिए।
6. परिचय कभी भी अपमानजनक नहीं होना चाहिए। ऐसे प्रसंग यदि हों भी तो चतुराई से उनसे बचना चाहिए।
7. प्रशंसा दिल खोलकर करनी चाहिए, किंतु बहुत बढ़ा-चढ़ाकर भी नहीं अन्यथा उसका महत्त्व नहीं रहता।
   - (✗) जैसा कि हम सब जानते हैं कि ये एक प्रसिद्ध गायिका हैं पर इनकी एक कमज़ोरी है। ये आसानी से गाना सुनाने को तैयार नहीं होतीं। पर आज कुछ भी हो, हम गाना सुने बिना इन्हें छोड़ेंगे नहीं।
   - (✗) जैसा कि हम सब जानते हैं ये प्रसिद्ध गायिका हैं-लता मंगेशकर भी इनके सामने पानी भरती हैं। ईश्वर ने मानो संगीत की संपूर्ण शिक्षा देकर ही इन्हें धरती पर भेजा है।
   - (✓) माधुरी जी को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। गायन के क्षेत्र में इनका कोई सानी नहीं। हमारा इनसे विनम्र अनुरोध है कि सभा के अंत में गीत की कुछ पंक्तियाँ ही सही, सुनाकर माधुरी जी हमें कृतार्थ करें।
8. व्यक्तिगत परिचय का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें कहीं भी अहंकार नहीं झलकना चाहिए।
   - (✗) लोग मुझे दिव्य प्रकाश के नाम से जानते हैं।
   - (✗) मैं हूँ दिव्य प्रकाश।
   - (✓) मेरा नाम दिव्य प्रकाश है।

9. यदि अपनी विशिष्ट उपलब्धियाँ बतानी भी हों तो विनम्रतापूर्वक बतानी चाहिए।
10. नाम से आरंभ करके अपना निवास, विद्यालय, कक्षा और फिर अवसर के अनुसार माता-पिता के संबंध में/रुचियाँ/जीवन का लक्ष्य/विशिष्ट उपलब्धियाँ आदि बतानी चाहिए। अनौपचारिक रूप से परिचय देते समय भी शालीनता को बनाए रखना चाहिए। अंतर बस इतना ही है कि इसमें स्वाभाविकता अधिक होती है, गंभीरता कम होती है।

उदाहरण

अपनी मित्र-मंडली में यदि आप एक नए मित्र को सम्मिलित करने के लिए लाए हैं, तो यह परिचय अनौपचारिक होगा :

- हैलो निमिष! हैलो आयूष कैसे हो?
- हैलो संचित! यह तुम्हारे साथ कौन है?
- यह मेरा मित्र निहित है। इसने एयर फोर्स स्कूल से दसवीं की परीक्षा दी है। पढ़ाई में तो यह तेज़ है ही, कंप्यूटर और क्रिकेट में भी इसका जवाब नहीं। आज से यह भी हमारे साथ खेला करेगा।

परिचय लेना

परिचय देने के समानं परिचय प्राप्त करने में भी कुछ विशिष्टताएँ होती हैं। यह भी औपचारिक, अनौपचारिक दोनों प्रकार का हो सकता है; जैसे-किसी सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बुलाए जाने वाले व्यक्ति का परिचय लेना या पत्रिका में छापने के लिए किसी विशिष्ट व्यक्ति से जानकारी प्राप्त करना औपचारिक होगा। किसी अपरिचित को मित्र बनाते समय लिया जाने वाला परिचय अनौपचारिक होगा।

परिचय प्राप्त करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि सभी ज़रूरी जानकारी एकत्र की जाए। परिचय पूछ कर सुनने में रुचि लें। ऐसा लगना चाहिए कि आप जानने के इच्छुक हैं। अपनी जिज्ञासा को प्रकट करते हुए बताई गई बातों को ध्यानपूर्वक सुनें। परिचय प्राप्त करने के बाद धन्यवाद तथा कृतज्ञता ज्ञापन अवश्य करें। अनौपचारिक परिचय में पुन: मिलने की इच्छा प्रकट करें।

8. संवाद-वाचन

संवाद वाचन मंच पर नाट्य प्रस्तुति के रूप में, रेडियो नाट्य के रूप में या कक्षा में नाटक पढ़ने के रूप में किया जाता है। संवाद वाचन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता है-उसकी भावानुरूप प्रस्तुति। संवादों के माध्यम से औपचारिक बातचीत की कुशलताएँ, भावानुकूल उतार-चढ़ाव, हाव-भाव प्रदर्शन, शुद्ध उच्चारण जैसी योग्यताएँ विकसित होती हैं। संवाद वास्तव में बातचीत का ही एक रूप है। जिस प्रकार बातचीत में हम अपने मन के भावों को सरलता से प्रकट कर देते हैं, उसी प्रकार संवादों में भी यह स्वाभाविक रूप से होना चाहिए। संवाद बोलते समय ध्यान रखना चाहिए कि :

1. आप अपने को उसी पात्र में ढला हुआ अनुभव कर सकें चाहे वह राजा हो या भिखारी। जब तक उस पात्र में स्वयं को ढालेंगे नहीं, तब तक भावाभिव्यक्ति सफल नहीं हो सकती।
2. नाटककार के निर्देशों के अनुसार सभी हाव-भावों को लाने का प्रयास करना चाहिए; जैसे-उदास होकर, सूखी हँसी हँसते हुए-व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ।
3. आवाज़ इतनी ऊँची हो कि सभी को आराम से सुनाई पड़े, तभी नाटककार का संदेश सब तक पहुँच पाएगा।
4. आवाज़ में आरोह-अवरोह को ध्यान में रखना होगा।
5. संवादों की गति यथावसर निर्धारित की जानी चाहिए। बहुत तेज़ या बहुत धीमी गति से बोले गए संवाद प्रभाव उत्पन्न नहीं करते।
6. संवादों को स्पष्ट बोलना चाहिए। वाक्य के आखिरी शब्द भी स्पष्ट रूप से सुनाई देने चाहिए।
7. आवाज़ में कोमलता या कठोरता भावानुकूल होनी चाहिए।
8. यदि आवश्यकता पड़े तो लिखित नाटक में प्रयुक्त भाषा को दर्शकों के स्तर के अनुकूल बदल लेना चाहिए।

उदाहरण

अलग-अलग नाटकों से लिए गए भिन्न-भिन्न प्रकार के संवादों के कुछ नमूने :

1. **इद्‌दिचिरि** : क्या सोच रहे हैं नाथ आप अपने ही घर में जाने पर विचार कर रहे हैं।

(केरल का सुदामा–गोविंददास)

2. **गुल्लू** : (घबराकर) नहीं सरकार, यह कैसे हो सकता है? हाथ न रहेगा तो मैं खाना कैसे खाऊँगा?

(तीन भिखारी–गिरिराज शरण अग्रवाल)

3. **गाँव** : यह हुई बात! भैया, हम दोनों सदा से एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। मेरी परिश्रमशीलता बनी रहे और तुम्हारी कार्यकुशलता और वैज्ञानिक दृष्टि। तुम भी बने रहो, मैं भी बना रहूँ।

(गाँव और शहर–जगमोहन सिंह)

4. **करुणा** : (क्रोध से पैर पटकती हुई) कहीं भी जाएँ। यह न भूलो कि मैं महारानी हूँ और यह मेरा आदेश है। चलो, झोपड़ी को जलाकर आदेश का पालन करो। (काशीराज का न्याय)

5. **कुंती** : क्षणभर धीरज धरो पुत्र! तनिक सूर्य भगवान अस्त हो लें और संध्या के अंधकार को भी तनिक गहरा हो लेने दो। सभी कुछ बताती हूँ। सुनो, मैं कुंती हूँ!

कर्ण : कुंती! आप, अर्जुन की माता!!! (कर्ण और कुंती–रवींद्रनाथ ठाकुर)

9. वाचन का मूल्यांकन

वाचन का मूल्यांकन विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है। विद्यालय में हो रही विभिन्न गतिविधियों के आधार पर अध्यापक अंक देते रहें और उन्हें सत्रांत में जोड़ें।

इसके अतिरिक्त परीक्षा के रूप में भी मूल्यांकन किया जा सकता है–जिसमें चित्रों के माध्यम से घटना का वर्णन, निर्धारित विषय पर बोलना, कहानी कहना आदि हो सकता है।

- मूल्यांकन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि तैयारी के लिए पर्याप्त समय दिया जाए।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के जीवन-अनुभव से जुड़े हों।
- विवरण करते समय वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- बोलते समय परीक्षक का हस्तक्षेप कम-से-कम हो।

मूल्यांकन के लिए कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं :

- विद्यार्थी रटे-रटाए शब्दों का प्रयोग तो करता है, पर उन्हें समझता नहीं, अतः प्रभाव उत्पन्न नहीं होता।
- विद्यार्थी का शब्द-ज्ञान सीमित है। अतः कथनों में विविधता नहीं है।
- कथनों में मेल नहीं बैठता।
- भाषा विषयानुकूल है।
- धारा-प्रवाह बोल पाता है।
- योग्यता है, पर सामान्य गलतियाँ करता है।
- ठीक से तैयारी कर लेता है, भाषा भी उपयुक्त है, किंतु विश्वास की कमी होने के कारण धीमे बोलता है। अटकता है।

पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक पर आधारित कुछ रचनात्मक गतिविधियों के सुझाव

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन' (CCE) के अंतर्गत रचनात्मक गतिविधियों में निम्नलिखित कौशलों का समावेश किया गया है। इन गतिविधियों को फॉरमैटिव असेसमेंट के अंतर्गत रखा गया है :

1. वाद-विवाद
2. भाषण कला
3. कवि सम्मेलन
4. कहानी सुनाना/कहानी लिखना या घटना का वर्णन/लेखन
5. परिचय देना या परिचय लेना
6. अभिनय कला
7. सामूहिक चर्चा
8. परियोजना कार्य

पाठ्यपुस्तक को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त गतिविधियों से संबंधित कुछ विषयों का सुझाव :

1. वाद-विवाद

विषय :

1. ''विज्ञान बना जीवन के लिए अभिशाप'' (वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन्)
2. कीचड़ श्रद्धेय है (कीचड़ का काव्य)
3. धर्म एक व्यापार की वस्तु है (धर्म की आड़)

- कक्षा में बच्चों को विषय दिया जाए।
- प्रत्येक विद्यार्थी अपना वाद-विवाद तैयार करे।
- कक्षा में बच्चों को डेढ़ से दो मिनट का समय दिया जाए।
- कक्षा के शेष विद्यार्थी तर्कों को ध्यान से सुनें।
- प्रत्येक विद्यार्थी को एक बार वक्ता से प्रश्न पूछने का अवसर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–तार्किकता, भाषण कला, उच्चारण, अपनी बात अधिकारपूर्वक कहना।

2. भाषण कला

विषय :

1. अतिथि देवो भवः (तुम कब जाओगे, अतिथि)
2. परिश्रम सफलता की कुंजी (वैज्ञानिक चेतना के वाहक)
3. नदी के किनारे का कीचड़ (कीचड़ का काव्य)
4. सब धर्म एक समान (धर्म की आड़)
5. अस्पृश्यता: समाज की कोढ़ (एक फूल की चाह)

- कक्षा में सभी विद्यार्थियों को यह अवसर दिया जाए कि वे संबंधित विषय पर कम-से-कम दो मिनट बोलें।
- सभी विद्यार्थियों का भाग लेना आवश्यक हो।
- बच्चे सरल भाषा व शुद्ध उच्चारण का प्रयोग करें।
- सभी विद्यार्थी ध्यान से सुनें।
- अंत में सभी विद्यार्थी अपने विचार अभिव्यक्त कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–विषय-वस्तु, भाषण कला, उच्चारण, अभिव्यक्ति की कला।

3. कवि सम्मेलन

विषय :

1. पाठ्यपुस्तक में संकलित कविताओं के आधार पर कविता पाठ।
2. पाठ्यपुस्तक में संकलित कविताओं के कवियों की रचनाओं का संकलन कर उनमें से किसी एक कविता का पाठ बच्चे करेंगे।
3. मौलिक कविताओं की रचना कर कवि सम्मेलन या अंत्याक्षरी।

- बच्चे अपने लिए कविता का चयन करें। बच्चे स्वयं कविता रचना करें।
- कविता के विषय पर कक्षा में चर्चा हो।
- सभी बच्चे इस गतिविधि में भाग लें।
- कविता पूर्ण भाव सहित सुनाई जाए।
- गति, लय, आरोह-अवरोह पर ध्यान हो।
- एकाग्रचित होकर कविता सुनाई जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–अभिव्यक्ति, गति, लय, आरोह-अवरोह सहित कविता वाचन, मंच पर बोलने का अभ्यास या मंच भय से मुक्ति, उच्चारण की स्पष्टता।

4. कहानी सुनाना/कहानी लिखना या घटना का वर्णन/लेखन

विषय :

1. घटना जिसे मैं भुला न सका (दुख का अधिकार)
   बच्चे ऐसी घटना का वर्णन करें, जो उन्होंने देखी हो और जिसे वे भुला न पाए।
2. व्यक्तित्व जिसे मैं भुला न पाया (शुक्रतारे के समान)
3. स्वरचित कहानी/स्वयं के अनुभव (मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय-संचयन)
   - कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी अपने जीवन में घटी घटना को संक्षेप में सुनाए।
   - निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दें :
     (1) घटना का स्थान, (2) घटना का समय, (3) घटना के कारण, (4) घटना के परिणाम, (5) घटना का महत्त्व।
   - घटना सुनाते समय विचारों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त किया जाए।
   - मौलिकता पर ध्यान दिया जाए।
   - घटना स्वयं के जीवन से भी जुड़ी हो सकती है या अपने किसी प्रिय के जीवन से जुड़ी भी।
   - कहानी अपनी लिखी भी हो सकती है या अपने किसी प्रिय लेखक की भी।

   मूल्यांकन के आधार बिंदु–संवाद-भावानुकूल, पात्रानुकूल/घटनाओं का क्रमिक विवरण/प्रस्तुतीकरण/उच्चारण।

5. परिचय देना या परिचय लेना

विषय :

1. पाठ्यपुस्तक के पाठों से प्रेरणा लेते हुए आधुनिक तरीके से किसी नए मित्र से संवाद स्थापित करते हुए अपना परिचय सरल शब्दों में देना तथा उसके विषय में जानकारी प्राप्त करना।
2. किसी विशिष्ट विभूति का परिचय प्राप्त करना (वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन)
3. विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों का परिचय प्राप्त करना (धर्म की आड़)
4. देश के लिए लड़ने व मर-मिटने वालों से–आज आतंकवाद से लड़ने वाले कई जाँबाज़ सिपाही हमारे बीच हैं, उनका परिचय प्राप्त करना या जो नहीं रहे उनके प्रियजनों से उनकी जानकारी प्राप्त करना (धर्म की आड़)
   - कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी इस गतिविधि में हिस्सा ले।
   - प्रश्न-निर्माण कला पर ध्यान दिया जाए।
   - अध्यापक/अध्यापिका बच्चों को प्रश्न-निर्माण कला सिखाएँ या बच्चों के द्वारा निर्मित प्रश्नों को सुनें व आवश्यकतानुसार उनमें संशोधन करें।
   - बच्चे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रश्न करें और उत्तर लिखकर लाएँ।
   - इस गतिविधि के लिए वे रेकॉर्डर का भी प्रयोग कर सकते हैं।

   मूल्यांकन के आधार बिंदु–प्रश्न-निर्माण कला/तार्किकता/संकलित तथ्यों की महत्ता/संकलित तथ्यों का प्रस्तुतिकरण।

6. अभिनय कला

विद्यार्थी भिन्न-भिन्न प्रकार के नाटकों या नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन करें। पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों के आधार पर विद्यार्थी अपनी अभिनय प्रतिभा का प्रदर्शन कर भाषा में संवादों की अदायगी का प्रभावशाली प्रयोग कर सकते हैं। नाटक एक सामूहिक क्रिया है, अत: नाटक के लेखन, संवाद, अभिनय, भाषा, उद्देश्य इत्यादि को देखते हुए शिक्षक सभी विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभा के अनुकूल कार्य दें।

विषय :

1. अतिथि देवो भव: (हास्य-व्यंग्य नाटिका) (तुम कब जाओगे अतिथि)
2. धर्म और राजनीति के रंग (आज के युग का सत्य) (धर्म की आड़)
3. बाल मज़दूरी (खुशबू रचते हैं हाथ)
4. एक अजनबी से मुलाकात (हामिद खाँ–संचयन)

5. 'एक फूल की चाह' पर आधारित नुक्कड़-नाटिका।

- कक्षा के बच्चों को चार या पाँच भागों में बाँट दिया जाए।
- सभी बच्चे अपनी रुचि का विषय चुन लें।
- वे स्वयं संवादों का निर्माण करें।
- भाषा पात्रानुकूल व भावानुकूल हो।
- आत्मविश्वास से भरी आवाज़ हो।
- दर्शकों को बाँधने वाली रोचकता हो।
- नाटक या नुक्कड़-नाटक का अंत प्रेरणादायक हो।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–कथानक / विषय-वस्तु / संवाद-रचना/ प्रस्तुतिकरण / उच्चारण।

7. सामूहिक चर्चा

विषय :

विद्यार्थी ज्वलंत विषयों को लें, उन पर चर्चा करें।

- कोई विशिष्ट घटना
- कोई नाटक
- कोई फ़िल्म
- कोई धारावाहिक
- कोई ज्वलंत समस्या (पिघलते ग्लेसियर्स, बढ़ता प्रदूषण, संसद में हुआ हंगामा, 26/11 जैसे आतंकवादी हमले)

मूल्यांकन के आधार बिंदुओं का विवरण

प्रस्तुतीकरण :

1. आत्मविश्वास
2. हाव-भाव के लिए
3. प्रभावशाली
4. तार्किकता
5. स्पष्टता

विषय-वस्तु :

1. विषय की सही अवधारणा
2. तर्क सम्मत

भाषा: शब्द चयन, स्तर और अवसर के अनुकूल स्पष्टता हो।

उच्चारण: स्पष्ट उच्चारण, सही अनुमान, आरोह-अवरोह पर अधिक बल देना चाहिए।

8. परियोजना कार्य

विद्यार्थी भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित परियोजना कार्य तैयार करें। विषय विद्यार्थियों की रुचि के हों। परियोजना कार्य तैयार कर बच्चे इसे कक्षा में प्रस्तुत करें। परियोजना कार्य में किए गए शोध-कार्य के परिणामों से सभी को अवगत कराएँ।

विषय :

1. बाल-मज़दूरी (खुशबू रचते हैं हाथ)
2. भारत में आतंकवाद
3. भारत की राजनीति का दंगल
4. भारत के वैज्ञानिक (वैज्ञानिक चेतना के वाहक)
5. मिट्टी और उसके भिन्न-भिन्न रंग (कीचड़ का काव्य)

- बच्चे अपनी रुचि का विषय लें।
- 10-12 पृष्ठ का परियोजना कार्य तैयार करें।
- 25 प्रतिशत चित्र व 75 प्रतिशत लिखित कार्य होना आवश्यक है।
- मौलिकता का पूरा ध्यान रखा जाए।
- परियोजना का प्रस्तुतिकरण पूरे आत्मविश्वास के साथ करें।
- परियोजना पर आधारित कोई भी प्रश्न, सुनने वाले शेष विद्यार्थी कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–प्रस्तुतीकरण / रचनात्मकता / शोध-कार्य / विषय-वस्तु / आत्मविश्वास।

• अभ्यास-प्रश्न •

नीचे दिए गए चित्रों को समझें और उस पर आधारित कहानी को अपने शब्दों में लिखें :

चित्रावली–1

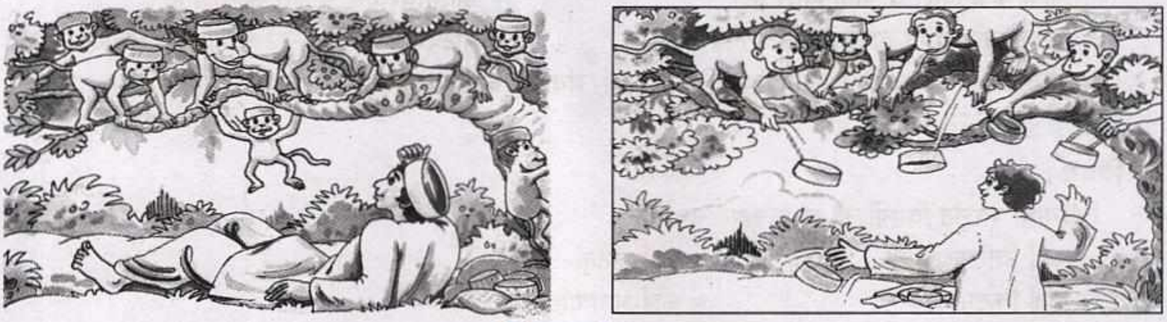

चित्रावली–2

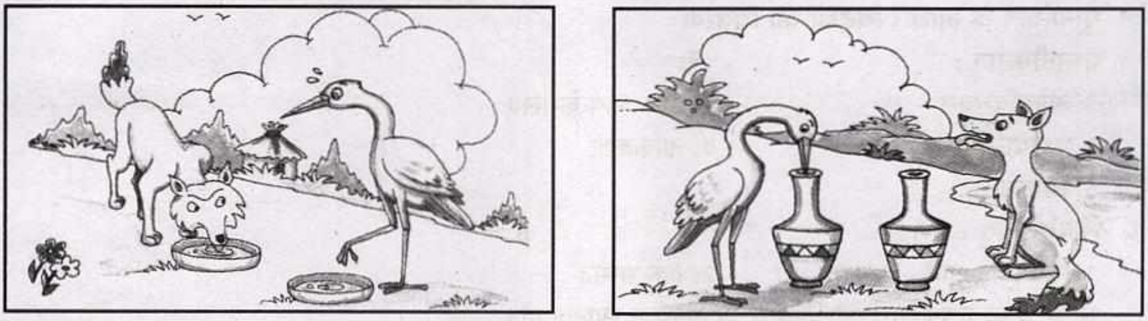

चित्रावली–3

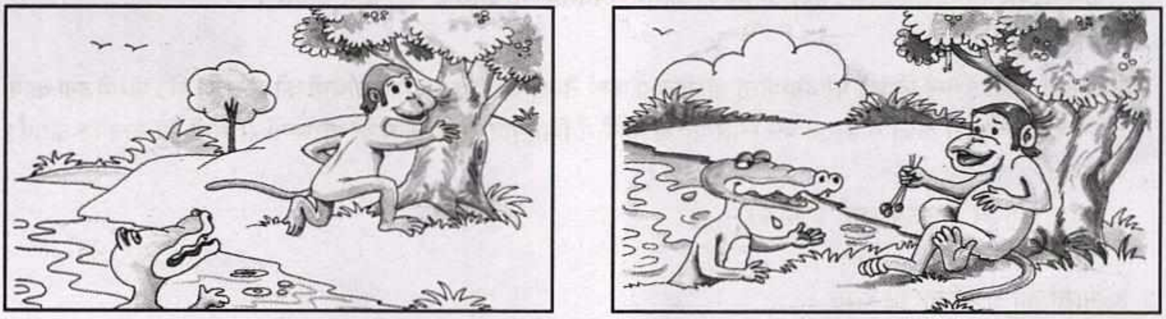

चित्रावली–4

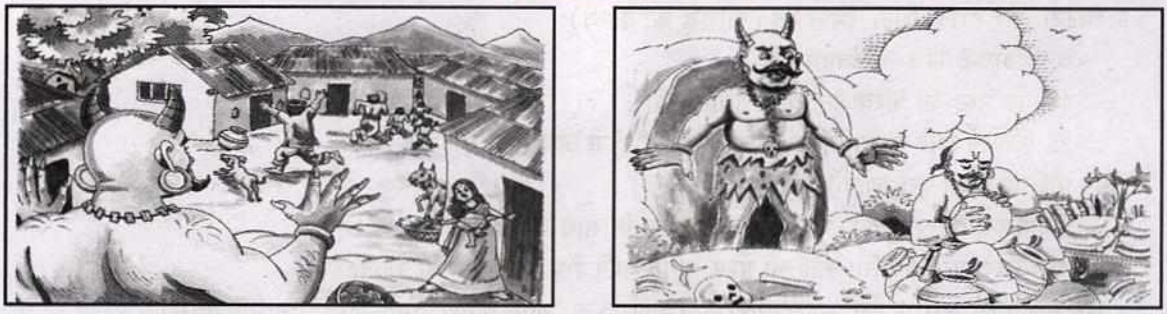

खंड-4

व्यावहारिक-व्याकरण (X)

अंक-विभाजन

निर्धारित अंक : 15

1. शब्द व पद में अंतर	2 अंक
2. रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर	3 अंक
3. समास	4 अंक
4. अशुद्धि शोधन	4 अंक
5. मुहावरे	2 अंक
कुल	15 अंक

1 शब्द और पद

परिभाषा–एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र, सार्थक ध्वनि को 'शब्द' कहते हैं; जैसे–राम, स्कूल, आत्मा, विद्वान आदि।

शब्द और पद

ये शब्द जब तक वाक्य में प्रयुक्त नहीं किए जाते तब तक स्वतंत्र होते हैं, लेकिन वाक्य में प्रयुक्त इन शब्दों का अस्तित्व स्वतंत्र न रहकर वाक्य के लिंग, वचन, कारक और क्रिया के नियमों से अनुशासित हो जाता है। व्याकरण के नियमों में बंधने से ये शब्द, शब्द न रहकर **पद** बन जाते हैं।

परिभाषा–वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही 'पद' कहलाते हैं।

इस प्रकार प्रचलित भाषा में शब्द को ही पद कहा जाता है, लेकिन दोनों में स्पष्ट अंतर पाया जाता है। वाक्य से परे शब्द, 'शब्द' होता है और वाक्य में प्रयुक्त शब्द 'पद'। 'शब्द' शब्दकोश में पाए जाते हैं, लेकिन वाक्य और भाषा पद में। वाक्य पदों से मिलकर बनता है शब्दों से नहीं। वाक्य में प्रयुक्त शब्द की आकृति और रूप में परिवर्तन किया जाता है। इस परिवर्तन के सहायक शब्दांश को व्याकरण की 'विभक्ति' कहते हैं। विभक्ति वाक्य के प्रत्येक पद में गुप्त अथवा प्रकट रूप से विद्यमान रहती है; जैसे–'राम गोविंद को देखता है।'–इस वाक्य में राम निर्विभक्ति पद है और 'देखता है' क्रिया का कर्ता है। कर्तृत्व प्रकट करने के कारण यह पद है, यद्यपि कोई विभक्ति साथ नहीं है। इस अध्याय में हम पदभेदों पर विचार करेंगे।

शब्द (पद) के भेद

रूप परिवर्तन अथवा प्रयोग के आधार पर शब्द के मुख्यत: दो भेद होते हैं : (1) विकारी और (2) अविकारी।

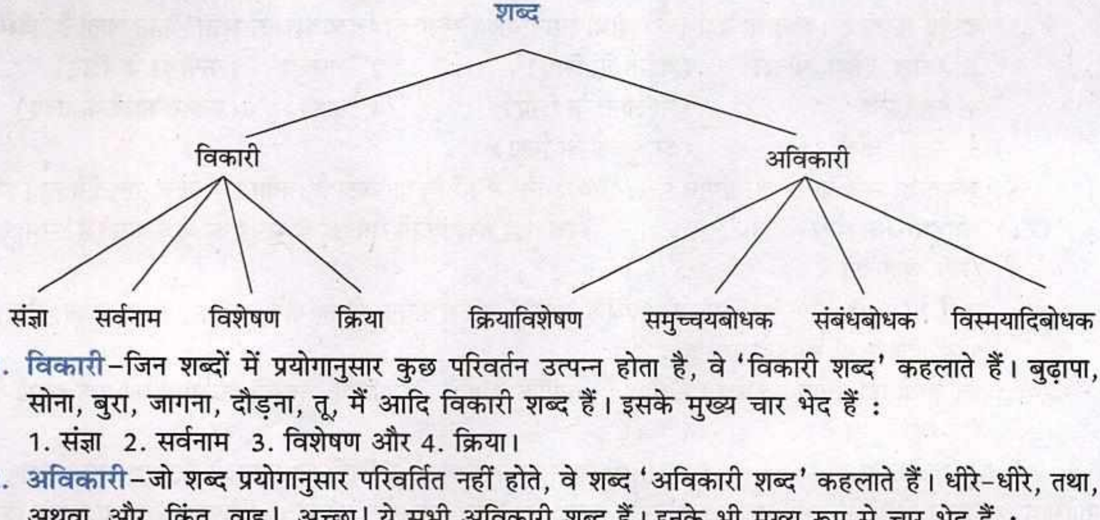

1. **विकारी**–जिन शब्दों में प्रयोगानुसार कुछ परिवर्तन उत्पन्न होता है, वे 'विकारी शब्द' कहलाते हैं। बुढ़ापा, सोना, बुरा, जागना, दौड़ना, तू, मैं आदि विकारी शब्द हैं। इसके मुख्य चार भेद हैं :
   1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण और 4. क्रिया।
2. **अविकारी**–जो शब्द प्रयोगानुसार परिवर्तित नहीं होते, वे शब्द 'अविकारी शब्द' कहलाते हैं। धीरे-धीरे, तथा, अथवा, और, किंतु, वाह!, अच्छा! ये सभी अविकारी शब्द हैं। इनके भी मुख्य रूप से चार भेद हैं :
   1. क्रियाविशेषण 2. समुच्चयबोधक 3. संबंधबोधक और 4. विस्मयादिबोधक।

संज्ञा (Noun)

'राम ने आगरा में सुंदर ताजमहल देखा।' इस वाक्य में हम पाते हैं कि 'राम' व्यक्ति का नाम है; 'आगरा' स्थान का नाम है; 'ताजमहल' एक वस्तु का नाम है तथा 'सुंदर' एक गुण का नाम है। इस प्रकार ये चारों क्रमशः व्यक्ति, स्थान, वस्तु और भाव के नाम हैं। व्याकरण में नाम को 'संज्ञा' कहते हैं। अतः ये चारों संज्ञाएँ हुईं।

परिभाषा–'किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।'

संज्ञा के भेद (Kinds of Noun)

संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं :

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)
2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)
3. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

संज्ञा के भेद

- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा
  - द्रव्यवाचक संज्ञा
  - समूहवाचक संज्ञा
- भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)–जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा, 'विशेष' का बोध कराती है 'सामान्य' का नहीं। प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचार-पत्रों, दिनों, महीनों आदि के नाम आते हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)–जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं। गाय, आदमी, पुस्तक, नदी आदि शब्द अपनी पूरी जाति का बोध कराते हैं, इसलिए जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। प्रायः जातिवाचक संज्ञा में वस्तुओं, पशु-पक्षियों, फल-फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़-जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं–**(क) द्रव्यवाचक संज्ञा** तथा **(ख) समूहवाचक संज्ञा**। वस्तुतः अंग्रेज़ी व्याकरण में इन दो भेदों को और बताया गया है और इस प्रकार संज्ञा के कुल पाँच भेद किए जाते हैं। इसी आधार पर कुछ लोग हिंदी में भी संज्ञा के पाँच भेद मानते हैं। वास्तव में ये दोनों भी एक प्रकार से 'जाति' को ही प्रकट करते हैं, अतः इन्हें जातिवाचक के उपभेदों के रूप में लिया जा रहा है :

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun)–कुछ संज्ञा शब्द ऐसे द्रव्य या पदार्थों का बोध कराते हैं, जिनसे अनेक वस्तुएँ बनती हैं। द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाली संज्ञा को **'द्रव्यवाचक संज्ञा'** कहा जाता है; जैसे :

1. स्टील, लोहा, पीतल	(बर्तनों के लिए)	2. लकड़ी	(फर्नीचर के लिए)
3. प्लास्टिक	(खिलौनों के लिए)	4. ऊन	(स्वेटर आदि के लिए)
5. सोना-चाँदी	(आभूषणों के लिए)		

द्रव्यवाची संज्ञा शब्दों का प्रयोग प्रायः 'एकवचन' में ही किया जाता है, क्योंकि ये शब्द गणनीय नहीं होते।

(ख) समूहवाचक संज्ञा (Collective Noun)–जो संज्ञा शब्द किसी समुदाय या समूह का बोध कराते हैं **'समूहवाचक संज्ञा'** कहलाते हैं।

जहाँ भी समूह होगा वहाँ एक से अधिक सदस्यों की संभावना होगी, जैसे–दरबार, सभा, कक्षा, सेना, टीम, भीड़, दल सभी समूहवाचक शब्द हैं।

इन शब्दों का प्रयोग एकवचन में होता है, क्योंकि ये एक ही जाति के सदस्यों के समूह को एक इकाई के रूप में व्यक्त करते हैं।

3. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)–जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। प्रायः गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्तभाव तथा क्रिया के मूल रूप भाववाचक संज्ञा के अंतर्गत आते हैं।

भाववाचक संज्ञाओं की रचना मुख्य पाँच प्रकार के शब्दों से होती है :

1. जातिवाचक संज्ञाओं से
2. सर्वनाम से
3. विशेषण से
4. क्रिया से
5. अव्यय से

1. जातिवाचक संज्ञाओं से :

जातिवाचक संज्ञा		भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा		भाववाचक संज्ञा
शिशु	–	शैशव, शिशुता	सज्जन	–	सज्जनता
विद्वान	–	विद्वता	आदमी	–	आदमियत
मित्र	–	मित्रता	इंसान	–	इंसानियत
पशु	–	पशुता	दानव	–	दानवता
पुरुष	–	पुरुषत्व	ब्राह्मण	–	ब्राह्मणत्व
सती	–	सतीत्व	बूढ़ा	–	बुढ़ापा
लड़का	–	लड़कपन	बंधु	–	बंधुत्व
गुरु	–	गौरव	व्यक्ति	–	व्यक्तित्व
बच्चा	–	बचपन	ईश्वर	–	ऐश्वर्य
कुमार	–	कौमार्य	चोर	–	चोरी
सेवक	–	सेवा	ठग	–	ठगी

2. सर्वनाम से :

सर्वनाम		भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम		भाववाचक संज्ञा
मम	–	ममत्व/ममता	निज	–	निजत्व
स्व	–	स्वत्व	अपना	–	अपनापन/अपनत्व
आप	–	आपा	एक	–	एकता
सर्व	–	सर्वस्व			

3. विशेषण से :

विशेषण		भाववाचक संज्ञा	विशेषण		भाववाचक संज्ञा
भयानक	–	भय	प्यासा	–	प्यास
विधवा	–	वैधव्य	निपुण	–	निपुणता
चालाक	–	चालाकी	बहुत	–	बहुतायत
शिष्ट	–	शिष्टता	मूर्ख	–	मूर्खता
सूक्ष्म	–	सूक्ष्मता	वीर	–	वीरता
ऊँचा	–	ऊँचाई	न्यून	–	न्यूनता
नम्र	–	नम्रता	आवश्यक	–	आवश्यकता
बुरा	–	बुराई	हरा	–	हरियाली
मोटा	–	मोटापा	भूखा	–	भूख
स्वस्थ	–	स्वास्थ्य	पतित	–	पतन
मीठा	–	मिठास	सुंदर	–	सुंदरता

सरल	–	सरलता	छोटा	–	छुटपन
शूर	–	शूरता, शौर्य	दुष्ट	–	दुष्टता
लोभी	–	लोभ	काला	–	कालापन/कालिमा
सहायक	–	सहायता	निर्बल	–	निर्बलता
आलसी	–	आलस्य			

4. क्रिया से :

क्रिया		भाववाचक संज्ञा	क्रिया		भाववाचक संज्ञा
सुनना	–	सुनवाई	जमना	–	जमाव
गिरना	–	गिरावट	पूजना	–	पूजा
चलना	–	चाल	हँसना	–	हँसी
कमाना	–	कमाई	गूँजना	–	गूँज
बैठना	–	बैठक	जलना	–	जलन
पहचानना	–	पहचान	भूलना	–	भूल
खेलना	–	खेल	गाना	–	गान
जीना	–	जीवन	उड़ना	–	उड़ान
चमकना	–	चमक	हारना	–	हार
सजाना	–	सजावट	थकना	–	थकावट
लिखना	–	लिखावट	पीना	–	पान
पढ़ना	–	पढ़ाई	बिकना	–	बिक्री

5. अव्यय से :

अव्यय		भाववाचक संज्ञा	अव्यय		भाववाचक संज्ञा
दूर	–	दूरी	मना	–	मनाही
ऊपर	–	ऊपरी	निकट	–	निकटता
धिक्	–	धिक्कार	नीचे	–	निचाई
शीघ्र	–	शीघ्रता	समीप	–	सामीप्य

• अभ्यास-प्रश्न •

1. एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र, सार्थक ध्वनि कहलाती है :
(क) पदबंध (ख) पद (ग) संज्ञा (घ) शब्द

2. वाक्य में प्रयुक्त शब्द कहलाते हैं :
(क) पदबंध (ख) संज्ञा (ग) पद (घ) सर्वनाम

3. रूप परिवर्तन अथवा प्रयोग के आधार पर शब्द के कितने भेद होते हैं :
(क) 2 (ख) 3 (ग) 1 (घ) 4

4. जिन शब्दों में प्रयोगानुसार कुछ परिवर्तन उत्पन्न होता है, वे कहलाते हैं :
(क) अविकारी शब्द (ख) पद (ग) विकारी शब्द (घ) पदबंध

5. जो शब्द प्रयोगानुसार परिवर्तित नहीं होते, वे कहलाते हैं :

(क) पदबंध (ख) अविकारी शब्द (ग) पद (घ) विकारी शब्द

6. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर संज्ञा शब्दों को छाँटकर उनका भेद लिखिए :

'पूस की रात' कहानी में हल्कू जबरा से कहता है कि वह उसके साथ अगले दिन जाड़े में खेत की रखवाली करने न आए। इतनी अधिक सर्दी में उसकी मृत्यु भी हो सकती है। यह पश्चिम की ओर से आने वाली हवा न जाने कहाँ से बरफ़ लिए आ रही है। हवा में भीषण ठंडक है। वह कहता है कि सर्दी बढ़ती ही जा रही है। खेती करने का यही फल है कि व्यक्ति जाड़े में काँपता रहे। ऐसे-ऐसे भाग्यवान लोग भी हैं जिनके पास मोटे-मोटे गद्दे, कंबल, रजाई आदि हैं।

....

....

....

7. दिए गए विकल्पों में से सही जातिवाचक संज्ञा शब्द छाँटिए :

1. (क) शैशव (ख) शिशु (ग) शिशुता
2. (क) पशु (ख) पशुता (ग) पशुत्व
3. (क) गुरुता (ख) गौरव (ग) गुरु
4. (क) बंधु (ख) बाँधव (ग) बंधुत्व
5. (क) दानवीय (ख) दानव (ग) दानवता

8. दिए गए विकल्पों में से सही भाववाचक संज्ञा शब्द छाँटिए :

1. (क) व्यक्ति (ख) व्यक्तित्व (ग) व्यक्तिता
2. (क) विद्वता (ख) विद्वान (ग) विदुषी
3. (क) विधवा (ख) विधाता (ग) वैधव्य
4. (क) ऐश्वर्य (ख) ईश्वर (ग) ऐश्वर
5. (क) पुरुष (ख) पुरुषत्व (ग) पौरुष

9. निम्नलिखित शब्दों के भाववाचक रूप बनाइए :

1. व्यक्ति	....	8. विद्वान	....	15. विधवा	....
2. ईश्वर	....	9. चोर	....	16. जीना	....
3. जागना	....	10. अहम्	....	17. मुसकराना	....
4. कुमार	....	11. साधु	....	18. पुरुष	....
5. सहायक	....	12. भूखा	....	19. आवश्यक	....
6. स्वतंत्र	....	13. मम	....	20. चतुर	....
7. बुनना	....	14. बैठना	....		

लिंग (Gender)

जिस चिह्न से यह ज्ञात हो कि कोई शब्द पुरुष-जाति के लिए प्रयुक्त हुआ है या स्त्री-जाति के लिए, उसे 'लिंग' कहते हैं। हिंदी भाषा में लिंग के मुख्यतः दो भेद हैं :

1. पुल्लिंग (Masculine Gender) 2. स्त्रीलिंग (Feminine Gender)

1. पुल्लिग (Masculine Gender)–जो शब्द पुरुष-जाति का बोध कराते हैं, वे 'पुल्लिंग' कहलाते हैं।

पुल्लिग की पहचान

1. जिन शब्दों के अंत में 'अ' हो वे प्राय: पुल्लिग होते हैं; जैसे–खेल, संसार, मिलाप, नाच आदि।
2. जिन शब्दों के अंत में 'आ' हो वे पुल्लिग होते हैं; जैसे–लड़का, मोटा, छोटा, कपड़ा आदि।
3. जिन शब्दों के अंत में 'आव', 'पा', 'पन' और 'न' होते हैं वे पुल्लिग होते हैं; जैसे–बढ़ाबा, बुढ़ापा, बचपन, लेन-देन, अध्ययन, दमन आदि।
4. देशों, पहाड़ों व समुद्रों के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–भारतवर्ष, चीन, जापान, हिमालय, सतपुड़ा, अरब सागर, प्रशांत महासागर आदि।
5. मासों व दिनों के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–चैत, बैसाख, ज्येष्ठ, सोमवार, मंगलवार आदि।
6. पृथ्वी को छोड़कर अन्य ग्रहों के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–सूर्य, शनि, मंगल, चंद्र आदि।
7. पेड़ों के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–आम, पीपल, शीशम, वट, साल आदि।
8. धातुओं के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–सोना, ताँबा, लोहा, पीतल, सीसा आदि। (**अपवाद**–चाँदी)
9. अनाजों के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–गेहूँ, चना, मक्का, चावल, जौ आदि।
10. द्रव्य तथा पदार्थों के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–पानी, तेल, घी, दही आदि।
11. शरीर के कुछ अंगों के नाम पुल्लिग होते हैं; जैसे–सिर, गला, कान, होंठ, हाथ, पैर आदि।
12. जिन शब्दों के अंत में 'त्र' वर्ण आता है वे पुल्लिग होते हैं; जैसे–शस्त्र, अस्त्र, वस्त्र, नेत्र, चरित्र, क्षेत्र आदि।
13. कुछ नाम ऐसे होते हैं जो सदैव पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त होते हैं; जैसे–तोता, मच्छर, कौआ, बिच्छू, खटमल आदि।

2. स्त्रीलिंग (Feminine Gender)–जो शब्द स्त्री-जाति का ज्ञान कराते हैं, वे 'स्त्रीलिंग' कहलाते हैं।

स्त्रीलिंग की पहचान

1. हिंदी की ईकारांत संज्ञाएँ प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं; जैसे–चिट्ठी, नाली, खेती, रोटी, मोटी, टोपी आदि। (**अपवाद**–पानी, घी, दही आदि द्रव्य पदार्थ)
2. भाषाओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–जापानी, गुजराती, हिंदी, रूसी, अंग्रेज़ी आदि।
3. तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या आदि।
4. नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा आदि।
5. नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–भरणी, कृतिका, रोहिणी आदि।
6. भोजनों-मसालों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–रोटी, सब्ज़ी, पूरी, जलेबी, मिर्ची, हल्दी आदि।
7. शरीर के कुछ अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–गर्दन, छाती, अँगुली, टाँग, जुबान, नाक, आँखें आदि।
8. कुछ ऊकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–बालू, झाड़ू, लू आदि।

लिंग परिवर्तन संबंधी नियम

1. अ तथा आ को ई करने से :

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	पुल्लिग		स्त्रीलिंग
नर	–	नारी	पुत्र	–	पुत्री
दादा	–	दादी	नाना	–	नानी
बकरा	–	बकरी	बेटा	–	बेटी

लड़का	–	लड़की	नाला	–	नाली
ब्राह्मण	–	ब्राह्मणी	भतीजा	–	भतीजी
देव	–	देवी	मामा	–	मामी
गोप	–	गोपी	घोड़ा	–	घोड़ी
गधा	–	गधी	मुर्गा	–	मुर्गी
दास	–	दासी	हरिण	–	हरिणी
हिरन	–	हिरनी	मेढक	–	मेढकी
लंबा	–	लंबी	पीला	–	पीली

2. अ तथा **आ** को **इया** करने से :

बूढ़ा	–	बुढ़िया	गुड्डा	–	गुड़िया
डिब्बा	–	डिबिया	चिड़ा	–	चिड़िया
बछड़ा	–	बछिया	चूहा	–	चुहिया
बेटा	–	बिटिया	बंदर	–	बंदरिया

3. व्यवसायवाचक, जातिवाचक तथा **उपनामवाचक** शब्दों में **इन** या **आइन** जोड़ने से :

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग
धोबी	–	धोबिन	भंगी	–	भंगिन
लुहार	–	लुहारिन	तेली	–	तेलिन
जोगी	–	जोगिन	माली	–	मालिन
कहार	–	कहारिन	दर्ज़ी	–	दर्ज़िन
नाई	–	नाइन	जुलाहा	–	जुलाहिन
पापी	–	पापिन	हलवाई	–	हलवाइन
चमार	–	चमारिन	साँप	–	साँपिन

4. संबंध, जाति तथा **उपनामवाचक** शब्दों में **आनी/आणी** जोड़ने से :

देवर	–	देवरानी	क्षत्रिय	–	क्षत्राणी
नौकर	–	नौकरानी	मेहतर	–	मेहतरानी
चौधरी	–	चौधरानी	मुगल	–	मुगलानी
सेठ	–	सेठानी	इंद्र	–	इंद्राणी
रुद्र	–	रुद्राणी	पठान	–	पठानी

5. प्राणीवाचक और **जातिवाचक** संज्ञाओं में **नी** जोड़ने से :

ऊँट	–	ऊँटनी	शेर	–	शेरनी
मोर	–	मोरनी	सिंह	–	सिंहनी
रीछ	–	रीछनी	स्यार	–	स्यारनी
राजपूत	–	राजपूतनी	भाट	–	भाटनी
भील	–	भीलनी	जाट	–	जाटनी

6. तत्सम अकारांत शब्दों के अंत में **आ** जोड़कर :

बाल	–	बाला	कांत	–	कांता
श्याम	–	श्यामा	तनुज	–	तनुजा

प्रिय	–	प्रिया	पालित	–	पालिता
सुत	–	सुता	पूज्य	–	पूज्या
तनय	–	तनया	चंचल	–	चंचला

7. **तत्सम संज्ञा** शब्दों में **अक** का **इका** करने से :

लेखक	–	लेखिका	गायक	–	गायिका
पाठक	–	पाठिका	संयोजक	–	संयोजिका
बालक	–	बालिका	सेवक	–	सेविका
अध्यापक	–	अध्यापिका	नायक	–	नायिका

8. **तत्सम शब्दों** में **ता** का **त्री** करने से :

दाता	–	दात्री	वक्ता	–	वक्त्री
धाता	–	धात्री	कर्ता	–	कर्त्री

9. **तत्सम शब्दों** में **मान** और **वान** का क्रमश: **मती** और **वती** करने से :

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	पुल्लिग		स्त्रीलिंग
सत्यवान	–	सत्यवती	भगवान	–	भगवती
रूपवान	–	रूपवती	श्रीमान	–	श्रीमती
बुद्धिमान	–	बुद्धिमती	पुत्रवान	–	पुत्रवती
आयुष्मान	–	आयुष्मती	बलवान	–	बलवती
धनवान	–	धनवती			

10. **इनी प्रत्यय** जोड़ने से (**अ** और **ई** का **इनी** या **इणी** होगा) :

यशस्वी	–	यशस्विनी	हाथी	–	हथिनी
मनोहारी	–	मनोहारिणी	एकाकी	–	एकाकिनी
स्वामी	–	स्वामिनी	हंस	–	हंसिनी

11. **नित्य पुल्लिग** तथा **नित्य स्त्रीलिंग** शब्दों में क्रमश: **मादा** और **नर** शब्द जोड़ने से :

भालू	–	मादा भालू	कोयल	–	नर कोयल
मगरमच्छ	–	मादा मगरमच्छ	चील	–	नर चील
गैंडा	–	मादा गैंडा	मक्खी	–	नर मक्खी
खरगोश	–	मादा खरगोश	गिलहरी	–	नर गिलहरी

12. हिंदी में कुछ **पुल्लिग शब्द** अपने **स्त्रीलिंग शब्द** से भिन्न होते हैं :

पिता	–	माता	भाई	–	बहन
पुरुष	–	स्त्री	साला	–	साली
विद्वान	–	विदुषी	पति	–	पत्नी
ससुर	–	सास	बैल	–	गाय
सम्राट	–	सम्राज्ञी	विधुर	–	विधवा
कवि	–	कवयित्री	बिलाव	–	बिल्ली
राजा	–	रानी	साहब	–	मेम
वर	–	वधू	पुत्र	–	पुत्रवधू

13. कुछ सर्वनाम शब्दों का लिंग परिवर्तन इस प्रकार होता है :

मेरा	–	मेरी	उसका	–	उसकी
तुम्हारा	–	तुम्हारी	तेरा	–	तेरी

14. कई शब्दों का प्रयोग दोनों लिंगों में समान रूप से होता है :

नाक, मेज़, कुर्सी, साइकिल, सरकार, दही आदि।

15. कई पदबोधक शब्दों का प्रयोग स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से होता है, अतः ये शब्द उभयलिंगी शब्द कहलाते हैं।

प्रधानमंत्री, न्यायाधीश, राजदूत, राज्यपाल, सचिव आदि।

16. कुछ प्रत्यय युक्त शब्द भी उभयलिंगी होते हैं; जैसे–पढ़ाकू, रट्टू, झगड़ालू, तैराक, भुलक्कड़, फक्कड़, दयालु आदि।

17. एक ही शब्द के पर्यायवाची शब्दों में से कुछ पुल्लिग व कुछ स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–व्यथा के पर्याय दुख, क्लेश (पुल्लिंग) तथा वेदना, पीड़ा (स्त्रीलिग)।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित के लिंग परिवर्तन कीजिए :

1. साधु	....	14. पुरुष	....	27. बंदर	....
2. युवा	....	15. कुमार	....	28. शिष्य	....
3. गुणवान	....	16. धोबी	....	29. सिंह	....
4. वीर	....	17. नगर	....	30. तपस्वी	....
5. सम्राट	....	18. सुत	....	31. श्रीमान	....
6. युवती	....	19. शेर	....	32. बूढ़ा	....
7. प्रेमी	....	20. सेठ	....	33. माली	....
8. मोर	....	21. जुलाहा	....	34. विधुर	....
9. बिल्ली	....	22. नायिका	....	35. युवक	....
10. भक्त	....	23. कवि	....	36. विद्वान	....
11. नाग	....	24. दर्जी	....	37. देवर	....
12. सेवक	....	25. ससुर	....	38. विदुषी	....
13. अध्यापक	....	26. पंडित	....	39. कवि	....

वचन (Number)

शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का ज्ञान हो, उसे 'वचन' कहते हैं। हिंदी में वचन दो प्रकार के हैं :

1. एकवचन 2. बहुवचन।

1. **एकवचन (Singular Number)**–शब्द के जिस रूप से केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं; जैसे–लड़का, नदी, पुस्तक आदि।
2. **बहुवचन (Plural Number)**–शब्द के जिस रूप से अधिक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं; जैसे–लड़कियाँ, पुस्तकें, नदियाँ आदि।

कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त किए जाते हैं; जैसे–दर्शन, आँसू, होश, बाल आदि।

बहुवचन बनाने के नियम

1. अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'अ' के स्थान पर 'एं' करने से :

एकवचन		बहुवचन	एकवचन		बहुवचन
बहन	–	बहनें	रात	–	रातें
बात	–	बातें	किताब	–	किताबें
आँख	–	आँखें	कलम	–	कलमें

2. इ या ई स्त्रीलिंग के अंत में इ या ई के स्थान पर इयाँ करने से :

थाली	–	थालियाँ	गति	–	गतियाँ
देवी	–	देवियाँ	टोपी	–	टोपियाँ
रीति	–	रीतियाँ	नदी	–	नदियाँ
तिथि	–	तिथियाँ	सखी	–	सखियाँ

3. आ, उ और ऊ अंत वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में आ का एँ करने से :

वस्तु	–	वस्तुएँ	लता	–	लताएँ
सभा	–	सभाएँ	गाथा	–	गाथाएँ
कविता	–	कविताएँ	कन्या	–	कन्याएँ
बहू	–	बहुएँ	माता	–	माताएँ

4. आ अंत वाले पुल्लिंग शब्दों के अंत में आ के स्थान पर ए कर देने से :

बच्चा	–	बच्चे	बेटा	–	बेटे
छाता	–	छाते	पंखा	–	पंखे
लड़का	–	लड़के	घोड़ा	–	घोड़े
संतरा	–	संतरे	गधा	–	गधे

5. कुछ आकारांत शब्दों के अंत में अनुस्वार लगाने से :

चुहिया	–	चुहियाँ	खटिया	–	खटियाँ
डिबिया	–	डिबियाँ	लुटिया	–	लुटियाँ
चिड़िया	–	चिड़ियाँ	गुड़िया	–	गुड़ियाँ

6. कई शब्दों के अंत में विशेष शब्द जोड़कर भी उनका बहुवचन प्रकट किया जाता है :

बालक	–	बालकगण	छात्र	–	छात्रवृंद
देव	–	देवगण	पक्षी	–	पक्षीवृंद
पाठक	–	पाठकवर्ग	विद्वान	–	विद्वज्जन
अकाली	–	अकालीदल	सिक्ख	–	सिक्खलोग
प्रजा	–	प्रजाजन	अध्यापक	–	अध्यापकगण

7. कुछ शब्दों के रूप एकवचन तथा बहुवचन में समान पाए जाते हैं :

गिरि	–	गिरि	घर	–	घर
छाया	–	छाया	कल	–	कल
याचना	–	याचना	क्षमा	–	क्षमा
पानी	–	पानी	जल	–	जल
क्रोध	–	क्रोध	मुनि	–	मुनि

8. आदर या सम्मान के लिए एकवचन, बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होता है; जैसे :

1. आप कहाँ जा रहे हैं? 2. महात्मा गांधी हिंसा के विरोधी थे।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. (क) **निम्नलिखित वाक्यों के वचन बदलिए :**

1. बालिका ने अच्छा गीत सुनाया। ....
2. शिक्षिकाएँ शीघ्र कक्षा में जाएँगी। ....
3. पक्षी उड़ गए। ....
4. बालक ने अच्छा काम किया। ....
5. लड़का भाग गया। ....
6. गाय चर रही है। ....
7. आम पक गया। ....
8. लड़का खेल रहा है। ....
9. चिड़िया ने शोर मचाया। ....
10. गुड़िया को कौन ले गया? ....
11. उल्लू अँधेरे में देख सकता है। ....
12. नानी ने कहानी सुनाई। ....
13. ममता ने गाना गाया। ....
14. लड़की गा रही है। ....
15. रोटी कौन खा गया? ....
16. भेड़ चर रही है। ....
17. उसकी बेटी यहीं रहती है। ....
18. मिठाई पर मक्खी बैठी है। ....
19. यह वस्तु अच्छी है। ....
20. गायक ने अच्छा गाना गाया। ....
21. रमेश का कुत्ता भौंक रहा है। ....
22. गाय घास खाती है। ....
23. लड़के ने पढ़ना आरंभ किया। ....
24. उल्लू अँधेरे में देख सकता है। ....
25. वहाँ गुड़िया मिलती है। ....
26. लड़की नाच रही है। ....
27. लड़की शीघ्र ही कक्षा में जाएगी। ....
28. लड़की अच्छा खेली। ....
29. लड़की घूमने जा रही है। ....
30. लड़का खेल रहा है। ....

31. समाज सेविका आ रही है। ....

32. काला बादल घिर आया। ....

33. गायिका गीत गा रही है। ....

34. गाय घास चर रही है। ....

2. रंगीन का वचन बदलकर फिर से वाक्य लिखिए :

1. बाढ़ में नदी का पुल टूट गया। ....
2. मंच पर लड़की नाच रही है। ....
3. गुलाब की कली फूल बन गई। ....
4. विद्यार्थी ने कविता सुनाई। ....
5. बड़ा-बड़ा संतरा बिक रहा है। ....
6. आकाश से तारा टूटकर गिरा। ....
7. कवि ने कविता सुनाई। ....
8. युवक नौकरी चाहता है। ....
9. लड़का गीत गा रहा था। ....
10. विद्यार्थी ने बाज़ी जीती। ....
11. लड़का नदी में तैर रहा था। ....
12. पक्षी गगन में उड़ रहा है। ....
13. शायद आज वह आएगा। ....
14. दर्ज़ी ने कपड़े सी लिए। ....
15. आपने यह पुस्तक कहाँ-से खरीदी? ....
16. पेड़ से पत्ता गिरता है। ....
17. भूकंप में शहर का मकान ढह गया। ....
18. आम पक गया है। ....
19. उपवन में फूल खिला है। ....
20. वह चित्र बहुत अच्छा लगता है। ....

3. निम्नलिखित का बहुवचन रूप लिखिए :

कटोरी	....	नदी	....
स्त्री	....	पुस्तक	....
रास्ता	....	लता	....
आँसू	....	लड़की	....
दासी	....	कविता	....

भैंस	....	रात	....
लुटिया	....	क्रोध	....
अध्यापिका	....	आँख	....
खटिया	....	छाया	....
गाय	....	बाला	....

कारक (Case)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया से जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं; जैसे– तुम मेज़ से काग़ज़ निकालकर और कुर्सी पर बैठकर कलम से अपने पिता को पत्र लिखो। इस वाक्य में मेज़ (से) कुर्सी (पर), कलम (से), पिता (को) आदि संज्ञा शब्दों के साथ आए विभक्ति चिह्न, इन संज्ञा शब्दों का संबंध क्रिया 'लिखो' से जोड़ रहे हैं। अन्य शब्दों का संबंध क्रिया से जोड़ने वाले ये विभक्ति चिह्न 'कारक' कहलाते हैं। इन कारक चिह्नों को 'परसर्ग' भी कहा जाता है।

कारक के भेद (Kinds of Case)

हिंदी में कारक आठ प्रकार के हैं :

क्र०सं०	कारक	परसर्ग	पहचान	उदाहरण	वाक्य-प्रयोग
1.	कर्ता (क्रिया को करने वाला)	शून्य, ने	कौन ? किसने ?	रोहित रोहित ने	रोहित पतंग उड़ा रहा है। रोहित ने पतंग उड़ाई।
2.	कर्म (जिस पर क्रिया का फल पड़े)	शून्य, को	क्या ? किसको ?	कहानी पुत्र को	सोनिया कहानी पढ़ती है। पिता ने पुत्र को बुलाया।
3.	करण (क्रिया करने का साधन)	से, के द्वारा, द्वारा	क्या ? किससे ? किसके द्वारा	कार से ब्रश के द्वारा पेन द्वारा	रोहन कार से बाज़ार जाता है। गौतम ब्रश के द्वारा चित्रकारी करता है। मैं पेन द्वारा लिखती हूँ।
4.	संप्रदान (जिसके लिए क्रिया की जाए) के निमित्त	के लिए को के अर्थ किस निमित्त	किसके लिए ? किसको ? किस अर्थ निमित्त	माँ के लिए मीना को जीने के अर्थ परोपकार के परोपकार के निमित्त सद्कार्य करो।	जसिका माँ के लिए फल लाई। मोहित ने मीना को पुस्तक दी। जीने के अर्थ कब समझोगे?
5.	अपादान (जिससे अलगाव हो)	से	किससे	पेड़ से	पेड़ से फल गिरा।
6.	संबंध (वाक्य में अन्य पदों से संबंध दर्शाने वाला)	का, के, की रा, रे, री, ना, ने, नी	किसका ? किसके ? किसकी ?	रीता का मेरी बहन अपना	रीता का भाई कल हमारे घर आएगा। मेरी बहन डॉक्टर है। अपना काम करो।
7.	अधिकरण (क्रिया का आधार)	में, पर	किसमें ? किस पर	कक्ष में कुर्सी पर	संगोष्ठी कक्ष में संगोष्ठी चल रही है। कुर्सी पर कपड़े पड़े हैं।
8.	संबोधन	हे, अरे	......	हे ईश्वर	हे ईश्वर! दया करो।

1. **कर्ता कारक (Subjective Case)**–क्रिया के करने वाले को व्याकरण में कर्ता कहते हैं। यह विशेष रूप से संज्ञा या सर्वनाम ही होता है और इसका सीधा संबंध क्रिया से होता है।

"संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं।" जैसे :

राधा **ने** पत्र लिखा। **श्याम** खेलता है।

इन दोनों वाक्यों में हम देखते हैं कि राधा और श्याम दोनों ही क्रमशः लिखने और खेलने की क्रिया से जुड़े हैं, लेकिन राधा के साथ 'ने' विभक्ति का प्रयोग हुआ है और श्याम के साथ कोई विभक्ति नहीं है। विशेष रूप से जब वाक्य में भूतकाल की सकर्मक क्रिया होती है, तो 'ने' परसर्ग का प्रयोग होता है अन्यथा कर्ता कारक का प्रयोग विभक्ति के बिना ही किया जाता है।

2. **कर्म कारक (Objective Case)**–क्रिया का प्रभाव पड़ने वाले रूप को 'कर्म कारक' कहा जाता है। कर्म केवल सकर्मक क्रिया के साथ ही आता है। इसका परसर्ग 'को' है। परसर्ग 'को' का प्रयोग विशेष रूप से प्राणीवाचक संज्ञा के साथ ही होता है, लेकिन कभी-कभी बल देने के लिए अपवाद स्वरूप अप्राणीवाचक पदार्थों के साथ भी इसका प्रयोग होता है। इस प्रकार :

"संज्ञा या सर्वनाम के उस रूप को कर्म कारक कहते हैं, जिसपर क्रिया का प्रभाव पड़ता है।"

परसर्ग सहित :

माँ ने **बेटे को** समझाया। राधा ने **नौकर को** बुलाया।

परसर्ग रहित :

मैंने कल **बंदर** देखा। सुधा ने चिड़ियाघर में **पक्षी** देखे।

अप्राणीवाचक बिना परसर्ग के :

वह **पत्र** लिखता है। वह **पुस्तक** पढ़ रहा है।

अप्राणीवाचक परसर्ग के साथ :

मेज़ को सही जगह पर रख दो। **पेड़ को** मत काटो।

कभी-कभी एक ही वाक्य में दो कर्म भी पाए जाते हैं :

शशी ने **रमा** को **पुस्तक** दी। माँ **बच्चे** को **खाना** खिला रही है।

विशेष :

1. वाक्य में मुख्य तथा गौण कर्म हो तो 'को' गौण कर्म के साथ आता है; जैसे :
   लड़के ने गधे को पत्थर मारा।
2. जो प्रेरणार्थक क्रियाएँ अकर्मक क्रियाओं से बनती हैं। उनके कर्म के साथ प्राय: 'को' आता है; जैसे :
   मोटर चलती है। ड्राइवर मोटर को चलाता है।
   लड़का गिरता है। कुत्ता लड़के को गिराता है।
3. गतिवाचक क्रियाओं का प्रयोग करते समय स्थानदर्शक कर्म के साथ 'को' नहीं आता; जैसे :
   सेठ जी आज मुंबई गए। स्वाति कॉलेज जा रही है।
4. 'चाहिए' क्रिया का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ ही 'को' प्रत्यय आता है; जैसे :
   विद्यार्थियों को पढ़ाई करनी चाहिए।
5. विशिष्ट प्रयोग में भी 'को' का उपयोग किया जाता है; जैसे :
   बरसात आने को है। बोलने को तो वह बोल गया।

3. **करण कारक (Instrumental Case)**–करण का अर्थ 'साधन' होता है अर्थात् जिसके द्वारा कार्य किया जाए। इसका सीधा संबंध क्रिया के साथ होता है।

"संज्ञा या सर्वनाम के उस रूप को करण कारक कहते हैं, जिससे क्रिया के साधन का बोध हो।" इसका परसर्ग 'से', 'के द्वारा' है। कभी-कभी इसका प्रयोग परसर्ग के बिना भी होता है।

'से' परसर्ग	–	मैं गेंद से खेलता हूँ।
		मैंने गिलास से पानी पिया।
'के द्वारा' परसर्ग	–	मुझे पत्र द्वारा सूचना प्राप्त हुई।
		उसने चाकू के द्वारा खरबूज़ा काटा।
परसर्ग रहित	–	मैं कानों सुनी बात कह रहा हूँ।
		मैंने आँखों देखी बात कही है।
		अकाल में हज़ारों गरीब भूखों मरे।
		बच्चों के हाथों काम करा लेना आसान नहीं है।

साधन के सिवा करण कारक के अर्थ में 'से' का प्रयोग निम्नलिखित रूपों में भी होता है:

(अ) 1. रीति या पद्धति – बेटा! ध्यान से अध्ययन करो। क्रम से आओ।
2. विकार – बेचारे की क्या हालत हो गई?
3. कारण – अध्ययन करने से अच्छे गुण मिलते हैं।
4. दशा या स्थिति – कर्ण स्वभाव से ही दानवीर था।
5. मूल्य – सोना किस दाम से बेचा जाता था?
6. साहित्य – आम खाने से काम पेड़ गिनने से क्या फायदा?

(आ) शरीर का दोष दिखलाने के लिए करण कारक 'से' का प्रयोग किया जाता है; जैसे :
रणजीत सिंह एक आँख से अंधा था। बेचारा एक पैर से लँगड़ा हो गया।

(इ) कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्ता के साथ करण कारक 'से' का प्रयोग किया जाता है; जैसे :
जानकी से गाय देखी गई। रोगी से चला नहीं जाता।

(ई) पूछना, करना, बोलना, कहना, प्रार्थना करना (प्यार, नफरत, इंकार तथा बात करना), ढँकना और माँगना– इन क्रियाओं का प्रयोग करते समय 'से' का प्रयोग किया जाता है; जैसे :
माँ से पूछकर बाहर जाओ। पिता जी से पैसे माँगो।
देश से प्यार करना हमारा कर्तव्य है।

4. **संप्रदान कारक (Dative Case)**–संप्रदान का अर्थ 'देना' होता है। वाक्य में जिसे कुछ दिया जाए या जिसके लिए कुछ किया जाए, वे शब्द संप्रदान कारक के रूप होते हैं।
"संज्ञा या सर्वनाम के उस रूप को जिससे कुछ दिए जाने या किसी के लिए कुछ किए जाने की क्रिया का बोध हो वे संप्रदान कारक कहलाते हैं।"
इसका परसर्ग–को, के लिए, के वास्ते, के निमित्त, के हेतु, के अर्थ आदि रूपों में है; जैसे :

मैंने राधा को पुस्तक दी।	('को' परसर्ग)
मैंने राधा के लिए कपड़े खरीदे।	('के लिए' परसर्ग)
गरीबों के वास्ते सभी दान दो।	(के वास्ते)
बाढ़ सहायता कोष के निमित्त धन प्रदान करो।	(के निमित्त)
परिवार हेतु अपना कर्तव्य पूरा करो।	(हेतु)
नौकरी के अर्थ परिश्रम तो करना ही पड़ेगा।	(के अर्थ)

5. **अपादान कारक (Ablative Case)**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से पृथकता का, दूरी का, तुलना का, निकलने का, डरने का, सीखने का तथा लज्जित होने का बोध हो, उसे 'अपादान कारक' कहते हैं; जैसे :

फल पेड़ से गिर पड़ा। (पृथक्ता) मेरा घर स्कूल से बहुत दूर है। (दूरी)

गंगा हिमालय से निकलती है। (स्रोत) दिव्या रमा से अच्छा गाती है। (तुलना)

विद्यार्थी गुरु जी से डरते हैं। (डरने) मैंने माँ से खाना बनाना सीखा। (सीखने)

राधा बड़ों से शर्माती है। (लज्जा)

6. **संबंध कारक (Genitive Case)**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग–का, के, की; रा, रे, री; ना, ने, नी है।

यह सीता का पुत्र है। यह सुरेश के मित्र का घर है।

यह रमा की सहेली है। कल तुम्हारा पत्र आया था।

वह तुम्हारे घर गया है। उसने तुम्हारी पुस्तक ले ली।

7. **अधिकरण कारक (Locative Case)**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे 'अधिकरण कारक' कहते हैं। इसका परसर्ग–'में' और 'पर' है :

पुस्तकालय में बहुत-सी किताबें हैं। गिलास मेज़ पर रख दो।

स्थान के संदर्भ में :

राम घर पर सो रहा है। शेर वन में पाए जाते हैं।

भाव के संदर्भ में :

तुम्हें अच्छा काम करने पर पुरस्कार मिलेगा। मुख्य अतिथि के सम्मान में यह आयोजन किया गया है।

काल के संदर्भ में :

वह शाम होने पर घर आएगा। वह अपने घर चार घंटे में पहुँचेगा।

8. **संबोधन कारक (Vocative Case)**–संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने, बुलाने, सुनाने या सावधान करने के भाव का बोध होता है, उसे 'संबोधन कारक' कहते हैं।

अरे! बच्चो शोर मत मचाओ। हैलो! क्या हाल है?

ऐ! लड़की कहाँ जा रही हो? अरे भाई! यहाँ तो आओ।

ठहरो! उस तरफ़ ख़तरा है। हे भगवान! कैसी लड़ाई चल रही है।

कर्म कारक तथा संप्रदान कारक में अंतर

माँ ने बेटे को समझाया। (कर्म कारक)

मैंने राधा को पुस्तक दी। (संप्रदान कारक)

इन दोनों उदाहरणों में हम देखते हैं कि कर्म की विभक्ति 'को', उसे कर्ता द्वारा किए गए कार्य का उपभोक्ता बनाती है अर्थात् कर्ता जो भी व्यापार (कार्य आदि) करता है, उसका फल कर्म को भोगना पड़ता है; जैसे–कर्म के उक्त उदाहरण में 'माँ' कर्ता ने जो 'समझाने' का कार्य किया है, उसका फल 'समझाना' बेटे पर पड़ा अर्थात् बच्चे को समझाया गया। इस वाक्य के अंतर्गत बेटा कर्म है। संप्रदान के उदाहरण में हम पाते हैं कि संप्रदान की विभक्ति 'को' कर्ता द्वारा उसे कुछ दिलाती है अर्थात् संप्रदान को तो कर्ता द्वारा कुछ वस्तु दान या उपहार रूप में प्राप्त होती है; जैसे–संप्रदान के उक्त उदाहरण में–'राधा को' में कर्ता से कुछ (पुस्तक की) प्राप्ति हुई है। अत: 'राधा को' संप्रदान है। यही दोनों में अंतर है।

करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर

(क) राजेश गेंद से खेल रहा है।

(ख) फल पेड़ से गिर पड़ा।

प्रथम वाक्य में 'खेलने' की क्रिया 'गेंद' की सहायता से हो रही है अर्थात् खेलना क्रिया का साधन गेंद है। अतः 'गेंद से' करण कारक है, जबकि अपादान के उदाहरण से स्पष्ट है कि 'पेड़' तथा 'फल' को अपादान की 'से' विभक्ति एक-दूसरे से अलग कर रही है अर्थात् यहाँ 'पेड़ से' 'फल' का अलग होना जाना जा रहा है। अतः 'पेड़ से' अपादान कारक है। इसके अलावा जिस रूप से दूरी का, तुलना का, निकलने का, डरने का, सीखने का तथा लज्जित होने के भाव का बोध होता है, वे सभी अपादान कारक के अंतर्गत आते हैं।

वह शब्द रूप जिससे क्रिया के साधन (जिसकी सहायता से क्रिया हो) का ज्ञान होता है, 'करण कारक' कहलाता है और वह शब्द रूप जिससे एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अलग होना पाया जाता है, 'अपादान कारक' कहलाता है।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. रंगीन **शब्दों के कारक लिखिए :**

1. मेज़ पर पुस्तक रख दो। ....
2. पेड़ से पत्ते गिरते हैं। ....
3. उसका घर पक्का है। ....
4. पेंसिल से उसने ऐसा चित्र बनाया। ....
5. हमारा गाँव दूर है। ....
6. पीड़ितों को दान दो। ....
7. पेड़ से फल गिरा। ....
8. राम कैंची से कागज़ काटता है। ....
9. आप केवल अहमद के लिए लाए हो। ....
10. वीरों ने देश के लिए प्राणों की आहुति दी। ....
11. वह घर में है। ....
12. भारत की नारी महान है। ....
13. राम का लड़का गया। ....
14. चोर सिपाही से डरता है। ....
15. चोर चलती गाड़ी से कूद गया। ....
16. मैंने ब्राह्मण को धन दिया। ....
17. उसने अपने हाथ से फूल तोड़े। ....
18. फर्श पर झाड़ू रख दो। ....
19. हाथ से गिलास छूट गया। ....
20. नाव नदी में डूब गई। ....
21. वह बल्ले से खेल रहा है। ....
22. मेंढक को पत्थर से मत मारो। ....
23. हाथ से छड़ी गिर गई। ....

2. रंगीन शब्दों के कारक बताइए :

1. उसके **पैर पर** पत्थर गिर गया। ....
2. मैं **शहर से** बाहर जा रहा हूँ। ....
3. पिता जी **मेरे लिए** कलम लाए हैं। ....
4. वह **तुम्हारा** मित्र है। ....
5. पक्षी **वृक्ष पर** घोंसला बनाते हैं। ....
6. मामा जी **बच्चों के लिए** मिठाई लाए। ....
7. **नौका से** नाविक गिर गया। ....
8. **बच्चों को** मिठाई किसने दी? ....
9. हमने **गुरु को** परमेश्वर माना है। ....
10. पांडव **वन में** रह रहे थे। ....
11. नाव **नदी में** डूब गई। ....
12. माता जी **चाकू से** आलू छील रही हैं। ....
13. बढ़ई **आरी से** लकड़ी काट रहा था। ....
14. **उँगली से** अँगूठी गिर गई। ....
15. **चाकू से** उँगली कट गई। ....
16. **उनका** हृदय बहुत पवित्र है। ....
17. चिड़िया ने **तिनकों से** अपना घोंसला बनाया। ....
18. बाढ़ के डर से लोग **शहर से** जाने लगे। ....
19. आज **उसकी** जेब कट गई। ....
20. वे एक **पंक्ति में** खड़े थे। ....
21. मेरे **घर में** मेहमान आए हैं। ....
22. वे सीधी **पंक्ति में** खड़े थे। ....
23. वह **मंच पर** बोलने में शरमाता है। ....
24. इस वर्ष **परीक्षा के लिए** उसकी अच्छी तैयारी है। ....

3. रंगीन छपे कारकों को पहचानकर उनका भेद लिखिए :

1. राज ने **गरीबों को** कंबल दिए। ....
2. कलम **मेज़ से** गिर गया। ....
3. **बच्चों के लिए** मिठाई लाओ। ....

4. चंद्रमा **आकाश में** चमकता है। ....

5. मोहन **श्याम से** तेज़ दौड़ता है। ....

6. उसके **घर में** चोर पकड़ा गया। ....

7. दीपक **रोगी के लिए** दवा लाता है। ....

8. बच्चा **छत से** गिर पड़ा। ....

9. **लड़के ने** पुस्तक पढ़ी। ....

10. मोहन बच्चों **के लिए** मिठाई लाया। ....

11. वह **घर में** है। ....

12. **आसमान** का रंग नीला है। ....

13. **हाथ से** गिलास छूट गया। ....

14. नाव **नदी में** डूब गई। ....

15. श्याम **घर में** है। ....

16. कुत्ते को **पत्थर से** मत मारो ....

17. लड़का **पेड़ से** धरती पर गिर पड़ा। ....

18. राधा ने **चाकू से** सेब काट दिया। ....

19. डॉक्टर से **मरीज के लिए** दवा लाओ। ....

20. प्रधानमंत्री ने **किसानों को** रुपये बाँटे। ....

❑❑

2 सर्वनाम (Pronoun)

''राधा ने राधा के मन में सोचा कि राधा कल अवश्य राधा की सहेली के घर राधा की गाड़ी से जाएगी।''

उपर्युक्त वाक्य को पढ़ने से हमें यह वाक्य भद्दा-सा जान पड़ता है। यदि इसमें निहित दोष को दूर करके लिखा जाए तो यह वाक्य निम्न प्रकार होगा :

''राधा ने अपने मन में सोचा कि वह कल अवश्य अपनी सहेली के घर अपनी गाड़ी से जाएगी।''

इस प्रकार हम पाते हैं कि संज्ञा शब्दों के स्थान पर क्रमशः अपने, वह तथा अपनी शब्दों का प्रयोग हुआ है। इस प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कहीं कोई परिवर्तन नहीं आया और वाक्य का भद्दापन भी दूर हो गया है। इस आधार पर सर्वनाम की परिभाषा निम्न होगी :

परिभाषा : ''संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।''

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, सुविधा तथा सरलता लाने के लिए सर्वनाम का प्रयोग आवश्यक है। सर्वनाम सभी संज्ञाओं के नाम हैं। ये किसी भी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जा सकते हैं, इसलिए हर भाषा में इनकी संख्या थोड़ी ही होती है; जैसे-मैं, हम, तू, आप, यह, वह, जो, कोई, कुछ, कौन, क्या आदि। सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है, इसलिए संज्ञा के समान ही कारक के कारण इनमें विकार या परिवर्तन होता है; जैसे-हमने, हमको, हमसे, मैंने, मुझको, मुझसे आदि। इसे भी संज्ञा की तरह एकवचन या बहुवचन का रूप दिया जा सकता है। किसी भी ङ्लग के लिए प्रयोग करते समय इसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं आता; लेकिन इसके संबंध रूप जो विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, अपना रूप विशेषण के आधार पर परिवर्तित कर लेते हैं; जैसे-तुम्हारी पुस्तक, मेरा घर, मेरी कक्षा, तुम्हारा परिवार आदि। संज्ञा के समान इनके साथ संबोधन का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

सर्वनाम के भेद (Kinds of Pronoun)

सर्वनाम के निम्नलिखित छह भेद हैं :

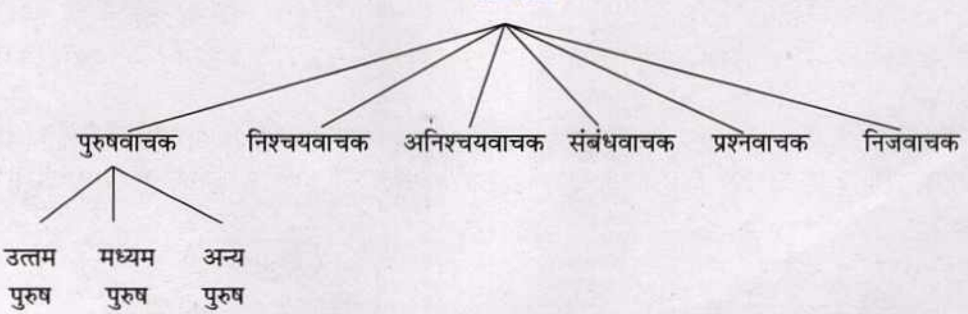

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Definite Pronoun)
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)
4. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)
6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)**-जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के लिए कोई बात कहता है तो मुख्य रूप से तीन वाचक प्रयुक्त होते हैं।

   1. वक्ता (बोलने वाला) 2. श्रोता (सुनने वाला) 3. अन्य (जिसके बारे में कहा जाता है)।

इसी के आधार पर :

"जो सर्वनाम कहने वाले, सुनने वाले या जिसके विषय में कहा जाए उनका बोध कराते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।"

इसके मुख्य तीन भेद हैं :

1. उत्तम पुरुष, 2. मध्यम पुरुष, 3. अन्य पुरुष।

1. उत्तम पुरुष (**First Person**) : बोलने वाला या लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे 'उत्तम पुरुष सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे–मैं, हम, हमसब, हमलोग आदि।
2. मध्यम पुरुष (**Second Person**) : जिसे संबोधित करके कुछ कहा जाए या जिससे बातें की जाएँ या जिसके बारे में कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम 'मध्यम पुरुष सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे–तू, तुम, आप, आपलोग, आपसब।
3. अन्य पुरुष (**Third Person**) : जिसके बारे में बात की जाए या कुछ लिखा जाए उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–वे, वे लोग, ये, यह, आप।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Definite Pronoun)–जो सर्वनाम पास की या दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चित संकेत करते हैं, वे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं। इसके मुख्य दो प्रयोग हैं :

1. निकट की वस्तुओं के लिए–यह, ये।
2. दूर की वस्तुओं के लिए–वह, वे।

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो निश्चयवाचक सर्वनाम तथा पुरुषवाचक सर्वनाम दोनों प्रकार से प्रयुक्त किए जा सकते हैं। इसलिए इनके प्रयोग में सावधानी बरतनी आवश्यक है; जैसे :

रोहन कक्षा में प्रथम आया है, इसलिए उसे पुरस्कृत किया जाएगा।	(पुरुषवाचक सर्वनाम)
इस वर्ष भी उसी को पुरस्कृत किया जाएगा।	(निश्चयवाचक सर्वनाम)
तुम कहाँ जा रहे हो?	(पुरुषवाचक सर्वनाम)
तुम्हीं से सर्वाधिक अंक प्राप्त करने की आशा की जा रही है।	(निश्चयवाचक सर्वनाम)

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)–जिस सर्वनाम के प्रयोग से किसी निश्चित प्राणी या वस्तु का बोध न हो, वे 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे–कोई, कुछ।

'कोई' सर्वनाम का प्रयोग प्राय: प्राणीवाचक सर्वनाम के लिए होता है; जैसे–कोई तुम्हें बुला रहा है, और 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग वस्तु या अप्राणीवाचक के लिए होता है; जैसे–कुछ सेब यहाँ पड़े हैं। कहीं, किसी, कुछ आदि अनिश्चयवाचक सर्वनाम शब्द हैं।

4. संबंधवाचक (Relative Pronoun)–वाक्य में प्रयुक्त दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से संबंध दिखाने वाले सर्वनाम 'संबंधवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे–जो, सो, जिसने, उसने, जहाँ, वहाँ आदि भी संबंधवाचक सर्वनाम शब्द हैं।

जो सोएगा, सो खोएगा।
जो करेगा, सो भरेगा।
जिसकी लाठी, उसकी भैंस
जो सत्य बोलता है, वह नहीं डरता।
जो आया है, सो जाएगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)–जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए होता है, उसे 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे–कौन, किन्हें, किस आदि प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

वहाँ सीढ़ियों में कौन खड़ा है?
आज तुमने क्या खाया?
कल तुम किससे बातें कर रहे थे?

इन सर्वनामों में 'कौन' तथा 'किससे' प्राणीवाचक के लिए प्रयुक्त हुए हैं तथा 'क्या' अप्राणीवाचक के लिए।

6. **निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)** –इसके अंतर्गत वे सर्वनाम आते हैं, जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक स्वयं अपने लिए करते हैं। इस प्रकार–''वक्ता या लेखक जिन सर्वनाम शब्दों का बोध कराता है और अपने लिए जिनका प्रयोग करता है, उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे : आप, अपने-आप, खुद, निज, स्वतः, स्वयं।

हमें अपना काम **अपने-आप** करना चाहिए। **स्वयं** के लिए जीना व्यर्थ है।

वह **स्वतः** ही जान जाएगा। मैं **अपने-आप** चला जाऊँगा। (निजार्थक)

• अभ्यास-प्रश्न •

1. **निश्चयवाचक सर्वनाम तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम के भेद को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**
2. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित सर्वनामों द्वारा कीजिए :**

 1. तुम······················चाहो करो।
 2. वह······················को सुधार रहा है।
 3. मैं वहाँ······················ही जाऊँगा।
 4. मैं अपना काम······················करता हूँ।
 5. ······················कल दिल्ली आएँगे।
 6. ······················भूख लगी है।
 7. तुम······················हो?
 8. ······················बाज़ार जाना है।
 9. कृपया··························शरण में ले लें।
 10. श्रीमान··························बड़ी दूर से आया हूँ।
 11. ··························मेरे मित्र ने आपके पास भेजा है।
 12. ··························आपकी बहुत प्रशंसा करता है।
 13. ······················करना है······················करो।
 14. ······················हमेशा विद्वानों का सत्संग करता हूँ।
 15. ··························भी··························का शिष्य बनना चाहता हूँ।
 16. ··························दस वर्ष तक··························से शिक्षा ग्रहण की है।

3. **निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम छाँटकर उनका भेद लिखिए :**

 1. कौन-सी किताब लाऊँ?
 2. मैं यह कार्य स्वयं कर लूँगा।
 3. जो जागे सो पावे।
 4. वह घर तुम्हारा है।
 5. उनका घर कहाँ है?
 6. शायद बाहर कोई आया है।
 7. दरवाज़े पर कौन खड़ा है?
 8. जो करेगा सो भरेगा।
 9. सब कुछ ठीक हो जाएगा।
 10. ये जानवर मेरे हैं।

4. **पुरुषवाचक एवं संबंधवाचक सर्वनाम में अंतर स्पष्ट कीजिए।**

5. नीचे लिखे रंगीन संज्ञा शब्दों के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग करके वाक्य पुनः लिखिए :

1. रोहन ने रोहन की अध्यापिका से रोहन की पुस्तिका माँगी।
2. राम ने श्याम से कहा कि श्याम के पिता आ गए हैं और श्याम को बुला रहे हैं।
3. सृष्टि सृष्टि की सहेली के साथ पढ़ने जाती है।
4. विदित ने विदित के मित्रों से कहा कि विदित को विदित की गेंद चाहिए।
5. सभी विद्यार्थी विद्यार्थियों की परीक्षा में तल्लीन हैं।
6. रमेश ने रमेश के खेतों में हल चलाया इसलिए रमेश के खेत लहलहा उठे।
7. अंजू ने अंजू की कार में अंजू और अंजू के बच्चों की पसंद का स्टीरियो लगवाया।

6. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में दिए गए सर्वनामों के उचित रूप से कीजिए :

1. .... का काम कर दो। (वह)
2. .... नाम विदित है। (मैं)
3. .... बुलाया जाता, वह आती। (वह)
4. वहाँ पर .... है? (कौन)
5. .... लाठी .... भैंस। (जिस, उस)
6. यह .... काम है। (तुम)
7. .... चाबी खो गई है। (मैं)

❑❑

3 विशेषण (Adjective)

विशेषण

निम्नलिखित वाक्यों में आए रंगीन शब्दों (पदों) पर ध्यान दीजिए :

1. मदन काली कमीज़ पहनकर स्कूल आया।
2. मेरा छोटा भाई बहुत शरारती है।
3. आपके लिए वे मीठे संतरे लेकर आए हैं।
4. खीर बनाने के लिए पाँच लीटर दूध चाहिए।
5. कुछ अध्यापक पढ़ाना ही नहीं चाहते।
6. मेरा बेटा अमेरिका जा रहा है।
7. मकान बनवाने के लिए मुझे दस-बारह मज़दूर चाहिए।
8. आप थोड़ी-सी चाय ही ले लें।

उपर्युक्त वाक्यों में 'काली', 'छोटा' तथा 'मीठे' शब्द अपनी-अपनी संज्ञाओं के गुण बता रहे हैं कि कमीज़ का रंग काला है, भाई छोटा है तथा संतरों का स्वाद मीठा है। 'पाँच लीटर', 'कुछ', 'थोड़ी-सी' शब्द अपनी-अपनी संज्ञाओं के परिमाण (मात्रा) बता रहे हैं। 'दस-बारह' से मज़दूरों की संख्या का पता चल रहा है तथा 'मेरा' बेटे के विषय में बता रहा है कि वह किसका बेटा है। कहने का तात्पर्य है कि समस्त रंगीन शब्द किसी-न-किसी रूप में अपने आगे आने वाली संज्ञाओं की किसी-न-किसी विशेषता को प्रकट कर रहे हैं। व्याकरण में ये शब्द संज्ञा के पूर्व लगकर उसकी विशेषता बताते हैं। अतः इन्हें 'विशेषण' कहा जाता है।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा या परिमाण आदि) बताते हैं, 'विशेषण' कहे जाते हैं।

विशेषण शब्द जिस शब्द (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता बताते हैं, उन शब्दों को 'विशेष्य' के नाम से जाना जाता है; जैसे–लड़की, सीता, राम, वह आदि।

इस प्रकार हम पाते हैं कि विशेषण के प्रयोग से विशेष्य वस्तु का यथार्थ परिचय तो मिलता ही है साथ ही साथ, भाषा भी प्रभावशाली हो जाती है। 'विशेषण' व्यक्ति, प्राणी, वस्तु आदि का स्वरूप स्पष्ट कर उसे उसके वर्ग से अलग दर्शाकर उसकी विशेषताओं का परिचय देता है।

विशेषण के भेद (Kinds of Adjectives)

अर्थ की दृष्टि से विशेषण के मुख्य चार भेद हैं :

विशेषण
- गुणवाचक विशेषण
- संख्यावाचक विशेषण
  - निश्चित संख्यावाचक विशेषण
  - अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
- परिमाणवाचक विशेषण
  - निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
  - अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
- सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)
2. संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)
3. परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)
4. सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective)

1. गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)–संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध कराने वाले शब्द 'गुणवाचक विशेषण' कहलाते हैं; जैसे–वह व्यक्ति दयावान है।

गुणवाचक विशेषण के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के विशेषण पाए जाते हैं :

1. गुणबोधक	–	अच्छा, दानी, न्यायी, कृपालु।
2. दोषबोधक	–	झूठा, पापी, दुष्ट, कंजूस, अभिमानी।
3. स्वादबोधक	–	खट्टा, मीठा, कड़वा, तीखा, नमकीन।
4. गंधबोधक	–	खुशबूदार, सुगंधित, दुर्गंधित, बदबूदार।
5. रंगबोधक	–	काला, पीला, सुनहरा, नीला, हरा।
6. आकारबोधक	–	मोटा, लंबा, छोटा, चौकोर, गोल।
7. स्पर्शबोधक	–	कठोर, नरम, गुदगुदा, मुलायम, सख्त।
8. ध्वनिबोधक	–	मधुर, कर्कश।
9. कालबोधक	–	कल, परसों, पुरानी, प्राचीन, नवीन, क्षणिक, दैनिक, साप्ताहिक, मासिक।
10. स्थानबोधक	–	ग्रामीण, शहरी, विदेशी, जयपुरी, चीनी।
11. दशाबोधक	–	रोगी, निरोगी, रुग्ण, बीमार, बिगड़ा हुआ।
12. स्थितिबोधक	–	अगला, पिछला, पहला, पाँचवाँ, अंतिम।
13. दिशाबोधक	–	पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, भीतरी, बाहरी।
14. अवस्थाबोधक	–	गीला, सूखा, नम, शुष्क, तला हुआ, जला हुआ।

2. संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)–जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, वह 'संख्यावाचक विशेषण' कहलाते हैं। संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं :

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (Definite Numeral Adjective)–जिनसे निश्चित संख्या का बोध होता है, वे 'निश्चित संख्यावाचक विशेषण', कहलाते हैं; जैसे–दस विद्यार्थी, पाँच केले, चार वृक्ष आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण (Indefinite Numeral Adjective)–इनसे निश्चित संख्या का बोध नहीं होता; जैसे : कुछ आम, थोड़े केले, कुछ लड़के, कई दर्शकगण आदि।

3. परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)–मात्रा या तोल बताने वाले विशेषणों को 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे : दस किलो दूध, चार किलो आटा, चार गज़ ज़मीन, थोड़ा अनाज़ आदि।

परिमाणवाचक विशेषण के भी दो भेद हैं : (क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण (ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Definite Quantity)–जिन शब्दों से निश्चित परिमाण का बोध होता है, वे 'निश्चित परिमाणवाचक विशेषण' कहलाते हैं; जैसे : चार किलो दाल, दो मीटर कपड़ा आदि।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Indefinite Quantity)–जिन शब्दों से परिमाण की अनिश्चितता का बोध हो, वे 'अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण' कहलाते हैं; जैसे : कुछ दाल, थोड़ा आटा, बहुत चीनी आदि।

संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग गणनीय वस्तुओं के लिए होता है, जबकि परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग अगणनीय वस्तुओं के लिए किया जाता है। सेब, पेंसिल, लड़के आदि गणनीय वस्तु हैं तो चावल, कपड़ा, ज़मीन आदि अगणनीय वस्तु।

4. **सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective)**–जिन सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है, वे 'सार्वनामिक विशेषण' कहलाते हैं; जैसे : **वह** लड़का भला है। **कोई** स्त्री द्वार पर आकर खड़ी है। **यह** पुस्तक तुम्हारी है। इन वाक्यों में वह, कोई तथा यह सर्वनाम होते हुए भी विशेषण के रूप में प्रयुक्त किए गए हैं। इसीलिए ये 'सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं' पुरुषवाचक (मैं, हम, तू, तुम) तथा निजवाचक (आप) सर्वनामों के अलावा शेष सभी सर्वनाम, सार्वनामिक रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। पाया जाता है कि पुरुषवाचक तथा निजवाचक सर्वनाम के संबंधकारकीय रूप विशेषण के समान प्रयुक्त किए जा सकते हैं; जैसे : मैं से मेरा, मेरी; तुम से तुम्हारा, तुम्हारी तथा हम से हमारा, हमारी।

सार्वनामिक विशेषण तथा सर्वनाम (Demonstrative Adjective and Pronoun)

कुछ लोग सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषणों में अंतर नहीं करते। वस्तुत: दोनों रूप-रचना के स्तर पर समान होते हैं, केवल वाक्य में प्रयोग के स्तर पर दोनों में अंतर हो जाता है।

'सर्वनाम' के विषय में आप जानते ही हैं कि ये वे शब्द हैं जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं और वही प्रकार्य (function) करते हैं जो वह संज्ञा कर रही थी; जैसे–'मोहन ईमानदार लड़का है। **वह** कभी झूठ नहीं बोलता। **उसके** पिता जी अध्यापक हैं।' लेकिन जब सर्वनाम किसी संज्ञा (विशेष्य) के साथ लगकर उस संज्ञा की विशेषता बताते हैं, तब वे **सार्वनामिक विशेषण** कहे जाते हैं; जैसे :

(क) **किसकी** किताब चोरी हुई थी? (ख) **मेरे** भाई अमेरिका जा रहे हैं।

(ग) उनके पास खाने के लिए **कुछ भी** सामान नहीं है।

विशेषणों की अवस्थाएँ (Degrees of Adjectives)

तुलना की दृष्टि से विशेषण की मुख्य तीन अवस्थाएँ होती हैं :

1. मूलावस्था (Positive Degree), 2. उत्तरावस्था (Comparative Degree), 3. उत्तमावस्था (Superlative Degree)।

1. **मूलावस्था (Positive Degree)**–इसमें किसी वस्तु की किसी दूसरी वस्तु से तुलना नहीं की जाती। उसे श्रेष्ठ या बढ़-चढ़ कर नहीं बताया जाता, बल्कि वस्तु के गुण की चर्चा सामान्य रूप से की जाती है; जैसे–राधा सुंदर है। रवि अच्छा है। राकेश लंबा है।

2. **उत्तरावस्था (Comparative Degree)**–इसके अंतर्गत दो वस्तुओं का तुलनात्मक रूप प्रस्तुत होता है। एक वस्तु को दूसरी वस्तु से बढ़-चढ़कर बताया जाता है; जैसे : गीता, राधा से लंबी है। रमा से शीला की आवाज़ मधुर है। तुलनात्मक रूप प्रस्तुत करने के लिए 'से', की अपेक्षा, की तुलना में, से बढ़कर' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे :

   (क) रवि राजू **की अपेक्षा** ज्यादा होशियार है। (ख) यह किताब उस किताब **से** बढ़कर रोचक है।

   (ग) अनुराधा की **तुलना में** रमा थोड़ा कम बोलती है।

3. **उत्तमावस्था (Superlative Degree)**–इसमें किसी प्राणी, व्यक्ति या वस्तु की तुलना अन्य बहुत-से प्राणी, व्यक्ति अथवा वस्तुओं से की जाती है और उन सभी में से उसे सबसे अच्छा या बुरा बताया जाता है। तुलना की सीमा निर्धारित करने के लिए सब में, सबसे, सभी में, गाँव में, शहर में आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

   (क) राम **सबसे** अच्छा लड़का है।

   (ख) इस **पूरे शहर में** यह बाग़ देखने योग्य है।

   इसके अलावा तुलनात्मक विशेषता को स्पष्ट करने के लिए 'तर' और 'तम' प्रत्यय लगाकर विशेषणों की रचना की जाती है। इस प्रकार के कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं :

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुत्तम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
बृहत्	बृहत्तर	बृहत्तम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
योग्य	योग्यतर	योग्यतम

प्रविशेषण

जो शब्द विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें 'प्रविशेषण' कहा जाता है; जैसे–वह बहुत मधुर गाता है। इन वाक्यों में 'मधुर' शब्द विशेषण है, लेकिन इसकी भी विशेषता 'बहुत' शब्द बतला रहा है। 'बहुत' शब्द विशेषण की भी विशेषता बतला रहा है और इसलिए यह प्रविशेषण है। इस प्रकार :

''विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।''

कुछ अन्य उदाहरण :

(क) वह सबसे तेज़ दौड़ता है। (ख) उसका घर बहुत सुंदर है। (ग) सोहन बहुत बुद्धिमान है।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण और विशेष्य छाँटिए :

	विशेषण	विशेष्य
1. वहाँ गहन अंधकार है।	....	....
2. हिंदी मधुर भाषा है।	....	....
3. वह विद्वान व्यक्ति है।	....	....
4. यह पुस्तक अच्छी है।	....	....
5. उसे दो किलो आलू चाहिए।	....	....
6. मुझे कुछ रुपए दीजिए।	....	....
7. हर एक आदमी को सच बोलना चाहिए।	....	....
8. भारत में कई दर्शनीय स्थल हैं।	....	....
9. मुझे सुंदर फूल चाहिए।	....	....
10. थोड़ा घी लाया हूँ।	....	....

2. निम्नलिखित रिक्त वाक्यों में उचित विशेषण भरकर उसका भेद लिखिए : **भेद**

1.	राम..............................दूध पीता है।	....
2.	उसने कक्षा में..............................स्थान प्राप्त किया है।	....
3.	यह..............................पेन है,..............................पेन नहीं।	....
4.	मेरी कक्षा में..............................विद्यार्थी हैं।	....
5.	मेरा घर..............................दिशा में है।	....
6.	..............................महल बहुत बड़ा है।	....

3. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विशेषणों को छाँटकर उनके भेद भी लिखिए :

	विशेषण	भेद
1. कुछ लोग वहाँ खड़े तमाशा देख रहे थे।	....	....
2. हमने काले रंग के कोट सिलवाए हैं।	....	....
3. थोड़ा दूध हमारे लिए भी लेते आना।	....	....
4. वह लड़का बहुत देर से शरारत कर रहा है।	....	....
5. महान लोगों के कारनामों से इतिहास भरा है।	....	....
6. वह कुत्ता तेज़ दौड़ता है।	....	....
7. सुरेश महान पिता का पुत्र है।	....	....
8. बाग में आम के अनेक वृक्ष हैं।	....	....
9. आकाश का रंग नीला है।	....	....
10. पाँच कबूतर उड़ते हुए हमारी छत पर आ गए।	....	....
11. वे पुस्तकें तुम्हारी हैं और ये मेरी।	....	....
12. वह पुस्तक अभी छपी है।	....	....
13. वह फुटबाल खेलता है।	....	....
14. वह बहुत अधिक चालाक है।	....	....

4. निम्नलिखित वाक्यों से सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण छाँटकर लिखिए :

	सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
1. वह विदेश से वापस आ गया है।	....	....
2. यह पुस्तक हमारी है।	....	....
3. वे लोग अब यहाँ नहीं आएँगे।	....	....
4. उन्हें आज भी सब लोग याद करते हैं।	....	....
5. इस बच्चे को कहाँ लिए जा रहे हो?	....	....
6. घर में कोई है?	....	....
7. कोई सज्जन आए हुए हैं।	....	....

8. वह घोड़ा दौड़ रहा है। ....

9. वह विद्यालय गया। ....

10. यह मेरा घर है। ....

11. क्या यह किताब तुम्हारी है? ....

12. वह लड़का विद्यालय जाएगा। ....

13. बच्चा रो रहा है, इसे गोद में उठा लो। ....

14. वे पुस्तकें तुम्हारी हैं और ये मेरी। ....

15. घर में कुछ भी खाने को नहीं है। ....

16. उस किताब को यहाँ ले आइए। ....

5. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए विकल्पों में से उचित विशेषण शब्द चुनकर कीजिए :

1. **.................. लड़का बहुत चालाक है।**

(क) वे (ख) उस (ग) आप (घ) वह

2. **राम .... दूध पीता है।**

(क) सफेद (ख) गर्म (ग) खट्टा (घ) जल्दी

3. **गीता .... लड़की है।**

(क) अच्छी (ख) अच्छा (ग) टेढ़ा (घ) चौड़ा

4. **अभी सरोवर में .... जल है।**

(क) मोटा (ख) छोटा (ग) थोड़ा (घ) घना

5. **.................. घोड़ा सुंदर लग रहा है।**

(क) काला (ख) हरा (ग) नाटा (घ) हल्का

❑❑

4 क्रिया (Verb)

जिस शब्द से कार्य का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे :

(क) राम खाना खा रहा है। (ख) बच्चे खेल रहे हैं।

यदि इन वाक्यों के साथ हम 'क्या करता है?' या 'क्या कर रहा है?' आदि प्रश्नों को जोड़कर उनका उत्तर ढूँढ़ें तो क्रमश: 'खाना खा रहा है' तथा 'खेल रहे हैं' उत्तर प्राप्त होंगे। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वाक्य का जो अंश इन प्रश्नों का उत्तर देता है, उसे 'क्रिया' कहते हैं। बिना क्रिया के कोई भी वाक्य पूर्ण नहीं होता। क्रिया को देखकर ही कर्ता या कर्म का अनुमान लगाया जा सकता है। कर्ता एकवचन है या बहुवचन, पुल्लिंग है या स्त्रीलिंग, सजीव है या निर्जीव, उत्तम पुरुष में ,मध्यम पुरुष में या अन्य पुरुष में है, इसकी जानकारी भी क्रिया के द्वारा ही होती है। काल का ज्ञान भी क्रिया से ही होता है।

धातु (Root)–धातु का अर्थ है : मूल या बीजाक्षर। किसी क्रिया के विभिन्न रूपों में जो अंश समान रूप से मिलता है, उसे उस क्रिया की धातु कहा जाता है। इस प्रकार **"क्रिया के मूल रूप को 'धातु' कहते हैं।"** जिस प्रकार सोना, चाँदी आदि धातुओं से हार, कंगन, झुमके, बालियाँ, नथ इत्यादि आभूषण बनाए जाते हैं, उसी प्रकार 'चल' धातु से चलना, चला, चले, चलो, चलेंगे; 'पढ़' धातु से पढ़ना, पढ़े, पढ़ेगा इत्यादि क्रिया पद रूप बनाए जाते हैं। आ, जा, खा, पी, चल, सुन, देख, पढ़ आदि प्रत्येक धातु के मूल रूप में 'ना' जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है; जैसे–आना, जाना, खाना, पीना, चलना, सुनना, देखना, पढ़ना आदि। ये क्रियाएँ संज्ञा का भी काम करती हैं और कर्म का भी। ऐसे रूपों को 'क्रियार्थक संज्ञा' कहा जाता है। इन क्रियाओं में से 'ना' निकाल देने से क्रिया पुन: 'धातु' में परिवर्तित हो जाती है।

पढ़ + ना = पढ़ना, मार + ना = मारना, उठ + ना = उठना।

मूल धातु का प्रयोग मात्र 'तू' के साथ आज्ञार्थक क्रिया के रूप में ही किया जाता है; जैसे–तू मेरे साथ चल; तू खाना खा; तू कहानी सुन। कुछ धातुओं का प्रयोग शुद्ध भाववाचक संज्ञा की तरह होता है; जैसे–समझ, लूट, डर, मार, माँग आदि।

उदाहरण : (क) यह बात उसकी **समझ** में नहीं आई। (ख) चोर घर को **लूटकर** चले गए।

क्रिया की रचना

क्रिया की रचना मुख्य तीन प्रकार के शब्दों से होती है :

धातु से :	पढ़	=	पढ़ना, पढ़ता।
	खा	=	खाना, खाता, खाया।
संज्ञा से :	आलस्य	=	अलसाना, अलसाता।
	फटकार	=	फटकारना, फटकारता।
विशेषण से :	टिमटिम	=	टिमटिमाता, टिमटिमाना।
	भिनभिन	=	भिनभिनाना, भिनभिनाता।

प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

- सकर्मक (Transitive)
  - एककर्मक
  - द्विकर्मक
- अकर्मक (Intransitive)

प्रयोग के आधार पर क्रिया के मुख्य दो भेद हैं :

1. सकर्मक 2. अकर्मक।

1. **सकर्मक (Transitive)**–सकर्मक का अर्थ है–कर्म के साथ। जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह क्रिया 'सकर्मक क्रिया' कहलाती है; जैसे–बच्चा दूध पी रहा है, राधा किताब पढ़ रही है। इन वाक्यों के कर्ता और क्रिया के बीच यदि 'क्या' प्रश्न किया जाए तो उत्तरस्वरूप क्रमशः दूध तथा किताब आते हैं; जैसे–बच्चा क्या पी रहा है, 'दूध'; राधा क्या पढ़ रही है, 'किताब'। सकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी पहचान यही है।

कर्म के आधार पर सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद हैं :

(क) **एककर्मक** : जिस क्रिया का मात्र एक ही कर्म होता है, वह 'एककर्मक क्रिया' कहलाती है; जैसे :
राधा कपड़े धो रही है। माँ खाना बना रही है।

(ख) **द्विकर्मक** : जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, वह 'द्विकर्मक क्रिया' कहलाती है। इन दो कर्मों में प्रथम कर्म प्राणीवाचक तथा द्वितीय कर्म अप्राणीवाचक होता है। प्राणीवाचक कर्म गौण कर्म तथा अप्राणीवाचक कर्म प्रायः मुख्य कर्म होता है। मुख्य कर्म विभक्ति चिह्न रहित तथा गौण कर्म विभक्ति चिह्न सहित होता है; जैसे :
माला ने राधा को पुस्तक दी। पिता ने पुत्र को पैसे दिए।

इन वाक्यों की क्रिया के साथ यदि 'क्या', 'किसे' और 'किसको' प्रश्नों को किया जाए तो उत्तर क्रमशः 'पुस्तक और राधा तथा 'पैसे' और 'पुत्र' आते हैं; जैसे : माला ने राधा को पुस्तक दी। क्या दी? पुस्तक दी। किसे दी? राधा को दी। द्विकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी पहचान यही है।

2. **अकर्मक (Intransitive)**–कर्म रहित क्रिया अकर्मक कहलाती है। जिस वाक्य में क्रिया का सीधा फल कर्ता पर पड़े वे क्रियाएँ 'अकर्मक' कहलाती हैं; जैसे : बच्चा रोता है, रमा पढ़ती है, दिनेश हँसता है।

इन वाक्यों की क्रिया के साथ यदि 'कौन' प्रश्न किया जाए तो क्रमशः, बच्चा, रमा, दिनेश आते हैं; जैसे : बच्चा रोता है, कौन रोता है? 'बच्चा'। अकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी पहचान यही है।

कुछ प्रमुख अकर्मक क्रियाएँ :

अकड़ना, डूबना, आना, जाना, उगना, उछलना, कूदना, खाना, पीना, उठना, गिरना, बैठना, दौड़ना, ठहरना, बरसना, मरना, सोना, जागना, बढ़ना आदि।

अकर्मक से सकर्मक क्रिया बनाना :

अकर्मक		सकर्मक	अकर्मक		सकर्मक
ठहरना	–	ठहराव	कूदना	–	कूदा
लेटना	–	लेटाना	हँसना	–	हँसाना
गिरना	–	गिराना, गिरावट	तड़पना	–	तड़पाना
बढ़ना	–	बढ़त	पलना	–	पालना
उबलना	–	उबाल	जुड़ना	–	जोड़ना
छूटना	–	छोड़ना	टूटना	–	तोड़ना
घिरना	–	घेरना	खुलना	–	खोलना
गड़ना	–	गाड़ना	उजड़ना	–	उजाड़ना
पिघलना	–	पिघलाना	मुड़ना	–	मोड़ना

संरचना की दृष्टि से क्रिया के अन्य भेद

क्रिया के अन्य भेद

- संयुक्त क्रिया (Compound Verb)
- नामधातु क्रिया (Nominal Verb)
- प्रेरणार्थक क्रिया (Causative Verb)
- पूर्वकालिक क्रिया (Incomplete Verb)

संरचना की दृष्टि से क्रिया के मुख्य चार भेद हैं :

1. संयुक्त क्रिया 2. नामधातु क्रिया 3. प्रेरणार्थक क्रिया 4. पूर्वकालिक क्रिया।

1. संयुक्त क्रिया (Compound Verb)–जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ आपस में मिलकर एक पूर्ण क्रिया बनाती हैं, तो वह 'संयुक्त क्रिया' कहलाती है। इन भिन्न क्रियाओं के मिलने से निर्मित क्रिया के अर्थ में विशेषता आ जाती है।

वह अपना काम **कर चुका।** तुम प्रतिदिन पढ़ने **आया करो।**

इन वाक्यों में 'कर चुका' तथा 'आया करो' संयुक्त क्रियाएँ हैं। इनकी रचना दो क्रियाओं के योग से हुई हैं, जिसमें एक मुख्य क्रिया है तथा दूसरी सहायक क्रिया।

सहायक क्रिया मुख्य क्रिया की पूर्णता में सहायक होती है; जैसे– वे **जा रहे हैं**, मोहन चला **जाएगा**, वह खाना **खा रहा है** आदि सभी सहायक क्रियाएँ हैं। इस प्रकार वाक्य में कभी एक व कभी एक से अधिक सहायक क्रियाएँ होती हैं। वह वहाँ रोज़ जाया करता होगा। इस वाक्य के अंतर्गत जाना + करना + होना–ये तीन क्रियाएँ आई हैं। भाव को पूर्ण करने वाली इन क्रियाओं को 'सहायक क्रिया' या 'रंजक क्रिया' भी कहते हैं।

2. नामधातु क्रिया (Nominal Verb)–क्रिया को छोड़कर अन्य शब्दों में प्रत्यय जोड़ने से जो धातुएँ बनती हैं, उन्हें 'नामधातु' कहते हैं। इस प्रकार संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द जो धातु की तरह प्रयुक्त होते हैं, वे नामधातु कहलाते हैं। इन नामधातुओं में 'ना' प्रत्यय जोड़कर नामधातु क्रिया का निर्माण किया जाता है।

	संज्ञा	नामधातु	नामधातु क्रिया
संज्ञा से :	बात	बता	बताना
	लज्जा	लजा	लजाना
	हाथ	हथिया	हथियाना
विशेषण से :	चिकना	चिकना	चिकनाना
	सूखा	सुखा	सुखाना
	साठ	सठिया	सठियाना
	नरम	नरम	नरमाना
सर्वनाम से :	अपना	अपना	अपनाना
क्रिया से :	थपथप	थपथपा	थपथपाना
	भिनभिन	भिनभिन	भिनभिनाना

3. प्रेरणार्थक क्रिया (Causative Verb)–जिस क्रिया से यह जान पड़े कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को उस कार्य के करने की प्रेरणा देता है या किसी अन्य से उस कार्य को करवाता है, तो उस क्रिया को 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहते हैं।

"मालिक नौकर से काम **करवाता** है।"

इस वाक्य को पढ़ने पर हमें ज्ञात होता है कि मालिक स्वयं काम न करके नौकर को काम करने की प्रेरणा देता है। इसलिए 'करवाता है' प्रेरणार्थक क्रिया है। इसके अलावा प्रेरणा देने वाला मालिक 'प्रेरक कर्ता' तथा जिसे प्रेरणा दी जाती है वह 'प्रेरित कर्ता' कहलाता है। प्रेरणार्थक क्रिया के अन्य उदाहरण :

राम ने एक महल बनवाया।

ज़मींदार ने हलवाहों से खेत जुतवाया।

4. पूर्वकालिक क्रिया (Incomplete Verb)–जिस क्रिया का पूरा होना दूसरी क्रिया के पूरे होने से पूर्व पाया जाए, उसे 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं; जैसे :

(क) वह नहाकर स्कूल जाएगा। (ख) खाना खाकर वह पढ़ने बैठेगा।

(ग) बाज़ार से आकर वह खाना पकाएगी।

इन तीनों वाक्यों में क्रमश: जाएगा, बैठेगा, पकाएगी क्रिया के पूर्व नहाकर, खाकर तथा आकर क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हैं। इसलिए पूर्व आने वाली ये क्रियाएँ, पूर्वकालिक क्रियाएँ कहलाती हैं। इन क्रियाओं पर लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह अव्यय रूप में प्रयुक्त होती हैं और क्रियाविशेषण का भी कार्य करती हैं। मूल धातु में 'कर' लगाने से सामान्य क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया का रूप दिया जा सकता है; जैसे :

नहा	–	नहाकर	खा	–	खाकर
जा	–	जाकर	पढ़	–	पढ़कर
सो	–	सोकर			

पूर्वकालिक क्रिया का एक भेद है, 'तात्कालिक क्रिया'।

5. तात्कालिक क्रिया–इसमें एक क्रिया की समाप्ति के बाद ही दूसरी पूर्ण क्रिया का संपन्न होना पाया जाता है; जैसे–उसके वहाँ पहुँचते ही, वह वहाँ से चला गया। स्कूल से वापस आते ही, वह खेलने चला गया।

यह क्रिया धातु के अंत में 'ते' प्रत्यय लगाकर उसके आगे 'ही' जोड़ने से बनती है; जैसे–वह ज़हर खाते ही मर गया।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के भेद प्रयोग व संरचना के आधार पर बताइए :

1. हरजीत जाग रहा है। ....
2. संदीप और रमेश गाँव गए हैं। ....
3. वे सभी काम के लिए मुंबई गए हैं। ....
4. वे सभी कपड़े धोते हैं। ....
5. एक घंटे से तेज़ हवाएँ चल रही हैं। ....
6. पंडित जी भक्तजनों को भागवत कथा सुना रहे हैं। ....
7. जब जाओ, वह सोया हुआ मिलता है। ....
8. सरकार अध्यापकों को अच्छा वेतन देती है। ....
9. गुरु जी गीता पढ़ाते हैं। ....
10. बच्चा रोता है। ....
11. माँ खाना खिला रही है। ....
12. हरीश रोता है। ....
13. मैं कोलकाता जाऊँगा। ....
14. वह दूध पीता है। ....
15. बच्चा गिर गया। ....
16. कौन जा रहा है? ....
17. रानी ने साँप को मार दिया। ....
18. अध्यापिका लता को कविता सिखा रही है। ....
19. बच्चे गेंद खेल रहे हैं। ....
20. माँ लड़की को खाना देती है। ....
21. टायर घिस गया। ....
22. वह खाना खा रही है। ....
23. दुकानदार ने विद्यार्थी को पुस्तक दी। ....
24. बहू शर्माती है। ....
25. अजय कहानी पढ़ रहा है। ....

26. उसने अपने साथी को पूरा पता बताया। ....
27. मोहन हँस रहा है। ....
28. केशव मीठा बोलता है। ....
29. सरिता भी आ रही है। ....
30. बच्चे मैदान में खेल रहे हैं। ....
31. ज़मींदार मुनीम को वेतन देता है। ....
32. सुधा हँसती है। ....
33. मैं पत्र लिखता हूँ। ....
34. मोहन खाकर सो गया है। ....
35. वे सभी काम के लिए दिल्ली गए हैं। ....
36. मोहन गाता है। ....
37. महर्षि व्यास ने अठारह पुराण लिखे। ....
38. हरीश नहाता है। ....
39. माला ने मोहन को पुस्तक दी। ....
40. सर्वेश सो रहा है। ....
41. साहिल और सोनल गाँव को गए। ....
42. सोहन पुस्तक पढ़ाता है। ....
43. हम रेलगाड़ी से प्रयाग जा रहे हैं। ....
44. वे हँसते हैं। ....
45. तीनों छात्र कलम से कॉपी में लिख रहे हैं। ....
46. अब बादल घिर रहे हैं। ....
47. मोहन किताब पढ़ रहा है। ....
48. बच्चे खेलने लगे। ....
49. बच्चा दूध पीता है। ....
50. शेखर कार में चलता है। ....
51. माली ने मुझे आम खिलाए। ....
52. रीता कहानी सुनाती है। ....
53. कुर्सी पर कौन बैठा है। ....
54. मामा जी ने मीरा को मिठाई दी। ....
55. मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ। ....
56. माँ ने मुझे दूध पिलाया। ....
57. युवक टहल रहा है। ....
58. नानी ने कहानी सुनाई। ....
59. रीता पत्र लिखती है। ....
60. मैंने बालिका को पुस्तक दी। ....
61. मेरा मित्र आ गया। ....
62. रमेश ने पत्र लिखा। ....
63. अध्यापक ने पाठ दोहराया। ....

वाच्य (Voice)

(क) मोहन पत्र लिखता है। (ख) मोहन द्वारा पत्र लिखा जाता है। (ग) मोहन से पत्र नहीं लिखा जाता।

उपर्युक्त वाक्यों में हम पाते हैं कि प्रथम वाक्य में क्रिया का रूप स्पष्ट करता है कि कर्ता द्वारा निर्दिष्ट व्यक्ति मोहन कुछ कार्य (पत्र लिखता है) करता है; अत: प्रथम वाक्य में क्रिया के रूप से स्पष्ट है कि यहाँ कर्ता की प्रधानता है। द्वितीय वाक्य में क्रिया का रूप बताता है कि कुछ कार्य (पत्र लिखना) होता है और वह कर्ता के द्वारा किया जाता है। अत: यहाँ कर्म (पत्र) की प्रधानता है और वही क्रिया-व्यापार का मूल संचालक है। तृतीय वाक्य में, न तो कर्ता की प्रधानता है और न ही कर्म की। यहाँ भाव की प्रधानता है। यह वाक्य केवल यह बताता है कि कर्ता (मोहन) क्रिया करने में असमर्थ है। इस प्रकार ये तीनों वाक्य क्रमश: कर्ता, कर्म और भाव की प्रधानता को सूचित करते हैं। क्रिया के विभिन्न रूपों का इस प्रकार की सूचना देना ही वाच्य कहलाता है। वाच्य को हम निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं :

वाच्य क्रिया का वह रूप है जो यह बताता है कि क्रिया-व्यापार का मूल संचालक कर्ता है अथवा कर्म, यह इस बात की ओर संकेत करता है कि कर्ता क्रिया को करने में समर्थ है अथवा नहीं।

इस प्रकार वाक्य में कर्ता, कर्म अथवा भाव की प्रधानता के आधार पर हिंदी में सामान्यत: वाच्य के तीन भेद माने जाते हैं :

1. कर्तृवाच्य (Active Voice) 2. कर्मवाच्य (Passive Voice) 3. भाववाच्य (Impersonal Voice)।

1. **कर्तृवाच्य (Active Voice)**–इसमें क्रिया का सीधा संबंध कर्ता से होता है तथा क्रिया के लिए वचन भी कर्ता के अनुसार ही होता है। इस प्रकार जिस प्रयोग में क्रिया द्वारा कही गई बात का मुख्य विषय कर्ता हो, उसे 'कर्तृवाच्य' कहते हैं; जैसे :

   (क) राधा कपड़े सी रही है। (ख) रमेश खाना खा रहा है। (ग) मैं पुस्तक लिखता हूँ।

   इन वाक्यों में क्रिया का संबंध **राधा, रमेश** और **मैं** से है इसलिए इसे कर्तृवाच्य या कर्तरि प्रयोग कहा जाएगा।

2. **कर्मवाच्य (Passive Voice)**–इसमें क्रिया का सीधा संबंध कर्म से होता है। कर्म की प्रधानता वाले इन वाक्यों में कर्म कर्ता की स्थिति में होता है और क्रिया का रूप कर्म के अनुसार परिवर्तित होता है। कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के आधार पर क्रिया में परिवर्तन होता है। इसमें एक से अधिक क्रियापदों का प्रयोग होता है। इसकी मुख्य क्रिया सकर्मक होती है।

   नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी। मज़दूरों द्वारा पेड़ काटा गया।
   मोहन से भोजन किया जाता है। मोहन द्वारा दरवाज़ा खोला गया।

   यहाँ क्रिया का संबंध कर्म (भोजन तथा कहानी) से है। इसीलिए इसे कर्मवाच्य या कर्मणि प्रयोग कहा जाता है।

3. **भाववाच्य (Impersonal Voice)**–इसमें क्रिया का संबंध कर्ता और कर्म से न होकर 'भाव' से होता है। इसमें क्रिया के पुरुष, वचन और लिंग, कर्ता अथवा कर्म के अनुसार न होकर हमेशा अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में ही रहते हैं। इसमें मुख्य रूप से अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है, साथ ही प्राय: निषेधार्थक वाक्य ही भाववाच्य कहलाते हैं; जैसे :

   उससे पढ़ा नहीं जाता।
   विमला से खाया नहीं जाता।

   इन वाक्यों में क्रिया का संबंध 'नहीं' के भाव से है, इसीलिए इसे भाववाच्य या भावे प्रयोग कहा जाता है।

कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में प्रमुख अंतर इस प्रकार हैं :

1. कर्मवाच्य में कर्म अवश्य रहता है, परंतु भाववाच्य में वह कभी नहीं होता।
2. कर्मवाच्य में 'जा' का प्रयोग वैकल्पिक रूप से होता है, जबकि भाववाच्य में इसका प्रयोग अनिवार्य रूप से होता है; जैसे :
   मोहन द्वारा दरवाज़ा खोला गया। (कर्मवाच्य) विमला से खाया नहीं जाता। (भाववाच्य)

3. कर्मवाच्य की क्रिया सदैव सकर्मक होती है, जबकि भाववाच्य में अकर्मक या सकर्मक क्रिया का अकर्मकवत् प्रयोग होता है।

वाच्य परिवर्तन (Transformation of Voices)

उपर्युक्त विवेचित वाच्यों में कर्तृवाच्य अकर्मक और सकर्मक, दोनों प्रकार की क्रियाओं से; कर्मवाच्य, सकर्मक क्रियाओं से तथा 'भाववाच्य' केवल अकर्मक क्रियाओं से ही बनते हैं। यहाँ 'कर्तृवाच्य' से 'कर्मवाच्य' तथा 'भाववाच्य' बनाने की विधियों पर अलग-अलग विचार किया जाएगा।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

'कर्मवाच्य' केवल सकर्मक क्रियाओं से ही बनते हैं। अतः कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय निम्नलिखित परिवर्तन करने होते हैं :

(क) कर्तृवाच्य के मुख्य कर्ता के साथ 'से' (कभी-कभी 'द्वारा') विभक्ति जोड़कर उसे 'करण-कारक' बना दिया जाता है; जैसे–रमा-रमा से, राजू ने राजू से, मैंने-मुझसे या मेरे द्वारा।

(ख) 'जा' धातु के क्रिया रूप कर्मवाच्य की (सामान्य भूतकालिक) मुख्य क्रिया के लिंग, वचन आदि के अनुसार जोड़कर 'साधारण क्रिया' को 'संयुक्त क्रिया' बना दिया जाता है; जैसे :
खाता है–खाया जाता है। घूमता हूँ–घूमा जाता है। को मारा–को मारा गया। लिख रहे थे–लिखे जा रहे थे।

(ग) कर्मवाच्य की क्रिया के लिंग, वचन आदि वाक्य के कर्म के अनुसार प्रयोग किए जाते हैं।

कुछ उदाहरण :

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. आज आचार्य ने सुंदर भाषण दिया।	आज आचार्य द्वारा सुंदर भाषण दिया गया।
2. मैंने पत्र लिखा।	मुझसे पत्र लिखा गया।
3. राम ने रावण को मारा।	राम के द्वारा रावण को मारा गया।
4. भारत ने नया उपग्रह छोड़ा।	भारत द्वारा नया उपग्रह छोड़ा गया।
5. राधा पुस्तक पढ़ती है।	राधा से पुस्तक पढ़ी जाती है।
6. रमा पुस्तक पढ़ेगी।	रमा के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाएगी।
7. माता बच्चे को खाना खिलाती है।	माता द्वारा बच्चे को खाना खिलाया जाता है।
8. अध्यापक विद्यार्थियों को पाठ पढ़ायेंगे।	अध्यापक से विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाया जाएगा।
9. मैंने रमा को पत्र लिख दिया है।	मेरे द्वारा रमा को पत्र लिख दिया गया है।
10. अनेक चित्रकारों ने सुंदर चित्र बनाए।	अनेक चित्रकारों द्वारा सुंदर चित्र बनाए गए हैं।
11. अध्यापक ने विद्यार्थियों को डाँटा।	अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को डाँटा गया।
12. बूढ़ा सड़क पर जा रहा है।	बूढ़े से सड़क पर जाया जा रहा है।
13. ममता खाना पका रही है।	ममता से खाना पकाया जा रहा है।
14. पिता पुत्र को पैसे दे रहा है।	पिता से पुत्र को पैसे दिए जा रहे हैं।
15. सुरेश मिठाई लाएगा।	सुरेश से मिठाई लाई जाएगी।
16. गुरु जी गीता पढ़ाते हैं।	गुरु जी से गीता पढ़ाई जाती है।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

'भाववाच्य' केवल अकर्मक क्रियाओं से ही बनते हैं अर्थात् उनमें कर्म नहीं होता। अत: कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाते समय :

(क) 'कर्तृवाच्य' से 'कर्मवाच्य' बनाने की विधि के नियम 'क' तथा 'ख' यहाँ भी पूरी तरह लागू होते हैं।

(ख) वाक्य की क्रिया (भाव) को ही वाक्य का कर्ता बना दिया जाता है; जैसे–हँसता है–हँसा जाता है। खेला–खेला गया। सोएगा–सोया जाएगा। रो रही है–रोया जा रहा है।

(ग) 'जा' धातु के क्रिया-रूप कर्तृवाच्य के 'काल-भेद' के अनुसार जुड़ जाते हैं।

(घ) क्रिया सदैव अन्य पुरुष पुल्लिंग तथा एकवचन में रहती है।

कुछ उदाहरण :

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. मैं नहीं खाता।	मुझसे खाया नहीं जाता।
2. वह खाता है।	उससे खाया जाता है।
3. वह नहीं दौड़ता।	उससे दौड़ा नहीं जाता।
4. वे जाते हैं।	उनसे जाया जाता है।
5. राधा नहीं पढ़ती है।	राधा से पढ़ा नहीं जाता।
6. उमा नहीं गाती।	उमा से गाया नहीं जाता।
7. रामू नहीं बोलता।	रामू से बोला नहीं जाता।
8. राजू तेज़ नहीं दौड़ता।	राजू से तेज़ नहीं दौड़ा जाता।
9. वह नहीं हँसता।	उससे हँसा नहीं जाता।
10. वह नहीं खेलता।	उससे नहीं खेला जाता।
11. रमेश अभी सोएगा।	रमेश से अभी सोया जाएगा।
12. राम नहीं पढ़ता।	राम से पढ़ा नहीं जाता।
13. वह खेलता है।	उससे खेला जाता है।
14. बच्चे अब चल नहीं सकते।	बच्चों से अब चला नहीं जा सकता।
15. पक्षी आकाश में उड़ते हैं।	पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।
16. कुत्ता आँगन में सो रहा है।	कुत्ते के द्वारा आँगन में सोया जा रहा है।
17. रमेश मैदान में खेल रहा है।	रमेश से मैदान में खेला जा रहा है।

काल (Tense)

काल का शाब्दिक अर्थ है 'समय'। क्रिया के जिस रूप से कार्य-व्यापार के संपन्न होने के समय का बोध होता है, उसे 'काल' कहते हैं।

काल के प्रकार

काल तीन हैं :

1. भूतकाल (Past Tense) 2. वर्तमान काल (Present Tense) 3. भविष्यत काल (Future Tense)।

1. **भूतकाल** (Past Tense) : क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य-व्यापार होने का बोध हो, उसे 'भूतकाल' कहते हैं :

(क) कल वह मेरे घर आया था। (ख) उसने मुझे पुस्तक दी थी। (ग) वह घर गई होगी।

2. **वर्तमान काल** (Present Tense) : **क्रिया के जिस रूप से बीत रहे समय में कार्य-व्यापार संपन्न होने का बोध हो, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं।**

(क) गीता खाना पका रही है। (ख) सोहन पढ़ाई कर रहा है। (ग) सुरेश खेल रहा है।

3. **भविष्य काल** (Future Tense) : **क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य-व्यापार संपन्न होने का बोध हो, उसे 'भविष्य काल' कहते हैं।**

(क) वह कल ज़रूर आएगा। (ख) मुझे कल दिल्ली जाना है। (ग) मैं आपसे मिलता रहूँगा।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. **निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य परिवर्तन कीजिए :**

1. सुरेंद्र ने सुंदर गीत लिखे हैं। ....
2. वे इस कष्ट को नहीं सह सकते। ....
3. पक्षी आकाश में उड़ेंगे। ....
4. लड़कों के द्वारा खूब पढ़ा गया। ....
5. बच्चा खूब रोया। ....
6. वह छोटा बालक चोट की पीड़ा नहीं सह सकता। ....
7. बालकों द्वारा गेंद खेली जा रही है। ....
8. भगवान हमारी रक्षा करता है। ....
9. बालक छत से कूदते हैं। ....
10. मैं यह लेख नहीं पढ़ सकता। ....
11. मैंने पत्र लिखा। ....
12. कमल अब नहीं खेलेगा। ....
13. पंजाब में पुलिस द्वारा उग्रवादियों का डटकर मुकाबला किया जा रहा है। ....
14. दंगाई छात्रों द्वारा खूब पथराव किया गया। ....
15. लड़का पत्र पढ़ता है। ....
16. घोड़े से बोझ ढोया गया। ....
17. गाय नहीं चलती। ....
18. राम से पत्र लिखवाया जाता है। ....
19. मज़दूर लकड़ी काटता है। ....
20. वह नहीं खाता है। ....
21. डाकुओं के द्वारा चौकी लूटी गई। ....
22. राम से अब पढ़ा नहीं जाएगा। ....
23. सुधा फूल तोड़ेगी। ....
24. राम नहीं हँसता। ....
25. लड़का तैरता है। ....
26. रमेश द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। ....

27. श्याम पत्र लिखता है। ....

28. वे गा नहीं सकते। ....

29. मुझसे अखबार नहीं पढ़ा जाता। ....

30. भारतवासी महात्मा गांधी को नहीं भूल सकते। ....

31. छात्रों द्वारा पत्र लिखे जाते हैं। ....

32. मैं इस गर्मी में सो नहीं सकता। ....

33. शीला पत्र लिख रही है। ....

34. पुलिस ने संजय दत्त को गिरफ़्तार किया। ....

35. शिवानी पुस्तक पढ़ती है। ....

36. पुलिस के द्वारा निर्दोष व्यक्ति पकड़ा गया। ....

37. प्रभु हमारी रक्षा करते हैं। ....

38. कमल ने सुंदर कविताएँ लिखी हैं। ....

39. क्या वे रोएंगे? ....

40. नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी। ....

41. सोहन फोड़ा नहीं चिरवाएगा। ....

42. मैं प्रतिदिन व्यायाम करता हूँ। ....

43. लड़कों के द्वारा स्कूल साफ़ किया गया। ....

44. माला ने खाना खाया। ....

45. हम लोग रोज़ नहाते हैं। ....

46. मोहन से दूध नहीं पिया जा रहा है। ....

47. हामिद पतंग उड़ा रहा है। ....

48. गर्मियों में लोग खूब नहाते हैं। ....

49. नानी से कहानी नहीं कही जाती। ....

50. रमेश नाटक खेलता है। ....

51. चिड़ियाँ घोंसलों में सोती हैं। ....

52. मुझसे पत्र नहीं लिखा गया। ....

53. महात्मा गांधी ने राष्ट्र को शांति और अहिंसा का संदेश दिया। ....

54. हम इतने दुख नहीं सह सकते। ....

55. बच्चे शांत नहीं रह सकते। ....

56. मैं कविता पढ़ सकता हूँ। ....

57. मीरा द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा। ....

58. मुझसे पत्र नहीं पढ़ा जाता। ....

59. हम नेता जी सुभाषचंद्र बोस को नहीं भूल सकते। ....

60. हम इतने कष्ट नहीं सह सकते। ....

❑❑

5 अव्यय (Indeclinable Words)

'अव्यय' शब्द का अर्थ है, जिस शब्द का कुछ भी **व्यय न होता हो**। अत: **अव्यय वे शब्द हैं जिनके रूप में लिंग-वचन-पुरुष-काल आदि व्याकरणिक कोटियों के प्रभाव से कोई परिवर्तन नहीं होता**। अत: अव्यय शब्दों को अविकारी शब्द भी कहा जाता है। आज, कल, तेज़, धीरे, अरे, ओह, किंतु, पर, ताकि आदि अव्यय शब्दों के उदाहरण हैं।

अव्यय शब्दों के भेद (Kinds of Indeclinable Words)

अव्यय

- क्रियाविशेषण (Adverb)
- संबंधबोधक (Preposition)
- समुच्चयबोधक (Conjunction)
- विस्मयादिबोधक (Interjection)
- निपात

1. क्रियाविशेषण (Adverb)

निम्नलिखित वाक्यों में **रंगीन** शब्दों पर ध्यान दीजिए :

(क) **बच्चे धीरे-धीरे** चल रहे थे। (ख) वे लोग **रात को** पहुँचे। (ग) आप **यहाँ** बैठिए। (घ) बच्चा **बहुत** रोया। रंगीन शब्द, क्रिया के पहले लगकर उसकी विशेषता प्रकट कर रहे हैं। अत: कहा जा सकता है कि :

वे अविकारी (अव्यय) शब्द जो क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, क्रियाविशेषण कहे जाते हैं।

क्रिया की विशेषता प्राय: चार प्रकार से बताई जाती है। क्रिया किस रीति से संपन्न हो रही है; जैसे–धीरे-धीरे; तेज़ी से; कहाँ घटित हो रही है; जैसे–यहाँ, वहाँ; कब घटित हो रही है; जैसे– शाम को, सुबह को, रात को। इसके अलावा क्रिया की मात्रागत विशेषता भी थोड़ा, बहुत, काफ़ी आदि शब्दों से बताई जा सकती है। इन्हीं आधारों पर क्रियाविशेषण के चार भेद हो जाते हैं :

क्रियाविशेषण

- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
- कालवाचक क्रियाविशेषण
- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

(*i*) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of Manner) (*ii*) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of Place)
(*iii*) कालवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of Time) (*iv*) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of Quantity)।

(*i*) **रीतिवाचक क्रियाविशेषण** (Adverb of Manner)–**जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया के घटित होने की विधि या रीति (Manner) से संबंधित विशेषता का पता चलता है, वे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।** इसकी पहचान के लिए क्रिया पर 'कैसे/किस प्रकार' के प्रश्न करने चाहिए। इनके उत्तर में जो शब्द प्राप्त होता है वह 'रीतिवाचक क्रियाविशेषण' है; जैसे–'गाड़ी तेज़ चल रही है' वाक्य में यदि पूछा जाए कैसे चल रही है? तो उत्तर मिलेगा '**तेज़**'।

अत: 'तेज़' रीतिवाचक क्रियाविशेषण है; जैसे–रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्दों के अन्य उदाहरण हैं–अचानक, तेज़ी से, भली-भाँति, जल्दी से आदि। देखिए कुछ वाक्य :

(क) गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर **अचानक** आ गई। (ख) मैं उनसे **भली-भाँति** परिचित हूँ। (ग) तुम तो झटपट काम करो।

(ii) **स्थानवाचक क्रियाविशेषण** (Adverb of Place)–**क्रिया के घटित होने के स्थान के विषय में बोध कराने वाले क्रियाविशेषण शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं**; जैसे–यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आसपास, घर में, स्टेशन पर आदि।

ये दो प्रकार के होते हैं :

(क) स्थितिबोधक; जैसे : आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, आर-पार, भीतर, बाहर, सर्वत्र, पास, दूर, यहाँ, वहाँ आदि।

(ख) दिशाबोधक; जैसे : ऊपर की ओर, नीचे की तरफ़, इधर-उधर, चारों ओर आदि।

स्थानवाचक क्रियाविशेषणों की पहचान के लिए क्रिया पर '**कहाँ**' प्रश्न करना चाहिए। इसके उत्तर में जो शब्द प्राप्त होता है, वह स्थानवाचक क्रियाविशेषण है; जैसे : 'कमला ऊपर बैठी है'–वाक्य में यदि पूछा जाए–कहाँ बैठी है? तो उत्तर मिलेगा '**ऊपर**'। अत: 'ऊपर' स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

(iii) **कालवाचक क्रियाविशेषण** (Adverb of Time)–**वे शब्द जो क्रिया के घटित होने के समय से संबद्ध विशेषता को बताते हैं कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं**; जैसे : आजकल, कभी, प्रतिदिन, रोज़, सुबह, अकसर, रात को, चार बजे, हर साल आदि। इनकी पहचान के लिए क्रिया पर '**कब**' प्रश्न करना चाहिए। इसके उत्तर में जो शब्द प्राप्त होगा, वह कालवाचक क्रियाविशेषण है; जैसे : 'गुरु जी अभी आए हैं'–वाक्य में यदि पूछा जाए–कब आए हैं? तो उत्तर मिलेगा '**अभी**'। अत: 'अभी' कालवाचक क्रियाविशेषण है।

कालवाचक क्रियाविशेषण तीन प्रकार के होते हैं :

(i) कालबिंदुवाचक	:	प्रात:, सायं, आज, अभी, अब, जब, कभी, कल आदि।
(ii) अवधिवाचक	:	हमेशा, लगातार, आजकल, सदैव, दिनभर, नित्य आदि।
(iii) बारंबारतावाचक	:	नित्य, रोज़, हर बार, बहुधा, प्रतिदिन आदि।

(iv) **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण** (Adverb of Quantity)–**जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया के परिमाण या मात्रा से संबंधित विशेषता का पता चलता है वे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं**। इन शब्दों से यह पता चलता है कि क्रिया किस मात्रा में हुई। अत: इनकी पहचान के लिए क्रिया पर '**कितना/कितनी**' प्रश्न करना चाहिए। कुछ उदाहरण देखिए :

1. वह दूध **बहुत** पीता है। 2. मैं **जितना** खाता हूँ, **उतना** मोटा होता हूँ। 3. वह **थोड़ा** ही चल सकी।

इन वाक्यों में रंगीन शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं।

क्रियाविशेषणों की रचना–क्रियाविशेषणों की रचना दो प्रकार से होती है :

(क) मूल क्रियाविशेषण–कुछ शब्द मूलत: क्रियाविशेषण ही होते हैं अर्थात् किसी अन्य शब्द अथवा प्रत्यय के योग के बिना ही प्रयोग में लाए जाते हैं; जैसे : आज, कल, यहीं, इधर, ऊपर, नीचे, ठीक, चाहे आदि।

(ख) यौगिक क्रियाविशेषण–कुछ क्रियाविशेषण की रचना किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय लगाकर होती है। इन्हें यौगिक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–यथा + शक्ति = यथाशक्ति, प्रेम + पूर्वक = प्रेमपूर्वक,
स्वभाव + त: = स्वभावत:, अन + जाने = अनजाने, दिन + रात = दिनरात, धीरे-धीरे, रात + भर आदि।

विशेष–यद्यपि क्रियाविशेषण अविकारी शब्द हैं, तथापि कभी-कभी क्रियाविशेषण शब्दों में भी कुछ परिवर्तन आ जाता है; जैसे–(क) आम अच्छा **पका** है। लीची अच्छी **पकी** है। (ख) कोट अच्छा **धुला** है। साड़ी अच्छी **धुली** है।

क्रियाविशेषण संबंधी कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु

- कुछ शब्द तो मूलत: क्रियाविशेषण ही होते हैं; जैसे : कल, आज, अब, तब, यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, हमेशा आदि। परंतु कुछ शब्द अन्य शब्दों में प्रत्यय लगाकर या समास द्वारा भी बनाए जाते हैं; जैसे : अनजाने, ध्यानपूर्वक आदि। ऐसे क्रियाविशेषण **यौगिक क्रियाविशेषण** कहलाते हैं।

- अनेक शब्द ऐसे हैं, जो विशेषण तथा क्रियाविशेषण दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं। अत: प्रयोग के आधार पर ही यह निर्णय करना चाहिए कि अमुक शब्द विशेषण है या क्रियाविशेषण; जैसे :

  1. मुझे **मीठा** केला बहुत पसंद है। (विशेषण) 2. वह बहुत **मीठा** गाती है। (क्रियाविशेषण)
  3. वह एक **अच्छी** लड़की है। (विशेषण) 4. वह मुझे **अच्छी** लगती है। (क्रियाविशेषण)
- जिस प्रकार विशेषणों की विशेषता बताने वाले प्रविशेषण शब्द विशेषणों के पहले लगते हैं, उसी तरह से प्रविशेषणों का प्रयोग भी क्रियाविशेषणों के पहले किया जाता है; जैसे :

  1. बच्चा **बहुत** तेज़ी से दौड़ रहा था। 2. आज उसने **थोड़ा** कम खाया।
- हिंदी में कालवाचक, रीतिवाचक तथा स्थानवाचक क्रियाविशेषणों का प्रयोग एक ही वाक्य में संभव है; जैसे :

वे	शाम को	कार से	घर	पहुँचेंगे।
	कालवाचक	रीतिवाचक	स्थानवाचक	

2. संबंधबोधक (Preposition)

जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य में दूसरे शब्दों से उसका संबंध बताते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक' या 'परसर्ग' कहते हैं; जैसे :

(*i*) सीता घर **के भीतर** बैठी है। (*ii*) शीत **के कारण** गरीब का बुरा हाल था।

यहाँ हम पाते हैं कि इन वाक्यों में 'के भीतर' तथा 'के कारण' शब्द संबंधबोधक अव्यय हैं। इन्हें परसर्गीय शब्द भी कहा जा सकता है, लेकिन संबंधबोधक अव्यय परसर्ग रहित भी होते हैं; जैसे–मैं **रातभर** जागता रहा। इस प्रकार संबंधबोधक अव्यय के दो रूप हमारे सामने आते हैं :

(क) परसर्ग सहित–के बारे, के समान, के सिवा। (ख) परसर्ग रहित–भर, बिना, पहले, मात्र, अपेक्षा।

इस प्रकार–पहले, सामने, आगे, पास, परे, द्वारा, बिना, ऊपर, नीचे, भीतर, अंदर, ओर, मध्य, बीच में, बाद, निकट, कारण, साथ, समेत, विरुद्ध, पश्चात्, सरीखा, तक, सदृश, प्रतिकूल, मात्र, अपेक्षा, मार्फत आदि संबंधबोधक अव्यय की कोटि में आते हैं।

अर्थ के अनुसार संबंधबोधक अव्यय के कुल आठ भेद हैं :

1. कालबोधक अव्यय, 2. स्थानबोधक अव्यय, 3. दिशाबोधक अव्यय, 4. साधनबोधक अव्यय, 5. विषयबोधक अव्यय, 6. सादृश्यबोधक अव्यय, 7. मित्रताबोधक अव्यय, 8. विरोधबोधक अव्यय।

1. **कालबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से काल का बोध हो, वे 'कालबोधक अव्यय' कहलाते हैं; जैसे–से पहले, के लगभग, के पश्चात्।

   (*i*) ट्रेन समय **से पहले** आ गई। (*ii*) उसके जाने **के लगभग** एक घंटे बाद जाऊँगा।
2. **स्थानबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से स्थान का बोध हो, वे 'स्थानबोधक अव्यय' कहलाते हैं; जैसे–के पास, के किनारे, से दूर।

   (*i*) स्कूल **के पास** ही राजू का घर है। (*ii*) तालाब **के किनारे** ही बगीचा है।
3. **दिशाबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से दिशा का बोध हो, उसे 'दिशाबोधक अव्यय' कहते हैं; जैसे–की ओर, के आस-पास।

   (*i*) आग **की ओर** मत जाना। (*ii*) घर **के आस-पास** ही रहना।
4. **साधनबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से साधन का बोध हो, उन्हें 'साधनबोधक अव्यय' कहते हैं; जैसे–के द्वारा, के जरिए , के मार्फत।

   (*i*) आपके आने की सूचना श्याम **के द्वारा** मिली।

   (*ii*) उसके **ज़रिए** यह काम होगा।

5. **विषयबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से विषय की जानकारी प्राप्त हो, वे 'विषयबोधक अव्यय' कहलाते हैं; जैसे–के बारे, की बाबत आदि।

(*i*) गांधी जी **के बारे** में बहुत कहा गया है। (*ii*) मोहन **की बाबत** बात करने आया हूँ।

6. **सादृशबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से सादृश्यता का बोध हो, वे 'सादृशबोधक अव्यय' कहलाते हैं; जैसे–के समान, की भाँति, के योग्य, की तरह, के अनुरूप आदि।

(*i*) गांधी जी **के समान** सत्यवादी बनो। (*ii*) सीता, सावित्री **की भाँति** जीवन जियो।

7. **मित्रताबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से मित्रता का बोध प्रकट हो, वे 'मित्रताबोधक अव्यय' कहलाते हैं; जैसे–के अलावा, के सिवा, के अतिरिक्त, के बिना आदि।

(*i*) मोहन **के सिवा** मेरा कौन है। (*ii*) रामू **के बिना** मैं नहीं जाऊँगा।

8. **विरोधबोधक अव्यय**–जिन अव्यय शब्दों से विरोध व्यक्त होता है, वे 'विरोधबोधक अव्यय' कहलाते हैं; जैसे–के विरुद्ध, के खिलाफ़, के उलटा।

(*i*) उसके **विरुद्ध** मत बोलो। (*ii*) मेरे **खिलाफ़** कोई चुनाव नहीं लड़ेगा।

3. समुच्चयबोधक (Conjunction)

जो अव्यय पद एक शब्द का दूसरे शब्द से, एक वाक्य का दूसरे वाक्य से अथवा एक वाक्यांश का दूसरे वाक्यांश से संबंध जोड़ते हैं, वे 'समुच्चयबोधक' या 'योजक' कहलाते हैं; जैसे :

राधा आज आएगी **और** कल चली जाएगी।

समुच्चयबोधक के दो प्रमुख भेद हैं :

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक (Coordinate Conjunction)
2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक (Subordinate Conjunction)

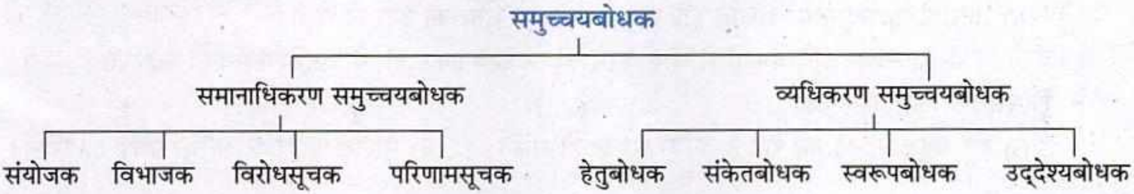

1. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**–समानाधिकरण समुच्चयबोधक के निम्नलिखित चार भेद हैं :

(क) संयोजक (ख) विभाजक (ग) विरोधसूचक (घ) परिणामसूचक।

(क) संयोजक–जो अव्यय पद दो शब्दों, वाक्यांशों या समान वर्ग के दो उपवाक्यों में संयोग प्रकट करते हैं, वे 'संयोजक' कहलाते हैं; जैसे : और, एवं, तथा आदि।

(*i*) राम **और** श्याम भाई-भाई हैं। (*ii*) इतिहास **एवं** भूगोल दोनों का अध्ययन करो।

(*iii*) फुटबॉल **तथा** हॉकी दोनों मैच खेलूँगा।

(ख) विभाजक या विकल्प–जो अव्यय पद शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों में विकल्प प्रकट करते हैं, वे 'विकल्प' या 'विभाजक' कहलाते हैं; जैसे : कि, चाहे, अथवा, अन्यथा, या, नहीं, तो आदि।

(*i*) तुम ढंग से पढ़ो **अन्यथा** फेल हो जाओगे। (*ii*) चाहे ये दे दो **चाहे** वो।

(ग) विरोधसूचक–जो अव्यय पद पहले वाक्य के अर्थ से विरोध प्रकट करें, वे 'विरोधसूचक' कहलाते हैं; जैसे–परंतु, लेकिन, किंतु आदि।

(*i*) रोटियाँ मोटी **किंतु** स्वादिष्ट थीं। (*ii*) वह आया **परंतु** देर से।

(*iii*) मैं तो चला जाऊँगा, **लेकिन** तुम्हें भी आना पड़ेगा।

(घ) परिणामसूचक–जब अव्यय पद किसी परिणाम की ओर संकेत करता है, तो 'परिणामसूचक' कहलाता है; जैसे : इसलिए, अतएव, अत:, जिससे, जिस कारण आदि।

(*i*) तुमने मना किया था इसलिए मैं नहीं आया।

(*ii*) मैंने यह काम खत्म कर दिया जिससे कि तुम्हें आराम मिल सके।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक–वे संयोजक जो एक मुख्य वाक्य में एक या अनेक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, 'व्यधिकरण समुच्चयबोधक' कहलाते हैं; जैसे–यदि मेहनत करोगे तो फल पाओगे।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के मुख्य चार भेद हैं :

(क) हेतुबोधक या कारणबोधक, (ख) संकेतबोधक, (ग) स्वरूपबोधक, (घ) उद्देश्यबोधक।

(क) हेतुबोधक या कारणबोधक–इस अव्यय के द्वारा वाक्य में कार्य-कारण का बोध स्पष्ट होता है; जैसे : क्योंकि, चूँकि, इसलिए, कि आदि।

(*i*) वह असमर्थ है, क्योंकि वह लंगड़ा है।

(*ii*) चूँकि मुझे वहाँ जल्दी पहुँचना है, इसलिए जल्दी जाना होगा।

(ख) संकेतबोधक–प्रथम उपवाक्य के योजक का संकेत अगले उपवाक्य में पाया जाता है। ये प्राय: जोड़े में प्रयुक्त होते हैं; जैसे : जो.........तो, यद्यपि.........तथापि, चाहे.........पर, जैसे.........तैसे।

(*i*) ज्योंही मैंने दरवाज़ा खोला त्योंही बिल्ली अंदर घुस आई।

(*ii*) यद्यपि वह बुद्धिमान है तथापि आलसी भी।

(ग) स्वरूपबोधक–जिन अव्यय पदों को पहले उपवाक्य में प्रयुक्त शब्द, वाक्यांश या वाक्य को स्पष्ट करने हेतु प्रयोग में लाया जाए, उसे 'स्वरूपबोधक' कहते हैं; जैसे–यानी, अर्थात्, यहाँ तक कि, मानो आदि।

(*i*) वह इतनी सुंदर है मानो अप्सरा हो।

(*ii*) 'असतो मा सद्गमय' अर्थात् (हे प्रभु) असत्य से सत्य की ओर ले चलो।

(घ) उद्देश्यबोधक–जिन अव्यय पदों से कार्य करने का उद्देश्य प्रकट हो, वे 'उद्देश्यबोधक' कहलाते हैं; जैसे–जिससे कि, की, ताकि आदि।

(*i*) वह बहुत मेहनत कर रहा है ताकि सफल हो सके। (*ii*) मेहनत करो जिससे कि प्रथम आ सको।

4. विस्मयादिबोधक (Interjection)

विस्मय, हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, विषाद आदि भावों को प्रकट करने वाले अविकारी शब्द 'विस्मयादिबोधक' कहलाते हैं। इन शब्दों का वाक्य से कोई व्याकरणिक संबंध नहीं होता। अर्थ की दृष्टि से इसके मुख्य आठ भेद हैं :

1. विस्मयसूचक – अरे!, क्या!, सच!, ऐं!, ओह!, हैं!
2. हर्षसूचक – वाह!, अहा!, शाबाश!, धन्य!
3. शोकसूचक – ओह!, हाय!, त्राहि-त्राहि!, हाय राम!
4. स्वीकारसूचक – अच्छा!, बहुत अच्छा!, हाँ-हाँ!, ठीक!
5. तिरस्कारसूचक – धिक्!, छि:!, हट!, दूर!
6. अनुमोदनसूचक – हाँ-हाँ!, ठीक!, अच्छा!
7. आशीर्वादसूचक – जीते रहो!, चिरंजीवी हो!, दीर्घायु हो!
8. संबोधनसूचक – हे!, रे!, अरे!, ऐ!

इन सभी के अलावा कभी-कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रियाविशेषण आदि का प्रयोग भी विस्मयादिबोधक के रूप में होता है; जैसे :

संज्ञा	–	शिव, शिव!, हे राम!, बाप रे!
सर्वनाम	–	क्या!, कौन?
विशेषण	–	सुंदर!, अच्छा!, धन्य!, ठीक!, सच!
क्रिया	–	हट!, चुप!, आ गए!
क्रियाविशेषण	–	दूर-दूर!, अवश्य!

5. निपात

निश्चित शब्द, शब्द-समूह अथवा पूरे वाक्य को अन्य भावार्थ प्रदान करने हेतु जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें निपात कहते हैं। सहायक शब्द होते हुए भी ये वाक्य के अंग नहीं माने जाते। वाक्य में इनके प्रयोग से उस वाक्य का समग्र अर्थ व्यक्त होता है।

जो अव्यय किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल भर देते हैं, वे निपात या अवधारक अव्यय कहलाते हैं। हिंदी में प्रचलित महत्त्वपूर्ण निपात निम्नलिखित हैं :

1. **ही** — इसका प्रयोग व्यक्ति, स्थान या बात पर बल देने के लिए किया जाता है; जैसे :
   राजेश दफ़्तर **ही** जाएगा।
   तुम **ही** वहाँ जाकर यह काम करोगे।
   अलका **ही** प्रथम आने के योग्य है।
2. **भी** — इसका प्रयोग व्यक्ति, स्थान व वस्तु के साथ अन्य को जोड़ने के लिए किया जाता है; जैसे :
   राम के साथ श्याम **भी** जाएगा।
   दिल्ली के अलावा मुंबई **भी** मुझे प्रिय है।
   चावल के साथ दाल **भी** आवश्यक है।
3. **तक** — किसी व्यक्ति अथवा कार्य आदि की सीमा निश्चित करता है; जैसे :
   वह शाम **तक** आएगा।
   दिल्ली **तक** मेरी पहुँच है।
   वह दसवीं **तक** पढ़ा हुआ है।
4. **केवल/मात्र** — केवल या अकेले के अर्थ को महत्त्व देने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे :
   प्रभु का नाम लेने **मात्र** से कष्ट दूर हो जाते हैं।
   केवल तुम्हारे आने से काम न चलेगा।
   दस रुपये **मात्र** लेकर क्या करोगे।
5. **भर** — यह अव्यय, सीमितता और विस्तार व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है; जैसे :
   वह **रातभर** रोता रहा।
   मैं **जीवनभर** उसका गुलाम बनकर रहा।
   विश्वभर में उसकी ख्याति फैली हुई है।
6. **तो** — क्रिया के साथ उसका परिणाम व मात्रा आदि को प्रकट करने के लिए इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है; जैसे :
   तुम आते **तो** मैं चलता।
   वर्षा होती **तो** फसल अच्छी होती।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय शब्दों द्वारा कीजिए :

1. पिता ………………… पुत्र घूमने जा रहे हैं।
2. मैं ………………… वहीं था।
3. तुम ………………… उठो।
4. …………………! क्या छक्का मारा है।
5. स्कूल मेरे घर ………………… है।
6. आजकल धन ………………… कोई नहीं पूछता।
7. रात बढ़ गई है ………………… आप यहीं रहिए।
8. वह ………………… नहीं पढ़ता।
9. तुम ………………… बाज़ार और दवा लेकर आओ।
10. तुम्हें ………………… काम न करने की आदत पड़ गई है।
11. जो ………………… खाते हैं वे स्वस्थ नहीं रहते।
12. ………………… अब मैं क्या करूँ?
13. ………………… कितनी सुंदर झील है।
14 ………………… मैं तो भूल ही गया था।
15. ………………… तुम्हें क्या हो गया?
16. आप कूड़ा ………………… फेंकते हैं?
17. अनुराग अब ………………… स्वस्थ है।
18. मैं उसके विचार से ………………… सहमत नहीं हूँ।
19. वह मेरी बात से ………………… संतुष्ट नहीं हुआ।
20. उसकी हालत ………………… खराब है।
21. मैं उसकी बात से ………………… सहमत नहीं हूँ।
22. मुझे ………………… खाने को दीजिए।
23. रमेश अब ………………… पढ़ रहा है।
24. पेट्रोल के ………………… कार नहीं चल सकती।
25. बालक चाँद की ………………… देख रहा है।
26. रमेश कल ………………… आएगा।
27. वह बहुत देर ………………… रोता रहा।
28. वर्षों से ………………… कोई नहीं गया।

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए विकल्पों में से उचित अव्यय शब्द चुनकर कीजिए :

1. हमें अपनी सभ्यता ………………… संस्कृति पर गर्व है।

(क) या (ख) और (ग) अथवा (घ) के साथ

2. खूब मन लगाकर पढ़ो ………………… परीक्षा में प्रथम आओ।

(क) ताकि (ख) चूँकि (ग) अन्यथा (घ) क्योंकि

3. हरीश ………………… सत्य बोलता है।

(क) कभी कभी (ख) सदैव (ग) कभी नहीं (घ) क्या

4. वहाँ मोहन के ………………… कोई नहीं था।

(क) और (ख) अलावा (ग) या (घ) अथवा

5. ………………… बोलो, कोई सुन लेगा।

(क) धीरे (ख) चिल्लाकर (ग) ज़ोर से (घ) गाकर

❑❑

6 रचना के आधार पर वाक्य-रूपांतर

वाक्य

जब भी हमें अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचानी होती है या किसी से बातचीत करनी होती है तो हम वाक्यों का सहारा लेकर ही बोलते हैं। यद्यपि वाक्य विभिन्न शब्दों (पदों) के योग से बनता है और हर शब्द का अपना अलग अर्थ भी होता है, पर वाक्य में आए सभी घटक परस्पर मिलकर एक पूरा विचार या संदेश प्रकट करते हैं। वाक्य छोटा हो या बड़ा, किसी-न-किसी विचार या भाव को पूर्णत: व्यक्त करने की क्षमता रखता है। अत:

ऐसा सार्थक शब्द-समूह, जो व्यवस्थित हो तथा पूरा आशय प्रकट कर सके, वाक्य कहलाता है।

'वाक्य' में निम्नलिखित बातें होती हैं :

1. वाक्य की रचना शब्दों (पदों) के योग से होती है।
2. वाक्य अपने में पूर्ण तथा स्वतंत्र होता है।
3. वाक्य किसी-न-किसी भाव या विचार को पूर्णत: प्रकट कर पाने में सक्षम होता है।

उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति कहता है **'सफ़ेद जूते'** तो यह वाक्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यहाँ पर किसी ऐसे विचार या संदेश का ज्ञान नहीं होता जिसे वक्ता बताना चाहता हो। जबकि **'मुझे सफ़ेद जूते खरीदने हैं'** एक पूर्ण वाक्य है, क्योंकि यहाँ 'सफ़ेद जूतों' के विषय में बोलने वाले का भाव, स्पष्टत: प्रकट हो रहा है।

वाक्य के अंग

प्रत्येक वाक्य के दो खंड अथवा अंग होते हैं–कर्ता और क्रिया। कर्ता और क्रिया के विस्तार को 'उद्देश्य और विधेय' कहा जाता है।

1. उद्देश्य : वाक्य में कर्ता या उसके विस्तार या जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कहा जाए, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं। मुख्य रूप से कर्ता ही वाक्य में उद्देश्य कहलाता है।

'मोहन बाज़ार जा रहा है।'

इस वाक्य में जो कुछ भी लिखा गया है, वह मोहन के विषय में है। इसलिए इस वाक्य में मोहन ही वाक्य का उद्देश्य है।

2. विधेय–वाक्य में कर्ता या उद्देश्य के बारे में जो कुछ भी कहा जाए उसे 'विधेय' कहते हैं। साधारणत: कर्ता उद्देश्य होता है और क्रिया विधेय होती है।

'मोहन बाज़ार जा रहा है।'

इस वाक्य में 'मोहन' उद्देश्य है, इस बात को पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है। वाक्य का शेष अंश 'बाज़ार जा रहा है' मोहन के बारे में कहा गया है, इसलिए यह इस वाक्य का विधेय है। कुछ अन्य उदाहरण :

उद्देश्य	विधेय
शीला	गाना गा रही है।
महात्मा गांधी	हमारे प्रिय नेता थे।
हमारे प्रिय नेता राजीव गांधी	की हत्या कर दी गई।
मैं	कल दिल्ली जाऊँगा।

उद्देश्य और विधेय का विस्तार

वास्तव में केवल क्रिया ही विधेय कही जाती है और क्रिया का कर्ता उद्देश्य कहलाता है किंतु जो शब्द उद्देश्य और विधेय की विशेषता प्रकट करते हैं अथवा उनके अर्थ में वृद्धि करते हैं, वे विस्तारक कहलाते हैं।

उद्देश्य के विस्तारक

उद्देश्य के अर्थ में विशेषता प्रकट करने के लिए जो शब्द अथवा वाक्यांश उसके साथ जोड़े जाते हैं, वे उद्देश्य-विस्तारक कहलाते हैं। जैसे :

1. **काली** गाय घास चरती है।
2. **कमल का** भाई मूर्ख है।
3. **पड़ोस में रहने वाले** शर्मा जी विदेश चले गए।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गाय', 'भाई' तथा 'शर्मा जी' उद्देश्य हैं तथा 'काली', 'कमल का' तथा 'पड़ोस में रहने वाले' यह तीनों क्रमशः उन तीनों उद्देश्यों के अर्थ में वृद्धि करने के कारण उद्देश्य के विस्तारक हैं। ऊपर के वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर यह भी पता चलता है कि उद्देश्य-विस्तार शब्द प्रायः विशेषण, संबंधकारक या विशेषण वाक्य होते हैं। प्रथम वाक्य में 'काली' शब्द विशेषण है, दूसरे वाक्य में 'कमल का' संबंध कारक है और 'पड़ोस में रहने वाले' वाक्यांश है, जो कि विशेषण की तरह प्रयुक्त हुआ है।

विधेय के विस्तारक

विधेय के अर्थ में विशेषता लाने वाले शब्द विधेय-विस्तारक कहलाते हैं। जैसे :

1. घोड़ा **तेज़** दौड़ रहा है।
2. भावेश **परिश्रमी** है।
3. राघव **खाकर** सो जाएगा।
4. विदेशियों ने **भारत पर आक्रमण** कर दिया।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'दौड़ रहा है', 'है', 'जाएगा' तथा 'कर दिया' ये चारों विधेय हैं; तथा 'तेज़', 'परिश्रमी', 'खाकर', 'भारत पर' तथा 'आक्रमण' ये पाँचों विधेय-विस्तारक हैं। इनमें 'तेज़' क्रिया-विशेषण 'परिश्रमी' पूरक, 'खाकर' पूर्वकालिक क्रिया, 'भारत पर' अधिकरण कारक तथा 'आक्रमण' शब्द कर्म है। यही विधेय-विस्तारक हैं।

इन विधेय-विस्तारक शब्दों पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि क्रिया-विशेषण पूरक, पूर्वकालिक क्रिया, करण से लेकर अधिकरण तक के कारकों में से कोई-सा कारक और सकर्मक क्रिया का कर्म ही प्रायः विधेय-विस्तारक हो सकते हैं।

(क) पदों का क्रम एवं नियम

हिंदी के वाक्य में पदक्रम के निम्नलिखित नियम हैं :

1. कर्ता पहले और क्रिया अंत में होती है; जैसे–वह गया। राम पुस्तक पढ़ता है। रमेश चलते-चलते शाम तक वहाँ जा पहुँचा। इन वाक्यों में 'वह', 'राम' तथा 'रमेश' कर्ता (पहले शब्द) हैं और 'गया', 'पढ़ता है', 'जा पहुँचा' क्रिया (अंतिम शब्द)।
2. क्रिया का कर्म या उसका पूरक क्रिया से पहले आता है तथा क्रिया कर्ता के बाद; जैसे–मैंने सेब खाया। पिता ने पुत्र को पैसे दिए। इन वाक्यों में 'सेब', 'पुत्र' तथा 'पैसे' कर्म हैं, 'खाया' और 'दिए' क्रिया तथा 'मैंने' और 'पिता' कर्ता।
3. यदि दो कर्म हों तो गौण कर्म पहले तथा मुख्य कर्म बाद में आता है; जैसे–पिता ने पुत्र को पैसे दिए। इसमें 'पुत्र' गौण कर्म है तथा 'पैसे' मुख्य कर्म।
4. कर्ता, कर्म तथा क्रिया के विशेषक (विशेषण या क्रियाविशेषण) अपने-अपने विशेष्य से पहले आते हैं; जैसे : मेधावी छात्र मन लगाकर पढ़ रहा है।

इस वाक्य में मेधावी (विशेषण) तथा मन लगाकर (क्रियाविशेषण) क्रमशः अपने-अपने विशेष्य छात्र (संज्ञा) तथा क्रिया (पढ़ रहा है) से पहले आए हैं।

5. विशेषण सर्वनाम के पहले नहीं आ सकता, वह सर्वनाम के बाद ही आएगा; जैसे :

   वह अच्छा है।   यह काला कपड़ा है।

   यहाँ सर्वनाम 'वह' और 'यह' के बाद ही विशेषण 'काला' और 'अच्छा' आए हैं।

6. स्थानवाचक या कालवाचक क्रियाविशेषण कर्ता के पहले या ठीक पीछे रखे जाते हैं; जैसे :

   आज मुझे जाना है।   तुम कल आ जाना।

   इन वाक्यों में कालवाचक क्रियाविशेषण 'आज' और 'कल' अपने कर्ता 'मुझे' और 'तुम' के क्रमशः पहले तथा ठीक बाद में आए हैं।

7. निषेधार्थक क्रियाविशेषण क्रिया से पहले आते हैं; जैसे :

   तुम वहाँ मत जाओ।   मुझे यह काम नहीं करना।

   इन वाक्यों में निषेधार्थक क्रियाविशेषण 'मत' तथा 'नहीं' क्रमशः अपनी क्रिया 'जाओ' तथा 'करना' से पहले आए हैं।

8. प्रश्नवाचक सर्वनाम या क्रियाविशेषण प्रायः क्रिया से पहले आते हैं; जैसे :

   तुम कौन हो?   तुम्हारा घर कहाँ है?

   इन वाक्यों में प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कौन' तथा क्रियाविशेषण 'कहाँ' क्रिया से पहले आए हैं, किंतु जिस 'क्या' का उत्तर 'हाँ' या 'ना' में हो, वह वाक्य के प्रारंभ में आते हैं।

   क्या तुम जाओगे?   क्या तुम्हें खाना खाना है?

9. प्रश्नवाचक या कोई अन्य सर्वनाम जब विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो, तो संज्ञा से पहले आएगा; जैसे :

   यहाँ कितनी किताबें हैं?   कौन आदमी आया है?

   इन वाक्यों में 'यहाँ' तथा 'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर क्रमशः 'किताबें' तथा 'आदमी' (संज्ञा) से पहले आए हैं।

10. संबोधन तथा विस्मयादिबोधक शब्द प्रायः वाक्य के आरंभ में आते हैं; जैसे :

    अरे रमा! तुम यहाँ कैसे?   ओह! मैं तो भूल गई थी।

11. संबंधबोधक अव्यय तथा परसर्ग संज्ञा और सर्वनाम के बाद आते हैं; जैसे :

    राम को जाना है।   उसको भेज दो।   वह मित्र के साथ घूमने गया है।

    उपर्युक्त वाक्यों में 'को' तथा 'के' परसर्ग संज्ञा व सर्वनाम राम, उस तथा मित्र के बाद आए हैं।

12. पूर्वकालिक 'कर' धातु के पीछे जुड़ता है; जैसे–छोड़ + कर = छोड़कर। इसके अलावा पूर्वकालिक क्रिया, मुख्य क्रिया से पहले आती है; जैसे :

    वह खाकर सो गया।   वह आकर पढ़ेगा।

    इन वाक्यों में 'खाकर' तथा 'आकर' (पूर्वकालिक) 'सो गया' तथा 'पढ़ेगा' (क्रिया) से पहले आए हैं।

13. भी, तो, ही, भर, तक आदि अव्यय उन्हीं शब्दों के पीछे लगते हैं, जिनके विषय में वे निश्चय प्रकट करते हैं; जैसे :

    मैं तो (भी, ही) घर गया था।   मैं घर भी (ही) गया था।

    इन दोनों वाक्यों में अव्यय 'तो', 'भी' तथा 'ही' क्रमशः 'मैं' और 'घर' के विषय में निश्चय प्रकट कर रहे हैं, इसलिए उनके पीछे लगे हुए हैं।

14. यदि...तो, जब...तब, जहाँ...वहाँ, ज्योंहि...त्योंहि आदि नित्य संबंधी अव्ययों में प्रथम प्रधान वाक्य के पहले तथा दूसरा आश्रित वाक्य के पहले लगता है; जैसे :

    जहाँ चाहते हो, वहाँ जाओ।   जब आप आएँगे, तब वह जा चुका होगा।

इन वाक्यों में 'जहाँ' और 'जब' प्रथम प्रधान वाक्य के पहले तथा 'वहाँ' और 'तब' दूसरे आश्रित उपवाक्य के पहले लगे हैं।

15. समुच्चयबोधक अव्यय दो शब्दों या वाक्यों के बीच में आता है। तीन समान शब्द या वाक्य हों तो 'और' अंतिम से पहले आता है; जैसे :
    दिनेश तो जा रहा है, लेकिन रमेश नहीं। सीता, गीता और रमा तीनों ही आएँगी।
    पहले वाक्य में समुच्चयबोधक अव्यय 'लेकिन' दो वाक्यों के बीच में आया है तथा दूसरे वाक्य में समुच्चयबोधक अव्यय 'और' तीन शब्द होने के कारण से अंतिम से पहले आया है।
16. वाक्य में विविध अंगों में तर्कसंगत निकटता होनी चाहिए; जैसे : एक पानी का गिलास लाओ।
    इस वाक्य में 'एक पानी' निरर्थक है; 'पानी का एक गिलास लाओ', सार्थक है।

(ख) पदों का अन्वय एवं नियम

अन्वय का अर्थ है 'मेल'। वाक्य में संज्ञा, क्रिया आदि आने पर पदों में परस्पर मेल होना चाहिए। यहाँ पर कुछ विशेष नियम दिए जा रहे हैं :

कर्ता, कर्म और क्रिया का अन्वय

1. यदि कर्ता के साथ कारक चिह्न या परसर्ग न हो, तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होगा; जैसे :
   राधा खाना बनाती है। शीला पुस्तक पढ़ती है।
2. यदि कर्ता के साथ परसर्ग हो, तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होगा; जैसे :
   राम ने पुस्तक पढ़ी। रमा ने भोजन पकाया।
3. यदि कर्ता और कर्म दोनों के साथ परसर्ग हो, तो क्रिया सदा पुल्लिंग, अन्य पुरुष, एकवचन में रहती है; जैसे :
   पुलिस ने चोर को पीटा।
4. एक ही तरह का अर्थ देने वाले अनेक कर्ता एकवचन में और परसर्ग रहित हों, तो क्रिया एकवचन में होगी; जैसे :
   यमुना की बाढ़ में उसका घर-बार और माल-असबाब बह गया।
5. यदि एक से अधिक भिन्न-भिन्न कर्ता, परसर्ग रहित हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी; जैसे :
   सीता और राधा पढ़ रही थीं। राकेश और मोहन जा रहे हैं।
6. यदि एक से अधिक भिन्न कर्ता लिंगों में हों, तो क्रिया अंतिम कर्ता के लिंग के अनुसार होगी; जैसे :
   माँ और बेटा आए। उसके पास एक पायजामा और दो कमीज़ें थीं।

संबंध और संबंधी का अन्वय

1. का, के, की संबंधवाची विशेषण परसर्ग हैं। इनका लिंग, वचन और कारकीय रूप वही होता है, जो उत्तर पद (संबंधी) का होता है; जैसे :
   शीला की घड़ी। राजू का रूमाल। रमा के कपड़े।
2. यदि संबंधी पद अनेक हों, तो संबंधवाची विशेषण परसर्ग पहले संबंधी के अनुसार होता है; जैसे :
   शीला की बहन और भाई जा रहे थे।
   ऐसे में परसर्गों को दोहराया भी जा सकता है; जैसे :
   शीला की बहन और उसका भाई जा रहे थे।

संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय

1. सर्वनाम का वचन और पुरुष उस संज्ञा के अनुरूप होना चाहिए, जिसके स्थान पर उसका प्रयोग हो रहा हो; जैसे :
   राधा ने कहा कि वह अवश्य आएगी। अध्यापक आए तो उनके हाथ में पुस्तकें थीं।

2. हम, तुम, आप, वे, ये आदि का अर्थ की दृष्टि से एकवचन के लिए भी प्रयोग होता है, किंतु इनका रूप बहुवचन ही रहता है; जैसे :

आप कहाँ जा रहे हो? लड़के ने कहा, "हम भी चलेंगे।"

विशेषण और विशेष्य का अन्वय

1. विशेषण का लिंग और वचन, विशेष्य के अनुसार होता है; जैसे :
अच्छी साड़ी, छोटा बच्चा, काला घोड़ा, काले घोड़े, काली घोड़ी।

2. यदि अनेक विशेष्यों का एक विशेषण हो, तो उस विशेषण के लिंग, वचन और कारकीय रूप तुरंत बाद में आने वाले विशेष्य के अनुसार होंगे; जैसे :
पुराने पलंग और चारपाई बेच दी। अपने मान और सम्मान के लिए जिए।

3. यदि एक विशेष्य के अनेक विशेषण हों, तो वे सभी विशेष्य के अनुसार होंगे; जैसे :
सस्ती और अच्छी किताबें। गंदे और मैले-कुचैले कपड़े।

रचना के आधार पर वाक्य-भेद

रचना के आधार पर वाक्य के मुख्य तीन भेद हैं :

1. सरल या साधारण वाक्य 2. संयुक्त वाक्य या यौगिक वाक्य 3. जटिल या मिश्र वाक्य।

1. सरल या साधारण वाक्य (Simple Sentence)–जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे 'सरल या साधारण वाक्य' कहा जाता है; जैसे :

(क) राम बाज़ार जा रहा है। (ख) वह पुस्तक पढ़ रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'राम' तथा 'पुस्तक' कर्ता हैं तथा 'जा रहा है' तथा 'पढ़ रहा है' क्रिया हैं। एक ही कर्ता तथा एक ही क्रिया होने के कारण ये सरल वाक्य हैं।

सरल वाक्य में कर्ता और क्रिया के अलावा कर्म तथा उनके पूरक भी सम्मिलित किए जा सकते हैं।

1. राहुल पढ़ा। (कर्ता-क्रिया)
2. राहुल पढ़ रहा है। (कर्ता-क्रिया-विस्तार)
3. पड़ोस में रहने वाला राहुल पढ़ रहा है। (विस्तार कर्ता-क्रिया-विस्तार)
4. राहुल ने पुस्तक पढ़ी। (कर्ता-कर्म-क्रिया)
5. राहुल ने मित्र को पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म-कर्म क्रिया)
6. राहुल ने अपने प्रिय मित्र को कहानी की पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म का विस्तार, कर्म-कर्म का विस्तार-कर्म-क्रिया)

2. संयुक्त वाक्य या यौगिक वाक्य (Compound Sentence)–जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल अथवा मिश्र वाक्य योजकों द्वारा जुड़े हों, उन्हें 'संयुक्त वाक्य या यौगिक वाक्य' कहते हैं। संयोजक द्वारा जुड़े रहने पर भी प्रत्येक वाक्य अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है और एक-दूसरे पर आश्रित नहीं रहता। ये 'समानाधिकरण वाक्य' कहलाते हैं। इसमें समुच्चयबोधक अव्यय का प्रयोग संयोजक रूप में, विभाजक रूप में, विरोधदर्शक रूप में और परिणामबोधक रूप में होता है; जैसे :

(क) कंडक्टर ने सीटी बजाई और बस चल पड़ी। (संयोजक)
(ख) आप पहले आराम करेंगे या आप के लिए खाना ले आऊँ। (विभाजक)
(ग) मैं आप का काम अवश्य कर देता लेकिन क्या करूँ व्यस्त हूँ। (विरोधदर्शक)
(घ) उसने बहुत मेहनत की थी इसलिए वह कक्षा में प्रथम आया। (परिणामबोधक)

3. जटिल या मिश्र वाक्य (Complex Sentence)–जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य के साथ एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य जुड़े हों तो, उसे 'जटिल या मिश्र वाक्य' कहा जाता है; जैसे :

(क) वह कौन-सा क्षेत्र है जहाँ महिलाओं ने अपना कदम नहीं रखा?

(ख) गहन-से-गहन संकट हो फिर भी वह **हँसता रहता है**।

उपवाक्य

मिश्र वाक्य में आश्रित उपवाक्य मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं :

(क) संज्ञा उपवाक्य (ख) विशेषण उपवाक्य (ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य।

(क) संज्ञा उपवाक्य–जिस आश्रित उपवाक्य का प्रयोग प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्म या पूरक के रूप में प्रयुक्त होता है, उसे 'संज्ञा उपवाक्य' कहते हैं; जैसे :

राजू ने कहा कि वह कल मुंबई जा रहा है।

इस वाक्य में 'वह कल मुंबई जा रहा है' वाक्य संज्ञा उपवाक्य है। संज्ञा उपवाक्य बहुधा प्रधान उपवाक्य से 'कि' योजक द्वारा जुड़े होते हैं।

(ख) विशेषण उपवाक्य–जो आश्रित उपवाक्य अपने प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे 'विशेषण उपवाक्य' कहते हैं; जैसे :

वही व्यक्ति उन्नति करता है जो परिश्रमी होता है।

इस वाक्य में 'जो परिश्रमी होता है' वाक्य, पहले उपवाक्य 'व्यक्ति' का विशेषण होने के कारण, विशेषण उपवाक्य है। विशेषण उपवाक्य प्राय: संबंधवाचक सर्वनाम 'जो' और उसके विभिन्न रूपों (जिसके, जिन्होंने, जिससे, जिसने, जिन, जिसके लिए आदि) तथा संबंधवाचक क्रियाविशेषण (जहाँ, जितना, जैसे, अब आदि) के द्वारा प्रधान उपवाक्य से जुड़े होते हैं।

(ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य–जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया का विशेषण बनकर आता है, वह क्रियाविशेषण उपवाक्य कहलाता है; जैसे : जब तुम मेरे घर आए तब मैं घर पर नहीं था।

इस वाक्य में 'मैं घर पर नहीं था' मुख्य उपवाक्य है तथा 'जब तुम मेरे घर आए' क्रियाविशेषण उपवाक्य है।

इसके पाँच भेद होते हैं :

1. कालसूचक उपवाक्य	– जब मैं घर पहुँचा तब वर्षा हो रही थी। ज्योंहि मैं स्कूल से बाहर आया, खेल आरंभ हो गया।
2. स्थानवाचक उपवाक्य	– जहाँ तुम रहते हो, मैं भी वहीं रहता हूँ। जिधर हम जा रहे हैं, उधर आज कोई नहीं गया।
3. रीतिवाचक उपवाक्य	– आपको वैसे करना चाहिए, जैसे मैं कहता हूँ। बच्चे वैसे करते हैं, जैसे उन्हें सिखाया जाता है।
4. परिमाणवाचक उपवाक्य	– उसने जितना परिश्रम किया, उतना ही अच्छा परिणाम मिला। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ेगी, वैसे-वैसे धूप में खड़े रहना कठिन हो जाएगा।
5. परिणाम अथवा हेतुसूचक उपवाक्य	– यदि वर्षा अच्छी होती तो उपज बढ़ जाती। वह जरूर परिश्रम करेगा ताकि अच्छे अंक ले सके। वह इसलिए आएगा ताकि आपसे बात कर सके।

वाक्य-संश्लेषण

संश्लेषण का शाब्दिक अर्थ है 'मिलाना'। अनेक वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाना ही संश्लेषण कहलाता है। वाक्य-संश्लेषण वाक्य विश्लेषण का विपरीतार्थक है। वाक्य विश्लेषण में हम सुगठित वाक्य को खंड-खंड कर समझते हैं तथा वाक्य संश्लेषण में हम खंड-खंड वाक्यों तथा वाक्यांशों को जोड़कर एक सरल वाक्य में परिवर्तित करते हैं।

वाक्य-संश्लेषण के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया को ध्यान में रखना आवश्यक है :

1. सभी वाक्यों में से मुख्य क्रिया को चुनना।
2. शेष वाक्यों में से पद या पदबंध बनाना।
3. पूर्वकालिक क्रिया का प्रयोग करना।
4. उपसर्ग या प्रत्यय के योग से नए शब्द का निर्माण करना।
5. वाक्यों के केंद्रीय भाव को बरकरार रखना।

उदाहरण :

1. राहुल मेरा मित्र है।
   वह मेरे कमरे में आया।
   वह मेरी किताब उठाकर ले गया।
   वाक्य-संश्लेषण : मेरा मित्र राहुल मेरे कमरे में आकर मेरी किताब उठाकर ले गया।
2. वह बाज़ार गया।
   उसने केले खरीदे।
   उसने अपने बच्चों को केले दिए।
   वाक्य-संश्लेषण : उसने बाज़ार से केले खरीदकर अपने बच्चों को दिए।
3. मैंने एक व्यक्ति को देखा।
   वह बहुत दुबला-पतला था।
   वह सड़क पर सो रहा था।
   वाक्य-संश्लेषण : मैंने एक दुबले-पतले व्यक्ति को सड़क पर सोते देखा।
4. मैं अकेला था।
   चार गुंडों ने मुझे बहुत पीटा।
   उन्होंने मुझे सड़क के किनारे फेंक दिया।
   वाक्य-संश्लेषण : मुझे अकेले चार गुंडों ने पीटकर सड़क के किनारे फेंक दिया।

वाक्य-संश्लेषण में एक से अधिक सरल वाक्यों को एक सरल, एक संयुक्त तथा एक मिश्र वाक्य में संश्लिष्ट किया जाता है। उदाहरण :

1. वह मुंबई गया।
उसने वहाँ नया व्यापार शुरू किया।

सरल वाक्य – मुंबई जाकर उसने वहाँ नया व्यापार शुरू किया।
संयुक्त वाक्य – वह मुंबई गया और उसने वहाँ जाकर नया व्यापार शुरू किया।
मिश्र वाक्य – जब वह मुंबई गया, तब उसने वहाँ नया व्यापार शुरू किया।

2. आज बहुत वर्षा हुई।
आज की वर्षा से बाढ़ आ गई।

सरल वाक्य – आज की मूसलाधार वर्षा से बाढ़ आ गई।
संयुक्त वाक्य – आज बहुत वर्षा हुई और इसी कारण बाढ़ आ गई।
मिश्र वाक्य – चूँकि आज मूसलाधार वर्षा हुई, अत: बाढ़ आ गई।

3. दो दिन वह गाँव में रहा।

वह सबका प्रिय हो गया।

सरल वाक्य	–	वह दो दिन गाँव में रहकर सबका प्रिय हो गया।
संयुक्त वाक्य	–	वह दो दिन गाँव में रहा और सबका प्रिय हो गया।
मिश्र वाक्य	–	जब वह दो दिन गाँव में रहा, तब वह सबका प्रिय हो गया।

वाक्य-रूपांतरण

वाक्य जब अपना एक रूप से दूसरा रूप परिवृतत करता है, तब वाक्य-रूपांतरण होता है।

इस प्रकार किसी भी एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदलने की प्रक्रिया को 'वाक्य-रूपांतरण' कहा जाता है। वाक्य के रूप को परिवृतत करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना होता है कि उसके अर्थ में किसी तरह का कोई परिवर्तन न आया हो। देखिए कुछ उदाहरण :

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य :

सरल वाक्य को मिश्र वाक्य में परिवर्तित करने के लिए पहले सरल वाक्य को दो सरल वाक्यों में बदला जाना चाहिए।

जैसे– वह फल खरीदने के लिए बाज़ार गया।

– उसे फल खरीदने थे। (सरल वाक्य)

– वह बाज़ार गया।

इसमें प्रथम वाक्य प्रधान उपवाक्य है तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य। दोनों वाक्यों को मिश्रित वाक्य में परिवर्तित करने के लिए जब...तब, जो...सो, जहाँ...वहाँ, जैसे...वैसे, चूँकि...अत: आदि शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे–चूँकि उसे फल खरीदने थे, अत: वह बाज़ार गया। (मिश्रित वाक्य)

– सूर्योदय हुआ। (सरल वाक्य)

– पक्षी चहचहाने लगे।

जैसे ही सूर्योदय हुआ, वैसे ही पक्षी चहचहाने लगे। (मिश्रित वाक्य)

1. सरल वाक्य	–	साहसी विद्यार्थी उन्नति करते हैं।
मिश्र वाक्य	–	जो विद्यार्थी साहसी होते हैं, वे उन्नति करते हैं।
2. सरल वाक्य	–	असफल होने पर शोक करना व्यर्थ है।
मिश्र वाक्य	–	जब असफल हो गए, तो शोक करना व्यर्थ है।
3. सरल वाक्य	–	कमाने वाला खाएगा।
मिश्र वाक्य	–	जो कमाएगा, वह खाएगा।
4. सरल वाक्य	–	उसका सब कुछ खो गया।
मिश्र वाक्य	–	उसके पास जो कुछ था, वह खो गया।
5. सरल वाक्य	–	निर्धन व्यक्ति कुछ नहीं खरीद सकता।
मिश्र वाक्य	–	जो व्यक्ति निर्धन है, वह कुछ नहीं खरीद सकता।
6. सरल वाक्य	–	संतोषी आदमी जंगल में मंगल मनाते हैं।
मिश्र वाक्य	–	जो संतोषी होते हैं, वे जंगल में मंगल मनाते हैं।
7. सरल वाक्य	–	कुछ लोग नाम के लिए दान करते हैं।
मिश्र वाक्य	–	कुछ लोग इसलिए दान करते हैं, कि उनका नाम हो।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य :

मिश्र वाक्य को सरल वाक्य में परिवर्तित करने के लिए पहले मिश्र वाक्य को दो सरल वाक्य में बदलना होगा।

जैसे– चूँकि वह ईमानदार है, अतः किसी से नहीं डरता।

– वह ईमानदार है।

– किसी से नहीं डरता।

अब इन दो वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रधान उपवाक्य में किसी तरह का कोई परिवर्तन न करते हुए आश्रित उपवाक्य को पदबंध में बदलकर एक सरल वाक्य में परिवर्तित करेंगे; जैसे–

ईमानदार होने के कारण वह किसी से नहीं डरता।

1. मिश्र वाक्य – संकट आ जाए, तो घबराना उचित नहीं।
   सरल वाक्य – संकट आने पर घबराना उचित नहीं।
2. मिश्र वाक्य – मैं नहीं जानता कि उसका जन्म कहाँ हुआ है?
   सरल वाक्य – मैं उसका जन्म-स्थान नहीं जानता।
3. मिश्र वाक्य – जिन छात्रों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए।
   सरल वाक्य – परिश्रम करने वाले छात्र उत्तीर्ण हो गए।
4. मिश्र वाक्य – जीवन की कृतार्थता यह है कि वह दृढ़ हो पर अड़ियल न हो।
   सरल वाक्य – अड़ियल न होकर दृढ़ होने में ही जीवन की कृतार्थता है।
5. मिश्र वाक्य – अगर चीफ़ का साक्षात् माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित न होना पड़े।
   सरल वाक्य – चीफ़ का साक्षात् माँ से होने पर कहीं लज्जित न होना पड़े।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य :

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाने के लिए एक सरल वाक्य को पहले दो सरल वाक्यों में बदलना होगा; जैसे–

सूर्योदय हुआ।

– चिड़िया चहचहाने लगी।

– सूर्योदय होते ही चिड़िया चहचहाने लगी। (सरल वाक्य)

अब इन दो वाक्यों को और, परंतु, इसलिए, तथा, किंतु लगाकर एक संयुक्त वाक्य में परिवर्तित किया जाता है; जैसे–

सूर्योदय हुआ और चिड़िया चहचहाने लगी। (संयुक्त वाक्य)

– पिताजी गाँव गए।

– पिताजी बीमार हो गए।

– पिताजी गाँव जाते ही बीमार हो गए। (सरल वाक्य)

– पिताजी गाँव गए और बीमार हो गए। (संयुक्त वाक्य)

1. सरल वाक्य – सुरेश के आ जाने से सब प्रसन्न हो गए।
   संयुक्त वाक्य – सुरेश आ गया, अतः सब प्रसन्न हो गए।
2. सरल वाक्य – सूर्य के छिपने पर अँधेरा छा गया।
   संयुक्त वाक्य – सूर्य छिपा और अँधेरा छा गया।
3. सरल वाक्य – मैं अपना शेष जीवन अमेरिका में बिताऊँगी।
   संयुक्त वाक्य – मैं अमेरिका जाऊँगी तथा अपना शेष जीवन वहीं बिताऊँगी।

4. सरल वाक्य – प्रात:काल होने पर चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं।
संयुक्त वाक्य – प्रात:काल होता है और चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं।
5. सरल वाक्य – भोर होते-होते हम लोग मुरादाबाद पहुँचे।
संयुक्त वाक्य – भोर हुई और हम लोग मुरादाबाद पहुँचे।
6. सरल वाक्य – गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।
संयुक्त वाक्य – उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य :

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य बनाने के लिए सबसे पहले दो सरल वाक्यों के बीच लगे योजक को हटाना होगा। उसके बाद वाक्य के अर्थ को बिना परिवर्तित करते हुए दो सरल वाक्यों को जोड़कर एक सरल वाक्य में परिवर्तित किया जाना चाहिए; जैसे–

आँधी आई। (दो सरल वाक्य)
बहुत से पेड़ गिर गए।
– आँधी आई और बहुत से पेड़ गिर गए। (संयुक्त वाक्य)
– आँधी आने पर बहुत से पेड़ गिर गए। (सरल वाक्य)

1. संयुक्त वाक्य – सुषमा आई और चली गई।
सरल वाक्य – सुषमा आकर चली गई।
2. संयुक्त वाक्य – वह केवल पढ़ता ही नहीं बल्कि लिखता भी है।
सरल वाक्य – पढ़ने के अतिरिक्त वह लिखता भी है।
3. संयुक्त वाक्य – अतिथि आए और कार्यक्रम शुरू हुआ।
सरल वाक्य – अतिथि के आते ही कार्यक्रम शुरू हुआ।
4. संयुक्त वाक्य – तुम बाहर गए और वह भी चला गया।
सरल वाक्य – तुम्हारे बाहर जाते ही वह भी चला गया।
5. संयुक्त वाक्य – सुबह पहली बस पकड़ो और शाम तक लौट आओ।
सरल वाक्य – सुबह पहली बस पकड़कर शाम तक लौट आओ।
6. संयुक्त वाक्य – सिनेमा छूट गया और प्रेक्षक घर जाने लगे।
सरल वाक्य – सिनेमा छूट जाने पर प्रेक्षक घर जाने लगे।

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य :

संयुक्त वाक्य की रचना दो सरल वाक्यों के माध्यम से होती है। उन दो सरल वाक्यों को एक योजक से जोड़ दिया जाता है। योजक के न रहने पर वे दो स्वतंत्र वाक्यों के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं।

इसके विपरीत मिश्र वाक्य में दो उपवाक्य परस्पर आश्रित के रूप में प्रयोग होते हैं तथा इन वाक्यों का स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं होता। संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य बनाने के लिए संयुक्त वाक्यों के बीच आए योजक को हटा दिया जाता है तो उन्हें दो उपवाक्यों में इस तरह परिवर्तित किया जाता है कि वे एक-दूसरे पर आश्रित मिश्रित उपवाक्य बन जाए।

अध्यापक कक्षा में आए। (सरल वाक्य)
सभी विद्यार्थी शांत हो गए।
– अध्यापक कक्षा में आए और सभी विद्यार्थी शांत हो गए। (संयुक्त वाक्य)
– जैसे ही अध्यापक कक्षा में आए, वैसे ही सभी विद्यार्थी शांत हो गए। (मिश्र वाक्य)

1. संयुक्त वाक्य – रमेश आया और मोहन चल दिया।
मिश्र वाक्य – जैसे ही रमेश आया, वैसे ही मोहन चल दिया।
2. संयुक्त वाक्य – विद्यार्थी परिश्रमी है, तो अवश्य सफल होगा।
मिश्र वाक्य – जो विद्यार्थी परिश्रमी है, वह अवश्य सफल होगा।
3. संयुक्त वाक्य – मनोरमा गाती है और राधा नाचती है।
मिश्र वाक्य – जब मनोरमा गाती है तो राधा नाचती है।
4. संयुक्त वाक्य – गार्ड ने हरी झंडी दिखाई और ट्रेन चल पड़ी।
मिश्र वाक्य – जैसे ही गार्ड ने हरी झंडी दिखाई वैसे ही ट्रेन चल पड़ी।
5. संयुक्त वाक्य – गांधी जी स्वराज चाहते थे और वह हमें मिल गया है।
मिश्र वाक्य – गांधी जी जो स्वराज चाहते थे वह हमें मिल गया है।
6. संयुक्त वाक्य – संकटों ने उसे हर तरह से घेरा, किंतु वह निराश नहीं हुआ।
मिश्र वाक्य – यद्यपि वह हर तरह के संकटों से घिरा था तथापि निराश नहीं हुआ।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य :

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य की रचना करने के लिए पहले दो सरल वाक्यों की आवश्यकता है। मिश्र वाक्य में इन दो वाक्यों को उपवाक्यों में बदलकर एक-दूसरे पर आश्रित करना होगा तथा जैसा...वैसा..., यदि...तो..., चूँकि...इसलिए, जो...सो... आदि जोड़कर मिश्र वाक्य की रचना की जाए।

– जैसे ही अध्यापक कक्षा में आए वैसे ही सभी विद्यार्थी शांत हो गए। (मिश्र वाक्य)
कक्षा में अध्यापक आए।
सभी विद्यार्थी शांत हो गए।
– कक्षा में अध्यापक आए और सभी विद्यार्थी शांत हो गए। (संयुक्त वाक्य)

उदाहरण– चूँकि उसने परिश्रम नहीं किया, अतः वह अनुत्तीर्ण हो गया। (मिश्र वाक्य)
उसने परिश्रम नहीं किया।
वह अनुत्तीर्ण हो गया।
उसने परिश्रम नहीं किया और वह अनुत्तीर्ण हो गया। (संयुक्त वाक्य)

1. मिश्र वाक्य – ज्योंहि रात्रि के बारह बजे, त्योंहि मैंने पढ़ना बंद कर दिया।
संयुक्त वाक्य – रात्रि के बारह बजे और मैंने पढ़ना बंद कर दिया।
2. मिश्र वाक्य – जब उसने मुझे देखा, तो खिसक गया।
संयुक्त वाक्य – उसने मुझे देखा और खिसक गया।
3. मिश्र वाक्य – जैसे ही मैंने दूध पीया, वैसे ही मैं सो गया।
संयुक्त वाक्य – मैंने दूध पिया और सो गया।
4. मिश्र वाक्य – जिसका मुझे भय था, वही हुआ।
संयुक्त वाक्य – इसका मुझे भय था और यही हुआ।
5. मिश्र वाक्य – वह लड़का बीमार था इसलिए वह डॉक्टर के पास गया।
संयुक्त वाक्य – लड़का बीमार था इसलिए वह डॉक्टर के पास गया।
6. मिश्र वाक्य – मैंने जो घोड़ा खरीदा, वह बहुत तेज़ दौड़ता है।
संयुक्त वाक्य – मैंने घोड़ा खरीदा और वह बहुत तेज़ दौड़ता है।

सरल वाक्य का संयुक्त और मिश्र वाक्य में परिवर्तन :

1. सरल वाक्य – कामायनी पुस्तक जयशंकर प्रसाद ने लिखी थी।
   संयुक्त वाक्य – यह कामायनी पुस्तक है और इसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा था।
   मिश्र वाक्य – यह जो कामायनी पुस्तक है, इसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा था।
2. सरल वाक्य – मैंने एक दुबला-पतला व्यक्ति देखा।
   संयुक्त वाक्य – मैंने एक व्यक्ति देखा और वह दुबला-पतला था।
   मिश्र वाक्य – मैंने उस व्यक्ति को देखा, जो दुबला-पतला था।
3. सरल वाक्य – बेईमान व्यक्ति को जल्द ही पकड़ा जाएगा।
   संयुक्त वाक्य – वह व्यक्ति बेईमान है और जल्द ही पकड़ा जाएगा।
   मिश्र वाक्य – चूँकि वह व्यक्ति बेईमान है, इसलिए जल्द ही पकड़ा जाएगा।

दो सरल वाक्यों का साधारण, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य में परिवर्तित करना :

1. मेरे पास 'कामायनी' है।
इसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है।

साधारण वाक्य – मेरे पास जयशंकर प्रसाद की लिखी कामायनी है।
संयुक्त वाक्य – मेरे पास कामायनी है और इसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है।
मिश्र वाक्य – मेरे पास कामायनी है, जिसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है।

2. शशि परिश्रमी है।
वह कक्षा में प्रथम आती है।

साधारण वाक्य – परिश्रमी शशि कक्षा में प्रथम आती है।
संयुक्त वाक्य – शशि परिश्रमी है और वह कक्षा में प्रथम आती है।
मिश्र वाक्य – चूँकि शशि परिश्रमी है, इसलिए वह कक्षा में प्रथम आती है।

3. सूर्य उगा।
अँधेरा भागा।

साधारण वाक्य – सूर्य के उगते ही अँधेरा भागा।
संयुक्त वाक्य – सूर्य उगा और अँधेरा भागा।
मिश्र वाक्य – जैसे ही सूर्य उगा, वैसे ही अँधेरा भागा।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय छाँटिए :

	उद्देश्य	विधेय
1. आप कुर्सी पर बैठकर बातें करें।	....	....
2. वीर शिवाजी ने मातृभूमि के बंधन काटे।	....	....
3. करण का भाई महेश सुंदर चित्र बनाता है।	....	....
4. शिकारी ने भूख से तड़पते हुए हिरण को छोड़ दिया।	....	....
5. मजदूर रामप्रसाद के मकान को गिरा रहे हैं।	....	....

6. युवराज ने एक ओवर में छह छक्के लगाए। ....

7. रवि हाथ-मुँह धोकर खाना खा लो। ....

8. पुलिस को देखकर चोर भाग गया। ....

9. मुझे सड़क पर पड़ा एक बटुआ मिला। ....

10. प्रतिभाशाली छात्रों ने विद्यालय का नाम रोशन किया था। ....

2. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्य में बदलिए :

1. लड़का गाँव गया। वहाँ बीमार हो गया। ....
2. छात्र स्कूल से घर आया। वह खेलने चला गया। ....
3. गाँव में बाढ़ आई। जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। ....
4. बच्चा माँ से रूठ गया। वह रोने लगा। ....
5. जो गरजरते हैं, वे बादल बरसते नहीं। ....
6. मेरा मित्र विदेश में रहता है। अगले महीने वह भारत आ रहा है। ....
7. वह घर गया। वह बीमार हो गया। ....
8. सूरज निकला। चारों ओर प्रकाश छा गया। ....
9. बालकों ने शोर मचाया। बालक पकड़ लिए गए। ....
10. एक दिन आँधी आई। कई पेड़ आँधी से गिर गए। ....
11. उसने मुझे देखा। वह खिसक गया। ....
12. कल मुझे वेतन मिलेगा। मैं आपका कर्ज़ा चुका दूँगा। ....

3. रचना की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों का भेद निर्धारण कीजिए :

1. हमारे घर के समीप एक पाठशाला है।
....

2. तुलसीदास जी ने कहा है कि विनाशकाल में मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
....

3. जैसे ही हम लोग बगीचे में पहुँचे, एक व्यक्ति के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी।
....

4. देश को ऊँचा उठाना है तो दूसरों के नहीं, अपने दोषों को सुधारो।
....

5. पिता जी बाहर गए हैं, कल तक लौट आएँगे।
....

4. **निम्नलिखित वाक्यों से प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य अलग-अलग करके आश्रित उपवाक्यों के नाम भी लिखिए :**

1. राजीव पंत ने कहा कि कल हमारा विद्यालय बंद रहेगा।
....

2. जहाँ बहुत-से पेड़ खड़े हैं, वहाँ कभी एक धर्मशाला थी।
....

3. वे लोग अच्छे नहीं हैं जो वहाँ खड़े होकर बातें कर रहे हैं।
....

5. **निम्नलिखित वाक्यों में आए उपवाक्यों को स्पष्ट कीजिए :**

1. (क) यह एक आम बात थी जब कोई भारतीय विदेश से लौटता, तो उसका स्वागत सर्वत्र होता था।
....

(ख) जब से नई माँ आई है, बच्चों को समय पर चीज़ मिल जाती है और वे खुश रहते हैं।
....

(ग) समाज को एक सूत्र में बद्ध करने के लिए न्याय यह है कि सबको अपना काम करने की स्वतंत्रता मिले ताकि किसी को शिकायत करने का मौका न हो।
....
....

(घ) आज लोगों के मन में यही एक बात समा रही है कि जहाँ तक हो सके शीघ्र ही शत्रुओं से बदला लेना चाहिए।
....

(ङ) यह एक प्रचलित प्रथा थी कि जब राजपूत युद्ध-भूमि से जीतकर लौटता था तो उसका स्वागत होता था।
....

2. (क) गीता में कहा गया है कि कर्म पर मनुष्य का अधिकार है।
....

(ख) सब जानते हैं कि ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया था।
....

(ग) जासूस को अपराधियों का भेद लेना था, इसलिए वह उनके पास ठहर गया।
....

(घ) हमारे खिलाड़ी कल मुंबई पहुँचेंगे और परसों पहला मैच खेलेंगे जिसे हज़ारों दर्शक देखेंगे।
....

(ङ) कल हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव होगा जिसमें अनेक प्रकार के कार्यक्रम होंगे।
....

3. (क) वीर सैनिकों ने ललकार कर कहा कि हम प्राण रहते शत्रुओं को नगर में न घुसने देंगे।
....

(ख) मेरी आकांक्षा है कि मैं एक सफल शिक्षक बनूँ, क्योंकि आज देश को योग्य शिक्षकों की ज़रूरत है।
....

6. **निम्नलिखित वाक्यों में आश्रित उपवाक्यों को छाँटिए और उनका नाम भी लिखिए :**

1. मेरे जीवन का मुख्य उद्‌देश्य है कि ज्ञानार्जन करूँ। ....
2. जहाँ-जहाँ हम गए हमारी बड़ी खातिर हुई। ....
3. मैंने एक व्यक्ति देखा जो बहुत दुबला-पतला था। ....
4. आप जो कुछ कहते हैं, सच है। ....
5. राम ने कहा कि आज मुझे घर जाना है। ....
6. जो व्यक्ति गुणी होता है उसे सभी चाहते हैं। ....
7. जब भी मुझे आवश्यकता हुई, मित्रों ने मेरी सहायता की। ....
8. जब वह यहाँ आया मैं सो रहा था। ....
9. मैंने एक व्यक्ति देखा, जो बहुत लंबा था। ....
10. वह आदमी जो कल यहाँ आया था, मेरा मित्र है। ....
11. जो छात्र परिश्रमी होता है, वह सभी को अच्छा लगता है। ....
12. जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा सत्कार किया। ....
13. मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं इंजीनियर बनूँ। ....
14. रमेश ने कहा कि मैं आज विद्‌यालय नहीं जाऊँगा। ....
15. उसने कहा कि मैं कल आगरा जाऊँगा। ....
16. हमें चाहिए कि हम केवल बातों में ही समय नष्ट न करें। ....
17. मैंने सोचा कि वह ज़रूर आएगा। ....
18. वह पुस्तक जो आप चाहते हैं, लाइब्रेरी में नहीं है। ....
19. आप जानते हैं ईमानदारी एक अच्छा गुण है। ....
20. दार्शनिक कहते हैं कि यह जगत मिथ्या है। ....
21. मैंने एक फूल देखा जो खिल रहा था। ....
22. यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य फल पाओगे। ....
23. मेरा उद्‌देश्य है कि मैं मनुष्य मात्र की सेवा करूँ। ....
24. तथागत ने कहा, तुम्हें अपना दीपक स्वयं बनना है। ....
25. गोकुल ने देखा कि साहब आज कुछ नाराज़ हैं। ....
26. माँ की इच्छा थी कि उनका नरेंद्र वकील बने। ....
27. महेश बोला कि मैं कल केरल जा रहा हूँ। ....
28. आपका वह लड़का कहाँ है, जो कल छत से गिर पड़ा था। ....
29. मेरी इच्छा है कि मैं सबकी सेवा करूँ। ....
30. जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहीं अग्नि है। ....
31. वह जानता है कि मैं क्या चाहता हूँ। ....
32. मैं भी वहीं जा रहा हूँ, जहाँ से तुम आए हो। ....

7. रंगीन उपवाक्य का नाम बताइए :

1. मैंने पिता से कहा कि कल मैं गाँव जाऊँगी। ....
2. मैच में जो सबसे अच्छा खेला, वह मेरा मित्र है। ....
3. जब चलोगे तभी चल पड़ूँगा। ....
4. रहीम बोला कि मैं कल हैदराबाद जा रहा हूँ। ....
5. वह पुस्तक कौन-सी है जो आपको बहुत पसंद है। ....
6. मुझे विश्वास है कि आप अवश्य आएँगे। ....
7. महात्मा गांधी ने कहा कि गाय करुणा की कविता है। ....
8. वह छात्र पास हो गया जो कल यहाँ आया था। ....
9. मुझे एक व्यक्ति मिला जो बहुत पढ़ा-लिखा था। ....
10. वह अध्यापक था जो कल यहाँ आया था। ....
11. जो व्यक्ति मधुरभाषी होता है, उसे सभी चाहते हैं। ....
12. जो अध्यापक हिंदी पढ़ाते हैं वे मेरे पिता जी हैं। ....
13. श्याम बोला कि मैं कल प्रतियोगिता में जाऊँगा। ....
14. मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं अध्यापक बनूँ। ....
15. मुझे विश्वास है कि रेखा अवश्य उत्तीर्ण होगी। ....
16. आज फिर वह लड़की मिली जो बहुत खूबसूरत थी। ....
17. वह बीमार ठीक हो गया जो अस्पताल में मिला था। ....
18. राजेश ने कहा कि मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा। ....
19. रमेश ने कहा कि मैं कल कलकत्ता जा रहा हूँ। ....
20. मैंने एक फूल देखा, जो खिल नहीं रहा था। ....
21. जो पढ़ा-लिखा नहीं है, उसका जीवन व्यर्थ है। ....
22. सभी जानते हैं कि वह विद्वान है। ....

8. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए :

1. जो व्यक्ति परिश्रमी होते हैं, वे अच्छे लगते हैं। (सरल वाक्य में)
....

2. सच बोलने वाले को कोई डरा नहीं सकता। (मिश्र वाक्य में)
....

3. परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। (मिश्र वाक्य में)
....

4. जिन बालकों ने शोर मचाया था वे पकड़ लिए गए हैं। (सरल वाक्य में)
....

5. आप पलंग पर लेटकर विश्राम करें। (संयुक्त वाक्य में)
....

6. मेहनत करने पर भी गरीबों को भर-पेट रोटी नहीं मिलती। (संयुक्त वाक्य में)
....

7. निरीक्षक ने उसी छात्र को पकड़ा जो नकल के काग़ज़ रखे हुए था। (साधारण वाक्य में)
....

8. थोड़ा विश्राम करके आगे जाइएगा। (संयुक्त वाक्य में)
....

9. वेतन मिलेगा और कर्जा चुका दूँगा। (मिश्र वाक्य में)
....

10. गुणी को सभी आदर देते हैं। (मिश्र वाक्य में)
....

11. थोड़ा रुक कर बोलिए। (संयुक्त वाक्य में)
....

12. जिन लोगों ने उग्रवादियों को घर में छुपाया था, पुलिस ने उन्हें भी हिरासत में ले लिया। (साधारण वाक्य में)
....

13. जो बालक सत्य बोलते हैं, वे सभी को अच्छे लगते हैं। (साधारण वाक्य में)
....

14. आप कुर्सी पर बैठकर बातें करें। (संयुक्त वाक्य में)
....

15. ईश्वर पर भरोसा रखने वाला कभी निराश नहीं होता। (मिश्र वाक्य में)
....

16. हाथ-मुँह धोकर खाना खाइए। (संयुक्त वाक्य में)
....

17. कक्षा में पीछे बैठने वाले छात्र शरारत कर रहे हैं। (मिश्र वाक्य में)
....

18. आम की पेटी में से वे सभी आम बाहर निकालो जो पके हुए हैं। (साधारण वाक्य में)
....

19. सड़क पर कल जो बटुआ गिरा था, वह हरीश का था। (साधारण वाक्य में)
....

20. भीतर आकर मेरी बात सुनो। (संयुक्त वाक्य में)
....

21. राम जा रहा है। मोहन जा रहा है। (सरल वाक्य में)
....

22. रहीम बोला। मैं कर्नाटक जा रहा हूँ। (मिश्र वाक्य में)

....

23. वह आया। उसने कुछ नहीं कहा। (संयुक्त वाक्य में)

....

24. राम गाता है। श्याम गाता है। (सरल वाक्य में)

....

25. वह पुस्तक बहुत अच्छी है। तुम उसकी प्रशंसा कर सकते हो। (मिश्र वाक्य में)

....

26. मुझे वहाँ जाना था। सवेरे उठना पड़ा। (संयुक्त वाक्य में)

....

27. मैंने एक व्यक्ति देखा जो बहुत लंबा था। (सरल वाक्य में)

....

28. मुझे देखकर वह खिसक गया। (मिश्र वाक्य में)

....

29. जब मोहन आया तभी सोहन चला गया। (संयुक्त वाक्य में)

....

30. वह पुस्तक लेने बाज़ार गया। (संयुक्त वाक्य में)

....

31. तुमने कहा और सब मान गए। (साधारण वाक्य में)

....

32. रात के बारह बजे मैंने पढ़ना बंद कर दिया। (मिश्र वाक्य में)

....

33. लड़का गाँव गया। वहाँ बीमार हो गया। (सरल वाक्य में)

....

34. छात्र स्कूल से घर आया। वह खेलने चला गया। (मिश्र वाक्य में)

....

35. बच्चा घर पहुँचा। माँ को बड़ी खुशी हुई। (संयुक्त वाक्य में)

....

36. वीर देश के लिए मर मिटता है। वह सच्चा देशभक्त होता है। (मिश्र वाक्य में)

....

37. लड़का बाज़ार गया। वहाँ से सेब लाया। (संयुक्त वाक्य)

....

38. वह घर पहुँचा। माँ ने उसे बुलाया था। (मिश्र वाक्य में)

....

39. गाँव में बाढ़ आई। जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया। (सरल वाक्य में)

....

40. मुख्य अतिथि मंच पर पधारे। उत्सव प्रारंभ हो गया। (मिश्र वाक्य में)

....

41. वर्षा हो रही थी। वह नहीं जा सका। (संयुक्त वाक्य में)

....

42. शहर में तूफ़ान आया। तबाही मच गई। (मिश्र वाक्य में)

....

43. बच्चा माँ से रूठ गया। वह रोने लगा। (सरल वाक्य में)

....

9. निम्नलिखित वाक्यों को मिलाकर एक सरल, एक मिश्र तथा एक संयुक्त वाक्य बनाइए :

(क) 1. सभा समाप्त हुई।
2. सब लोग चले गए।

(ख) 1. गली में शोर हुआ।
2. सब लोग बाहर आ गए।

(ग) 1. शेर दिखाई दिया।
2. सब लोग डर गए।

(घ) 1. कपिलदेव ने पहले ओवर की पहली गेंद फेंकी।
2. मोहसिन खान आउट हो गए।

(ङ) 1. माता जी ने काम समाप्त किया।
2. घर में मेहमान आ गए।

(ट) 1. वह लड़का गाँव गया।
2. वहाँ बीमार हो गया।

(ठ) 1. मोहल्ले में शोर हुआ।
2. सब लोग बाहर आ गए।

(ड) 1. मेरे आँगन में हरी घास है।
2. हरी घास पर बच्चे खेल रहे हैं।

(ढ) 1. सभा समाप्त हुई।
2. सब लोग चले गए।

(च) 1. प्रधानाचार्य प्रार्थना-सभा में आए।
2. सब विद्यार्थी खड़े हो गए।

(छ) 1. प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर पर आए।
2. सैनिक टुकड़ी ने सलामी दी।

(ज) 1. रमन के खेत में गायें चर रही थीं।
2. उसने उन्हें खेत से निकाल दिया।

(झ) 1. पाकिस्तान ने कारगिल में घुसपैठ की।
2. भारत ने पाकिस्तान को करारी मात दी।

(ञ) 1. बादल गरज रहे थे।
2. तेज़ वर्षा होने लगी।

(थ) 1. रानी ने काम समाप्त किया।
2. घर में मेहमान आ गए।

(द) 1. मदारी गाँव में आया।
2. मदारी ने भालू का तमाशा दिखाया।

(ध) 1. मीरा ने लाल मिर्च खा ली।
2. मीरा को हिचकियाँ आने लगीं।

(न) 1. अध्यापक विद्यालय में आए।
2. सब छात्रों ने उन्हें प्रणाम किया।

(ण) 1. शेर दिखाई दिया।
2. सब बच्चे डर कर भाग गए।

(त) 1. रामू के खेत में गायें चर रही थीं।
2. उसने उन्हें खेत से निकाल दिया।

(प) 1. चूहे का कमाल है।
2. चूहे ने मोटा कालीन काट डाला।

(फ) 1. बादल आकाश में छा गए।
2. शीतल पवन बहने लगी।

10. **निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :**

(क) 1. वह फल खरीदने के लिए बाज़ार गया। (रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिए)
2. मैं पुस्तकालय गया और पुस्तकें लेकर आ गया। (रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिए)
3. आप वहीं बैठकर मेरी प्रतीक्षा करें। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
4. परिश्रमी व्यक्ति सफल होते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ख) 1. वे उसी प्रसिद्ध विद्यालय के छात्र थे। (रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिए)
2. तुम्हारा मित्र, जो मुझे मिला था, परसों आएगा। (रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिए)
3. राजू बाज़ार से पत्रिका लेकर पढ़ने लगा। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
4. गाँव में बाढ़ आने से लोगों में तबाही मच गई। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) 1. वर्षा हो रही है किंतु धूप भी निकली हुई है। (वाक्य-प्रकार लिखिए)
2. जैसे ही उसने मुझे देखा, वैसे ही वह खिसक गया (वाक्य-प्रकार लिखिए)
3. मंत्री बनने पर भी उसका व्यवहार पूर्ववत् है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
4. आप आसन पर बैठकर विश्राम करें। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(घ) 1. मनोहर ने हैदराबाद से दिल्ली तक की यात्रा हवाई जहाज से की और हवाई अड्डे से घर तक टैक्सी में गया। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)
2. तुम जिस घड़ी की प्रशंसा कर रहे थे, वह बहुत अच्छी है। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)
3. मुझे चेन्नई जाना था। सवेरे उठना पड़ा। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
4. सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह वही भारत है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ङ) 1. इस संसार में दिखाई देने वाली सभी चीज़ें नाशवान हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
2. शहर में लगातार वर्षा होने से लोग परेशान हो गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
3. भारत एक शांतिप्रिय देश है, जिसका सब सम्मान करते हैं। (रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)
4. महात्मा गांधी ने सत्याग्रह का सहारा लिया और भारत को आज़ाद कराया। (रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)

❑❑

7 समास (Compound)

परिभाषा–''परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर जब नया सार्थक शब्द बनाया जाता है तो, उस मेल को 'समास' कहते हैं।''

संस्कृत धातु अस् 'संक्षेप करना' में सम् उपसर्ग जोड़कर समास शब्द निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है समाहार या मिलाप। इस प्रकार हम पाते हैं कि समास का वास्तविक अर्थ 'संक्षेपीकरण' हुआ; जैसे–चंद्र के समान मुख को हम चंद्रमुख भी कह सकते हैं।

समास रचना में दो शब्द (पद) होते हैं। पहला पद 'पूर्वपद' कहा जाता है और दूसरा पद 'उत्तरपद' तथा इन दोनों के समास से बना नया शब्द समस्तपद; जैसे :

पूर्वपद + उत्तरपद	समस्तपद	पूर्वपद + उत्तरपद	समस्तपद
दश + आनन (हैं जिसके)	दशानन	राजा + (का) पुत्र	राजपुत्र
घोड़ा + सवार (घोड़े पर सवार)	घुड़सवार	यश + (को) प्राप्त	यशप्राप्त

समास-विग्रह

जब समस्तपद के सभी पद अलग-अलग किए जाते हैं, तब उस प्रक्रिया को 'समास-विग्रह' कहते हैं; जैसे–'सीता-राम' समस्तपद का विग्रह होगा सीता और राम।

समास के भेद (Kinds of Compound)

1. तत्पुरुष समास (Determinative Compound)
2. कर्मधारय समास (Oppositional Determinative Compound)
3. द्विगु समास (Numeral Compound)
4. अव्ययीभाव समास (Adverbial Compound)
5. द्वंद्व समास (Copulative Compound)
6. बहुव्रीहि समास (Attributive Compound)

1. तत्पुरुष समास (Determinative Compound)

समस्त पद बनाते समय बीच की विभक्तियों का लोप हो जाता है। जैसे–गुरुदक्षिणा का विग्रह है–'गुरु के लिए दक्षिणा'। समस्त पद बनाने पर (गुरुदक्षिणा) 'के लिए' विभक्ति का लोप हो गया है।

तत्पुरुष के भेद

तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं–

1. **कर्म तत्पुरुष**–जहाँ कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो; जैसे :

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
सुखप्राप्त	सुख को प्राप्त	शरणागत	शरण को आगत
यशप्राप्त	यश को प्राप्त	ग्रामगत	ग्राम को गत
स्वर्गगत	स्वर्ग को आगत	जेबकतरा	जेब को कतरने वाला
परलोगमन	परलोक को गमन		

2. **करण तत्पुरुष**—जहाँ करण कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो; जैसे :

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
तुलसीकृत	तुलसी से कृत	ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा प्रदत्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित	प्रेमातुर	प्रेम से आतुर
मदोंध	मद से अंधा	मनचाहा	मन से चाहा
रेखांकित	रेखा से अंकित	अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
सूररचित	सूर द्वारा रचित	कष्टसाध्य	कष्ट से साध्य
भुखमरा	भूख से मरा	मदमस्त	मद से मस्त
शोकाकुल	शोक से आकुल	भयाकुल	भय से आकुल
रोगमुक्त	रोग से मुक्त	मनमाना	मन से माना
मनगढंत	मन से गढ़ा हुआ	गुणयुक्त	गुण से युक्त
स्वरचित	स्व से रचित	दयार्द्र	दया से आर्द्र

3. **संप्रदान तत्पुरुष**—जहाँ संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो; जैसे :

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला	राहखर्च	राह के लिए खर्च
विद्यालय	विद्या के लिए आलय	हवनसामग्री	हवन के लिए सामग्री
गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा	सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि	हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी
पाठशाला	पाठ के लिए शाला	धर्मशाला	धर्म के लिए शाला
मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
रसोईघर	रसोई के लिए घर	आरामकुर्सी	आराम के लिए कुर्सी
युद्धक्षेत्र	युद्ध के लिए क्षेत्र	क्रीड़ाक्षेत्र	क्रीड़ा के लिए क्षेत्र
गौशाला	गौ के लिए शाला	देशार्पण	देश के लिए अर्पण
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी	मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला		

4. **अपादान तत्पुरुष**—जहाँ अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो; जैसे :

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
धनहीन	धन से हीन	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
देशनिकाला	देश से निकाला	विद्याहीन	विद्या से हीन
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	जन्मांध	जन्म से अंधा
भयभीत	भय से भीत	नेत्रहीन	नेत्र से हीन
स्वर्गपतित	स्वर्ग से पतित	पदच्युत	पद से च्युत
गुणहीन	गुणों से हीन	धर्मविमुख	धर्म से विमुख
जातिच्युत	जाति से च्युत	रोगमुक्त	रोग से मुक्त
धर्मभ्रष्ट	धर्म से भ्रष्ट		

5. **संबंध तत्पुरुष**—जहाँ संबंध कारक की विभक्ति 'का, की, के' का लोप हो; जैसे :

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
देवदास	देव का दास	राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति
सेनापति	सेना का पति	राजपुत्र	राजा का पुत्र
उद्योगपति	उद्योग का पति	घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़
भारतवासी	भारत का वासी	जलधारा	जल की धारा
बैलगाड़ी	बैल की गाड़ी	राजसभा	राजा की सभा
प्रेमसागर	प्रेम का सागर	प्रसंगानुसार	प्रसंग के अनुसार
दीनानाथ	दीनों का नाथ	प्रजापति	प्रजा का पति
भ्रातृस्नेह	भ्रातृ का स्नेह	अमृतधारा	अमृत की धारा
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड	पराधीन	पर के अधीन
आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार	राजनीतिज्ञ	राजनीति का ज्ञाता
देशवासी	देश का वासी	गंगातट	गंगा का तट
सचिवालय	सचिव का आलय	राजभक्ति	राजा की भक्ति
परनिंदा	पर की निंदा	जीवनसाथी	जीवन का साथी
राजकुमार	राजा का कुमार	दशरथपुत्र	दशरथ का पुत्र
राजपुरुष	राजा का पुरुष	विद्यासागर	विद्या का सागर
लखपति	लाखों का पति		

6. **अधिकरण तत्पुरुष**—जहाँ अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' का लोप हो; जैसे :

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
युद्धनिपुण	युद्ध में निपुण	दानवीर	दान में वीर
ग्रामवास	ग्राम में वास	घुड़सवार	घोड़े पर सवार
आपबीती	आप पर बीती	गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
आनंदमग्न	आनंद में मग्न	व्यवहारकुशल	व्यवहार में कुशल
कुलश्रेष्ठ	कुल में श्रेष्ठ	कलानिपुण	कला में निपुण
देशाटन	देश में अटन	धर्मवीर	धर्म में वीर
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न	नीतिनिपुण	नीति में निपुण
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम	युद्धवीर	युद्ध में वीर
नगरनिवास	नगर में निवास	वनवास	वन में वास
शरणागत	शरण में आगत	जगबीती	जग में बीती
दानवीर	दान में वीर	सिरदर्द	सिर में दर्द
विचारमग्न	विचार में मग्न		

7. **नञ् समास**—जहाँ निषेध के अर्थ में 'न' 'अ' या 'अन्' का प्रयोग हो; जैसे :

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
अन्याय	न न्याय	अधर्म	न धर्म
असफल	न सफल	अनीति	न नीति
अनुदार	न उदार	अपठित	न पठित
नास्तिक	न आस्तिक	अज्ञान	न ज्ञान
अनपढ़	न पढ़ा लिखा	अनिच्छा	न इच्छा

अनादि	न आदि	अनंत	न अंत
अनिच्छा	न इच्छा	अभाव	न भाव
अकर्मण्य	न कर्मण्य	अजर	न जर
अमर	न मर	अयोग्य	न योग्य
असंभव	न संभव	अनर्थ	न अर्थ
अनहोनी	न होनी	अनाथ	न नाथ

2. कर्मधारय समास (Oppositional Determinative Compound)

जिसका पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य अथवा एक पद उपमान तथा दूसरा पद उपमेय हो तो, वह 'कर्मधारय समास' कहलाता है।

विशेषण-विशेष्य :

नीलकमल	–	नीला है जो कमल	महादेव	–	महान है जो देव
पुरुषोत्तम	–	पुरुषों में है जो उत्तम	श्वेतांबर	–	श्वेत है जो अंबर (वस्त्र)
परमानंद	–	परम है जो आनंद	सद्धर्म	–	सत् है जो धर्म
भलामानस	–	भला है जो मानस	नीलगगन	–	नीला है जो गगन
लालटोपी	–	लाल है जो टोपी	अंधकूप	–	अंधा है जो कूप
महाविद्यालय	–	महान है जो विद्यालय	लालछड़ी	–	लाल है जो छड़ी
अधपका	–	आधा है जो पका	नीलांबर	–	नीला है जो अंबर
महाराज	–	महान है जो राजा	सज्जन	–	सत है जो जन
पीतांबर	–	पीत है जो अंबर	कृष्णसर्प	–	कृष्ण है जो सर्प
महावीर	–	महान है जो वीर	महात्मा	–	महान है जो आत्मा
महापुरुष	–	महान है जो पुरुष	दुरात्मा	–	दुर् (बुरी) है जो आत्मा
प्रधानाध्यापक	–	प्रधान है जो अध्यापक	कुबुद्धि	–	कु (बुरी) है जो बुद्धि
कापुरुष	–	कायर है जो पुरुष	पर्णकुटी	–	पर्ण से बनी कुटी
नीलकंठ	–	नीला है जो कंठ	प्रधानमंत्री	–	प्रधान है जो मंत्री
कालीमिर्च	–	काली है जो मिर्च			

उपमान-उपमेय :

देहलता	–	लता रूपी देह	चरणकमल	–	कमल के समान चरण
चंद्रमुख	–	चंद्र के समान मुख	भुजदंड	–	दंड के समान भुजा
विद्याधन	–	विद्या रूपी धन	कनकलता	–	कनक के समान लता
कमलनयन	–	कमल के समान नयन	घनश्याम	–	घन के समान श्याम (काला)
वचनामृत	–	अमृत रूपी वचन	विद्याधन	–	विद्या रूपी धन
क्रोधाग्नि	–	क्रोध रूपी अग्नि	भवजल	–	भव रूपी जल
संसारसागर	–	संसार रूपी सागर	आशालता	–	आशा की लता
ग्रंथरत्न	–	ग्रंथ रूपी रत्न	नरसिंह	–	नर रूपी सिंह
करकमल	–	कर रूपी कमल	प्राणप्रिय	–	प्राणों के समान प्रिय
कुसुमकोमल	–	कुसुम सा कोमल	स्त्रीरत्न	–	स्त्री रूपी रत्न
मृगलोचन	–	मृग के समान लोचन			

3. द्विगु समास (Numeral Determinative Compound)

इसमें पहला पद संख्यावाचक होता है तथा किसी समूह विशेष का बोध कराता है; जैसे :

द्विगु	–	दो गायों का समाहार	सतसई	–	सात सौ (दोहों) का समाहार
त्रिलोक	–	तीन लोकों का समाहार	त्रिभुवन	–	तीन भुवनों (लोकों) का समूह
नवरत्न	–	नव रत्नों का समाहार	पंचवटी	–	पाँच वटों (वृक्षों) का समाहार
त्रिफला	–	तीन फलों का समाहार	अष्टाध्यायी	–	आठ अध्यायों का समाहार
सप्ताह	–	सात दिनों का समूह	पंचतत्व	–	पाँच तत्वों का समूह
चौमासा	–	चार मासों का समूह	नवरात्र	–	नौ रात्रियों का समूह
दोपहर	–	दो पहर का समाहार	दोराहा	–	दो राहों का समाहार
चारपाई	–	चार पैरों का समाहार	अष्टसिद्धि	–	आठ सिद्धियों का समाहार
नवनिधि	–	नौ निधियों का समाहार	पंचतंत्र	–	पाँच तंत्रों का समाहार
पंजाब	–	पाँच आबों (नदियों) का समूह	त्रिवेणी	–	तीन वेणियों का समाहार
चतुर्मुख	–	चार मुखों का समूह	शताब्दी	–	शत (सौ) अब्दों (वर्षों) का समाहार

4. अव्ययीभाव समास (Adverbial Compound)

इसमें पहला शब्द प्रधान होता है और समास से जो शब्द बनता है, वह अव्यय होता है। समस्त शब्द के अव्यय रूप में उपस्थित होने के कारण इस समास का नाम अव्ययीभाव पड़ा है। संस्कृत में अव्ययीभाव समास में पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद संज्ञा या विशेषण; जैसे : भरपेट, यथासंभव, यथास्थान, यथायोग्य आदि। लेकिन हिंदी समासों में इसके अपवाद स्वरूप पहला पद संज्ञा तथा विशेषण भी देखा गया है; जैसे : हाथों-हाथ (हाथ संज्ञा), हर घड़ी (हर विशेषण)।

अव्ययीभाव समास के अन्य उदाहरण :

आसमुद्र	–	समुद्रपर्यंत	आमरण	–	मरण-पर्यंत
आजन्म	–	जन्म से लेकर	आजानु	–	जानुओं (घुटनों) तक
आज्ञानुसार	–	आज्ञा के अनुसार	यथाविधि	–	विधि के अनुसार
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार	यथासंभव	–	जैसा संभव हो
यथानियम	–	नियम के अनुसार	यथामति	–	मति के अनुसार
यथाशीघ्र	–	जितना शीघ्र हो सके	यथासामर्थ्य	–	सामर्थ्य के अनुसार
यथोचित	–	जितना उचित हो	प्रत्यक्ष	–	आँखों के सामने
प्रतिदिन	–	दिन-दिन / हर दिन	प्रत्येक	–	एक-एक
प्रतिवर्ष	–	वर्ष-वर्ष / हर वर्ष	भरपेट	–	पेट भरकर
भरसक	–	पूरी शक्ति से	भरपूर	–	पूरा भरा हुआ
द्वार-द्वार	–	हर एक द्वार	घर-घर	–	प्रत्येक घर
रातों-रात	–	रात ही रात	बीचों-बीच	–	बीच ही बीच में
हाथों-हाथ	–	हाथ ही हाथ में	साफ-साफ	–	बिल्कुल स्पष्ट
अनजाने	–	जाने बिना	अनुरूप	–	रूप के योग्य
बेशक	–	बिना संदेह	बखूबी	–	खूबी के साथ
बेकाम	–	काम के बिना	बाकायदा	–	कायदे के अनुसार
बेफायदा	–	फायदे के बिना	बेमतलब	–	मतलब के बिना
सादर	–	आदर सहित	निस्संदेह	–	संदेह रहित

5. द्वंद्व समास (Copulative Compound)

जिस समस्तपद में दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने में दोनों पदों के बीच 'और', 'या', 'तथा', 'अथवा' जैसे योजक शब्दों का प्रयोग हो तो, उसे 'द्वंद्व समास' कहते हैं। द्वंद्व का अर्थ दो या दो से अधिक वस्तुओं का युग्म अर्थात् जोड़ा होता है; जैसे :

राधा-कृष्ण	–	राधा और कृष्ण	राजा-रंक	–	राजा और रंक
दाल-रोटी	–	दाल और रोटी	राम-लक्ष्मण	–	राम और लक्ष्मण
आटा-दाल	–	आटा और दाल	दाल-चावल	–	दाल और चावल
माँ-बाप	–	माँ और बाप	सुख-दुख	–	सुख और दुख
छोटा-बड़ा	–	छोटा और बड़ा	भला-बुरा	–	भला और बुरा
अमीर-गरीब	–	अमीर और गरीब	पाप-पुण्य	–	पाप और पुण्य
ऊँच-नीच	–	ऊँच और नीच	धर्म-अधर्म	–	धर्म और अधर्म
जन्म-मरण	–	जन्म और मरण	खरा-खोटा	–	खरा और खोटा
रात-दिन	–	रात और दिन	देश-विदेश	–	देश और विदेश
पूर्व-पश्चिम	–	पूर्व और पश्चिम	लोभ-मोह	–	लोभ और मोह
पृथ्वी-आकाश	–	पृथ्वी और आकाश	जल-थल	–	जल और थल
नदी-नाले	–	नदी और नाले	नर-नारी	–	नर और नारी
धनी-मानी	–	धनी और मानी	वेद-पुराण	–	वेद और पुराण

6. बहुव्रीहि समास (Attributive Compound)

जिस समास में दोनों खंड प्रधान न हों और समस्तपद अपने पदों से भिन्न किसी अन्य संज्ञा का बोध करवाते हों, तो उसे 'बहुव्रीहि समास' कहते हैं। इनका विग्रह करने पर विशेष रूप से 'वाला', 'वाली', 'जिसका', 'जिसकी', 'जिससे' आदि शब्द पाए जाते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि विग्रह पद संज्ञा पद का विशेषण रूप ही होता है; जैसे :

विषधर	–	विष को धारण करने वाला अर्थात् **शंकर**
त्रिलोचन	–	तीन हैं लोचन जिसके अर्थात् **शंकर**
चारपाई	–	चार हैं पाए जिसके अर्थात् **चारपाई**
दिगंबर	–	दिशाएँ ही हैं अंबर (वस्त्र) जिसका वह **(शंकर या जैन मुनि)**
नीलकंठ	–	नीला है कंठ जिसका अर्थात् **शंकर**
कमलनयन	–	कमल के समान नयन हैं जिसके अर्थात् **विष्णु**
पंचानन	–	पाँच हैं आनन जिसके अर्थात् सिंह या **शिव**
अष्टाध्यायी	–	आठ अध्यायों वाला **(पाणिनि का व्याकरण)**
चक्रधर	–	चक्र को धारण करने वाला अर्थात् **विष्णु**
लंबोदर	–	लंबा है उदर जिसका अर्थात् **गणेश**
दशमुख	–	दश मुख वाला अर्थात् **रावण**
गजानन	–	गज के समान आनन (मुख) वाला अर्थात् **गणेश**
तिरंगा	–	तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का **राष्ट्रध्वज**
पीतांबर	–	पीत अंबर (वस्त्र) वाला अर्थात् **श्रीकृष्ण**
षडानन	–	षड् (छ:) हैं आनन जिसके अर्थात् **कार्तिकेय**
अल्पबुद्धि	–	अल्प है बुद्धि जिसकी अर्थात् **व्यक्ति-विशेष**

दशानन	–	दश हैं आनन जिसके अर्थात् **रावण**
सुलोचना	–	सुंदर हैं लोचन जिसके **(सुंदर नयनों वाली स्त्री)**
चक्रपाणि	–	चक्र है हाथ में जिसके अर्थात् **विष्णु**
अंशुमाली	–	अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी अर्थात् **सूर्य**
पतझड़	–	झड़ते हैं पत्ते जिसमें अर्थात् **ऋतु विशेष**
पंकज	–	पंक (कीचड़) में पैदा हो जो **(कमल)**
चंद्रशेखर	–	शेखर (माथे) पर चंद्र है जिसके **(शिवजी)**
घनश्याम	–	घन के समान श्याम है जो **(कृष्ण)**
मयूरवाहन	–	मयूर की सवारी है जिसकी **(कार्तिकेय)**
मृगेंद्र	–	मृगों का इंद्र (राजा) है जो **(सिंह)**
सुकेशी	–	सुंदर केश (किरणें) हैं जिसके **(चाँद)**
चतुर्मुख	–	चार हैं मुख जिसके **(ब्रह्मा)**
सहस्त्रबाहु	–	सहस्त्र भुजाएँ हैं जिसकी **(कार्तवीर्य अर्जुन)**
चतुर्भुज	–	चार भुजाएँ हैं जिसकी **(विष्णु)**
पद्मासना	–	पद्म (कमल) आसन है जिसका **(सरस्वती)**
कुसुमाकर	–	कुसुमों (फूलों) का खजाना है जो **(वसंत)**
मृत्युंजय	–	मृत्यु को जीतने वाला **(शंकर)**
मृगलोचन	–	मृग जैसे लोचन हैं जिसके **(स्त्री-विशेष)**
कुरूप	–	असुंदर रूप वाला **(व्यक्ति-विशेष)**
उदारहृदय	–	उदार है हृदय जिसका **(व्यक्ति-विशेष)**
प्रधानमंत्री	–	मंत्रियों में प्रधान है जो **(पद-विशेष)**
महावीर	–	महान वीर है जो **(हनुमान जी)**

विभिन्न समासों में अंतर

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

(Difference between Oppositional and Attributive Compound)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में सूक्ष्म अंतर पाया जाता है। कर्मधारय समास, विशेषण और विशेष्य अथवा उपमान और उपमेय पदों से मिलकर बना होता है, जबकि बहुव्रीहि समास में समस्तपद किसी संज्ञा के लिए विशेषण का कार्य करता है। कमल के समान नयन (उपमेय-उपमान) या कुत्सित है जो मति (विशेषण-विशेष्य) ये कर्मधारय के उदाहरण हैं, क्योंकि इसमें उपमान-उपमेय तथा विशेषण-विशेष्य का संबंध है; लेकिन बहुव्रीहि में ऐसा नहीं होता। बहुव्रीहि का विग्रह इस प्रकार होगा–कमल जैसे नयनों वाला अर्थात् विष्णु तथा कुत्सित मति है जिसकी अर्थात् व्यक्ति-विशेष। इसी तरह के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

पीतांबर	–	पीत के समान अंबर (कर्मधारय)
		पीत हैं अंबर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण (बहुव्रीहि)
नीलकंठ	–	नीला है कंठ (कर्मधारय)
		नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव (बहुव्रीहि)
दिव्यदृष्टि	–	दिव्य है जो दृष्टि (कर्मधारय)
		दिव्य है दृष्टि जिसकी वह व्यक्ति-विशेष (बहुव्रीहि)
मृगनयन	–	मृग के नयन के समान नयन (कर्मधारय)
		मृग के नयन के समान नयन हैं जिसके अर्थात् स्त्री-विशेष (बहुव्रीहि)

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर (Difference between Numeral and Attributive Compound)

कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं, जिन्हें द्विगु और बहुव्रीहि दोनों समासों के अंतर्गत रखा जा सकता है। दोनों में अंतर केवल इतना है कि द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा शेष पद उसका विशेष्य, लेकिन बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के लिए विशेषण का कार्य करता है; जैसे :

अष्टाध्यायी	–	अष्ट (आठ) अध्यायों का समूह (द्विगु)
		आठ हैं अध्याय जिसके, पाणिनि का व्याकरण (बहुव्रीहि)
चारपाई	–	चार पायों का समूह (द्विगु)
		चार हैं पाए जिसके अर्थात् चारपाई (बहुव्रीहि)
त्रिफला	–	तीन फलों का समाहार (द्विगु)
		तीन हैं फल जिसमें अर्थात् औषधि विशेष (बहुव्रीहि)
त्रिनेत्र	–	तीन नेत्रों का समूह (द्विगु)
		तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शंकर (बहुव्रीहि)
तिरंगा	–	तीन रंगों का समाहार (द्विगु)
		तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का राष्ट्रध्वज (बहुव्रीहि)

समास (पाठ्यपुस्तक पर आधारित)

समस्तपद	विग्रह	भेद
विश्वविजयी	विश्व का विजयी	तत्पुरुष समास
देशभक्ति	देश की भक्ति	तत्पुरुष समास
दुर्भाग्य	बुरा भाग्य	अव्ययीभाव समास
परलोक	दूसरा लोक	अव्ययीभाव समास
वियोगिनी	वियोग में डूबी है जो	बहुव्रीहि समास
हिमपात	हिम का पात	तत्पुरुष समास
रेलगाड़ी	रेल की गाड़ी	तत्पुरुष समास
पर्वतारोही	पर्वत का अरोही	तत्पुरुष समास
श्रमसाध्य	श्रम से साध्य	तत्पुरुष समास
आश्चर्यचकित	आश्चर्य से चकित	तत्पुरुष समास
निस्संकोच	बिना संकोच के	अव्ययीभाव समास
मार्मिक	मर्म को छूने वाली	बहुव्रीहि समास
सपरिवार	परिवार सहित	अव्ययीभाव समास
विश्वविख्यात	विश्व में विख्यात	तत्पुरुष समास
सुयोग्य	योग्य है जो	बहुव्रीहि समास
प्रयोगशाला	प्रयोग की शाला	तत्पुरुष समास
शोधकार्य	शोध का कार्य	तत्पुरुष समास
भारतीय	भारत में रहने वाले	बहुव्रीहि समास
मदमस्त	मद से मस्त	तत्पुरुष समास
क्रांतिकारी	क्रांति लाने वाला	बहुव्रीहि समास
राजपुरुष	राजा का पुरुष	तत्पुरुष समास
महादेव	देवों में महान है जो देव	कर्मधारय समास
उलटना-पुलटना	उलटना और पुलटना	द्वंद्व समास

संधि और समास में अंतर (Difference between Joining and Compound)

संधि और समास परस्पर मिलती-जुलती प्रक्रियाएँ लगती हैं लेकिन संधि में शब्दों का मेल होता है, जबकि समास में पदों का। परंपरागत संधि के स्थल प्राय: निश्चित हैं अर्थात् संधि में जिन दो शब्दों का योग होता है, उनमें पहले शब्द की अंतिम ध्वनि और दूसरे शब्द की आरंभिक ध्वनि में परिवर्तन होता है। समास में आवश्यक नहीं कि जिन पदों का समाहार हो उनमें ध्वनिगत विकार भी लक्षित हों; जैसे–'विद्या के लिए आलय' से विद्यालय। समास बनाने में विद्या तथा आलय में कोई ध्वनि परिवर्तन नहीं हुआ; केवल इनके बीच प्रयुक्त परसर्ग 'के लिए' का लोप हुआ। समास रचना में भी कहीं-कहीं ध्वनि परिवर्तन होता है; किंतु उसका स्थल संधि की भाँति सीमित या निश्चित न होकर उससे व्यापक होता है अर्थात् उसमें ध्वनि-परिवर्तन संधि स्थल से परे पहले शब्द की आरंभिक ध्वनि में भी हो सकता है; जैसे–'घोड़ों की दौड़' से घुड़दौड़। समास बनने में पूर्व पद घोड़ों का अंत्य–ओं तो लुप्त हुआ ही, साथ ही उसका आरंभिक वर्ण दीर्घ से ह्रस्व हो गया।

संधि और समास में अर्थ के स्तर पर एक मुख्य अंतर यह है कि संधि में जिन शब्दों का योग रहता है, उनका मूल अर्थ परिवृतत नहीं होता, जैसे–विद्यालय में विद्या और आलय दोनों शब्दों का मूल अर्थ सुरक्षित है; जबकि समास से बने शब्दों का मूल अर्थ सुरक्षित रह भी सकता है (जैसे–देशभक्ति, सेनापति) और नहीं भी (जैसे–जलपान)। जलपान का अर्थ जल का पान नहीं, अपितु नाश्ता, चाय आदि है। ऐसे ही जलवायु, हथकड़ी, कालापानी, आबोहवा पदों का मूल अर्थ बदल गया है।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित समस्तपद का विग्रह कर भेद बताओ :

समस्तपद	विग्रह	समास का नाम
1. राजपुरुष	....	....
2. कमलनयन	....	....
3. भयभीत	....	....
4. गुणयुक्त	....	....
5. रामभक्ति	....	....
6. मरणासन्न	....	....
7. नीतिनिपुण	....	....
8. पराधीन	....	....
9. अधर्म	....	....
10. मुखचंद्र	....	....
11. महाराजा	....	....
12. नीलगगन	....	....
13. देहलता	....	....
14. नास्तिक	....	....
15. घुड़सवार	....	....
16. कार्यकुशल	....	....
17. जीवनसाथी	....	....
18. मार्गव्यय	....	....

19. शोकाकुल	....	....
20. पुस्तकालय	....	....
21. आनंदमग्न	....	....
22. असंभव	....	....
23. भुजदंड	....	....
24. घनश्याम	....	....
25. श्वेतांबर	....	....
26. परमानंद	....	....
27. अनदेखी	....	....
28. कृष्णसर्प	....	....
29. अनादर	....	....
30. कुलश्रेष्ठ	....	....
31. जलप्रवाह	....	....
32. देशभक्ति	....	....
33. ग्रामगत	....	....
34. प्रसंगानुसार	....	....
35. अनिच्छा	....	....
36. कापुरुष	....	....
37. लालटोपी	....	....
38. क्रोधाग्नि	....	....
39. ऋणमुक्त	....	....

2. निम्नलिखित विग्रहों के समस्तपद बनाकर समास का नाम लिखिए :

विग्रहरूप	समस्तपद	समास का नाम
1. कुसुम सा कोमल	....	....
2. परम है जो आनंद	....	....
3. न योग्य	....	....
4. डिब्बे में बंद	....	....
5. प्रेम से आतुर	....	....
6. राष्ट्रपति का भवन	....	....
7. देश के लिए भक्ति	....	....
8. आप पर बीती	....	....
9. न स्थिर	....	....
10. सिंह रूपी नर	....	....
11. महान है जो देव	....	....
12. न देखी	....	....
13. आज्ञा के अनुसार	....	....
14. लक्ष्य से भ्रष्ट	....	....

15. रसोई के लिए घर ....
16. गुण से युक्त ....
17. यश को प्राप्त ....
18. रोग से मुक्त ....
19. भारत का रत्न ....
20. आत्मा पर विश्वास ....
21. सिर में दर्द ....
22. न आदि ....
23. घृत से युक्त अन्न ....
24. दंड के समान भुजा ....
25. उद्योग का पति ....

3. निम्नलिखित का समास विग्रह कीजिए तथा समास का भेद बताइए :

1. धर्माधर्म, नरकगत, यथाशक्ति, त्रिलोचन, यथामति, सत्याग्रह, अंशुमाली, काम-मोक्ष, जन्मांध, आमरण।
2. गजानन, भीमार्जुन, शोकमग्न, प्रतिक्षण, भरपेट, मालगाड़ी, राजा-रंक, पंचानन, पंचरत्न, जल-थल, दशानन।
3. अनुरूप, हस्तलिखित, सुख-दुख, घनश्याम, प्रतिदिन, देशगत, नर-नारी, पीतांबर, रातभर, सिरदर्द, जय-पराजय, लंबोदर।
4. चतुर्भुज, भरपेट, रसोईघर, रुपया-पैसा, अनुरूप, ऋणमुक्त, दाल-रोटी, गजानन, चक्रधर, जल-थल, राष्ट्रपति, आजन्म।
5. चंद्रकिरण, त्रिकोण, आजन्म, जन्म-मृत्यु।
6. आजीवन, देशभक्त, पाप-पुण्य, गजानन, प्रतिदिन, शरणागत, घी-शक्कर, नीलकंठ, पीतांबर, जल-थल, त्रिभुवन, रातभर।
7. देशभक्ति, दो-चार, यथामति, चतुर्भुज, आजन्म, शताब्दी, राजा-रंक, नीलकंठ, पथभ्रष्ट, दशानन, दिन-रात, दिनभर।
8. चक्रधर, रंगमहल, महापुरुष, जल-थल, यथाशक्ति, नीलगगन, राष्ट्रभक्त, त्रिभुज, आमरण।
9. पीतांबर, पत्राचार, नीलगगन, गुणदोष, आमरण, ग्रामसेवक, सोना-चाँदी, आजीवन।
10. यथाशीघ्र, त्रिलोचन, बाढ़ग्रस्त, आजन्म, चंद्रमुख, दशानन, हस्तलिखित, दिनोंदिन।
11. बाढ़पीड़ित, यथारुचि, कृपा-पात्र, दिवंगत, यथानाम, मृगनयनी, नद-नदी, नीलगाय, परीक्षाफल।
12. भरपेट, शोकाकुल, दशानन, शताब्दी, नीलकमल, यथाशक्ति, परलोकगमन, त्रिलोकी।
13. कुल परंपरा, गुण दोष, पंचवटी, विशालकाय, सेनापति।
14. नगरवासी, महाशय।
15. पीतांबर, प्रतिक्षण, पाठशाला।
16. नीलांबर, सुख-दुख, आशातीत, क्रोधाग्नि, श्रमदान।

4. निम्नलिखित विग्रहों के समस्तपद बनाकर समास का नाम बताइए :

1. दो या चार, नीला है कंठ जिसका, दूसरों का उपकार, राजा की आज्ञा, घर और बाहर, मरण तक, चुनाव के लिए आयोग, अल्प आहार करने वाला, घी और शक्कर।

2. स्वर्ग में वास, दीन और दुखी, योग्यता के अनुसार, चार भुजाओं वाला, पथ से भ्रष्ट, पूजा के लिए घर, युद्ध का क्षेत्र, महान है आत्मा जिसकी, नया है गीत जो।
3. नीली है जो गाय, संसद का सदस्य, पाँच वट के वृक्षों का समूह, मुख्य है जो सर्वस्व, दो या चार, बसों का अड्डा, मृग के समान नयन हैं जिसके, मरण पर्यंत, सौ वर्षों का समूह।
4. देवता और दानव, प्रधान है जो मंत्री, राजा का पुत्र, घर और बाहर, चंद्रमा की कला, शक्ति के अनुसार, तीन भुजाओं वाला है जो, बाढ़ से पीड़ित, नीला है जो नभ।
5. आज्ञा पालन करने वाला, नर और नारी, घोड़े पर सवार, दस या बीस, तीव्र है बुद्धि जिसकी, हाथ से लिखा, रसोई के लिए घर, मधुर बोलता है जो, इच्छा के अनुसार।

5. रेखांकित पद के समास का नाम लिखिए :

1. हमें फल की चिंता किए बिना <u>यथाशक्ति</u> परिश्रम करना चाहिए।
2. आप सभी <u>यथास्थान</u> बैठ जाएँ।
3. यह <u>इक्कीसवीं</u> शताब्दी है।
4. मनीषा ने रामू को बहुत <u>भला-बुरा</u> कहा।
5. इस उपकार के लिए मैं आपका <u>आजीवन</u> आभारी रहूँगा।

❑❑

8 अशुद्ध वाक्यों का शोधन (पदक्रम और अन्वय)

वाक्य रचना में मुख्य रूप से दो बातों को विशेष महत्त्व दिया जाता है। पहला, व्याकरण सिद्ध पदों को क्रम से रखना तथा उन पदों का परस्पर संबंध स्पष्ट करना। इन्हीं दो नियमों के आधार पर वाक्य की रचना होती है। वाक्य-विन्यास के अंतर्गत मुख्य रूप से निम्न दो विषय आते हैं :

(क) पदों का क्रम (ख) पदों का अन्वय।

(क) पदों का क्रम एवं नियम

हिंदी के वाक्य में पदक्रम के निम्नलिखित नियम हैं :

1. कर्ता पहले और क्रिया अंत में होती है; जैसे–वह गया। राम पुस्तक पढ़ता है। रमेश चलते-चलते शाम तक वहाँ जा पहुँचा। इन वाक्यों में 'वह', 'राम' तथा 'रमेश' कर्ता (पहले शब्द) हैं और 'गया', 'पढ़ता है', 'जा पहुँचा' क्रिया (अंतिम शब्द)।
2. क्रिया का कर्म या उसका पूरक क्रिया से पहले आता है तथा क्रिया कर्ता के बाद; जैसे–मैंने सेब खाया। पिता ने पुत्र को पैसे दिए। इन वाक्यों में 'सेब', 'पुत्र' तथा 'पैसे' कर्म हैं, 'खाया' और 'दिए' क्रिया तथा 'मैंने' और 'पिता' कर्ता।
3. यदि दो कर्म हों तो गौण कर्म पहले तथा मुख्य कर्म बाद में आता है; जैसे–पिता ने पुत्र को पैसे दिए। इसमें 'पुत्र' गौण कर्म है तथा 'पैसे' मुख्य कर्म।
4. कर्ता, कर्म तथा क्रिया के विशेषक (विशेषण या क्रियाविशेषण) अपने-अपने विशेष्य से पहले आते हैं; जैसे :
   मेधावी छात्र मन लगाकर पढ़ रहा है।
   इस वाक्य में मेधावी (विशेषण) तथा मन लगाकर (क्रियाविशेषण) क्रमशः अपने-अपने विशेष्य छात्र (संज्ञा) तथा क्रिया (पढ़ रहा है) से पहले आए हैं।
5. विशेषण सर्वनाम के पहले नहीं आ सकता, वह सर्वनाम के बाद ही आएगा; जैसे :
   वह अच्छा है। यह काला कपड़ा है।
   यहाँ सर्वनाम 'वह' और 'यह' के बाद ही विशेषण 'काला' और 'अच्छा' आए हैं।
6. स्थानवाचक या कालवाचक क्रियाविशेषण कर्ता के पहले या ठीक पीछे रखे जाते हैं; जैसे :
   आज मुझे जाना है। तुम कल आ जाना।
   इन वाक्यों में कालवाचक क्रियाविशेषण 'आज' और 'कल' अपने कर्ता 'मुझे' और 'तुम' के क्रमशः पहले तथा ठीक बाद में आए हैं।
7. निषेधार्थक क्रियाविशेषण क्रिया से पहले आते हैं; जैसे :
   तुम वहाँ मत जाओ। मुझे यह काम नहीं करना।
   इन वाक्यों में निषेधार्थक क्रियाविशेषण 'मत' तथा 'नहीं' क्रमशः अपनी क्रिया 'जाओ' तथा 'करना' से पहले आए हैं।
8. प्रश्नवाचक सर्वनाम या क्रियाविशेषण प्रायः क्रिया से पहले आते हैं; जैसे :
   तुम कौन हो? तुम्हारा घर कहाँ है?
   इन वाक्यों में प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कौन' तथा क्रियाविशेषण 'कहाँ' क्रिया से पहले आए हैं, किंतु जिस 'क्या' का उत्तर 'हाँ' या 'ना' में हो, वह वाक्य के प्रारंभ में आते हैं।
   क्या तुम जाओगे? क्या तुम्हें खाना खाना है?

9. प्रश्नवाचक या कोई अन्य सर्वनाम जब विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो, तो संज्ञा से पहले आएगा; जैसे :

यहाँ कितनी किताबें हैं? कौन आदमी आया है?

इन वाक्यों में 'यहाँ' तथा 'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर क्रमश: 'किताबें' तथा 'आदमी' (संज्ञा) से पहले आए हैं।

10. संबोधन तथा विस्मयादिबोधक शब्द प्राय: वाक्य के आरंभ में आते हैं; जैसे :

अरे रमा! तुम यहाँ कैसे? ओह! मैं तो भूल गई थी।

11. संबंधबोधक अव्यय तथा परसर्ग संज्ञा और सर्वनाम के बाद आते हैं; जैसे :

राम को जाना है। उसको भेज दो। वह मित्र के साथ घूमने गया है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'को' तथा 'के' परसर्ग संज्ञा व सर्वनाम राम, उस तथा मित्र के बाद आए हैं।

12. पूर्वकालिक 'कर' धातु के पीछे जुड़ता है; जैसे–छोड़ + कर = छोड़कर। इसके अलावा पूर्वकालिक क्रिया, मुख्य क्रिया से पहले आती है; जैसे :

वह खाकर सो गया। वह आकर पढ़ेगा।

इन वाक्यों में 'खाकर' तथा 'आकर' (पूर्वकालिक) 'सो गया' तथा 'पढ़ेगा' (क्रिया) से पहले आए हैं।

13. भी, तो, ही, भर, तक आदि अव्यय उन्हीं शब्दों के पीछे लगते हैं, जिनके विषय में वे निश्चय प्रकट करते हैं; जैसे :

मैं तो (भी, ही) घर गया था। मैं घर भी (ही) गया था।

इन दोनों वाक्यों में अव्यय 'तो', 'भी' तथा 'ही' क्रमश: 'मैं' और 'घर' के विषय में निश्चय प्रकट कर रहे हैं, इसलिए उनके पीछे लगे हुए हैं।

14. यदि .... तो, जब .... तब, जहाँ .... वहाँ, ज्योंहि .... त्योंहि आदि नित्य संबंधी अव्ययों में प्रथम प्रधान वाक्य के पहले तथा दूसरा आश्रित वाक्य के पहले लगता है; जैसे :

जहाँ चाहते हो, वहाँ जाओ। जब आप आएँगे, तब वह जा चुका होगा।

इन वाक्यों में 'जहाँ' और 'जब' प्रथम प्रधान वाक्य के पहले तथा 'वहाँ' और 'तब' दूसरे आश्रित उपवाक्य के पहले लगे हैं।

15. समुच्चयबोधक अव्यय दो शब्दों या वाक्यों के बीच में आता है। तीन समान शब्द या वाक्य हों तो 'और' अंतिम से पहले आता है; जैसे :

दिनेश तो जा रहा है, लेकिन रमेश नहीं। सीता, गीता और रमा तीनों ही आएँगी।

पहले वाक्य में समुच्चयबोधक अव्यय 'लेकिन' दो वाक्यों के बीच में आया है तथा दूसरे वाक्य में समुच्चयबोधक अव्यय 'और' तीन शब्द होने के कारण से अंतिम से पहले आया है।

16. वाक्य में विविध अंगों में तर्कसंगत निकटता होनी चाहिए; जैसे : एक पानी का गिलास लाओ।

इस वाक्य में 'एक पानी' निरर्थक है; 'पानी का एक गिलास लाओ', सार्थक है।

(ख) पदों का अन्वय एवं नियम

अन्वय का अर्थ है 'मेल'। वाक्य में संज्ञा, क्रिया आदि आने पर पदों में परस्पर मेल होना चाहिए। यहाँ पर कुछ विशेष नियम दिए जा रहे हैं :

कर्ता, कर्म और क्रिया का अन्वय

1. यदि कर्ता के साथ कारक चिह्न या परसर्ग न हो, तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होगा; जैसे :

राधा खाना बनाती है। शीला पुस्तक पढ़ती है।

2. यदि कर्ता के साथ परसर्ग हो, तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होगा; जैसे :
   राम ने पुस्तक पढ़ी। रमा ने भोजन पकाया।
3. यदि कर्ता और कर्म दोनों के साथ परसर्ग हो, तो क्रिया सदा पुल्लिंग, अन्य पुरुष, एकवचन में रहती है; जैसे :
   पुलिस ने चोर को पीटा।
4. एक ही तरह का अर्थ देने वाले अनेक कर्ता एकवचन में और परसर्ग रहित हों, तो क्रिया एकवचन में होगी; जैसे :
   यमुना की बाढ़ में उसका घर-बार और माल-असबाब बह गया।
5. यदि एक से अधिक भिन्न-भिन्न कर्ता, परसर्ग रहित हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी; जैसे :
   सीता और राधा पढ़ रही थीं। राकेश और मोहन जा रहे हैं।
6. यदि एक से अधिक भिन्न कर्ता लिंगों में हों, तो क्रिया अंतिम कर्ता के लिंग के अनुसार होगी; जैसे :
   माँ और बेटा आए। उसके पास एक पायजामा और दो कमीज़ें थीं।

संबंध और संबंधी का अन्वय

1. का, के, की संबंधवाची विशेषण परसर्ग हैं। इनका लिंग, वचन और कारकीय रूप वही होता है, जो उत्तर पद (संबंधी) का होता है; जैसे :
   शीला की घड़ी। राजू का रूमाल। रमा के कपड़े।
2. यदि संबंधी पद अनेक हों, तो संबंधवाची विशेषण परसर्ग पहले संबंधी के अनुसार होता है; जैसे :
   शीला की बहन और भाई जा रहे थे।
   ऐसे में परसर्गों को दोहराया भी जा सकता है; जैसे :
   शीला की बहन और उसका भाई जा रहे थे।

संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय

1. सर्वनाम का वचन और पुरुष उस संज्ञा के अनुरूप होना चाहिए, जिसके स्थान पर उसका प्रयोग हो रहा हो; जैसे :
   राधा ने कहा कि वह अवश्य आएगी। अध्यापक आए तो उनके हाथ में पुस्तकें थीं।
2. हम, तुम, आप, वे, ये आदि का अर्थ की दृष्टि से एकवचन के लिए भी प्रयोग होता है, किंतु इनका रूप बहुवचन ही रहता है; जैसे :
   आप कहाँ जा रहे हो? लड़के ने कहा, "हम भी चलेंगे।"

विशेषण और विशेष्य का अन्वय

1. विशेषण का लिंग और वचन, विशेष्य के अनुसार होता है; जैसे :
   अच्छी साड़ी, छोटा बच्चा, काला घोड़ा, काले घोड़े, काली घोड़ी।
2. यदि अनेक विशेष्यों का एक विशेषण हो, तो उस विशेषण के लिंग, वचन और कारकीय रूप तुरंत बाद में आने वाले विशेष्य के अनुसार होंगे; जैसे :
   पुराने पलंग और चारपाई बेच दी। अपने मान और सम्मान के लिए जिए।
3. यदि एक विशेष्य के अनेक विशेषण हों, तो वे सभी विशेष्य के अनुसार होंगे; जैसे :
   सस्ती और अच्छी किताबें। गंदे और मैले-कुचैले कपड़े।

वाक्यगत अशुद्धियाँ

भावों की अभिव्यक्ति प्राय: दो प्रकार से हुआ करती है–**एक**, वाणी द्वारा हम अपने विचारों को बोलकर प्रकट करते हैं तथा **दूसरे**, लेखनी द्वारा हम अपनी भावनाओं को लिपिबद्ध करते हैं। भावों को लिपिबद्ध करने के लिए आवश्यक है

कि भाषा पर हमारा पूर्ण अधिकार हो, अन्यथा अस्पष्ट, अशुद्ध और दूषित भाषा के माध्यम से हमारे भावों का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाएगा।

भाषा का सौंदर्य मूलत: दो बातों पर निर्भर है। एक तो वक्ता अथवा लेखक के पास विपुल शब्द-भंडार हो और दूसरे उसे शब्दार्थ का सम्यक् ज्ञान हो। इसके अभाव में भाव अथवा अभिप्राय सही ढंग से व्यक्त नहीं किया जा सकता। व्याकरण ही भाषा को व्यवस्थित करने का साधन है, लेकिन केवल व्याकरण के नियमों को हृदयंगम करने मात्र से हम भाषा में शुद्धता और सुंदरता नहीं ला सकते। भाषा को परिमार्जित, सशक्त और आकर्षक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम प्रत्येक शब्द की आत्मा को समझें और उस पर अधिकार कर उसे अपनी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना लें।

मनुष्य के मन के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए वाक्यों में शब्दों का उपयुक्त और क्रमबद्ध प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। उचित और अनुरूप शब्दों का वरण तथा उनका व्यवस्थित नियोजन सही और सुंदर वाक्य-रचना के मुख्य उपकरण हैं। संक्षेप में शुद्ध लेखन से आशय है–ऐसे लेखन से जिसमें सार्थक और उपयुक्त शब्दावली का उपयोग हो। अलंकारों, मुहावरों और कहावतों का विषय के अनुरूप उचित प्रयोग हो। भाषा अस्वाभाविकता से दूषित न हो और वर्तनी व्याकरणानुकूल हो तथा अभिव्यक्ति एक अनूठी भंगिमा के साथ पूर्णता को प्राप्त हुई हो।

भाषा शुद्ध तब हो सकती है, जब शुद्ध वाक्यों का प्रयोग किया गया हो। अच्छी हिंदी लिखने के लिए यह आवश्यक है कि हम शब्दों और वाक्यों के शुद्ध प्रयोग को जानें। इस प्रकरण में हम वाक्यगत अशुद्धियों पर प्रकाश डालेंगे।

वाक्यों की अशुद्धियाँ

1. क्रम दोष

वाक्य में प्रत्येक शब्द, व्याकरण के नियमों के अनुसार सही क्रम में होना चाहिए। कर्ता, क्रिया और कर्म को उपयुक्त स्थानों पर रखना अत्यंत आवश्यक है। मिश्र वाक्य में प्रधान वाक्य तथा उसके अन्य उपवाक्यों को ठीक क्रम में न रखने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. मैंने उस घने जंगल में अनेक पशु और पक्षी उड़ते और चरते देखे।	1. मैंने उस घने जंगल में अनेक पशु और पक्षी चरते और उड़ते देखे।
2. वह किताब जो कोने में रखी है, वह बहुत अच्छी है।	2. जो किताब कोने में रखी है, वह बहुत अच्छी है।
3. वे तो मेल-जोल बढ़ाना चाहते हैं, पर आपका मुँह देखने को जी नहीं चाहता है।	3. वे तो मेल-जोल बढ़ाना चाहते हैं, पर आप उसका मुँह देखना नहीं चाहते।
4. इस विद्यालय में जो विद्यार्थी डॉक्टर बनना चाहते हैं, उनको इस विद्यालय में शिक्षा दी जाती है।	4. जो विद्यार्थी डॉक्टर बनना चाहते हैं, उनको इस विद्यालय में शिक्षा दी जाती है।
5. यह घटना जब मैं दस वर्ष का था, उस समय की है।	5. यह घटना उस समय की है, जब मैं दस वर्ष का था।
6. सच में क्या तुम्हें प्रथम स्थान मिला है।	6. क्या सचमुच तुम्हें प्रथम स्थान मिला है?
7. जहाज के डूबते ही कप्तान नीचे कूद पड़ा।	7. कप्तान डूबते हुए जहाज से नीचे कूद पड़ा।
8. दरअसल में वह उससे प्रेम करता है।	8. दरअसल वह उससे प्रेम करता है।
9. पंचों ने जो निर्णय लिया वह सभी को मान्य था।	9. पंचों का निर्णय सभी को मान्य था।
10. जाऊँ कहाँ, मैं तो आप पर ही निर्भर करता हूँ।	10. कहाँ जाऊँ, जब मैं आप पर निर्भर हूँ।

2. पुनरुक्ति दोष

एक ही वाक्य में एक शब्द का एक से अधिक बार प्रयोग अथवा पर्यायवाची शब्द का प्रयोग भी दोषपूर्ण हो जाता है और आडंबर की रुचि सूचित करता है; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. राधा मेरी परम प्रिय स्नेही है।	1. राधा मेरी परम प्रिय है।
2. नेता को हमेशा जनता के हितकर कल्याण की बातें सोचनी चाहिए।	2. नेता को हमेशा जनता के कल्याण की बातें सोचनी चाहिए।
3. मैं आपका सदैव आभार का भार मानता रहूँगा।	3. मैं आपका सदैव आभार मानता रहूँगा। *या* मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।
4. आइए, पधारिए आपका स्वागत है।	4. आइए, आपका स्वागत है।
5. तुम्हें वहाँ कभी भी नहीं जाना चाहिए।	5. तुम्हें वहाँ कभी नहीं जाना चाहिए।
6. मेघ पानी बरसाते हैं।	6. मेघ बरसते हैं।
7. कश्मीर में कई दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं।	7. कश्मीर में कई दर्शनीय स्थल हैं। *या* कश्मीर में कई स्थल देखने योग्य हैं।
8. वह गुनगुने गरम पानी से स्नान करता है।	8. वह गुनगुने पानी से स्नान करता है। *या* वह गर्म पानी से स्नान करता है।
9. आपका भवदीय।	9. आपका *या* भवदीय दोनों समान शब्द होने के कारण किसी एक शब्द का प्रयोग किया जाएगा।
10. पिछले कुछ वर्षों के बीच भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुता बढ़ी है।	10. पिछले कुछ वर्षों में भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुता बढ़ी है।
11. बिना कठोर परिश्रम किए तुम सफल नहीं हो सकते।	11. कठिन परिश्रम के बिना तुम सफल नहीं हो सकते।
12. भैंस का ताकतवर दूध होता है।	12. भैंस का दूध ताकतवर होता है।

3. संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ

हम संज्ञा को प्रयुक्त करते समय उसके सही अर्थ से अनभिज्ञ, अपने कथन को प्रभावशाली बनाने के लिए उसका अशुद्ध प्रयोग कर जाते हैं। इस प्रयोग के द्वारा हमारे कथन का सही अर्थ भी स्पष्ट नहीं होता तथा भाषा भी दोषपूर्ण हो जाती है। कुछ अशुद्ध प्रयोग नीचे देखे जा सकते हैं :

अशुद्ध	शुद्ध
1. राम आजकल शुद्ध भाषा लिखने का व्यायाम कर रहा है।	1. राम आजकल शुद्ध भाषा लिखने का अभ्यास कर रहा है।
2. जीवन और साहित्य का घोर संबंध है।	2. जीवन और साहित्य का घनिष्ठ संबंध है।
3. सामाजिक कुरीतियों का एकमात्र कारण अज्ञान है।	3. सामाजिक कुरीतियों का एकमात्र कारण अज्ञानता है।
4. निरपराधी को दंड देना अनुचित है।	4. निरपराध को दंड देना अनुचित है।
5. विद्यार्थियों ने प्रधानाध्यापक को अभिनंदन-पत्र प्रदान किया।	5. विद्यार्थियों ने प्रधानाध्यापक को अभिनंदन-पत्र अर्पित किया।
6. गुलाम अली खाँ गाने की कसरत कर रहे हैं।	6. गुलाम अली खाँ गाने का अभ्यास कर रहे हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
7. कविता पढ़कर उसे आनंद का आभास हुआ।	7. कविता पढ़कर उसे आनंद का अनुभव हुआ।
8. मैं जान बूझकर गलती कर बैठा।	8. मैं अनजाने में गलती कर बैठा।
9. नदियाँ अपने साथ उपजाऊ रेत लाती हैं।	9. नदियाँ अपने साथ उपजाऊ मिट्टी लाती हैं।
10. यह एक इतिहासिक घटना है।	10. यह एक ऐतिहासिक घटना है।
11. उनके गले में मोती की कड़ियाँ हैं।	11. उनके गले में मोती की लड़ियाँ हैं।
12. डाकू के पैरों में हथकड़ियाँ हैं।	12. डाकू के पैरों में बेड़ियाँ हैं।
13. बेफ़जूल बात मत करो।	13. फ़जूल बात मत करो।
14. लिखने में शुद्धताई बरतो।	14. लिखने में शुद्धता बरतो।
15. मैं मिठाई खरीदने के हेतु बाज़ार गई थी।	15. मैं मिठाई खरीदने हेतु बाज़ार गई थी।

4. लिंग संबंधी अशुद्धियाँ

लिंग के प्रयोग में भी सामान्य रूप से अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. मुझे बहुत गुस्सा आती है।	1. मुझे बहुत गुस्सा आता है।
2. बिजली का बटन दबाते ही बत्ती जल उठा।	2. बिजली का बटन दबाते ही बत्ती जल उठी।
3. सीता और राम आई।	3. सीता और राम आए।
4. मैंने उसकी मस्तक पर टीका लगायी।	4. मैंने उसके मस्तक पर टीका लगाया।
5. राधा ने मोहन से झूठ बोली थी।	5. राधा ने मोहन से झूठ बोला था।
6. राजू ने मुझे मथुरा दिखाई।	6. राजू ने मुझे मथुरा दिखाया।
7. रानी मधुर स्वर में बोला।	7. रानी मधुर स्वर में बोली।
8. उसने अपना पर्स उठाई।	8. उसने अपना पर्स उठाया।
9. जादूगर का जादू अच्छी थी।	9. जादूगर का जादू अच्छा था।
10. वसंत ऋतु अच्छा लगता है।	10. वसंत ऋतु अच्छी लगती है।
11. आज बाज़ार में एक भी दुकान नहीं खुला।	11. आज बाज़ार में एक भी दुकान नहीं खुली।
12. उसका संतान अच्छा है।	12. उसकी संतान अच्छी है।
13. कल माता जी आ रहे हैं।	13. कल माता जी आ रही हैं।
14. बालक ने रोटी खाया।	14. बालक ने रोटी खाई।
15. मैं आपका दर्शन करने आया हूँ।	15. मैं आपके दर्शन करने आया हूँ।
16. मैं नया पोशाक पहनूँगा।	16. मैं नई पोशाक पहनूँगा।
17. पिता जी ने पुस्तक पढ़ा।	17. पिता जी ने पुस्तक पढ़ी।
18. हमारे माता जी बाज़ार गए हैं।	18. हमारी माता जी बाज़ार गई हैं।

5. वचन संबंधी अशुद्धियाँ

वचन के प्रयोग में असावधानी के कारण अनेक अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. गुलाब के पौधे पर मैंने कई फूलों को देखा।	1. गुलाब के पौधे पर मैंने कई फूल देखे।
2. तुम इसका दाम देते जाओ।	2. तुम इसके दाम देते जाओ।
3. डाकू कई हज़ारों रुपये लूट कर ले गए।	3. डाकू हज़ारों रुपये लूट कर ले गए।

अशुद्ध	शुद्ध
4. इसमें पैसे खर्च होता है।	4. इसमें पैसे खर्च होते हैं।
5. उन्हें दो रन मिल गया।	5. उन्हें दो रन मिल गए।
6. लगता है मानसून आ गई।	6. लगता है मानसून आ गया।
7. लड़के और लड़कियाँ पढ़ रही हैं।	7. लड़के और लड़कियाँ पढ़ रहे हैं।
8. रामचरितमानस पढ़कर पाठक की आँख खुल गई।	8. रामचरितमानस पढ़कर पाठक की आँखें खुल गईं।
9. सीता की आँख से आँसू बह रहा है।	9. सीता की आँखों से आँसू बह रहे हैं।
10. अनेकों स्त्री-पुरुष वहाँ आए थे।	10. अनेक स्त्री-पुरुष वहाँ आए थे।
11. उन्होंने हाथ जोड़ा।	11. उन्होंने हाथ जोड़े।
12. हर एक आदमी आएँगे।	12. हर एक आदमी आएगा।
13. उनके पास बहुत सोने हैं।	13. उनके पास बहुत सोना है।
14. मैंने पीतले खरीदे।	14. मैंने पीतल खरीदा।
15. प्रत्येक चित्र बुरे नहीं होते।	15. प्रत्येक चित्र बुरा नहीं होता।

6. सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ

सर्वनाम संबंधी अनेक अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं। सर्वनाम का यथास्थान प्रयोग न करना, सर्वनामों का अधिक प्रयोग करना या गलत सर्वनामों का प्रयोग करना प्रायः देखा गया है; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. अध्यापक ने उससे पाठ पढ़ने को कहा परंतु रमेश ने ऐसा नहीं किया।	1. अध्यापक ने रमेश को पाठ पढ़ने को कहा परंतु उसने ऐसा नहीं किया।
2. श्याम ने उसे आवाज़ लगाई पर राधा चली गई।	2. श्याम ने राधा को आवाज़ लगाई पर वह चली गई।
3. वह जो अपराध करता है उसे दंड देना चाहिए।	3. जो अपराध करता है, उसे दंड देना चाहिए।
4. मेरा ध्यान मेरी माँ की ओर था। *(संबंधार्थक सर्वनाम में अपना, अपनी, अपने शब्द प्रयुक्त होते हैं।)*	4. मेरा ध्यान अपनी माँ की ओर था।
5. मैंने मेरी पेन मेरे मित्र को दे दी।	5. मैंने अपना पेन अपने मित्र को दे दिया।
6. इनने आपका घर देखा है।	6. इन्होंने आपका घर देखा है।
7. वह अच्छे आदमी नहीं हैं।	7. वे अच्छे आदमी नहीं हैं।
8. तुम तुम्हारे घर जाओ।	8. तुम अपने घर जाओ।
9. मैंने तेरे को कितनी बार कहा।	9. मैंने तुझसे कितनी बार कहा।
10. हमारे राष्ट्र में भ्रष्टाचार देखकर मुझे बड़ा दुख होता है।	10. अपने राष्ट्र में भ्रष्टाचार देखकर मुझे बड़ा दुख होता है।
11. यह उपन्यास जो है वह प्रेमचंद का लिखा हुआ है।	11. यह उपन्यास प्रेमचंद का लिखा हुआ है।
12. मेरी साड़ी तुमसे अच्छी है।	12. मेरी साड़ी तुम्हारी साड़ी से अच्छी है।
13. दूध में कौन पड़ गया है?	13. दूध में क्या पड़ गया है?
14. तुम मेरे तरफ़ क्यों चले आ रहे हो?	14. तुम मेरी तरफ़ क्यों चले आ रहे हो?
15. धर्म जो है उसका पालन करो।	15. धर्म का पालन करो।
16. जो लोग बाढ़ पीड़ित हैं, उसके परिवारों को सहायता देना सरकार का दायित्व है।	16. जो लोग बाढ़ से पीड़ित हैं, उनके परिवारों को सहायता देना सरकार का दायित्व है।
17. मेरे को आपका काम बहुत पसंद है।	17. मुझे आपका काम बहुत पसंद है।
18. अपने को यहाँ से जाने की कोई जल्दी नहीं है।	18. मुझे यहाँ से जाने की कोई जल्दी नहीं है।

7. विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ

विशेषण संबंधी अनेक अशुद्धियाँ देखने में आती हैं। विशेषणों के अनावश्यक, अनुपयुक्त तथा अनियमित प्रयोग से वाक्य भद्दा व प्रभावहीन हो जाता है; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. गाय काली चर रही है।	1. काली गाय चर रही है।
2. हवा ठंडी बह रही थी।	2. ठंडी हवा बह रही थी।
3. मुंबई में मैंने बड़ी-बड़ी होटलें देखी।	3. मुंबई में मैंने बड़े-बड़े होटल देखे।
4. एक बड़ा-सा कील लाओ।	4. एक बड़ी-सी कील लाओ।
5. आज की ताज़ी खबरें सुनो।	5. आज की ताज़ा खबरें सुनो।
6. दहेज की लेन-देन बहुत बुरी रिवाज़ है।	6. दहेज का लेन-देन बहुत बुरा रिवाज़ है।
7. मोहन की बुद्धि बड़ी विशाल है।	7. मोहन की बुद्धि बड़ी तेज़ है।
8. साहित्य और जीवन का घोर संबंध है।	8. साहित्य और जीवन का घनिष्ठ संबंध है।
9. सिंह एक वीभत्स जानवर है।	9. सिंह एक भयानक जानवर है।
10. शीला के तीव्र आग्रह करने पर मैं उसके घर गई।	10. शीला के अधिक आग्रह करने पर मैं उसके घर गई।
11. उसकी बुद्धि बड़ी विशाल है।	11. उसकी बुद्धि बड़ी सूक्ष्म है।
12. तुम दोनों में सबसे बुद्धिमान कौन है?	12. तुम दोनों में अधिक बुद्धिमान कौन है?
13. डॉक्टरों ने कागज़ात का निरीक्षण किया।	13. डॉक्टरों ने कागज़ात की जाँच की।
14. दुष्टों के भय से डरो मत।	14. दुष्टों से डरो मत।
15. किसी को क्षमा करने में ही बड़ाईपन है।	15. किसी को क्षमा करने में ही बड़प्पन है।
16. एक दूध का गिलास दो।	16. दूध का एक गिलास दो।
17. गुप्त रहस्य की बातें तुम्हें कैसे पता चलीं?	17. रहस्य की बातें तुम्हें कैसे पता चलीं?
18. हाथियों की दहाड़ सुनकर हम डर गए।	18. हाथियों की चिंघाड़ सुनकर हम डर गए।

8. क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ

क्रियापदों संबंधी अनेक अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं; जैसे :क्रियापदों का अनावश्यक प्रयोग, आवश्यकता के समय प्रयोग न करना, अनुपयुक्त क्रियापद का प्रयोग, सहायक क्रिया में अशुद्धि तथा क्रियाओं में असंगति के कारण ये अशुद्धियाँ होती हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
1. क्या यह सही होता है?	1. क्या यह सही है?
2. आप यह कंबल पहन लें।	2. आप यह कंबल ओढ़ लें।
3. जल्दी से कुरता डाल लो।	3. जल्दी से कुरता पहन लो।
4. साहब ने बोला कि कल तुम्हारी छुट्टी है।	4. साहब ने कहा कि कल तुम्हारी छुट्टी है।
5. जूता निकाल दो।	5. जूता उतार दो।
6. किसी के स्नेह का मूल्य मापा नहीं जा सकता।	6. किसी के स्नेह का मूल्य आँका नहीं जा सकता।
7. 15 अगस्त हमें हमारे शहीद सैनिकों का स्मरण दिलाता है।	7. 15 अगस्त हमें हमारे शहीद सैनिकों का स्मरण कराता है।
8. मैं संकल्प लेता हूँ कि इस वर्ष कड़ी मेहनत करूँगा।	8. मैं संकल्प करता हूँ कि इस वर्ष कड़ी मेहनत करूँगा।
9. सुनिए अंदर चले आओ।	9. सुनिए, अंदर चले आइए।

10. मैं तुम्हें श्रद्धा के साथ यह पुस्तक समर्पण करती हूँ।	10. मैं तुम्हें श्रद्धा के साथ यह पुस्तक समर्पित करती हूँ।
11. आपने क्या अभी तक काम पूरा नहीं किए हैं?	11. आपने क्या अभी तक काम पूरा नहीं किया है?
12. तुम लोगों को यह काम करने चाहिए?	12. तुम लोगों को यह काम करना चाहिए?
13. बच्चों से रोए नहीं जाते।	13. बच्चों से रोया नहीं जाता।
14. उसका प्राण निकल रहा है।	14. उसके प्राण निकल रहे हैं।
15. हमें प्रतिदिन चरखा कातना चाहिए।	15. हमें प्रतिदिन चरखा चलाना चाहिए।
16. लड़के अध्यापक को प्रश्न पूछते हैं।	16. लड़के अध्यापक से प्रश्न करते हैं।
17. भारतीय वीरों के सामने शत्रु की सेनाएँ दौड़ गईं।	17. भारतीय वीरों के सामने शत्रु की सेनाएँ भाग गईं।
18. यह पुस्तक विद्वतापूर्ण लिखी गई है।	18. यह पुस्तक विद्वतापूर्वक लिखी गई है।
19. वह दंड देने के योग्य है।	19. वह दंड पाने के योग्य है।
20. छात्रों का सफल होना परिश्रम पर निर्भर करता है।	20. छात्रों की सफलता परिश्रम पर निर्भर करती है।

9. क्रियाविशेषण संबंधी अशुद्धियाँ

क्रियाविशेषण संबंधी अनेक अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं। विशेष रूप से इसका अनावश्यक, अशुद्ध, अनुपयुक्त तथा अनियमित प्रयोग भाषा को अशुद्ध बनाता है; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. जैसा करोगे, उतना ही भरोगे।	1. जैसा करोगे, वैसा ही भरोगे।
2. वह बड़ा चालाक है।	2. वह बहुत चालाक है।
3. वहाँ चारों ओर बड़ा अंधकार था।	3. वहाँ चारों ओर घना अंधकार था।
4. वह अवश्य ही मेरे घर आएगा।	4. वह मेरे घर अवश्य आएगा।
5. वह स्वयं ही अपना काम कर लेगा।	5. वह स्वयं अपना काम कर लेगा।
6. स्वभाव के अनुरूप तुम्हें यह कार्य करना चाहिए।	6. स्वभाव के अनुकूल तुम्हें यह कार्य करना चाहिए।
7. देश में सर्वस्व शांति है।	7. देश में सर्वत्र शांति है।
8. उसे लगभग पूरे अंक प्राप्त हुए।	8. उसे पूरे अंक प्राप्त हुए।
9. वह बड़ा दूर चला गया।	9. वह बहुत दूर चला गया।
10. उसने आसानीपूर्वक काम समाप्त कर लिया।	10. उसने आसानी से काम समाप्त कर लिया।
11. जंगल में बड़ा अंधकार है।	11. जंगल में घना अंधकार है।
12. यद्यपि वह मेहनती है, तब भी सफलता प्राप्त नहीं करता।	12. यद्यपि वह मेहनती है, तथापि वह सफलता प्राप्त नहीं करता।
13. मुंबई जाने में एकमात्र दो दिन शेष हैं।	13. मुंबई जाने में केवल दो दिन शेष हैं।
14. जितना गुड़ डालोगे वही मीठा होगा।	14. जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा।
15. यदि परिश्रम से पढ़ोगे तब अच्छे अंक प्राप्त करोगे।	15. यदि परिश्रम से पढ़ोगे तो अच्छे अंक प्राप्त करोगे।

10. कारकीय परसर्गों की अशुद्धियाँ

शुद्ध रचना के लिए कारकीय परसर्गों का समुचित प्रयोग करना आवश्यक है। सामान्य रूप से 'ने', 'को', 'से', 'के द्वारा', 'में', 'पर', 'का', 'की', 'के', 'के लिए' आदि परसर्गों के गलत प्रयोग से अशुद्धियाँ उत्पन्न हो जाती हैं; जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध
1. शीला ने पढ़ती है।	1. शीला पढ़ती है।
2. उसने राम को पूछा।	2. उसने राम से पूछा।
3. उसका लड़के का नाम राज है।	3. उसके लड़के का नाम राज है।
4. उसको पेट में दर्द हो रहा है।	4. उसके पेट में दर्द हो रहा है।
5. बच्चों से गुस्सा करना व्यर्थ है।	5. बच्चों पर गुस्सा करना व्यर्थ है।
6. वह हँसी से बात टाल गया।	6. वह हँसी में बात टाल गया।
7. दीन-दुर्बलों को प्यार करना मानवता है।	7. दीन-दुर्बलों से प्यार करना मानवता है।
8. दशरथ को चार पुत्र थे।	8. दशरथ के चार पुत्र थे।
9. मेरा मित्र ने मुझको मदद की।	9. मेरे मित्र ने मेरी मदद की।
10. पिता जी घर आए और खाना खाया।	10. पिता जी घर आए और उन्होंने खाना खाया।
11. वे अभी-अभी खाना खाए हैं।	11. उन्होंने अभी-अभी खाना खाया है।
12. मैं खाना नहीं खाया हूँ।	12. मैंने खाना नहीं खाया है।
13. आपने मुसकरा दिया।	13. आप मुसकरा दिए।
14. मैं बाज़ार को जा रहा हूँ।	14. मैं बाज़ार जा रहा हूँ।
15. दस बजने को पंद्रह मिनट हैं।	15. दस बजने में पंद्रह मिनट हैं।
16. वह देर में खाना खाता है।	16. वह देर से खाना खाता है।
17. उन्होंने एक मित्र परिचय दिया।	17. उन्होंने एक मित्र का परिचय दिया।
18. यह बात कहने पर कठिनाई है।	18. यह बात कहने में कठिनाई है।
19. वह ऑफिस पर बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।	19. वह ऑफिस में बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।
20. शिक्षा के द्वारा वह आगे बढ़ा।	20. शिक्षा के कारण वह आगे बढ़ा।
21. कल सभा के बीच इस पर विचार होगा।	21. कल सभा में इस पर विचार होगा।
22. खिड़की खुलने से प्रकाश आएगा।	22. खिड़की खुलने पर प्रकाश आएगा।

11. मुहावरे संबंधी अशुद्धियाँ

मुहावरे हमारी भाषा को सुंदर, समृद्ध व प्रभावशाली बनाते हैं। इनका प्रयोग करते समय यह विशेष ध्यान रखना होता है कि इनका रूप विकृत और हास्यास्पद न हो। यहाँ पर मुहावरे संबंधी अशुद्धियों पर प्रकाश डाला गया है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. उसके तो सारे इरादों पर पानी बह गया।	1. उसके तो सारे इरादों पर पानी फिर गया।
2. ऐसा लगता है कि उसने पहले से ही तुम्हारे कान खा लिए हैं।	2. ऐसा लगता है कि उसने पहले से ही तुम्हारे कान भर दिए हैं।
3. हमारे देश ने शत्रु देशों को पराजित करने का बीड़ा चबाया है।	3. हमारे देश ने शत्रु देशों को पराजित करने का बीड़ा उठाया है।
4. पुलिस को देखते ही लाला के चेहरे पर हवाइयाँ दौड़ने लगीं।	4. पुलिस को देखते ही लाला के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।
5. वह चुपचाप दम साधे उठ खड़ा हुआ।	5. वह चुपचाप दम साधे पड़ा रहा।
6. तुम्हारे घर की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते मेरा दम घुट गया।	6. तुम्हारे घर की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते मेरा दम फूल गया।
7. सिपाही ने अपराधी का सिर तलवार से उठा दिया।	7. सिपाही ने अपराधी का सिर तलवार से उड़ा दिया।

8. मैं तो सिर का कफ़न बाँधकर घर से निकला हूँ।
9. आजकल पूँजीपति गरीबों का गला घोंट रहे हैं।
10. अक्ल के घोड़े चराने में तो तुम जैसा कोई नहीं।
11. देश पर प्राण कुर्बान करना सैनिक का धर्म है।
12. इस बच्चे को किसी की दृष्टि लगी है।

8. मैं तो सिर पर कफ़न बाँधकर घर से निकला हूँ।
9. आजकल पूँजीपति गरीबों का गला काट रहे हैं।
10. अक्ल के घोड़े दौड़ाने में तो तुम जैसा कोई नहीं।
11. देश पर प्राण न्योछावर करना सैनिक का धर्म है।
12. इस बच्चे को किसी की नज़र लगी है।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

1. आप अपने मन में सोचें।
2. उसकी आवाज़ कान में सुनाई पड़ी।
3. वेदव्यास जी ने यहीं बैठकर रचनाओं की सृष्टि की थी।
4. माँ भी सोती नींद से जाग पड़ी।
5. इस पुस्तक में साधारण लेखकों से जो गलतियाँ होती हैं, उनका अच्छा विवेचन है।
6. दुर्घटना का समाचार पाते ही माँ का प्राण सूख गया।
7. तुमको यह बात कितनी बार कही जाए।
8. मैंने अख़बार पढ़ी।
9. एक पीतल का बर्तन भी खरीद लाते।
10. सरदार पटेल 'लौह पुरुष' कहा जाता है।
11. हमने उससे क्या लेना है, जो अपना दिमाग खराब करें।
12. रास्ते में फन उठाए साँप को देखते ही मेरा होश उड़ गया।
13. क्या मेरी फुटबॉल तुमने ली है?
14. बुद्धिमान लड़कियाँ देश के लिए बड़े-बड़े काम करती हैं।
15. लड़के और लड़कियाँ पढ़ रहे हैं।
16. तबलावादक और गीतकार के साथ नर्तकी आ रहे हैं।
17. पंडित नेहरू का राष्ट्र अभारी है।
18. इंदिरा गांधी भारत का प्रधानमंत्री थी।
19. अध्यापक जी पढ़ा रहा है।
20. पिता के साथ उसका पुत्र या पुत्री आएगा।
21. उसकी अलमारी में कागज़, फाइलें और किताबें रखे हुए हैं।
22. रमेश अथवा लता हमारे यहाँ आएगा।
23. राम, लक्ष्मण और सीता वन को गईं।
24. नेता जी भाषण दे रहा है।
25. पुस्तक पढ़ा लड़के ने।
26. मैं, रमेश और तुम टेनिस खेलेंगे।
27. मेरा बेटा और बेटी मेरठ गई हैं।
28. यहाँ लोग ईमानदार और उदार रहते हैं।
29. उस मकान के गिरने की आशा है।
30. मैं भी मेरी पुस्तक ले आया हूँ।
31. हम पिता जी के चरण छुए हैं।
32. तेरे को क्या चाहिए?
33. वे भी मिठाई खाए हैं।
34. गत माह वह अपने घर ही रहेगा।
35. मुझे एक चाय का गरम प्याला दीजिए।
36. प्रयाग में तीन नदी मिलती हैं।
37. यहाँ ताज़ा भैंस का दूध मिलता है।
38. मेरा तो प्राण निकल गया।
39. शिवसेना ने संजय दत्त की फिल्मों पर प्रतिबंध हटा लिया।
40. डिंपल कपाड़िया ने रुदाली में अत्यंत बढ़िया अभिनय किया है।
41. बेनजीर पुनः फिर से प्रधानमंत्री बन गयी है।
42. अब 'तलाक-तलाक-तलाक' कहने मात्र से संबंध विवाह का विच्छेद नहीं माना जा सकता है।
43. अर्जुन सिंह को कांग्रेस पार्टी से बाहर निकाल दिया है।
44. जमानत पर छूटने के बाद संजय दत्त पुनः फिर फिल्मों में काम करने लगा था।
45. नवाज़ शरीफ ने कहा था, कि वह भविष्य में उग्रवादियों को सहायता नहीं देगा।

46. रामकुमार सौ वर्ष का हो गया है।
47. कांग्रेस को अल्पसंख्यकों से नहीं बल्कि भगवान राम से क्षमा माँगना चाहिए।
48. श्यामा ने कई पत्र लिखा।
49. पुष्पा ने आम को खाती थी।
50. मुझसे चिट्ठी नहीं लिखा जाता।
51. खेत में एक बकरी, दो भेड़ें और कई गाएँ चर रही हैं।
52. वह लंबी और गोरी चिट्टा नवयुवती है।
53. मैंने कहानी को सुनाई।
54. राम ने एक बर्फी और दो रसगुल्ले खिलाई।
55. राजेश और रीता रानी हमारे यहाँ आएगा।
56. रहीम, राधा और फातिमा पढ़ रही थी।
57. मुझसे भात नहीं खाई जाती।

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

1. महात्मा गांधी का देश सदा आभारी रहेगा।
2. तुम्हारा पालन-पोषण कौन करती है?
3. पिता जी भजन कर रहा है।
4. भाषण प्रधानमंत्री देता है।
5. मेरे मित्र के साथ उनका बेटा या पत्नी आएगा।
6. कौन आई है? देखो।
7. मैं, गीता और तुम खेलेंगे।
8. किसान, प्रधान और पंच बैठा है।
9. आज भी याद किया जाता है लाल बहादुर शास्त्री जी को।
10. हो जाती है प्रेम और मुहब्बत।
11. मुझको पत्र नहीं लिखा जाता।
12. नेता जी मंच पर भाषण दे रहा है।
13. तुम तुम्हारा काम करो।
14. आप तो नहीं आए परंतु तुम्हारा भाई आ गया था।
15. जो करेगा वह भरेगा।
16. वह जहाँ भी गया उधर का ही हो लिया।
17. आप इधर बैठिए।
18. रास्ता दे दीजिए, मुझे यहीं उतरना है।
19. राम और उसकी बहन तथा मोहन जाते हैं।
20. माधवी तो चलते-चलते थक गई।
21. मोहन हँसता-हँसता कहने लगा कि वह भी गया था।
22. कृपया करके तुम भी काम कर लो।
23. एक गीतों की पुस्तक ला दीजिए।
24. मेले में अनेकों दुकानें थीं।
25. वहाँ मुफ़्त आँखों का ऑपरेशन हो रहा है।
26. बीमार आदमी अस्पताल में इलाज करेगा।
27. सब ने मान लिया कि पृथ्वी घूमती थी।
28. तेरे को कहाँ जाना है?
29. आम के डाल पर पकने की आशा है।
30. मैंने स्कूल जाना है।
31. राम ने कहानी सुनाया।
32. विद्यार्थियों ने मेले में गीत गाता था।
33. यहाँ ताजा गन्ने का रस मिलता है।
34. क्या बेफ़िजूल की बातें कर रहे हो।
35. तुम्हें मुझसे नहीं, भगवान से क्षमा माँगना चाहिए।
36. ईद के दिन अनेकों लोगों ने नमाज़ पढ़ी।
37. अपने को तुम्हारी बात अच्छी नहीं लगती।
38. यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।
39. नेता जी ने अनेकों सभाओं में भाषण दिया।
40. वहाँ भारी भरकम भीड़ जमा थी।
41. दोनों में केवल यही अंतर है।
42. आप जन्म-दिन की दावत में आओ।
43. प्रधानाचार्य कक्षा में आता है।
44. मेरे पास केवल मात्र पाँच रुपये हैं।
45. रोगी को काटकर सेब खिलाओ।
46. रहीम को अनेकों कहानियाँ याद हैं।
47. मेले में बच्चा खो गई।
48. आप खाना खाओगे।
49. मुझे केवल यही पुस्तक चाहिए।
50. संगीतकार ने अनेकों गीतों की धुन बनाई।
51. मैंने यह काम नहीं करा।
52. तुम्हारी पुस्तक कब आएगा?
53. तुमने जीत हासिल की, वाह।
54. अनेकों वीरों ने देश की खातिर प्राण गँवा दिए।
55. कबीरदास एक भारत के प्रसिद्ध संत थे।
56. आपका यह बात हमें अच्छा नहीं लगती।
57. विद्यालय की सब छात्र पास हो गयीं।
58. कृपया हमारी बात सुनने की कृपा करें।

59. यह पुस्तक किसका है?
60. हम उसके पास से आ रहा हूँ।
61. हत्यारों को मृत्युदंड का सज़ा मिलना चाहिए।
62. महात्मा गांधी भारत की राष्ट्रपिता थी।
63. सारे देशभर में रोष प्रकट किया गया।
64. एक फूलों की माला चाहिए।
65. जब भी आप आओ, मुझसे मिलो।
66. यहाँ ताज़ा फलों का रस मिलता है।
67. दिनेश ने ही आग लगाया था।
68. उसने मुझे खाने को बुलाया।
69. देश में सर्वस्व शांति है।
70. तुम मेरे शत्रु हो, मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ।
71. हिंदी की शिक्षा अनिवार्य कर दिया।
72. द्वार पर कोई लड़कियाँ खड़ी हैं।
73. हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी उन्नति होनी चाहिए।

3. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए तथा वाक्य में निहित अशुद्धि के प्रकार को स्पष्ट कीजिए :**

1. बीती बातों को भुला देनी चाहिए। ....
2. हमारे से नहीं गाया जाता। ....
3. संजय ने पुस्तकें पढ़ीं। ....
4. कक्षा में बड़े-बड़े लड़के और बड़े-बड़े लड़कियाँ पढ़ते हैं। ....
5. आपकी स्वास्थ्य कैसी है? ....
6. मेरा काली घोड़ा खो गया। ....
7. आपको यह पुस्तक अवश्य खरीदना चाहिए। ....
8. उस सभा में अनेकों लोगों ने गाना सुनाया। ....
9. राम ने एक बर्फी और दो रसगुल्ले खिलाई। ....

❑❑

9 मुहावरे (Idioms)
(वाक्य प्रयोग)

परिभाषा

'मुहावरा' शब्द हिंदी भाषा में अरबी भाषा की देन है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'अभ्यास' या 'बातचीत'। ऐसा शब्द, वाक्यांश, वाक्य जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए और सामान्य अर्थ से भिन्न किसी और अर्थ में रूढ़ हो जाए, उसे 'मुहावरा' कहते हैं। ये हमारी तीव्र हृदयानुभूति को अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं। इनका जन्म आम लोगों के बीच होता है। लोकजीवन में प्रयुक्त भाषा में इनका उपयोग बड़े ही सहज रूप में होता है। इनके प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली, मनमोहक तथा प्रवाहमयी बनाने में सहायता मिलती है। सदियों से इनका प्रयोग होता आया है और आज भी इनके अस्तित्व को भाषा से अलग नहीं किया जा सकता। यह कहना निश्चित रूप से गलत नहीं होगा कि मुहावरों के बिना भाषा अप्राकृतिक तथा निर्जीव जान पड़ती है। इनका प्रयोग आज हमारी भाषा और विचारों की अभिव्यक्ति का एक अभिन्न तथा महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। यही नहीं इसने हमारी भाषा को गहराई दी है तथा उसमें सरलता तथा सरसता भी उत्पन्न की है। यह मात्र सुशिक्षित या विद्वान लोगों की ही धरोहर नहीं है, इसका प्रयोग अशिक्षित तथा अनपढ़ लोगों ने भी किया है। इस प्रकार ये वैज्ञानिक युग की देन नहीं हैं। इनका प्रयोग तो उस समय से होने लगा, जिस समय मनुष्य ने अपने भावों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया था।

यदि गहराई से अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि अन्य भाषाओं में भी इनको उतना ही महत्त्व मिला है जितना हिंदी में। बात कहने का तरीका एक ही है, मात्र शब्द बदल गए हैं; जैसे : हिंदी में 'डींगें मारना' तथा अंग्रेज़ी में–To blow one's own trumpet. इससे यह स्पष्ट होता है कि सभी भाषाओं में मानव मन की अभिव्यक्ति, प्रवृत्ति, भावों का आदान-प्रदान सामान्य रूप से एक जैसा ही रहा है। इसलिए इनकी उपस्थिति हर भाषा में प्रचुर संख्या में पाई जाती है।

वाक्यों में मुहावरों के प्रयोग से संबंधित कुछ विशेष बातें

1. मुहावरों के रूप को बदला नहीं जा सकता है अर्थात् इनमें प्रयुक्त शब्दों को उसी रूप में स्वीकार करना होता है; जैसे– 'अंग टूटना' को 'शरीर टूटना' के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।

2. वास्तविक अर्थ के साथ इनका प्रयोग न करके रूढ़ अर्थ के साथ ही इनका प्रयोग किया जाना चाहिए; जैसे–'आसमान पर थूकना'। यदि इस मुहावरे का वास्तविक अर्थ लिया जाए तो निश्चित रूप से हास्यास्पद ही होगा। इसका रूढ़ अर्थ 'अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति का अनादर करना' ही सही माना जाएगा।

3. मुहावरे का वाक्य में प्रयोग होने से उसकी क्रिया वाक्य में लिंग, वचन, कारक के अनुसार परिवर्तित हो जाएगी।

4. मुहावरे का वाक्य में प्रयोग करते समय इसके लाक्षणिक अर्थ की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए तथा इसके अशुद्ध प्रयोग से बचना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने की संभावना रहती है।

5. इसका प्रयोग सीमित तथा आवश्यकतानुसार होना चाहिए। अनावश्यक मुहावरों के प्रयोग से भाषा का रूप विकृत हो जाता है।

6. मुहावरे का वाक्य में प्रयोग करते समय विद्यार्थियों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे इनका प्रयोग बड़ों की कमियों अथवा उनके दोष प्रकट करने के लिए नहीं कर रहे हैं।

हिंदी भाषा में मुहावरों पर यदि अध्ययन किया जाए तो इनकी कोई सीमा नहीं है। सहस्रों मुहावरे हैं, जिनको संकलित करना अत्यंत कठिन कार्य है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए यहाँ कुछ आवश्यक व महत्त्वपूर्ण मुहावरे दिए जा रहे हैं :

प्रमुख मुहावरे और उनका वाक्यों में प्रयोग

अ–ए

1. **अंग-अंग ढीला होना** (बहुत थक जाना)–सुबह से शाम तक काम करते-करते अब तो अंग-अंग ढीला हो गया है।
2. **अंधे की लाठी** (एकमात्र सहारा)–राहुल अपनी विधवा माँ की अंधे की लाठी है।
3. **अंगार उगलना** (क्रोधवश कटु शब्द बोलना)–मेरे छोटे भाई ने ऐसे अंगार उगले, जिन्हें मैं कभी न भूल सकूँगी।
4. **अंगारों पर पैर रखना** (जान-बूझकर विपत्ति सहना)–दिलेर सिंह जैसे दुस्साहसी व्यक्ति से भिड़कर, तुम अंगारों पर पैर रखने का प्रयत्न कर रहे हो।
5. **अँगूठा दिखाना** (साफ इनकार कर देना)–मैंने राहुल से उसकी पुस्तक माँगी तो उसने अँगूठा दिखा दिया।
6. **अँधेरे घर का उजाला** (होनहार पुत्र, जिस पर आशाएँ टिकी हों)–सुजाता के तीनों पुत्रों में से महेश ही अँधेरे घर का उजाला है।
7. **अँधेरगर्दी मचाना** (लूट मचाना/अन्याय करना)–आजकल सभी राजनेताओं ने अँधेरगर्दी मचा रखी है।
8. **अक्ल का दुश्मन** (मूर्ख)–मनोज तो अक्ल का दुश्मन है, उससे किसी समझदारी की उम्मीद मत करना।
9. **अपना उल्लू सीधा करना** (स्वार्थ सिद्ध करना)–दिनेश तो सभी को मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करता रहता है।
10. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** (सबसे अलग रहना)–भारत के छोटे-छोटे राज्य अपनी अलग खिचड़ी पकाते थे इसलिए अंग्रेज़ों ने उन्हें आसानी से नष्ट कर दिया।
11. **अपना ही राग अलापना** (अपनी ही बात कहते जाना)–आजकल सभी अपना ही राग अलापते हैं। कोई किसी की कुछ नहीं सुनता।
12. **अगर-मगर करना** (टाल-मटोल करना)–अगर-मगर मत करो। काम करना है तो करो वर्ना चलते बनो।
13. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** (अज्ञान से काम लेना)–न जाने क्यों उस समय मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे, जो मैंने अपने भाई को इतने कटु शब्द कह दिए।
14. **अक्ल का पुतला** (बुद्धिमान)–आजकल के विद्यार्थी अपने-आप को अक्ल का पुतला समझते हैं।
15. **अपना-सा मुँह लेकर रह जाना** (असफलता से लज्जित होना)–खेल में हार जाने के कारण विद्यार्थी अपना-सा मुँह लेकर रह गए।
16. **अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना** (स्वयं विनाश को आमंत्रण देना)–पढ़ाई ठीक ढंग से न करके विद्यार्थी स्वयं अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारते हैं।
17. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी प्रशंसा आप करना)–आजकल के नेता अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हैं।
18. **अपने पैरों पर खड़ा होना** (अपने सहारे अपना कार्य करना)–लालबहादुर शास्त्री ने बचपन से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया था।
19. **अठखेलियाँ सूझना** (दिल्लगी करना)–वहाँ तुम्हारे पिता जी अस्वस्थ हैं और यहाँ तुम्हें अठखेलियाँ सूझ रही हैं।
20. **आँखें खुलना** (होश आना)–आठवीं की वार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने के बाद मेरी आँखें खुल गईं।
21. **आँखें तरसना** (देखने के लिए जी चाहना)–विदेश में गए हुए अपने बेटे को देखने के लिए उसकी आँखें तरस गईं।
22. **आँखें फेर लेना** (उदासीन हो जाना)–उसने अपने बेटे की ओर से आँखें फेर ली हैं।
23. **आँखों का तारा** (अति प्रिय)–वह तो अपनी माँ की आँखों का तारा है।

24. **आँच न आने देना** (तनिक कष्ट न होने देना)–हमारे देश के नाम पर आँच न आने देने के लिए हमें कुछ भी कर गुजरना चाहिए।

25. **आँसू पीकर रह जाना** (अति शोक में चुप रह जाना)–अपने बच्चों को पेटभर रोटी देने में असमर्थ विधवा माँ आँसू पीकर रह जाती है।

26. **आकाश के तारे तोड़ना** (असंभव काम करना)–हर प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए आकाश के तारे तोड़कर लाने के वायदे करता है।

27. **आकाश-पाताल का अंतर** (बहुत अधिक अंतर)–रवि और रमेश के स्वभाव में आकाश-पाताल का अंतर है।

28. **आग में घी डालना** (क्रोध को भड़काना)–माँ तो पहले से ही नाराज़ थीं। तुम्हारी शिकायत ने आग में घी डालने का काम कर दिया।

29. **आड़े हाथों लेना** (कठोरता से पेश आना)–पुत्र के रात को देर से घर आने पर, पिता ने उसे आड़े हाथों लिया।

30. **आस्तीन का साँप** (कपटी मित्र, धोखेबाज़)–मैं नहीं जानता था कि राजीव आस्तीन का साँप निकलेगा।

31. **आटे-दाल का भाव मालूम होना** (कष्ट का अनुभव होना)–अभी तो पिता का धन उड़ाते हो; जब अपने पैरों पर खड़े होगे, तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा।

32. **आग लगाना** (उपद्रव मचाना, शांति नष्ट करना)–दुष्ट व्यक्ति हर जगह आग लगाते रहते हैं।

33. **आग-बबूला होना** (अति क्रोध में आ जाना)–अपने पुत्र की धृष्टता पर पिता आग-बबूला हो गए।

34. **आकाश-पाताल एक करना** (अति कठिन परिश्रम करना)–आकाश-पाताल एक करके उसने सफलता प्राप्त की है।

35. **आसमान टूट पड़ना** (अकस्मात् महान विपत्ति आना)–पुत्र की अकाल मृत्यु का समाचार सुनकर माँ पर जैसे आसमान टूट पड़ा हो।

36. **आसमान सिर पर उठाना** (अधिक कोलाहल करना)–पिता के घर से जाते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

37. **ईंट से ईंट बजाना** (पूर्ण रूप से नष्ट करना)–नादिरशाह ने दिल्ली में ईंट से ईंट बजा दी।

38. **ईंट का जवाब पत्थर से देना** (दुष्ट से दुष्टता करना)–आज के युग में वही सफल होता है, जो ईंट का जवाब पत्थर से देता है।

39. **ईद का चाँद होना** (कठिनाई से दिखाई देना)–दो महीने बाद मिले अपने मित्र से श्याम ने कहा कि तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

40. **ईमान बेचना** (बेईमान होना)–आज के नेताओं ने अपना ईमान बेच दिया है।

41. **उलटी गंगा बहाना** (नियम विरुद्ध कार्य करना)–आलसी रामू ने ढेर-सा काम कर आज उलटी गंगा बहा दी।

42. **उड़ती चिड़िया पहचानना** (दिल की बात समझ लेना)–हमसे चाल चलने से क्या लाभ? हम तो उड़ती चिड़िया पहचान लेते हैं।

43. **उल्लू बनाना** (मूर्ख बनाना)–श्याम रामू को उल्लू बनाकर अपना काम निकाल रहा है।

44. **उल्लू सीधा करना** (स्वार्थ सिद्ध करना)–नेता लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए झूठे वादे करते हैं।

45. **उँगली पर नचाना** (वश में रखना)–आजकल के नेता राजनीति को अपनी उँगली पर नचा रहे हैं।

46. **उँगली उठाना** (हानि पहुँचाने की चेष्टा करना)–हमारे रहते तुम पर उँगली उठाने का किसी में साहस नहीं है।

47. **एक लाठी से हाँकना** (अच्छे-बुरे का अंतर न करना)–क्या शिक्षित क्या अशिक्षित–तुम तो सभी को एक ही लाठी से हाँकते हो।

48. **एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना** (खूब दौड़धूप करना)–नौकरी की तलाश में मोहन ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया।

क–घ

49. **कंगाली में आटा गीला होना** (गरीबी में और अधिक हानि होना)–नौकरी तो पहले ही छूट गई, ऊपर से पत्नी को बीमारी ने घेर लिया। कंगाली में आटा गीला होता ही है।
50. **कंधे से कंधा मिलाना** (आपस में सहयोग करना)–आजकल स्त्रियाँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं।
51. **कमर कसना** (किसी काम को करने का दृढ़ निश्चय करना)–रामू ने अपने व्यवसाय को ऊपर लाने के लिए कमर कस ली है।
52. **कमर टूटना** (हतोत्साहित हो जाना)–पुत्र की अकाल मृत्यु से वृद्ध पिता की कमर टूट गई।
53. **कमर सीधी करना** (थकान मिटाना)–अब पहले कमर सीधी करने के बाद ही आगे काम होगा।
54. **कलेजा फटना** (बहुत दुख होना)–वृद्ध पिता को रोते देख मेरा कलेजा फट गया।
55. **कलेजा मुँह को आना** (मन विकल/ दुखी होना)– उसकी दर्दभरी कहानी सुनकर कलेजा मुँह को आ गया।
56. **कसौटी पर कसना** (परीक्षा लेना)–चरित्र की कसौटी पर कसने से ही मनुष्य का वास्तविक मूल्य प्रकट होता है।
57. **कफ़न सिर पर बाँधना** (मरने के लिए तैयार रहना)–स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में क्रांतिकारी सिर पर कफ़न बाँध कर निकलते थे।
58. **कलई खुलना** (भेद खुलना)–सी०बी०आई० के छापों ने बड़े-बड़े अफ़सरों की कलई खोल दी।
59. **कलेजा ठंडा होना** (मन में शांति पाना)–दुश्मनों को हराकर ही मेरा कलेजा ठंडा होगा।
60. **कलेजे का टुकड़ा** (अत्यधिक प्रिय)–हर बच्चा अपने माँ-बाप के कलेजे का टुकड़ा होता है।
61. **कलेजे पर पत्थर रखना** (धीरज रखना)–पति की मृत्यु के बाद श्यामा को कलेजे पर पत्थर रखना पड़ा।
62. **कन्नी काटना** (बचना)–जब से कमल ने बुरा व्यवहार किया है, करण उससे कन्नी काटने लगा है।
63. **कमर टूटना** (हिम्मत टूट जाना)–जवान बेटे की मृत्यु के बाद दीनानाथ की कमर टूट गई।
64. **कान पर जूँ न रेंगना** (असर न होना)–कितना भी समझा लो लेकिन आज के बच्चों के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती।
65. **कानों-कान खबर न होना** (बिलकुल खबर न होना)–पंकज ने विवाह भी कर लिया और किसी को कानों-कान खबर न हुई।
66. **कान कतरना** (बहुत अधिक चालाक होना)–विवेक तो आजकल बड़े-बड़ों के कान कतरने लगा है।
67. **कालिख पोतना** (बदनाम करना)–भावेश ने चोरी करके अपने पिता के नाम पर कालिख पोत दी है।
68. **काम तमाम करना** (मार डालना)–तलवार के एक ही वार से शत्रु का काम तमाम हो गया।
69. **कान का कच्चा होना** (बिना सोचे-विचारे किसी पर विश्वास करना)–मनुष्य को कभी भी कान का कच्चा नहीं होना चाहिए।
70. **कान भरना** (चुगली करना)–कान के कच्चे हो तभी उसने तुम्हारे कान भर दिए।
71. **कानाफूसी करना** (चुपके-चुपके बातें करना)–तुम दोनों को कानाफूसी करते हुए बहुत देर से देख रहा हूँ।
72. **किताब का कीड़ा** (हर समय पढ़ते रहने वाला)–पूर्णिमा तो किताब का कीड़ा है। उससे पिक्चर चलने की उम्मीद मत करना।

73. **कुत्ते की मौत मरना** (बुरी मौत मरना)–देशद्रोही! अब तुम्हें कुत्ते की मौत मारा जाएगा।

74. **खरी-खरी सुनाना** (स्पष्ट और कठोर वचन कहना)–विशाल किसी से नहीं डरता। वह सभी को खरी-खरी सुना देता है।

75. **खटाई में पड़ना** (अनिश्चित रहना)–मंत्री के त्यागपत्र दे देने के कारण कर्मचारियों की माँगों का मामला अब खटाई में पड़ गया है।

76. **खाई पाटना** (मन मुटाव कम करना)–सरला और क्षमा में लड़ाई हुई थी, लेकिन भावना ने दोनों के बीच की खाई पाट दी है।

77. **खाक छानना** (भटकना)–लगता है, सारी दिल्ली की खाक छानकर आए हो।

78. **खाक में मिलाना** (नष्ट करना)–घर से भागकर शीला ने अपने पिता की इज्ज़त को खाक में मिला दिया।

79. **खिल्ली उड़ाना** (हँसी उड़ाना)–बिना मतलब किसी की खिल्ली उड़ाना अच्छी बात नहीं।

80. **खून का घूँट पीना** (क्रोध को भीतर ही भीतर सहना)–अपने क्रोधी स्वभाव के कारण हुए नुकसान के बाद अब मेहता जी ने खून का घूँट पीना सीख लिया है।

81. **खून का प्यासा** (भयंकर शत्रु)–पाकिस्तान हमेशा ही हिंदुस्तान के खून का प्यासा रहा है।

82. **खून सूखना** (डर जाना)–बेटे की कार का एक्सीडेंट हुआ यह सुनकर शर्मा जी का खून सूख गया।

83. **खून-पसीना एक करना** (कठोर परिश्रम करना)–खून-पसीना एक करके मज़दूर अपने लिए दो वक्त की रोटी जुटा पाता है।

84. **ख्याली पुलाव पकाना** (कपोल कल्पनाओं में डूबे रहना)–कुछ काम भी करो। ख्याली पुलाव पकाने से कुछ नहीं होगा।

85. **गंगा नहाना** (बड़ा कार्य पूर्ण करना)–पुत्री का विवाह संपन्न होने के बाद माता-पिता को लगा कि मानो वे गंगा नहा लिए हैं।

86. **गर्दन झुकना** (लज्जित होना)–पुत्र जब चोरी करते हुए पकड़ा गया तो पिता की गर्दन झुक गई।

87. **गजभर की छाती होना** (गौरव से भर जाना)–पुत्र के प्रथम आने पर माता-पिता की छाती गजभर की हो गई।

88. **गर्दन उठाना** (विरोध करना)–1857 की क्राँति के बाद भारतवासियों ने अंग्रेज़ों के सामने गर्दन उठाना शुरू कर दिया था।

89. **गर्दन पर सवार होना** (पीछे पड़े रहना)–पैसों के लिए हर समय बच्चे माँ की गर्दन पर सवार रहते हैं।

90. **गले पड़ना** (मुसीबत पीछे पड़ना)–गरीब दयाराम की एक बार मदद क्या की वह तो गले पड़ गया।

91. **गले का हार** (प्रिय वस्तु)–जासूसी उपन्यास तो आजकल रोहण के गले का हार बन गए हैं।

92. **गड़े मुर्दे उखाड़ना** (पुरानी बातें दोहराना)–जब तुम लोगों में समझौता हो ही गया है तो फिर छोड़ो, गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा?

93. **गाँठ बाँधना** (अच्छी प्रकार याद रखना)–मेरी बात गाँठ बाँध लो, कभी गलत रास्ते पर मत जाना।

94. **गाल बजाना** (बकवास करना)–गाल बजाते फिरते हो, कोई ठोस कार्य क्यों नहीं कर दिखाते।

95. **गागर में सागर भरना** (थोड़े शब्दों में बहुत भाव भर देना)–इस कविता में तो मानो कवि ने गागर में सागर भर दिया हो।

96. **गिरगिट की तरह रंग बदलना** (सिद्धांतहीन होना)–हेमा का विश्वास मत करना, वह तो गिरगिट की तरह रंग बदलती है।

97. **गीदड़ भभकी** (व्यर्थ की धमकी)–मकान मालिक की गीदड़ भभकी से डरने की ज़रूरत नहीं है। वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

98. **गुड़-गोबर कर देना** (काम बिगाड़ देना)–मेरा काम बन ही चुका था, पर उसने आकर सब गुड़-गोबर कर दिया।

99. **गूंगे का गुड़** (मात्र अनुभव)–इस कविता का अध्ययन तो गूंगे का गुड़ है।

100. **घड़ों पानी पड़ना** (अधिक लज्जित होना)–अपने फेल होने की सूचना सुनकर रमेश पर घड़ों पानी पड़ गया।

101. **घर का उजाला** (इज्ज़त बढ़ाने वाला)–राजेंद्र में अनेक खूबियाँ हैं, वही तो घर का उजाला है।

102. **घाट-घाट का पानी पीना** (बहुत घूम-फिरकर अनुभव प्राप्त करना)–घाट-घाट का पानी पीकर ही आज वह इतना आगे आया है।

103. **घाव पर नमक छिड़कना** (दुखी को अधिक दुखी करना)–वह पहले ही दुखी है, फिर पुरानी बातें याद करवाकर उसके घाव पर नमक छिड़कना ठीक नहीं।

104. **घी के दिए जलाना** (खुशियाँ मनाना)–जब भैया विदेश से इंजीनियर की डिग्री लेकर आए तो घर पर घी के दिए जलाए गए।

105. **घोड़े पर सवार होना** (शीघ्रता में होना)–दिनेश जब देखो तब घोड़े पर सवार होकर आता है। कभी रुकता ही नहीं है।

106. **घोड़े बेचकर सोना** (निश्चिंत रहना)–उसे किसी की कोई परवाह नहीं, वह तो घोड़े बेचकर सोता है।

च–झ

107. **चंपत हो जाना** (गायब हो जाना)–पुलिस को आते देख चोर चंपत हो गया।

108. **चाँद पर थूकना** (निर्दोष पर दोष लगाना)–उस महात्मा के चरित्र पर गलत बात कहना चाँद पर थूकने के बराबर है।

109. **चाँदी होना** (लाभ ही लाभ होना)–जब से सुंदरलाल ने नया व्यवसाय शुरू किया है, उसकी चाँदी हो गई है।

110. **चादर तानकर सोना** (निश्चिंत हो जाना)–परीक्षा समाप्त होते ही करण चादर तानकर सो गया है।

111. **चार सौ बीस होना** (धोखेबाज़ होना)–पड़ोसी रामदीन का विश्वास मत करना, वह तो चार सौ बीस है।

112. **चार चाँद लगाना** (अत्यधिक शोभा बढ़ाना)–ताजमहल इस देश की सुंदरता को चार चाँद लगाता है।

113. **चादर से बाहर पाँव पसारना** (आय से बढ़कर व्यय करना)–चादर से बाहर पाँव पसारने से कुछ नहीं होगा, थोड़ा तंगी में जीना सीखो।

114. **चिकनी-चुपड़ी बातें करना** (खुशामद करना)–मैं तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातों में आने वाला नहीं, अब तो अपना काम पूरा करके ही रहूँगा।

115. **चिकना घड़ा होना** (बेअसर होना)–आजकल के बच्चे चिकने घड़े होते हैं। उन पर किसी बात का कोई असर नहीं होता।

116. **चींटी के पर निकलना** (छोटे व्यक्ति का घमंड करना)–पैसे आते ही हलवाई प्यारेलाल भी सर चढ़कर बोलने लगा है, लगता है चींटी के पर निकल आए हैं।

117. **चुल्लूभर पानी में डूब मरना** (अत्यंत लज्जित होना)–चोरी करके तुमने ऐसा कार्य किया है कि तुम्हें चुल्लूभर पानी में डूब मरना चाहिए।

118. **चेहरा उतरना** (निराशा का अनुभव करना)–अपनी असफलता की खबर सुनकर उसका चेहरा उतर गया।

119. **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना** (घबरा जाना)–पुलिस को सामने देख चोर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

120. **चैन की बंसी बजाना** (आनंद से जीवन बिताना)–रिटायर होने के बाद अब वह चैन की बंसी बजा रहा है।

121. **चोली-दामन का साथ** (अत्यंत घनिष्ठता होना)–मोहन और सोहन इतने गहरे मित्र हैं कि उनका तो चोली-दामन का साथ है।

122. **छठी का दूध याद आना** (भारी संकट पड़ना)–अब तक पिता की कमाई पर ऐश करते रहे, जब खुद कमाना पड़ेगा तो छठी का दूध याद आ जाएगा।

123. **छक्के छुड़ाना** (साहस खोना)–भारतीय क्रिकेट टीम ने पाकिस्तानी टीम के छक्के छुड़ा दिए।

124. **छप्पर फाड़ कर देना** (बिना मेहनत के बहुत देना)–दुखी क्यों होते हो भगवान जब देगा तो छप्पर फाड़ कर देगा।

125. **छाती पर साँप लोटना** (ईर्ष्या होना)–सुरेश को कक्षा में प्रथम आया देख रमेश की छाती पर साँप लोटने लगा।

126. **ज़बान बदलना** (कही हुई बात से बदल जाना)–क्षत्रिय लोग कभी अपनी ज़बान से नहीं बदलते हैं।

127. **जान में जान आना** (मन को चैन मिलना)–दो घंटे से रमेश का इंतज़ार हो रहा था, उसे सही-सलामत घर आया देख सभी की जान में जान आ गई।

128. **जी चुराना** (काम से बचने के लिए बहाना बनाना)–रमेश सदा काम करने से जी चुराता है।

129. **जी-छोटा होना** (उत्साह कम होना)–बच्चों को उनके मनपसंद काम न करने देने से उनका जी छोटा होता है।

130. **जोड़-तोड़ करना** (उपाय करना)–सुधीर जोड़-तोड़ कर अपना घर चला रहा है।

ट–ढ

131. **टाँग अड़ाना** (हस्तक्षेप करना)–बड़े जब बात कर रहे हों तो बच्चों का बीच में टाँग अड़ाना अच्छी बात नहीं।

132. **टूट पड़ना** (सहसा आक्रमण कर देना)–राजपूत योद्धा अकबर की सेना पर टूट पड़े।

133. **टेढ़ी उँगली से घी निकालना** (शक्ति से कार्य सिद्ध करना)–यदि तुम अपना काम करवाना चाहते हो, तो कड़ाई से काम लेना होगा, बिना उँगली टेढ़ी किए घी नहीं निकलेगा।

134. **टेढ़ी खीर** (कठिन कार्य)–डॉक्टर बनना बड़ी टेढ़ी खीर है।

135. **ठेस लगना** (दुख होना)–जब कोई अपना धोखा देता है तो बड़ी ठेस लगती है।

136. **ठोकर खाना** (हानि उठाना)–उसे अपना काम स्वयं करने दो, ठोकर खाकर ही कुछ सीख पाएगा।

137. **ठोक बजाकर** (जाँच कर)–किसी भी व्यक्ति से ठोक बजाकर ही संबंध स्थापित करने चाहिए।

138. **डंके की चोट पर कहना** (खुलेआम कहना)–मैं डंके की चोट पर कह रहा हूँ कि मेरे भाई ने कोई बुरा काम नहीं किया है।

139. **डकार जाना** (हड़प लेना, ली हुई वस्तु वापस न करना)–मोहन का सौतेला भाई पिता के मरने पर सारी संपत्ति डकार गया।

140. **डूबते को तिनके का सहारा होना** (संकटग्रस्त व्यक्ति को कुछ सहायता प्राप्त होना)–इस संकट के समय में तुम्हारा साथ, मेरे लिए डूबते को तिनके का सहारा है।

141. **ढेर करना** (मार गिरा देना)–भारत की नौसेना ने दुश्मनों को ढेर कर दिया।

त–न

142. **तिलों में तेल न होना** (काम न होने की या कुछ मिलने की आशा न होना)–कपूत को चालाकी से रुपये माँगते देख माँ ने कहा कि इन तिलों में तेल नहीं है, जाकर अपना दाँव कहीं और लगाओ।

143. **तिल को ताड़ करना** (साधारण बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना)–मज़ाक को समझना सीखो, तिल को ताड़ करने की आवश्यकता नहीं।

144. तीन-तेरह होना (तितर-बितर होना)–वीर राजपूत सिपाहियों के सामने शत्रुओं की सेनाएँ तीन-तेरह हो गईं।

145. तूती बोलना (धाक बैठना)–भारतीय सैनिकों की हर जगह तूती बोलती है।

146. थूककर चाटना (बदल जाना)–थूककर चाटना राजपूतों की शान के खिलाफ़ है।

147. दाँत खट्टे करना (हराना)–भारतीय सेना के जवानों ने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिए।

148. दाँतों तले उँगली दबाना (आश्चर्य करना)–ताजमहल की भव्यता व सुंदरता को देखकर विदेशी भी दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं।

149. दाँत पीसना (क्रोध करना)–वह बेचारा दाँत पीसकर रह गया।

150. दाँत काटी रोटी होना (गहरी मित्रता होना)–शीला और सुषमा की क्या पूछते हो, उनकी तो आपस में दाँत काटी रोटी है।

151. दाल न गलना (काम न बनना)–मोहन दिनेश से एक बड़ी रकम हड़पना चाहता था, लेकिन उसकी दाल न गली।

152. दाल में काला होना (संदेह होना)–समय देकर वह अब तक नहीं आया, लगता है दाल में कुछ काला है।

153. दिमाग में भूसा होना (पूर्णतः मूर्ख होना)–दिमाग में भूसा होने के कारण ही रमा आठवीं कक्षा में दो बार फेल हो गई।

154. दूज का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखाई देना)–बहुत बार तुमसे मिलने का प्रयत्न किया लेकिन तुम मिले नहीं, तुम तो आजकल दूज का चाँद हो रहे हो।

155. धरती पर पाँव न पड़ना (अभिमान से भरा होना)–रजिया अपनी सुंदरता पर इतराती है। आजकल तो उसके धरती पर पाँव नहीं पड़ते।

156. धुन का पक्का (निश्चय पर स्थिर रहने वाला)–शीला अपनी धुन की पक्की है, इस बार कक्षा में अवश्य प्रथम आएगी।

157. नज़रों से गिरना (अप्रिय होना)–जब से आशीष नकल करते पकड़ा गया है, तभी से अध्यापकों की नज़रों में गिर गया है।

158. नमक मिर्च लगाना (बढ़ा-चढ़ाकर बात बताना)–रमा की बात का क्या विश्वास। वह हर बात नमक मिर्च लगाकर कहती है।

159. नाक कटना (बेइज्ज़ती होना)–बेटी घर से क्या भागी, दीनानाथ की तो नाक कट गई।

160. नाक पर मक्खी न बैठने देना (अपने ऊपर कोई संकट न आने देना)–दिव्या की सास तो कभी अपनी नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती।

161. नाक-भौं चढ़ाना (घृणा प्रकट करना)–आजकल बच्चों को होटल का खाना ही पसंद है। घर का खाना देखते ही वे नाक-भौं चढ़ाते हैं।

162. नाक में दम करना (बहुत परेशान करना)–कुछ शैतान बच्चों ने अध्यापक की नाक में दम कर रखा है।

163. नाक रगड़ना (बड़ी दीनता से प्रार्थना करना)–उसके बार-बार नाक रगड़ने पर मुझे उसे नौकरी देनी ही पड़ी।

164. नाकों चने चबाना (बहुत कठिन कार्य करना)–कक्षा में प्रथम आने के लिए कवींद्र को नाकों चने चबाने होंगे।

165. नानी याद आना (होश ठिकाने आ जाना)–देखने में तो आसान काम था, लेकिन पूरा करने में नानी याद आ गई।

166. नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना)–पुलिस की आहट पाते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।

प–म

167. पत्थर की लकीर (दृढ़)–वह कभी झूठ नहीं बोलता, उसने जो कुछ भी कहा उसे पत्थर की लकीर समझो।

168. पगड़ी उछालना (अपमानित करना)–अपनी बुरी आदतों के लिए अपने पिता की पगड़ी उछालना अच्छी बात नहीं।

169. **पलकें बिछाना** (प्रेमपूर्वक स्वागत करना)–अपने मेहमानों के स्वागत में पलकें बिछाना हम भारतीयों की संस्कृति में है।

170. **पहाड़ टूट पड़ना** (बड़ा संकट आना)–शेयर के भाव गिरते ही उस पर तो मानो पहाड़ टूट पड़ा हो।

171. **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** (अधिक लाभ होना)–लॉटरी खुलने के बाद तो जगत सिंह की पाँचों उँगलियाँ घी में हैं।

172. **पापड़ बेलना** (कठिन साधना करना)–इस पद तक पहुँचने के लिए उसे खूब पापड़ बेलने पड़े हैं।

173. **पानी में आग लगाना** (शांति को अशांति में बदलना)–यदि सास बहू मिल-जुलकर रह रही हों, तो पड़ोसिनें पानी में आग लगाने से बाज़ नहीं आतीं।

174. **पाला पड़ना** (सामना होना)–दिनेश को अब पता चलेगा बॉक्सिंग में अब की बार उसका अपने से अधिक शक्तिशाली प्रतियोगी से पाला पड़ा है।

175. **पानी-पानी होना** (लज्जित होना)–स्कूल में अपने बेटे की करतूतें देख माता-पिता पानी-पानी हो गए।

176. **पीठ दिखाना** (हारकर भागना)–वीर व्यक्ति लड़ाई के मैदान में कभी पीठ नहीं दिखाते।

177. **पेट में दाढ़ी होना** (कम उम्र में ही जानकार होना)–आजकल छोटे-छोटे बच्चों की बातें सुनकर हैरानी होती है? लगता है पेट में दाढ़ी लेकर पैदा होते हैं।

178. **पैरों तले ज़मीन खिसकना** (घबराहट भरी हैरानी)–चुनावी दंगल में अपनी पार्टी की करारी हार देखकर नेता जी के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

179. **पेट में चूहे कूदना** (जोर की भूख लगना)–सुबह से मैंने कुछ नहीं खाया, अब तो पेट में चूहे कूद रहे हैं।

180. **फूँक-फूँककर पैर रखना** (बहुत सोच-विचारकर काम करना)–ख़राब समय में कुशल व्यक्ति फूँक-फूँककर पैर रखता है।

181. **फूट-फूटकर रोना** (बहुत रोना)–अपने पिता की मृत्यु की खबर सुनकर वह फूट-फूटकर रो पड़ा।

182. **फूला न समाना** (अत्यंत प्रसन्न होना)–कक्षा में प्रथम आने की खबर सुनकर राकेश फूला न समाया।

183. **बहती गंगा में हाथ धोना** (अवसर का लाभ उठाना)–आज का हर नेता बहती गंगा में हाथ धोने की सोचता है।

184. **बट्टा लगाना** (कलंक लगाना)–तुम्हें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे कि तुम्हारे माता-पिता के नाम पर बट्टा लगे।

185. **बाएँ हाथ का खेल** (अति सरल कार्य)–इस विशाल पेड़ पर चढ़ना तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है।

186. **बाज़ी मारना** (आगे निकल जाना)–इस वर्ष कक्षा में सुरेश रमेश से बाज़ी मार गया।

187. **बाल-बाल बचना** (दुर्घटना होते-होते बच जाना)–रेल दुर्घटना में दुर्गा बाल-बाल बच गई।

188. **बीड़ा उठाना** (दृढ़ प्रतिज्ञा करना)–मैंने इस बार कक्षा में प्रथम आने का बीड़ा उठाया है।

189. **भाड़े का टट्टू** (पैसे लेकर काम करने वाला)– रमेश तो आजकल भाड़े का टट्टू बन गया है।

190. **भीगी बिल्ली होना** (डर से दुबकना)–अध्यापक को देखते ही वह भीगी बिल्ली बन गया।

191. **भूत सवार होना** (किसी काम के लिए हठ करना)–आजकल उसे पढ़ाई का भूत सवार है।

192. **भैंस के आगे बीन बजाना** (मूर्ख को उपदेश देना)–किसी अशिक्षित के सामने गीता का पाठ करना भैंस के आगे बीन बजाने के समान है।

193. **भौंह चढ़ाना** (नाराज़ होना)–भौंह चढ़ाने से क्या फायदा, जो कुछ भी है, वह कहकर अपनी बात खत्म करो।

194. **मक्खी मारना** (कुछ न करना)–मक्खी मारने के अलावा तुम्हें कोई काम नहीं।

195. **मुँह फुलाना** (रूठ जाना)–वह बिना कारण ही मुँह फुला लेता है।

196. **मुँहतोड़ जवाब देना** (पूरा-पूरा जवाब देना)-उसके प्रश्न का मैंने ऐसा मुँहतोड़ जवाब दिया कि वह एकदम चुप ही हो गया।

197. **मुट्ठी गरम करना** (रिश्वत देना)-आजकल भ्रष्टाचार इतना ज़्यादा फैल गया है कि बिना मुट्ठी गरम किए कोई काम ही नहीं होता।

य-ह

198. **रंग में भंग डालना** (बना बनाया खेल बिगाड़ देना)-लड़ाई करके उसने अच्छी भली पार्टी के रंग में भंग डाल दिया।

199. **रंग जमाना** (धाक जमाना)-अपनी मधुर वाणी से उसने महफिल में अपना रंग जमा लिया।

200. **राई का पहाड़ बनाना** (बढ़ा-चढ़ाकर बात करना)-उसकी तो आदत ही है, राई का पहाड़ बनाना।

201. **लकीर का फकीर बनना** (अंधविश्वासी होना)-इस आधुनिक युग में भी कुछ लोग लकीर के फकीर बने हुए हैं।

202. **लहू का घूँट पीना** (गुस्सा शांत करना)-अपनी वृद्ध माता के बर्ताव पर उसे गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन वह लहू का घूँट पीकर रह गया।

203. **लोहा मानना** (प्रभाव स्वीकार करना)-सभी राष्ट्र भारतीय सेनाओं की वीरता का लोहा मानते हैं।

204. **लोहे के चने चबाना** (कठिन काम करना)-एवरेस्ट पर चढ़ना लोहे के चने चबाना है।

205. **सिर उठाना** (विरोध करना)-पाकिस्तान आजकल हिंदुस्तान के सामने बहुत सिर उठा रहा है।

206. **सिर नीचा होना** (अपमानित होना)-कुपुत्र के कारनामों से माता-पिता का सिर नीचा हो गया।

207. **सूर्य को दीपक दिखाना** (प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना)-राजीव गांधी के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है।

208. **हक्का-बक्का रह जाना** (आश्चर्यचकित हो जाना)-उसके घर की चकाचौंध देखकर मैं तो हक्का-बक्का रह गया।

209. **हाथ धोकर पीछे पड़ना** (बुरी तरह पीछा करना)-मुझे अपना काम उससे करवाना है, इसीलिए मैं उसके पीछे हाथ धोकर पड़ा हूँ।

210. **हाथ फैलाना** (याचना करना)-हाथ फैलाकर यदि जीवन में कुछ पाया तो वह व्यर्थ ही है।

211. **हाथ-पाँव फूल जाना** (डर जाना)-दरवाज़े पर आए मकान मालिक को देखकर किरायेदार के हाथ-पाँव फूल गए।

212. **हाथों-हाथ बिकना** (बहुत जल्दी बिकना)-सरस्वती हाउस की किताबें हाथों-हाथ बिक जाती हैं।

कुछ अन्य मुहावरे

1. **अंगारों पर पैर रखना** – जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।
2. **अन्न-जल उठना** – स्थान विशेष पर रहने का संयोग न होना।
3. **अपना राग अलापना** – अपने स्वार्थ की ही बातें करना।
4. **अपने पैरों पर खड़े होना** – स्वावलंबी होना।
5. **आँखें नीची होना** – लज्जित होना।
6. **आँखें ठंडी होना** – अत्यधिक शांति या प्रशंसा मिलना।
7. **ईश्वर को प्यारा होना** – मर जाना।
8. **कटे पर नमक छिड़कना** – दुखी व्यक्ति को और अधिक दुखी करना।
9. **गंगा नहाना** – बड़ा कार्य पूर्ण करना, कृतार्थ होना।

10. गोबर-गणेश होना – मूर्ख होना।
11. टोपी उछालना – किसी का अपमान करना।
12. ठंडा पड़ जाना – मर जाना, मंदा होना।
13. तारे गिनना – व्यग्रता से प्रतीक्षा करना।
14. तारे तोड़ लाना – बहुत बड़ा काम कर डालना।
15. तेली का बैल होना – हमेशा काम में लगे रहना।
16. दम तोड़ना – आखिरी साँस गिनना, मर जाना।
17. दाँतों में जीभ होना – चारों ओर विरोधियों के बीच घिरे रहना।
18. दाहिना हाथ होना – बहुत बड़ा सहायक होना।
19. दिमाग चाटना – अनावश्यक बोलकर परेशान करना।
20. दूज का चाँद होना – बहुत कम दिखाई देना।
21. धरती पर पाँव न पड़ना – अभिमान से भरा होना।
22. नमक हलाल होना – कृतज्ञ होना।
23. नाक रख लेना – इज्ज़त बचा लेना।
24. नींव का पत्थर होना – मुख्य सहायक होना।
25. पाँव में शनीचर होना – एक स्थान पर स्थिर न होना।
26. पारा उतरना – क्रोध शांत होना।
27. भूत सवार होना – कुपित होना, किसी काम के लिए हठ पकड़ लेना।
28. भौंह चढ़ाना – नाराज़ होना।
29. मगज़ चाटना – अनावश्यक बोलकर परेशान करना।
30. मीठी नींद सोना – निश्चिंत होकर सोना।
31. यमपुर पहुँचाना – मार डालना।
32. शर्म से पानी-पानी होना – बहुत लज्जित होना।
33. सड़क नापना – व्यर्थ में इधर-उधर घूमना।
34. सिर से पानी गुजर जाना – सहनशीलता की सीमा टूट जाना।
35. सूरज को दीपक दिखाना – अत्यधिक विद्वान व्यक्ति को कुछ बतलाना।
36. सूरज पर थूकना – समर्थ व्यक्ति का व्यर्थ में अपमान करना, निर्दोष को दोषी बताना।
37. सोने पर सुहागा होना – अच्छी चीज़ का और अच्छा होना।
38. हथियार डालना – पराजय स्वीकार कर लेना।

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के पाठों में आए मुहावरे

कविता के मुहावरे

पाठ-1 : साखी (कबीर)

1. आपा खोना (अहंकार समाप्त करना)–अपना आपा खोकर ही मनुष्य सहज जीवन जी सकता है।
2. अँधियारा मिटना (अज्ञानता दूर होना)–रामनाथ के जीवन से उस समय अँधियारा मिट गया जब उसने साक्षरता अभियान में हिस्सा लिया।

3. **मंत्र लगना** (उपाय काम आना)–एक बार बुरी लत लग जाने पर कोई भी मंत्र नहीं लग सकता।
4. **घर जलाना** (त्याग करना)–घर जलाकर देश की सेवा करना सबके बस की बात नहीं।

पाठ-2 : पद (मीरां)

1. **लाज रखना** (सम्मान की रक्षा करना)–अपने देश की लाज रखने के लिए प्रत्येक भारतीय सदैव तत्पर रहता है।

पाठ-3 : दोहे (बिहारी)

1. **व्यर्थ नाचना** (बेकार की भाग-दौड़)–कोई काम का काम करो। यूँ व्यर्थ नाचने से उद्‌देश्य में सफलता नहीं मिल जाएगी।

पाठ-4 : मनुष्यता (मैथिलीशरण गुप्त)

1. **बड़े-बड़े हाथ होना** (अधिक सामर्थ्य होना)–बड़े-बड़े हाथ होने से भी क्या फायदा यदि आप किसी के काम ना आ सको।
2. **बाहू बढ़ाना** (सहायता के लिए आगे आना)–जब भी देश पर विपत्ति आती है तो अनेक बाहू बढ़ाने से काम सरल हो जाता है।
3. **विपत्ति ढकेलना** (संकटों को दूर करना)–साहस रखने से विपत्ति को ढकेलना आसान होता है।

पाठ-5 : मधुर-मधुर मेरे दीपक जल (महादेवी वर्मा)

1. **पथ आलोकित करना** (सही रास्ता दिखाना)–हमारे अध्यापक सदैव हमारा पथ आलोकित कर हमें उन्नति की राह पर आगे बढ़ाते हैं।
2. **सिर धुनना** (पछताना)–अपने मूर्खता से जब सेठ जी को बहुत बड़ा घाटा लग गया तो वे सिर धुनकर रह गए।
3. **दिल जलना** (ईर्ष्या भाव जागना/मन में अत्यधिक पीड़ा देना)–अपने देश की दुर्गति देखकर देश-प्रेमियों का दिल जलता है।

पाठ-6 : तोप (वीरेन डंगवाल)

1. **धज्जे उड़ा देना** (समाप्त कर देना)–हिंदुस्तानी फ़ौज ने पाकिस्तानी फ़ौज के धज्जे उड़ा दिए।
2. **मुँह बंद होना** (शांत हो जाना/अस्तित्व समाप्त हो जाना)–वक्त की मार पड़ने पर बड़े-बड़े सुरमाओं के मुँह बंद हो जाते हैं।

पाठ-7 : कर चले हम फिदा (कैफ़ी आज़मी)

1. **साँस थमना** (मृत्यु आ जाना)–भीषण बाढ़ के दृश्य देखकर तो ऐसा लगने लगा मानो साँस थम जाएगी।
2. **सिर झुकना** (परास्त होना/शर्मिंदा होना)–प्रत्येक भारतवासी अपने देश का सिर कभी झुकने नहीं देगा।
3. **खून में नहाना** (मृत्यु का वरण करना)–हमारे वीर जवानों ने लड़ते हुए कभी हार को स्वीकार नहीं किया बल्कि वे खून में नहा गए।
4. **मौत से गले मिलना** (सहर्ष बलिदान होना)–देश को आतंकवादियों से छुटकारा दिलाने के लिए देश के सिपाही मौत से गले मिलने को भी तैयार रहते हैं।
5. **नए काफ़िले सजाना** (नए लोगों का समूह बनाना)–जीवन में आगे बढ़ते रहने और उन्नति करने के लिए नए काफ़िले सज़ाते रहना ज़रूरी है।
6. **सिर पर कफ़न बाँधना** (बलिदान के लिए तैयार रहना)–हमारे वीर सिपाही देश की सरहद पर सिर पर कफ़न बाँधकर गश्त लगाते रहते हैं।
7. **हाथ तोड़ना** (दुश्मन के हौसलों को खत्म करना)–जो भी देश के विरुद्‌ध हाथ उठाए उसके हाथ तोड़ने का साहस हमें रखना चाहिए।

कहानी के मुहावरे

पाठ-1 : बड़े भाई साहब

1. **पहाड़ के समान** (अत्यंत मुश्किल)–शिक्षिका के द्वारा दिया गया गृह-कार्य मुझे पहाड़ के समान लग रहा था।
2. **प्राण सूख जाना** (अत्यधिक डर जाना)–साँप को अपने सामने अचानक देख मेरे प्राण सूख गए।
3. **हँसी-खेल नहीं है** (साधारण काम नहीं है)–एवरेस्ट की चढ़ाई करना हँसी खेल नहीं है।
4. **ऐरा-गैरा नत्थू खैरा** (कोई भी व्यक्ति)–आजकल ऐरा-गैरा नत्थू खैरा हाथ में मोबाइल लिए घूमता है।
5. **आँखें फोड़ना** (रात-रात भर पढ़ना)–रात-दिन आँखें फोड़कर भी वह कक्षा में प्रथम न आ सका।
6. **लगती बातें कहना** (चुभती बातें कहना)–सास अपना बड़प्पन दिखाने के लिए बहू को लगती बातें कहती रहती है।
7. **सूक्ति-बाण चलाना** (नीति की बातें सीखाना/उपदेश देना)–छोटे से अपराध पर पिता ने ऐसे सूक्ति-बाण चलाए कि मैं नत-मस्तक हो गया।
8. **जिगर के टुकड़े-टुकड़े करना** (मन का उत्साह समाप्त करना)–अध्यापक की डाँट ने जिगर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।
9. **जान तोड़कर मेहनत करना** (अधिक मेहनत करना)–किसान जान तोड़कर मेहनत करके फसल उगाता है।
10. **साये से भागना** (बहुत अलग या दूर रहना)–गौतम क्रूर प्रकृति का है। मैं तो उसके साये से भी भागता हूँ।
11. **दबे पाँव आना** (छिपकर आना)–चोर ने दबे पाँव घर में प्रवेश किया।
12. **प्राण निकलना** (अत्यंत भयभीत होना)–गणित के अध्यापक को देखकर रमेश के प्राण निकल जाते हैं।
13. **घुड़कियाँ खाना** (डाँट डपट सहना)–बच्चों को अपने अध्यापकों की घुड़कियाँ खाने को मिले तो यह उनका सौभाग्य होता है।
14. **आड़े हाथों लेना** (कठोरतापूर्वक व्यवहार करना)–बदमाश बच्चों को आड़े हाथों लेना आवश्यक होता है।
15. **सिर पर नंगी तलवार लटकना** (सिर पर मौत मंडराना)–आज आतंकवाद के कारण ऐसा लगता है मानो सिर पर नंगी तलवार लटक रही है।
16. **दिली हमदर्दी होना** (हृदय से प्रेम होना)–राहुल अनाथ है और मुझे उससे दिली हमदर्दी है।
17. **घाव पर नमक छिड़कना** (दुखी व्यक्ति को और अधिक दुख देना)–एक तो मेरी पुस्तक चोरी हो गई और तुम हँसकर मेरे घाव पर नमक छिड़क रहे हो।
18. **खून जलाना** (बहुत मेहनत करना)–माता-पिता अपना खून जलाकर अपने बच्चों का लालन-पालन करते हैं।
19. **हेकड़ी जताना** (घमंड दिखाना)–कुछ लोग जाने-अनजाने हेकड़ी जताने से भी नहीं चूकते।
20. **हेकड़ी जताना** (शेखी मारना)–मैं उसे ऐसा सबक सिखाऊँगा कि हेकड़ी जताना भूल जाएगा।
21. **भाँप लेना** (पहचान लेना)–रवि के मन की कुटिलता को मैंने भाँप लिया था।
22. **तलवार खींच लेना** (लड़ने के लिए म्यान से तलवार बाहर निकाल लेना)–महाराणा प्रताप ने शत्रु को सामने देख तलवार खींच ली।
23. **टूट पड़ना** (भारी संख्या में पहुँचना)–प्रदर्शनी देखने के लिए भारी भीड़ टूट पड़ी।
24. **नामोनिशान मिटा देना** (अस्तित्व को समाप्त कर देना)–घमंड ने तो अच्छे-अच्छों का नामोनिशान मिटा दिया है।
25. **सिर फिर जाना** (बुद्धि ठिकाने न रहना)–अधिक धन आ जाने के कारण उसका सिर फिर गया है।
26. **चुल्लू भर पानी देने वाला** (कठिन समय में साथ देने वाला)–हर बच्चे का फर्ज़ बनता है कि वह अपने माता के अंतिम समय में उन्हें चुल्लू भर पानी दें।
27. **दीन-दुनिया से जाना** (कहीं का न रहना)–अपनी इन हरकतों को अगर नहीं छोड़ोगे तो दीन-दुनिया से जाने के लिए तैयार हो जाओ।
28. **अंधे के हाथ बटेर लगना** (निर्गुणी को कोई अमूल्य वस्तु अनायास प्राप्त होना)–रामनाथ अंगूठा छाप होने पर भी एम०एल०ए० बन गया। यह तो, अंधे के हाथ बटेर लगने जैसा है।

29. **दाँतों पसीना आ जाना** (अत्यंत मुश्किल काम करना)–पहाड़ को काटकर रास्ता बनाना दाँतों पसीना आने जैसा काम है।
30. **अंधा चोट निशाना पड़ना** (अचानक ही कोई चीज़ मिलना)–कक्षा में प्रथम आया देख सभी ने कहा कि सुमित का अंधा चोट निशाना पड़ गया।
31. **राह लेना** (पीछा छोड़ना, चले जाना)–मुझे तुम्हारी कोई सहायता नहीं चाहिए। जाओ तुम अपनी राह लो।
32. **पन्ने रँगना** (बेकार में लिखना)–सही उत्तर लिखो। खामखा पन्ने क्यों रँग रहे हो?
33. **हाथ से न जाना** (चूकना)–यह सुनहरा मौका हाथ से नहीं जाना चाहिए।
34. **शंब्द चाटना** (अच्छी तरह पढ़ना)–यदि पास होना है तो इस किताब का एक-एक शब्द चाट जाओ।
35. **मुठभेड़ होना** (सामना होना, कलह होना)–जब चंद्रशेखर आज़ाद से अंग्रेज़ों की मुठभेड़ हुई तो उसने उन्हें नाकों चने चबवा दिए।
36. **हाथ-पाँव फूल जाना** (परेशानी देखकर घबरा जाना)–अचानक सामने साँप को देखकर उसके हाथ-पाँव फूल गए।
37. **पैसे-पैसे को मुहताज होना** (बहुत गरीब और मजबूर होना)–व्यवसाय में घाटा लगने के बाद से अमीरचंद पैसे-पैसे को मुहताज हो गए हैं।
38. **मुँह चुराना** (शर्म के मारे बचना)–गलत काम करके मुँह चुराने से क्या फायदा! सच बोलकर मन की शांति वापस ले लो।
39. **बे-सिर-पैर की बातें करना** (असंगत और तर्कहीन बात करना)–आजकल के बच्चे बे-सिर-पैर की बातें करते हैं।
40. **ज़मीन पर पाँव न रखना** (ऐंठ या शेखी दिखलाना)–थोड़े पैसे क्या आ गए अब रामदीन ज़मीन पर पाँव नहीं रखता।
41. **गिरह बाँधना** (गाँठ बाँधना)–उसने अपने बड़ों की बातों को गिरह बाँध लिया है।
42. **नत मस्तक होना** (सम्मान करना)–मैं अपने गुरुजन को सामने देख नत मस्तक हो गया।
43. **जी ललचाना** (मुँह में पानी आना)–जब भी मैं सामने मिठाई देखता हूँ मेरा जी ललचाने लगता है।
44. **अपना रंग दिखाना** (विविध आचरण करना)–अब मेरा मित्र भी दूसरों की संगत में आकर अपना रंग दिखाने लगा है।
45. **सुध-बुध खोना** (बेसुध हो जाना)–अपने बेटे की दुर्घटना की ख़बर सुनकर माँ सुध-बुध खो बैठी।
46. **तंद्रा भंग होना** (गहरी नींद से जाग जाना/होश आना)–मस्ती में गाड़ी चला रहे विवेक के सामने अचानक बस आने पर उसकी तंद्रा भंग हो गई।
47. **विस्मित होना** (आश्चर्य चकित रह जाना)–माल्या को कक्षा में प्रथम स्थान पर देख सभी विस्मित हो गए।
48. **सुध-बुध खो देना** (होश-हवास न रह जाना)–स्वामी जी की बातें सुनकर उसने सुध-बुध खो दी।
49. **ठिठक जाना** (रुक जाना)–बिल्ली के रास्ता काटने पर वह ठिठक गया।
50. **किंकर्तव्यविमूढ़ होना** (असमंजस की स्थिति में पड़ जाना)–अचानक सामने साँप को देख वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया।

पाठ-2: डायरी का एक पन्ना

1. **रंग दिखाना** (असलियत सामने आना)–अभी कल ही तो तुम आए हो और अभी से रंग दिखाने लगे।
2. **टूट जाना** (निराश हो जाना)–तुम्हारे स्वार्थी स्वभाव से मेरा दिल टूट गया है।

पाठ-3: तताँरा वामीरो कथा

1. **आग बबूला हो उठना** (अत्यधिक गुस्सा होना)–अपने बेटे की करतूत देख माँ आग बबूला हो उठी।
2. **सुराग न मिलना** (सूत्र न मिलना)–सुराग न मिलने पर बड़े-बड़े अपराधी भी छूट जाते हैं।

3. **चक्कर खा जाना** (धोखा खा जाना)–हमशक्ल भाइयों को साथ-साथ देख कोई भी चक्कर खा जाता है।
4. **बाट जोहना** (इंतज़ार करना)–मैं अपने मित्र की सुबह से बाट जोह रहा हूँ।
5. **खुशी का ठिकाना न रहना** (बहुत प्रसन्न होना)–कक्षा में प्रथम आने पर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।
6. **आवाज़ उठाना** (विरोध प्रकट करना)–दहेज प्रथा के विरोध में हम सभी को मिलकर आवाज़ उठानी चाहिए।

पाठ-4: तीसरी कसम के शिल्पकार

1. **चेहरा मुरझाना** (उदासी छा जाना)–जब पिता ने रवि की माँग पर खिलौना लाकर नहीं दिया तो रवि का चेहरा मुरझा गया।
2. **दो से चार बनाना** (मुनाफ़ा करना)–एक अच्छा व्यापारी दो से चार बनाना भली-भाँति जानता है।
3. **आँखों से बोलना** (हाव-भाव से मन की बात बताना)–राधा मुँह से कम आँखों से अधिक बोलती है।
4. **ज़िंदगी नर्क हो जाना** (बुरी दशा हो जाना)–बुढ़ापे में बीमारी के कारण रामदीन की ज़िंदगी नर्क हो गई है।

पाठ-5 : गिरगिट

1. **मज़ा चखाना** (बदला लेना)–मुझसे बदतमीज़ी की तो ऐसा मज़ा चखाऊँगी कि तुम याद रखोगे।
2. **मत्थे मढ़ना** (ज़िम्मे लगाना)–सड़े-गले आम वह हमारे मत्थे मढ़ गया है।
3. **अपने रास्ते चलना** (अपने बंधे-सधे ढंग से आचरण करना)–तुम दुनिया को नहीं चला सकते, दुनिया अपने रास्ते पर चलती है।

पाठ-6 : अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले

1. **घर से बेघर करना** (घर से बाहर निकाल देना)–गरीबी ने मनोज को घर से बेघर कर दिया।
2. **मिट्टी में मिलाना** (बर्बाद करना)–कमल ने चोरी करके अपने परिवार की इज्ज़त मिट्टी में मिला दी।
3. **एकांत को शांत करना** (एकांत में सहारा बनना)–बुढ़ापे में दरवाज़े के बाहर खूँटे से बँधी गाय दीनानाथ के एकांत को शांत करती है।
4. **आँखों में आँसू आ जाना** (अश्रुपात होना)–भगवान श्री कृष्ण की लीला सुन वे इतना भाव-विभोर हो गए कि उनकी आँखों में आँसू आ गए।

पाठ-7 : पतझड़ में टूटी पत्तियाँ

1. **दुआ माँगना** (भलाई चाहना)–माँ हमेशा अपने बच्चों के लिए दुआएँ माँगती रहती हैं।
2. **सजग रहना** (चौकन्ना रहना)–हमें अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए।
3. **उलझन में पड़ना** (परेशानी में पड़ना)–वह दूसरों की लड़ाई के बीच बोलकर, उलझन में पड़ना नहीं चाहता।

पाठ-8 : कारतूस

1. **आँखों में धूल झोंकना** (भ्रमित करना)–चोर पुलिस की आँखों में धूल-झोंककर चला गया।
2. **मुट्ठी भर आदमी** (थोड़े से आदमी)–मुट्ठी भर आदमी भी सत्ता पलट सकते हैं।
3. **नफ़रत कूट-कूटकर भरी होना** (बहुत अधिक नफ़रत होना)–आतंकवादियों के लिए हम सभी के मन में नफ़रत कूट-कूटकर भरी है।
4. **काम तमाम कर देना** (मार देना)–दुश्मनों का काम तमाम करके ही सैनिक वापस लौटे।
5. **जान बख़्श देना** (घोर संकट से मुक्ति दिलाना)–अपहरणकर्ताओं ने बच्चे की जान बख़्श दी, इससे अधिक अच्छी बात और क्या हो सकती है।
6. **हक्का-बक्का खड़ा रह जाना** (आश्चर्य चकित हो खड़ा रहना)–अपने मित्रों में अचानक हुई लड़ाई को देख वह हक्का-बक्का खड़ा रह गया।
7. **कामयाब होना** (सफ़ल होना)–वह इस जंग से कामयाब होकर ही लौटेगा।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :**
पत्थर की लकीर, फूला न समाना, आँखें फेर लेना, अंगारों पर पैर रखना, आटे-दाल का भाव मालूम होना, उल्लू सीधा करना, कलेजा मुँह को आना, छठी का दूध याद आना, ठोक बजाकर, धुन का पक्का, पापड़ बेलना, बहती गंगा में हाथ धोना, बीड़ा उठाना, रंग में भंग करना, हाथ फैलाना।

2. **निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए उपयुक्त मुहावरे लिखिए :**
   1. प्रयत्न करना ....
   2. ललचाना ....
   3. साफ़ बच जाना ....
   4. हड़प लेना ....
   5. आरंभ करना ....
   6. डर से दुबकना ....
   7. भाग जाना ....
   8. मुग्ध होना ....
   9. मूर्ख को उपदेश देना ....
   10. हानि उठाना ....

3. **रंगीन अंशों के स्थान पर उचित मुहावरों का प्रयोग करके वाक्यों को फिर से लिखिए :**
   1. जब मैंने राम से घड़ी माँगी तो उसने **ऐन मौके पर मना कर दिया।**
   2. तुम उसे प्रार्थना-पत्र लिखने को कह रहे हो, वह तो **बिल्कुल अनपढ़** है।
   3. तुम समझदार बनो, साधारण **बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना** अच्छा नहीं।
   4. पुलिस की आहट पाकर **चोर नौ-दो ग्यारह हो गया।**
   5. हमारी अध्यापिका **बिना सोचे-विचारे किसी पर भी विश्वास कर लेती है।**
   6. **कठोर परिश्रम करके ही,** मज़दूर खाने के लिए पैसे जुटाता है।
   7. अचानक वर्षा आई और **बने बनाए काम को बिगाड़ गई।**
   8. तुम मेरा **ज़रा भी नुकसान नहीं कर सकते।**
   9. हमारे रहते तुम्हें **हानि पहुँचाने की चेष्टा** कोई नहीं कर सकता।
   10. **अति कठिन परिश्रम करके** उसने एक लाख रुपया कमाया।
   11. आज हर व्यक्ति **अवसर का लाभ उठाने** में लगा हुआ है।
   12. करण तो **पैसे लेकर काम करने वाला** है।
   13. किसी अशिक्षित के सामने गीता का पाठ करना **मूर्ख को उपदेश देने** के बराबर है।
   14. तुम्हारे लिए रुपये का महत्त्व होगा, मेरे लिए तो **तुच्छ वस्तु** है।

4. **निम्नलिखित मुहावरों का केवल अर्थ लिखिए :**

मुहावरे	अर्थ
1. हाथ बँटाना	....
2. फूला न समाना	....

3. दिमाग में भूसा होना ....

4. पहाड़ टूट पड़ना ....

5. डंके की चोट पर कहना ....

6. दाल में काला होना ....

7. पाँव उखड़ जाना ....

8. रंग में भंग पड़ना ....

9. उँगली पर नचाना ....

10. अँगूठा दिखाना ....

11. कोल्हू का बैल ....

12. गड़े मुर्दे उखाड़ना ....

5. निम्नलिखित शब्दों से प्रारंभ होने वाले मुहावरे लिखिए :

शब्द	मुहावरे
1. पगड़ी	....
2. सीना	....
3. पलकें	....
4. हाथ	....
5. कान	....
6. नाक	....
7. लाल	....
8. पैर	....
9. उँगली	....
10. सिर	....
11. पेट	....
12. उल्लू	....
13. नमक	....
14. पानी	....
15. दिमाग	....
16. धरती	....
17. पापड़	....
18. पहाड़	....
19. पत्थर	....
20. आँख	....

❑❑

अभ्यास प्रश्न-पत्र

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

1. शब्द और पद में क्या अंतर है? 2

2. (क) रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताइए : 1

वह बाज़ार गया और उसने फल खरीदे।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरित कीजिए : 2

(*i*) यदि परिश्रम करोगे तो पास हो जाओगे। **(संयुक्त वाक्य में)**

(*ii*) रमा बाज़ार गई और पुस्तक खरीद लाई। **(मिश्र वाक्य में)**

3. समस्त पद का विग्रह कर समास का भेद बताइए : 4

रसोईघर, तुलसीकृत, यथायोग्य, दशानन

4. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 2

1. दबे पाँव आना 2. सुध-बुध खो देना

5. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 4

(क) अनेकों लोग उस सभा में आए थे।

(ख) यहाँ ताज़ा गन्ने का रस मिलता है।

(ग) हम नहीं पढ़े हैं ये पुस्तकें।

(घ) राम, लक्ष्मण और सीता वन को गई।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–2

1. (क) शब्द कब पद बन जाता है? 1

(ख) रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 1

<u>वह</u> बाज़ार से <u>फल</u> लाई।

2. (क) निम्नलिखित वाक्यों को मिलाकर एक मिश्र तथा एक संयुक्त वाक्य बनाइए : 2

1. माता जी ने काम समाप्त किया।
2. घर में मेहमान आ गए।

(ख) रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताइए : 1

जो व्यक्ति परिश्रम करता है, उसे सफलता मिलती है।

3. समस्त पद का विग्रह कर समास का भेद बताइए : 4

घुड़सवार, पीतांबर, दशानन, विषधर

4. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 2

1. प्राण निकालना
2. आग बबूला हो उठना

5. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 4

(क) रोगी को काटकर सेब खिलाओ।

(ख) तुमने ऐसा क्यों करा?

(ग) वह पागल आदमी हो गया है।

(घ) वह लोग गाँव में है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–3

1. **शब्द और पद का अंतर स्पष्ट कीजिए।** 2

2. **(क) रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताइए :** 1

मैं नित्य व्यायाम करता हूँ और स्नान करता हूँ।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरित कीजिए : 2

1. बादल घिर आए और वर्षा होने लगी। (मिश्र वाक्य)
2. जो व्यक्ति धनी होते हैं वे हर चीज़ खरीद सकते हैं। (संयुक्त वाक्य)

3. **विग्रहों के समस्त पद बनाकर समास का नाम बताइए :** 4

घन के समान श्याम, भय से भीत, समय के अनुसार, विष को धारण करने वाले

4. **निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :** 2

1. जी तोड़कर मेहनत करना
2. प्राण सूख जाना

5. **निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए :** 4

(क) तुम्हारी तो अक्ल मर गई है।

(ख) आप कल मेरे घर आओ।

(ग) वह लोग गाँव में हैं।

(घ) सुधीर बड़ा कम खाता है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–4

1. **शब्द और पद का अंतर बताओ।** 2

2. **(क) रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताइए :** 1

वह मुंबई गया और उसने वहाँ जाकर नया व्यापार शुरू किया।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को मिलाकर एक संयुक्त और एक मिश्र वाक्य बनाइए : 2

सभा समाप्त हुई।

सब लोग चले गए।

3. **समस्त पद का विग्रह कर समास का नाम लिखिए :** 4

नीलगाय, हस्तलिखित, प्रधानमंत्री, कठपुतली

4. **निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:** 2

1. दुआ माँगना
2. कामयाब होना

5. **निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए :** 4

(क) आपका पिता कब आएगा।

(ख) सब नदी समुद्र में मिलती है।

(ग) अपने को कुछ नहीं चाहिए।

(घ) उन्होंने यह काम नहीं करा है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–5

1. शब्द और पद का एक-एक उदाहरण दीजिए। 2

2. (क) निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरण कीजिए : 2

(*i*) वह व्यक्ति बेईमान है और जल्द ही पकड़ा जाएगा। (मिश्र वाक्य में)

(*ii*) जैसे ही सूर्य उगा वैसे ही अँधेरा भागा। (संयुक्त वाक्य में)

(ख) रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताओ : 1

1. बिजली नहीं है इसलिए अंधेरा है।

2. मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं इंजीनियर बनूँ।

3. समस्त पद का विग्रह कर समास का नाम लिखिए : 4

देशभक्ति, रेलगाड़ी, देहलता, विषधर

4. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 2

1. टूट पड़ना

2. सिर पर नंगी तलवार लटकना

5. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 4

(क) आपकी स्वास्थ्य कैसी है?

(ख) मेरी काला घोड़ा खो गया।

(ग) मेरे को सब मालूम है।

(घ) तुम सबसे सुंदरतम हो।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–6

1. शब्द और पद की परिभाषा क्या है? 2

2. (क) निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरित कीजिए : 2

(*i*) जब शीला बाज़ार गई तो पुस्तक खरीद लाई। (संयुक्त वाक्य)

(*ii*) बादल घिर आए और वर्षा होने लगी। (मिश्र वाक्य)

(ख) रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताओ : 1

उस्मान वही आतंकवादी है जिसने बम फेंका था।

3. समस्त पदों का विग्रह कर समास का नाम बताइए : 4

पीतांबर, सेनानायक, विषधर, अमीर-गरीब

4. **निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:** 2

1. मज़ा चखाना 2. चेहरा मुरझाना

5. **अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए :** 4

1. सच में क्या तुम्हें प्रथम स्थान मिला है।
2. मैं जान बूझकर गलती कर बैठा।
3. मेरे को आपका काम बहुत पसंद है।
4. तुम्हारी तो अक्ल मर गई है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–7

1. **शब्द और पद का अंतर स्पष्ट कीजिए।** 2
2. **एक संयुक्त और एक मिश्र वाक्य का उदाहरण दीजिए तथा मिश्र वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए।** 3
3. **समस्त पद बनाकर समास का नाम बताइए:** 4

नीली है जो गाय, चुनाव के लिए आयोग, राजा और रंक, पीत के समान अंबर

4. **निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:** 2

1. अंधे के हाथ बटेर लगना 2. सिर पर नंगी तलवार लटकना

5. **निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए:** 4

1. इंदिरा गांधी भारत का प्रधानमंत्री थी।
2. पिता जी भजन कर रहा है।
3. मुझको पत्र नहीं लिखा जाता।
4. साहित्य और समाज में घोर संबंध है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–8

1. **शब्द तथा पद का अंतर स्पष्ट कीजिए।** 2
2. **(क) रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताइए:** 2

1. वह पढ़ा और सो गया।
2. जैसे ही अध्यापक आए वैसे ही विद्यार्थी खड़े हो गए।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरण कीजिए: 1

रहीम बोला। मैं कर्नाटक जा रहा हूँ। (मिश्र वाक्य में)

3. **समस्त पद का विग्रह कर समास का भेद बताइए:** 4

आश्चर्यचकित, भलामानस, यथासंभव, दोराहा

4. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए: 2

1. अंधे के हाथ बटेर लगना
2. भाँप लेना

5. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए: 4

1. एक फूलों की माला चाहिए।
2. वहाँ भारी भरकम भीड़ जमा थी।
3. राम और उसकी बहन तथा मोहन जाते हैं।
4. वसंत ऋतु अच्छा लगता है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–9

1. रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 2

कोई व्यक्ति आया है।

2. (क) मिश्र और संयुक्त वाक्य का एक-एक उदाहरण दीजिए। 1

(ख) निम्नलिखित वाक्य को मिश्र वाक्य में बदलिए: 2

राम बीमार है और वह स्कूल नहीं आएगा।

3. समस्त पद का विग्रह कर समास का नाम बताइए: 4

सत्याग्रह, कनकलता, दोराहा, चक्रधर

4. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 2

1. मुट्ठी भर आदमी
2. घर से बेघर करना

5. (क) निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 4

1. वह अच्छे आदमी नहीं हैं।
2. गाय काली चर रही है।
3. उनके पास बहुत सोने हैं।
4. तुमने क्या खाना है?

अभ्यास प्रश्न-पत्र–10

1. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए: 2

स्वतंत्रता दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है।

2. (क) रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए : 1

(*i*) वह आया और तुरंत चला गया।

(*ii*) जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों से एक मिश्र तथा एक संयुक्त वाक्य बनाइए : 2

अध्यापक विद्यालय में आए।

सब छात्र इकट्ठे हो गए।

3. समस्त पद का विग्रह करके समास का भेद बताइए : 4

तुलसीकृत, चरणकमल, राहखर्च, नीलगगन

4. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 2

1. सूक्ति-बाण चलाना
2. जी ललचाना

5. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 4

1. यहाँ लोग ईमानदार और उदार रहते हैं।
2. कौन आई है? देखो।
3. मुझको पत्र नहीं लिखा जाता।
4. रमा सबको बुलाई है।

❑❑

खंड-5

लेखन (IX–X)

अंक विभाजन

निर्धारित अंक : 25

1. अनुच्छेद-लेखन	– संकेत बिंदुओं पर आधारित विषयों एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े विषयों पर 80 से 100 शब्दों में (कक्षा-IX–X)	5
2. पत्र-लेखन	– (अनौपचारिक) कक्षा-IX (औपचारिक) कक्षा-X	5
3. चित्र-वर्णन	– (20-30 शब्दों में) कक्षा-IX	
सूचना-लेखन	– (20-30 शब्दों में) कक्षा-X	5
4. संवाद-लेखन	– (50 शब्दों में) कक्षा-IX–X	5
5. विज्ञापन-लेखन	– (25-50 शब्दों में) कक्षा-IX–X	5

1 अनुच्छेद-लेखन (Paragraph-Writing)

अनुच्छेद लिखते समय सीमित शब्दों में एक विषय से संबद्ध विचारों अथवा भावों को प्रस्तुत किया जाता है। अनुच्छेद-लेखन की कुछ विशेषताएँ होती हैं; जैसे-यह निबंध का सार नहीं है। यह अपने-आप में पूर्ण होता है। निबंध से भिन्न अनुच्छेद लिखते समय भूमिका बाँधने और निष्कर्ष देने की आवश्यकता नहीं होती। तात्पर्य यह है कि इसे लिखते समय किसी निश्चित ढाँचे में बँधने की अपेक्षा नहीं होती। दिए गए विषय को केंद्र में रखकर पूरे अनुच्छेद में उसी का विस्तार किया जाता है। अत: यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अनुच्छेद में अनावश्यक प्रसंग न हो। सभी वाक्य एक-दूसरे से जुड़े हुए और स्वाभाविक रूप से कथ्य का क्रमिक विकास करते हुए दिखाई देने चाहिए। अनुच्छेद में स्पष्टता और सजीवता लाने के लिए संगति एवं एकाग्रता आवश्यक है। सीमित आकार होने के कारण अनुच्छेद-लेखन में अनावश्यक विस्तार, अवांछित प्रसंग, बड़े उदाहरणों, लंबे उद्धरणों आदि के लिए स्थान नहीं होता।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अनुच्छेद लिखते समय :

1. आकार सीमित हो (लगभग 80-100 शब्द)।
2. एक केंद्रीय भाव या विचार का क्रमिक विस्तार हो।
3. अलंकारिकता तथा अनावश्यक शब्द-प्रयोग न हो।
4. भाषा में विषयानुरूप सहजता तथा प्रवाह हो। वैसे तो अनुच्छेद-पत्र, निबंध, संवाद तथा साहित्य की विविध विधाओं के अंग भी होते हैं, जहाँ अनुच्छेदों के बीच तारतम्य तथा क्रमबद्धता अपेक्षित होती है, परंतु यहाँ हम स्वतंत्र अनुच्छेद-लेखन की ही बात करेंगे। निबंध और अनुच्छेद के विषय एक से हो सकते हैं, किंतु उनकी प्रस्तुति भिन्न होती है।

अनुच्छेदों को मुख्य रूप से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है :

1. विचार प्रधान अनुच्छेद 2. वर्णन प्रधान अनुच्छेद 3. भाव प्रधान अनुच्छेद 4. कल्पना पर आधारित अनुच्छेद

अनुच्छेद-लेखन के नमूने

1. त्योहारों का जीवन में महत्त्व

संकेत बिंदु : • पर्व • त्योहार • मेले व यात्रा • त्योहार राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक • सामूहिक आनंद की अनुभूति • एक साथ एकत्र होने का संयोग • भावना के स्तर पर एकात्मकता • देश की धरती से जोड़ने वाले।

त्योहार किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना के मुखर अंग, स्वरूप एवं प्रतीक हुआ करते हैं। उनसे यह जाना जाता है कि कोई राष्ट्र, वहाँ रहने वाली जातियों, उनकी सभ्यता और संस्कृति कितनी अपनत्वपूर्ण, कितनी ऊर्जास्वित, जीवंत और प्राणवान है। त्योहारों के माध्यम से कोई जाति अथवा राष्ट्र अपने सामूहिक आनंद-भाव को भी उजागर किया करते हैं। एक ही दिन, एक ही समय, लगभग एक समान ढंग से मनाए जाने वाले त्योहारों का प्रभाव भी सम्मिलित ही दीख पड़ता है। इस कारण त्योहारों को सामूहिक स्तर पर की गई आनंदोत्साह की अभिव्यक्ति ही माना जाता है। त्योहारों का महत्त्व अन्य कई युक्तियों से भी समझा एवं देखा जा सकता है। ऐसे अवसर पर ये घर-परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों को समीप आने, मिल-बैठने, एक-दूसरे के सुख-आनंद को साँझा बनाने के सुयोग भी प्रदान किया करते हैं। इतना ही नहीं त्योहार कई बार जाति-धर्म या वर्गगत अलगाव की भावनाओं को भी समाप्त कर देने वाले प्रमाणिक हुआ करते हैं। त्योहार व्यक्तियों को परस्पर समझने-बूझने का अवसर तो देते ही हैं, भावना के स्तर पर परस्पर जुड़ने या एक होने का संयोग भी जुटा दिया

करते हैं। प्रत्येक त्योहार अपने भीतर कई प्रकार के आदर्श, मान एवं मूल्य भी संजोए रखता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि त्योहार और पर्व अपने मनाने वालों को उस धरती की सोंधी-सुगंधी के साथ जोड़ने का सार्थक प्रयास किया करते हैं कि जिस पर उन्हें धूमधाम से मनाया जाता है।

2. जन्माष्टमी

संकेत बिंदु : • पर्व कब और क्यों मनाया जाता है • पर्व का धार्मिक व आध्यात्मिक महत्त्व • पर्व को मनाने का तरीका • उपसंहार।

जन्माष्टमी का पावन पर्व योगीराज श्रीकृष्ण के जन्म देशी महीने की भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। श्री कृष्ण मथुरा राज्य के सामंत वासुदेव-देवकी की आठवीं संतान थे। एक आकाशवाणी सुनकर कि वासुदेव-देवकी के गर्भ से जन्म लेने वाला बालक ही अत्याचारी और नृशंस राजकुमार कंस की मृत्यु का कारण बनेगा, भयभीत कंस ने उन्हें काल-कोठरी में बंद कर दिया। वहाँ जन्म लेने वाली देवकी की सात संतानों को तो कंस ने मार दिया, लेकिन आठवीं संतान को अपने शुभचिंतकों की सहायता से वासुदेव ने अपने परम मित्र नंद के पास पहुँचा दिया। वहीं नंद, यशोदा की गोद में पला-बढ़ा और बाद में मथुरा पहुँच कर कंस का वध करके अपने माता-पिता और नाना उग्रसेन को कारागार से मुक्त करवाया। सो जन्माष्टमी का पावन पर्व इन्हीं की पवित्र स्मृति में, इनके किए कार्यों, प्रतिष्ठापित आदर्शों आदि के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए प्रायः सारे भारतवर्ष के हिंदू-समाज में मनाया जाता है। धार्मिक-आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोग अपने उद्धार और योगीराज श्रीकृष्ण की लीलाओं का शाश्वत अंग बने रहने के लिए सखा या सखी भाव से इनकी पूजा-उपासना किया करते हैं। इसके लिए वे राधा-कृष्ण की मूर्तियों का शृंगार कर, उन्हें छप्पन प्रकार के भोग लगाकर उनके सामने भजन-कीर्तन, नृत्य-गायन किया करते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से श्रीकृष्ण ने अपने श्रीमुख से जिस गीता का प्रवचन दिया था, उसका पाठ किया करते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति और भक्ति-भाव से भरे लोग इस दिन व्रत किया करते हैं। सारे दिन पूजा-पाठ कर अद्र्धरात्रि के बाद लगभग रात बारह बजे के आस-पास जब बालकृष्ण का जन्म हुआ था, फलाहार खाकर अपना उपवास तोड़ते हैं और लोगों में प्रसाद बाँटते हैं।

3. होली

संकेत बिंदु : • होली का आगमन • होली का ऐतिहासिक महत्त्व • होली का सांस्कृतिक महत्त्व • होली कैसे मनाएँ • होली मिलन का त्योहार।

होली का त्योहार फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस समय ऋतुराज वसंत का स्वागत करने के लिए प्रकृति अपनी अपूर्व सुंदरता उड़ेल देती है। कहा जाता है कि राक्षसों के राजा हिरण्यकश्यप ने अपने-आप को ईश्वर कहलाने के लिए अपने ही बेटे प्रहलाद को अपनी बहन होलिका की गोद में बैठाकर अग्नि के हवाले कर दिया था। होलिका को यह वरदान मिला था कि अग्नि उसे जला न सकेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। होलिका जल गई और प्रहलाद बच गया। किसानों के लिए होली का विशेष महत्त्व है। मार्च के महीने में अधपके अनाज के बालों की आहुति दे वह अग्नि देवता को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है। होली का त्योहार बिल्कुल अनोखा है। होली के दिन, रात को लकड़ी व उपलों के ढेर में आग लगाई जाती है। लोग खुशी से नाचते हैं। अगले दिन 'दुलैहड़ी' मनाई जाती है। प्रातःकाल से ही सभी मिलकर फाग खेलते हैं। इस दिन धनी-निर्धन, ऊँच-नीच सभी का भेदभाव जाता रहता है। सायंकाल स्थान-स्थान पर विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। वस्तुतः होली एक पर्व ही नहीं अपितु एक पुण्य-पर्व है। इस दिन अपार हर्ष के बीच सभी लोग बैर-विरोध तथा भेदभाव छोड़कर गले मिलते हैं। अपनी पुरानी गलतियों को भुलाकर वे पुनः मित्र बन जाते हैं।

4. नवरात्र

संकेत बिंदु : • देवी का प्रताप • साल में दो बार नवरात्र • नवरात्र मनाने की विधि • बंगालियों में दुर्गा पूजा • देवी की महिमा व उसके मंदिर।

सचमुच देखा जाए तो दुर्गा देवी विश्व की सबसे पहली आदिशक्ति मानी जाती हैं। देवी भागवत पुराण में भगवती दुर्गा के यश और पराक्रम का विस्तार से वर्णन है, जिसे पढ़कर मनुष्य श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है। भागवत पुराण पढ़ने से नास्तिक से नास्तिक व्यक्ति भी देवी का परम भक्त और आस्तिक बन जाता है। वर्ष में दो बार नवरात्र आते हैं। एक तो चैत्र शुक्ल पक्ष में और दूसरे आश्विन शुक्ल पक्ष में। इन दोनों नवरात्रों के प्रथम दिन प्रतिपदा को भक्त लोग दुर्गा भगवती के मंदिरों में अथवा अपने-अपने घरों में दुर्गा देवी का कलश स्थापित करते हैं; जौ बोए जाते हैं और दुर्गा भगवती का आह्वान एवं विस्तार से पूजन-ध्यान किया जाता है। दुर्गा सप्तशती नामक संस्कृत पुस्तक का प्रतिदिन पूरा पाठ किया जाता है। इस धर्मग्रंथ के पठन-पाठन से धार्मिक भावना जागृत होती है। कई भक्त लोग तथा माताएँ बहनें इन पूरे नौ दिनों में माँ दुर्गा का व्रत रखती हैं तथा केवल एक बार फलाहार करती हैं। दुर्गा अष्टमी का त्योहार बंगालियों के लिए बहुत बड़ा पर्व समझा जाता है। वे नवरात्रों से पूर्व ही दुर्गा के नौ नामों के आधार पर मृत्तिका की बड़ी सुंदर नौ मूर्तियाँ बनवाते हैं, जो देखते ही बनती हैं। भक्त लोग उन मूर्तियों का नौ दिन पूजन करते हैं। दशमी के दिन इन मूर्तियों का जुलूस निकाला जाता है। इस जुलूस में वे लोग देवी का गुणगान एवं भजन-कीर्तन करते हैं और अंत में बड़ी श्रद्धापूर्वक उन मूर्तियों का नदी में विसर्जन कर देते हैं।

5. वाह! क्या मेला था वह

संकेत बिंदु : • मेलों का महत्त्व • मेला जो मैंने देखा • प्रिय क्यों? • क्या किया?

मेले सामाजिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। ये एकरस जीवन में सरसता प्रदान करते हैं और तनावमुक्त करके मन को प्रसन्नता प्रदान करते हैं। अन्य लोगों से मिलने का और अपनी संस्कृति को पहचानने का ये अच्छा अवसर प्रदान करते हैं। भारत तो है ही मेलों का देश। अनेक छोटे-बड़े मेले यहाँ लगते ही रहते हैं, लेकिन जिस मेले का मैं पूरे वर्ष इंतज़ार करता हूँ, वह है मेरे घर के पास ही लगने वाला दशहरे का मेला। इस बार का मेला भी मेरे लिए हमेशा की तरह आनंददायक था। रामलीला देखने का अवसर तो मिला ही, तरह-तरह के झूले झूलने का मुझे बड़ा मज़ा आया। ये झूले अप्पूघर के झूलों से मिलते-जुलते थे। मेरा छोटा भाई भी बड़े-बड़े झूलों पर मेरे साथ बैठता रहा। इस बार आकर्षण के केंद्र थे-कुछ व्यक्ति जो शिवजी, राम जी आदि का वेश बनाए मूर्तिवत् खड़े थे। हम उन्हें देखकर आश्चर्यचकित थे कि बिना पलक झपकाए वे इतनी देर तक कैसे खड़े रह सकते थे। कुछ लोग उन्हें छूकर भी देख रहे थे कि ये आदमी हैं या मूर्ति। मेले में चाँदनी चौक के हलवाइयों ने अपनी दुकानें सजाई थीं। खाने की जितनी चीज़ें मैं सोच सकता था, वे सब वहाँ मौजूद थीं। खाते-खाते मेरा पेट भर गया, पर मन नहीं भरा। घूमते हुए कई मित्रों से भी हमारा मेल हुआ। साथ-साथ घूमने का आनंद ही कुछ और था। वाह! क्या मेला था वह। उसकी याद मैं अपने मन में सँजोए हूँ, अगले मेले की प्रतीक्षा में।

6. यात्रा जिसे मैं भुला नहीं पाता

संकेत बिंदु : • कहाँ की यात्रा • विशेष घटना का वर्णन • अविस्मरणीय क्यों?

सर्दियों का मौसम था और हम ट्रेन से मंसूरी जा रहे थे। शायद हमें बर्फ़ गिरती हुई देखने को मिल जाए-यह उत्सुकता हमारे मन में थी। हम देर रात तक तरह-तरह के खेल खेलते रहे और फिर सो गए। जैसे ही सोए गाड़ी एक झटके से रुक गई। जो नीचे की बर्थ पर थे, वे लुढ़क कर नीचे गिर गए। ऊपर की बर्थ वालों को भी हलकी चोट आई। पता लगा कि किसी ने अचानक चेन खींच दी थी। कोई चोर था जो एक बैग चुराकर भाग रहा था। लगभग 15-20 मिनट रुककर गाड़ी

फिर आगे बढ़ी। अब तो हमारी नींद गायब हो चुकी थी। सुबह हम देहरादून स्टेशन पर उतरे और वहाँ से बस से मंसूरी के लिए रवाना हुए। पता लगा कि रात से बर्फ़ गिर रही है और रास्ता कभी भी बंद हो सकता है। हम आधे रास्ते पहुँच गए थे। बस रुक गई, पता लगा कि एक पत्थर लुढ़ककर सड़क पर आ गया है, साथ ही बर्फ़बारी होने के कारण रास्ता बिल्कुल बंद हो गया है। कोई उपाय न था। एक पूरा दिन हमने यात्री बस में बिताया। बर्फ़ गिरती देखी तो सही मगर हम उसका आनंद न उठा पाए। जब तक मंसूरी पहुँचे इतना परेशान हो गए थे कि सोचा अब आनंद उठाने के चक्कर में फिर कभी इतनी परेशानी मोल न लेंगे। दो दिन वहाँ बिछी हुई बर्फ़ पर हम घूमते रहे और एक कभी न भुला सकने वाली यात्रा की याद को अपने मन में लेकर हम घर वापस लौट आए।

7. सहकारिता

संकेत बिंदु : • सहकारिता का अर्थ • सहयोग की भावना का महत्त्व • सहकारिता का जन्म • सहकारिता से लाभ • उपसंहार।

सहकारिता एक आंदोलन है। इसका अर्थ है मिल-जुलकर काम करना। यह तो जगजाहिर है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। बहुत-सी छोटी-मोटी मुश्किलों व परेशानियों का हल हम अकेले या परिवार के स्तर पर हल कर लेते हैं लेकिन जब हमारा सामना बड़ी मुश्किलों व समस्याओं से होता है तो उसमें अधिक बल, अधिक धन और अधिक समय की आवश्यकता पड़ती है। कहते हैं–बूँद-बूँद से सागर भर सकता है और राई-राई जोड़कर पर्वत। सहकारिता भी कुछ ऐसे ही विचार का नाम है। सच तो यह है कि बिना सहयोग के कोई व्यक्ति न तो विकास कर सकता है और न जिंदा ही रह सकता है। सहकारिता संगठन और सहयोग का वह प्रस्ताव है जिसका अच्छा परिणाम सुनिश्चित होता है। संगठित समूह को हर कार्य में सहायता मिलती है और कोई भी शत्रु चाहे वह व्यक्ति हो या परिस्थिति उसे अधिक नुकसान नहीं पहुँचा सकती। इसके विपरीत अकेले चलने वाले सदैव अपने लक्ष्य तक पहुँचने में नाकामयाब रहते हैं। एक आंदोलन और योजना के रूप में सहकारिता का जन्म सन् 1850 में जर्मनी में हुआ था। चारों ओर मच रहे हाहाकार में समितियों ने समस्या का इतना सुंदर समाधान किया कि लोगों को विश्वास हो गया कि सहकारिता ही उनका भाग्य बदल सकती है। भारत में 15 मार्च 1904 ई० को 'सहकारी साख समिति कानून' लागू किया गया। गाँवों में सहकारी समितियाँ स्थापित की गई। किसानों, दस्तकारों, कुटीर उद्योगों और दुकानदारों को इससे बहुत लाभ हुआ। भारत में सहकारिता आंदोलन का भविष्य उज्ज्वल है।

8. समाज सेवा

संकेत बिंदु : • समाज का महत्त्व • सेवा का महत्त्व • वास्तविक वीर व्यक्ति • इतिहास से उदाहरण • उपसंहार।

मनुष्य विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। यह एक सामाजिक प्राणी है। जन्म से मृत्यु तक इसका हर दिन समाज के सान्निध्य में बीतता है। वह समाज के रीति-रिवाज, भाषा, वेश-भूषा, खान-पान सबको अपना लेता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि समाज के बिना किसी बालक का व्यक्ति के रूप में विकसित होना संभव नहीं है। वह या तो मर जाएगा या पशु-तुल्य जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होगा। अत: समाज के प्रति हमारा कुछ कर्तव्य या ऋण बनता है, जिसे पूरा करना हमारा कर्तव्य बनता है। समाज-सेवा शब्द सुनने में मधुर लग सकता है। किसी व्यक्ति की सेवा करना आसान हो सकता है, लेकिन समाज की सेवा काँटों की सेज पर सोना है। सेवा का मार्ग अधिक कठिन होता है। सेवा करने का व्रत वही ले सकता है, जिसे मान-अपमान, हानि-लाभ, दुख और कष्ट की चिंता कतई नहीं। जो निष्काम भाव से सेवा करना चाहता है, वही समाज-सेवा कर सकता है। गीता का कर्मयोग यहाँ पूरी तरह खरा उतरता है। समाज की सेवा अपनी एक पद्धति होती है, उसकी अपनी एक शैली होती है। युगों से चली आ रही रूढ़ियाँ हैं। अंधविश्वास हैं, सांप्रदायिकता है, दृढ़धर्मिता है, परावलंबन की भावना है, जागृति

की कमी हैं। ऐसी परिस्थितियों में इन सबसे टक्कर लेकर समाज को सही रास्ते पर खींच लाना किसी वीर का ही कार्य हो सकता है। ऐसे महान समाजसेवी वीरों ने हमारे देश में जन्म लिया है। महर्षि दयानंद, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, बुद्ध, महावीर, मदर टेरेसा और भी न जाने कितने ऐसे नाम हैं जिन्होंने समाज-सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। हम सभी का भी यही धर्म और फर्ज़ बनता है कि हम अपने जीवन को समाज-सेवा में समर्पित कर दें।

9. पर उपदेश कुशल बहुतेरे

संकेत बिंदु : • दूसरों को उपदेश देना आसान • उपदेशक द्वारा कही गई बातों का अनुसरण • अपने-आप को उदाहरण बनाना अधिक कारगर।

दूसरों को उपदेश देने में तो बहुत-से लोग कुशल होते हैं, पर स्वयं उनका पालन करने वाले बहुत कम। अपने प्रतिदिन के जीवन में अनेक ऐसे व्यक्तियों से हमारा सामना होता है, जो हमें कुछ-न-कुछ सलाह दिया करते हैं। चाहे वह बातचीत के रूप में हो या मंच पर खड़े होकर भाषण के रूप में। पर ऐसे उपदेशों का प्रभाव तभी पड़ता है, जब व्यक्ति स्वयं भी उनका पालन करता हो। उपदेशक द्वारा कही गई बातों का अनुसरण अन्य व्यक्ति तभी आनंदपूर्वक करेंगे, जब वह स्वयं भी उसे आचरण में लाता हो। उपदेश देने के लिए तो सभी तैयार रहते हैं, परंतु जब तक वह जीवनानुभवों से जुड़ा न हो तब तक उसका प्रभाव नहीं पड़ता। मेघनाद वध के समय रावण द्वारा दिए गए नीति के उपदेशों के संबंध में तुलसीदास ने यह पंक्ति कही थी। उनके कथन निरर्थक थे, क्योंकि रावण स्वयं उनका पालन नहीं करता था। यदि मनुष्य अपने जीवन में भी उन उपदेशों को उतारे और अपने उदाहरण के माध्यम से दूसरों को शिक्षा दे, तो वह वास्तव में स्थायी और प्रभावी होगा।

10. नर हो न निराश करो मन को

संकेत बिंदु : • सफलता का आधार-आत्मविश्वास • संघर्ष में विजय • असंभव संभव • लक्ष्य प्राप्ति का एकमात्र आधार।

मनुष्य का बेड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह जिस ओर चाहे पार लगाए। शुक्ल जी की ये पंक्तियाँ हमें आत्मविश्वास न खोने की प्रेरणा देती हैं। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है, उसके पास मन है तो विवेक भी है। मन यदि भटकता है तो विवेक उसे सही राह दिखाता है। यही कारण है कि विकट-से-विकट परिस्थितियों में जो मनुष्य धैर्य नहीं खोता, हिम्मत नहीं हारता, वह अपने विवेक के बल पर अपने विश्वास को कभी कम नहीं होने देता। ऐसा ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है। जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य को निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे में यदि वह हार मान ले, निराश हो जाए तो सभी साधनों से संपन्न होते हुए भी उसकी स्थिति एकदम हीन हो जाती है। वह कभी सीधा खड़ा नहीं हो पाता, जबकि चित्त की दृढ़ता के बल पर मनुष्य असंभव को भी संभव बना देता है। जिसने अपने मन को जीत लिया, सफलता उसी के कदम चूमती है। आशावान व्यक्ति के सामने भाग्य भी घुटने टेक देता है। अपने मन में निराशा लाए बिना कर्म करने पर ही हम सारे संकल्पों को पूर्ण कर सकते हैं।

11. संतोष धन सर्वोपरि

संकेत बिंदु : • संतोष रूपी धन सर्वोपरि • कामना व इच्छाएँ कभी कम नहीं होतीं • संतोष रूपी धन पाने पर अन्य किसी धन की आवश्यकता नहीं • संतोष व्यक्ति को महान बनाता है।

संतोष रूपी धन के सामने अन्य सभी प्रकार के धन धूल के समान व्यर्थ हैं। मनुष्य के पास अनेक प्रकार के धन हो सकते हैं-सुख-सुविधाओं के रूप में, भोग-विलास की सामग्रियों के रूप में या पैसे के रूप में, परंतु इनमें से किसी भी प्रकार का धन मनुष्य को सच्चा सुख नहीं देता। इन सबको, विशेष रूप से धन को प्राप्त करने पर तृप्ति नहीं होती, बल्कि अधिकाधिक

प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न होती है। कामना कभी कम नहीं होती। चंचल मन कभी भी संतुष्ट नहीं होता। ईर्ष्या, लालसा और कामना की भावनाओं के कारण मनुष्य सदा असंतुष्ट रहता है और नैतिक मूल्यों को ताक पर रखकर गलत काम करने में भी नहीं हिचकिचाता। परंतु जब मनुष्य संतोष रूपी धन प्राप्त कर लेता है, तब उसे अन्य किसी प्रकार के धन की कामना नहीं रहती। जब संतोष आ जाता है, तो सारी इच्छाएँ और लोभ स्वयं समाप्त हो जाते हैं। संतोष आ जाने से ऐसी आनंदमयी दशा हो जाती है, जिसमें न ईर्ष्या होती है न द्वेष, न असंतोष होता है न अशांति, न लोभ होता है न लालच, जीवन बस सुखी, संतुष्ट, चिंतारहित हो आनंद से भरपूर हो जाता है। संतोष रूपी धन प्राप्त हो जाने पर अन्य सभी प्रकार के धन निरर्थक प्रतीत होते हैं।

12. मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

संकेत बिंदु : • धर्म और मज़हब का प्रभाव • आपसी समन्वय में धर्म का महत्त्व • भारत की धार्मिक सहिष्णुता।

मज़हब और धर्म जैसे शब्द अपनी मूल अवधारणाओं में अत्यंत पवित्र शब्द हैं। किसी भी मज़हब या धर्म के वास्तविक स्वरूप, आदर्श और आदेशों को सच्चे अर्थों में मानकर चलने वाला व्यक्ति अपनी अंतरात्मा में बड़ा ही पवित्र, उदार और उच्च भावनाओं से अनुप्राणित हुआ करता है। धर्म हमें सिखाता है कि हम किस प्रकार लड़ाई-झगड़ों से दूर रहकर आत्म-संस्कार के द्वारा प्राणिमात्र का हित करना चाहिए। स्वर्गीय शायर इकबाल ने भारत के स्वतंत्रता-संघर्ष के दिनों में सारी मानवता को यह संदेश दिया था कि:

"मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिंदी हैं हम वतन है, हिंदोस्तां हमारा"

इस संदेश को सुनकर सभी सच्चे मनुष्य, मज़हब या धर्म का वास्तविक अर्थ एवं महत्त्व समझने वाले जागरूक देशवासी सब प्रकार के भेद-भावों से ऊपर उठकर स्वतंत्रता-संग्राम में शामिल हो गए थे। इसी कारण हम स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल हो गए थे। यह सत्य है कि कोई मज़हब या धर्म आपस में बैर रखना, मानव-मानव में भेद-भाव करना, व्यर्थ के ईर्ष्या-द्वेष को बढ़ावा देना जैसी बातें कभी नहीं सिखाता। यह एक चिंतन एवं शाश्वत सत्य है। भारत की विशाल फुलवारी में अनेक मज़हबों, धर्मों, सभ्यता-संस्कृतियों के कितने-कितने फूल एक साथ खिलकर विश्व की भटकी मानवता के सामने प्रेम, भाईचारे और धार्मिक-सांस्कृतिक सहिष्णुता की सुगंध चारों ओर फैलाते हैं। आज जब देश के किसी भाग में मज़हब-धर्म के नाम पर झगड़े भड़क उठते हैं तो कलेजा टूक-टूक होने लगता है। आज हमें प्रेम और भाईचारे की भावना को बनाए रखने की आवश्यकता है।

13. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

संकेत बिंदु : • मन सभी प्रवृत्तियों का जनक • दृढ़ मन सफलता का आधार • संकल्पशक्ति का कारण।

शास्त्र और लोक दोनों में मन को समस्त स्थूल एवं सूक्ष्म इंद्रियों का स्वामी और नियंत्रक-निदेशक स्वीकारा गया है। इतना ही नहीं, शास्त्र तो मन को ही मनुष्यों की समूची गतिविधियों और अस्तित्व का मूलभूत कारण मानते हैं। वास्तव में मन ही वह तत्त्व है जिसमें मानव जीवन के संचालक, निर्णायक एवं ध्वंसक, सभी प्रकार के विचार जन्म लेते हैं। इस कर्म एवं संघर्षमय जीवन संसार में मानव जीवन की हार-जीत की कहानियाँ लिखने वाला असंदिग्ध रूप से मन ही है। दृढ़ मन साधनों से विरक्त होते हुए भी हार को जीत में परिणत कर दिया करते हैं। इसके विपरीत दुर्बल मन सब प्रकार के सुलभ साधनों से संपन्न होते हुए भी जीत को हार में बदलने के लिए विवश हो जाया करते हैं। इसी कारण मनीषी मन को संयमित रखने की बात चिरंतन काल से ही कहते आ रहे हैं, क्योंकि संयमित मन ही विकल्पों से मुक्त होकर कुछ करने का दृढ़ संकल्प ले सकता है। जब संकल्प दृढ़ होगा,

तो निश्चय ही साधनहीनता की स्थितियों में भी कोई-न-कोई साधन खोज ही लिया जाएगा। स्पष्ट है कि संसार केवल तलवार वालों का अर्थात् साधन-शक्ति संपन्न लोगों का ही नहीं हुआ करता, बल्कि संकल्प वालों का भी हुआ करता है। शारीरिक दृष्टि से दुर्बल एवं हीन होते हुए भी दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ऐसे-ऐसे कार्य कर जाया करते हैं कि उनकी असाधारणता पर विस्मय-विभोर होकर रह जाना पड़ता है। सामान्यत: साधारण प्रतीत होने वाले व्यक्ति भी अपनी संकल्प शक्ति के बल से भयावह तूफानों तक का मुँह मोड़ देने में सफल हो जाया करते हैं।

14. करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान

संकेत बिंदु : • उन्नति का मूल-मंत्र अभ्यास • सर्वत्र अभ्यास की आवश्यकता • महान लोगों के जीवन का आधार अभ्यास • निरंतर अभ्यास जीवन की साधना।

उन्नति और सफलता का मूल-मंत्र अभ्यास है। सफलता के लिए किया गया परिश्रम अभ्यास से ही फलित होता है। एक बार किया हुआ श्रम मनवांछित फल नहीं देता; बार-बार के अभ्यास से ही फल-सिद्धि होती है। चाहे निर्माण-कार्य हो, कला-कौशल को सीखना हो, किसी लक्ष्य तक पहुँचना हो अथवा विद्याध्ययन हो, सर्वत्र अभ्यास की आवश्यकता है। यहाँ तक कि प्रतिभावान व्यक्ति भी यदि अभ्यास न करे तो वह आगे नहीं बढ़ सकता। किसी भी रचना में परिपक्वता अभ्यास से आती है। अभ्यास के बल पर एकलव्य प्रखर धनुर्धर; कालिदास, वाल्मीकि और तुलसीदास महाकवि; बोपदेव संस्कृत-प्राकृत के समर्थ वैयाकरण, अमिताभ बच्चन शती के महान 'एक्टर' और कपिलदेव शती के महान 'क्रिकेटर' सिद्ध हुए। निरंतर अभ्यास जीवन में साधना का एक रूप है, जिसका सुख साधक को स्वत: मिलता है। किसी कवि का यह कथन बड़ा ही सार्थक है :

'करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान॥'

15. शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले

संकेत बिंदु : • साधारण मौत मरने और शहीद होने में अंतर • शहीद होना भाग्य की बात • शहीद का जीवन सुगंध फैलाने वाले फूल की तरह।

"वह जीव ही नहीं जिसमें प्रेम की भावना नहीं, मनुष्य तो हो ही नहीं सकता।" ऐसे विचार किसी महात्मा के हैं। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् माता तथा मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है, इस भावना को अपनाकर जो व्यक्ति देश की रक्षा में अपनी जान कुर्बान कर देता है वह अमर हो जाता है। अपने देश की रक्षा के लिए तन, मन, धन सर्वस्व न्योछावर करने वाले अपनी मातृभूमि के सच्चे सपूत हैं।

देश की आजादी और मातृभूमि की रक्षा के लिए जो स्वाभिमानपूर्वक अपने प्राणों को न्योछावर करते हैं, ऐसे लोग ही सच्चे शहीद कहलाते हैं। साधारण मौत और शहीदी मौत में बड़ा अंतर है। एक तो मरकर मिट जाते हैं और दूसरे मरकर अमर हो जाते हैं। साधारण मनुष्यों का जीवन संसार की भाग-दौड़ में ही खप जाता है, पर भाग्यशाली हैं वे लोग जो देश और समाज के काम आते हैं। सामान्य जीवन तो एक निर्गंध फूल-सा है जो उगता है और धूल में मिल जाता है, पर शहीद का जीवन एक ऐसा सुगंधित फूल है, जिसकी सुगंध सदियों तक देश के चमन को महकाती रहती है। शहीदों के प्रति कवि के ये भावपुष्प अर्पित हैं :

'मुझे तोड़ लेना वनमाली! उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।'

16. यदि फूल नहीं बो सकते, तो काँटे भी मत बोओ

संकेत बिंदु : • कथन भारतीय संस्कृति का सूचक • पशुओं का स्वभाव कष्ट देना • पर-पीड़ा अधम कार्य • प्रकृति से सीख।

क्षमा, सहनशीलता और परोपकार जैसे गुण हमारी भारतीय संस्कृति के मूल अंग हैं। हमारे सभी कर्म 'बहुजन सुखाय बहुजन हिताय' होने चाहिए। पर-पीड़ा को पाप माना गया है–ऐसा कर्म जो हमें ईश्वर से दूर ले जाता है। यह पशुओं का स्वभाव है कि वे बदला लेते हैं। अगर सर्प को छेड़ दिया जाए तो वह डसने के लिए उद्यत हो जाएगा, कुत्ते को पत्थर मारें तो वह भौंकता हुआ काटने को दौड़ेगा, पर यह तो मनुष्य का ही गुण है कि स्वयं कष्ट सहन करके भी वह दूसरों की सहायता करता है। हम स्वार्थ के वश होकर दूसरों को नुकसान पहुँचाने लगते हैं। अपने लाभ के लिए दूसरों का अहित करते हैं, क्योंकि हम अपने दुख से ज़्यादा दूसरों के सुखों से दुखी होते हैं और उसके सुख को कम करने की चेष्टा में लग जाते हैं; प्रकृति जिस प्रकार निरंतर परहित में लगी रहती है, उसी प्रकार हमें भी दूसरों के काँटे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यदि ऐसा न कर सकें तो कम-से-कम उनकी परेशानियों को बढ़ाना नहीं चाहिए।

17. दया धर्म का मूल है

संकेत बिंदु : • संसार के हर धर्म में दया और करुणा पर बल • परोपकार की भावना ही सबसे बड़ी मनुष्यता • कुछ दयालु महापुरुषों के उदाहरण • उपसंहार।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये जा घट तन में प्राण॥

अर्थात् धर्म हमें दया करना सिखाता है और अभिमान की जड़ में पाप-भाव पलता है। अतः हमें अपने शरीर में प्राण रहने तक दया-भाव को त्यागना नहीं चाहिए। संसार का प्रत्येक धर्म दया और करुणा का पाठ पढ़ाता है। हर धर्म सिखाता है कि जीव पर दया-भाव रखो और कष्ट में फँसे इंसान की सहायता करो। परोपकार की भावना ही सबसे बड़ी मनुष्यता है। यह एक सात्विक-भाव है। परोपकार की भावना रखने वाला न तो अपने-पराए का भेदभाव रखता है और न ही अपनी हानि की परवाह करता है। दयावान किसी को कष्ट में देखकर चुपचाप नहीं बैठ सकता। उसकी आत्मा उसे मजबूर करती है कि वह दुखी प्राणी के लिए कुछ करे। नानक, गांधीजी, जीसस, विवेकानंद, रवींद्रनाथ ठाकुर और न जाने ऐसे कितने ही संत हुए जिन्होंने अपनी दयाभावना से मानव-जाति के कल्याण की कामना करते हुए कर्म किए। इन्हीं लोगों के बल पर आज हमारा संसार तरक्की की राह पर आगे बढ़ा है। अगर कोई किसी पर अत्याचार करे या बेकसूर को यातना दे, तो हमारा कर्तव्य बनता है कि हम बेकसूर का सहारा बनें। न्याय व धर्म की रक्षा करना सदा से धर्म है। दया-भाव विहीन मनुष्य भी पशु समान ही होता है। जो दूसरों की रक्षा करते हैं, वे इस सृष्टि को चलाने में भगवान की सहायता करते हैं। धर्म का मर्म ही दया है। दया-भाव से ही धर्म का दीपक सदैव प्रज्वलित रहता है।

18. परतंत्रता एक अभिशाप

संकेत बिंदु : • परतंत्रता कष्टों को जन्म देने वाली • परतंत्रता आत्मा का हनन करती है • पराधीन व्यक्ति का विकास अवरुद्ध हो जाता है • सभी को स्वतंत्रता प्रिय।

पराधीनता दुखों एवं कष्टों की जननी है। पराधीन व्यक्ति के पास कितनी ही सुख-सुविधाएँ क्यों न हों, उसे सुख की अनुभूति नहीं होती, ठीक उसी प्रकार जैसे–सोने के पिंजड़े में बंद पक्षी सोने की कटोरी में भोजन पाने पर भी किसी प्रकार के सुख का अनुभव नहीं करता। उसे भूखों मरना पसंद है, पर परतंत्र रहना नहीं। पराधीन व्यक्ति सदैव दूसरों का मुँह ताका करता है, उसके पास स्वयं निर्णय का अधिकार नहीं होता, उसकी सोच उसकी अपनी नहीं होती। परिणामतः उसकी आत्मा का हनन होता जाता है, उसका आत्मसम्मान नष्ट हो जाता है, उसकी बुद्धि कुंठित होती चली जाती है, उसे विवेक का

ज्ञान नहीं रहता। जड़वत हो वह दूसरों की आज्ञा पालन करते हुए ही अपना जीवन बिताया करता है। इस प्रकार पराधीन मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास रुक जाता है। भाव एवं विवेक शून्य हो उसे अपमानित जीवन बिताना पड़ता है। पराधीनता की लज्जा का कलंक सदैव उसके माथे पर लगा रहता है और सपने में भी उसे सुख की प्राप्ति नहीं होती। चाहे पिंजरे में बंद चिड़िया हो या खूँटे से बँधी गाय, सभी को स्वतंत्रता प्रिय होती है।

19. भाग्य और पुरुषार्थ

संकेत बिंदु : • प्रकृति की देन पुरुषार्थ के बल पर प्राप्त • भाग्यवादी निष्क्रिय • पुरुषार्थी की विजय • पुरुषार्थ के बल पर भाग्य को बदला जा सकता है।

ईश्वर ने मनुष्य को सब कुछ प्रदान किया है, किंतु उसे आवरण में छिपा कर रख दिया। वह सब उसे कैसे प्राप्त हुआ–पुरुषार्थ के बल पर। अन्यथा सीप में मोती छिपे रह जाते, धरती के भीतर रत्न दबे रह जाते। न फसल उगती, न धरती सोना उगलती। भाग्यवादी तो केवल बैठा–बैठा मुँह ताका करता है। आलसी और निष्क्रिय होकर दैव–दैव पुकारता रहता है, जबकि पुरुषार्थी अपने कार्य के बल पर बड़े–बड़े संकटों पर विजय प्राप्त कर लेता है। अगर भाग्य कुछ होता भी है–मान लीजिए कि जो हमारे लिए तय कर दिया गया वह हमें प्राप्त होगा ही, तो उसके लिए भी तो हमें कार्य करना ही पड़ता है। शक्तिशाली एवं समर्थ सिंह को भी अपना शिकार पाने के लिए कर्म करना ही पड़ता है, शिकार स्वयं उसके मुख में प्रवेश नहीं करता। पुरुषार्थी एवं उद्यमी व्यक्ति अपने कर्म के बल पर भाग्य को भी बदल देने की क्षमता रखते हैं। विश्व की समस्त उन्नति एवं प्रगति का आधार मनुष्य का पुरुषार्थ ही है, भाग्य नहीं।

20. वाणी का महत्त्व : मधुर भाषण

संकेत बिंदु : • मधुर वाणी और मित्रता • थोड़ी–सी कड़वाहट द्वेष का कारण • कटु वाणी का प्रभाव।

बात करते समय किसी के मन को मोह लेने की मोहिनी शक्ति का नाम मधुर भाषण है। किसी की बड़ाई करते हुए लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति बात करता है तो मानो मिसरी घोल देता है। दूसरा व्यक्ति एक अन्य व्यक्ति की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि उसकी वाणी से तो मानो फूल झड़ते हैं। यह मिसरी घोलना और फूल झड़ना मीठी वाणी के ही संकेत हैं।

व्यक्ति द्वारा बोले गए मधुर–कोमल शब्द जहाँ मित्रता का विस्तार करते हैं, वहीं कटु–कठोर शब्द शत्रु–भाव बढ़ाते हैं। मनुष्य–मनुष्य का संबंध वस्तुओं के आदान–प्रदान पर उतना निर्भर नहीं करता जितना कि शब्दों के आदान–प्रदान पर करता है। व्यवहार में देखने में आता है कि अपने घर आए व्यक्ति के लिए यदि आप स्वागत के दो शब्द कह देते हैं, तो आपके द्वारा की गई साधारण अतिथि–सेवा भी उसे अच्छी ही लगेगी, किंतु यदि उसके खान–पान तथा रहन–सहन की समुचित व्यवस्था करने पर भी आप कुछ कड़वी–कठोर बात कर जाते हैं तो सारा करा–धरा व्यर्थ हो जाता है और सत्कार के स्थान पर आप उसके द्वेष के पात्र बन जाते हैं। मनुष्य के कटु–कठोर वचन कहीं–कहीं अत्यधिक अनिष्टकारी सिद्ध होते हैं। द्रौपदी के कड़वे वचन दुर्योधन के अंतःकरण में शूल–से जा गड़े और परिणाम महाभारत के रूप में सामने आया। सयाने लोग कहते हैं कि 'तलवार का घाव समय पर भर जाता है, पर वाणी का घाव कभी नहीं भरता'। इसलिए कबीरदास ने कहा कि:

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहुँ शीतल होय॥

21. संघर्ष ही जीवन है

संकेत बिंदु : • संघर्ष और जीवन एक–दूसरे के पूरक • जीवन के संघर्ष का आधार कर्म • संघर्ष से बचने वाला कायर।

संघर्ष का दूसरा नाम है–जीवन। ये एक प्रकार से पर्यायवाची हैं और एक–दूसरे के पूरक भी। जीना तो उसी का है, जिसने जीवन के सूत्र को समझ लिया, भयंकर से भयंकर और विपरीत स्थिति पर विजय पाने का एक ही रास्ता है–पूरे आत्मविश्वास के साथ बाधा–विरोधों से जूझ जाना, संघर्ष करना; जो संघर्ष से बचकर चले, वह कायर है। संसार रूपी

सागर की ऊँची-उफनती लहरों को जिसने चुनौती देना सीख लिया है, सफलता की अनुपम-मणियाँ उसी ने बटोरी हैं। जो डर कर किनारे बैठ गया, वह तो जीवन का दाँव ही हार गया। कबीर ने इसी भाव को इस तरह कहा है-'जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।' यह 'गहरे पानी' पैठकर खोजना क्या है? यही संघर्ष अथवा चुनौती को स्वीकारना है, कर्म की आँच में तपना है। यही 'गीता' का भी अमर संदेश है कि 'कर्म करना ही मनुष्य का अधिकार है और धर्म भी'। जीवन-पथ पर चाहे सफलता मिले या विफलता, संघर्ष करने का संकल्प शिथिल नहीं पड़ना चाहिए। एक कवि के शब्दों में :

जब नाव जल में छोड़ दी, तूफ़ान में ही मोड़ दी,
दे दी चुनौती सिंधु को, तो पार क्या, मझधार क्या।

जिसमें अपने उसूलों पर अटल रहने की दृढ़ता है, जिसका संकल्प सच्चा है, वही जीवन के संघर्ष में विजयी होता है। जीवन में विपत्तियाँ सभी को सहनी पड़ती हैं। जीवन में भले ही कितने संकट आए, परंतु जो व्यक्ति अपने मार्ग से विचलित नहीं होता, जो कष्टों का साहस से सामना करता है, जो यह मानता है कि कर्म ही जीवन है और यह मानकर सदा कर्म, प्रयत्न, परिश्रम, साहस और उद्योग में लगा रहता है, वस्तुतः उसी मनुष्य का जीवन सफल होता है।

22. संतोष धन

संकेत बिंदु : • जीवन में संतोष का अर्थ • जीवन में संतोष का आधार।

जीवन में जो-जैसा मिले उसी से प्रसन्न रहने का भाव संतोष है। यह जीवन का दैवीय गुण है, जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हितकर है। आज के आपाधापी के युग में संतोष का मूल्य और महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा, लूट-खसोट में लिप्त मनुष्य के पास प्रभूत भौतिक साधन हैं, फिर भी वह भीतर से कहीं अशांत रहता है। इसके विपरीत झोंपड़ी में रहते हुए भी वह यदि सीमित साधनों के बीच सहज जीवन जीता है तो वही संतोषी है और सच्चे अर्थों में सुखी भी वही है। संतोष तो वास्तव में मन की इच्छाओं की एक संतुलित अवस्था और परिधि है, जहाँ व्यक्ति किसी भी प्रकार उत्तेजित नहीं होता, क्रुद्ध या रुष्ट नहीं होता, किसी के प्रति आक्रोश या प्रतिकार का भाव उसके मन में नहीं रह जाता। तभी ऐसा व्यक्ति परिस्थितियों का दास नहीं बन पाता, बल्कि उन्हें अपने अधीन रखने में समर्थ हुआ करता है। अप्राप्त के लिए सचेष्ट एवं संघर्षशील रहकर भी संतोषी व्यक्ति कभी अराजक नहीं बन पाता, अतः उसके मन-जीवन में कुंठाएँ, हीनताएँ या अनास्थाएँ भी घर नहीं बना पाती। वह अलभ्य वस्तुओं के पीछे भागकर अपने समय, शक्ति, धन आदि का अपव्यय नहीं करता। संतोष में कर्महीनता का नहीं, अपितु कर्मशीलता का भाव है। जो कर्मशील है, वही सच्चे सुख-संतोष का अनुभव करता है। हमारे संतों ने संतोष को जीवन का सर्वोपरि धन मानकर उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। कवि रहीम का कथन है:

गोधन, गजधन, वाजिधन और रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान॥

23. साँच बराबर तप नहीं

संकेत बिंदु : • सत्य और सफलता का संबंध • सत्य और इतिहास • सत्य का महत्त्व।

संस्कृत की एक प्रसिद्ध उक्ति है-'सत्येन धारयते जगत' अर्थात् सत्य ही जगत को धारण करता है। व्यवहार में हम देखते हैं कि यदि कोई व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र बार-बार असत्य का सहारा लेता है तो वह अंततः अवनति को ही प्राप्त करता है; उसकी साख गिर जाती है और वह सार्वजनिक अवमानना का पात्र बनता है। असत्यवादी व्यक्ति यदि कभी-कभार सत्य-वचन भी कहे तो लोग उस पर विश्वास नहीं कर पाते। संसार के सभी धर्मोपदेशक और महापुरुष सत्य का गुणगान करते आए हैं। हमारे पौराणिक साहित्य में राजा हरिश्चंद्र की कथा आई है जिन्होंने सत्य की रक्षा के

लिए पत्नी, पुत्र और स्वयं को भी बेचने में संकोच नहीं किया था। महाभारत में सत्यवादी युधिष्ठिर के पुण्य प्रताप का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि उनका रथ पृथ्वी का स्पर्श नहीं करता था। महात्मा गाँधी ने सत्य पर जोर दिया। सत्य को एक महान तप माना गया है। जिस प्रकार तपस्वी को महान कष्ट झेलने पड़ते हैं, उसी प्रकार एक सत्यवादी भी विभिन्न शारीरिक–मानसिक कष्टों को झेलता है। झूठ एक बड़ा पाप है। संभव है कि इससे क्षणिक या तात्कालिक लाभ मिल जाएँ परंतु इसका परिणाम भयानक होता है। सत्यवादी व्यक्ति किसी अन्य प्रकार के साधन के बिना भी लोक में पूज्य और परलोक में मोक्ष का अधिकारी होता है, क्योंकि :

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप॥

24. सादा जीवन उच्च विचार

संकेत बिंदु : • प्रदर्शन और कृत्रिमता का युग • सीधे लोगों का मज़ाक • सादा जीवन अच्छे भाव को जन्म देता है • सुख शांति की प्राप्ति • चारों ओर अराजकता • सही जीवन के लिए सादा जीवन उच्च विचार आवश्यक।

आज का युग प्रदर्शन और कृत्रिमता का युग बनकर रह गया है। आज तड़क-भड़क को ही विशेष एवं अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है। तन पर पहनने वाले कपड़े हों या घरों-दफ़्तरों के उपकरण और उपयोगी सामान; सभी जगह प्रदर्शनप्रियता के कारण कोरी चमक-दमक का बोलबाला है। सादगी और सादे लोगों को अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता है। हमारे विचार से इसी का दुष्परिणाम पूरे समाज के नैतिक पतन, भ्रष्टाचार एवं आचारहीनता के रूप में सामने आ रहा है। 'सादा जीवन, उच्च विचार' अर्थात् सादगी भरा रहन-सहन, खान-पान और अन्य प्रकार के जीवन-व्यवहार बेहतर बनाने पर ही आदमी के मन में अच्छे भाव और विचार आ सकते हैं। वे सादगी भरे उच्च विचार ही व्यक्ति के जीवन को उच्च और महान बना सकते हैं। विचार और व्यवहार को उच्च बना लेने पर ही मनुष्य को उस वास्तविक सुख-शांति की प्राप्ति संभव हो सकती है, जिसकी खोज में वह दिन-रात मारा-मारा फिरता है और चारों ओर मार-धाड़ करता रहता है। तभी तो वह स्वयं बेचैन रहकर दूसरों को भी बेचैन करता है। आज चारों तरफ अराजकता और अशांति का राज है। असहिष्णुता और मार-धाड़ है लेकिन हमें स्वयं को अब सँभालकर रखने की आवश्यकता है। मनुष्य होने के नाते हमें जीवन की सामान्य आवश्यकता पूर्ति के उपकरण सहज भाव से पाकर जीने का अधिकार है। इस अधिकार को पाने का हमारे विचार से मात्र एक ही उपाय या रास्ता है–'सादा जीवन, उच्च विचार', अन्य कोई नहीं।

25. साहित्य और समाज

संकेत बिंदु : • साहित्य का निर्माण कैसे • मानव व साहित्य का संबंध • साहित्य का समाज के लिए महत्त्व • हिंदी साहित्य • साहित्य समाज का दर्पण है।

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है॥

मानव स्वभावत: क्रियाशील प्राणी है। चुपचाप बैठना उसके लिए संभव नहीं है। इसी प्रवृत्ति के कारण समाज में समय-समय पर क्रोध, घृणा, भय, आश्चर्य, शांति, उत्साह, करुणा, दया, आशा तथा हर्षोल्लास का प्रादुर्भाव होता है। साहित्यकार इन्हीं भावनाओं को मूर्त रूप देकर साहित्य का निर्माण करता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। बिना समाज के उसका जीवन नहीं और बिना उसके समाज की सत्ता नहीं। समाज का केंद्र मानव है और साहित्य का केंद्र भी मानव ही है। मानव समाज के बिना साहित्य का कोई स्थान नहीं। यह कहना गलत न होगा कि साहित्य और समाज का प्राण और

शरीर की भाँति अटूट संबंध है। साहित्य का जन्म समाज के बिना असंभव है और अच्छे समाज का जन्म बिना साहित्य के असंभव है। समाज को साहित्य से नवजीवन प्राप्त होता है और साहित्य समाज के द्वारा ही गौरवान्वित होता है। प्रत्येक साहित्य अपने युग से प्रवाहित होता है। साहित्य किसी भी समाज, देश और राष्ट्र की नींव है। यदि नींव सुदृढ़ होगी तो भवन भी सुदृढ़ होगा। साहित्य अजर-अमर है। वह कभी नष्ट नहीं होता।

26. भारतीय नारी

संकेत बिंदु : • पौराणिक युग में नारी का स्थान • द्वापर युग में नारी का स्थान • आधुनिक युग में नारी का स्थान • 21वीं सदी में नारी का स्वरूप।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, जग के सुंदर आँगन में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में॥

किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहाँ के नारी वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। जो राष्ट्र स्त्री को केवल भोजन पकाने एवं बच्चे पैदा करने का साधन समझते हैं, वे दुर्भाग्य से अभी सभ्यता, संस्कृति या शिष्टता की दौड़ में बहुत पीछे हैं। प्राचीन युग में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में समान रूप से भाग लेने की अधिकारिणी थीं। प्राचीन युग में नारी का बड़ा सम्मान था। द्वापर युग आने पर अविश्वास उत्पन्न हुआ। अनेक बंधनों में नारी बाँध दी गई। मध्यकाल में नारी को गुलाम और भोग्या बनाकर पतन की दिशा की ओर मोड़ दिया गया। सह-धर्मिणी के स्थान पर वह केवल दासी एवं वासना पूर्ति का साधन मात्र बन गई। आधुनिक काल में नारी ने हर क्षेत्र में विकास किया है। भारतीय संविधान में भी नर-नारी को समान अधिकार दिए गए। शिक्षित महिला वर्ग ने स्वयं पर्दे का त्याग किया। आज 21वीं सदी में नारी, पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर समाज के निर्माण में जुटी हुई है। संघर्षों में शक्ति-रूपा बनकर पुरुष को सहयोग दे रही है और उसकी प्रेरक शक्ति बनी हुई है।

27. मित्रता

संकेत बिंदु : • सच्ची मित्रता अनमोल धन • सच्ची मित्रता का महत्त्व • सच्ची मित्रता की पहचान • सच्ची मित्रता जीवन का वरदान।

मित्रता अनमोल धन है। इसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है। हीरे-मोती या सोने-चाँदी से भी नहीं। मैत्री की महिमा बहुत बड़ी है। सच्चा मित्र सुख और दुख में समान भाव से मैत्री निभाता है। जो केवल सुख में साथ होता है, उसे सच्चा मित्र नहीं कहा जा सकता। साथ-साथ खाना-पीना, सैर, पिकनिक का आनंद लेना सच्ची मित्रता का लक्षण नहीं। सच्चा मित्र तो दीर्घ काल के अनुभव से ही बनता है। सच्ची मित्रता की बस एक पहचान है और वह है-विचारों की एकता। विचारों की एकता ही इसे दिनोंदिन प्रगाढ़ करती है। सच्चा मित्र बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। जहाँ थाह न लगे, वही बाँह बढ़ाकर उबार लेता है। मित्रता करना तो आसान है, लेकिन निभाना बहुत ही मुश्किल। आज मित्रता का दुरुपयोग होने लगा है। लोग अपने सीमित स्वार्थों की पूर्ति के लिए मित्रता का ढोंग रचते हैं। मित्र जो केवल काम निकालना जानते हैं, जो केवल सुख के साथी हैं और जो वक्त पड़ने पर बहाना बनाकर किनारे हो जाते हैं, वे मित्रता को कलंकित करते हैं। मित्रता जीवन का सर्वश्रेष्ठ अनुभव है। यह एक ऐसा मोती है, जिसे गहरे सागर में डूबकर ही पाया जा सकता है। मित्रता की कीमत केवल मित्रता ही है। सच्ची मित्रता जीवन का वरदान है। यह आसानी से नहीं मिलती। एक सच्चा मित्र मिलना सौभाग्य की बात होती है। सच्चा मित्र मनुष्य की सोई किस्मत को जगा सकता है और भटके को सही राह दिखा सकता है।

28. स्वावलंबन

संकेत बिंदु : • स्वावलंबन सफलता है • न केवल जीवन की बल्कि देश की प्रगति में भी सहायक • स्वावलंबन अमूल्य धन है।

स्वावलंबन सफलता की कुंजी है। स्वावलंबी व्यक्ति जीवन में यश और धन दोनों अर्जित करता है। दूसरे के सहारे जीने वाला व्यक्ति तिरस्कार का पात्र बनता है। निरंतर निरादर और तिरस्कार पाता हुआ वह अपने-आप में हीन-भावना से ग्रस्त होने लगता है। जीवन का यह तथ्य व्यक्ति के जीवन पर ही नहीं, वरन समस्त मानव जाति व राष्ट्र पर भी लागू होता है। यही कारण है कि स्वाधीनता संघर्ष के दौरान गाँधीजी ने देशवासियों में जातीय गौरव का भाव जगाने हेतु स्वावलंबन का संदेश दिया था। चरखा-आंदोलन और डांडी कूच इस दिशा में गाँधीजी के बड़े प्रभावी कदम सिद्ध हुए। स्वावलंबन के मार्ग पर चलकर ही व्यक्ति, जाति, समाज अथवा राष्ट्र उत्कर्ष को प्राप्त होते हैं। स्वावलंबी व्यक्ति ही वास्तव में जान पाता है कि दुख पीड़ा क्या होती है और सुख-सुविधा का क्या मूल्य एवं महत्त्व, कितना आनंद और आत्मसंतोष हुआ करता है। संसार और समाज में व्यक्ति का क्या मूल्य या महत्त्व होता है, मान-सम्मान किसे कहते हैं, अपमान की पीड़ा क्या होती है, अभाव किस तरह से व्यक्ति को मर्माहत किया करते हैं। इस प्रकार की बातों का यथार्थ भी वास्तव में आत्मनिर्भर व्यक्ति ही जान-समझ सकता है। परावलंबी को तो हमेशा मान-अपमान की चिंता त्यागकर, हीनता के बोध से परे रहकर, इस तरह व्यक्ति होते हुए भी व्यक्तित्वहीन बनकर जीवन गुजारना पड़ता है। वास्तविकता यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने को दीन-हीन बनाए रखना नहीं चाहता। एक कवि के शब्दों में :

'स्वावलंबन की एक झलक पर न्योछावर कुबेर का कोष।'

29. परोपकार

संकेत बिंदु : • परोपकार का अर्थ • परोपकार एक मानवीय गुण • प्रकृति और परोपकार • इतिहास और परोपकार।

परोपकार का अर्थ है अपनी चिंता किए बिना, शेष सभी सामान्य-विशेष की भले की बात सोचना, आवश्यकतानुसार और यथाशक्ति हर संभव उपाय से भलाई करना। भारतीय सभ्यता-संस्कृति की आरंभ से ही यह विशेषता रही है कि इसने व्यक्ति से लेकर वर्ग तक अपने लाभ की चिंता छोड़कर परहित-साधन अर्थात् परोपकार की सीख दी है। ऐसी सीख उसने प्रकृति से प्रेरणा लेकर दी है, यह एक सर्वमान्य तथ्य है।

मनुष्य के कर्म की सुंदरता जिन गुणों में प्रकट होती है, उनमें परोपकार सबसे ऊपर है। दान, त्याग, सहिष्णुता, धैर्य, समता और ईश्वरीय सृष्टि का सम्मान करना आदि अनेक गुण परोपकार में आते हैं। प्रकृति हमें परोपकार का पाठ सिखाती है। सूर्य-प्रकाश व ताप, चंद्रमा-शीतलता, अग्नि-तेज, वायु-प्राण, पर्वत-वनस्पति व जड़ी-बूटियाँ और वृक्ष–हमें छाया और सरस फल प्रदान करते हैं। मनुष्यता की कसौटी परोपकार है। जगत-कल्याण के लिए शिव ने हलाहल पान किया; देवताओं की रक्षा के लिए दधीचि ने अपनी हड्डियाँ अर्पित कर दीं; महर्षि दयानंद, श्रद्धानंद और महात्मा गांधी ने परोपकार के लिए ही अपने प्राण न्योछावर कर दिए; सुकरात ने ज़हर पिया तो ईसा मसीह सूली पर चढ़ गए। प्रकृति का वरद पुत्र ऐसा करे भी क्यों न? प्रकृति का आदर्श जो उसके सामने है :

''बृच्छ कबहुँ नहि फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर॥''

30. आत्मविश्वास

संकेत बिंदु : • आत्मविश्वास क्या है? • आत्मविश्वास से लाभ • आत्मविश्वास का महत्त्व।

आत्मविश्वास मानव-चरित्र का मौलिक गुण तथा उसके जीवन-पथ का प्रबल संबल है। यह गुण मनुष्य को घर-परिवार व समाज के संस्कार से मिलता है तथा शिक्षण-अभ्यास से यह विकसित होता है। जो आत्मविश्वास का अलख जगाकर जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ता है, उसके समक्ष आपदाओं के पर्वत ढह जाते हैं और मंज़िल सदा उसकी प्रतीक्षा करती

रहती है। जिसके पास आत्मविश्वास का बल है, वह पराजय के क्षणों में भी विचलित नहीं होता, बल्कि नए संकल्प, नए उत्साह से आगे बढ़कर अंतत: विजय प्राप्त करता है। वस्तुत: आत्मविश्वास के अंकुर से प्रयत्न का पौधा उगता है और प्रयत्न के लहलहाते पौधे पर ही सफलता के मधुर फल लगते हैं। आत्मविश्वास मनुष्य को कठिन क्षणों में मुश्किलों और परेशानियों से जूझना सिखाता है। आत्मविश्वास मनुष्य के भीतर छिपी उस अपार शक्ति को बाहर निकालने में सहायक होता है जिसके बारे में व्यक्ति स्वयं नहीं जानता। यह मनुष्य के भीतर संघर्ष की भावना भरता है और कठिन-से-कठिन परिस्थितियों पर हावी होने की क्षमता का विकास करता है। आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति जीवन की कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है और बिना रुके आगे बढ़ते चले जाने की भावना का विकास करता है। किसी ने ठीक कहा है :

'मुर्दा वह नहीं जो मर गया है, मुर्दा वह है जिसका आत्मविश्वास मर गया है।'

31. वृक्षारोपण

संकेत बिंदु : • वृक्षों से लाभ • वृक्ष काटने से हानियाँ • भूमि संरक्षण में वृक्षों का योगदान।

वृक्ष प्रकृति की अनुपम देन हैं। ये पृथ्वी और मनुष्य के लिए वरदान हैं। किसी क्षेत्र विशेष में अनेक वृक्षों का समूह वन कहलाता है। वन हमारे लिए ईश्वर की सबसे विशिष्ट भेंट हैं। ये पृथ्वी और देश की सुंदरता बढ़ाते हैं। ये देश की सुरक्षा और समृद्धि में भी सहायक होते हैं। वृक्ष लगाना उसे पूजना उसकी सुरक्षा करने की महत्ता पुराने ज़माने से ही चली आ रही है। पुराणों के अनुसार, एक वृक्ष लगाने का उतना ही पुण्य मिलता है जितना दस गुणवान पुत्रों के सुयश से। आज सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम पेड़ों के इसी महत्त्व को भूलते चले जा रहे हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। वन काटे जा रहे हैं और उनके स्थान पर मैदान बनाकर बस्तियाँ बसाई जा रही हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव यह हो रहा है कि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने लगा है। वनों से मिलने वाले लाभ अब समाप्त हो रहे हैं। वनों से मिलने वाली इमारती लकड़ी, लाख, रबर, गोंद आदि भी कम हो गए हैं। वनों के अभाव में अनेक लोगों की रोजी-रोटी भी समाप्त हो गई है। वन भूमि का कटाव रोकने में सहायक होते हैं तथा नदियों की गति को नियंत्रित रखते हैं। वनों की बदौलत भूमि के उपजाऊ कण सुरक्षित रहते हैं लेकिन आज इन सभी चीजों का अभाव हो गया है। अत: आज अधिक-से-अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को सुरक्षित कर हमारे जीवन को खुशहाल बनाने की आवश्यकता है।

32. अनुशासन का महत्त्व

संकेत बिंदु : • अनुशासन का अर्थ • अनुशासन सफलता की कुंजी • प्रकृति में अनुशासन • समाज और राष्ट्र में अनुशासन।

अनुशासन का अर्थ है–आत्मानुशासन अर्थात् स्वत: प्रेरणा से शासित होना। प्रकृति के समस्त कार्य व्यापार अनुशासन की सूचना देते हैं। निश्चित समय पर सूर्योदय और सूर्यास्त का होना, पृथ्वी की दैनिक और वार्षिक गतियाँ, ऋतु परिवर्तन, ये सब नियमानुसार होते हैं। जब प्रकृति बाढ़, भूकंप आदि के रूप में अपना अनुशासन भंग करती है, तब प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। केवल प्रकृति ही नहीं अनुशासन की आवश्यकता प्रत्येक के लिए है। अनुशासनहीनता अराजकता को जन्म देती है और अराजकता देश और जाति को गुलाम बना देती है।

अनुशासन जीवन के विकास और सफलता की कुंजी है। प्रकृति भी एक अनुशासन में बँधी है। समय पर सूर्य उदित व अस्त होता है, एक क्रम से ऋतुएँ आती-जाती हैं, ज्वार-भाटा के बीच भी सागर मर्यादित रहता है, एक निश्चित गति से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, अनगिनत ग्रह-उपग्रह सौरमंडल में घूमते हैं। यदि एक क्षण के लिए भी यह व्यवस्था शिथिल हो जाए तो सृष्टि में महाप्रलय का दृश्य उपस्थित हो जाए। प्रकृति की यह बात व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पर भी लागू होती है। अनुशासनहीन व्यक्ति न तो अपना भला कर सकता है न समाज अथवा राष्ट्र का। समाज के नियमों को मानना

सामाजिक अनुशासन है। यदि इसका पालन न किया जाए तो सर्वत्र अराजकता फैल सकती है। युद्ध-क्षेत्र में तो अनुशासन का महत्त्व सबसे बढ़कर है। इतिहास साक्षी है कि सेना की एक अनुशासित छोटी टुकड़ी एक बड़ी टुकड़ी पर भारी पड़ जाती है।

'अनुशासन एक ओर बंधन है तो दूसरी ओर मुक्ति भी।'

33. श्रम का महत्त्व

संकेत बिंदु : • श्रम से सफलता • श्रम से ही कार्य की महत्ता • सफल व्यक्तियों के उदाहरण • अकर्मण्यता से असफलता • देश के विकास में महत्त्व।

'श्रम' ही संफलता का मूल मंत्र है। निरंतर परिश्रम ही किसी व्यक्ति, जाति या देश के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता–व्यक्ति की कर्म भावना ही उसे महान अथवा क्षुद्र बना देती है। संसार में अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ मनुष्य ने अपनी श्रमशीलता के बल पर सफलता के शिखर को छुआ है। लिंकन, गांधी, बोस आदि अनेक जाने-अनजाने नाम निरंतर लगन से श्रम करके ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाए हैं। सच ही कहा गया है–'उद्यमेन ही सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथै:'–केवल इच्छा करने मात्र से कभी लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती। सब प्रकार से समर्थ होने पर भी अगर आप अकर्मण्य रहे, तो विजय-पताका कभी न फहरा पाएँगे। अत: यदि हम स्वयं को और अपने देश को ऊपर उठाना चाहते हैं तो पुरानी बातों को भूलकर हम श्रम के महत्त्व को समझें। इससे भारत देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाने में हमें देर नहीं लगेगी।

उद्यमी या परिश्रमी लोग जो चाहें कर सकते हैं। महान विजेता नेपोलियन अपनी सेना के साथ देश-देश जीतता हुआ बाढ़ के पानी की तरह बढ़ा आ रहा था। आल्पस पर्वत को देखकर सैनिक रुके, लेकिन जब नेपोलियन 'कहाँ है आल्पस? मुझे तो कहीं नजर नहीं आता' कहते आगे बढ़ा, तो सभी सैनिक उसके साथ हो लिए। परिश्रम का रास्ता फूलों का नहीं काँटों का रास्ता होता है। श्रम और दृढ़ निश्चय के बल पर ही व्यक्ति असफलताओं और पराजयों को पीछे ढकेल सफलता और विजय को खींचकर ला सकता है।

34. समय का महत्त्व

संकेत बिंदु : • जीवन सफल और सार्थक कैसे बने • समय का महत्त्व न समझना नाश का कारण • समय राम के समान।

संसार में हमारा आना एक निश्चित समय के लिए ही होता है। क्षणों से निर्मित यह हमारा जीवन क्षण-क्षण बीतता जाता है और जीवन-लीला समाप्त हो जाती है। ईश्वर के द्वारा दिए गए इस अनमोल जीवन को हम एक क्षण भी बढ़ा नहीं सकते। अत: एक-एक पल अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अतएव इन पलों का सदुपयोग करते हुए जीवन को हम सफल-सार्थक बना सकते हैं। जो समय का मूल्य नहीं आँकता तथा उसे व्यर्थ नष्ट करता है, वह जीवन में कुछ नहीं बन पाता। कबीर के शब्दों में ऐसा व्यक्ति तो **'आया अनआया भया'**–जैसा हो जाता है। नीतिकारों का कथन है **'दीर्घसूत्री विनश्यति'**–अर्थात् समय पर काम न करने वाला स्वयं नाश को प्राप्त होता है। जो समय बीत गया सो बीत गया, वह लौटकर नहीं आता। **'गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।'** खोया धन पुन: अर्जित हो सकता है, खोई प्रतिष्ठा भी पुन: मिल सकती है, बिगड़ा स्वास्थ्य उपचार से सुधर-सँवर सकता है; पर समय का रत्न हाथ से निकल जाए तो लाख ढूँढ़ने पर भी कभी नहीं मिलता। घड़ी की निरंतर बढ़ती हुई सुइयाँ हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। समय बहुत शक्तिशाली है। यह किसी की प्रतीक्षा में रुका नहीं रहता। किसी ने ठीक ही कहा है कि समय और लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं। गया हुआ धन फिर से प्राप्त किया जा सकता है, परंतु जो समय हाथ से छूट गया, उसे फिर से प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो व्यक्ति समय की कद्र नहीं करता, समय उसकी कद्र नहीं करता। समय ने बड़े-बड़ों को मिट्टी में मिला दिया। इसी भाव को इन पंक्तियों में मुखरित किया गया है :

'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।'

35. दूरदर्शन

संकेत बिंदु : • दूरदर्शन का अर्थ व परिचय • दूरदर्शन की उपयोगिता • दूरदर्शन मनोरंजन का साधन • दूरदर्शन से हानियाँ।

विज्ञान आज निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। नित्यप्रति कोई न कोई अजूबा हमारे सामने आता है। टेलीविज़न यानी दूरदर्शन के आविष्कार ने भी हमें चकित कर दिया है। इसका आविष्कार ब्रिटेन के वैज्ञानिक जॉन एल० बेयर्ड ने किया था। जिन वस्तुओं, स्थानों और व्यक्तियों का वर्णन हमें किताबों और अख़बारों में मिलता था, वह सभी कुछ टेलीविज़न के पर्दे पर सुलभ हो गया। प्रत्येक वस्तु में अच्छाई और बुराई दोनों समायी हुई होती हैं। इसी प्रकार टेलीविज़न से भी लाभ और हानि दोनों ही हैं। उपयोगिता की दृष्टि से देखा जाए तो दूरदर्शन मनोरंजन और शिक्षा का उत्कृष्ट साधन है। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए तो यह एक वरदान के समान है। यह व्यक्ति के एकांत का साथी तथा दुख में एक अच्छा मित्र है। यदि इसकी अनुपयोगिता की ओर ध्यान दें तो हमें इससे होने वाली हानियों का भी पता चलता है। कुछ लोगों का मत है कि इसको अधिक देखने से विवेक के नष्ट होने तथा बुद्धि के कुंठित होने का भय रहता है। बच्चे इसे देखने में अपनी पढ़ाई-लिखाई को भूल जाते हैं और आँखों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। आज जिस तरह के कार्यक्रम दूरदर्शन पर दिखाए जा रहे हैं, उनसे युवा पीढ़ी के पथ-भ्रष्ट होने का एक नया साधन जुट गया है। सरकार को चाहिए कि ऐसे प्रसारणों पर रोक लगाए तथा दूरदर्शन पर मात्र शिक्षाप्रद तथा मनोरंजन से भरे कार्यक्रम ही प्रस्तुत करे।

36. विज्ञापन कला

संकेत बिंदु : • विज्ञापन का अर्थ • विज्ञापन के युग में आए परिवर्तन • आज के युग में विज्ञापन का महत्त्व • विज्ञापन का गलत प्रदर्शन व उपयोग।

विज्ञापन एक कला है। विज्ञापन का मूल तत्व यह माना जाता है कि जिस वस्तु का विज्ञापन किया जा रहा है, उसे लोग पहचान जाएँ और उसको अपना लें। शुरू-शुरू में घंटियाँ बजाते, टोपियाँ पहनकर या रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर विज्ञापन करने वालों द्वारा निर्माता अपनी वस्तुओं के बारे में जानकारी घर-घर पहुँचा देते थे। विज्ञापन की उन्नति के साथ समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविज़न का आविष्कार हुआ। इसी के साथ विज्ञापन ने अपना साम्राज्य फैलाना शुरू कर दिया। नगरों में सड़कों के किनारे, चौराहों और गलियों के सिरों पर विज्ञापन लटकने लगे। समाचार-पत्र, रेडियो-स्टेशन, सिनेमा के पट व दूरदर्शन अब इनका माध्यम बन गए। विज्ञापन के लिए भी विज्ञापन गृह एवं विज्ञापन संस्थाएँ स्थापित हो गईं। इस प्रकार इसका क्षेत्र विस्तृत होता चला गया। आज विज्ञापन को यदि हम व्यापार की आत्मा कहें तो अत्युक्ति न होगी। विज्ञापन व्यापार व बिक्री बढ़ाने का एकमात्र साधन है। देखा गया है कि अनेक व्यापारिक संस्थाएँ केवल विज्ञापन के बल पर ही अपना माल बेचती हैं। कुल मिलाकर विज्ञापन कला ने आज व्यापार के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है और इसलिए ही इस युग को विज्ञापन युग कहा जाने लगा है। विज्ञापन के इस युग में लोगों ने इसका गलत उपयोग करना भी शुरू कर दिया है। सच्चाई एवं ईमानदारी के अभाव में लोगों तक गलत विज्ञापन पहुँचाए जाने की प्रथा चल पड़ी है। अतएव सरकार को चाहिए कि ऐसे लोगों के प्रति कड़े-से-कड़ा व्यवहार कर इस कला को सुरक्षित रखने का प्रयास करे।

37. विज्ञान और स्वास्थ्य

संकेत बिंदु : • स्वास्थ्य जीवन के लिए वरदान • संतुलित आहार का ज्ञान • वस्त्रों का निर्माण • मशीनों का आविष्कार • विज्ञान विनाशकारी भी • विज्ञान सुरक्षा व सचेतना प्रदान करने वाला।

स्वास्थ्य के बिना जीवन, जीवन नहीं है और विज्ञान के बिना स्वास्थ्य असंभव है। विज्ञान स्वस्थ रहने के गुण बताता है; रोगी होने पर रोग का निदान कर स्वस्थ बनाता है। मृत्यु के मुँह में पहुँचे मानव को जीवन प्रदान करता है। हायजीन

विज्ञान की वह शाखा है, जो मानव-स्वास्थ्य की देखभाल करती है। स्वास्थ्य के लिए चाहिए पाचन क्रिया का ठीक होना। कारण, पाचन-क्रिया ठीक होगी तो वात, पित्त और कफ समान रूप से कार्य करेंगे। विज्ञान बताता है कि मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए संतुलित आहार लेना चाहिए। संतुलित आहार से तात्पर्य है-शरीर की संवृद्धि और विकास के पोषक तत्वों का सेवन। स्वास्थ्य के लिए चाहिए सर्दी, गर्मी और वायु की साम्यावस्था। इसके लिए भवन की आवश्यकता है। स्वास्थोपयोगी-भवन की विशेषता बताता है विज्ञान। दूसरी ओर चाहिए वस्त्र। गर्मी के लिए ठंडे और सूदयों के लिए गरम। सूती, रेशमी, ऊनी, टेरीलीन, नाइलॉन, पोलियस्टर, चमड़ा आदि के अनेक वस्त्रों की रचना विज्ञान की वह प्रक्रिया है, जो मानव के स्वास्थ्य को तापमान से सुरक्षित रखते हैं। प्रकृति की लीला भी निराली है। अत्यधिक गर्मी और अत्यधिक सर्दी को मानव सहन नहीं कर पाता। गर्मी से विह्वल होता है, तो सर्दी से ठिठुरता है। इसके लिए विज्ञान ने वातानुकूलन की व्यवस्था प्रदान की। शरीर आखिर शरीर है। बीमार होते क्या देर लगती है। सभी बीमारियों के लिए अनेक टेबलेट्स या लिक्विड इज़ाद किए गए हैं? ये सब विज्ञान की शाखा औषध विज्ञान की ही देन हैं। नगरों तथा महानगरों का मानव प्रदूषण से परेशान है। वाहनों से निकले धुएँ से उसका दम घुटता है। मल-मूत्र तथा कारखानों-मिलों के रासायनिक पदार्थों से युक्त नदी का जल मिलता है। कीटनाशक औषधियों से युक्त फल-सब्ज़ियाँ और अन्न खाने को मिलते हैं। पर यह सच है कि विज्ञान ने केवल मानव के ही नहीं अपितु पशु-पक्षी जगत के स्वास्थ्य को भी सुरक्षा, संवर्द्धना तथा सचेतना प्रदान की है।

38. इंटरनेट की दुनिया

संकेत बिंदु : • विज्ञान का चमत्कार • अद्‌भुत क्रांति • विभिन्न जानकारी का स्रोत • मनोरंजन का साधन • वरदान भी अभिशाप भी।

विज्ञान के बढ़ते चरण आज हमारे लिए ऐसे अनेक चमत्कार लेकर आए हैं, जिनके बारे में हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। आज दुनिया हमारी मुट्ठी में हो गई है। माऊस (चूहा) पर क्लिक कीजिए और सारी दुनिया आपकी आँखों के सामने आ जाएगी। विज्ञान के अद्‌भुत चमत्कारों में से एक कंप्यूटर भी है और कंप्यूटर में प्राप्त इंटरनेट की सुविधा तो अद्‌भुत है। इसने आज पूरे संसार को एक सूत्र में बाँध रखा है। आम लोगों के लिए यह अजूबे से कम नहीं है। इंटरनेट की सुविधा ने ज्ञान के क्षेत्र में अद्‌भुत क्रांति ला दी है। आसमान की सैर, समुद्र की गहराई का अध्ययन, धरती के भीतर छिपी कोई भी जानकारी यहाँ सहज ही उपलब्ध हो जाती है। आज किसी भी व्यक्ति को दुनिया के किसी भी कोने की कोई भी जानकारी चाहिए तो उसे इंटरनेट पर उपलब्ध हो जाती है। आज इंटरनेट पर देश-विदेश की जानकारी, ज्योतिष संबंधी जानकारी, खेल, संगीत, शिक्षा, फ़िल्म, मौसम, विवाह करवाने, नौकरी प्राप्त करने, टिकट बुकिंग (रेल तथा हवाई), होटल बुकिंग, खरीददारी सभी कुछ बड़ी ही सहजता से संभव हो जाता है। किसी भी विषय की जानकारी मात्र एक क्लिक से प्राप्त की जा सकती है। अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए, दूर बैठे लोगों से संपर्क साधने के लिए, अपने फोटो भेजने व मँगवाने के लिए, स्कूलों-कॉलेजों में दाखिले की जानकारी के लिए, अस्पताल की जानकारी के लिए, हर तरह की जानकारी के लिए इंटरनेट उपलब्ध है। इंटरनेट आज मनोरंजन और ज्ञान विस्तार का सबसे अच्छा साधन बन गया है। इन सभी सुविधाओं के साथ-साथ इससे फैलने वाली कुछ बुराइयाँ भी आज विस्तार पा रही हैं। इसका दुरुपयोग करने वाले कम भी नहीं हैं। वाइरस के माध्यम से दूसरों को नुकसान पहुँचाना, अश्लील तस्वीरें भेजना, गंदे-गंदे ई-मेल भेजना अब आम हो गया है। आतंकवाद को बढ़ावा देने में भी इसका पूर्ण प्रयोग किया जा रहा है। आज भारत के भिन्न-भिन्न शहरों में होने वाले 'सीरियल-ब्लास्ट' में भी इसका सहारा लिया जा रहा है। जिस प्रकार विज्ञान वरदान के साथ-साथ अभिशाप भी बन रहा है, उसी प्रकार आज इंटरनेट का सही प्रयोग वरदान और गलत प्रयोग अभिशाप बनता जा रहा है। अब मनुष्य को सोचना है कि वह वास्तव में चाहता क्या है?

39. मोबाइल फोन : सुविधा या असुविधा

संकेत बिंदु : • आवश्यक अंग • सहज जुड़ाव • ढेरों सुविधाएँ • दूसरों के लिए खतरा • सही रूप में प्रयोग आवश्यक।

विज्ञान का एक और वरदान मोबाइल फोन आज हर व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग बनता जा रहा है। हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि हम टेलीफोन को हाथ में लेकर भी घूम सकेंगे। आज यह सुविधा हमें आश्चर्यचकित करती है। दुनिया के किसी कोने में खड़े रहकर हम किसी से भी बात कर सकते हैं। अफसर से लेकर सड़क पर ठेला लेकर चलने वाला, सामान सिर पर लेकर चलने वाला कुली, हर कोई आज इस सुविधा का फ़ायदा उठा रहा है। बच्चे से लेकर बूढ़े व्यक्ति तक हर कोई मोबाइल फोन के जरिए अपने लोगों से सहज ही जुड़ा रहता है। घर देर से पहुँचना है, सड़क पर गाड़ी खराब हो गई है, कोई मित्र समय पर मिलने नहीं आ पा रहा है, अचानक कोई बीमार हो गया है, किसी भी तरह की परेशानी में मोबाइल फोन साथी के रूप में सदैव साथ रहता है। मोबाइल फोन हर उस व्यक्ति के साथ है, जो अपने-आप को अकेला समझता है। आप अपने लोगों से बड़ी ही कम कीमत पर जितना मन चाहे उतनी बातें आज कर सकते हैं। केवल बात करने की सुविधा ही नहीं, इस फोन से अन्य ढेरों सुविधाएँ प्राप्त हैं। घड़ी, कैलेंडर, अलार्म, तरह-तरह के गेम, फोन बुक, समाचार, चुटकुले, सभी तरह के संदेश सहज रूप से आप तक पहुँच सकते हैं। आज आप अपने सभी बिलों का भुगतान इससे पल भर में कर सकते हैं। अपने लिए रेल या हवाई जहाज़ की टिकट खरीद सकते हैं। मोबाइल फोन की एस०एम०एस० सुविधा आज सबसे सस्ती और सबसे तेज़ है। जहाँ इस सुविधा से लोगों को अपार फ़ायदा होता है, वहीं लोग इसका दुरुपयोग भी करते हैं। मोबाइल फोन पर कार चलाते समय बात करने वाले लोग स्वयं अपनी जान तो जोख़िम में डालते हैं, साथ ही दूसरों के लिए ख़तरा बन जाते हैं। आज मोबाइल फोन की स्थिति भी वही है। यदि इसका उपयोग सही रूप में किया गया तो यह हम सभी के लिए वरदान-स्वरूप सिद्ध होगा और दुरुपयोग करने पर अभिशाप।

40. हिमालय: भारत का मुकुट

संकेत बिंदु : • हिमालय सबसे श्रेष्ठ पर्वत • चारों ओर फैला साम्राज्य • गंगा-यमुना का जन्म स्थान • तपस्वियों की भूमि हिमालय • ज्ञान के भंडार • भारत का गौरव एवं सम्मान।

विश्व के पर्वतों में हिमालय सबसे श्रेष्ठ स्थान रखता है। यह भारत, पाकिस्तान और चीन के मिलनस्थल सियाचिन के पास से प्रारंभ होकर निरंतर पूर्व की ओर बढ़ता गया है। हिमालय पर्वत शृंखला ही नहीं है, यह वह सीमा रेखा भी है जहाँ से भारतीय सभ्यता और संस्कृति एशिया के उत्तरी हिस्से से अलग होती है। यह भारत का मुकुट है; यह देवभूमि है। हिमालय का आकलन सिर्फ़ जड़ पर्वत के रूप में करना अन्याय होगा। जिस हिमालय से गंगा-यमुना की धाराएँ निकलकर संपूर्ण भारत को भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक शांति प्रदान करती हैं, जो हिमालय भारत का सजग प्रहरी है और जो हिमालय युगों से भारतीय इतिहास का मूकद्रष्टा रहा है, उसे मात्र जड़ पर्वत मानना सही नहीं है। हिमालय सिद्धों और तपस्वियों की भूमि है। ज्ञान और अध्यात्म के अक्षय भंडार इसके कण-कण में छिपे हुए हैं। यह भारत की कीर्तिपताका का उज्ज्वल, उत्तम और उच्च रत्न है। हिमालय हमारा गर्व है, हमारी मर्यादा है। हम यह कभी स्वीकार नहीं कर सकते कि कोई उसकी गरिमा को कम करने की बात भी सोचें।

41. अध्ययन का आनंद

संकेत बिंदु : • मानसिक विकास के लिए अध्ययन की आवश्यकता • छात्र जीवन में अध्ययन का महत्त्व • विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति अरुचि • निष्कर्ष।

मनुष्य को ईश्वर ने सोचने-समझने की शक्ति दी है। उसका सही उपयोग करने के लिए अध्ययन एक सही और श्रेष्ठ साधन है। मानव जीवन को सही प्रकार से जीने के लिए अध्ययन आवश्यक है। अध्ययन द्वारा अल्पकाल में ही दिमाग को उन्नत, विकसित और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। पुराने ज़माने की पढ़ाई और आज

की पढ़ाई में काफी अंतर है। पुराने ज़माने की पढ़ाई में शस्त्रविद्या और शास्त्रविद्या आश्रम में रहकर गुरु की सेवा करके प्राप्त की जाती थी। एक तरह से गुरु के आदेशों का पालन करना ही पढ़ाई थी, परंतु इस ज़माने की पढ़ाई तो बहुत ही अधिक कठिन है। अधिकांश छात्रों के लिए पढ़ना एक समस्या है। बहुत से छात्रों के लिए तो वह सज़ा से कम नहीं है। सज़ा नहीं भी समझें तो तपस्या तो वे इसे समझते ही हैं। उनके लिए पढ़ाई ऐसे ही है जैसे गरमी में आग तापना पड़े और जाड़े में बर्फ क। पानी पीना पड़े। लेकिन आज भी कुछ छात्र ऐसे हैं जो यह सोचते हैं कि पढ़ने से ही हमारा जीवन बन सकता है। बिना पढ़े न अच्छी नौकरी मिलेगी, न समाज में सम्मान। कुछ विद्यार्थियों की पढ़ाई में अरुचि होती है। पढ़ाई में अरुचि के कई कारण हो सकते हैं। विद्यार्थियों को जो कुछ पढ़ना पड़ता है उसे वे पहले ही से भारी मानकर चलते हैं। विद्यार्थियों को ऐसा नहीं करना चाहिए। उन्हें अपनी मानसिक अवस्था को अध्ययन के अनुकूल बनाना चाहिए। रुचि पैदा हो जाने पर अध्ययन एक आनंददायी अनुभव बन जाता है।

42. हमारे गाँव

संकेत बिंदु : • गाँवों का स्वरूप • आज के गाँव व उनकी स्थिति • गाँवों के सुधार के प्रयास • उपसंहार।

भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। गाँव का नाम आते ही हमारे मन में एक सुंदर-सी कल्पना जन्म लेने लगती है–अपूर्व शांति की भावना उत्पन्न करने वाले हरे-भरे खेत, स्वच्छ वायुमंडल और नीरवता को चीरती हुई पक्षियों की मीठी-मीठी चहक। यही नहीं दही बिलौने और मट्ठा मथने के काम में लगी गाँव की गोरी तथा हल और बैल लेकर खेतों की ओर जाते हुए किसान की तस्वीर मन में उभर आती है, लेकिन आज का गाँव हमारी कल्पना के ठीक विपरीत है। आज के गाँवों में नरक का शासन है। गाँव की गलियाँ बरसात में कीचड़ का अंबार उगलने लगती हैं। गाँव बीमारियों का घर बनते जा रहे हैं। भोले-भाले बच्चे अशिक्षित, अनपढ़ रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त बनिए का ऋण उनकी गर्दन पर हमेशा सवार रहता है। आज हमें अपने गाँवों का आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सुधार करना होगा। किसान को खेती करने के नए तरीकों से परिचित करवाना होगा। उन्हें साक्षर बनाने का प्रयास करना होगा। गाँवों में समाज सुधार के लिए संस्थाओं की स्थापना करनी होगी तथा सांस्कृतिक उन्नति के लिए ग्रामवासियों के स्वास्थ्य तथा शिक्षा पर ध्यान देना होगा। उनके जीवन को मनोरंजक बनाने के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करना होगा। इन सभी प्रयासों के बाद ही गाँव वाले सुख का जीवन व्यतीत कर सकेंगे और तभी संपूर्ण देश उत्थान के स्वॢणम शिखर पर प्रतिष्ठित होगा।

43. जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी

संकेत बिंदु : • जन्मभूमि का महत्त्व • भारत का प्राकृतिक सौंदर्य • भारतीय संस्कृति एवं शिल्प।

भारत हमारी मातृभूमि है। अपनी जन्मभूमि सभी को प्रिय होती है। जिस धरती की मिट्टी में खेलकर, जिस धरती का उपजा अन्न खाकर और जिसकी नदियों का पानी पीकर व्यक्ति बड़ा होता है, वही उसकी मातृभूमि होती है। उसके सामने स्वर्ग भी तुच्छ होता है। उर्दू के महान शायर इकबाल ने लिखा है– 'सारे जहाँ से अच्छा, हिंदोस्ताँ हमारा' इसका अर्थ कि भारत विश्व में सबसे सुंदर और सर्वश्रेष्ठ देश है। हिमालय की गगनचुंबी चोटियाँ इसका मस्तक हैं और महासागर इसके पाँव पखारता है। बत्तीस सौ वर्ग किलोमीटर विस्तार वाला यह रंग-बिरंगा महान देश हमारा गौरव है। यह एक प्राचीनतम देश है। भारत प्राकृतिक दृष्टि से भी अतीव सुंदर है। हिमालय के हिममंडित शिखर, समुद्र, अठखेलियाँ करती हुई फसलें, कलकल कर बहती नदियों के जल में पड़ती चाँद और सूरज की परछाई मन को मोह लेती है। जंगलों का सौंदर्य, व्याघ्रों का गर्जन, मयूरों का नृत्य, प्रकृति की सुंदरता से आच्छादित कश्मीर-सभी कुछ इतना आकर्षक है कि आँखें वहीं ठहर जाती हैं। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति अति प्राचीन है। यहाँ पर विभिन्न धर्मों के लोग परस्पर मेल से रहते हैं। हमारे देश की पवित्र मिट्टी को विभिन्न

महापुरुषों ने जन्म लेकर पावन बनाया है। हमारे देश में विभिन्नताओं में भी एकता के दर्शन होते हैं। भारत की वास्तुकला तथा शिल्पकला का भी संसार में कोई मुकाबला नहीं कर सकता। ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। इतनी ऊँची कोटि की विरासत वाला हमारा भारत आज अनेक विपत्तियों से घिरा हुआ है फिर भी हमें डरना नहीं है। हमें इनका डटकर मुकाबला करना है।

44. भारत की सांस्कृतिक एकता

संकेत बिंदु : • सांस्कृतिक एकता का अर्थ • अनेकता में एकता • भाषा व बोली में समानता • धर्म निरपेक्षता • हमारे पर्व और त्योहार • उपसंहार।

सांस्कृतिक एकता राष्ट्र की एकात्मकता का प्रमाण है; मानव की जन्मजात उच्छृंखल प्रवृत्तियों पर प्रतिबंध की परिचायक है; व्यक्ति और राष्ट्र की उन्नति का सोपान है; विश्व के विशाल प्रांगण में व्यक्ति की पहचान का प्रतीक है। सांस्कृतिक एकता का अर्थ भारत की दो, तीन या चार धार्मिक वृत्तियों से जुड़ा संस्कृति का मिलन नहीं, न ही इसका अर्थ एक मिश्रित संस्कृति का उदय है। इसका सीधा-सा अर्थ है कि हिंदू धर्म में विभिन्न मत-मतांतरों के होते हुए भी खान-पान, रहन-सहन, पूजा-उपासना में विभेद होते रहते हुए भी विश्व का हिंदू सांस्कृतिक दृष्टि से एक सूत्र में बँधा है, वह एक है। परंपराएँ, मान्यताएँ, आस्थाएँ, जीवनमूल्य उसके इस्पाती स्तंभ हैं। भारत विभेदों का समुद्र है, शायद इसलिए इसे उपमहाद्वीप माना जाता है। यहाँ ढाई कोस पर बोली बदलती है। संविधान स्वीकृत 22 भाषाएँ हैं। अनेक धर्मों को मानने वाले लोग यहाँ हैं। परिधान की विविधता में यहाँ इंद्रधनुषी सप्त रंगों के दर्शन होते हैं। रुचि की विविधता तथा जलवायु की आवश्यकता के अनुसार खान-पान में विभिन्नता है, पर ये विभिन्नताएँ भारतीय संस्कृति की एकता का पोषक ही हैं, बाधक नहीं हैं। पर्व और त्योहार हमारी सांस्कृतिक एकता की आधारशिला हैं तथा एकात्मदर्शन के साक्षी हैं। देश में पाए जाने वाले अनेक तीर्थ भी हमारी अटूट सांस्कृतिक एकता के प्रमाण हैं। इस सांस्कृतिक एकता के कारण सृष्टि के आदि से चली आ रही भारतीय संस्कृति आज भी गौरव और गर्व से विश्व के प्रांगण में उन्नत मस्तक किए है। यही कारण है कि हमारी संस्कृति काल के अनेक थपेड़े खाकर भी आज अपने आदि स्वरूप में जीवित है।

45. हमारे राष्ट्रीय त्योहार

संकेत बिंदु : • त्योहारों का देश भारत • राष्ट्रीय त्योहारों का स्वरूप • राष्ट्रीय त्योहारों के नाम • त्योहारों को मनाने के कारण • त्योहारों को मनाने के तरीके • राष्ट्रीय त्योहार मनाने के उद्देश्य।

उत्सव मनाना मानव का जन्मजात स्वभाव है। यह स्वभाव पर्व और त्योहारों के मनाने के रूप में ही प्रत्यक्ष रूप से व्यंजित होता है। पर्व और त्योहार किसी भी देश की आंतरिक ऊर्जा, आनंद की भावना और जीवन की जीवंतता के परिचायक होते हैं, पर कुछ ऐसे पर्व और त्योहार भी हैं, जिन्हें सारा राष्ट्र एक साथ मिलकर मनाता है। ऐसे त्योहारों को ही राष्ट्रीय त्योहार कहा गया है। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं। गणतंत्र दिवस प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू होने की याद में धूमधाम से मनाया जाता है। राष्ट्रपति भवन के बाहर राजपथ पर राष्ट्रपति द्वारा तीनों सेनाओं आदि से सलामी लेना, परेड, अनेक प्रकार की भव्य झाँकियाँ और प्रदर्शन, रात को विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम दीपावली और आतिशबाज़ी इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। 15 अगस्त सन् 1947 के दिन हमारा देश स्वतंत्र हुआ, जिसकी याद में प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रध्वज फहराना, इसे सलामी देना तथा देश को संबोधित आदि इस त्योहार की प्रमुख गतिविधियाँ और विशेषताएँ हैं। 2 अक्टूबर महात्मा गाँधी का जन्म दिवस है। यह दिन उस महान विभूति को अपनी श्रद्धांजलि देने स्वरूप मनाया जाता है जिसने हमारे देश को आज़ाद कराने के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया। इन सभी त्योहारों का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और आंतरिक आनंद का भाव उजागर करना तो है ही, यह स्मरण रखना भी है कि मानवता, राष्ट्रीयता और उसकी स्वाधीनता से बड़ी कोई चीज़ नहीं।

46. हमारा राष्ट्रीय झंडा

संकेत बिंदु : • हमारे देश का राष्ट्रीय झंडा तिरंगा • तिरंगे का देश में स्थान • तिरंगा सम्मान का प्रतीक • तीनों रंगों का महत्त्व • झंडे के बीच में लगे चक्र का महत्त्व • झंडारोहण कब और कहाँ।

प्रत्येक देश का एक राष्ट्रीय झंडा होता है। राष्ट्रीय झंडा देश के सम्मान का प्रतीक होता है। यही कारण है कि हर देश के नागरिक अपने देश के राष्ट्रीय झंडे का न केवल आदर करते हैं, अपितु उसके सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी भी लगा देते हैं। देश का प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय झंडे की मर्यादा का पालन करता है। हमारे देश का राष्ट्रीय झंडा तिरंगा है। इस झंडे में तीन रंग हैं। सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफ़ेद तथा नीचे हरा रंग है। इसके बीच में अशोक चक्र बना है। आरंभ में अशोक चक्र के स्थान पर चरखा था। चरखा दोनों ओर से एक समान दिखाई नहीं देता था। इसी कारण बाद में चक्र को राष्ट्रीय झंडे के मध्य रखा गया। झंडे के तीनों रंग प्रतीकात्मक हैं। केसरिया रंग त्याग और वीरता का प्रतीक है। यह हमारे त्याग और शौर्य की गाथा गाता है। झंडे के मध्य सफ़ेद रंग शांति का प्रतीक है। हमारा देश संसार में शांति व भाईचारे का संदेश फैलाना चाहता है। झंडे का हरा रंग भारत की हरियाली और खुशहाली का प्रतीक है। झंडे के मध्य अशोक चक्र है। यह चक्र भारत की प्रगति तथा लोकतंत्र का प्रतीक है। हमारा राष्ट्रीय झंडा देश की विचारधारा के अनुसार ही बनाया गया है। सभी राष्ट्रीय पर्वों पर देश के प्रत्येक भाग में झंडारोहण किया जाता है। देश में जब कभी राष्ट्रीय शोक होता है तब झंडे झुका दिए जाते हैं। हम सब राष्ट्रीय झंडे का सम्मान करते हैं।

47. बेरोज़गारी की समस्या

संकेत बिंदु : • समस्या से हानियाँ • कारण • उपाय।

वास्तव में बेरोज़गारी की समस्या एक दानव की तरह हमारे देश के नवयुवकों को खा रही है। एक नौजवान जब पढ़ाई करता है, अपने क्षेत्र में विशेष ज्ञान प्राप्त करता है फिर नौकरी के लिए दर-दर भटकता फिरता है और उसके हाथ केवल निराशा ही लगती है, तब उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है। ऐसे ही कई बेरोज़गार नवयुवक गलत रास्ते अपनाने लगते हैं, बुरी आदतों का शिकार बनते हैं और समाज के लिए समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। विचार किया जाए तो मुख्य रूप से गाँवों से बड़ी संख्या में लोगों का शहरों में आना, दूषित शिक्षा प्रणाली, बढ़ती जनसंख्या-जैसे कारण इस समस्या के मूल में दिखाई देते हैं। अतः बेरोज़गारी की समस्या को दूर करने के लिए हमें इन कारणों से निपटना होगा। कृषि का समुचित विकास आवश्यक है। शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करके उसे व्यवसाय से जोड़ा जाए, जनसंख्या नियंत्रण के और सजग प्रयास हों, साथ ही यह भी आवश्यक है कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए एक व्यापक रोज़गार नीति अपनाई जाए और सरकारी तथा निजी क्षेत्रों में उत्पादक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर रोज़गार के नए अवसर उपलब्ध करवाए जाएँ। सरकार द्वारा इस संबंध में अनेक उपाय किए जा रहे हैं, किंतु और अधिक सजग प्रयासों की आवश्यकता है।

48. बढ़ती जनसंख्या : एक भयानक समस्या

संकेत बिंदु : • विकराल समस्या • दुष्परिणाम • कारण • उपाय।

भारत आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी जिन अनेक समस्याओं से ग्रसित है, उनमें से सबसे भयंकर एवं विकराल समस्या है-जनसंख्या वृद्धि। यही समस्या अन्य अनेक समस्याओं के मूल में है। गरीबी, बेरोज़गारी, घटते संसाधन, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं की जड़ यही है। इसके कारण नागरिकों का नैतिक पतन होता है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय चरित्र को हानि तथा कार्यक्षमता एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ता है। जनसंख्या बढ़ने के कारण अनेक हैं-छोटी उम्र में विवाह, पुत्र की कामना, सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताएँ, भाग्यवादी दृष्टिकोण, अशिक्षा, जानकारी का अभाव आदि। इन सभी कारणों को दूर कर जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाना अनिवार्य है। यह सच है कि इस संबंध में सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए गए हैं। जनसंचार माध्यमों द्वारा परिवार नियोजन के संबंध में व्यापक प्रचार कार्य किया गया है और

किया जा रहा है। अनेक समाज-सेवी-संस्थाएँ भी इस दिशा में कार्य कर रही हैं। विवाह की आयु निर्धारित की गई है। एक लड़की के लिए अनेक सुविधाएँ दी जा रही हैं, फिर भी आशानुरूप सफलता नहीं मिल पाई है। यह केवल सरकार का ही नहीं, अपितु नागरिकों का भी कर्त्तव्य है कि वे इस क्षेत्र में सजग प्रयास करें।

49. भारतीय समाज और अंधविश्वास

संकेत बिंदु : • कठिनाइयों का सामना • प्रगति में बाधक • खोखला समाज • जागृति की आवश्यकता • धर्म का वास्तविक रूप।

भारतीय समाज की जब बात की जाती है तो यह सामने आता है कि यहाँ ऐसे अनेक अंधविश्वास दिखाई देते हैं, जिनके कारण भारतीयों को व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। हमारे समाज के अनेक विश्वास जीवन की गतिशीलता के साथ न चलने के कारण पंगु हो गए हैं। अंधविश्वासों से चिपके हुए भारतीय अब भी दुख-क्लेश को भोग रहे हैं। इन अंधविश्वासों में धर्म की रूढ़िबद्धता, जादू-टोने में विश्वास, देवी-देवताओं के प्रति अबौद्धिक श्रद्धा तथा अन्य सामाजिक कुरीतियाँ हैं। इन सबके कारण इस वैज्ञानिक युग में भी भारत उतनी प्रगति नहीं कर रहा जितनी करनी चाहिए। भारतीय हिंदू समाज का सबसे बड़ा अंधविश्वास छुआछूत का विश्वास है। कुछ जातियों को अस्पृश्य मानकर उनका बहिष्कार करना, उनके साथ भोजन करना, साथ रहना, उठना-बैठना निषेध समझना अत्यंत ही घृणित कार्य हैं। इससे हमारा संपूर्ण समाज खोखला हो गया। भारतीय समाज का एक काफी बड़ा वर्ग जादू-टोने में विश्वास रखता था। यद्यपि अब बौद्धिकता के बढ़ने से उसकी ओर कम ध्यान दिया जाता है, लेकिन आज भी यह कहीं-कहीं जीवित रहकर हमारे समाज को कमज़ोर बना रहा है। देवी-देवताओं का नाम लेकर चढ़ाई जाने वाली बलि भी कई जगहों पर देखी जा सकती है। बिल्ली का रास्ता काटना, छींकना, पीछे से आवाज़ देना, चलते हुए अँधेरा हो जाना आदि ऐसे अपशगुन माने गए हैं, जिनके कारण लोग अपने महत्त्वपूर्ण काम तक रोक देते हैं। हमारे समाज का सबसे बड़ा अंधविश्वास समग्र रूप से परंपराओं के प्रति अंध-भक्ति है। हम आज भी उन बातों से जुड़े हुए हैं, जो इस युग में अव्यावहारिक हो गई हैं। परंपराओं की अंध-आसक्ति ने हमारे विकास को रोक दिया है। आज आवश्यकता है हमारे भीतर जागृति की। आवश्यकता है धर्म के वास्तविक रूप को समझकर उसका आचरण कर प्रगति की ओर बढ़ने की।

50. अपहरण और मासूम बच्चे

संकेत बिंदु : • भारत में अपहरण की घटनाएँ • पैसा कमाने की चाह • राजनीति भी अपराध जगत का हिस्सा • आत्मविश्वास का अभाव • बच्चों के लिए सुरक्षित वातावरण।

आज भारत में अपहरण की घटनाएँ आम हो गई हैं। हर वर्ष इनकी बढ़ती संख्या हमें यह सोचने पर विवश कर रही है कि मानव अब मानवता को छोड़कर दानवता की ओर अग्रसर हो रहा है। छोटे-छोटे मासूम बच्चों को ढाल बनाकर पैसा कमाने की चाह आज उन्हें यह निकृत्य कर्म करने को विवश कर रही है। अपराध जगत आज इतना अधिक फैल रहा है कि राजनीति भी उसी में समाती जा रही है। अपहरण करने और करवाने वाले कुर्सियों के मालिक बन बैठे हैं। संसद में बैठकर देश को चलाने वाले ये अपराधी किसी से नहीं डरते। फ़िल्मों से प्रशिक्षण प्राप्त कर आम जनता को सताने वाले ये अपहरणकर्ता उन मासूम बच्चों के बारे में नहीं सोचते जो अपने जीवन में आए इन काले सायों को कभी भूल ही नहीं पाते। दिनों, हफ्तों, महीनों अपने परिवार के लोगों से दूर वे किस घुटन के साथ अपना समय बिताते हैं, यह कोई नहीं समझ पाता। ऐसे बच्चे भीतर से डरपोक हो जाते हैं। उनमें आत्मविश्वास का अभाव हो जाता है तथा ये एकांतवासी भी हो जाते हैं। बच्चों के साथ अन्याय करने वाले इन लोगों के लिए ऐसा कानून बनना चाहिए कि इस गलत काम को करने वाला उसके परिणाम के बारे में सोचकर काँप जाए। अपहरण को अपना व्यवसाय बनाने वाले लोगों को राजनीति से दूर रखा जाए।

क्या हमारे देश में अच्छे नेताओं का अभाव हो गया है? राजनीति और न्यायालय जब तक ऐसे लोगों को शरण देती रहेगी तब तक हमारे बच्चे इस देश में सुरक्षित नहीं रहेंगे। हम यदि हमारे बच्चों के लिए सुरक्षित वातावरण चाहते हैं, तो हमें कोई ठोस कदम उठाने होंगे। वरना वह दिन दूर नहीं जब अपहरण की घटनाओं की संख्या बढ़कर आसमान छू लेगी।

51. प्रदूषण की समस्या

संकेत बिंदु : • प्रदूषण के दुष्परिणाम • प्रदूषण के कारण • प्रदूषण के प्रकार • समाधान।

आज के विज्ञान-युग में प्रदूषण की समस्या एक बड़ी चुनौती बनकर खड़ी है। उद्योगों के विस्तार के साथ-साथ प्रदूषण भी और अधिक बढ़ा है। धरती का वायुमंडल इतना विषैला हो गया है कि किसी भीड़ भरे चौराहे पर साँस लेने में भी दिक्कत महसूस होने लगती है। प्रकृति में जब तक संतुलन बना हुआ था, तब तक जल और वायु दोनों ही शुद्ध थे। उपयोगितावाद के हाथों प्राकृतिक साधनों का अंधाधुंध दोहन हुआ है, परिणामस्वरूप वातावरण में निरंतर प्रदूषण बढ़ा ही है। आज स्थिति यह हो गई है कि न केवल हवा, बल्कि जल-स्रोत भी दूषित हो गए हैं। इतना ही नहीं अब तो ध्वनि-प्रदूषण के भी दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। यदि हम अब भी नहीं सँभले तो उसके विनाशकारी परिणाम शीघ्र सामने आएँगे। संसार में जो कुछ भी है वह मनुष्य से जुड़ा हुआ है। अपने व्यवहार से मनुष्य उसे अच्छा या बुरा जो चाहे बना सकता है। मानव का भला तो अच्छा करने और बनाने में ही है। यह सोचकर हमें जंगलों की रक्षा कर नए पेड़ उगाने हैं। धुआँ-धुंध फैलाने वाले उन उपकरणों से छुटकारा पाने का प्रयास करना है, जो कि वायु को प्रदूषित कर दमघोंटू सिद्ध हो रहे हैं। अपने चारों ओर की सफाई का ध्यान रखना है। नदियों के जल की शुद्धता और पवित्रता बनाए रखनी है। सबसे बढ़कर अपने मन-मस्तिष्क को वैयक्तिक स्वार्थों के प्रदूषण से मुक्त रखकर ऐसे कार्य करने हैं जो समूची मानवता के हित में हों।

52. भ्रष्टाचार : एक समस्या

संकेत बिंदु : • भ्रष्टाचार का प्रभाव • भ्रष्टाचार का स्वरूप • नेताओं का दायित्व

एक समय था जब भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था लेकिन आज यह स्थिति है कि भारत आर्थिक रूप से इतना पिछड़ रहा है कि सिवाय उस पर तरस खाने के और कुछ शेष नहीं रह गया है। स्वतंत्रता से पूर्व हमने देश से गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, अन्याय, धनी-निर्धन के मध्य की चौड़ी खाई आदि को मिटाने की जो कल्पनाएँ की थी, भ्रष्टाचार रूपी दैत्य ने उनमें से हमारा कोई भी स्वप्न सत्य सिद्ध नहीं होने दिया है। हमारे देश में कभी-भी न तो उत्तम साधनों का अभाव रहा है और न ही उच्चकोटि के नेता या समाज-सुधारकों का, फिर भी संसार के समृद्ध राष्ट्रों की तुलना में हमारा स्थान कहीं भी नहीं है। इसका मुख्य कारण सभी क्षेत्रों में बढ़ता भ्रष्टाचार है। खाद्य पदार्थों में मिलावट और अपने मुनाफे के लिए जी भरकर कर रहे गलत कार्यों को करने वालों की कोई कमी नहीं है। सरकारी विभागों में, विशेषकर पुलिस और कचहरियों में व्याप्त भ्रष्टाचार के विषय में यदि लिखने बैठा जाए तो आँखें शर्म से नीची हो जाएँगी। इसका मुख्य कारण हमारे देश के कर्णधार नेताओं को कहना गलत न होगा। मंत्री पद की कुरसी पाने की भूख राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार को जन्म दे रही है। देखा जाए तो ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा है जहाँ भ्रष्टाचार के कदम न पहुँचे हों। आज आम आदमी पिसता चला जा रहा है। बढ़ती महँगाई ने उसकी कमर तोड़ दी है और उस पर हर एक काम के लिए रिश्वत की बढ़ती रकम ने उसकी उन्नति की हर राह को रोक दिया है। आवश्यकता है ऐसे सच्चे और अच्छे कर्णधारों की जो अपने कंधे पर देश की जिम्मेदारी को लेकर आगे बढ़ें और भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करें।

53. कमरतोड़ महँगाई

संकेत बिंदु : • महँगाई का स्वरूप • महँगाई कहाँ-कहाँ • महँगाई पर भारत की आर्थिक नीति का प्रभाव • महँगाई का कारण हड़ताल व तालाबंदी • देश के धन का गलत उपयोग • उपसंहार।

महँगाई मूल्यों में निरंतर वृद्धि, उत्पादन की कमी और माँग की पूर्ति में असमर्थता की परिचायक है। जीवनयापन के लिए अनिवार्य तत्वों (रोटी, कपड़ा और मकान) की बढ़ती हुई महँगाई गरीब जनता के पेट पर ईंट बाँधती है, मध्यवर्ग की आवश्यकताओं में कटौती करती है, तो धनिक वर्ग के लिए आय के स्रोत उत्पन्न करती है। बढ़ती हुई महँगाई भारत सरकार की आर्थिक नीतियों की विफलता है। प्रकृति के रोष और प्रकोप का फल नहीं, शासकों की बदनीयती और बदइंतज़ामी की मुँह बोलती तस्वीर है। काला धन, तस्करी और जमाख़ोरी महँगाई-वृद्धि के परम मित्र हैं। तीनों से सरकार और पार्टियाँ खूब चंदा लेती हैं। तस्कर खुलेआम व्यापार करता है। काला धन जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है, उसके बिना दफ्तर की फाइल नहीं खुलती। जमाख़ोरी पुलिस और अधिकारियों की मिली-भगत का कुफल है। इतना ही नहीं, सरकार हर माह किसी-न-किसी वस्तु का मूल्य बढ़ा देती है, जब कीमतें बढ़ती हैं तो आगा-पीछा नहीं सोचती। जहाँ उत्पादन न बढ़ने के लिए अयोग्य अधिकारी दोषी हैं, वहाँ कर्मचारी आंदोलन, हड़ताल एवं वेतनवृद्धि के कारण घाटा बढ़ता है, महँगाई बढ़ती है। करोड़ों रुपये लगाकर हम उपग्रह बना रहे हैं, वैज्ञानिक प्रगति में विश्व के महान राष्ट्रों की गिनती में आना चाहते हैं, किंतु गरीब भारत का जन भूखा और नंगा है। आज भारत की जनता महँगाई की चक्की में और पिसती जा रही है। महँगाई की खाई भरने के चार उपाय हैं-1. कर चोरी को रोकना 2. राष्ट्रीयकृत उद्योगों के प्रबंध तथा संचालन में तीव्र कुशलता 3. सरकारी खर्चों में योजनाबद्ध रूप में कमी का आह्वान 4. माँग के अनुसार उत्पादन का प्रयत्न।

54. दहेज : एक समस्या

संकेत बिंदु : • दहेज एक समस्या • दहेज के दुष्परिणाम • समाधान-लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाना • समस्या के समाधान।

दहेज एक विकट समस्या है। आज दहेज एक बुराई का रूप धारण करती जा रही है। आज का विवाह दो परिवारों को जोड़ता नहीं बल्कि सौदेबाजी का व्यापार बन गया है। सौदा होने पर भी वर-पक्ष का लालची मन जब सौदे के पुनरावलोकन पर जिद करता है तो दहेज 'प्रबल समस्या' बन जाता है। गरीब कन्याएँ तथा उनके माता-पिता दहेज के नाम से भी घबराते हैं। परिणामस्वरूप उनके जीवन में अशांति, भय और उदासी घर कर जाती है। माँ-बाप बच्चों का पेट काटकर पैसे बचाने लग जाते हैं। यहाँ तक कि वे रिश्वत, गबन जैसे अनैतिक कार्य करने से भी नहीं चूकते। दूसरी ओर दहेज के लालच में बहुओं को परेशान किया जाता है। माँग पूरी न होने पर वधू को बेतहाशा मारना-पीटना, उसका अंग-भंग कर देना आज शिक्षित, सभ्य समाज में भी बेरहमी से चलता है। यदि बहू शारीरिक कष्ट और मानसिक पीड़ा देने पर भी दहेज पूरा न कर सकी, तो मिट्टी का तेल छिड़ककर, स्टोव फटने का बहाना बनाकर उसे अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है। दहेज की समस्या के समाधान के लिए कानून भी बने। दो-चार परिवार पुलिस की ज़्यादतियों और अदालतों के निर्णयों से दंडित भी हुए, पर इससे क्या? आज भी दहेज की समस्या कानून की खिल्ली उड़ाते हुए पूरे देश में महामारी की तरह फैल रही है। इस समस्या के दो ही समाधान हैं-1. प्रेम-विवाह, जहाँ दुल्हन ही दहेज के रूप में स्वीकार की जाती है तथा 2. विवाह संबंधों की पवित्र भावना अर्थात् जो पुत्री का पिता स्वेच्छा से दे, वह दहेज स्वीकार करने की उदारता।

55. भारत में आतंकवाद

संकेत बिंदु • आतंकवाद का बोलबाला • इसका विकृत स्वरूप • सरकार का प्रयास • देश की कमज़ोर सुरक्षा व्यवस्था • आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कदम।

भारत भूमि अहिंसा की पुजारी है। शांति से जीवन-यापन करना ही यहाँ के लोगों का लक्ष्य रहा है। 'जीओ और जीने दो' का नारा ही उसका धर्म रहा है। लेकिन खेद का विषय यह है कि अहिंसक और शांतिप्रिय देश भारत में पिछले कई दशकों से सांप्रदायिक हिंसा और आतंकवाद का बोलबाला है। आतंकवाद की शुरूआत बंगाल में नक्सलवादियों द्वारा आरंभ की गई। इसको आगे बढ़ाने का काम पंजाब में खालिस्तान बनाने की माँग से हुआ। असंख्य बेगुनाहों का खून बहा। आज स्थिति यह है कि इसका स्वरूप इतना विकृत होता जा रहा है कि धीरे-धीरे समूचा भारत (कश्मीर, असम, बिहार, उत्तर-प्रदेश के तराई क्षेत्र, त्रिपुरा, आंध्र-प्रदेश) ही इसका शिकार हो रहा है। जन-जन में आज भय समा गया है। देश की स्थिति यह है कि देश के लोग ही इसे खोखला करने में लीन हैं। बेरोज़गारी से बचने के लिए धार्मिक-युद्ध (जेहाद) का मुखौटा ओढ़कर आतंकवाद में कदम रखने वाले युवा देश में अशांति और अस्थिरता का माहौल फैलाकर अपनी विजय-पताका को ऊँचा करने में लगे हैं। सरकार अपनी ओर से इस आतंकवाद के भूत को भगाने का पूरा प्रयास कर रही है; कानून बदल रही है; आम लोगों के मन को जागृत करने का प्रयास कर रही है, लेकिन परिणाम कुछ भी नहीं मिल रहे हैं। मुंबई, अहमदाबाद और दिल्ली में हुए 'सीरियल ब्लास्ट' इस बात की गवाही देते हैं कि हमारे देश का कानून ही नहीं, सुरक्षा व्यवस्था भी बहुत कमज़ोर है। हज़ारों की संख्या में बेगुनाह लोगों का बहता खून इस बात की गवाही है कि देश आज आतंकवाद के साये में पल रहा है। आवश्यकता है इसके विरुद्ध कठोर कदम उठाने की। कहते हैं-'लातों के भूत बातों से नहीं मानते'। अत: आतंकवाद-रूपी साँप के फन को कुचलने का हमें पूर्ण प्रयास करना होगा। इस अभियान में देश के प्रत्येक सदस्य का सहयोग आवश्यक है अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब पूरा भारत त्राहि-त्राहि कर रहा होगा।

56. आरक्षण : कितना उचित, कितना अनुचित

संकेत बिंदु : • जातिगत भेदभाव • आरक्षण की सुविधाएँ • विद्रोह की भावना • बदली परिस्थितियाँ • समान अधिकार।

भारतीय समाज में जातिगत रूप से ऊँच-नीच के भेदभाव की शुरूआत प्राचीनकाल से ही हो गई थी। अस्पृश्यता का भाव जब अधिक बढ़ गया तब इन लोगों का मंदिरों में प्रवेश वर्जित हुआ। इनके तीर्थ-स्थानों के भ्रमण पर रोक लगाई गई। कुओं से पानी नहीं भरने दिया जाता था। शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा से भी उन्हें वंचित रखा गया। समय बदला और परिस्थितियाँ भी बदलीं। स्वतंत्र भारत में इन्हें मताधिकार प्राप्त हुआ और ऐसे कानून बने जिनका फ़ायदा इन अस्पृश्य कहे जानेवाले लोगों को हुआ। इनके लिए विशेष आरक्षण की योजनाएँ बनाई गईं। शिक्षा प्राप्त करने की विशेष सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई गईं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि उनके लिए नौकरियों में भी स्थान सुरक्षित रखे जाने लगे। जब कांग्रेस को हराने के बाद देश की बागडोर श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के हाथ में आई तो उन्होंने 15 अगस्त के दिन लाल किले की प्राचीर से पिछड़ी जातियों के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा कर दी। अनुसूचित जातियों तथा जन-जातियों के लिए तो पहले से ही आरक्षण की सुविधाएँ थीं। मंडल कमीशन की सिफारिशों को सहमति देते हुए उन्होंने जो घोषणा की थी उसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। जगह-जगह दंगे फसाद, आत्मदाह जैसी दिल को दहला देने वाली अनेक घटनाओं ने देश को सुर्खियों में ला दिया। राजनीतिक पार्टियों ने इस परिस्थिति का बहुत फ़ायदा उठाया। छात्रों को यह कहकर

कि आरक्षण की वजह से अब उन्हें नौकरियाँ नहीं मिल पाएँगी, उनके मन में विद्रोह की भावना भड़काई। स्थिति और भी अधिक भयावह हो गई। इस स्थिति पर नियंत्रण पाया गया, लेकिन समय के बाद। आरक्षण की यह माँग आज भी बरकरार है। पिछले दिनों गुज्जरों के द्वारा किए गए विद्रोह और प्रदर्शन ने राजस्थान की व्यवस्था को गड़बड़ा दिया था। सरकार के द्वारा उनके साथ बातचीत और निकाले गए रास्ते ने देश के शेष नौजवानों के मन में भी क्षोभ भर दिया। अब परिस्थितियाँ बदल रही हैं। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों को मिलने वाला आरक्षण आज उचित दिशा में जा रहा है, लेकिन प्रश्न आज उन लोगों का है, जिन्हें किसी प्रकार का आरक्षण प्राप्त नहीं है। वे काबिल होने के बाद भी बेहतर नौकरी पाने में असफल हैं। आज हमें एक ऐसा रास्ता निकालना होगा, जिससे देश के सभी युवाओं को समान अधिकार प्राप्त हों।

57. प्लास्टिक की दुनिया

संकेत बिंदु: • विज्ञान का वरदान प्लास्टिक • प्लास्टिक के प्रयोग के विविध रूप • प्लास्टिक का सही और गलत प्रयोग • प्लास्टिक की बनी थैलियों का बढ़ता कुप्रभाव • पर्यावरण पर प्रभाव • रोकथाम के उपाय।

विज्ञान ने जहाँ एक ओर मानव को अनेक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं वहीं दूसरी ओर इन सुविधाओं ने अनेक भयंकर समस्याएँ भी खड़ी की हैं। मनुष्य द्वारा निर्मित तमाम वस्तुओं में से प्लास्टिक एक है। आजकल पर्यावरण पूरे विश्व के लिए चिंता का कारण बना हुआ है। प्लास्टिक के आविष्कार ने दुनिया को रंग-बिरंगा तो बना दिया साथ ही अनेक परेशानियों को भी जन्म दे दिया। आज तरल पदार्थ से लेकर भारी-भरकम सामानों की पैकिंग प्लास्टिक से बने थैले-थैलियों में होने लगी है क्योंकि यह सुविधाजनक साधन है। आज चारों ओर सड़क, बाग़-बग़ीचे, स्कूल-कॉलेज के मैदान सभी जगह प्लास्टिक के लिफ़ाफ़े उड़ते देखे जा सकते हैं। छोटे-बड़े सभी इन खाली पैकेटों को इधर-उधर फेंक देते हैं। आज भ्रमणकारियों के कारण पहाड़ भी इनसे अछूते नहीं रहे हैं। प्लास्टिक के ये लिफ़ाफ़े अनेक रोगों का कारण तो बन ही रहे हैं, ये सीवरों को भी जाम कर दे रहे हैं। कूड़ों में पड़े इन लिफ़ाफ़ों को खाकर पशु बीमार हो जाते हैं। सड़कों पर पड़े इन लिफ़ाफ़ों को अन्य कूड़े के साथ जलाया जाता है तो इसका धुआँ साँस संबंधी रोग का कारण बनता है। इन्हें मलबे के साथ भराव के काम में लाना भी खतरनाक है, क्योंकि प्लास्टिक ज़मीन में गलती नहीं है। इस समस्या को समाप्त करने के लिए समाज को ही सचेत होना होगा और प्लास्टिक की थैलियों के निर्माण पर रोक लगाना होगा।

58. चाँदनी रात का वर्णन

संकेत बिंदु : • प्रकृति का चक्र • चाँदनी रात का वर्णन • चाँदनी रात में कवि • चाँदनी रात में ताजमहल • चाँदनी रात में नौका विहार • चाँदनी रात का भिन्न-भिन्न महत्त्व • उपसंहार।

चाँदनी रात–पूर्णिमा की रात्रि कितनी सुहावनी होती है। संपूर्ण जगत कांति से आलोकित हो रहा है। गगन-मंडल में भी शुभ्रता छाई हुई है। तारों की जगमगाहट उस शुभ्र ज्योत्सना में लुप्त हो गई है। चाँदनी का यह विस्तार क्षीरसागर जैसा प्रतीत हो रहा है और उसके मध्य विराजमान चंद्र एक खिले हुए श्वेत कमल के समान दिखाई दे रहा है। नद-नदियों, सर-सरोवरों, झरनों और समुद्र के जल में चाँदनी रात का दृश्य अत्यंत विलक्षण और आकर्षक होता है। जल की स्वच्छ नीलिमा से चंद्रमा की परछाई हिलोरे ले रही है। तट पर खड़े वृक्षों पर चंद्रमा की चाँदनी की छटा अत्यंत शोभायमान है। उपवन में खिले फूल अपनी सुगंध से वातावरण को अत्यधिक मादक बना देते हैं। ज़रा चाँदनी रात का आनंद ताजमहल के परिसर में भी लीजिए। शुभ्र संगमरमर से निर्मित यह भव्य-भवन उज्ज्वल चाँदनी में जगमग-जगमग करता हुआ बहुत-ही सुंदर लगता है। चाँदनी रात में नौका-विहार करना अत्यंत आनंदप्रद होता है। नदी तट का शांत और शीतल वातावरण मन में अपूर्व आनंद उत्पन्न

करता है। जल में प्रतिबिंबित होते हुए तारों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे (तारे) पानी के अंदर कुछ ढूँढ़ रहे हैं। तप हरण करने वाली, सहृदयों के हृदय को प्रफुल्लित करने वाली, शुभ्र ज्योत्सना से जगमगाती हुई रात्रि का वर्णन जितना भी किया जाए, कम है।

59. प्रकृति का क्रूर परिहास 'बाढ़'

संकेत बिंदु : • बाढ़ के कारण • बाढ़ का स्वरूप • बाढ़ के परिणाम • बाढ़ एक अभिशाप • उपसंहार।

बाढ़ भयंकरता का सूचक है, बाढ़ का दृश्य वीभत्स होता है, कारुणिक होता है, भयप्रद होता है। विनाशकारी जल-प्रयत्न मनुष्य की चिरसंचित और अूजत जीवनोपयोगी सामग्री को नष्ट कर देता है। खेती और खेत को बर्बाद कर देता है। अँधेरा तथा पीने के जल का प्रभाव मन-मस्तिष्क को झकझोर देता है। पशु-धन को बहा ले जाता है। मकान टूटकर गिर जाते हैं। बेसहारा प्राणी प्रभु का स्मरण करते हुए 'त्राहिमाम्' चिल्लाते हैं। 8-10 फुट तक घरों में घुसा पानी निकलने का नाम ही नहीं लेता। घर की सारी संपत्ति को नष्ट कर देता है। निरीह मानव पेय-जल, भोजन, वस्त्र आदि के अभाव और अग्नि की असुविधा से पीड़ित सहायता की खोज करता है। दूर-दूर तक जल-ही-जल दिखाई देता है। मक्खी-मच्छरों का साम्राज्य जल पर क्रीड़ा कर रहा होता है। बिजली के स्तंभ और सड़क के किनारे खड़े वृक्ष नतमस्तक होकर जल-प्रलय के सम्मुख आत्म-समर्पण करते दिखाई देते हैं। विपत्ति कभी अकेले नहीं आती। जल-प्रलय की हानि समष्टिगत विनाश ही नहीं, व्याधि की जड़ भी है। जल से मच्छर उत्पन्न होते हैं, मच्छर मलेरिया फैलाते हैं, दूषित जल पीने से हैजा आदि बीमारियाँ फैलती हैं। भारतीय दर्शन के मतानुसार पृथ्वी पर पाप के भार को कम करने के लिए प्रकृति दंड देती है। बाढ़ प्रकृति का अभिशाप है। भारत में आने वाली प्रत्येक बाढ़ राज्य-सरकारों की बाढ़ रोकने के प्रति अकर्मण्यता अथवा असमर्थता का प्रमाण है। बाढ़-पीड़ितों की सहायतार्थ दिए जाने वाले पदार्थ और धन में से अपना हिस्सा काटना अधिकारियों की अनैतिकता का दस्तावेज़ है। यदि बाढ़ के प्रकोप को रोकना संभव नहीं तो उसकी भयावहता को कम अवश्य किया जा सकता है।

60. प्रात:कालीन भ्रमण

संकेत बिंदु : • प्रात:कालीन भ्रमण का समय • प्रात:कालीन वातावरण • भ्रमण के लाभ • भ्रमण जीवन की आवश्यकता • उपसंहार।

'भ्रमण' शब्द का वाच्यार्थ है–घूमना, इधर-उधर विचरण करना। प्रात: अथवा सायंकाल सैर करना व्यायाम का एक रूप है। प्रात:कालीन भ्रमण सबसे सरल, किंतु सबसे अधिक उपयोगी व्यायाम है। गर्मियों में लगभग साढ़े चार-पाँच बजे और सूदयों में पाँच-छह बजे का समय प्रात:कालीन सैर के लिए उपयुक्त है। बिस्तर छोड़ने में थोड़ा कष्ट का अनुभव होगा। गर्मियों की प्रात:कालीन हवा और उसके कारण आ रही प्यारी-प्यारी नींद का त्याग कीजिए। सर्दियों में रजाई का मोह छोड़िए और चलिए प्रात:कालीन सैर को। प्रात:कालीन सैर पर निकलते समय का वातावरण बहुत सुंदर होता है। पक्षी अपने-अपने घोंसलों में फड़फड़ा रहे होते हैं। मंद-मंद सुगंधित पवन चल रही होती है। रात्रि के चंद्रमा और तारों की ज्योति समाप्त-प्राय होती है। भगवान भास्कर उदित होने की तैयारी कर रहे होते हैं। आकाश बड़ा स्वच्छ होता है। रजाई के मोह और प्यारी-प्यारी नींद का त्याग और वह भी प्रात:कालीन सैर के लिए बहुत-ही लाभप्रद होता है। आलस्य आपसे पराजित हो जाता है। सारे दिन शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है। तेज़ चलने से शरीर के प्रत्येक अंग की कसरत होती है। रक्त-नलियाँ खुलती हैं। स्वास्थ्य सुंदर बनता है। चेहरे पर रौनक आती है। हरी-भरी घास पर पड़ी ओस-बिंदुओं पर नंगे पाँव घूमने से आँखों की ज्योति बढ़ती है। प्रात:कालीन सैर स्वास्थ्य-निर्माण करने का सर्वोत्तम उपाय है। यह सस्ता भी है, मीठा भी। जिसके लिए न डॉक्टर को पैसे देने पड़ते हैं और न उसकी कड़वी दवाइयों का सेवन करना पड़ता है। प्रात:कालीन भ्रमण से मनुष्य किसी भी कारण खोए हुए स्वास्थ्य को पुन: प्राप्त कर सकता है।

61. विद्यालय में वन-महोत्सव

संकेत बिंदु : • वृक्षारोपण कार्यक्रम का महत्त्व • विद्यालय के अनेक कार्यक्रम • मुख्य कार्यक्रम का वर्णन • हमारे मन पर प्रभाव।

प्रकृति सदैव मनुष्य की सहचरी रही है, किंतु जब मनुष्य ने अपने हित के लिए प्रकृति का दोहन आरंभ किया, तो कठिनाई उत्पन्न हो गई और अनेक दुष्परिणाम सामने आए। विश्व ने गंभीरता को समझा, अनेक सजग प्रयास आरंभ हुए और पाँच जून का दिन विश्व पर्यावरण के रूप में मनाया जाने लगा। हमारे विद्यालय में भी पर्यावरण सुरक्षा-संबंधी अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है-वृक्षारोपण कार्यक्रम। इस वर्ष यह वन-महोत्सव कार्यक्रम चार अगस्त को मनाया गया। प्राइमरी कक्षाओं में प्रकृति से संबंधित चित्रकला प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। माध्यमिक कक्षाओं में कविता-कहानी-नाटक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। उच्च कक्षाओं द्वारा मुख्य कार्यक्रम असेंबली में किया गया। लगभग एक घंटे के कार्यक्रम में नृत्य-नाटिका के माध्यम से प्रकृति एवं पर्यावरण सुरक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया। मुख्य अतिथि हमारे क्षेत्र के मंत्री महोदय थे। उन्होंने एक संक्षिप्त भाषण दिया और फिर वह क्षण आ ही गया जिसकी प्रतीक्षा में हम सब थे। मंत्री महोदय, प्रधानाध्यापिका जी और अन्य गणमान्य अतिथियों ने कुछ पौधे लगाए। विशेष आकर्षण यह था कि सभी छात्रों को एक-एक पौध दी गई। समाज में जागरूकता फैलाने का इससे अच्छा उपाय और क्या हो सकता है? हम सब बहुत उत्साहित थे, मानो अपने मित्र को अपने साथ घर लिए जा रहे हों। वह दिन बीत गया, किंतु हमारे जीवन को सदा के लिए और समृद्ध बना गया।

62. मेरे जीवन का लक्ष्य

संकेत बिंदु : • जीवन में लक्ष्य क्यों? • मेरा लक्ष्य • कारण • लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास।

एक नाव को यदि यूँ ही सागर में छोड़ दिया जाए तो वह दिशाहीन हो भटकती रहती है। उसका अंत क्या होगा, कोई नहीं जानता। उसी प्रकार मनुष्य जीवन भी यदि दिशाहीन हो तो वह अनिश्चितता के सागर में गोते खाता रहता है और कहीं भी पहुँच नहीं पाता। अत: हम सबको जीवन में आगे बढ़ने के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। मेरा एक सपना है कि मैं डॉक्टर बनूँ। वैसे तो कई व्यवसाय हो सकते हैं, जिससे मैं धन कमा सकता हूँ, लेकिन डॉक्टर बनकर मैं धन कमाने के साथ-साथ मानवता के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्ति भी कर पाऊँगा, ऐसा मेरा मानना है। जब भी मैं डॉक्टरों द्वारा मरीजों को संतुष्टि पहुँचाते देखता हूँ तो मेरी इच्छा और भी बलवती हो जाती है। इसके लिए मुझे बहुत पढ़ना होगा। डॉक्टरी शिक्षा प्राप्त करने के लिए बहुत धन भी ख़र्च करना होगा, साथ ही इस महान लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपने आराम और सुविधाओं का त्याग भी करना होगा, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे लगता है कि एक डॉक्टर को सबसे पहले एक अच्छा इंसान होना चाहिए। विनम्रता और दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति होना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। मैंने देखा है कि एक डॉक्टर जब रोगी से प्रेमपूर्वक, सहृदयता से बात करता है तो उसका आधा दर्द तो स्वयमेव दूर हो जाता है। मैं अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़-संकल्प हूँ और इसे पाकर ही रहूँगा।

63. खेल और व्यायाम

संकेत बिंदु : • स्वास्थ्य और जीवन • खेल और व्यायाम का राष्ट्र की उन्नति में योगदान।

लोक में एक उक्ति प्रचलित है-'पहला सुख निरोगी काया।' स्वस्थ-शरीर मनुष्य-जीवन के लिए नियामत है। इसके लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है। खेल व्यायाम का एक मनोरंजक रूप है। जो आलस्य और अरुचि के कारण व्यायाम से कतराते हैं, वे भी खेलों में पूरी दिलचस्पी दिखाते हैं। खेलों से न केवल शरीर बलिष्ठ होता है, बल्कि मन भी स्वस्थ व प्रसन्न रहता है। इसी दृष्टि से हर देश अपने राष्ट्र की शिक्षा नीति में खेलों को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। स्कूलों, कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में अनेक प्रकार के 'इन-डोर' व 'आउट-डोर' खेलों के साथ व्यायामपूर्ण 'एथलेटिक' खेलों की पूरी

व्यवस्था रहती है। हमारे देश के खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर व वहाँ अपनी खेल-प्रतिभा की छाप लगाकर देश का गौरव बढ़ाते हैं। सरकार की ओर से भी प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

64. विद्यार्थी जीवन

संकेत बिंदु : • भारत की प्राचीन विद्या पद्धति • वर्तमान शिक्षा प्रणाली • विद्यार्थी जीवन में विकास की प्रक्रिया • आज का विद्यार्थी जीवन और यथार्थ।

विद्यार्थी-जीवन उन विद्याओं, कलाओं या शिल्पों के शिक्षण का काल है, जिनसे वह छात्र-जीवन के अनंतर पारिवारिक दायित्वों का वहन कर सके। अत: यह संघर्षमय संसार में आन, मान और शान से जीने की योग्यता का निर्माण करने का समय है। इन सबके निमित्त ज्ञानार्जन करने, शारीरिक और मानसिक विकास करने, नैतिकता द्वारा आत्मा को विकसित करने की स्वर्णिम अवधि है विद्यार्थी जीवन। प्रश्न यह है कि क्या आज का शिक्षार्थी सच्चे अर्थों में विद्यार्थी-जीवन का आनंद ले रहा है? इसका उत्तर नहीं में होगा। कारण, उसे अपने विद्यार्थी-जीवन में न तो ऐसी शिक्षा दी जाती है, जिससे विद्यार्थी जीवन पार करते ही आय का स्रोत प्रारंभ हो जाए और न ही उसे वैवाहिक अर्थात् पारिवारिक जीवन जीने की कला का पाठ पढ़ाया जाता है। इसलिए जब वह विद्यार्थी जीवन से अर्थात् गैर-ज़िम्मेदारी से पारिवारिक जीवन अर्थात् संपूर्ण ज़िम्मेदारी के जीवन में पदार्पण करता है तो उसे असफलता का ही मुँह देखना पड़ता है। विद्यार्थी-जीवन में विद्यार्थी अनुपयुक्त बहुविध विषयों का मस्तिष्क पर बोझ लादता है। आज का विद्यार्थी-जीवन विद्या की साधना, मन की एकाग्रता और अध्ययन के चिंतन-मनन से कोसों दूर है। आज का विद्यार्थी-जीवन प्रेम और वासना के आकर्षण का जीवन है। वह गर्लफ्रेंड, बॉयफ्रेंड बनाने में रुचि लेता है। व्यर्थ घूमने-फिरने, होटलों-क्लबों में जाने, सिनेमा देखने में समय का सदुपयोग मानता है। आवश्यकता है इसे सही राह दिखाने की, सही मार्गदर्शन की और एक ऐसी शिक्षा-प्रणाली की, जो वास्तव में विद्यार्थियों को एक सफल नागरिक व ज़िम्मेदार पारिवारिक सदस्य बनने में सहायता प्रदान करें।

65. युवा चेतना और समाज

संकेत बिंदु : • आर्थिक स्थिति • मानसिक हताशा • दूषित शिक्षा प्रणाली • समाधान।

युवक किसी भी देश अथवा समाज के भविष्य के दर्पण होते हैं तथा एक अनुशासित, प्रशिक्षित और कर्मठ युवा-वर्ग हमेशा ही उस देश की चेतना और कर्म-स्रोत होते हैं। उनमें उत्साह और स्फूर्ति की ललक तथा शक्ति का असीम भंडार होता है। आज ही नहीं, प्राचीन काल से ही युवाओं की गरिमा सर्वविदित और सर्वमान्य रही है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। चाहे भगत सिंह हों या चंद्रशेखर आज़ाद, इनकी कुर्बानी भुलाई नहीं जा सकती। विडंबना यह है कि हमारा युवा वर्ग आज दिग्भ्रमित हो रहा है। जहाँ एक तरफ उसके साथ एक गौरवशाली परंपरा जुड़ी रही है, वहीं दूसरी ओर विध्वंसक, तोड़फोड़ और हिंसा के काले कारनामे अब उनके नाम के साथ जुड़ते चले जा रहे हैं। युवाओं में पनप रही हिंसा, लूट और तोड़-फोड़ की प्रवृत्तियों का सबसे बड़ा कारण आर्थिक है। बेरोज़गारी से त्रस्त युवकों के लिए मौका मिलते ही उनका हिंसा, आगजनी और लूटपाट से प्रेरित हो जाना बहुत आसान होता है। आए दिन शहरों में हो रहे हिंसा के विस्फोट के तात्कालिक कारण जो भी हों, उनकी विकरालता और व्यापकता को देखते हुए स्पष्ट हो जाता है कि इसकी जड़ें सामाजिक, प्रदर्शित आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर अधिक गहरी हैं। युवकों को दिशाहीन और अनुशासनहीन बनाने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली और हिंदी फिल्मों में ग्लैमर का कम दोष नहीं है। आज आवश्यकता है युवाओं के लिए उचित निर्देश की, जिसके लिए हमें अधिक-से-अधिक प्रयत्न करने होंगे।

66. विद्यार्थी और अनुशासन

संकेत बिंदु : • अनुशासन का अर्थ और महत्त्व • अनुशासन की प्रथम पाठशाला–परिवार • व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए अनुशासन आवश्यक • अनुशासन–एक महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य।

अनुशासन का अर्थ है–आत्मानुशासन अर्थात् स्वत: प्रेरणा से शासित होना। प्रकृति का समस्त कार्य–व्यापार अनुशासन की सूचना देता है। नियमित जीवन जीने का प्रयत्न ही अनुशासन है। अनुशासन किसी वर्ग या आयु विशेष के लोगों के लिए ही नहीं, अपितु सभी के लिए परम आवश्यक होता है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का विशेष महत्त्व है। जो विद्यार्थी जीवन में उचित अनुशासन में रहकर समय व्यतीत करता है, उसका जीवन–क्रम एक ऐसे व्यवस्थित तथा सफल मार्ग पर चलने का अभ्यस्त हो जाता है कि वह विद्यार्थी जीवन में सफलता और सम्मान तो पाता ही है, भविष्य के लिए मार्ग निर्धारण में भी सफल होता है। अनुशासन विद्यार्थी के जीवन में व्यवस्था का वातावरण बनाता है। इससे नियमित रूप से कार्य करने की क्षमता का विकास होता है। अनुशासन द्वारा कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित ज्ञान होता है। यह एक ऐसा गुण है जिससे मनुष्य सर्वप्रिय बन जाता है। वास्तव में विद्यार्थियों के लिए अनुशासन एक महत्त्वपूर्ण जीवन–मूल्य है। इसके अभाव में विद्यार्थी का जीवन शून्य बन जाता है। अपने भावी जीवन को आनंदमय बनाने के लिए विद्यार्थियों के लिए यह अति आवश्यक है कि वे अनुशासन में रहें। अनुशासन और सफलता का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। जहाँ अनुशासन है, वहीं सफलता है और जहाँ अनुशासनहीनता है, वहाँ असफलता है।

67. पुस्तकालय

संकेत बिंदु : • पुस्तकालयों का महत्त्व • पुस्तकालयों की उपयोगिता • पुस्तकालयों की आवश्यकता।

ज्ञान–विज्ञान की निस्सीम प्रगति के साथ पुस्तकालयों की सामाजिक उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। युग–युग की साधना से मनुष्य ने जो ज्ञान अर्जित किया है, वह पुस्तकों में संकलित होकर पुस्तकालयों में सुरक्षित है। वे जनसाधारण के लिए सुलभ होती हैं। पुस्तकालयों में अच्छे स्तर की पुस्तकें रखी जाती हैं; उनमें कुछ एक पुस्तकें अथवा ग्रंथमालाएँ इतनी महँगी होती हैं कि सर्वसाधारण के लिए उन्हें स्वयं खरीदकर पढ़ना संभव नहीं होता। यह बात संदर्भ ग्रंथों पर विशेष रूप से लागू होती है। बड़ी–बड़ी जिल्दों के शब्द–कोशों और विश्वकोशों तथा इतिहास–पुरातत्व की बहुमूल्य पुस्तकों को एक साथ पढ़ने का सुअवसर पुस्तकालयों में ही संभव हो पाता है। इतना ही नहीं, असंख्य दुर्लभ और अलभ्य पांडुलिपियाँ भी हमें पुस्तकालयों में संरक्षित मिलती हैं। आज आवश्यकता है कि नगर–नगर में अच्छे और संपन्न पुस्तकालय खुलें और देश की युवा प्रतिभाओं के विकास के सुअवसर सहज सुलभ हों।

68. समाचार–पत्र

संकेत बिंदु : • समाचार–पत्र प्रभावी संचार साधन • समाचार–पत्र का कार्य जनमत तैयार करना • समाचार–पत्र का महत्त्व।

आज विश्व में समाचार–पत्रों का प्रकाशन सर्वाधिक प्रचलित और प्रभावी संचार साधन माना जाता है। हिंदुस्तान का सबसे पहला समाचार–पत्र 'इंडिया गजट' नाम से निकला था। तब से मुद्रण तकनीक के विकास के साथ–साथ समाचार–पत्रों का प्रकाशन तथा जन–वितरण आजतक निरंतर प्रगति के पथ पर है। आज अंग्रेज़ी एवं हिंदी भाषा के अतिरिक्त सभी क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार–पत्रों का प्रकाशन काफ़ी ज़ोरों पर है। ये समाचार–पत्र राजनीतिक, सामाजिक, व्यावसायिक क्षेत्र की अद्यतन सूचनाएँ देकर जनमत तैयार करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। एक तरह से इन समाचार–पत्रों को समय की आँख और समाज की नब्ज़ कहा जाता है। समाचार–पत्र जन–जीवन की वास्तविकताओं को उजागर करके सत्ता का ध्यान आकर्षित

करते हैं और सत्ता की नीतियों का आकलन कर समाज के सामने रखते हैं। एक प्रकार से स्वस्थ पत्रकारिता के माध्यम से वे जनता और सत्ता के बीच एक मज़बूत कड़ी की भूमिका निभा सकते हैं। अख़बार की ताकत का इज़हार इन शब्दों में दर्शनीय है :

''खेंचो न कमान-ओ-खंजर, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अख़बार निकालो॥''

69. कलम और तलवार

संकेत बिंदु : • महान शक्ति • दोनों की तुलना • विद्वान सर्वपूज्यते • कलम की महत्ता तलवार से कहीं अधिक।

कलम और तलवार की महान शक्ति से कौन अपरिचित है? दोनों में एक ऐसी तीखी धार है, जिसको सभी जानते हैं। आज के इस 'एटम' युग में भी इनके कार्य प्रशंसा पाते हैं। ऊपरी दृष्टि से देखा जाए तो दोनों में से तलवार ही अधिक शक्तिशाली प्रतीत होती है, किंतु दोनों की तुलना करने पर ही इनकी वास्तविकता का सच्चा ज्ञान हो सकता है। तलवार की प्रसिद्धि उसकी संहारक शक्ति के कारण है, तो कलम अपने प्रभावोत्पादकता के गुण के कारण लोगों के दिलों पर राज करती है। जहाँ तलवार बड़े-बड़े विशाल साम्राज्यों को जीतने की क्षमता रखती है, वहीं कलम में भी ऐसी अद्भुत शक्ति विद्यमान है, जिसने बड़े-बड़े संगदिल राजाओं को मोम-दिल का बना दिया। राष्ट्र के झंडे को ऊँचा-नीचा करने वाली यह दोनों शक्तियाँ वैसे तो प्रशंसा की अधिकारिणी हैं, पर यह तो कहना ही पड़ेगा कि लेखनी योद्धा 'लेखक' तलवार के धनी 'सिपाही' से अधिक मान पाता है। लेखक विद्वान होता है और विद्वान 'सर्वत्रपूज्यते' हैं। एक लेखक का शस्त्र है उसकी कलम और उसका युद्ध स्थल केवल उसके साहित्य का मैदान ही होता है, जहाँ वह रक्त के स्थान पर स्याही का प्रयोग करता है और विजय की पताका सर्वदा लहराता है। इसके विपरीत एक सिपाही अपने अस्त्र 'तलवार' को लेकर युद्ध क्षेत्र में खून की नदियाँ बहाता है और विजय प्राप्त करता है। कहते हैं-'तलवार केवल काट ही सकती है, पर कलम काटकर जोड़ भी सकती है।' तलवार केवल क्रोध और रोष का विष पिलाकर मनुष्य की प्यास को शांत करती है, जबकि कलम प्रेम और सहानुभूति का अमृत पिलाकर हृदय पर शांति का साम्राज्य फैला देती है। तलवार को उठाने वाला सर्वदा नाश की ओर बढ़ता है, जबकि कलम को उठाने वाला सत्यता के अमर पथ पर अग्रसर होता है। यही कारण है कि कलम की महत्ता तलवार से कहीं अधिक है।

70. कल्पना चावला

संकेत बिंदु : • भारत का गर्व • नासा से जुड़ना • कोलंबिया की उड़ान • जीवन में संघर्ष • भारतीयों के दिलों में विशेष स्थान।

कल्पना चावला उन सुपुत्रियों में से एक है जिन पर भारतवासियों को गर्व है। कल्पना चावला का केवल एक ही स्वप्न था कि वह अंतरिक्ष पर जाकर वहाँ से अपने देश भारत को देखे। उन्होंने अपना यह सपना पूरा किया। सितारों के बीच पहुँची कल्पना चावला स्वयं एक ऐसा सितारा बन गईं जो तब तक चमकता रहेगा जब तक धरती पर जीवन है। बचपन से ही कल्पना हवाई जहाज के मॉडल बनाया करती थीं। अंतरिक्ष पर जाने की अपनी इच्छा को उसने पूरी लग्न के साथ पूरा किया। वैमानिक इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर एम०एस०सी० की शिक्षा प्राप्त करने अमरीका के टैक्सास विश्वविद्यालय में पहुँची कल्पना चावला ने अमरीका के नागरिक ज्यां पियरे हैरिस से विवाह किया, जो स्वयं भी अंतरिक्ष वैज्ञानिक हैं। अपने पति से प्रेरणा पाकर वे 1994 में नासा से जुड़ गईं। 19 नवंबर, 1997 में अंतरिक्ष की सफल उड़ान भरकर लौटी कल्पना चावला का सभी ने स्वागत किया। दूसरी बार कल्पना चावला का चुनाव कोलंबिया की उड़ान-एस०टी०एस०-107 के लिए हुआ। वे इस यान के साथ 760 घंटे अंतरिक्ष में रही थीं। पृथ्वी के 252 चक्कर उन्होंने काटे। 16 दिन तक सितारों की दुनिया को रोशन करने के बाद जब 1 फरवरी, 2003 को वे पृथ्वी पर वापस लौट रही थीं तो कोलंबिया दुर्घटना ग्रस्त

हो गया। इस दुर्घटना में कल्पना चावला अपने छह अन्य साथियों के साथ इस संसार से हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो गईं। यह वह क्षण था, जब वे अपना नाम दुनिया के अमर लोगों में लिखा गईं। अमरीका में जीने वाली कल्पना चावला को अपना देश भारत अत्यंत प्रिय था। दिल्ली के पास स्थित करनाल नगर में पली-बड़ी कल्पना चावला को अपने जन्म-स्थान से विशेष लगाव था। वे जब भी संभव होता तब अपने लोगों के बीच आकर समय बिताना पसंद करती थीं। कल्पना चावला जीवन में संघर्ष को महत्त्व देती थीं। चुनौतियों को स्वीकारने वाला व्यक्ति ही सदैव प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकता है, ऐसा उनका विश्वास था। केवल मंज़िल को महत्त्व न देकर वे उस तक पहुँचने वाली राह को भी महत्त्वपूर्ण मानती थीं। आत्मविश्वास तथा दृढ़-संकल्प से भरी कल्पना चावला आज प्रत्येक भारतीय के दिल में अपना विशेष स्थान रखती हैं।

71. स्वस्थ जीवन के लिए व्यायाम

संकेत बिंदु : • स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन • स्वास्थ्य संतुलन के लिए व्यायाम आवश्यक • नियमित अभ्यास आवश्यक • विद्यार्थी जीवन में, व्यायाम आवश्यक • स्वास्थ्य एक अनमोल धन।

'तंदुरुस्ती हज़ार नियामत' अर्थात् अकेले स्वास्थ्य ही हज़ारों नियामतों के बराबर है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। जब शरीर स्वस्थ होता है तभी ऐसे स्वस्थ विचार उत्पन्न हो सकते हैं और उत्तम कार्य हो सकते हैं, जिनसे धन, प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य की उपेक्षा करना बिलकुल ही ठीक नहीं है। स्वास्थ्य रक्षा के कई साधन हैं लेकिन सच तो यह है कि व्यायाम ही वह साधन है जिससे स्वास्थ्य को संतुलित रखा जा सकता है। व्यायाम करने से ही मनुष्य अपने शरीर को स्वस्थ व स्फूर्तिवान बना सकता है। व्यायाम एक नियम है, इसे मनमाने ढंग से नहीं करना चाहिए। दस-पंद्रह दिनों तक ज़रूरत से ज्यादा व्यायाम करके छोड़ देने पर लाभ के स्थान पर हानि ही होती है। शुरू-शुरू में व्यायाम बहुत कम करना चाहिए। जैसे-जैसे मांसपेशियाँ अभ्यस्त होती जाएँ वैसे-वैसे इसकी मात्रा बढ़ाई जा सकती है। व्यायाम का अभ्यास किसी जानकार व्यक्ति की देख-रेख में करना ही अच्छा रहता है। जो व्यायाम कष्टकर प्रतीत हों, उन्हें बिना समझे-बूझे नहीं करना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में व्यायाम पर अधिक जोर देना चाहिए। इससे शारीरिक शक्ति बढ़ेगी, भूख लगेगी, रक्त साफ़ होगा एवं पाचन क्रिया सही होगी। इन सबका मस्तिष्क पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि स्मरण, चिंतन, तर्क और अध्ययन क्षमता भी बढ़ती है। अतः हमें स्मरण रखना चाहिए कि स्वास्थ्य एक अनमोल धन है।

72. नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका

संकेत बिंदु : • शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका • समाज और राष्ट्र के हितैषी • शिक्षा का सही उद्देश्य • आंतरिक विकास • नैतिक मूल्यों में गिरावट।

समाज में शिक्षक की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण है। बच्चों के भविष्य को सुंदर और सुदृढ़ बनाने की सारी ज़िम्मेदारी शिक्षकों की होती है। कहा भी जाता है कि शिक्षक द्वारा दिए गए ज्ञान को ही छात्र अधिक महत्त्व देते हैं। शिक्षकों की भूमिका को कबीर तथा तुलसी ने भी सराहा है। गुरु ज्ञान के द्वार होते हैं। वे ही अपने शिष्यों को सही शिक्षा देकर समाज और राष्ट्र के हितार्थ नागरिकों को तैयार करते हैं। ऐसे में नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षकों की भूमिका सबसे कारगर और प्रभावी मानी जाती है। शिक्षक ही अपने छात्रों के जीवन में ईमानदारी, सदाचार, चरित्र निर्माण तथा कर्तव्यनिष्ठा का

बीजारोपण करते हैं। माँ तो केवल उँगलियाँ पकड़कर चलना सीखाती है, लेकिन गुरु प्रारंभिक शिक्षा से उच्चतर शिक्षा तक उसके साथ रहकर उसे सही राह दिखाता है। बिना गुरु के ज्ञान की अवधारणा ही व्यर्थ है। छोटे-छोटे बच्चों को झूठ न बोलने, चोरी न करने, बड़ों का आदर करने, सभ्यता को अपनाने तथा संस्कृति से प्यार करने की शिक्षा भी तो शिक्षक ही देते हैं। बच्चों का चरित्र-निर्माण शिक्षकों के द्वारा ही होता है। बड़े-बड़े महापुरुषों ने अपने निर्माण में शिक्षकों की भूमिका को ही सर्वोपरि माना है। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में शिक्षक की भूमिका का उल्लेख किया है। वे शिक्षा को चरित्र-निर्माण के लिए अनिवार्य मानते थे। वे कहते थे-शिक्षा का सही उद्देश्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। छात्रों के उचित मार्गदर्शन में शिक्षकों की भूमिका सबसे विशिष्ट मानी गई है। शिक्षा के विषयों के अतिरिक्त शिक्षक का यह भी कर्त्तव्य है कि समय-समय पर छात्रों को सदाचार तथा सद्व्यवहार की शिक्षा दे। चरित्र के निर्माण के लिए उचित मार्गदर्शन करे। शिक्षक आदर के योग्य होते हैं, अत: उन्हें छात्रों से आदर योग्य आचरण करते हुए, उनके आंतरिक विकास पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षकों के हाथ में छात्रों के भविष्य की डोर होती है। वे उसे जिस ओर ले जाना चाहे, उसे उस ओर ले जा सकते हैं। देश के लिए नैतिक मूल्यों वाले अच्छे नागरिकों के निर्माण का दायित्व शिक्षकों पर ही है। हाल के वर्षों में नैतिक मूल्यों में जो गिरावट आई है, उसका कारण कहीं-न-कहीं हमारी शिक्षा व्यवस्था भी है। शिक्षा के व्यवसायीकरण के कारण ही ऐसा हुआ है, यह भी कहा जा सकता है। आज आवश्यकता है शिक्षकों में जागृति की।

73. भारतीय जनतंत्र का भविष्य

संकेत बिंदु : • भारत विश्व का सबसे बड़ा गणतंत्र • जनतंत्र के बिखराव के कारण • पारस्परिक सौहार्द • समस्या का समाधान।

तृतीय विश्व के देशों में भारत को सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश होने का गौरव प्राप्त है। स्वतंत्रता के पश्चात एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अन्य देशों ने भी जनतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की थी, किंतु उनमें से अधिकांश ने सैनिक, कम्युनिष्ट अथवा व्यक्तिगत तानाशाही के आगे घुटने टेक दिए। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण विडंबना ही कही जाएगी कि भारत जैसे विभिन्नता वाले देश में वामपंथी पार्टियों के अतिरिक्त विपक्ष के नेताओं के पास विभिन्न सामाजिक और आर्थिक नीतियों पर आधारित कोई कार्यक्रम नहीं है और वे घूम फिर कर (विपक्षी दल भी) एक ही तरह की नीतियों का राग अलापते रहते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता नीतियों पर आधारित न होकर, व्यक्तिगत हो जाती है जो जनतांत्रिक विचारधारा के विकास के लिए रोड़े ही हैं। भारत में जनतंत्र बिखराव का तीसरा कारण हिंसा है, जो विपक्ष और सत्ताधारी पार्टी की नीतियों में मतभेद और विद्वेषों के कारण होता है। जिनके पास कुछ अलग नीतियाँ हैं वे भी धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र पर आधारित हैं। इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ जातीय दंगे, धार्मिक टकराव और क्षेत्रीय विवादों को तो जन्म देती ही हैं, राजनीति में भी हिंसा पैदा करती हैं। हमारे जनतंत्र का एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू भ्रष्टाचार भी है और जो हर स्तर पर व्याप्त है। भाई-भतीजावाद, गरीब मतदाताओं की गरीबी का लाभ उठाने वाले लोग देश के लिए नासूर बनते जा रहे हैं। आज आवश्यकता है रूढ़िवाद, अशिक्षा, असमानता से लड़ने की।

भारत नेताओं के गलत रवैये, हिंसा, सत्ताधारी पार्टियों के मतभेद, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार आदि सभी बुराइयों से जूझ रहा है। अत: जनतंत्र के उजले भविष्य के लिए कठोर कानून बनाकर सभी को कानूनों का पालन करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

74. मदर टेरेसा

संकेत बिंदु : • जन्म व शिक्षा • नन बनना • मदर टेरेसा भारत में • मानव सेवा व निधन।

प्रेम मनुष्य को ईश्वर के द्वारा दिया हुआ वह वरदान है जिसके सहारे उसके कठिन-से-कठिन समय को भी बिताने में परेशानी नहीं होती। प्रेम भावना मानव को सच्चा मानव बताती है। मानवता के प्रति प्रेम को किसी देश, जाति या धर्म की संकुचित परिधि में नहीं बाँधा जा सकता। विश्व में मानव की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने वाली अनेक विभूतियों में से मदर टेरेसा सर्वोच्च थीं। उनका जन्म 26 अगस्त 1910 को यूगोस्लाविया के स्कोपजे नामक एक छोटे-से नगर में हुआ था। बारह वर्ष की आयु में अपने जीवन का उद्देश्य निश्चित कर अठारह वर्ष की आयु में नन बन गई। इसके लिए ये आयरलैंड के लोरेटो ननों के केंद्र में सम्मिलित हो गई। वहाँ से उन्हें भारत जाने का संदेश मिला। सन् 1929 में वे एग्नेस लोरेटो एटेली स्कूल में अध्यापिका बनने कोलकाता पहुँची। आरंभ में अध्यापिका के रूप में सेवा कार्य किया। अपनी योग्यता, कार्यनिष्ठा तथा सेवाभाव के कारण प्रधानाध्यापिका बन गई। 10 दिसंबर, 1946 को रेल से ये दार्जिलिंग जा रही थीं तो इन्हें भीतर से पुकार पर पुकार सुनाई पड़ रही थी। इन्हें लगा कि स्कूल छोड़कर गरीबों के बीच रहकर उनकी सेवा करनी होगी। इन्होंने स्कूल छोड़कर सन् 1950 में मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना की। ये दो पतली नीली किनारी वाली सफ़ेद साड़ियाँ लेकर पीड़ित मानवता की सेवा के क्षेत्र में जुट गई। सन् 1948 में इन्होंने कोलकाता में झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वालों के लिए स्कूल खोला तथा असहाय लोगों के लिए काली मंदिर के पास 'निर्मल हृदय' नामक धर्मशाला की स्थ. ापना की। मदर टेरेसा अत्यंत सहनशील और असाधारण करुणामयी थीं। रोगियों, वृद्धों, भूखे, नंगे गरीबों के प्रति इनके मन में असीम ममता थी। इन्होंने अपना सारा जीवन पीड़ितों की सेवा में समर्पित कर दिया। पीड़ित मानवता की तन-मन से सेवा करने वाली मदर टेरेसा सितंबर, 1997 को यह संसार छोड़कर हमेशा के लिए चली गईं।

75. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

संकेत बिंदु : • इतिहास में वीरांगनाओं का अस्तित्व • जन्म • बचपन • विवाह • अंग्रेज़ों के साथ मुठभेड़ • महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व • उपसंहार।

भारत भूमि वीर प्रसविनी कहलाती है। इस भूमि ने जहाँ अनेक वीरों को जन्म दिया, वहाँ इस धरती पर अनेक वीरांगनाओं ने भी आकर इसे सर्वश्रेष्ठ बनाया। इन्हीं वीरांगनाओं ने अपने कार्यकलाप से इस देश को सदा के लिए अमर बना दिया। युगों का इतिहास भी उनके अस्तित्व को नहीं मिटा सका है। साहित्य आज भी उनकी जयगाथाओं से समृद्ध है। ऐसी वीरांगनाओं में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम अग्रणी है। इस वीरांगना की स्मृति आते ही हृदय गर्व से पुलकित हो उठता है। इस वीरांगना का जन्म 19 नवंबर 1835 ई० को पुण्यशीला भगीरथी के किनारे स्थित वाराणसी में हुआ था। पिता का नाम मोरोपंत तथा माता का नाम भागीरथी था। बचपन से ही वीरगाथाएँ सुनकर पली बड़ी मन्नोबाई के मन में स्वदेश प्रेम की भावना ने जन्म लिया। बाजीराव पेशवा के पुत्र नाना जी के साथ वे राजकुमारों जैसे वस्त्र पहनकर ब्यूह रचना, तीर चलाना, घुड़सवारी करना तथा युद्ध करना आदि खेल खेलने लगीं। बड़े होने पर उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से कर दिया गया। विवाह के बाद मन्नोबाई लक्ष्मीबाई बन गई, लेकिन दुर्भाग्य कि गंगाधर राव जल्द ही काल के ग्रास बन गए। लेकिन शास्त्रीय

विधि-विधान द्वारा गोद लिए पुत्र आनंद राव को उत्तराधिकारी न मानते हुए ब्रिटिश राज झाँसी पर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। इस घटना से रानी को बहुत दुख हुआ। झाँसी पर आक्रमण होते ही रानी ने भी रण बिगुल बजा दिया। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। लगातार अंग्रेज़ों का सामना करते हुए लक्ष्मीबाई ग्वालियर की ओर बढ़ी। लगातार जूझ रही रानी को अंगेज़ों ने चैन से नहीं बैठने दिया। उन्होंने ग्वालियर के किले को घेर लिया। शत्रुओं का सामना करते हुए रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुरक्षा के लिए मोर्चे से भागी लेकिन मार्ग में आए नाले को घोड़ा पार नहीं कर पाया। तभी अंग्रेज़ी सैनिक वहाँ आए और उन्होंने लक्ष्मीबाई पर वार पर वार किए। रानी लक्ष्मीबाई ने अंतिम साँस तक अनुपम वीरता से शत्रुओं से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हो गई।

76. महात्मा गांधी

संकेत बिंदु : • गांधीजी का परिचय • जन्म • पढ़ाई-लिखाई • व्यवसाय • अंग्रेज़ों के साथ मुठभेड़ • मृत्यु • उपसंहार।

एक विद्वान ने महात्मा गांधीजी के लिए सच ही कहा था–''भविष्य में लोग विश्वास नहीं कर पाएँगे कि गांधी हमारे युग में हाड़-मांस का बना एक मानव था, देवता नहीं।''

गांधीजी ने अपने जीवन में ऐसे-ऐसे असाधारण कार्य किए कि वे अपने जीवन में ही देवतुल्य सम्मान के अधिकारी हो गए थे। गांधीजी जैसा व्यक्तित्व विश्व इतिहास में कभी-कभी जन्म लेता है। एक ऐसा व्यक्तित्व जो अपने प्रभाव से युग की धारा को मोड़ने में समर्थ होता है। बहुत कम जन्म लेते हैं। गांधीजी एक ऐसा ही व्यक्तित्व रखते थे। गांधीजी का वास्तविक नाम मोहनदास था। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर में हुआ था। गांधी के पिता करमचंद गांधी और दादा आखा गांधी विभिन्न रियासतों में दीवान का कार्य करते रहे। गांधीजी का विवाह 13 वर्ष की अल्पायु में ही कस्तूरबा के साथ हो गया। गांधीजी स्वभाव से कम बोलने वाले संकोची किस्म के युवक थे। वकालत में असफल होने के बाद उन्होंने अत्याचारी अंग्रेज़ का सामना करने की ठानी। अफ्रीका में अत्याचारी, गोरी अंग्रेज़ सरकार निरीह कालों पर जिस प्रकार का जुल्म ढा रही थी, वह गांधी के लिए असह्य था। गांधीजी ने सत्याग्रह का प्रयोग किया और इस अन्याय का मुकाबला 'अहिंसा, सदाचार, स्वावलंबन के माध्यम से किया। गांधीजी को भारी जन सहयोग मिला और उनका यह सत्य अहिंसा-सत्याग्रह का प्रयोग सफल रहा। गांधीजी भारत लौटकर आए। भारत की स्थिति दक्षिण अफ्रीका से अच्छी नहीं थी। ब्रिटिश सरकार का स्वेच्छाकार, अन्याय और शोषण पराकाष्ठा पर था। गांधीजी ने अपना कार्य शुरू किया। गांधीजी का कहना था कि आज़ादी की लड़ाई पूर्णत: अहिंसक होनी चाहिए। सिर्फ आज़ादी प्राप्त करना ही काफी नहीं है, बल्कि सामाजिक बुराइयों को दूर करना भी उतना ही आवश्यक है। गांधीजी ने छुआ-छूत, जाति-पाति, नशाखोरी आदि के विरुद्ध आंदोलन छेड़कर लोगों को जाग्रत किया। 1942 में गांधीजी ने 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' का नारा देते हुए असहयोग आंदोलन का सूत्रपात किया। जिसका परिणाम हुआ 15 अगस्त 1947 को भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हुई। 30 जनवरी 1948 के दिन हमारा दुर्भाग्य रहा जिस दिन एक व्यक्ति की नादानी की वजह से महात्मा गांधी हमें हमेशा के लिए छोड़कर चले गए।

77. डिजिटल इंडिया

संकेत बिंदु : • डिजिटल से सशक्त देश • डिजिटल इंडिया अभियान • डिजिटल क्रांति • सूचना तकनीक कंपनी।

इस देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए भारतीय सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान चलाया जा रहा है। इस मुहिम का मुख्य लक्ष्य कागजी कार्यवाही को घटाकर भारतीय नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना है। यह अभियान बहुत ही प्रभावशाली और कार्यकुशल है जो निश्चित ही बड़े स्तर पर समय और मानव श्रम की बचत करेगा। इस अभियान की शुरूआत 1 जुलाई, 2015 को की गई। इसकी शुरूआत विभिन्न प्रमुख उद्योगपतियों–टाटा समूह के अध्यक्ष साइरस मिस्त्री, आर.आई.एल. अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी तथा विप्रो अध्यक्ष अज़ीम प्रेमजी की उपस्थिति में हुई। सम्मेलन में गाँव से शहर तक भारत में बड़ी संख्या में डिजिटल क्रांति लाने के अपने विचार को साझा किया। देश में 600 जिलों तक पहुँचने के लिए सूचना तकनीक कंपनी की मौजूदगी में कई सारे कार्यक्रम रखे गए। इस अभियान से संबंधित अनेक योजनाओं को लागू किए जाने की बात की गई जिसके लिए एक लाख करोड़ से ज्यादा रुपये लगाने का निश्चय किया गया। इसके अंतर्गत डिजिटल लॉकर, ई-स्वास्थ्य, ई-शिक्षा, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल, ई-हस्ताक्षर आदि हैं। 2019 तक इस प्रोजेक्ट को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। यह कार्यक्रम सेवा प्रदत्त तथा उपभोक्ता दोनों को फायदा पहुँचाएगा। इस कार्यक्रम की निगरानी और नियंत्रण करने के लिए डिजिटल इंडिया समूह (संचार एवं आई.टी. मंत्रालय के द्वारा संचालन) की व्यवस्था की गई है।

78. स्वच्छ भारत अभियान

संकेत बिंदु : • स्वच्छ भारत • स्वच्छता अभियान • पूर्णत: स्वच्छ बनाने का उद्देश्य • शिक्षक छात्र द्वारा पूर्ण योगदान।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक स्वच्छता अभियान है। यह अभियान 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधीजी की 145 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था। भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 2019 तक भारत को पूर्णत: स्वच्छ बनाने का उद्देश्य रखा है जो की महात्मा गांधीजी की 150वीं जयंती होगी। यह एक राजनीतियुक्त अभियान है और देशभक्ति से प्रेरित है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई, देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना आदि शामिल है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए जिम्मेदारी है कि वह अपने देश को एक स्वच्छ देश में परिवर्तित करने के लिए पूर्ण सहयोग दें। यह बड़े गर्व की बात है कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर लोगों ने पहल की है। शिक्षक और स्कूल के छात्र इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ शामिल हो रहे हैं और इस अभियान को सफल बनाने में अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं। इसी के अंतर्गत, मार्च 2017 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने एक और स्वच्छता पहल की शुरूआत की है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के सभी सरकारी कार्यालयों में चबाने वाले पान, गुटखा और अन्य तंबाकू उत्पादों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस आधार पर तय है कि यदि इसी प्रकार हमारे देश का प्रत्येक नागरिक इस अभियान से जुड़ता रहा तो इसकी सफलता में कोई शंका नहीं रह जाएगी।

• अभ्यास-प्रश्न •

दिए गए बिंदुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए :

1. छात्रों में अनुशासनहीनता

1. हड़तालें, तोड़-फोड़
2. पढ़ाई का नाश
3. मूल्यवान (समय) वर्ष की हानि–विद्या-प्राप्ति के लक्ष्य से भटकना
4. विद्यार्थी का प्रथम लक्ष्य–अध्ययन करके भविष्य का निर्माण–व्यक्तित्व का विकास–समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य का पालन–माता-पिता तथा गुरुजनों का सम्मान

2. मूल्य वृद्धि

1. प्रस्तावना
2. मूल्य वृद्धि का अर्थ एवं कारण
3. मूल्य वृद्धि के परिणाम
4. मूल्य वृद्धि : नियंत्रण के उपाय
5. उपसंहार

3. भारत की प्रमुख समस्याएँ

1. मानव-जीवन और संघर्ष में समानताएँ
2. भारत व पाकिस्तान के आपसी मतभेद
3. प्रांतवाद या संप्रदायवाद की समस्या तथा अस्पृश्यता की समस्या
4. देश में बेकारी का जन्म, मूल्य-वृद्धि व भ्रष्टाचार की समस्या
5. भारत को फिर 'सोने की चिड़िया' बनाने का प्रयास

4. मातृभाषा और उसका महत्त्व

1. विश्व के देश व उनकी मातृभाषाएँ
2. मातृभाषा का अर्थ एवं महत्त्व
3. धर्म, संस्कृति और मातृभाषा में समन्वय
4. मातृभाषा और राष्ट्र एवं मातृभाषा और शिक्षा
5. उपसंहार

5. आधुनिक युग और समाचार-पत्र

1. समाचार-पत्र का परिचय
2. समाचार-पत्र का अर्थ एवं प्रकार
3. समाचार-पत्रों की उपयोगिता
4. समाचार-पत्र के लाभ व हानि
5. उपसंहार

6. अविवेक आपत्तियों का घर है

1. अविवेक का अर्थ
2. अविवेक से जीवन में होने वाली हानि
3. विवेक प्राप्ति के साधन एवं महत्त्व
4. अनुभव विवेक का आधार
5. उपसंहार

7. हिंदुओं का प्रमुख त्योहार : दीपावली

1. त्योहारों का जीवन में महत्त्व
2. भारत त्योहारों का देश
3. दीपावली का अर्थ एवं ऐतिहासिक महत्त्व
4. दीपावली का धार्मिक व पौराणिक एवं सामाजिक व आर्थिक महत्त्व
5. दीपावली : एक सांस्कृतिक पर्व
6. दीपावली मनाने से लाभ-हानि
7. उपसंहार

8. एक सांस्कृतिक त्योहार : रक्षाबंधन

1. जीवन में त्योहारों का महत्त्व
2. रक्षाबंधन–एक सांस्कृतिक त्योहार
3. रक्षाबंधन की शुरुआत कब और कैसे?
4. वर्तमान रूप
5. त्योहार की सहृदयता को बढ़ावा कैसे?
6. उपसंहार

9. व्यायाम और खेल

1. स्वास्थ्य का जीवन में महत्त्व
2. व्यायाम और खेल में भेद
3. व्यायाम के प्रकार व पद्धतियाँ
4. खेल मनोरंजन का साधन
5. व्यायाम और खेल के लिए आवश्यक नियम
6. उपसंहार

10. मनोरंजन के आधुनिक साधन

1. मनोरंजन का अर्थ
2. मनोरंजन की आवश्यकता
3. प्राचीनकाल में मनोरंजन के साधन
4. आधुनिक काल में मनोरंजन के साधन
5. मनोरंजन और मानव जीवन का संबंध
6. उपसंहार

11. आदर्श अध्यापक

1. अध्यापक और समाज का संबंध
2. सुयोग्य और चरित्रवान अध्यापक समाज की उन्नति में सहायक
3. आदर्श अध्यापक किसे कहते हैं?
4. आदर्श अध्यापक के कर्त्तव्य
5. उपसंहार

12. हमारे गाँव

1. गाँव भारत की महत्त्वपूर्ण इकाई
2. गाँवों की दशा का चित्रण
3. आज गाँवों को सुविधापूर्ण बनाने के प्रयास
4. कृषि, यातायात के साधनों एवं विद्युत आदि में सुधार
5. हमारे गाँव हमारे लिए स्वर्ग

13. नागरिक के कर्त्तव्य और अधिकार

1. नागरिक शब्द का अर्थ
2. लोकतांत्रिक राष्ट्र में नागरिकता के भावों का महत्त्व
3. नागरिक के कर्त्तव्य–सफ़ाई, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि
4. नागरिक के अधिकार
5. अधिकारों के प्रति सजग तथा कर्त्तव्यों के प्रति ईमानदार
6. उपसंहार

14. चरित्र बल

1. चरित्र का अर्थ
2. चरित्रवान व्यक्ति–समाज का आदर्श
3. सच्चरित्रता के अभाव में मानव का स्वरूप
4. उपसंहार

15. आलस्य

1. आलस्य का अर्थ
2. आलस्य सबसे बड़ा शत्रु
3. आलस्य पराधीनता का सूचक
4. कर्मशीलता–जीवन की उन्नति का आधार
5. उपसंहार

16. क्रिकेट का खेल

1. खेलों का महत्त्व व प्रकार
2. क्रिकेट का प्रारंभ कब और कहाँ
3. क्रिकेट मैच के प्रकार एवं खेल का परिचय
4. भारत के प्रमुख खिलाड़ी
5. भारत में क्रिकेट का भविष्य

17. प्लास्टिक की दुनिया

1. विज्ञान युग का परिचय
2. धातुओं का आविष्कार
3. प्लास्टिक की उपयोगिता एवं महत्त्व
4. प्लास्टिक के प्रकार
5. प्लास्टिक से पुनर्चक्रण
6. प्लास्टिक से नुकसान
7. उपसंहार

18. भिक्षावृत्ति की समस्या

1. भिक्षावृत्ति : जीवन-निर्वाह का साधन
2. भिक्षावृत्ति के कारण
3. भिक्षावृत्ति भारतीय लोकतंत्र के नाम पर कलंक
4. भिक्षावृत्ति अनेक प्रकार के अपराधों की जननी
5. समस्या के प्रति सरकार का दायित्व
6. उपसंहार

19. सांप्रदायिकता

1. सांप्रदायिकता का अर्थ
2. अनेकता में एकता तथा धर्म-निरपेक्षता
3. सभी धर्मों का मूल मानवीय संवेदना
4. सांप्रदायिकता का कारण
5. सांप्रदायिकता देश की प्रगति के लिए घातक
6. लोकतंत्र के लिए विनाशकारी
7. उपसंहार

20. समय का सदुपयोग

1. समय अमूल्य धन
2. समय का महत्त्व
3. समय को पहचानने वाले ही सफल एवं उन्नत
4. समय के महत्त्व को न पहचानने से हानियाँ
5. समय का सदुपयोग
6. भावी जीवन की आधारशिला

21. महँगाई : एक समस्या

1. महँगाई की समस्या के कारण
2. महँगाई के दुष्प्रभाव
3. समाधान
4. नागरिकों के कर्तव्य
5. उपसंहार

22. मधुर वचन है औषधि

1. मधुर वचनों का महत्त्व
2. मधुर वचन से लाभ
3. कटुभाषी व्यक्ति निंदा का पात्र
4. मधुर वचन महापुरुषों का आभूषण
5. उपसंहार

23. भारत की राजधानी दिल्ली

1. भारत की राजधानी दिल्ली का ऐतिहासिक महत्त्व
2. अंग्रेज़ों के समय की दिल्ली
3. दिल्ली के दर्शनीय स्थल
4. बढ़ते यातायात से प्रदूषण
5. अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों का केंद्र

24. सादा जीवन उच्च विचार

1. 'सादा जीवन उच्च विचार' उक्ति का आशय
2. महापुरुषों एवं संत व गुरुओं के उदाहरण
3. उच्च विचारों का जीवन में महत्त्व
4. उच्च विचारों के अभाव में मानव जीवन की निरर्थकता

25. न्यारा प्यारा देश हमारा

1. अपना देश : अनोखा देश
2. अनोखे प्राकृतिक दृश्य, अनोखा मौसम
3. खान-पान, वेश-भूषा
4. अनेक धर्म एक संस्कृति
5. अनोखी प्रगति
6. भारत का भविष्य

26. परिश्रम सफलता की कुंजी है

1. श्रम का महत्त्व
2. सभी जीव-जंतु निरंतर श्रम करते हैं
3. कर्म से ही सफलता : एक उदाहरण
4. भाग्य और श्रम
5. परिश्रम से आगे बढ़े देश

27. दूरदर्शन

1. सामान्य परिचय, भारत में दूरदर्शन
2. उपयोगिता : शिक्षा, विज्ञान, मनोरंजन, खेल आदि
3. हानियाँ : अकर्मण्यता, व्यसन, बच्चों पर दुष्प्रभाव
4. गाँव-गाँव में प्रसार-ग्रामीण कार्यक्रम
5. दूरदर्शन का भविष्य

28. जब आए संतोष धन, सब धन धूल समान

1. संतोष क्या है? धन-संपत्ति से संतोष नहीं
2. असंतोष से मानसिक तनाव, ईर्ष्या, झगड़े
3. संतोष के लाभ
4. क्या संतोषी भी प्रगति कर सकता है? कैसे?
5. संतोषी सदा सुखी

29. मेरा प्रिय खेल

1. जीवन में खेलों का महत्त्व, प्रिय खेल का नाम
2. यही खेल क्यों प्रिय है?
3. मैदान, समय, खिलाड़ी, वर्दी, उपकरण आदि
4. खेलने का ढंग, संघर्ष
5. चुस्ती, फुर्ती, तालमेल आदि
6. भारत में/विश्व में इस खेल का भविष्य

30. हमको हैं प्यारे राष्ट्रपति हमारे

1. भारत के 13वें राष्ट्रपति का नाम, देश के सर्वोच्च पद पर
2. बचपन, शिक्षा-दीक्षा, परिवार आदि
3. साधारण से असाधारण बनने तक की यात्रा
4. प्रसिद्ध वैज्ञानिक, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ
5. सरल स्वभाव, बच्चों से प्रेम, बच्चों से बातें करना
6. आदर्श और प्रेरक जीवन, भविष्य-दृष्टि

31. गरीब की दीवाली

1. गरीब के घर दीपक नहीं जले, उस दिन तुम्हें कैसा लगा?
2. गरीब के बच्चों की आँखों के सपने जो दूसरों के घर जगमग दीवाली देख रहे थे
3. उस रात गरीब के घर में कैसा माहौल रहा होगा?
4. घर के बड़े-बूढ़ों ने अपनी जवानी के दिनों की दीवाली की क्या बातें बताई होंगी?
5. समाज और सरकार को उनके लिए क्या करना चाहिए?

32. बस अड्डे पर भीड़

1. बस अड्डे का दृश्य
2. बस अड्डे पर आपके जाने का कारण
3. टिकट-खिड़की पर यात्रियों की पंक्ति और भीड़-भाड़ से असुविधाएँ
4. यात्रियों की परेशानी और पुलिस की अपर्याप्तता
5. बढ़ती जनसंख्या समस्या की जड़ और समाधान की दिशा

33. मधुर वचन सबको सुखदायी

1. मधुर वचन के महत्त्व पर कोई सूक्ति
2. समाज-संपर्क में मधुर वचनों का प्रभाव
3. अमित्र के मन को जीतने का साधन-मधुर वचन : उदाहरण से स्पष्टीकरण
4. मधुरभाषी व्यक्ति समाज में सम्मान पाता है
5. सर्वश्रेष्ठ सामाजिक गुण है

34. पुस्तक सफलता की कुंजी है

1. पुस्तक प्रकाश देती है, रास्ते सुझाती है
2. सफलता के लिए ज्ञान और प्रेरणा देती है
3. दूरदर्शन ज्ञान भी देता है, उसका हर समय प्रयोग संभव नहीं, पुस्तक हर पल का साथी
4. पुस्तक मनोरंजन का साधन है
5. परीक्षा में ही नहीं, जीवन में भी सफलता दिलाती है पुस्तक

35. मेरा प्रिय खिलाड़ी

1. खिलाड़ी का नाम जो प्रिय है
2. खेल और खिलाड़ी के प्रति प्रेम का कारण
3. उसके खेल की विशेषताएँ
4. अन्य किसी खिलाड़ी से तुलना
5. प्रिय खिलाड़ी से क्या प्रेरणा ग्रहण करें?

36. भाग्य नहीं, कर्म फलते हैं

1. भाग्य और कर्म से तात्पर्य
2. भाग्यवादी की जीवन दृष्टि
3. भाग्य निष्क्रिय, निकम्मा और आलसी बनाता है, कर्म क्रियाशील और जागरूक
4. कर्म का दूसरा नाम भाग्य : उदाहरण
5. समाज को पुरुषार्थियों की आवश्यकता

37. परहित सरिस धर्म नहिं भाई

1. परोपकार का अर्थ और महत्त्व
2. परोपकार से सुख-शांति
3. समाज को लाभ
4. प्रकृति से उदाहरण
5. परोपकारी मानवों का कोई एक उदाहरण
6. मानवता और विश्व-शांति के लिए परोपकार

38. दहेज का दानव

1. दहेज क्या है? दहेज-प्रथा का उद्‌गम
2. आज दहेज का घिनौना रूप
3. कारण : लालच, भौतिक सुख
4. बढ़ रहे अपराध और कानून की सीमाएँ
5. निराकरण के उपाय

39. बाढ़ का विनाशकारी दृश्य

1. बाढ़ : एक प्राकृतिक आपदा
2. बाढ़ आने के कारण
3. बाढ़ का डरावना रूप, हानियाँ
4. बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का दृश्य, तबाही, क्षति
5. बाढ़ से बचाव के उपाय

40. सब दिन रहत न एक समान

1. परमात्मा का खेल
2. परस्पर विरोधी स्थितियाँ
3. कभी सुख कभी दुख
4. कभी कोई उन्नत, कभी कोई
5. न दुख में निराश हों, न सुख में इतराएँ
6. भारत की गुलामी और उन्नति का उदाहरण

41. मेरा प्रिय कवि

1. प्रिय कवि दिनकर
2. जोश और क्रांति के कवि
3. उनकी प्रसिद्‌ध रचनाएँ
4. समानता की आवाज़
5. वीरता की आवाज़

42. एक अविस्मरणीय दृश्य

1. एक छेड़छाड़ की घटना
2. चार गुंडों का लड़की को छेड़ना
3. किसी रक्षक युवक की ललकार
4. अविस्मरणीय अनुभव

43. यदि मेरी एक लाख की लाटरी निकल आए तो

1. दोस्तों, मित्रों को मिठाई खिलाना
2. मंदिर में दान देना
3. उपयोगी वस्तुएँ खरीदना
4. किताबें, कंप्यूटर, साइकिल, इनवर्टर
5. कुछ पैसा बैंक में

44. हमारी नदियाँ और हम

1. भारत की प्रसिद्‌ध नदियाँ
2. गंगा-यमुना का उपजाऊ क्षेत्र
3. गंगा को मैया कहा जाता है
4. नदी के तट पर मेले-उत्सव, मुंडन या मृत्यु के संस्कार

45. प्रगति की ओर भारत के कदम

1. भारत का सूर्योदय

2. अमरीका भारत की आर्थिक प्रगति से चिंतित
3. कंप्यूटर सॉफ्टवेयर में भारत का दबदबा
4. आउटसोर्सिंग में भारत अग्रणी
5. भारत के उद्योग-धंधे विकास की ओर

46. राष्ट्र हमारा हमको प्यारा
1. आकर्षक भौगोलिक सौंदर्य
2. प्राचीन संस्कृति
3. शांतिप्रिय राष्ट्र
4. चहुँमुखी विकास

47. मेरा प्रिय खेल
1. खेल का नाम, प्रिय होने का कारण
2. एकल या सामूहिक खेल
3. खेल से मिलने वाला सुख और आनंद
4. खेल में मेरी उपलब्धियाँ

48. दूरदर्शन
1. उपयोगिता
2. व्यापक प्रसार
3. दुरुपयोग
4. नए कार्यक्रम
5. दूरदर्शन का भविष्य

49. शिक्षक-दिवस
1. मनाने का कारण
2. समाज में शिक्षक की विशिष्ट भूमिका
3. मनाने के विविध ढंग
4. मेरे विचार में ऐसे मनाया जाए
5. शिक्षक-दिवस का संदेश

50. पुस्तक-मेला
1. आयोजन और व्यवस्था-कब, कहाँ
2. प्रमुख आकर्षक, भीड़भाड़
3. मेले में प्रकाशक, लेखक और पाठकों की विचारगोष्ठी
4. मेरी रुचि का पंडाल
5. मेरी रुचि की पुस्तकें

51. जहाँ सुमति तहँ संपति नाना
1. तात्पर्य
2. एकता और समृद्धि की मार्गदर्शिका
3. ज्ञान की राह
4. कुमति से हानियाँ
5. सुमति से विकास और प्रगति

52. भारत के राष्ट्रीय पर्व
1. पर्व और उनके अनेक रूप-जातीय, सामाजिक, राष्ट्रीय आदि
2. राष्ट्रीय पर्व-उनके मनाने के ढंग (स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, महात्मा गांधी जयंती)
3. इन पर्वों का संदेश

53. मित्रता
1. मित्रता क्या है?
2. इसका महत्त्व-सच्ची मित्रता
3. अच्छे मित्र, बुरे मित्र की पहचान
4. मित्रता से लाभ

54. कंप्यूटर
1. कंप्यूटर क्या है?
2. भारत में कंप्यूटर-इसका उपयोग तथा इसके लाभ
3. दैनिक जीवन में कंप्यूटर

55. सड़क-दुर्घटना
1. छोटे, बड़े वाहनों द्वारा यातायात-नियमों की उपेक्षा
2. असावधानी
3. नियंत्रण के लिए सुझाव

56. परोपकार
1. अपने साथ-साथ दूसरों की हित कामना
2. महापुरुषों एवं प्रकृति के उदाहरण और संदेश
3. सामाजिक जीवन में परोपकार आवश्यक क्यों?

57. राष्ट्रध्वज
1. गौरव का प्रतीक-इसका रंग-रूप
2. उत्साह और शौर्य की प्रेरणा
3. इसका सम्मान करना सबका कर्तव्य

58. मातृभूमि
1. मातृभूमि 'माँ' के समान
2. स्वाभाविक लगाव
3. मातृभूमि के प्रति हमारे कर्तव्य

59. मेरी काल्पनिक अंतरिक्ष यात्रा
1. कब-कहाँ-क्यों?
2. अंतरिक्ष से धरती का दृश्य
3. अंतरिक्ष के रोमांचक अनुभव

60. चुनाव का दिन

1. बस्ती में हलचल
2. मतदान-केंद्र का दृश्य
3. विशेष अनुभव

61. 20-20 क्रिकेट

1. यह क्रिकेट क्या है?
2. इस क्रिकेट का रोमांच
3. भारत की उपलब्धि

62. आलस किया–सफलता गई

1. आलस क्या है?
2. आलस की बुराइयाँ
3. सफलता के लिए क्या करें?

63. विज्ञान से लाभ

1. वैज्ञानिक आविष्कार और वैज्ञानिक प्रगति
2. वैज्ञानिक आविष्कार से लाभ और हानि
3. संतुलित प्रयोग आवश्यक

64. परोपकार

1. सामाजिक जीवन में महत्त्व
2. लाभ-सुख-शांति, प्रकृति से कुछ उदाहरण
3. महापुरुषों के उदाहरण

65. प्रिय मित्र

1. मित्र की आवश्यकता क्यों?
2. अच्छे बुरे मित्र की पहचान
3. मित्र के कर्त्तव्य

❑❑

2 पत्र-लेखन (Letter-Writing)

आम लोगों की यह धारणा है कि पत्र लिखने में किसी तरह का कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है, लेकिन वास्तव में पत्र-लेखन भी एक कला है। यही वह माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने स्वजन-परिजनों के बीच अपने हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति करके संतोष प्राप्त करता है। यही वह साधन है, जिसके माध्यम से दूसरों के दिलों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। अत: पत्र लिखना एक ऐसी कला है, जिसके लिए बुद्धि और ज्ञान की परिपक्वता, विचारों की विशालता, विषय का ज्ञान, अभिव्यक्ति की शक्ति और भाषा पर नियंत्रण की आवश्यकता है। इसके बिना हमारे पत्र अत्यंत साधारण होंगे। वे किसी को प्रभावित भी नहीं कर पाएँगे और हमारी अल्प-बुद्धि का प्रतीक भी बन जाएँगे। पत्र केवल हमारे कुशल समाचारों के आदान-प्रदान का ही माध्यम नहीं हैं, बल्कि उनके द्वारा आज के वैज्ञानिक युग में संपूर्ण कार्य-व्यापार चलता है। व्यावसायिक क्षेत्र में भी आज पत्रों का महत्त्व बहुत बढ़ता जा रहा है। पत्र-व्यवहार, व्यवसाय का एक अनिवार्य अंग बन गया है, इसलिए पत्र-लेखन में अत्यंत सावधानी रखनी चाहिए। पत्र लिखने तथा उसके आकार-प्रकार की पूरी जानकारी आज के संदर्भ में अत्यंत आवश्यक है।

पत्र-लेखन की विशेषताएँ

1. सरलता–पत्र की भाषा सरल, सीधी, स्वाभाविक तथा स्पष्ट होनी चाहिए। इसमें कठिन शब्द या साहित्यिक भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। उलझी हुई, अस्पष्ट तथा जटिल भाषा के प्रयोग से पत्र नीरस और प्रभावहीन बन जाता है।

2. स्पष्टता–सरल भाषा-शैली, शब्दों का चयन, वाक्य-रचना की सरलता पत्र को प्रभावशाली बनाती है। पत्र में स्पष्टता लाने के लिए अप्रचलित शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

3. संक्षिप्तता–आज मनुष्य अधिक व्यस्त रहता है, वह पत्र पढ़ने में अधिक समय देना नहीं चाहता, विशेषकर व्यावसायिक-पत्र में। पत्रों में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।

4. आकर्षकता–व्यावसायिक-पत्र सुंदर तथा आकर्षक होने चाहिए। लिखते समय स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

5. मौलिकता–मौलिकता पत्र की विशेषता होती है, पत्र में घिसे-पिटे वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए। पत्र-लेखक को पत्र में स्वयं के विषय में कम तथा प्राप्तकर्ता के विषय में अधिक लिखना चाहिए।

पत्र का प्रारूप

1. संबोधन–पत्र प्राप्तकर्ता का पता बाईं ओर लिखा जाता है, अपने संबंध के अनुसार संबोधन शब्द लिखा जाता है:

(क) अपने से बड़े पुरुषों के लिए :

पूज्य, पूजनीय, आदरणीय, माननीय, श्रद्धेय, श्री।

(ख) बड़ी स्त्री के लिए :

पूजनीया, पूज्या, आदरणीया, माननीया।

(ग) विवाहित स्त्री के लिए :

श्रीमती, सौभाग्यवती।

(घ) अविवाहित स्त्री के लिए :

सुश्री।

(ङ) अपने से छोटे के लिए :

प्रिय, प्रियवर, चिरंजीव।

(च) मित्रों के लिए :

प्रिय, प्रियवर, प्यारे, स्नेहिल, मित्रवर।

(छ) सखी के लिए :

प्रिय, प्यारी, स्नेही।

(ज) पुरुष अधिकारी के लिए :

मान्यवर, श्रीमान, महानुभाव, महोदय, आदरणीय, परमादरणीय।

(झ) स्त्री अधिकारी के लिए :

माननीया, आदरणीया, महोदया।

(ञ) व्यापार संबंधी :

श्रीमान जी, प्रिय महोदय, महोदय, महोदया, प्रिय महोदया।

2. अभिवादन–संबोधन के बाद पत्र प्राप्तकर्ता के संबंधानुसार अभिवादन किया जाता है :

(क) बड़ों को–प्रणाम, सादर प्रणाम, चरण-स्पर्श, सादर नमस्कार, नमस्ते।

(ख) छोटों को–आशीर्वाद, शुभाशीष, चिरायु हो, चिरंजीवी हो, खुश रहो, प्रसन्न रहो।

3. पत्र का विषय-वस्तु निरूपण–विषय, पत्र का प्राण है। आकर्षक तथा प्रभावशाली ढंग से आवश्यकतानुसार अनुच्छेदों में विभाजित पत्र ही लेखक के मूल उद्देश्य को सुगमतापूर्वक पूरा कर सकता है।

4. हस्ताक्षर–पत्र के अंत में लिखने वाला अपने हस्ताक्षर करता है। हस्ताक्षर न टाइप किया जाए, न ही रबर की मोहर से होना चाहिए, हस्ताक्षर अपने हाथ से और स्याही में ही होना चाहिए। हस्ताक्षर के नीचे अपने पद का उल्लेख (केवल व्यावसायिक और कार्यालयीय पत्रों में) करना चाहिए।

पत्रों के प्रकार

पत्रों को मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

1. अनौपचारिक-पत्र 2. औपचारिक-पत्र।

1. अनौपचारिक-पत्र–जिन व्यक्तियों के साथ हमारे नज़दीकी, घनिष्ठ एवं आत्मीय संबंध होते हैं, उन्हें लिखे गए पत्र अनौपचारिक-पत्र कहलाते हैं। ये व्यक्तिगत पत्र होते हैं और इनकी भाषा भी अनौपचारिक होती है। परिवार के सदस्यों तथा सगे-संबंधियों व मित्रों को लिखे जाने वाले पत्र इसी श्रेणी में आते हैं।

2. औपचारिक-पत्र–सरकारी, गैर-सरकारी तथा अर्धसरकारी, प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र, संपादक का पत्र, व्यावसायिक-पत्र आदि औपचारिक-पत्रों के अंतर्गत आते हैं।

1. अनौपचारिक-पत्र (IX)

अनौपचारिक या व्यक्तिगत-पत्रों के निम्नलिखित भेद हैं :

- निमंत्रण-पत्र
- संवेदना-पत्र
- बधाई-पत्र
- धन्यवाद-पत्र
- शुभकामना-पत्र
- सूचना, सद्भावना व अन्य पत्र।

निमंत्रण-पत्र

विवाह, जन्म-दिन, गृह-प्रवेश, उद्घाटन, पाठ, जागरण आदि अनेक मांगलिक कार्यक्रमों पर हम अपने प्रियजनों व मित्रों को आमंत्रित करने के लिए पत्र लिखते हैं। ये पत्र व्यक्तिगत भी होते हैं और सामाजिक भी। व्यक्तिगत-पत्र हम स्वयं अपने हाथों से लिखकर भेजते हैं और सामाजिक-पत्र छपवाए जाते हैं। यहाँ हम व्यक्तिगत-पत्रों के कुछ उदाहरण देखेंगे।

1. अपने भाई के जन्म-दिवस के उत्सव पर अपने मित्र को निमंत्रण-पत्र लिखिए।

418, लक्ष्मी नगर
दिल्ली-92
दिनांक : 18 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र राहुल
सप्रेम नमस्कार

बहुत दिन हुए तुम्हारा कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ। निश्चित ही तुम सभी सकुशल होंगे। राहुल पहले तुम पत्र व्यवहार में बहुत कुशल थे, लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे हो, अपने पुराने मित्रों को भूलते जा रहे हो, परंतु मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा। मित्र इस बार तुम्हें मेरे यहाँ अवश्य आना है।

तुम्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि 28 मार्च को मेरे छोटे भाई विवेक का जन्म-दिवस है। हमने उसके जन्म-दिवस पर एक उत्सव का आयोजन किया है। सायंकालीन 5 बजे जलपान की व्यवस्था है। इस अवसर पर उसके कुछ मित्र सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित करना चाहते हैं। इस कार्यक्रम द्वारा सभी का मनोरंजन होगा। मैं चाहता हूँ कि इस शुभ अवसर पर तुम अपने परिवार के साथ आओ और विवेक को आशीर्वाद दो। वैसे भी तुमसे मिले काफ़ी समय हो गया है, इसी बहाने हम एक-दूसरे के साथ थोड़ा समय गुजार लेंगे। मैंने अपने और मित्रों को भी बुलाया है, सभी एक साथ मिलकर अच्छा समय बिताएँगे, नाचेंगे, गाएँगे। बहुत मज़ा आएगा।

मुझे आशा है कि तुम इस अवसर पर अपने परिवार के साथ ज़रूर आओगे और हमारे कार्यक्रम की शोभा बढ़ाओगे।

शेष मिलने पर
तुम्हारा मित्र
अमित खन्ना

2. अपने जन्मदिन पर मामाजी को बुलाने के लिए आलोक की ओर से एक निमंत्रण-पत्र लिखिए।

सी-23, सेक्टर-31
नोएडा
दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

आदरणीय मामाजी
सादर नमस्कार

आशा है, आप सपरिवार आनंद से होंगे। हम सभी यहाँ सकुशल हैं। मामाजी इस बार ग्रीष्मावकाश पर आपसे मिलने न आ सका। इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं अपने विद्यालय के मित्रों के साथ शिमला घूमने चला गया था सो न आ सका। आप सभी की याद बहुत आई थी। हर वर्ष आपके साथ एक सप्ताह बिताकर जो आनंद प्राप्त होता है उसका वर्णन नहीं कर सकता।

समाचार यह है कि इस बार मैं अपना जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाने जा रहा हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप भी इस दिन मामीजी तथा भावेश के साथ मेरी इस खुशी में शामिल हों। मेरा जन्मदिन 20 अगस्त को है। मैं चाहता हूँ, आप 19 अगस्त को ही नोएडा पहुँच जाएँ। अगले दिन के कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने में मुझे आपके सहयोग की आवश्यकता है। मैं जानता हूँ कि आप इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन सहज ही कर लेते हैं। इस अवसर पर आपके साथ काम करके मैं आपके सानिध्य में बहुत कुछ सीखना चाहता हूँ। आशा करता हूँ कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे। मैं आपका इंतज़ार कर रहा हूँ।

आपका

आलोक

3. अपने मित्र को ग्रीष्मावकाश अपने साथ बिताने का निमंत्रण देते हुए पत्र लिखिए।

1237, मदरसा रोड

कश्मीरी गेट

दिल्ली-110006

दिनांक : 22 जनवरी, 20XX

प्रिय रवि

सप्रेम नमस्ते

आज की डाक से तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर विदित हुआ कि तुम्हारे पिताजी की विदेश यात्रा के कारण तुम्हारा ग्रीष्मावकाश में शिमला जाने का कार्यक्रम रद्द हो गया है। जैसा कि तुमको मैंने बताया था कि ग्रीष्मावकाश में हम मुंबई जा रहे हैं। हम 25 मई को वहाँ जाएँगे और एक सप्ताह वहाँ रुकेंगे। मैं जानता हूँ कि तुम भी मुंबई जाना चाहते हो। इस शहर को देखने की तुम्हारी बहुत इच्छा है, तो क्यों न तुम भी हमारे साथ ही चल दो।

मेरी इच्छा है कि यह छुट्टियाँ हम दोनों एक साथ मिलकर मनाएँ। मुंबई में हम एसलवर्ड, जुहू बीच, मरीन ड्राईव, चौपाटी, हाजी अली आदि अनेक जगहों पर घूमेंगे। पिछले साल मैं तुम्हारे परिवार के साथ श्रीनगर घूमने गया था। अतः तुम्हारे पिताजी तुम्हें हमारे साथ चलने की अनुमति दे देंगे। फिर भी यदि कोई समस्या हो तो मुझे लिखना, मैं दूरभाष पर अपने पिताजी की तुम्हारे पिता जी से बात करवा दूँगा।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

राहुल

4. अपने जन्मदिन पर मित्र को बुलाने के लिए निमंत्रण-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 26 फरवरी, 20XX

प्रिय मित्र

मधुर स्मृति

मित्र, जब से तुमने अपना विद्यालय बदल लिया है, मेरा मन ही नहीं लग रहा। हम दोनों इतने अच्छे मित्र थे कि लोग हमारी मित्रता की मिसाल दिया करते थे। सच मैं उन दिनों को बहुत याद करता हूँ और सदैव तुम्हारा साथ पाने की कामना करता रहता हूँ। तुम जानते ही हो कि मेरा जन्मदिन 3 मार्च को है। तुम्हें यह जानकर अत्यंत हर्ष

होगा कि मेरे माता-पिता इस बार भी मेरा जन्मदिन बहुत धूम-धाम से मना रहे हैं। तुम्हारे प्रिय भोजन का इंतजाम करने के साथ-साथ संगीत का आयोजन भी किया है। खूब नाचेंगे और मज़े करेंगे। सच मेरी खुशी का तो ठिकाना ही नहीं है। हमारे पुराने और मेरे नए मित्र भी आ रहे हैं। इस अवसर पर तुम्हारा यहाँ होना बहुत ज़रूरी है। यदि इस खुशी के मौके पर तुम मेरे साथ होओगे, तो मज़ा दुगुना हो जाएगा। मुझे याद है कि पिछले वर्ष किन्हीं कारणों से तुम इस अवसर पर नहीं आ सके थे, तब भी तुम्हारी कमी बहुत खली थी, अब कोई बहाना नहीं चलेगा मित्र, क्योंकि तुम्हारा साथ पाकर तो मेरी खुशी एवं उत्साह दुगुना हो जाता है। कम-से-कम चार-पाँच दिन का समय लेकर आना। हम खूब मज़े करेंगे। दिल्ली दर्शन को भी चलेंगे। चाचा जी एवं चाची जी को मेरा चरण-स्पर्श कहना। अपने छोटे भाई को प्यार।

तुम्हारी प्रतीक्षा में

तुम्हारा अभिन्न मित्र

अ०ब०स०

5. अपने भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए मित्र को निमंत्रण-पत्र लिखिए।

16/40, विवेक विहार

दिल्ली

दिनांक : 10 अप्रैल, 20XX

प्रिय मित्र करण

मधुर याद

तुम्हें सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मेरे बड़े भाई सिद्धार्थ का विवाह दिनांक 10 अप्रैल, 20XX को होना निश्चित हुआ है। बारात 9 अप्रैल को सुबह की फ्लाइट से मुंबई जाएगी। तुम्हें 8 अप्रैल तक मेरे घर अवश्य पहुँच जाना है। इन दिनों कोई परीक्षा नहीं होती, इसलिए समय के अभाव या छुट्टी न मिलने का बहाना तो नहीं होगा। अतः मैं चाहता हूँ कि तुम सही समय पर आकर हमारी खुशियों में शामिल हो जाओ।

मित्र, तुम्हारे आने से विवाहोत्सव की खुशियाँ दुगुनी हो जाएँगी। अतः अपने आगमन की तिथि के विषय में शीघ्रातिशीघ्र सूचित करना। माता जी एवं पिता जी को मेरा सादर चरण-स्पर्श कहना और अपनी छोटी बहन दिव्या को प्यार देना।

तुम्हारा दर्शनाभिलाषी

शिवा

संवेदना-पत्र

अपने मित्रों, संबंधियों या प्रियजनों को अचानक होने वाली किसी हानि पर हम जो पत्र लिखते हैं, वे पत्र संवेदना-पत्र कहलाते हैं। इन पत्रों को लिखते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी होती हैं :

- इन पत्रों की भाषा सहानुभूति से भरी हों।
- पत्र की शुरूआत दुख की अनुभूति प्रकट करते हुए होनी चाहिए।
- दुख के कारण पर टिप्पणी करते हुए हमदर्दी जतानी चाहिए।
- हमदर्दी जताने के बाद सांत्वना दी जानी चाहिए।
- सांत्वना देने के बाद धैर्य के साथ आगे बढ़ने की हिम्मत देनी चाहिए।
- अंत में अपनी सेवा या सहयोग को समर्पित करने की बात करनी चाहिए।

6. मित्र के पिता जी के असामयिक निधन पर मित्र को सांत्वना-पत्र लिखिए।

11, रोशनारा मार्ग

लखनऊ

दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

प्रिय मित्र
नमस्कार
मुझे अभी-अभी तुम्हारा दुख-भरा पत्र प्राप्त हुआ। तुम्हारे पिताजी के असामयिक स्वर्गवास के दुखद समाचार को पढ़कर मन वेदना से भर गया। मुझे स्वप्न में भी ऐसी आशा न थी कि वे हमें निराश्रित कर इतना शीघ्र स्वर्गारोहण करेंगे। खैर, जो ईश्वर की इच्छा।

पूज्य अंकलजी का मुझ पर विशेष स्नेह था। उनका मुस्कराता एवं खिला-खिला चेहरा अब भी मेरी आँखों के आगे घूम रहा है। जब पिछले दिनों मैं तुम्हारे घर आया था, तो वे देर रात तक मेरी पढ़ाई एवं भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करते रहे थे। उनके द्‌वारा दिया गया मार्गदर्शन मेरे जीवन का प्रेरणा-स्रोत बन गया है।

मित्र! अब तुम्हें बहुत हिम्मत से काम लेना होगा, क्योंकि घर की ज़िम्मेदारियाँ तुम्हारे कंधों पर आ गई हैं। पूज्या माताजी एवं अनुजा, नीरजा का विशेष ध्यान रखना होगा। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह तुम्हें और तुम्हारे परिवार को इस असीम दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे। इस संकट की घड़ी में अपने माता-पिता के साथ मैं तुम्हारे पास शीघ्र पहुँच रहा हूँ। अपने को अकेला एवं निस्सहाय मत समझना। संकट के समय में मनोबल ही कार्य करता है।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
विनय

7. छात्रावास में अस्वस्थ अपने निराश मित्र को पत्र लिखकर आने वाली परीक्षा की पढ़ाई के लिए मनोबल बढ़ाएँ।

बी 26/21 महावीर नगर
नई दिल्ली
10 जनवरी, 20XX
प्रिय मित्र मयंक
सप्रेम नमस्ते
कल तुम्हारे पिताजी से पता चला कि तुम्हारी तबियत कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रही है। आने वाली परीक्षा को लेकर तुम बहुत चिंतित हो। निराशा ने तुम्हें घेर लिया है। अब परीक्षा को केवल थोड़ा ही समय रह गया है। अतः तुम और भी अधिक अधीर हो गए होंगे। दसवीं की परीक्षा वैसे भी बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। लेकिन इस समय तुम्हें सबसे पहले अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मयंक जान है तो जहान है। मैं समझता हूँ कि तुम सबसे पहले अपना स्वास्थ्य ठीक कर लो। पढ़ाई करने के लिए शारीरिक क्षमता भी उतनी ही जरूरी है जितनी मानसिक क्षमता। एक बार अच्छे डॉक्टर से तुम्हें अपना इलाज करवाना बहुत जरूरी है। साथ ही परिवार के बीच में रहना भी। तुम्हें चार-पाँच दिन की छुट्टी लेकर घर आना होगा। अच्छे डॉक्टर का इलाज और माता-पिता, भाई का प्यार तुम्हें शारीरिक रूप से ही केवल स्वस्थ नहीं कर देगा, बल्कि मानसिक रूप से भी तुम स्वस्थ हो जाओगे।

देखो, अपने इस मित्र के रहते तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है। परीक्षाएँ अभी दूर हैं; तैयारी का पर्याप्त समय तुम्हारे पास है। वैसे भी तुम पूरे साल नियम से पढ़ते रहे हो, इसलिए कुछ दिनों के लिए आए इस व्यवधान से कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझसे जो बन पड़ेगा। मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करूँगा। वैसे भी हम सबको तुम्हारी प्रतिभा व योग्यता पर पूरा भरोसा है। हम सबकी शुभकामनाएँ, माताजी व पिताजी की दुआएँ तुम्हारे साथ हैं, फिर चिंता किस बात की? तुम्हें इस बार भी शानदार सफलता मिलेगी।

अच्छा मित्र, घर पहुँचते ही मुझे जानकारी देना। मैं तुम्हें तुरंत ही मिलने आऊँगा।
तुम्हारा शुभचिंतक
राजीव

8. नवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण अपने मित्र को सांत्वना-पत्र लिखिए।

1618, कूँचा महाजन
चाँदनी चौक, दिल्ली
दिनांक : 10 नवंबर, 20XX
प्रिय गौतम
सप्रेम नमस्कार

कल मुझे देवेश का पत्र मिला। उसने अपना तथा अपने साथियों का प्रथम-सत्र का परिणाम लिखा था। मुझे यह जानकर अत्यंत दुख हुआ कि तुम इस बार अपनी प्रथम-सत्र की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हो। इस बात की तो मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। गौतम, मुझे तुमसे यह उम्मीद न थी। आठवीं कक्षा की परीक्षा में तुमने 65 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। हो सकता है कि परीक्षा के दिनों में तुम्हारे साथ कोई परेशानी हुई होगी, लेकिन मित्र अब भी देर नहीं हुई है। यदि तुम द्वितीय-सत्र की परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर लोगे तो तुम्हें दसवीं कक्षा में जाने से कोई रोक नहीं पाएगा।

खैर, जो हुआ, सो भूल जाओ। आगे की सोचो कि किस प्रकार अब तुम्हें कठिन परिश्रम करके द्वितीय-सत्र में अच्छे अंक प्राप्त करने हैं। अब कम-से-कम 85 प्रतिशत अंक लेने का लक्ष्य बनाकर चलो। मुझे पूरा विश्वास है कि दृढ़-निश्चय कर लेने पर आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त करोगे।

आशा करता हूँ कि मुझे आपसे दूसरे-सत्र में अच्छे अंक प्राप्त करने का शुभ समाचार ही प्राप्त होगा।

तुम्हारा मित्र
अमन

9. आपके मित्र के पिता की फैक्टरी में आग लगने से करोड़ों का नुकसान हुआ है। मित्र को संवेदना-पत्र लिखिए।

1325, सेक्टर 23
ग्रेटर नोएडा
दिनांक : 25 जनवरी, 20XX
प्रिय वरुण
सप्रेम नमस्ते

राजेश से यह जानकर बहुत दुख हुआ कि तुम्हारे पिता की फैक्टरी में आग लग गई और पूरी फैक्टरी राख में बदल गई। यह एक ऐसा झटका है, जिसे सहना बहुत मुश्किल है।

वरुण, मैं जानता हूँ कि इससे तुम्हारी आर्थिक स्थिति को बहुत धक्का लगा होगा, लेकिन इस बात के लिए तो हमें ईश्वर का धन्यवाद करना होगा कि कोई जान का नुकसान नहीं हुआ। पैसा तो फिर कमाया जा सकता है, लेकिन जाने वाला इंसान वापस नहीं आता।

वरुण, यह भी अच्छा है कि तुम्हारे पिताजी ने सारी मशीनों और अन्य सामान का बीमा कराया हुआ था। अब देर-सवेर तुम्हारे पिताजी को इसका मुआवज़ा मिल जाएगा। परंतु दृढ़-संकल्प के साथ अब फिर से फैक्टरी को नए सिरे से खड़ा करना होगा।

वरुण, इस समय अपने पिता का पूरा ध्यान रखना। उनको मानसिक संबल देना। मेरी किसी भी तरह की सहायता चाहिए तो बेझिझक कहना। मैं भरसक सहयोग प्रदान करूँगा।

तुम्हारा मित्र
अमित

10. अपनी सहेली के दुर्घटना ग्रस्त होने पर सांत्वना-पत्र लिखिए।

121, दरीबा कलां,
लखनऊ
दिनांक : 12 अगस्त, 20XX

प्रिय तान्या

सप्रेम नमस्ते

आशा है, अब तुम स्वस्थ होगी। वृंदा के पत्र से यह जानकर बहुत दुख हुआ कि तुम्हारे साथ दुर्घटना घटित हो गई और तुम अस्पताल में भर्ती हो। अस्पताल का नाम सुनते ही अनेक प्रकार की कुशंकाएँ मन को घेर लेती हैं। वृंदा ने लिखा कि तुम साइकिल पर सवार होकर अपने स्कूल जा रही थी और एक ट्रक ने पीछे से तुम्हें टक्कर मार दी। भगवान का शुक्र है कि तुम्हारे गिरते ही ट्रक ड्राइवर ने ट्रक को मोड़ लिया, वरना न जाने क्या हो जाता! तान्या, तुम्हें अपना पूरा ध्यान रखना होगा। तुम्हारी स्थिति की कल्पना कर मन भय से भरा जा रहा है। पैर की टूटी हड्डी को जुड़ने में समय लगेगा, लेकिन तुम जल्दबाज़ी मत करना। डाक्टर जितना कहे उतना आराम ज़रूर करना। छोटी-मोटी खरोंचें तो जल्द ही ठीक हो जाएँगी।

सोचती हूँ, इस समय यदि मैं तुम्हारे पास आ पाती तो कितना अच्छा होता। परीक्षाएँ सर पर हैं। पढ़ाई भी करनी है सो मन को समझाना होगा।

आशा है, तुम जल्द ही अच्छी हो जाओगी। तुममें बहुत हिम्मत है। तुम अवश्य ही इस संकट का सामना पूरी बहादुरी से करोगी। माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना और छोटे भाई को प्यार।

तुम्हारी सहेली

कल्पना

बधाई-पत्र

अपने मित्र, प्रियजन व संबंधी को किसी खुशी या सफलता पर बधाई-पत्र लिखे जाते हैं।

इस तरह के पत्रों में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए :

- ये पत्र बधाई से शुरू होने चाहिए तथा शाबाशी या शुभकामना से समाप्त होने चाहिए।
- पूरे पत्र में खुशी व प्रशंसा का भाव हो।
- खुशी दिल से हो रही है, इस बात का अहसास होना चाहिए।
- सफलता के महत्त्व को भी पत्र में शामिल किया जाना चाहिए।

11. बड़े भाई का छोटे भाई को बधाई-पत्र।

24/36, मयूर विहार

दिल्ली

दिनांक : 12 दिसंबर, 20XX

प्रिय संजय

सदा खुश रहो

तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुआ कि तुम इस वर्ष अपने विद्यालय के खेलों में सर्वप्रथम पुरस्कार विजेता (Champion) घोषित किए गए हो। तुम्हें मेरी ओर से इस महान सफलता के लिए हार्दिक बधाई। मुझे तुमसे यही आशा थी। संजय! तुमने जीवन में सफलता की पहली लड़ाई तो जीत ली, अब तुम्हें दूसरी लड़ाई जो इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है और जिसे परीक्षा कहते हैं–इसी शानदार सफलता से जीतनी है। पिछली बार तुम सर्वप्रथम रहे, इस बार भी तुम मुझे अवश्य बधाई देने का अवसर दोगे और पिछली बार से भी अधिक अच्छे अंक प्राप्त कर हम सब का मस्तक ऊँचा करोगे। अब संपूर्ण शक्ति पढ़ाई में लगाकर तन-मन से जुट जाओ। हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।

ईश्वर करे तुम पहले से भी अधिक गौरव प्राप्त करो। परीक्षा समाप्त होने तक मैं घर वापस आ रहा हूँ।

तुम्हारा अग्रज

हरीश

12. अपने मित्र को उसकी वर्षगाँठ पर बधाई-पत्र।

210, एम०जी० रोड
फोर्ट, मुंबई
दिनांक : 25 अक्टूबर, 20XX

प्रिय मित्र राहुल
सप्रेम नमस्ते

वर्षगाँठ के संबंध में तुम्हारा निमंत्रण-पत्र प्राप्त हुआ। मैं तुम्हारी वर्षगाँठ भूला थोड़े ही था, जो तुम्हें याद दिलानी पड़ी। तुम्हारा पत्र मिलने के पूर्व ही मैंने तुम्हें एक छोटा-सा उपहार भेजा है। इस अकिंचन की उस छोटी-सी भेंट को यदि तुमने सानंद स्वीकार किया तो मैं अपनी मित्रता को सार्थक समझूँगा। क्या करूँ! मैं इस समय तुमसे बहुत दूर हूँ। इच्छा तो थी कि एक बार आकर तुमसे मिल लूँ, लेकिन पिताजी के अस्वस्थ होने के कारण यह संभव नहीं हो सका है। मुझे विश्वास है कि तुम बुरा नहीं मानोगे। तुम्हें अमेरिका के प्रति सदा आकर्षण रहा है। इसी से संबंधित एक पुस्तक जिसमें वहाँ की सचित्र झलकियाँ भी हैं, मैंने तुम्हारे लिए सबसे उचित उपहार समझा। मुझे विश्वास है कि उस पुस्तक से तुम्हें अमेरिका से संबंधित अनेक जानकारियाँ प्राप्त होंगी। तुम अपनी गर्मी की छुट्टियों की योजना के बारे में लिखना। अच्छा होगा कि तुम गर्मियों में मुंबई चले आओ। यहीं से कोई और कार्यक्रम बनाएँगे।

अपने माताजी और पिताजी को मेरा सादर प्रणाम कहना। अपनी वर्षगाँठ पर पुनः एक बार मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
अशोक

13. मित्र के कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उसे बधाई-पत्र लिखिए।

ई-28, भानुपार्क
मुंबई
दिनांक : 15 जुलाई, 20XX

प्रिय मित्र रमेश
सप्रेम नमस्ते

कल तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर मन प्रसन्नता से उछल पड़ा। यह तो मैं जानता ही था कि तुम अवश्य प्रथम श्रेणी से पास होगे, लेकिन प्रथम स्थान भी प्राप्त करोगे इसका अंदाज़ा न था। तुम्हारे पत्र में इस समाचार को पढ़कर हृदय असीम प्रसन्नता से भर गया। मेरे हर्ष की कोई सीमा नहीं रही। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। भगवान करे तुम इसी तरह दिन दुगुनी और रात चौगुनी प्रगति करो। तुम्हें जीवन की प्रत्येक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता रहे। तुम सदैव इसी तरह प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ते रहो। एक बार फिर हार्दिक बधाई स्वीकार करो। अपने माता जी और पिताजी को मेरा सादर चरण स्पर्श कहना न भूलना।

तुम्हारा प्रिय मित्र
योगेश

14. अपनी सखी को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर बधाई-पत्र लिखिए।

ई-109, सरस्वती विहार
दिल्ली
दिनांक : 3 सितंबर, 20XX
प्रिय अनुराधा
सस्नेह नमस्ते

अभी थोड़ी देर पहले कविता ने दूरभाष पर बताया कि तुम अपने स्कूल में हुई अंतर विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आई हो तथा तुम्हें सर्वश्रेष्ठ वक्ता भी चुना गया है। मेरी ओर से तुम्हें बहुत-बहुत बधाई। मुझे विश्वास है कि तुम भविष्य में भी इसी प्रकार अपने विद्यालय तथा अपने माता-पिता का नाम रोशन करोगी। मेरे मम्मी-पापा भी तुम्हारी इस जीत पर तुम्हें बधाई स्वरूप आशीर्वाद भेज रहे हैं। मेरी ईश्वर से भी प्रार्थना है कि वह तुम्हारा मार्ग इसी प्रकार प्रशस्त करते रहें और तुम इसी प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान स्थापित करती रहो।

अनेक शुभकामनाओं सहित

तुम्हारी सखी

अंजली

15. आप अपने मित्र के भाई की शादी पर नहीं जा सके। भाई की शादी पर मित्र को बधाई-पत्र लिखिए।

821, गोरस वाड़ी

इलाहाबाद

दिनांक : 22 सितंबर, 20XX

प्रिय आशीष

प्यार

हम सभी यहाँ कुशल से हैं और तुम्हारी कुशलता के लिए ईश्वर से कामना करते हैं। मित्र, दो दिन पहले ही मैं जर्मनी से वापस लौटा हूँ। घर लौटने पर तुम्हारे भाई रवि की शादी का निमंत्रण पत्र देखा। मुझे तुम तक समय पर न पहुँच पाने का बहुत दुख हुआ। मैं तो हमेशा ऐसे मौकों की तलाश में रहता हूँ। जब हम एक साथ मिलकर समय का आनंद ले सकें और अपने पुराने समय को याद कर ठहाके लगा सकें, पर अफसोस है कि मैं समय पर तुम्हारे पास न पहुँच सका। मित्र, उन्हीं दिनों मुझे स्कूल की ओर से जर्मन भाषा सीखने के एक सेमिनार में जर्मनी भेज दिया गया। मित्र, मैं विवाह पर उपस्थित न हो सका इसका मुझे बहुत दुख है। मैं इस बात के लिए तुमसे क्षमा चाहता हूँ। मेरी ओर से अपने भाई के विवाह की बधाई स्वीकार करो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे भाई-भाभी के वैवाहिक जीवन में सुख-समृद्धि की वर्षा हो। तुम्हारे बड़े भैया बहुत ही हँसमुख और मिलनसार हैं। वे तुम्हारी भाभी को बहुत खुशी देंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। तुम्हारी भाभी बहुत ही खुशकिस्मत हैं जिन्हें तुम्हारे परिवार में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरी ओर से उन्हें भी बधाई। तुम्हें, तुम्हारे भाई व माता-पिता को एक बार फिर मेरी ओर से बधाई।

तुम्हारा मित्र

कवींद्र

16. आपका मित्र बोर्ड की परीक्षा में प्रथम आया है, उसे बधाई-पत्र लिखिए।

16/32, शिवाजी पार्क

दादर, मुंबई

दिनांक : 30 मई, 20XX

प्रिय भरत

प्यार

कल के 'नवभारत टाइम्स' से तुम्हारी शानदार सफलता के संबंध में जानकारी प्राप्त कर मुझे जिस आनंद का अनुभव हुआ है, उसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है। मुझे विश्वास था कि एक दिन तुम अवश्य इन ऊँचाइयों को पा लोगे। तुममें जो साहस और लगन है, वह आम आदमियों से हटकर है। आज तुम्हारे माता-पिता को ही नहीं मुझे भी तुम पर बहुत गर्व है। भरत, लगन और मेहनत से निश्चित किए लक्ष्य को पाना कठिन नहीं है। यह तुमने साबित कर दिया है। उन लोगों के लिए तुम आदर्श हो जो इस ऊँचे लक्ष्य को पाना चाहते हैं।

प्रिय मित्र! अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, कि वह तुम्हें जीवन के हर क्षेत्र में सदैव सफलता प्रदान करें। इसी प्रकार तुम उन्नति के शिखर पर आगे बढ़ते रहो। अभी तो भविष्य की केवल पहली सीढ़ी पर ही तुमने कदम रखा है। भरत एक मित्र होने के नाते मैं तुम्हें सलाह देना चाहूँगा कि अपनी इन सफलताओं को पाकर विनम्रता की ओर आगे बढ़ना। आमतौर पर ऐसी सफलताएँ मनुष्य को घमंडी बना देती हैं। मेरी शुभकामनाएँ सदैव तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

प्रभात

धन्यवाद-पत्र

किसी के द्वारा हमारे लिए किए गए किसी कार्य या दिए गए उपहार के लिए धन्यवाद-पत्र लिखा जाता है। इस तरह के पत्रों में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें :

- पत्र की शुरूआत धन्यवाद से तथा अंत भी पुनः धन्यवाद से हो।
- पत्र की भाषा हृदयस्पर्शी हो। ऐसा लगे जैसे धन्यवाद हृदय से दिया जा रहा है।
- किए गए कार्य या दिए गए उपहार की प्रशंसा भी पत्र में शामिल की जाए।

जब कोई व्यक्ति हृदय से हमारा सहयोग करता है, हमें उपहार देता है या हम पर कोई उपकार करता है तो ऐसी स्थिति में धन्यवाद-पत्र लिखना शिष्टता का व्यवहार माना जाता है। आमतौर पर सभी को इस तरह के पत्र लिखने की आवश्यकता कभी-न-कभी अवश्य पड़ती है।

ऐसे पत्रों में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

1. ऐसे पत्र संक्षिप्त होते हैं।
2. ये धन्यवाद से शुरू होते हैं और धन्यवाद पर ही समाप्त होते हैं।
3. पत्र के मध्य भाग में व्यक्ति के द्वारा किए गए सहयोग या उपकार के महत्त्व पर प्रकाश डाला जाता है।
4. पत्र में केवल दिखावा न होकर गहरी आत्मीयता का भाव झलकता है।

17. आप 16/40 शक्ति नगर दिल्ली में रहने वाली प्रीति हैं। परीक्षा में विशेष उपलब्धि पर आपकी सखी 'मेधा' ने आपको बधाई भेजी है। उसे धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।

16/40, शक्ति नगर

दिल्ली

दिनांक : 3 अप्रैल, 20XX

अभिन्न हृदया मेधा

प्रेम

तुम्हारा बधाई-पत्र मिला, सफलता का आनंद दुगुना हो गया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

तुम्हारा और मेरा साथ एक लंबे समय का अनुबंध था जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। आज की मेरी इस उपलब्धि के लिए मैं तुम्हें भी कोटि-कोटि धन्यवाद देना चाहती हूँ, क्योंकि कहा जाता है कि संगति का असर हम पर अवश्य पड़ता है। एक अच्छे मित्र का साथ हमें ऊँचाइयों की ओर ले जाता है। मेधा, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि व्यक्ति की उपलब्धियों का श्रेय केवल स्वयं को ही नहीं जाता, अपितु उसकी उपलब्धि में उसके माता-पिता, इष्ट-मित्र भी उतने ही भागीदार होते हैं। मेरी अभिन्न सखी होने के नाते तुम्हारा योगदान भी कम नहीं है। यदि मुझे इष्ट-मित्रों का सहयोग और प्रोत्साहन न मिला होता, तो निश्चय ही यह परिणाम न होता। आज का दिन सच में ही मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का दिन है, लगता है जैसे मैंने आसमान छू लिया है।

अपनी सखी को याद करने और बधाई देने के लिए एक बार फिर धन्यवाद।

अपने माता-पिता को मेरा नमस्कार कहना और संपर्क बनाए रखना। अपने विषय में भी सूचना देना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में।

तुम्हारी अपनी

प्रीति

18. अपने जन्म-दिवस पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद-पत्र लिखिए।

35/40, सरस्वती विहार, दिल्ली

दिनांक : 12 जनवरी, 20XX

प्रिय रवि

सप्रेम नमस्कार

हम सपरिवार यहाँ पर कुशल है और तुम्हारे परिवार की कुशलता की ईश्वर से कामना करते हैं। मैं दो दिन से लगातार तुम्हें याद कर रहा था और आज ही तुम्हारे द्वारा भेजा हुआ पार्सल मिला। खोलकर देखा तो एक सुंदर घड़ी थी। मेरे जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में भेजे गए तुम्हारे इस उपहार को देखकर मन प्रसन्नता से भर गया। घड़ी अत्यंत ही आकर्षक व उपयोगी है। जब वह घड़ी मेरे माता-पिता व भाई ने देखी तो वे भी बहुत खुश हुए। मेरे दूसरे मित्रों ने भी इस घड़ी को देखा और सराहा। मेरा मन प्रसन्नता से खिल गया।

मित्र, मेरे जन्म-दिवस पर तुम्हारे न आने से मैं सचमुच तुमसे नाराज़ था, परंतु उपहार के साथ तुम्हारा पत्र मिला और जब तुम्हारी परेशानी का पता चला तो मन से सारी नाराज़गी जाती रही। शारीरिक अस्वस्थता से तो अच्छे-अच्छे पस्त हो जाते हैं, फिर तुम्हें तो बहुत तेज़ बुखार था। इस सुंदर उपहार के लिए धन्यवाद। वैसे इतना कीमती उपहार भेजने की क्या आवश्यकता थी? तुम्हारा स्नेह और प्रेम ही मेरे लिए काफ़ी है। मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि हमारी दोस्ती और प्यार इसी प्रकार बना रहे।

अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना। हमारी परीक्षा भी अब निकट आ रही है। अत: बीमार रहने से हमारा बहुत नुकसान है। जल्द ही मैं तुमसे मिलने आऊँगा। इस बार परीक्षा की तैयारी में मुझे तुम्हारा सहयोग चाहिए। मैं भगवान से तुम्हारे जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करता हूँ। अपने माता-पिता को सादर प्रणाम कहना। इतने सुंदर तथा आकर्षक उपहार के लिए एक बार पुन: धन्यवाद।

तुम्हारा प्रिय मित्र

विवेक

19. अपने मामाजी को पत्र लिखिए जिसमें उनके द्वारा भेजी गई कहानी की किताब के लिए धन्यवाद प्रकट किया गया हो।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 3 फरवरी, 20XX

पूज्य मामाजी

सादर चरण स्पर्श

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है आप सपरिवार कुशल-मंगल होंगे। आपके द्वारा भेजी गई रवींद्रनाथ टैगोर की कहानियों की पुस्तक मिली। मामाजी यह उपहार मेरे लिए अमूल्य है। जब मैंने इनमें लिखी कहानियाँ पढ़ीं, तो जिस आनंद का अनुभव हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मुझे इस संकलन में से 'अंतिम शिक्षा' कहानी बहुत ही अच्छी लगी। मामा जी इन कहानियों में जो गहराई है उसे वही समझ सकता है, जो साहित्य में रुचि रखता है। आपने मेरी रुचि को जानते हुए यह उपहार जो मुझे भेजा है, उसके लिए मैं आपको दिल से धन्यवाद दे रहा हूँ। घर पर मामीजी को मेरा प्रणाम कहना और दिवेश को प्यार।

आपका भाँजा

क०ख०ग०

20. खोई हुई पुस्तकें डाक से लौटाने के लिए आभार प्रदर्शित करते हुए किसी अपरिचित 'अनुराग मिश्रा' को पत्र लिखिए।

16/39, शक्ति नगर
नई दिल्ली
दिनांक : 23 फरवरी, 20XX

आदरणीय अनुराग जी
सादर अभिवादन

आज ही मुझे आपका भेजा हुआ पार्सल मिला। उस पार्सल में अपनी खोई हुई पुस्तकों को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैं सोच भी नहीं सकता था कि आज के समय में भी भले लोग हैं। अच्छे लोगों से अभी दुनिया खाली नहीं हुई है, जो अपने पैसे खर्च करके दूसरों की भलाई करते हैं। मेरे लिए ये पुस्तकें बहुत ही आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हैं। एक तो ये पुस्तकें बहुत महँगी हैं। इन्हें दुबारा खरीदने की क्षमता मुझ में नहीं है और साथ ही ये बाज़ार में आसानी से उपलब्ध भी नहीं होतीं।

मैं तो इन पुस्तकों को प्राप्त करने की आशा ही छोड़ चुका था और इन पुस्तकों के अभाव में मैं अपनी परीक्षा की तैयारी भी अच्छी तरह नहीं कर पा रहा था। खीझ और झुंझलाहट मेरे स्वभाव में बढ़ती जा रही थी, क्योंकि मैं निराशा के अंधकार में घिरता जा रहा था। ऐसे में आप मेरे लिए प्रकाश की किरण बनकर आए। आपकी इस सज्जनता ने मुझ पर उपकार ही किया है। आपकी इस सज्जनता व महानता के लिए अपने आभार को मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। आपने अत्यंत कृपा की है। इस कृतज्ञता के लिए मैं आपका आभारी हूँ। आपने यह सिद्ध कर दिया कि अच्छाई सदैव जीवित रहती है। पुनः मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

आपका शुभाकांक्षी
करन मेहरा

शुभकामना-पत्र

नववर्ष की मंगल-बेला, जन्म-दिवस, विवाह, गृह-प्रवेश आदि के लिए हम शुभकामना-पत्र लिखते हैं। ध्यान रहे शुभकामनाएँ अवसरानुकूल हों। भाषा हृदय-स्पर्शी व आत्मीयता से भरी हो।

21. विदेश यात्रा पर जाने वाले मित्र को उसकी मंगलमय यात्रा की कामना करते हुए पत्र लिखिए।

14-सी, सूर्या अपार्टमेंट्स
पटपड़गंज
नई दिल्ली-92
दिनांक : 20 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र सिद्धार्थ
सप्रेम नमस्कार

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर अत्यंत खुशी हुई कि तुम कंप्यूटर की वेब साइट डिजाइनिंग प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर विजयी रहे हो। अब तुम इस प्रतियोगिता के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने के लिए कनाडा जा रहे हो। तुम्हें मेरी ओर से हार्दिक बधाई। काफ़ी समय से तुम कनाडा जाना भी चाहते थे, यह अवसर तो तुम्हारे लिए 'आम के आम, गुठलियों के दाम' जैसा है। तुम कनाडा घूमने की अपनी चिर अभिलाषित इच्छा को भी पूरा कर लोगे तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में भाग भी ले लोगे।

मुझे विश्वास है कि तुम इस प्रतियोगिता में भी अवश्य विजयी रहोगे। दृढ़-निश्चय, लगन व परिश्रम की भावना तुम में कूट-कूट कर भरी है। तुम जिस कार्य में भी हाथ डालते हो उसमें सफलता प्राप्त करके ही रहते हो। कनाडा

में तो तुम्हारे मामाजी व मामीजी भी हैं। उनसे भी इसी बहाने तुम्हारी मुलाकात हो जाएगी। इस यात्रा में तुम्हारे साथ तुम्हारे मित्र भी जा रहे हैं, इसलिए तुम यात्रा का आनंद अच्छे से उठा सकोगे।

मैं तुम्हारी इस महत्त्वपूर्ण यात्रा पर अपनी शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ। ईश्वर तुम्हारी यात्रा को मंगलमय बनाए और तुम इस प्रतियोगिता में विजयी रहो। अपना तथा अपने देश का नाम ऊँचा करो। हमें तुम पर गर्व है।

पुन: मंगलमय यात्रा के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। चाचाजी तथा चाचीजी को चरण-स्पर्श तथा मोनू को प्यार।

सद्भावनाओं सहित
तुम्हारा अभिन्न मित्र
शैलेश

22. अपने मित्र को नववर्ष की शुभकामना देते हुए पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 25 अप्रैल, 20XX

प्रिय हरीश
सप्रेम नमस्ते

मित्र! समय के द्वार पर नया वर्ष दस्तक दे रहा है और पिछले साल को हम विदाई देकर नववर्ष का स्वागत कर रहे हैं। आज अचानक तुम्हारी याद आ गई। तुम्हारे साथ पिछली बार नए साल की पूर्व संध्या पर बहुत मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। सबने मिलकर खूब मौज-मस्ती की थी।

1 जनवरी, 20XX से शुरू होने वाला यह नववर्ष तुम्हें व तुम्हारे प्रियजनों को बहुत-बहुत मुबारक हो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह नया वर्ष तुम सभी के जीवन में सुख-समृद्धि की वर्षा करे। तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हों। तुम्हारा जीवन सुख-समृद्धि से भर जाए। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करो।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और उनसे ऐसा आशीर्वाद देने को कहना कि आने वाले वर्ष में मैं उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़कर कुछ बनने में सक्षम हो जाऊँ।

धन्यवाद
तुम्हारा प्रिय मित्र
क०ख०ग०

23. आपके मित्र के भाई के विवाह का निमंत्रण आपको मिला था। आप अपने मामा की शादी की वजह से वहाँ नहीं जा सकते। अत: अपनी विवशता बतलाते हुए मित्र को उसके भाई के विवाह की शुभकामनाएँ व्यक्त करें।

सी-2/115, जनकपुरी
नई दिल्ली
दिनांक : 18 मार्च, 20XX

प्रिय सुधांशु
सप्रेम नमस्कार

मित्र, आज ही तुम्हारे भाई के विवाह का निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। मन को प्रसन्नता हुई। अब शीघ्र ही तुम्हारे घर में भाभी के आने से रौनक आ जाएगी। घर खुशियों से भर जाएगा। तुम्हें अपने भाई के विवाह की ढेर सारी शुभकामनाएँ। मित्र, तुम तो यह जानते हो कि जिस दिन तुम्हारे भाई का विवाह है ठीक उसी दिन मेरे मामाजी का भी विवाह होना निश्चित हुआ है। मुझे मामाजी के विवाह में दस दिन के लिए अमेरिका जाना होगा। उस पूरे सप्ताह मैं यहाँ नहीं हूँ। अत: मैं तुम्हारे भाई के विवाह पर नहीं आ पाऊँगा। मुझे इस बात का बहुत अफ़सोस रहेगा। लेकिन जैसे ही मैं वहाँ से लौटूँगा तो भाभी से मिलने अवश्य आऊँगा।

मेरी ओर से अपने भाई के विवाह पर मंगलकामनाएँ स्वीकार करो। तुम्हें व तुम्हारे परिवार को इस मंगल-वेला पर एक बार फिर ढेर सारी शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र

कुणाल

सूचना, सद्भावना व अन्य पत्र

व्यक्तिगत-पत्र अनेक प्रकार के होते हैं। इन्हें भिन्न-भिन्न अनेक विषयों में बाँटा जा सकता है। कुछ पत्र सलाह व सीख देने वाले होते हैं। कुछ जानकारी देने वाले होते हैं। कुछ में केवल सूचना ही दी गई होती है। कुछ में चिंता व्यक्त की होती है तो कुछ में आदेश का भाव भी होता है। इनमें से कुछ पत्रों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :

24. अपनी दिनचर्या बताते हुए अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 22 सितंबर, 20XX

पूज्य पिताजी

चरण स्पर्श

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। यह मेरा पहला अवसर है कि मैं आपसे अलग हुआ हूँ, इसलिए आपका मेरे बारे में चिंतित होना स्वाभाविक है। आपने मेरी दिनचर्या के बारे में पूछा है, सो इस पत्र में मैं आपको इसकी जानकारी दे रहा हूँ।

यहाँ छात्रावास में हम सभी को प्रातः पाँच बजे उठा दिया जाता है। नित्य-क्रिया से साढ़े पाँच बजे निवृत्त होकर हम सभी स्कूल के बड़े-से मैदान में पहुँच जाते हैं। वहाँ शुरू होता है व्यायाम का दौर। हम सभी साथ मिलकर व्यायाम करते हैं और खेलते भी हैं। एक घंटा बीत जाने पर हम सभी फिर अपने-अपने कमरों में पहुँच जाते हैं। साढ़े छः बजे से सात बजे के बीच स्नान कर हम बिलकुल तैयार हो जाते हैं।

सात बजे नाश्ते की घंटी बजती है। आधे घंटे में वहाँ से निवृत्त होकर हम फिर अपने कमरे में चले आते हैं और फिर एक घंटे के लिए पढ़ाई करते हैं। साढ़े आठ बजे हमारा स्कूल शुरू हो जाता है। दोपहर बारह बजे की ब्रेक में हम फिर यहीं आकर खाना खाते हैं और फिर साढ़े बारह बजे तक वापस स्कूल में पहुँच जाते हैं। साढ़े तीन बजे स्कूल की छुट्टी हो जाती है। फिर अपने कमरे में आकर हम आराम करते हैं। पाँच बजे नाश्ते की घंटी बजती है। नाश्ता करने के बाद सात बजे तक का समय हमारे खेलने के लिए निश्चित है। सात से नौ बजे तक अध्ययन करने के पश्चात रात का खाना खाया जाता है और रात दस बजे सभी छात्रों को अनिवार्य रूप से सो जाना पड़ता है।

पिताजी, हमारे छात्रावास के अधीक्षक हमारा बहुत ख्याल रखते हैं और हमें किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं होने देते। मैं अपने आप को यहाँ स्वस्थ महसूस करता हूँ। मेरा मन भी यहाँ लग गया है। क्रिसमस की छुट्टियों में मैं घर आऊँगा। माताजी को मेरा प्रणाम कहना तथा छोटे भैया को प्यार।

आपका प्रिय पुत्र

क०ख०ग०

25. प्रातःकालीन सैर के लाभों का वर्णन करते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

छात्रावास

मुंबई विश्वविद्यालय

दिनांक : 11 नवंबर, 20XX

प्रिय दिनेश

शुभाशीष

ईश्वर की कृपा से मैं यहाँ पर कुशलपूर्वक हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ स्वस्थ और प्रसन्न होगे। जैसा कि

तुमने मुझसे वादा किया था, अब तुम नियमित रूप से पढ़ाई कर रहे होगे तथा माताजी और पिताजी का कहना मानते होगे। दो रोज़ पहले पिताजी के पत्र से पता चला कि तुम कक्षा में प्रथम आए हो। पढ़कर मन प्रसन्न हुआ। इस सफलता पर तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। पिता जी ने यह भी लिखा है कि तुम अब आगे मेडिकल में प्रवेश पाना चाह रहे हो सो देर रात तक पढ़ते हो और सुबह देर तक सोते हो। खाना भी ठीक समय पर नहीं खाते। लेकिन मेरे भाई, इस प्रकार तो तुम अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लोगे। यह तुम भली प्रकार जानते हो कि बिना स्वास्थ्य के जीवन में प्रगति संभव नहीं।

स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए यह आवश्यक है कि समय पर सोकर समय पर उठो। ऐसे में प्रात:काल यदि सैर करना शुरू कर दोगे तो यह तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक होगा। प्रात:कालीन भ्रमण से शरीर स्वस्थ व निरोगी बना रहता है। सूर्योदय से पहले की वायु जो कि प्रदूषण रहित होती है, स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपयोगी होती है। प्रात:कालीन भ्रमण एक व्यायाम के समान है। इससे तुम्हारा शरीर हृष्ट-पुष्ट रहेगा और पूरा दिन तुम अपने आप को तरोताज़ा महसूस करोगे।

मैं विश्वास करता हूँ कि तुम्हें मेरा सुझाव पसंद आया होगा और अब तुम इसे अपनी दिनचर्या का अंग बना लोगे। माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा शुभचिंतक
राजीव

26. अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर अध्ययनशील होने की सलाह दीजिए।

21/24, मदरसा रोड
कश्मीरी गेट
दिल्ली
दिनांक : 15 अप्रैल, 20XX

प्रिय राहुल
शुभाशीष

कल तुम्हारे छात्रावास से तुम्हारे मित्र का पत्र प्राप्त हुआ। शायद तुम समझ ही गए होंगे कि उसने यह पत्र क्यों लिखा था। आजकल तुम्हारी संगति बिगड़ रही है और तुम्हारा ध्यान पढ़ाई से हटकर अन्य शरारतों की ओर जा रहा है, यह जानकर बड़ा दुख हुआ। भाई, तुम यह भली-भाँति जानते हो कि तुम्हें छात्रावास में भेजने का मूल उद्देश्य क्या था। पिता जी चाहते हैं कि तुम पढ़-लिखकर बड़े अफ़सर बनो और इसके लिए तुम्हें अध्ययन करना होगा।

अध्ययनशील व्यक्ति ही जीवन में कुछ बन सकता है। अध्ययन केवल तुम्हारी ज्ञान वृद्धि ही नहीं करता, बल्कि तुम्हें सही रास्ता दिखाकर कुसंगति से भी बचाता है। अध्ययन का अपना एक अलग ही आनंद है। अध्ययन हमें आम लोगों की श्रेणी से ऊपर उठा देता है। अध्ययनशील व्यक्ति जीवन में तरक्की करते हैं और उच्च स्थान को प्राप्त करते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम निश्चित ही मेरे द्वारा कही बातों पर अमल करके अध्ययनशील बनोगे।

तुम्हारा शुभचिंतक
सुनील

27. किसी पर्यटन स्थल की यात्रा पूरी करके विद्यालय में सकुशल पहुँच जाने की सूचना पत्र द्वारा अपने पिता जी को दीजिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 22 जुलाई, 20XX

पूज्य पिता जी
चरण स्पर्श

पर्यटन स्थल की यात्रा पूरी करके आने पर आपका पत्र मिला। आपने लिखा है कि छात्रावास में पहुँचते ही आपको

अपनी यात्रा के विषय में सूचना दूँ। सो पिताजी आगरा की यह यात्रा बहुत ही मनोरंजक व ज्ञानवर्धक रही। आगरा में सबसे अच्छा मुझे 'ताजमहल' लगा। इसके बारे में जितना मैंने आज तक पढ़ा था, इसका सौंदर्य उससे भी कहीं बढ़कर है। चंद्रमा की छिटकी चाँदनी में इसकी सुंदरता देखते ही बनती है। यह मुमताज महल की स्मृति में शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया है। कुछ इतिहासकार इसे महाराजा जयसिंह का प्राचीन किला बताते हैं। यह समूचा महल संगमरमर का बना हुआ है। यह यमुना नदी के किनारे पर बना है। ताजमहल के द्वार से लेकर मुख्य भवन तक सड़क के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े सरों के वृक्षों की पंक्ति तथा इनके बीच लगे फव्वारों की शोभा देखते ही बनती है। आगे संगमरमर के विशाल चबूतरे पर इस महल का निर्माण किया गया है। चबूतरे के चारों कोनों पर चार गगनचुंबी मीनारें हैं। इस विशाल भवन के बीचों-बीच शाहजहाँ और मुमताज की कब्रें हैं, पर उनकी असली कब्रें ठीक इनके नीचे तहखाने में हैं।

पूर्णिमा की चाँदनी रात में हमने इस महल के अद्वितीय सौंदर्य को देखा। महल की शिल्पकारी और नक्काशी देखकर इसके निर्माता कारीगरों की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जाता। पिताजी आप भी अवश्य माता जी को लेकर इस अद्भुत सौंदर्य को देख आएँ, तभी आप मेरे आनंद का अनुभव कर सकेंगे। बस पत्र अब यहीं समाप्त करता हूँ। माता जी को मेरा प्रणाम कहिएगा।

आपका सुपुत्र
अ०ब०स०

28. कुसंगति से बचने की शिक्षा देते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

27, मॉडल टाउन
दिल्ली
दिनांक : 1 जून, 20XX

प्रिय सूरज
शुभाशीष

आज ही पिताजी का पत्र प्राप्त हुआ। पत्र से ज्ञात हुआ कि आजकल तुम पढ़ाई पर ध्यान न देकर बुरे दोस्तों की संगति में अपना समय बर्बाद कर रहे हो। पिताजी के द्वारा चिंता करना स्वाभाविक है। सूरज, तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि कुसंगति पैरों में पड़ी वह बेड़ी है, जिसमें जकड़कर मनुष्य की प्रगति पंगु हो जाती है। मनुष्य की सही पहचान उसके मित्र ही होते हैं। यदि तुम बुरे मित्रों के साथ रहोगे, तो उनके दुष्प्रभावों से बच नहीं सकते। समय बहुत मूल्यवान है। बीता समय फिर लौटकर नहीं आता। 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' वाली उक्ति तो तुम्हें ध्यान होगी। इसलिए समय रहते ही सँभल जाने में तुम्हारी भलाई है। जिन्हें तुम मित्र समझ रहे हो, वे वास्तव में तुम्हारे शत्रु हैं। ये तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेंगे।

अभी भी देर नहीं हुई है। परीक्षाएँ तीन महीने बाद शुरू होने वाली हैं। इसलिए अपने इन तथाकथित मित्रों से विदा लो और अपने भविष्य को सँवारने में जुट जाओ। मुझे विश्वास है कि तुम हम सभी को निराश नहीं करोगे और न ही भविष्य में फिर शिकायत का अवसर दोगे।

तुम्हारा भाई
रवि

29. बड़े भाई की ओर से छोटे भाई को पत्र, यह समझाते हुए कि फैशन में रुचि न लेकर पढ़ाई की ओर ध्यान दे।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 25 मार्च, 20XX

प्रिय अर्जुन
शुभाशीष

माताजी के नाम लिखा हुआ तुम्हारा पत्र आज ही प्राप्त हुआ, जिसमें तुमने अपने लिए कुछ अधिक रुपयों की माँग की

है। इतने अधिक रुपये की माँग ने माताजी, पिताजी और साथ ही मुझे भी चिंता में डाल दिया है। इस संदर्भ में तुम्हें पत्र लिखने की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गई है। मैं जानता हूँ कि तुमने ये रुपये क्यों मँगवाए हैं? तुम्हारे मित्र से मुझे यह पता लग चुका है कि आजकल तुम फैशन की दौड़ में शामिल हो गए हो। दूसरों की देखा-देखी तुम भी नए फैशन के जूते और कपड़े खरीदना चाह रहे हो, लेकिन यह हम जैसे साधारण परिवार के लोगों के बस की बात नहीं है। वैसे भी फैशन तो एक हवा का झोंका मात्र है, हर पल बदलता रहता है। यदि तुम इसकी तरफ़ अपना ध्यान लगाओगे तो निश्चित ही अपने मार्ग से विचलित हो जाओगे। जीवन की यह तड़क-भड़क तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेगी। पथ-भ्रष्ट होकर तुम अपनी मंज़िल तक कभी नहीं पहुँच पाओगे। यह ध्यान रहे 'सादा जीवन उच्च विचार' ही जीवन का ध्येय होना चाहिए। इस पर चलकर ही तुम सफलता के सोपान पर पहुँच पाओगे। परिवार वालों की उम्मीदें तुम पर ही लगी हुई हैं। वे समझते हैं कि तुम ही इस घर की आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाओगे। हर वर्ष प्रंथम आने वाले तुम, यदि भटक गए तो इस परिवार का क्या होगा?

मैं चाहता हूँ कि तुम समय रहते ही सँभल जाओ। इस फ़िज़ूलखर्ची को छोड़कर अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान दो और अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने का प्रयत्न करो।

माताजी और पिताजी की तरफ़ से शुभाशीर्वाद। पत्र का उत्तर शीघ्र देने का प्रयत्न करना।

तुम्हारा भाई
अ०ब०स०

30. छात्रावास से अपने पिता को एक पत्र लिखिए।

छात्रावास
डी०ए०वी० स्कूल
नई दिल्ली
दिनांक : 15 फरवरी, 20XX

परम पूज्य पिताजी
सादर प्रणाम

आपको विदित हो कि मैं यहाँ सानंद हूँ। जिस दिन आप मुझे यहाँ छोड़कर गए, मेरा मन बहुत उदास हो गया था। घर की बहुत याद आ रही थी। बार-बार आँखों में आँसू आ रहे थे। मन को समझाते हुए मैंने अपना नया दिन शुरू किया और अब समय बदल गया है।

मैंने अपने स्वभाव से मिलते कई सहपाठियों को अपना मित्र बना लिया है, जो परिश्रमी एवं अध्ययनशील हैं। मुझे सबका सहज स्नेह प्राप्त है। हम सभी मिलकर अपना समय सानंद बिताते हैं। एक-दूसरे की पूर्ण सहायता भी करते हैं। हमारे छात्रावास के विद्यार्थी तथा प्राध्यापक सभी बहुत अच्छे हैं। यहाँ शैक्षणिक गतिविधियों के कारण व्यस्तता रहती है। अनेकानेक अध्ययन, पठन-पाठन संबंधी प्रतियोगिताएँ होती रहती हैं, जिनमें मैं उत्साह से भाग लेता हूँ। हिंदी निबंध प्रतियोगिता तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यहाँ प्रत्येक छात्र सदा एक-दूसरे से आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहता है। इसलिए मुझे भी कड़ा परिश्रम करना पड़ रहा है। आप विश्वास कीजिए कि मैं अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण होकर आपकी आशा के अनुरूप बनने के प्रयास में जी-जान से लगा हूँ। मेरा परीक्षाफल संतोषप्रद होगा। आप सबकी बहुत याद आती है। पूज्यनीय माताजी को मेरा सादर प्रणाम कहना। छोटू को ढेर सारा प्यार। उससे कहना स्कूल की छुट्टियाँ होते ही मैं उससे मिलने अवश्य आऊँगा।

आपका स्नेहाकांक्षी
राहुल

31. परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए।

छात्रावास
मुंबई विश्वविद्यालय

मुंबई
दिनांक : 15 मार्च, 20XX

प्रिय नितिन
आशीर्वाद

कैसे हो? उम्मीद करता हूँ तुम अपना पूरा ध्यान रख रहे हो। समय बहुत तेज़ी से बदल रहा है। ऐसे में माहौल भी बदलता है। अच्छे और बुरे की समझ रखते हुए हमें आगे बढ़ना है इस बात का ख्याल अवश्य होना चाहिए।

कल पूज्य पिताजी द्वारा भेजा हुआ पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बहुत दुख हुआ कि तुम परीक्षा में नकल करते हुए पकड़े गए हो। तुम्हारे इस निकृष्ट कर्म के कारण तुम्हें तो अपमानित होना ही पड़ा, साथ ही पिताजी को भी अपमान का घूँट पीना पड़ा। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि सफलता प्राप्त करने के लिए तुम ऐसा गलत कार्य भी कर सकते हो। यह सब तुम्हारे उन गलत मित्रों का ही प्रभाव है, जिनके साथ तुम सालभर यहाँ से वहाँ घूमते रहे हो। तुम्हारे द्वारा किए इस गलत कार्य का फल केवल तुम अकेले ही नहीं भोगोगे, बल्कि इसे तो पूरे परिवार को भोगना होगा। तुमने परिवार के सम्मान को ठेस पहुँचाई है।

भाई! अभी भी समय हाथ से नहीं निकाला है। अब इस घटना से तुम्हें शिक्षा लेनी चाहिए। अपने उन मित्रों का साथ छोड़ पढ़ाई में इस प्रकार जुट जाना चाहिए कि नकल करने का ख्याल तक तुम्हारे मन में न आए। इस वर्ष तो तुम अपने स्कूल में परीक्षा दे रहे हो, अगले वर्ष जब बोर्ड की परीक्षा दोगे और यही कुकृत्य करते पकड़े जाओगे तो पूरे तीन साल के लिए परीक्षा भवन से निकाल दिए जाओगे और वह दिन शायद हम सभी के लिए मरने के समान होगा। सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आए, तो उसे भूला नहीं कहते। मेरा विश्वास है कि तुम्हें मेरे इस पत्र से नई दिशा मिलेगी। निश्चित ही अब तुम अपनी पढ़ाई में जुट जाओगे। पूज्य माताजी और पिताजी को चरण स्पर्श।
तुम्हारा भाई
अनिल

32. अपने पिताजी की बीमारी पर चिंता प्रकट करते हुए पत्र लिखिए।

छात्रावास
डी०पी०एस०
नई दिल्ली
दिनांक : 28 अगस्त, 20XX

परम पूज्य पिता जी
चरण वंदना

कल माताजी के द्वारा लिखा पत्र प्राप्त हुआ। पत्र से यह जानकर अत्यंत दुख हुआ कि आपका स्वास्थ्य आजकल ठीक नहीं चल रहा है। शायद काम का बोझ कुछ ज़्यादा बढ़ गया है। आप यह भली-भाँति जानते हैं कि ज़्यादा काम करना आपके वश में नहीं। फिर आप ऑफिस से कुछ दिनों के लिए अवकाश क्यों नहीं ले लेते? अवकाश लेकर ही आप अपने शरीर पर ठीक तरह से ध्यान दे पाएँगे। यदि इस समय इन छोटी-छोटी बीमारियों पर ध्यान नहीं दिया तो आगे चलकर यही बड़ा रूप धारण कर लेंगी। आशा करता हूँ कि आप अपना इलाज सुचारु रूप से करवा रहे होंगे। इस समय चाह कर भी मैं आपकी सेवा में हाज़िर नहीं हो पा रहा हूँ। जैसा कि आप जानते हैं मेरी परीक्षाएँ अगले सप्ताह शुरू हो रही हैं। परीक्षा समाप्त होते ही सीधा आपके पास आऊँगा और आपको किसी पहाड़ी क्षेत्र में ले जाऊँगा। वहाँ आपको अच्छे वातावरण के साथ पूर्ण आराम भी मिलेगा। अपना पूरा ख्याल रखना। माताजी से मेरा प्रणाम कहना।
आपका प्रिय पुत्र
नवीन

33. आपके विद्यालय में होने वाले वार्षिकोत्सव में आपको पुरस्कृत किया जाएगा। आप चाहती हैं कि आपकी माताजी भी इसे देखें। माता जी को बुलाने के लिए पत्र लिखिए।

छात्रावास
समरविला पब्लिक स्कूल
नोएडा
दिनांक : 2 अक्टूबर, 20XX

पूज्या माताजी
सादर प्रणाम

आज ही आपका पत्र मिला है। आप मेरा पत्र न पाने पर चिंतित थीं। मैं आपको पत्र नहीं लिख सकी। इसके लिए क्षमा चाहती हूँ। पहले मेरी परीक्षाएँ चल रही थीं जिस कारण मैं व्यस्त थी। परीक्षाओं के समाप्त होते ही हमारे वार्षिकोत्सव की तैयारी आरंभ हो गई। आप तो जानती ही हैं कि हमारे विद्यालय में प्रत्येक वर्ष वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

इस वर्ष भी यह उत्सव 28 अक्टूबर को है। इस उत्सव में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। हमारी कक्षा की छात्राएँ इस अवसर पर एक नाटिका प्रस्तुत कर रही हैं। मैं भी इसमें भाग ले रही हूँ। हमारे इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्री आ रहे हैं। उनके द्वारा पुरस्कार वितरण भी किया जाएगा। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि मुझे भी 'सर्वश्रेष्ठ वक्ता' तथा 'श्रेष्ठ खिलाड़ी' के पुरस्कार दिए जाएँगे।

मैं चाहती हूँ कि इस शुभ अवसर पर आप भी उपस्थित हों और मुझे पुरस्कृत होते देखें। आप 27 तारीख तक अवश्य यहाँ पहुँच जाएँ। आपके रहने की उचित व्यवस्था विद्यालय द्वारा की गई है। आप आएँगी तो मुझे बहुत खुशी होगी।

पिताजी को सादर प्रणाम तथा हनी को प्यार देना।

आपकी पुत्री
श्रुति

34. आपकी किसी गलती की वजह से आपके पिताजी आपसे नाराज़ हैं। छात्रावास से अपने रुष्ट पिताजी से क्षमा-याचना का पत्र लिखिए।

छात्रावास
रामजस स्कूल, दरियागंज
नई दिल्ली।
15 फरवरी, 20XX
पूजनीय पिताजी,
सादर प्रणाम।

पिताजी मैं यह जानता हूँ कि आप मुझसे बेहज नाराज़ हैं। यही कारण है कि मैं आपको पत्र लिखने का साहस नहीं जुटा पा रहा था। मैंने आपसे झूठ बोला और आपके विश्वास को चोट पहुँचाई, इसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। यह अपराध-बोध मुझे रात-भर सताता रहा है। आप से क्षमा-याचना करके मन हल्का कर लूँ, इसी इच्छा से मैं आपको पत्र लिखने बैठा हूँ। मुझे उम्मीद है कि मेरा यह पत्र पढ़कर आप मुझे अवश्य क्षमा कर देंगे।

पिताजी मैंने पुस्तकें मँगवाने की बात लिखकर आपसे दो हजार रुपए मँगवाए थे और आपने भेज भी दिए थे। वास्तव में मैंने आपसे झूठ बोला था। मुझे विद्यालय की ओर से आयोजित श्रीनगर की शैक्षिक यात्रा पर जाना था। मेरे सभी मित्रों ने मुझसे बहुत आग्रह किया था और एक मित्र के कहने पर मैंने यह बड़ा झूठ आप से बोला। मेरा यह सोचना था कि आप मुझे श्रीनगर जाने की इज़ाजत नहीं देंगे, सो जोश में होश खो बैठा था। अतः मैंने खुद आपसे यह सच बता दिया था। जिसके बाद आपने मुझसे बात न करने का निर्णय किया।

मैं आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे क्षमा करें। मुझे अपने किए पर पछतावा है। आप जो चाहे सजा दें। मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा। कृपया मुझे माफ कर दें।

माँ को मेरा चरण स्पर्श। भैया को सादर नमस्कार।
आपका आज्ञाकारी पुत्र
रमेश

35. अपने मित्र को एक पत्र लिखिए, जिसमें अपनी आने वाली परीक्षा की तैयारी के विषय में उससे सलाह माँगिए।

1630, मदरसा रोड
दिल्ली-110006
दिनांक : 5 फरवरी, 20XX

प्रिय मित्र आलोक

कैसे हो तुम? कई दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। लगता है आजकल तुम पढ़ने में व्यस्त हो। पिछले वर्ष भी तुमने 94 प्रतिशत अंक लेकर विद्यालय में नया कीर्तिमान स्थापित किया था। इस बार भी तुम ऐसा ही कुछ करोगे, इसका मुझे विश्वास है। मेरी परीक्षाएँ भी समीप आ रही हैं। मैं विद्यालय से आने के पश्चात भोजन करते ही पढ़ने बैठ जाता हूँ। शाम को कुछ समय के लिए ही दूरदर्शन के निकट दर्शन करता हूँ, पर फिर भी सभी विषयों का पुनरावर्तन नहीं कर पा रहा। मैं चाहता हूँ कि मैं भी तुम्हारी तरह अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होऊँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम मेरा मार्ग-दर्शन करो। मुझे कुछ ऐसे सुझाव दो जिस पर अमल कर मैं भी प्रथम श्रेणी प्राप्त कर सकूँ। मुझे किस तरह अपनी समय-सारणी बनानी चाहिए जिससे सभी विषयों पर ध्यान दे सकूँ और किस प्रकार अपनी परीक्षा की तैयारी करूँ।

मुझे विश्वास है कि तुम्हारे अमूल्य सुझावों द्वारा मैं भी अपने माता-पिता का नाम रोशन करूँगा। अच्छा, तुम्हारी परीक्षाओं के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

चाचाजी तथा चाचीजी को सादर प्रणाम तथा रिंकू को प्यार देना।

तुम्हारा मित्र
अश्विनी

36. किसी अपरिचित को अपना 'पत्र-मित्र' बनाने के लिए अपना परिचय देते हुए पत्र लिखिए।

1 बी, सरस्वती विहार
विजय कुंज, हरियाणा
25 अप्रैल, 20XX

प्रिय मारिया
नमस्ते।

हमारे विद्यालय से मुझे तुम्हारा परिचय पत्र-मित्र शृंखला को आगे बढ़ाने के लिए दिया गया। यह एक अच्छा प्रयास है जो दो देशों के बीच लोगों को जोड़ने का प्रयास कर रहा है। तुम्हारी पत्र-मित्रता के लिए मैं बहुत उत्सुक हूँ। अपने बारे में इस पत्र में मैं आपको जानकारी दे रही हूँ और तुमसे यही उम्मीद करूँगी।

मैं नीना शर्मा हूँ। मैं दिल्ली पब्लिक स्कूल में दसवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरे पिता व्यवसाय करते हैं और मेरी माताजी अध्यापिका हैं। हम दिल्ली में रहते हैं। मेरा एक भाई है जो मुझसे दो साल छोटा है। वह आठवीं कक्षा में पढ़ता है। मेरा परिवार बहुत प्यारा है। मुझे तैराकी का बहुत शौक है। मैं विद्यालय, अंतर्विद्यालय तथा जिला स्तर पर कई प्रतियोगिताएँ जीत चुकी हूँ। तैराक होने के अलावा मैं एक अच्छी प्रवक्ता भी हूँ। मैं वाद-विवाद और भाषण प्रतियोगिता में भाग लेती रहती हूँ। मैं भविष्य में एक नेता बनना चाहती हूँ। अपने देश के लिए कुछ करना चाहती हूँ। इसकी प्रेरणा मुझे अपने दादाजी से मिली है। उनका यही सपना था जिसे मैं साकार करूँगी।

मुझे उम्मीद है मेरा पत्र पढ़ने के बाद तुम्हें भी मुझसे मित्रता करने में रुचि होगी। इस पत्र के साथ मैं अपना एक चित्र भी भेज रही हूँ और चाहती हूँ कि यथाशीघ्र तुम भी अपना पूर्ण परिचय देते हुए अपने चित्र सहित मुझे पत्र लिखोगी। शेष अगले पत्र में।

तुम्हारी अनदेखी मित्र
श्रावणी

37. परीक्षा समाप्त होने पर अपने मामाजी के पास पहुँचने की सूचना देते हुए पत्र लिखिए।

25, माले गो टाऊन
गुड़गाँव, हरियाणा
25 मार्च, 20XX
आदरणीय मामाजी।
सादर प्रणाम।

हम सभी यहाँ पर कुशलता से हैं। आशा है, आप सपरिवार स्वस्थ तथा आनंदपूर्वक होंगे। मामाजी, जैसा कि आप जानते हो इन दिनों मेरी परीक्षाएँ चल रही हैं और अगले सप्ताह 28 मार्च को मेरी अंतिम परीक्षा होगी। परीक्षा समाप्त होते ही मैंने आपके पास आने का निश्चय किया है। वैसे भी पिछले तीन साल से मैं आपसे मिला नहीं। यही नहीं, पढ़ाई के कारण कहीं आ जा न सका। अब कुछ दिन के लिए आपके पास देहरादून आकर चैन से प्रकृति की गोद में रहना चाहता हूँ।

मेरे आने के बाद मामाजी, हम सभी मसूरी घूमने चलेंगे। परीक्षा की तैयारी करते-करते मेरा मन थक गया है, अत: पहाड़ों की ठंडी हवा खाकर इस थकान को दूर करना चाहता हूँ। पहाड़ों की ताज़गी मन को फिर स्वस्थ कर देगी और बहुत दिनों से प्रकृति के बीच रहने की इच्छा भी पूरी होगी। शहरी हवा और शहरी वातावरण से भी मेरा मन थक गया है।

मामीजी को मेरा चरण स्पर्श कहना और भाई विनय को प्यार।

आपका भांजा
गिरीश

38. अपने विद्यालय की विशेषता बताते हुए अपने विदेशी मित्र/साथी को पत्र लिखिए।

21/24 सरोजनी नगर,
नई दिल्ली
28 जनवरी, 20XX
प्रिय करण
सप्रेम नमस्ते।

आशा है, तुम कुशल होंगे। तुमसे बिछड़ने के बाद जब मैं दिल्ली आया तो मेरा मन बहुत उदास था। मैं बहुत अकेला भी महसूस कर रहा था लेकिन जब मैंने अपने नए विद्यालय में प्रवेश किया तो धीरे-धीरे सब कुछ बदल गया। विद्यालय की सुंदरता ने मेरा मन मोह लिया। जितना सुंदर भवन उससे ज्यादा सुंदर वहाँ का उपवन। विशाल खेल प्राँगण और बड़ी-बड़ी कक्षाएँ, चारों ओर फैले सुंदर पौधे इसकी खुबसूरती में चार चाँद लगा रहे थे।

इस विद्यालय में 4000 से भी अधिक बच्चे पढ़ते हैं। हमारी प्रधानाचार्या का नाम श्रीमती विमला शर्मा है। वे अत्यंत विदुषी, कुशल तथा स्नेही महिला हैं। वे दिन-रात विद्यालय की उन्नति की चिंता किया करती हैं। कभी विद्यालय के प्रवेश द्वार पर, तो कभी खेल के मैदान में, कभी सुबह की प्रार्थना सभा में, तो कभी चल रही कक्षा के बीच आकर बच्चों से मिलती-जुलती हैं और बहुत स्नेह और अपनापन देती हैं। मेरे विद्यालय का अनुशासन बहुत कठोर है। सभी बच्चे अपने अध्यापकों की बात मानते हैं और उनका बहुत सम्मान करते हैं। हमारे विद्यालय में बड़े-बड़े पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और कंप्यूटर की प्रयोगशालाएँ भी हैं। हमें हर तरह की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए तैयार किया जाता है। यहाँ आकर अब मैं तैराकी और क्रिकेट में भी हिस्सा लेने लग गया हूँ। यहाँ बहुत अच्छे प्रशिक्षक हैं। मित्र, यहाँ भी मैंने एक-दो मित्र बनाए हैं। वे अभी मेरे अधिक करीब नहीं आए हैं। मित्र यदि वहाँ की कोई बात मुझे सताती है तो तुम। तुम मेरे अच्छे मित्र थे, अब भी हो और आगे भी रहोगे।

अब मैं पत्र समाप्त कर रहा हूँ। माताजी-पिताजी को मेरा प्रणाम कहना। छोटी बहना को प्यार।

तुम्हारा प्रिय मित्र
कमल

2. औपचारिक-पत्र (X)

सरकारी, गैर-सरकारी तथा अर्धसरकारी प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र, संपादक को पत्र, व्यावसायिक-पत्र आदि औपचारिक-पत्रों के अंतर्गत आते हैं। औपचारिक-पत्र निम्न प्रकार के होते हैं :

1. आवेदन-पत्र 2. शिकायती-पत्र 3. संपादकीय-पत्र 4. पूछताछ संबंधी-पत्र 5. व्यावसायिक-पत्र।

आवेदन-पत्र

1. अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या को संध्याकालीन खेल के प्रबंध के लिए प्रार्थना करते हुए एक आवेदन पत्र लिखिए।

सेवा में,
प्रधानाचार्या जी
डी०ए०वी० विद्यालय
विकास पुरी
नई दिल्ली

विषय : संध्या समय खेलों का प्रबंध।

आदरणीय महोदया,

सविनय निवेदन है कि अब तक हमारे विद्यालय में संध्या के समय खेलने की कोई व्यवस्था नहीं हुई है। विद्यालय में पढ़ाई के समय खेल पर पूरा ध्यान नहीं दिया जा सकता। विद्यालय की पढ़ाई समाप्त कर शाम के समय खेलने की इच्छा सभी विद्यार्थियों की रहती है। वे क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल, टेबल-टेनिस, बॉस्केट बाल आदि खेलों में अभ्यास कर पारंगतता हासिल करना चाहते हैं जो पढ़ाई के समय संभव नहीं।

कृपया शाम के समय विद्यालय के मैदान में इन खेलों का अभ्यास कराने का प्रबंध करें। कुशल प्रशिक्षकों के नेतृत्व में हम प्रशिक्षण लेकर विद्यालय का नाम रोशन कर सकते हैं। कृपया इस ओर ध्यान दें तथा खिलाड़ियों के अभ्यास और प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था करवाने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

आज्ञाकारी शिष्य
भरत वर्मा
कक्षा–नौवीं 'स'
दिनांक–20 फरवरी, 20XX

2. अपने प्रधानाचार्य को छात्रवृत्ति के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 26 जून, 20XX

प्रधानाचार्य
एल०सी०वी० विद्यालय
राजेंद्र नगर
नई दिल्ली

विषय : छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु

माननीय महोदय
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके स्कूल का दसवीं 'ब' कक्षा का छात्र हूँ। मैं अपनी कक्षा में हर वर्ष अच्छे अंक से पास होता रहा हूँ। यही नहीं चित्रकला तथा संगीत की प्रतियोगिताओं में भी मैंने अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। मैं फुटबॉल का एक अच्छा खिलाड़ी हूँ। मैंने कक्षा 9वीं में 85 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। मैं अपनी कक्षा का सुशील तथा आज्ञाकारी छात्र हूँ तथा सभी अध्यापक मुझे बहुत प्यार करते हैं।

मैं आपसे यह निवेदन करना चाह रहा हूँ कि मेरे घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आप मुझे छात्रवृत्ति देने की कृपा करें। मेरे पिताजी की मृत्यु पिछले महीने सड़क दुर्घटना में हो गई थी। माँ जो कि एक कार्यालय में छोटे से पद पर है, उनके लिए पूरी गृहस्थी का बोझ उठाना संभव नहीं है।

मुझे खेदपूर्वक कहना पड़ रहा है कि मेरे पास अगले माह की फीस देने के लिए पैसे नहीं हैं। यदि आप मुझ पर कृपा कर मुझे छात्रवृत्ति दिला दें, तो मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँगा। भविष्य में अपनी माँ का एकमात्र सहारा मैं ही हूँ। यदि आगे न पढ़ सका, तो मेरा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। आप मुझे इस अँधेरे कुएँ में गिरने से बचा सकते हैं। मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।

धन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अ०ब०स०
कक्षा–10 'ब'

3. अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर पुस्तकालय में हिंदी कहानियों और कविताओं की अधिक पुस्तकें मँगवाने के लिए आग्रह कीजिए।

सेवा में,
प्रधानाचार्य जी
मॉडर्न स्कूल
बाराखंभा, नई दिल्ली

विषय : पुस्तकालय में हिंदी कहानियों तथा कविताओं के पुस्तकों की कमी

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय के कक्षा नवीं का विद्यार्थी हूँ। साहित्य से मुझे बेहद लगाव है। हिंदी के प्रति मेरा प्रेम बहुत अधिक है। मैं ही नहीं हमारे विद्यालय में ऐसे अनेक विद्यार्थी हैं। हम सभी अपने पुस्तकालय से प्रेमचंद, दिनकर, हरिवंशराय बच्चन, मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा, महादेवी वर्मा का साहित्य लेकर पढ़ते हैं। अब तक हमने हमारे विद्यालय में रखी लगभग सभी पुस्तकें पढ़ ली हैं। अब पुस्तकालय में जाने पर किताबें खोजने पर भी नहीं मिलती। पुस्तकालय में हिंदी की अधिक पुस्तकें नहीं हैं।

आज के आधुनिक कवियों की किताबें तो न के बराबर हैं। जब अंतर्विद्यालय कविता प्रतियोगिता के लिए तैयारी करनी होती है तो बहुत कठिनाई होती है। ऐसे में प्रतियोगिता के लिए अच्छी सामग्री उपलब्ध नहीं होती।

अतः आपसे निवेदन है कि पुस्तकालय में छात्रोपयोगी और अधिक साहित्यिक पुस्तके मँगाएँ। विशेष रूप से हिंदी साहित्य की कहानियों तथा कविताओं की पुस्तकें यथाशीघ्र मँगाने की कृपा करें।

धन्यवाद।
भवदीय
गणेश
अनुक्रमांक– 10
कक्षा– नवीं 'ए'
दिनांक– 25 अप्रैल, 20XX

4. ग्यारहवीं कक्षा में विज्ञान विषय लेने के लिए अपनी प्रधानाचार्या को आवेदन-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 28 मार्च, 20XX

प्रधानाचार्या
सर्वोदय विद्यालय
मयूर विहार, फेस-I
नई दिल्ली

विषय : विज्ञान विषय देने के लिए

माननीय महोदया
सेवा में निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैंने अभी अपनी बोर्ड की परीक्षाएँ दी हैं। मेरे पिताजी की इच्छा है कि मैं डॉक्टर बनूँ। मेरी भी विज्ञान में विशेष रुचि है। विज्ञान में मेरे अच्छे अंक हैं। विद्यालय में होने वाली 'पूर्व परीक्षा' में भी मैंने 87 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं तथा विज्ञान में तो मुझे 94 प्रतिशत अंक मिले हैं।

अत: मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे ग्यारहवीं कक्षा में 'विज्ञान विषय' लेने की अनुमति प्रदान करें, ताकि मैं अपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हो सकूँ। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद
आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या
अ०ब०स०
कक्षा-10 'ए'

5. चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
जयपुर (राजस्थान)
दिनांक : 10 मार्च, 200X

प्रधानाचार्य महोदय
सलवान पब्लिक स्कूल
राजेंद्र नगर
नई दिल्ली

विषय : चरित्र प्रमाण-पत्र हेतु

महोदय
मैं आपके विद्यालय की 9वीं 'अ' कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिताजी का तबादला मुंबई हो जाने के कारण अब मुझे यह विद्यालय छोड़कर जाना होगा। मैं आपके स्कूल में नर्सरी से पढ़ रहा हूँ। मैंने हर वर्ष 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं।

मैं पढ़ने के साथ-साथ स्कूल में होने वाली अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में भी हमेशा बढ़-चढ़कर भाग लेता रहा हूँ। मैंने खेलकूद के क्षेत्र में भी अनेक पुरस्कार जीते हैं।

महोदय, मैंने मुंबई स्कूल में प्रवेश प्राप्त करने हेतु आवेदन किया है जिसके लिए चरित्र प्रमाण-पत्र आवश्यक है। अतएव आपसे प्रार्थना है कि मुझे चरित्र प्रमाण-पत्र देकर कृतार्थ करें।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
क०ख०ग०
कक्षा- 9वीं 'अ'

6. अपनी कक्षा अध्यापिका के प्रति किए गए दुर्व्यवहार पर क्षमा माँगते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 12 जनवरी, 20XX

प्रधानाचार्य महोदय
सेंट कोलंबस स्कूल
कैंट छावनी, नई दिल्ली

विषय : कक्षा अध्यापिका के प्रति किए गए दुर्व्यवहार पर क्षमा प्रार्थना

महोदय
कक्षा अध्यापिका श्रीमती शीला शर्मा जी के प्रति मैंने जो अभद्र व्यवहार किया, उसके लिए मैं बहुत लज्जित हूँ और हृदय से क्षमा याचना करता हूँ।

आज दूसरे पीरियड में मैं पिछली सीट पर बैठा था। मेरी साथ वाली सीट पर बैठे हुए छात्र आपस में बातचीत कर रहे थे। अध्यापिका महोदया इतिहास पढ़ा रही थीं। उन्होंने मुझे कहा कि मैं उनकी ओर ध्यान नहीं दे रहा और बातें कर रहा हूँ, जबकि मैं पूरी लगन के साथ उनकी बातें सुन रहा था। मुझे उनका इस तरह कक्षा में डाँटना बुरा लगा। कक्षा में इस बात को सभी जानते हैं कि मैं कक्षा में बातें करने के बिलकुल पक्ष में नहीं हूँ। अध्यापिका की डाँट से मैं अपना आपा खो बैठा। मैंने अध्यापिका महोदय के सामने ज़ोर से जवाब दे दिया। उन्होंने भी उत्तेजित होकर मुझे कक्षा के बाहर निकाल दिया और मेरी शिकायत लिखकर आपके पास भेज दी।

मैं यह महसूस कर रहा हूँ कि अध्यापिका महोदया के प्रति मेरा व्यवहार अभद्र व अशिष्ट था। वे मेरी अध्यापिका हैं और मैं उनका हृदय से सम्मान करता हूँ। मैं अपने आचरण पर लज्जित हूँ और अपनी गलती के लिए क्षमा प्रार्थना करता हूँ। मैं आपको विश्वास दिला रहा हूँ कि भविष्य में मैं कभी भी शिकायत का मौका नहीं दूँगा। यह मेरी पहली और आखिरी गलती होगी। मुझे आशा है कि आप मुझे क्षमा कर देंगे।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
क०ख०ग०
कक्षा-9वीं 'ब'

7. अपने प्रधानाचार्य को स्कूल की संपत्ति को हानि पहुँचाने वाले छात्रों की जानकारी देते हुए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
लुधियाना (पंजाब)
दिनांक : 14 फरवरी, 20XX

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च विद्यालय-III
पंजाब

विषय : कक्षा छात्रों द्वारा स्कूल की संपत्ति को हानि पहुँचाना

श्रीमान

सविनय निवेदन है कि मैं कक्षा नवीं 'स' का छात्र हूँ। आपने कुछ दिन पहले प्रार्थना-सभा में विद्यालय में होने वाले लगातार नुकसान की बात की थी तथा विद्यालय की संपत्ति को हानि पहुँचाने वाले छात्रों के प्रति अफ़सोस प्रकट किया था। महोदय आपने ऐसे छात्रों का नाम बताने वाले को पुरस्कृत करने की घोषणा की थी। मैं उसी दिन से अपनी कक्षा के छात्रों पर दृष्टि रख रहा था। कल मैंने उन्हें रंगे हाथों पकड़ लिया। ये छात्र अर्ध-अवकाश के समय सभी छात्रों के बाहर जाने पर तथा पूरी छुट्टी होने के समय डेस्कों को उलट-पलट कर, उठा-पटक कर तोड़ रहे थे। बिजली की फिटिंग को उखाड़ रहे थे। उन्होंने कक्षा में लगी ट्यूब-लाइट को भी अपनी पानी की बोतल से तोड़ा था। मेरी कक्षा के उन छात्रों के नाम हैं–रवि राज, दिनेश वर्मा, नवजोत सिंह, कार्तिक त्रिवेदी।

महोदय, मुझे विश्वास है कि अपने कथनानुसार आप मुझे पुरस्कृत करेंगे। मैं चाहता हूँ मेरा नाम गोपनीय रखा जाए। इन छात्रों के संबंध में सूचित करना मेरा कर्तव्य है। अतः विद्यालय की संपत्ति को हानि पहुँचाने वाले छात्रों की जानकारी देकर, अपना कर्तव्य ही निभा रहा हूँ।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी

अ०ब०स०

कक्षा-9वीं 'स'

8. बहन की शादी के लिए अवकाश प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 10 अप्रैल, 20XX

प्रधानाचार्या जी

सनातन धर्म विद्यालय

नई दिल्ली

विषय : अवकाश प्राप्त करने हेतु

महोदया

निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा 9वीं 'अ' का छात्र हूँ। मेरी बड़ी बहन का विवाह 13 अप्रैल, 20XX को होना निश्चित हुआ है। विवाह उत्सव एवं घर के कामों में व्यस्त होने के कारण मैं तीन दिन विद्यालय न आ सकूँगा। कृपया 12 अप्रैल से 14 अप्रैल, 20XX तक तीन दिनों का अवकाश प्रदान करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी

क०ख०ग०

कक्षा-9वीं 'अ'

9. जुर्माना माफ़ कराने के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 7 नवंबर, 20XX

प्रधानाचार्य
मॉडर्न स्कूल
बाराखंभा रोड
नई दिल्ली

विषय : जुर्माना माफ़ कराने हेतु

श्रीमान

निवेदन है कि मैं कक्षा 9वीं 'क' का छात्र हूँ। विद्यालय में 1 नवंबर से सर्दियों की यूनिफ़ार्म पहननी अनिवार्य थी। मैंने भी अपने स्कूल से ही यूनिफ़ार्म समय से पहले खरीद ली थी, लेकिन पहनकर नहीं देखी थी। 1 नवंबर की सुबह मैंने जब यूनिफ़ार्म पहनकर देखी तो वह बहुत छोटी थी। अत: उस दिन मैं स्कूल में गर्मियों की यूनिफ़ार्म पहनकर ही आ गया था। जब मैं स्कूल में यूनिफ़ार्म बदली करवाने गया तो उन्होंने कहा कि अब दो दिन बाद ही बड़ी यूनिफ़ार्म मिल पाएगी। मुझे चार दिन तक नई यूनिफ़ार्म का इंतज़ार करना पड़ा। अब मैं 6 नवंबर से यूनिफ़ार्म पहनकर आने लगा हूँ, पर पिछले दिनों यूनिफ़ार्म न पहनने के लिए मुझ पर 10 रुपये रोज़ के हिसाब से 50 रुपये जुर्माना लग गया है। मैं यह जुर्माना देने में असमर्थ हूँ। कृपया मेरी विवशता को समझते हुए जुर्माना माफ़ करने का अनुग्रह करें।

धन्यवाद सहित।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
क०ख०ग०
कक्षा-9वीं 'क'

10. प्रधानाचार्य को कंप्यूटर शिक्षा को बेहतर करवाने हेतु पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक 4 अप्रैल

प्रधानाचार्य
एमटी स्कूल
नई दिल्ली।

विषय : कंप्यूटर शिक्षा की सुविधा के संबंध में।

महोदय,

आपसे विनम्र अनुरोध है कि हम कक्षा 10वीं के छात्र चाहते हैं कि अपने विद्यालय में प्राप्त कंप्यूटर शिक्षा के स्तर को अधिक बेहतर और आधुनिक बनाया जाए। आप तो जानते ही हैं कि आज कंप्यूटर ज्ञान कितना आवश्यक हो गया है। बिना कंप्यूटर के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में रोज़गार नहीं मिलता है। जिस स्तर का ज्ञान और उपकरण हमारे विद्यालय में उपलब्ध है वह संतोषजनक नहीं है। हम सभी चाहते हैं कि हमारे लिए बेहतर उपकरण और शिक्षा का इंतजाम किया जाए। इसके लिए हम सभी छात्र आपके बहुत आभारी होंगे। कंप्यूटर की शिक्षा की माँग-मात्र बढ़ते हुए उसके महत्त्व और उपयोगिता के कारण ही है। उम्मीद है कि आप हमारी इस माँग को ध्यान में रखते हुए उचित कदम उठाएँगे।

सधन्यवाद।

आपका शिष्य
क०ख०ग०
कक्षा-10 'अ'

11. आप किसी अन्य विद्यालय के साथ कबड्डी का मैच खेलना चाहते हैं। मैच खेलने की अनुमति प्राप्त करने के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक आवेदन-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 10 अक्तूबर, 20XX

प्रधानाचार्य
मॉडर्न स्कूल
नई दिल्ली।

विषय : कबड्डी मैच खेलने की अनुमति हेतु आवेदन।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि हम कक्षा 10वीं के छात्र इन दिनों बढ़ रही कबड्डी खेल की लोकप्रियता की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इस खेल को बढ़ावा देने हेतु हम मात्र विद्यालय में इसके प्रशिक्षण की व्यवस्था को बढ़ावा देने के पक्ष में ही नहीं बल्कि अन्य विद्यालयों के साथ मैच खेलकर इसे स्पर्धा के स्तर पर लाने के इच्छुक हैं। कबड्डी एक बेहतरीन और परंपरागत खेल है जिसे आगे बढ़ावा देना हम सभी का मौलिक धर्म है। हमारा विद्यालय प्रत्येक क्षेत्र में आगे है और दूसरे विद्यालयों से सभी तरह की प्रतियोगिताओं व स्पर्धाओं में बेहतर प्रदर्शन करते रहे हैं। मुझे विश्वास है कि कबड्डी खेल में भी हम इसी तरह अपनी जीत के झंडे गाड़ कर विद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

अतः आपसे अनुरोध है कि हमारी उक्त माँग को स्वीकार कर हमें अनुगृहित करें।

सधन्यवाद
आपका शिष्य
च०छ०ज०
कक्षा 10 'स'

12. नौकरी के लिए आवेदन-पत्र।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 1 जनवरी, 20XX

प्रधानाचार्य जी
समरविला हाई स्कूल
मयूर विहार
दिल्ली-110091

विषय : हिंदी अध्यापक के पद हेतु आवेदन-पत्र

महोदय
आपके द्वारा 'हिंदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित विज्ञापन के प्रत्युत्तर में मैं हिंदी अध्यापक के पद हेतु अपना आवेदन-पत्र भेज रहा हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है :

नाम : क०ख०ग०
पिता का नाम : अ०ब०स०
जन्म तिथि : 20 मई, 1970

शैक्षणिक योग्यता :1. मैंने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से दसवीं की परीक्षा 1986 में 70% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

2. मैंने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से बारहवीं की परीक्षा 1988 में 78% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

3. दिल्ली विश्वविद्यालय से बी०ए० की परीक्षा 1992 में 72% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

4. मैंने रोहतक विश्वविद्यालय से बी०एड्० की परीक्षा 1993 में 70% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

मैं पिछले वर्ष डी०ए०वी० स्कूल, कृष्णा नगर में हिंदी अध्यापक के पद पर कार्य कर चुका हूँ। यह पद मात्र एक वर्ष के लिए ही रिक्त था। इसलिए मुझे वहाँ से कार्य छोड़ना पड़ा है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि आपकी चयन समिति ने मुझे यह अवसर प्रदान किया, तो निश्चित ही मैं आपकी उम्मीदों पर खरा उतरूँगा और अपनी पूरी निष्ठा व लगन के साथ काम करूँगा।

धन्यवाद सहित

भवदीय

क०ख०ग०

13. बेसिक शिक्षा अधिकारी को प्राइमरी शिक्षक के पद के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

बी०पी० 153

शालीमार बाग

दिल्ली

दिनांक : 25 जनवरी, 20XX

बेसिक शिक्षा अधिकारी

ज़िला परिषद

लखनऊ (उ०प्र०)

विषय : प्राइमरी शिक्षक के पद के लिए आवेदन-पत्र

मान्यवर,

दिनांक 24 जनवरी, 20XX के दैनिक समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' से ज्ञात हुआ कि आपके विभाग में प्राइमरी शिक्षकों के कुछ स्थान रिक्त हैं। उन पदों के लिए आवेदन-पत्र आमंत्रित किए गए हैं। मैं भी अपने को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करना चाहती हूँ। मेरी योग्यताएँ व अन्य विवरण इस प्रकार हैं :

नाम	:	संगीता जुनेजा
पिता का नाम	:	श्री सुरेश कुमार जुनेजा
जन्मतिथि	:	17 अगस्त, 1975
स्थायी पता	:	बी०पी० 153, शालीमार बाग, दिल्ली

शैक्षणिक योग्यताएँ :

बारहवीं	प्रथम श्रेणी	1992	उ०प्र० बोर्ड	हिंदी, अंग्रेज़ी, इतिहास, गणित, अर्थशास्त्र
बी०ए०	प्रथम श्रेणी	1995	लखनऊ वि०वि०	हिंदी, अंग्रेज़ी, इतिहास, अर्थशास्त्र
बेसिक टीचर कोर्स	द्वितीय श्रेणी	1997	मेरठ वि०वि०	हिंदी, अंग्रेज़ी, इतिहास

अन्य योग्यताएँ :

शास्त्रीय संगीत में डिप्लोमा

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पुरस्कृत

महाविद्यालय की हिंदी साहित्य परिषद की सचिव

अनुभव : डी०ए०वी० मिडिल स्कूल, कानपुर में प्राइमरी शिक्षक के पद पर कार्यरत।

महोदय, यदि उक्त पद पर कार्य करने का अवसर प्रदान करें, तो मैं अपनी कार्यकुशलता से अपने अधिकारियों को संतुष्ट रखने का प्रयास करूँगी तथा पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्यों का पालन करूँगी। प्रार्थना-पत्र के साथ सभी प्रमाण-पत्रों की प्रतियाँ संलग्न हैं।

धन्यवाद

भवदीया

संगीता जुनेजा

14. दैनिक समाचार-पत्र में उपसंपादक के पद के लिए अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए आवेदन-पत्र लिखिए।

478, गली नं० 4, पटेल नगर

नई दिल्ली

दिनांक : 20 मार्च, 20XX

संपादक

नवभारत टाइम्स

बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग

नई दिल्ली-2

विषय : उपसंपादक के लिए आवेदन-पत्र

महोदय

आपने अपने समाचार-पत्र के लिए उपसंपादक के पद के रिक्त स्थान के लिए 18 मार्च के समाचार-पत्र में विज्ञापन दिया था। मैं अपने को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ। मेरी योग्यताएँ व अन्य विवरण निम्नलिखित हैं :

नाम	:	रोहन गुप्ता
पिता का नाम	:	श्री किशन गुप्ता
जन्मतिथि	:	17 अगस्त, 1976
स्थायी पता	:	478, गली नं० 4, पटेल नगर, नई दिल्ली
शिक्षा	:	हिंदी में प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर उपाधि
अनुभव	:	'जनसत्ता' में दो वर्ष तक उपसंपादक के पद पर कार्यानुभव
अतिरिक्त योग्यता	:	टंकण तथा आशुलिपि में डिप्लोमा; कंप्यूटर में डिप्लोमा

यदि आप मुझे इस पद पर कार्य करने का अवसर दें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि समाचार-पत्र की उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न करूँगा।

धन्यवाद

भवदीय

रोहन गुप्ता

शिकायती-पत्र

नगर प्रशासन में होने वाली ढिलाई या कमी के कारण विभिन्न शासकीय अधिकारियों को लिखे गए पत्र 'शिकायती-पत्र' कहलाते हैं। इन पत्रों में मुख्यतः सफाई, जल, बिजली, सड़क, यातायात आदि का न होना; प्रदूषण फैलना, बीमारी फैलना, ट्रैफिक जाम तथा चोरी आदि की घटना से संबंधित अधिकारियों को लिखी शिकायतें आती हैं।

15. चुनाव प्रचार में देर रात तक लाउडस्पीकर से प्रचार करने के विरुद्ध शिकायत करते हुए चुनाव आयुक्त को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 26 मार्च, 20XX

चुनाव आयुक्त, चुनाव आयोग,

दिल्ली सरकार,

नई दिल्ली।

विषय : लाउडस्पीकर पर देर रात तक चुनाव प्रचार पर रोक लगाने के संबंध में।

महोदय,

चुनाव के इस दौर में अपनी पार्टी को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में जुटी प्रचार समितियों ने नाक में दम कर दिया है। देर रात तक बज रहे भोपूओं से शहर का हर व्यक्ति परेशान है।

आपको ज्ञात ही है कि मार्च माह में सभी स्कूलों और कॉलेजों की परीक्षा शुरू हो जाती है। इस माह में वैसे तो चुनाव होने ही नहीं चाहिए। अब जब चुनाव हो ही रहे हैं तो कम-से-कम रात को तो इतना शोर नहीं होना चाहिए कि हम पढ़ ही न पाएँ। परीक्षा सिर पर है और चुनाव में खड़े प्रत्याशी होड़ में लगे हैं कि कौन किससे अधिक कान फोड़ शोर कर सकता है। हर परिवार में कोई-न-कोई परीक्षा देने वाला छात्र है। मेरे ही मुहल्ले में हम चार दोस्त बोर्ड की परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। स्थिति यह है कि हम बिल्कुल भी पढ़ नहीं पा रहे हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए शाम 7 बजे के बाद लाउडस्पीकर प्रचार पर रोक लगाने का आदेश देने की कृपा करें ताकि हम सभी परीक्षा देने वाले छात्रों का भला हो सके। हम आपके अत्यंत आभारी होंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

दिल्ली प्रदेश के सभी परीक्षार्थी

16. दूरदर्शन के निदेशक को राष्ट्रीय एकता और भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता से संबंधित कार्यक्रम प्रसारित करने के संबंध में पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 27 अगस्त, 20XX

निदेशक

दूरदर्शन, पार्लियामेंट स्ट्रीट

नई दिल्ली।

विषय : राष्ट्रीय एकता और भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता से संबंधित कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु।

महोदय,

आपको विदित ही है कि इस समय प्राइवेट चैनलों में पैसा कमाने की अंधी होड़ लगी है। अत: कोई भौंडे कॉमेडी कार्यक्रम दिखा रहे हैं तो कोई भद्दे नृत्य प्रदर्शन प्रतियोगिताओं का आयोजन। जिस चैनल को भी खोलिए, इतने बेहुदे कार्यक्रम परोसे जा रहे हैं कि मन बहुत विचलित हो जाता है। खुलेआम ऐसे कार्यक्रमों का प्रदर्शन जिन्हें हम बच्चों के साथ बैठकर देख नहीं सकतें, आम बात हो गई है। प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में कुछ कार्यक्रम ज्ञान पर भी आधारित हैं; जैसे–डिसकवरी चैनल, जियोग्राफी चैनल आदि। लेकिन किसी को भी राष्ट्रीय एकता और भ. ारतीय संस्कृति के विकास और प्रचार-प्रसार की सुध नहीं है। सभी घटिया मनोरंजन से भरे नृत्य-संगीत के कार्यक्रम दिखाकर या सनसनीखेज समाचार दिखाकर जनता को मूर्ख बनाने का प्रयास करते हैं।

अत: आपसे अनुरोध है कि राष्ट्रहित में दूरदर्शन पर आप ऐसे कार्यक्रमों का प्रसारण सुनिश्चित करने की कृपा करें, जिससे आने वाली पीढ़ी को राष्ट्रीय एकता और संस्कृति, सहिष्णुता को बढ़ाने की प्रेरणा मिल सके।

सधन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०

अ०ब०स० विद्यालय

कक्षा 10 'ब'

17. अपने घर में चोरी हो जाने की सूचना देते हुए पुलिस थाना अधिकारी को पत्र लिखिए।

16/24 शक्ति नगर

नई दिल्ली

दिनांक : 10 दिसंबर, 20XX

थानाध्यक्ष

थाना शक्ति नगर

नई दिल्ली।

विषय : अपने घर में हुई चोरी के संबंध में

महोदय,

मैं शक्तिनगर के 16/24 का निवासी हूँ। मेरे पिताजी अपनी एक छोटी-सी दुकान इस जगह पर चलाते हैं। हमारे घर में मेरे माता-पिता के अलावा मेरी एक छोटी बहन भी है।

कल दोपहर जब मैं घर से बाहर था उस समय एक आदमी घर पर आया। उसने अपने आप को महानगर टेलिफोन का कर्मचारी बताया और उसी बहाने घर में घुस आया। जब माताजी उसके लिए पानी लेने भीतर

गई तो वह घर के कुछ कीमती सामान लेकर गायब हो गया। उसमें मेरा एक लैपटॉप, माताजी का मोबाइल, 5000 रुपए नगदी और एक साइकिल मुख्य है।

मैं आपसे अनुरोध करना चाहूँगा कि चोरों को यथाशीघ्र पकड़कर हमारा सामान दिलवाने की कृपा करें तथा उन्हें उचित दंड भी दें। हमारी कॉलोनी में पिछले चार महीनों में होने वाली यह पाँचवीं चोरी है। एक बार फिर प्रार्थना करते हुए मैं आपके सहयोग की अपेक्षा रखता हूँ।

धन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०

18. बस में छूटे हुए सामान का पता लगाने के लिए दिल्ली परिवहन निगम के मुख्य प्रबंधक को एक पत्र लिखिए।

सी-12/38, कमला नगर
दिल्ली

दिनांक : 8 मार्च, 20XX

मुख्य प्रबंधक
दिल्ली परिवहन निगम
दिल्ली

विषय : बस में छूटे सामान का पता लगाने हेतु

महोदय

मैंने कल शाम अमृतसर से दिल्ली आने वाली 7 बजकर 30 मिनट की बस पकड़ी थी। मुझे कनॉट प्लेस उतरना था। बस रास्ते में खराब हो जाने के कारण अपने निर्धारित समय से एक घंटा देर से पहुँची। समय काफ़ी हो चुका था, इसलिए घबराहट में मैं मात्र एक ही अटैची लेकर बस से उतर गया। मेरे साथ एक छोटा एयरवेज़ का बैग भी था। उसका रंग गहरा नीला था। वह बैग मैं उसी बस में भूल आया। सुबह मैं बस अड्डे गया भी था, लेकिन उस बैग का कोई पता न चला। कृपया आप उसे ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न करें। मैं आपका विशेष आभारी रहूँगा। यदि मेरा बैग मिल जाए तो उसे उपर्युक्त पते पर भिजवाने की कृपा करें।

भवदीय

रमेश वर्मा

19. बस कर्मचारी के अशिष्ट व्यवहार की शिकायत करते हुए अपने प्रदेश के परिवहन प्रबंधक को पत्र लिखिए।

15/9, शकरपुर
दिल्ली-92

दिनांक : 4 दिसंबर, 20XX

प्रबंधक
पटपड़ गंज डिपो
दिल्ली

विषय : कंडक्टर के अभद्र व्यवहार हेतु

महोदय

निवेदन यह है कि मैं हर रोज़ शकरपुर से मायापुरी जाने के लिए 73 नं० बस, जिसका वाहन क्रं० डी एल पी 28 08 है, लेता हूँ। इस बस पर श्री राधेश्याम कंडक्टर नियुक्त है। यह कंडक्टर यात्रियों के साथ सही ढंग से पेश नहीं आता। 10 रुपये देकर 7 रुपये का टिकट माँगने पर बाकी पैसे लौटाता ही नहीं है। बस को निश्चित बस स्टॉप पर न

रुकवाकर आगे-पीछे रुकवाता है और यात्रियों के बस में चढ़ने से पहले ही बस चलवा भी देता है। स्त्रियों के साथ भी इसका व्यवहार अशिष्ट ही रहता है। परसों ही आई०टी०ओ० पर उसने बस निर्धारित स्थान से आगे रुकवाई। एक महिला अभी बस में चढ़ भी नहीं पाई थी कि बस चलवा दी। वह महिला गिरते-गिरते बची। इतना होने पर भी उस महिला से माफ़ी माँगने के स्थान पर उसने ही बेरुखी के साथ कहा-'आप तो मरेगी, हमें भी अंदर करवाएगी।' इसी प्रकार खुले पैसे होने पर भी यात्रियों को खुले पैसे नहीं देता, बल्कि उन्हीं को बुरा-भला कहता है। उसके इस प्रकार के व्यवहार से सभी यात्रियों में रोष है।

अत: आपसे अनुरोध है कि आप इस कंडक्टर के अभद्र व्यवहार की जाँच करवाएँ तथा राधेश्याम जी को यात्रियों के साथ शिष्टतापूर्ण व्यवहार करने की हिदायत दें।

धन्यवाद

भवदीय

सुमित थापर

20. अपने क्षेत्र में मच्छरों के प्रकोप का वर्णन करते हुए उचित कार्यवाही के लिए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

1/2 कृष्णा नगर मोहल्ला

शाहदरा, दिल्ली

दिनांक : 29 जून, 20XX

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी महोदय

नगरपालिका

शाहदरा, दिल्ली

विषय : मोहल्ले में फैली गंदगी के समाधान हेतु

महोदय

इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले में फैली हुई गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इन ऊँचे होते हुए गंदगी के ढेरों के साथ मच्छरों का प्रकोप भी बढ़ता जा रहा है। पिछले रोज़ हुई तेज़ बारिश ने हाल और भी बुरा कर दिया है। अब इस गंदगी से उठने वाली बदबू और भी बढ़ गई है। आस-पास बनी झोंपड़-पट्टियों का हाल तो और भी बुरा हो गया है।

इस गंदगी में पैदा होने वाले मच्छरों की वजह से मलेरिया भी फैल गया है। इस मलेरिया ने चार-पाँच लोगों की जान भी ले ली है। स्वास्थ्य निरीक्षक को इसकी जानकारी पहले भी कई बार दी जा चुकी है, लेकिन वे कहते हैं कि कर्मचारियों की कमी है।

आपसे अनुरोध है कि आप हमारी इस समस्या पर गौर करेंगे तथा यथाशीघ्र मोहल्ले की इस गंदगी को हटवाने का प्रबंध करेंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय

सुरेश शर्मा

21. अपने मोहल्ले में वर्षा के कारण उत्पन्न हुई जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए नगरपालिका अधिकारी को पत्र लिखिए।

105, विश्वास नगर

शाहदरा, दिल्ली

दिनांक : 12 नवंबर, 20XX

प्रशासनिक अधिकारी
दिल्ली नगरपालिका
शाहदरा, दिल्ली

विषय : जल-भराव की समस्या के समाधान हेतु

महोदय

निवेदन यह है कि मैं विश्वास नगर, शाहदरा का निवासी हूँ। पिछले कई दिनों से यहाँ के कुछ सीवर बंद पड़े हैं। गंदा पानी गलियों और सड़कों पर बह रहा है। निरंतर हो रही वर्षा ने हालात को और भी गंभीर बना दिया है। जगह-जगह सड़कों पर गड्ढे बन गए हैं, जिनमें वर्षा का पानी भर गया है और अब सड़ता जा रहा है। वर्षा के पानी ने स्थान-स्थान पर जलाशयों का रूप धारण कर लिया है। इन जलाशयों के कारण मक्खी-मच्छर पैदा हो रहे हैं। इन मच्छरों के कारण अनेक बीमारियों के फैलने की आशंका है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप रुके पानी की निकासी का कोई उचित प्रबंध करवाएँ। बंद सीवरों को खुलवाएँ व जगह-जगह बने गड्ढों को भरवाने का प्रबंध करें जिससे पानी इकट्ठा न हो सके और मच्छर न फैलें। इसके लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित
प्रार्थी
केवल कुमार

22. आपका टेलीफ़ोन गत दो सप्ताह से खराब है। क्षेत्रीय कार्यालय में आपने कई बार इसकी शिकायत की है, किंतु परिणाम ज्यों-का-त्यों है। इसकी शिकायत करते हुए किसी प्रसिद्ध समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

283, मयूर विहार, फेस-I
दिल्ली-92
दिनांक : 24 अगस्त, 20XX

संपादक
नवभारत टाइम्स
7, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-2

विषय : टेलीफ़ोन विभाग की लापरवाही के संबंध में

महोदय

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र द्वारा मैं टेलीफ़ोन अधिकारियों का ध्यान अपने टेलीफ़ोन की ओर दिलवाना चाहता हूँ। मेरे घर का टेलीफ़ोन (22244324) पिछले दो सप्ताह से खराब पड़ा है। इसकी शिकायत मैं तीन बार क्षेत्रीय कार्यालय में जाकर कर चुका हूँ, पर परिणाम ज्यों-का-त्यों। वहाँ के अधिकारी अपने कान में तेल डाले रहते हैं। वे न तो सीधे मुँह बात करते हैं और न ही कोई कार्य करते हैं। मेरे पिताजी अस्वस्थ रहते हैं। माताजी घर में अकेली होती हैं। आवश्यकता पड़ने पर वह टेलीफ़ोन कर मुझे घर बुला लेती थीं। अब टेलीफ़ोन खराब होने से उनकी चिंता और बढ़ गई है। वैसे भी आज के समय में टेलीफ़ोन हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। इसके खराब होने से लगता है कि परिवार का कोई सदस्य ही अस्वस्थ है।

संचार मंत्री ने कुछ समय पूर्व घोषणा की थी कि टेलीफ़ोन खराब होने की शिकायत मिलने के 24 घंटों के भीतर उसे ठीक कर दिया जाएगा। उनकी यह घोषणा लगता है केवल घोषणा-मात्र ही थी। उसे अमल में नहीं लाया गया।

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अपने समाचार-पत्र द्वारा इन सोए हुए कर्मचारियों की नींद भगाने का प्रयत्न करें तथा संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने की कृपा करें, जिससे मेरे मृतप्राय टेलीफ़ोन में जीवन-संचार हो सके। आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

भवदीय

आजाद कुमार सचदेवा

23. अपने नगर के शिक्षा-अधिकारी को एक पत्र लिखकर अपने क्षेत्र में एक और विद्यालय खोलने के लिए अनुरोध कीजिए।

राजपुर रोड

दिल्ली

दिनांक : 3 अगस्त, 20XX

क्षेत्रीय शिक्षाधिकारी

सिविल लाइन ज़ोन

नगर निगम कार्यालय

राजपुर रोड

दिल्ली

विषय : क्षेत्र में एक और विद्यालय खोलने के संबंध में

महोदय

मैं जिस क्षेत्र में रहता हूँ वह क्षेत्र घनी आबादी वाला है। यहाँ लगभग दो से तीन हज़ार तक परिवार बसे हुए हैं। इस क्षेत्र में उचित शिक्षा केंद्र मात्र दो ही हैं। इससे हर वर्ष प्रवेश पाने के लिए परेशानी का सामना करना पड़ता है। जिन्हें अपने क्षेत्र के स्कूल में प्रवेश नहीं मिल पाता, वे दूसरे क्षेत्रों में प्रयत्न करते हैं, लेकिन यहाँ से आने-जाने में उन लोगों का काफ़ी समय खराब हो जाता है।

अत: आपसे अनुरोध है कि शीघ्र ही एक और विद्यालय खोलने की व्यवस्था करने की कृपा करें।

धन्यवाद

भवदीय

लोकेश मिश्रा

24. अपने क्षेत्र में पार्क विकसित कराने के लिए नगर विकास प्राधिकरण के सचिव को पत्र लिखिए।

मोहल्ला सुधार समिति

अमीनाबाद, लखनऊ

दिनांक : 15 मई, 20XX

सचिव

नगर विकास प्राधिकरण

अमीनाबाद

लखनऊ

विषय : पार्क विकसित कराने हेतु अनुरोध

महोदय

मैं इस पत्र के द्वारा आपका ध्यान अमीनाबाद के अव्यवस्थित एवं उपेक्षित पार्क की ओर दिलाना चाहता हूँ। कुछ समय पूर्व आपके विभाग द्वारा यहाँ एक पार्क बनाने की योजना बनाई गई थी। इस योजना को क्रियान्वित करने

के लिए कुछ समय पूर्व पार्क की चारदीवारी बनाई गई थी तथा पौधों को लगाने के लिए खुदाई भी की गई थी, पर इस पार्क में न तो पौधे लगाए गए और न ही कभी दुबारा आपके विभाग ने याद किया। जगह-जगह गड्ढे हो जाने के कारण वर्षा का पानी उसमें भर जाता है, जिससे मच्छर-मक्खियाँ पैदा होती हैं और बीमारियाँ फैलती हैं। कुछ असामाजिक तत्वों ने इस पार्क में अपना अड्डा बना लिया है और वे आने-जाने वाले लोगों को परेशान किया करते हैं।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस ओर थोड़ा-सा ध्यान दें। यदि पार्क को इस उपेक्षित दशा से निकाल कर व्यवस्थित करवाने का प्रयत्न किया जाए तो यहाँ के निवासियों के लिए बहुत अच्छा होगा। बच्चे इस पार्क में खेलकर अपना समुचित विकास कर सकेंगे तथा अन्य लोग भी इस पार्क में अपने स्वास्थ्य का विकास कर सकेंगे। पार्क में हरे-भरे पेड़-पौधों तथा घास से चारों ओर हरियाली फैल जाएगी। इस हरियाली से वातावरण स्वच्छ होगा तथा लोगों का चित्त प्रसन्न रहेगा।

अतः मेरा अनुरोध है कि आप इस ओर थोड़ा-सा ध्यान दें तथा पार्क की समुचित व्यवस्था करवाएँ। हम सभी इसके लिए आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

शेखर अग्रवाल

25. अपने इलाके की अव्यवस्थित डाक वितरण की शिकायत करते हुए डाकपाल को पत्र लिखिए।

14 बी, गोल मार्केट
नई दिल्ली-1
दिनांक : 5 जून, 20XX

मुख्य डाकपाल
जी०पी०ओ०
गोल मार्केट
नई दिल्ली

विषय : अव्यवस्थित डाक वितरण की सूचना हेतु

महोदय

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान अपने क्षेत्र की अव्यवस्थित डाक-प्रणाली की ओर दिलाना चाहता हूँ। पहले यहाँ दिन में तीन बार डाक वितरित की जाती थी, पर आजकल यदि दिन में एक बार भी डाकिए के दर्शन हो जाएँ तो हम अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं। यह महाशय तो कई बार तीन-चार दिन तक दर्शन देने नहीं आते। आते भी हैं तो डाक को सही ढंग से वितरित नहीं करते। पत्रों को लेटर बॉक्स के अंदर नहीं डालते। कभी तो लेटर बॉक्स के ऊपर रख देते हैं और कभी ऐसे ही घर के अंदर फेंक जाते हैं जिससे वह उड़ कर कहीं और पहुँच जाते हैं। इतना ही नहीं हमारी चिट्ठी किसी और के घर डाल जाते हैं तथा किसी और की चिट्ठी हमारे घर में।

अभी पिछले हफ़्ते ही मेरी परीक्षा का अनुक्रमांक परीक्षा होने के बाद प्राप्त हुआ, जिस कारण मेरा एक वर्ष ख़राब हो गया। आप सोच सकते हैं कि इस प्रकार हमारा कितना नुकसान हो रहा है और हमें कैसी-कैसी परेशानियाँ उठानी पड़ रही हैं। डाकिए सचित्र पत्रिकाओं को तो कभी डालते ही नहीं बल्कि इसे हज़म करना अपना पुनीत कर्तव्य समझते हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप इस ओर ध्यान दें और समुचित डाक वितरण का प्रबंध करवाएँ। इस कृपा के लिए हम सदा आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित
प्रवीण गुप्ता

26. आपके मोहल्ले में आए दिन चोरियाँ हो रही हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को गश्त बढ़ाने हेतु पत्र लिखिए।

गुरु अंगददेव नगर मोहल्ला समिति
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92
दिनांक : 15 जुलाई, 20XX

थानाध्यक्ष
लक्ष्मी नगर पुलिस चौकी
लक्ष्मी नगर, दिल्ली

विषय : गश्त बढ़ाने हेतु निवेदन

महोदय
मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान आपके थाने के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र लक्ष्मी नगर की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले कुछ दिनों से यहाँ चोरी की घटनाएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। अभी परसों की ही बात है, कुछ चोरों ने दिन में ही हमारे पड़ोसी के घर के दरवाज़े तोड़ दिए। उनके घर का सारा कीमती सामान लेकर चोर रफ़ूचक्कर हो गए। इस घटना से कुछ दिन पहले हमारी गली में एक घर के ताले टूटे पाए गए और तो और दिन-दहाड़े भरे-बाज़ार में एक स्त्री के गले की चेन कुछ गुंडों ने छीन ली। पार्क में भी कुछ लोग बैठकर जुआ खेलते रहते हैं और अवसर पाते ही पार्क में आने वालों को लूट लेते हैं। गली में खड़ी कार के स्टीरियो तथा स्कूटरों की स्टेपनी की चोरी तो रोज़मर्रा की बात है। कुछ लोग तो चरस, अफ़ीम, गांजा जैसे नशीले पदार्थों को भी बेचते रहते हैं।

यहाँ पुलिस का केवल एक सिपाही गश्त लगाता है, कभी-कभी वह भी नहीं आता। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप यहाँ पर गश्त बढ़ा दीजिए। चार सिपाहियों की लगातार गश्त से किसी का साहस नहीं होगा कि वह इस ओर देख भी सके। पुलिस की गाड़ी का भी एक चक्कर लगाने को कहें। हमें आशा है कि आप हमारी परेशानी को समझेंगे और समुचित सुरक्षा का प्रबंध करेंगे। आपके इस कार्य के लिए यहाँ के सभी नागरिक आपके आभारी रहेंगे।
धन्यवाद
भवदीय
सुरेश शर्मा

27. दूरदर्शन के निदेशक को किसी अप्रिय कार्यक्रम के विषय में शिकायती-पत्र लिखिए।

सेवा में
निदेशक-दूरदर्शन
दिल्ली दूरदर्शन
मंडी हाऊस, दिल्ली
विषय : असामाजिक गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे सीरियल के बारे में पत्र।
महोदय,
मैं आपका ध्यान दूरदर्शन पर दिखाए जा रहे 'हम हैं आज़ाद' नामक सीरियल की ओर खींचना चाहता हूँ। यह सीरियल इतना अधिक निम्न श्रेणी का है कि इसे सीरियल के नाम पर धब्बा कहा जा सकता है। इस सीरियल में प्रस्तुत परिवार और कुछ चरित्र वास्तव में हमारे समाज में कहीं नज़र नहीं आते। बच्चों को आधुनिकता के नाम पर क्या परोसा जा रहा है, इसका आप लोगों को अंदाज़ा नहीं है।

इन्हीं सीरियल को देखकर उनका अपने माता-पिता के प्रति सम्मान समाप्त होता जा रहा है। उन्हें अपने माता-पिता खिलौने के समान लगते हैं। अबोध बच्चे इसी को सच मानकर अपना जीवन उस ओर धकेल रहे हैं, जहाँ सिर्फ गंदगी ही है।

मेरा अनुरोध है कि इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा न दें। इसे तत्काल बंद करने की कृपा करें।
भवदीय
नंदन
दिनांक: 9 सितंबर, 20XX

28. सड़क परिवहन के प्रबंधक को बसों की कुव्यवस्था के लिए शिकायती-पत्र लिखिए।

लोक निर्माण मंच, दिल्ली
दिनांक : 10 मार्च, 20XX

प्रबंधक महोदय
दिल्ली परिवहन निगम
इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली

विषय : दिल्ली में बसों की कुव्यवस्था

मान्यवर
मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान दिल्ली में बसों की कुव्यवस्था की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दिल्ली न केवल भारत की राजधानी है अपितु विश्व के प्रसिद्ध नगरों में भी गिनी जाती है। अत्यंत खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि इस महानगर में बसों की समुचित व्यवस्था नहीं है। दिल्ली परिवहन निगम की बसों के दर्शन तो कभी-कभी होते हैं। ब्लू लाइन, रेड लाइन तथा अन्य बसों की व्यवस्था भी ठीक नहीं है। बस स्टाप से पहले या बाद में रोकना, उनका अत्यंत तेज़ गति से चलाया जाना, बसों में अत्यंत भीड़-भाड़, बस संवाहकों का अभद्र व्यवहार, बसों की खराब हालत आदि कुछ ऐसी समस्याएँ हैं, जिनका निराकरण किए बिना दिल्ली की बस व्यवस्था नहीं सुधर सकती।

दिल्ली परिवहन निगम की गिनी-चुनी बसों की हालत तो और भी खस्ता है। उनके चालक निर्धारित बस स्टॉप पर बसें रोकते ही नहीं और उनके आगे-पीछे रोकते हैं। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि बहुत प्रतीक्षा के बाद किसी डी०टी०सी० बस के दर्शन हुए, मगर सवारी हाथ देती रही और चालक महोदय ने बस रोकने का कष्ट ही नहीं किया। आश्चर्य तो तब होता है जब ऐसी बसें खाली होती हैं और चालकों को इसकी कतई परवाह नहीं।

आप एक अनुभवी एवं योग्य प्रबंधक हैं। आशा है कि आप दिल्ली की बसों की व्यवस्था को सुधारने में कोई कसर न उठा रखेंगे।

धन्यवाद
भवदीय
राजीव मल्होत्रा

29. अपने क्षेत्र के पोस्ट मास्टर को मनीआर्डर प्राप्त न होने की शिकायत करते हुए पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 20 फरवरी, 20XX

डाकपाल महोदय
जी०पी०ओ०
कश्मीरी गेट
दिल्ली

विषय : मनीआर्डर क्रमांक 3285, दिनांक 6.1.20XX

महोदय

मैंने जी०पी०ओ० कश्मीरी गेट डाकघर से दिनांक 6.1.20XX को पाँच हज़ार रुपये का मनीआर्डर अपने पिता श्री रामेश्वर दयाल ज़िला फतेहपुर, सीकर (राजस्थान) के नाम करवाया था, जिसकी रसीद का क्रमांक 3285 था। जब तीन महीने तक धनराशि मेरे पिताजी के पास नहीं पहुँची, तो मैंने डाकघर में पता लगाया परंतु कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। इससे पूर्व भी इस संबंध में मैंने दो पत्र लिखे, उनका भी कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। फतेहपुर के डाकघर से संपर्क करने पर विदित हुआ कि यह मनीआर्डर वहाँ पहुँचा ही नहीं।

आपसे अनुरोध है कि इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही करने का कष्ट करें तथा मनीआर्डर की धनराशि मुझे दिलवाकर अनुगृहीत करें।

धन्यवाद सहित

भवदीय

क०ख०ग०

30. अपने क्षेत्र में पेय-जल की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

स्वास्थ्य विहार विकास समिति, दिल्ली

दिनांक : 3 फरवरी, 20XX

स्वास्थ्य अधिकारी

नगर निगम (उत्तरी क्षेत्र)

कश्मीरी गेट, दिल्ली

विषय : स्वास्थ्य विहार में पेय-जल की आपूर्ति

मान्यवर

हम दिल्ली के उत्तरी क्षेत्र के स्वास्थ्य विहार के निवासी इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान अपने क्षेत्र की पेय-जल की समस्या की ओर आकर्षित कर रहे हैं। स्वास्थ्य विहार में आजकल पेय-जल का इतना गहरा संकट छाया हुआ है कि यहाँ के निवासियों का जीना दूभर हो गया है। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई है। नलों में पानी सुबह-शाम केवल एक-एक घंटे के लिए आता है, पर वह भी इतने कम दबाव के साथ कि बस मुश्किल से एक-दो बाल्टियाँ ही भर पाती हैं। ऊपर की मंज़िलों में तो पानी चढ़ता ही नहीं। यद्यपि समाचार-पत्रों में टैंकरों से पानी देने की सुविधा का विज्ञापन आपकी ओर से दिया गया था, परंतु एक सप्ताह से हमने तो यहाँ कोई टैंकर आता हुआ नहीं देखा।

आपसे अनुरोध है कि इस क्षेत्र के निवासियों को इस भीषण संकट से राहत दिलाने के लिए पानी का दबाव तथा उसके आने की समयावधि को भी बढ़वाने के लिए संबंधित अधिकारियों को तुरंत निर्देश दें।

सधन्यवाद

भवदीय

दर्शन जैन

31. आपके नगर में अनधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं। इनकी रोकथाम के लिए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए।

डाकखाना रोड,

अमरौली, दिल्ली

दिनांक : 22 अगस्त, 20XX

श्रीमान् ज़िलाधिकारी महोदय

पूर्वी दिल्ली जिला शाहदरा,

दिल्ली।

विषय : नगर में बढ़ रहे अनधिकृत मकानों की शिकायत।

महोदय

सविनय निवेदन है कि आजकल बहुत से अनधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं। यह सब जिला प्रशासन के अफसरों और आम जनता की मिली भगत का मामला है। अफसरों को मिलने वाली मोटी रकम से आज प्रशासन के अधिक-से-अधिक अफसरों की जेब हरी हो रही है।

शाहदरा के एक पालिका पार्क के सामने कम-से-कम दस मकान इसी तरह के बन चुके हैं। आश्चर्य की बात यह है कि आज तक किसी अधिकारी ने इसे रोकने का प्रयत्न नहीं किया है।

आपसे प्रार्थना है कि समय रहते इस अवैध निर्माण को रोकें। हम नागरिकों के लिए पार्क की भूमि बहुत महत्त्वपूर्ण है। हमारे बच्चों का भविष्य है। हमारे अधिकारों की इस चोरी को आपको रोकना होगा। आशा है, आप शीघ्र कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

रमण पुरी

32. अपने क्षेत्र में पेड़-पौधों की अनियंत्रित कटाई को रोकने के लिए ज़िलाधिकारी को एक पत्र लिखिए।

रामनगर, दिल्ली

दिनांक : 16 मई, 20XX

श्रीमान ज़िलाधिकारी महोदय

पश्चिमी दिल्ली ज़िला

रामनगर, दिल्ली

विषय : रामनगर क्षेत्र में पेड़-पौधों की अनियंत्रित कटाई

महोदय

हम पश्चिमी दिल्ली के रामनगर क्षेत्र के निवासी इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान इस क्षेत्र में पेड़-पौधों की अनियंत्रित और गैरकानूनी कटाई की ओर आकृषत कराना चाहते हैं।

अत्यंत दुख एवं खेद का विषय है कि आज जब चारों ओर वन महोत्सव मनाए जा रहे हैं, वृक्षारोपण किया जा रहा है, तभी रामनगर क्षेत्र में कुछ स्वार्थी परंतु प्रभावशाली लोगों द्वारा स्वच्छता के नाम पर वृक्षों की अनियंत्रित कटाई ज़ोरों पर है।

सड़कों के दोनों ओर तथा कॉलोनियों में सरकार द्वारा जो वृक्ष लगाए गए थे, उनमें से अधिकांश या तो काटे जा चुके हैं या फिर उनके काटने की योजना बन गई है। कुछ समाजसेवी संस्थाओं द्वारा जब इस कटाई के विरुद्ध प्रदर्शन किया गया तथा धरना दिया गया, तो कुछ दिनों तक यह कटाई रुक गई पर बाद में वही सिलसिला फिर शुरू हो गया। महोदय, यदि यह कटाई इसी प्रकार चलती रही, तो एक दिन इस क्षेत्र में कोई भी वृक्ष नज़र नहीं आएगा तथा प्रदूषण रूपी दैत्य अपना पूरा तथा भयावह प्रकोप दिखाने में समर्थ हो जाएगा।

आपसे अनुरोध है कि आप पुलिस तथा सतर्कता विभाग को इस स्थिति से निपटने के लिए उचित निर्देश देकर कृतार्थ करें।

सधन्यवाद

भवदीय

रामचंद्र शुक्ला

33. आपने किसी पुस्तक-विक्रेता से पुस्तकें मँगवाई थीं, किंतु अभी तक आपको पुस्तकें नहीं मिलीं। पुस्तक-विक्रेता को एक शिकायती-पत्र लिखिए।

17, शिवाजी मार्ग

नई दिल्ली

दिनांक : 23 मई, 20XX

व्यवस्थापक महोदय

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि०

19 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

विषय : डाक द्वारा मँगवाई पुस्तकें न पहुँचने के संदर्भ में

महोदय

मैंने दिनांक 21 अप्रैल को पत्र द्वारा आपसे निम्नलिखित पुस्तकें मँगवाई थीं :

पुस्तकों के नाम	प्रतियाँ
पराग (भाग 2)	4 प्रतियाँ
स्वाति (भाग 2)	4 प्रतियाँ
व्याकरण विशेष	3 प्रतियाँ
निबंध सुधा	5 प्रतियाँ

मैंने इन पुस्तकों की सूची के साथ 300 रुपये का ड्राफ्ट (बैंक ऑफ बड़ौदा सं० 497246 दिनांक 20 अप्रैल) भी भेजा था। मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि आपने अभी तक न तो पुस्तकें भेजी हैं और न ही कोई सूचना भेजी है कि आप कब तक इन पुस्तकों को भेज रहे हैं। आपके जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से ऐसी लापरवाही की अपेक्षा नहीं की जाती। हमारी परीक्षाएँ समीप आ रही हैं, इसलिए आप कृपया शीघ्र ही इन पुस्तकों को भेजने का प्रबंध करें।

धन्यवाद

भवदीय

राधिका वर्मा

संपादकीय-पत्र

34. रचना प्रकाशित करवाने के लिए संपादक महोदय को पत्र लिखिए।

1428, कश्मीरी गेट

दिल्ली

दिनांक : 16 जुलाई, 20XX

श्रीयुत संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली

विषय : रचना प्रकाशित करवाने हेतु पत्र

महोदय

निवेदन है कि आपके रविवारीय परिशिष्ट के लिए मैं अपनी लिखी एक कहानी प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ। यह कहानी आज की युवा पीढ़ी के भटकने की कहानी है। इस कहानी में मैंने पथभ्रष्ट युवा पीढ़ी की समस्याओं को उभारा है।

यही नहीं इसका समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। आज के परिप्रेक्ष्य से जुड़ी यह कहानी आपको ज़रूर पसंद आएगी, ऐसा मेरा विश्वास है। इससे पहले मेरी दो कहानियाँ 'धर्मयुग' तथा 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में छप चुकी हैं।

कहानी की अस्वीकृति की स्थिति में वापसी के लिए पाँच रुपये के डाक टिकट सहित अपना पता लिखा लिफ़ाफा भेज रहा हूँ।

धन्यवाद

भवदीय

योगेश राव

35. अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन करते हुए किसी दैनिक-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सुंदर कॉलोनी

शाहदरा, दिल्ली

दिनांक : 16 जुलाई, 20XX

संपादक महोदय

दैनिक-पत्र हिंदुस्तान

18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग

नई दिल्ली-110001

विषय : बिजली संकट की समस्या के निवारण हेतु पत्र

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक-पत्र के माध्यम से अपने नगर में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों की ओर अधिकारियों का ध्यान आकृषत कराना चाहता हूँ।

मैं शाहदरा क्षेत्र में रहने वाला नागरिक हूँ। आजकल उपस्थित बिजली संकट ने यहाँ के निवासियों की नाक में दम कर दिया है। आज से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। इस संकट का सामना सबसे अधिक आम लोगों व छात्रों को करना पड़ रहा है। शाम होते ही सब कुछ अंधकार की छाया में समा जाता है। अध्ययनशील छात्र कुछ पढ़ पाने में असमर्थ हो जाते हैं। बिना बिजली के घर श्मशान-सा दिखाई देने लग जाता है। बिजली के अभाव में तीन-तीन दिन तक आटे की पिसाई नहीं हो पाती। पानी की समस्या तो इससे भी दुगुनी हो गई है। बिजली के अभाव में पानी की मोटरों से पानी ऊपर की मंज़िलों तक नहीं पहुँच पाता।

यह आश्चर्य की बात है कि इस क्षेत्र में रहने वाले अधिकारियों व उद्योगपतियों के घर बिजली एक पल के लिए भी नहीं जाती। ऐसे में आम लोगों की कठिनाइयों का अनुमान उन्हें कैसे लगेगा। यह स्पष्ट है कि उद्योगपति इन भ्रष्ट बिजली अधिकारियों की पोल खोलने में मेरा साथ नहीं देंगे। अत: मैं चाहता हूँ कि आपके दैनिक पत्र द्वारा इनकी पोल खोली जाए। इस कार्य के लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

भवदीय

रमाकांत विज

36. चुनाव के दिनों में कार्यकर्ता घरों, विद्यालयों और मार्गदर्शक चित्रों आदि पर बेतहाशा पोस्टर आदि लगा जाते हैं। इससे लोगों को होने वाली असुविधा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए 'नवभारत टाइम्स' पत्र के कॉलम 'हमारी आवाज़' के लिए पत्र लिखिए।

सी-4, ग्रेटर कैलाश
नई दिल्ली
दिनांक : 18 जुलाई, 20XX

प्रधान संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-110002

विषय : चुनाव प्रचार के पोस्टर आदि से होने वाली असुविधा

मान्यवर

आजकल आम चुनावों के दिन हैं तथा चुनाव की सरगर्मियाँ ज़ोरों पर हैं। इन दिनों जिधर देखिए पोस्टर-ही-पोस्टर दिखाई पड़ते हैं। पोस्टर लगाने वाले इन लोगों के घरों, विद्यालयों, दुकानों आदि की दीवारों को पोस्टरों से बुरी तरह ढक दिया है। इनसे सुंदरता को तो ठेस पहुँचती ही है, गलियों के नाम, उनके नंबर, मकानों के नंबर आदि भी ढूँढ़ने में दिक्कत होती है। पोस्टर लगाने वाले इन उत्साही कार्यकर्ताओं ने मार्गदर्शक चित्रों को भी नहीं छोड़ा है। उन्हें भी पोस्टरों से ढक दिया है। इस स्थिति में यदि किसी आगंतुक को किसी स्थान का पता आदि ढूँढ़ना हो तो वह बेचारा कैसे ढूँढ़े?

मेरे विचार से प्रत्याशियों व उनके सहयोगियों द्वारा की जाने वाली प्रचार की इन हरकतों पर कुछ रोक होनी चाहिए। घरों के नंबर, गलियों के नाम, नंबर तथा मार्गदर्शक चित्रों पर पोस्टर लगाने पर पाबंदी लगाई जानी चाहिए तथा ऐसा करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जानी चाहिए। आपसे अनुरोध है कि मेरे इन विचारों को अपने समाचार-पत्र के 'हमारी आवाज़' कॉलम में छापने का कष्ट करें, जिससे कि राजनैतिक दल अपने कार्यकर्ताओं को इस दिशा में सावधानी बरतने को कह सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय
रवींद्र अग्रवाल

37. विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह का वर्णन करते हुए समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

पर्यावरण समिति
ग्रीन फील्ड स्कूल
मयूर विहार, दिल्ली
दिनांक : 5 फरवरी, 20XX

संपादक महोदय
हिंदुस्तान टाइम्स
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली

विषय : विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह का आयोजन

मान्यवर

हमारे विद्यालय में आज दिनांक 5 फरवरी, 20XX को वृक्षारोपण समारोह संपन्न हुआ, जिसका संक्षिप्त विवरण मैं आपको प्रेषित कर रहा हूँ। आशा है आप इसे कल प्रकाशित होने वाले अपने दैनिक-पत्र में छापकर हमें कृतार्थ करेंगे।

आज दिनांक 5 फरवरी, 20XX को ग्रीन फील्ड स्कूल मयूर विहार में वृक्षारोपण समारोह बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह का उद्घाटन पर्यावरण मंत्री ने किया। सर्वप्रथम उन्होंने प्रधानाचार्य एवं विद्यार्थियों के एक दल के साथ विद्यालय के समीप बनाए गए 'मिनी फॉरेस्ट' का निरीक्षण किया। तत्पश्चात विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया। विद्यालय के छात्रों एवं प्रधानाचार्य ने भी पौधे रोपे। साथ-ही-साथ वृक्षों के संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण का भी संकल्प लिया गया। वृक्षों की देख-रेख एवं निरीक्षण का कार्य विज्ञान के विद्यार्थी रवि दीक्षित को सौंपा गया। पर्यावरण मंत्री ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए पर्यावरण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। समारोह के अंत में पर्यावरण से जुड़ी 'हमारी पृथ्वी' शीर्षक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे अत्यंत सराहा गया। अंत में प्रधानाचार्य के धन्यवाद प्रस्ताव से कार्यक्रम का समापन हुआ।

भवदीय

करण शर्मा

38. 'नवभारत टाइम्स' या किसी अन्य समाचार-पत्र के संपादक को दयनीय जल-व्यवस्था की ओर ध्यान आकृष्ट करवाते हुए एक पत्र लिखिए।

1342, कश्मीरी गेट

दिल्ली

दिनांक : 28 मार्च, 20XX

प्रधान संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग

नई दिल्ली-110002

विषय : दयनीय जल-व्यवस्था की ओर ध्यान आकृष्ट करवाना

महोदय

मैं आपके प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय 'समाचार-पत्र' के माध्यम से दिल्ली जल बोर्ड एवं दिल्ली प्रशासन के अधिकारियों का ध्यान नगर की दयनीय जल-व्यवस्था की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। आपसे अनुरोध है कि मेरे इस पत्र को 'लोकवाणी'-स्तंभ में प्रकाशित करने का कष्ट करें।

दिल्ली हमारे देश की राजधानी है तथा विश्व के प्रमुख नगरों में गिनी जाती है। आज दिल्ली महानगर की जल-आपूर्ति या जल-व्यवस्था की समस्या अत्यंत शोचनीय है। हालाँकि इसे और भी बदतर बनाने में दिल्ली विद्युत बोर्ड ने भी अपना पूरा योगदान दिया है, परंतु फिर भी कुछ बातें ऐसी हैं, जिनका संबंध जल-व्यवस्था से ही है।

दिल्ली में 'जल आपूर्ति' ज़रूरत से बहुत कम है। अधिकांश अनधिकृत बस्तियों तथा क्षेत्रों में लोगों को हैंड पंप आदि का पानी पीना पड़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। दिल्ली जल विभाग द्वारा भी जो पानी नलों के द्वारा भेजा जाता है, उसकी शुद्धता भी संदेहात्मक है। अमीर लोग या तो 'मिनरल वाटर' पीकर गुज़ारा करते हैं या फिर उन्होंने अपने घरों में एक्वागार्ड जैसी मशीनें लगवाई हुई हैं, परंतु मध्यम या निम्नवर्ग के लोगों को ये सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं, अतः उन्हें विवश होकर ऐसा पानी पीना पड़ता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

जल की आपूर्ति केवल एक दो घंटे प्रातः और सायं को की जाती है। वह भी बहुमंज़िली इमारतों में नहीं चढ़ता। दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा बनाए गए फ्लैट्स में भी ऊपर की मंज़िलों में पानी बिलकुल नहीं चढ़ता, जिससे उनमें रहने वालों को पानी की एक-एक बूँद के लिए तरसना पड़ता है। एक ओर तो भीषण गर्मी पड़ती है, दूसरी ओर

पानी की तंगी। लगता है अधिकारी वर्ग की कार्य-प्रणाली तथा योजना में कमी है। अधिकारियों को इस दिशा में कोई ठोस कदम उठाकर इस समस्या का समाधान करना चाहिए।

धन्यवाद

भवदीय

रतन विश्वास

39. सार्वजनिक स्थानों पर बढ़ते धूम्रपान पर चिंता व्यक्त करने तथा उसे रोकने के लिए हिंदुस्तान टाइम्स के संपादक को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 3 फरवरी, 20XX

संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग

नई दिल्ली-110002

विषय : सार्वजनिक स्थानों पर बढ़ते धूम्रपान पर चिंता व्यक्त करना

महोदय

निवेदन है कि कई वर्षों से केंद्रीय सरकार की सिफारिश पर उच्च न्यायालय ने सार्वजनिक स्थानों पर बीड़ी, सिगरेट पीने पर रोक लगाने के आदेश जारी किए थे। इस आदेश से कुछ प्रबुद्ध लोग बहुत प्रसन्न हुए तथा कुछ बीड़ी, सिगरेट बनाने वाली कंपनियाँ एवं इनका सेवन करने वाले नागरिक नाराज़ एवं परेशान हुए। आदेश जारी होने के कुछ दिनों तक तो स्थिति बहुत अच्छी रही। लोगों ने सज़ा एवं जुर्माने के डर से सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करना बंद कर दिया, परंतु अब स्थिति धीरे-धीरे पहले जैसी ही हो गई है।

महोदय, आज रेलवे स्टेशनों, औषधालयों, बस अड्डों, न्यायालयों, यहाँ तक कि विद्यालयों में भी निर्भय होकर धूम्रपान करके न्यायालय के नियमों की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। इसका प्रमुख कारण है, इस बुराई के प्रति सरकार का कड़ा रुख न होना तथा लोगों में सामाजिक चेतना का अभाव।

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए तो हानिकारक है ही, यह बुद्धि तथा स्मरण शक्ति का विनाश भी करता है। इससे टी०बी० तथा कैंसर जैसी भयंकर बीमारियाँ पनपती हैं। धूम्रपान करने वाले लोगों के पास बैठने वालों तथा रहने वालों पर भी असर पड़ता है। यह अन्य लोगों को भी प्रभावित करता है। सार्वजनिक स्थानों पर छात्रों, बीमार महिलाओं तथा सदाचारियों पर कुप्रभाव डालता है। अत: आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से लोगों को सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान न करने के लिए जन चेतना आंदोलन छेड़ें।

धन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०

40. स्वास्थ्य विभाग द्वारा आपके क्षेत्र की गंदगी की ओर कोई ध्यान न दिए जाने पर किसी दैनिक-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

डब्ल्यू० जैड० 16/24

कश्मीरी गेट, सुधार समिति

दिनांक : 10 फरवरी, 20XX

संपादक महोदय
दैनिक हिंदुस्तान
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली-110001

विषय : क्षेत्र की गंदगी की ओर ध्यान दिलाने के लिए

मान्यवर
मैं आपके लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित पत्र के माध्यम से दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों का ध्यान कश्मीरी गेट क्षेत्र की गंदगी की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूँ। आपसे अनुरोध है कि मेरा यह पत्र अपने समाचार-पत्र के 'लोकवाणी' शीर्षक कॉलम में प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।

कश्मीरी गेट पश्चिमी दिल्ली का ऐसा क्षेत्र है, जहाँ बड़ी-बड़ी कोठियाँ या बंगले नहीं हैं, बल्कि मध्यम तथा निम्नवर्ग के लोगों के आवास हैं। यहाँ की गलियाँ और सड़कें छोटी तथा तंग हैं, जिनमें पानी के निकास की समुचित व्यवस्था का अभाव है। पिछले कई महीनों में इस क्षेत्र में स्थान-स्थान पर पानी भरा है तथा कूड़े के ढेर यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। अनेक बार दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों से संपर्क किया गया, उन्हें लिखित में ज्ञापन भी दिया गया, क्षेत्र का शिष्टमंडल भी व्यक्तिगत रूप से उनसे मिला, पर सिवाय कोरे आश्वासनों के कुछ हाथ नहीं लगा। विवश होकर समाचार-पत्र का सहारा लेना पड़ा।

हमें आशा है, अधिकारी वर्ग एक बार स्वयं इस क्षेत्र का भ्रमण करेंगे तथा सफ़ाई कर्मचारियों को तुरंत सफ़ाई करने का आदेश देंगे। साथ ही अपने काम को कर्तव्य भावना से न करने वाले तथा कामचोर कर्मचारियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने से भी न चूकेंगे।

भवदीय
विमल भाटिया
अध्यक्ष

पूछताछ संबंधी-पत्र

41. स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया के प्रबंधक को पत्र लिखकर पूछिए कि आपको उस बैंक में एक लॉकर चाहिए, उसके लिए आपको क्या करना होगा?

1619, मालीवाड़ा
चाँदनी चौक
दिल्ली-110006
दिनांक : 3 फरवरी, 20XX

महाप्रबंधक
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
चाँदनी चौक
दिल्ली-110006

विषय : बैंक में लॉकर की सुविधा प्राप्त करने हेतु

महोदय
मैं चाँदनी चौक का निवासी हूँ। यहीं मेरी दुकान भी है। मेरा आपके बैंक में एक खाता पिछले दस सालों से है, जिसकी

संख्या 3894 है। अब मैं आपके बैंक में एक लॉकर की सुविधा प्राप्त करना चाहता हूँ। कृपया आप बताएँ कि मुझे इसके लिए क्या करना होगा।

धन्यवाद

आवेदक

डॉ० विमल बत्रा

42. किसी पुस्तक विक्रेता की ओर से किसी प्रकाशक को पूछताछ संबंधी-पत्र लिखिए।

वर्मा बुक सेंटर

1632, नई सड़क

चाँदनी चौक

दिल्ली-110006

दिनांक : 3 जनवरी, 20XX

प्रबंधक

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि०

19, दरियागंज

दिल्ली

विषय : पुस्तक विक्रेता द्वारा प्रकाशक से पूछताछ संबंधी-पत्र

महोदय

पिछले बीस सालों से हमारी दुकान नई सड़क पर है। हम अब तक दूसरे प्रकाशक की पुस्तकें अपनी दुकान से बेचते रहे हैं, लेकिन आप के साथ संपर्क नहीं हुआ। हम आपके प्रकाशन की पुस्तकें भी अब बेचना चाहते हैं। कृपया बताएँ कि आपके पास किन-किन विषयों व कक्षाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं। आप पाठ्य-पुस्तकों व सामान्य पुस्तकों पर कितनी छूट देंगे। पुस्तकें पहुँचाने, उनका भुगतान तथा पुस्तकों की वापसी के बारे में भी विस्तृत जानकारी दें।

धन्यवाद

भवदीय

मोहनलाल

43. 'पंजाब एवं सिंध' बैंक सिविल लाइन के प्रबंधक को पत्र लिखकर ज्ञात कीजिए कि चार वर्ष की अवधि के लिए पैसे जमा कराने पर कितना ब्याज मिलेगा?

25/23, रोहतगी अपार्टमेंट

सिविल लाइन

दिल्ली

दिनांक : 2 मार्च, 20XX

प्रबंधक

पंजाब एंड सिंध बैंक

सिविल लाइन

दिल्ली

विषय : जमा राशि पर ब्याज-संबंधी जानकारी लेने हेतु

महोदय

मैं सिविल लाइन का निवासी हूँ। मैं आपकी शाखा में एक लाख रुपये की राशि चार वर्ष के लिए जमा कराना चाहता हूँ। कृपया मुझे ब्याज दर के बारे में जानकारी दें।

धन्यवाद

आवेदक

कैलाश चंद्र

44. आपने अपना नया मकान बनवाया है, उसके लिए आपको बिजली के नए मीटर लगवाने हैं। बिजली विभाग के अधिकारी को पत्र लिखकर यह पूछें कि नए मीटर को लगवाने के लिए आपको क्या करना होगा?

26/14 सरस्वती विला

रोहिणी, दिल्ली

दिनांक : 30 जनवरी, 20XX

उपमंडल अधिकारी

दिल्ली विद्युत बोर्ड

दिल्ली

विषय : नए मीटर लगवाने के बारे में जानकारी लेने हेतु

मैंने रोहिणी सेक्टर-26 में अपना नया मकान बनवाया है। मुझे अपने नए मकान के लिए बिजली के नए कनेक्शन की आवश्यकता है। कृपया मुझे यह बताएँ कि इसके लिए क्या औपचारिकताएँ पूरी करनी होंगी।

धन्यवाद

प्रार्थी

वसंत जुनेजा

45. पुस्तकें मँगवाने के लिए प्रकाशक के नाम पत्र लिखिए।

ई-24, ग्रेटर कैलाश

नई दिल्ली

दिनांक : 2 मार्च, 20XX

श्रीमान व्यवस्थापक महोदय

रचना सागर प्रा० लिमिटेड

7/19 अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली-110002

विषय : पुस्तकें मँगवाने हेतु

महोदय

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें अविलंब वी०पी०पी० द्वारा उचित कमीशन काटकर उपर्युक्त पते पर भिजवाने का कष्ट करें। इस पत्र के साथ 50/- रुपये का ड्राफ्ट मैं अग्रिम भिजवा रहा हूँ। यदि ये किताबें स्टॉक में न हों तो, कृपया लौटती डाक से सूचित करने का कष्ट करें।

पुस्तकें भेजते समय कृपया इस बात का ध्यान रखें कि किताबें कहीं से कटी-फटी न हों। संस्करण बिल्कुल नया हो तथा देखने में सही ढंग की हों। पुस्तकों के नाम अग्रलिखित हैं:

1. गोदान-प्रेमचंद
2. निबंध निकुंज
3. समाजशास्त्र (दसवीं कक्षा हेतु)

सभी पुस्तकों की एक-एक प्रति ही चाहिए।

धन्यवाद

भवदीय

अभिनव शर्मा

46. दिल्ली परिवहन निगम के अधिकारी को बस कर्मचारियों के प्रशंसनीय और साहसिक व्यवहार की सूचना देते हुए, उन्हें सम्मानित करने का आग्रह करते हुए पत्र लिखिए।

216, कश्मीरी गेट

नई दिल्ली

दिनांक : 19 फरवरी, 20XX

श्रीमान मुख्य प्रबंधक

दिल्ली परिवहन निगम

सिंधिया हाउस

कनॉट प्लेस

नई दिल्ली-110001

विषय : बस कर्मचारियों को उनके द्वारा किए गए साहसिक कार्य पर पुरस्कृत करने हेतु

माननीय महोदय

इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान उन बस कर्मचारियों के प्रशंसनीय व साहसिक व्यवहार की ओर दिलाना चाह रही हूँ, जिन्होंने कल अपनी सूझ-बूझ से अनेक यात्रियों की जान बचा ली।

मैंने अपने घर के बस स्टॉप से तीव्र मुद्रिका ली थी, जिसका नंबर था डी०एच०पी० 3329, समय था दोपहर के दो बजे का। बस यात्रियों से भरी हुई थी। मेरे घर के बाद अभी एक या दो ही स्टॉप गुजरे होंगे कि अचानक बस के ब्रेक ख़राब हो गए। यात्रियों को पता चलते ही सभी घबरा गए, लेकिन बस कंडक्टर ने अपना संतुलन नहीं खोया। वह चिल्ला-चिल्ला कर सभी से शांत रहने को कहता जा रहा था। ऐसे विकट समय में बस के ड्राइवर ने भी बड़े ही शांत दिमाग तथा सूझ-बूझ से काम लिया। सभी गाड़ियों और मोटरों से बचाता हुआ वह हमें ऐसे स्थान पर ले गया जहाँ बहुत-सी रेत थी। जैसे ही पहिए रेत में धँसे, बस की रफ़्तार अपने-आप ही कम होती चली गई और आखिर पास ही एक पेड़ से धीरे से टकरा कर रुक गई।

कुछ यात्रियों को छोटी-मोटी चोटें आईं, लेकिन कोई विशेष नुकसान नहीं हुआ। ड्राइवर के इस प्रशंसनीय और साहसिक व्यवहार ने अनेक यात्रियों को मरने से बचा लिया।

मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि दिल्ली परिवहन निगम की इस बस के ड्राइवर तथा कंडक्टर दोनों को प्रशंसनीय तथा साहसिक व्यवहार के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

भवदीया

शिवानी

• अभ्यास-प्रश्न •

1. पिताजी को एक पत्र लिखिए जिसमें दसवीं पास करने के बाद भावी योजना का उल्लेख किया गया हो।
2. आपका छोटा भाई धूम्रपान करता है। उसकी यह बुरी आदत छुड़ाने के लिए पत्र लिखकर उसे धूम्रपान की भयंकर हानियों से परिचित कराइए।
3. आपके नगर में सड़कों की अधिक टूट-फूट के कारण वाहनों को चलाने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। नगरपालिका के अध्यक्ष को सड़कों की मरम्मत करवाने के लिए एक पत्र लिखिए।
4. डाकिए की शिकायत करते हुए डाकपाल को एक शिकायत-पत्र लिखिए।
5. आप अपने सहपाठियों से दूर रहना चाहते हैं, कारण बताते हुए अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए।
6. दिल्ली परिवहन विभाग के पदाधिकारी को बसों की स्थिति सुधारने के लिए एक पत्र लिखिए।
7. अपने मित्र को एक पत्र लिखिए, जिसमें सिनेमा देखने के दुर्व्यसन से बचने के लिए चेतावनी दी गई हो।
8. परीक्षा की तैयारी के विषय में अपने पिता जी को एक पत्र लिखिए।
9. अपने मित्र को उसकी माताजी के देहांत पर दुख प्रकट करते हुए एक पत्र लिखिए।
10. अपने मुहल्ले में 'जल संकट' से उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन करते हुए दैनिक-पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए।
11. अपने स्कूल में हुए पर्यावरण समारोह की जानकारी देते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
12. नगर की सघन बस्ती में कल-कारखानों और यातायात से होने वाले ध्वनि-प्रदूषण के विरुद्ध नगर-योजना अधिकारी को एक पत्र लिखिए।
13. दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखकर राष्ट्रीय एकता संबंधी अच्छे कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए निवेदन कीजिए।
14. विद्यालय के प्रधानाचार्य को पुस्तकालय में विज्ञान संबंधी पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए पत्र लिखिए।
15. अपने विद्यालय में पीने के पानी की समुचित व्यवस्था हेतु प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए।
16. विद्यालय के प्रधानाचार्य को विद्यालय में कंप्यूटर-शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।
17. अपनी बड़ी बहन को पत्र लिखिए कि इस वर्ष रक्षा-बंधन पर उनकी राखी नहीं आई।
18. आपके विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह संपन्न हुआ। इसका विवरण देते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
19. बस कर्मचारी के अशिष्ट व्यवहार की शिकायत करते हुए अपने प्रदेश के परिवहन प्रबंधक को पत्र लिखिए।
20. दिल्ली परिवहन निगम को अपने गाँव की कॉलोनी तक बस चलाने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए।
21. मनीआर्डर गुम हो जाने की शिकायत करते हुए पोस्टमास्टर को पत्र लिखिए।
22. अपने छोटे भाई को उसके जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में बधाई-पत्र लिखिए।
23. अपने बड़े भाई को एक घड़ी खरीदने के लिए रुपये भेजने का निवेदन करते हुए पत्र लिखिए।
24. अपनी छोटी बहन को एक पत्र लिखिए जिसमें चिड़ियाघर की सैर से प्राप्त अपने अनुभवों की जानकारी दी गई हो।
25. शिक्षण-प्रशिक्षण विद्यालय में नर्सरी अध्यापक के प्रशिक्षण हेतु अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए आवेदन-पत्र लिखिए।
26. ग्रीष्मावकाश बिताने की अपनी योजना के बारे में बताते हुए मानगंगोत्री, मैसूर निवासी अपर्णा की ओर से पिताजी को पत्र लिखिए।
27. दो पाठ्यपुस्तकें वी०पी०पी० से मँगाने के लिए 'क०ख०ग० प्रकाशन' दरियागंज, दिल्ली को पत्र लिखिए।
28. अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर स्कूल में पुस्तक-मेला लगवाने की प्रार्थना कीजिए।
29. अपने मुहल्ले की गंदी नालियों की सफ़ाई के संबंध में नगरपालिका के अध्यक्ष को आवेदन-पत्र लिखिए।
30. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए जिसमें पुस्तकालय में हिंदी पत्रिकाएँ मँगाने के लिए निवेदन किया गया हो।
31. आपके मित्र ने आपको मिठाई भेजी है। उसे धन्यवाद-पत्र लिखिए।

32. विद्यालय के मुख्य द्वार पर बैठे खोमचे वालों की शिकायत करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

33. प्रधानाचार्य को विद्यालय में अधिकाधिक खेल का सामान मँगाने के लिए अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए चुने जाने पर अपने मित्र/अपनी सखी को पत्र लिखकर बधाई दीजिए।

34. समाचार-पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखकर अपने क्षेत्र में चल रही बिजली की कटौती में सुधार के लिए अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कीजिए।

अथवा

पिताजी को पत्र लिखकर स्पष्ट कीजिए कि इस वर्ष आप ग्रीष्मावकाश में क्या करना चाहते हैं।

35. अपने मित्र/अपनी सखी को गर्मी के अवकाश में किसी पहाड़ी स्थान की यात्रा के लिए आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर पुस्तकालय में हिंदी कहानियों और कविताओं की अधिक पुस्तकों के प्रबंध के लिए आग्रह कीजिए।

36. खोया हुआ सामान लौटाने वाले किसी अपरिचित को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

संपादक, राजस्थान पत्रिका, उदयपुर को जयपुर में पीने के पानी की समस्या बताते हुए पत्र लिखिए।

37. अपने भाई के विवाह के अवसर पर मित्र/सखी को निमंत्रण-पत्र लिखिए।

अथवा

आपके नगर में सफ़ाई की दुर्व्यवस्था की ओर अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए संपादक के नाम पत्र लिखिए।

38. दिल्ली-निवासी अनिमेष की ओर से किसी प्रतिष्ठित पत्र के संपादक को पत्र लिखकर नगर में डेंगू फैलने के कारणों की चर्चा करते हुए इससे निपटने की अपर्याप्त तैयारियों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

वास्तविक अथवा काल्पनिक वायुयान-यात्रा के आनंद का वर्णन करते हुए अपने मित्र/सखी को पत्र लिखिए।

39. टी०वी० से प्रसारित होने वाले किसी धारावाहिक की कमियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए चैनल विशेष के कार्यक्रम संचालक को गरिमा की ओर से पत्र लिखिए।

40. आपके क्षेत्र के ब्लॉक प्रमुख द्वारा की जा रही खाद की कालाबाज़ारी की शिकायत करते हुए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए।

41. बस-यात्रा में जेब कट जाने की सूचना देते हुए पुस्तिका अधीक्षक को पत्र लिखिए। पत्र में अपना नाम विशाल लिखिए।

42. खेल का सामान बेचने वाली कंपनी 'स्पोर्ट्स इंटरनेशनल' से आपने जो सामान मँगाया था, वह घटिया स्तर का और महँगा भेजा गया। कंपनी के प्रबंध निदेशक को इसकी शिकायत करते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

आपके मित्र का बनाया हुआ मॉडल अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान मेले के लिए चुना गया है। उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

43. एफ-64, साकेत निवासी आपका मित्र राहुल ग्रीष्मावकाश में आपके साथ शिमला जाना चाहता है; उसे अपनी सहमति देते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर माध्यमिक परीक्षा के बोर्ड परीक्षाफल का लब्धांक-पत्र डाक से भेजने का अनुरोध कीजिए।

44. किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को अपने शहर की बसों की बिगड़ती हालत और कुव्यवस्था पर पत्र लिखिए।

अथवा

प्रधानाचार्य को छात्रवृत्ति के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

45. बैंक की चेकबुक खो जाने के सूचनार्थ बैंक प्रबंधक को पत्र लिखिए।

अथवा

अपने क्षेत्र में बिजली आपूर्ति की समस्या की संबंध में संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए।

46. प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें पुस्तकालय में कुछ और हिंदी-पत्रिकाएँ मँगाने के लिए निवेदन किया गया हो।

अथवा

अपने घर में चोरी हो जाने की सूचना देते हुए पुलिस थाना-अधिकारी को पत्र लिखिए।

47. बचत बैंक की पासबुक खो जाने पर पोस्टमास्टर को दूसरी पासबुक बनाने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

रेल-यात्रा में सामान चोरी हो जाने की सूचना देते हुए रेलवे पुलिस-अधीक्षक को पत्र लिखिए।

48. किसी बस कंडक्टर के व्यवहार की प्रशंसा करते हुए प्रबंधक, परिवहन-विभाग को पत्र लिखिए।

अथवा

दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखकर देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता-संबंधी अच्छे कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए निवेदन कीजिए।

49. चुनाव के कारण आपके घर की दीवारें नारे लिखने और पोस्टर चिपकाने से गंदी हो गई हैं। इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए हिंदुस्तान दैनिक के संपादक को पत्र लिखिए।

अथवा

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र लिखिए कि पुस्तकालय में हिंदी की पत्रिकाएँ मँगवाने का समुचित प्रबंध किया जाए।

50. मित्र को अपनी बड़ी बहन के विवाह का निमंत्रण देते हुए एक पत्र लिखिए।

अथवा

नगर की सफाई-दुर्व्यवस्था की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए संपादक के नाम पत्र लिखिए।

3 चित्र-वर्णन (Chitra Varnan)

मनुष्य को ईश्वर ने कल्पनाशक्ति का वरदान दिया है। किसी भी वस्तु, दृश्य या चित्र को देखकर उसके मन में अनेक भाव जन्म लेने लगते हैं। हर व्यक्ति का अपना एक अलग दृष्टिकोण होता है। अपने अनुभव के कारण किसी घटना व वातावरण के प्रति उसकी अपनी प्रतिक्रिया होती है। अपने इस अनुभव व प्रतिक्रिया को सशक्त व प्रभावशाली भाषा के माध्यम से व्यक्त कर पाना ही 'चित्र वर्णन' का उद्देश्य है। किसी चित्र को देखकर उससे संबंधित मन में उठने वाले भावों को अपनी कल्पनाशक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त करना ही 'चित्र-वर्णन' कहलाता है।

वर्णन के लिए दिया गया चित्र किसी घटना को दर्शाने वाला, कोई एक पूर्ण स्थिति को व्यक्त करने वाला, किसी व्यक्ति विशेष का या प्रकृति से संबंधित हो सकता है। किसी भी चित्र का वर्णन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

चित्र-लेखन की विशेषताएँ

1. पहले चित्र को बारीकी से देख लेना चाहिए।
2. चित्र में नज़र आ रही मुख्य बातों को बिंदुओं में लिख लेना चाहिए।
3. चित्र में दिखाई दे रही वस्तुओं का वर्णन करते समय उसमें अपनी कल्पना के रंगों को भरना चाहिए।
4. चित्र में दिखाई दे रहे व्यक्तियों के मुख के हाव-भाव के आधार पर चारित्रिक विशेषताएँ, सुख-दुख व आशा-निराशा का वर्णन करना चाहिए।
5. यदि किसी महापुरुष अथवा चर्चित व्यक्ति का चित्र है तो उस व्यक्ति के प्रति निजी विचारों, भावों को प्रस्तुत किया जा सकता है।
6. प्राकृतिक दृश्यों में कल्पना की उड़ान भरने का पूरा लाभ उठाया जा सकता है।
7. भावों को अभिव्यक्त करते समय अच्छे शब्दों व भाषा का प्रयोग सराहनीय होता है।
8. वाक्य रचना करते समय उक्तियों, मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग भी भाषा को सुंदर बनाता है।
9. वाक्य रचना पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए।
10. उचित विराम-चिन्हों का प्रयोग भी आवश्यक होता है।
11. चित्र-वर्णन करना भी एक कला है जिसे अभ्यास के माध्यम से बेहतर बनाया जा सकता है।
12. एक बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि चित्र-वर्णन करते समय अतिश्योक्ति का सहारा न लिया जाए अन्यथा अस्वाभाविक चित्रण अर्थ का अनर्थ भी कर सकता है।

उदाहरण

• दिए गए चित्रों को देखकर 20-30 शब्दों में उनका वर्णन कीजिए।

1.

प्रस्तुत चित्र मंदिर का है। मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति श्रद्धाभाव से जाता है और अपने इष्टदेव की पूजा करके मानसिक शांति पाता है। अतः प्रातः काल सभी लोग मंदिर जाते हैं। इस चित्र में एक महिला हाथ में पूजा की थाली लिए मंदिर जा रही है। हिंदू धर्म में वृक्ष की पूजा का विधान है इसलिए प्रत्येक मंदिर के बाहर पीपल या केला का पेड़ एवं तुलसी का पौधा होता है। इस चित्र में भी एक वृक्ष है जिसके सामने खड़े होकर एक महिला पूजा कर रही है। एक बच्चा पूजा के लिए जाती हुई महिला से भिक्षा माँग रहा है उसके एक हाथ में पात्र है और उसने दूसरा हाथ भिक्षा के लिए फैला रखा है। सीढ़ियों के पास एक बच्चा बैठा है, जो कि अपाहिज है। वह मंदिर में आने वाले भक्तों से दया की भीख चाहता है।

2.

यह चित्र रेलवे प्लेटफार्म का है। जिसमें एक गाड़ी खड़ी है। गाड़ी के अंदर यात्री बैठे हुए हैं। दो कुली सिर पर सामान रखकर हाथ में अटैची पकड़े चल रहे हैं। जिस व्यक्ति का सामान है वह उनके साथ चल रहा है। एक बच्चा हाथ में अखबार लिए बेचने के लिए घूम रहा है। दूसरी तरफ एक आदमी अपनी बूट-पॉलिश की दुकान लगाए बैठा है। एक व्यक्ति हाथ में समाचार-पत्र लिए पढ़ रहा है। आदमी उनके जूते की पॉलिश कर रहा है। किनारे पर एक कूड़ेदान रखा हुआ है, लेकिन कूड़ा चारों ओर फैला हुआ है। सरकार की ओर से साफ़-सफ़ाई की ओर ध्यान दिया जाता है। मगर जब तक प्रत्येक नागरिक अपना कर्तव्य नही निभाएँगे तब तक सभी प्रयत्न विफल होते रहेंगे।

3.

यह दृश्य प्रात:काल सूर्योदय का है। आसमान का रंग सूर्य की लालिमा लिए हुए एक अनूठी छटा बिखेर रहा है। कुछ पक्षी उड़ रहे हैं कुछ पेड़ की डाल पर बैठे उड़ने की तैयारी में हैं। दो घर दिखाई दे रहे हैं जिनके बाहर सुन्दर फूलों के पौधे हैं। सामने कुआँ है उसके पास एक बड़ा वृक्ष है। दो स्त्रियाँ सिर पर घड़े रखकर कुएँ से पानी लेने जा रही हैं। चरवाहा भेड़ों को चराने के लिए ले जा रहा है। पूरा दृश्य मनमोहक छटा बिखेर रहा है। प्रात:काल का समय सबसे उत्तम समय माना जाता है। इस समय भ्रमण करने से मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

नीरोगता उपचार जो चाहो, शक्ति का भंडार जो चाहो
प्रतिदिन करो सभी सैर, स्वस्थ रहोगे सभी पहर

4.

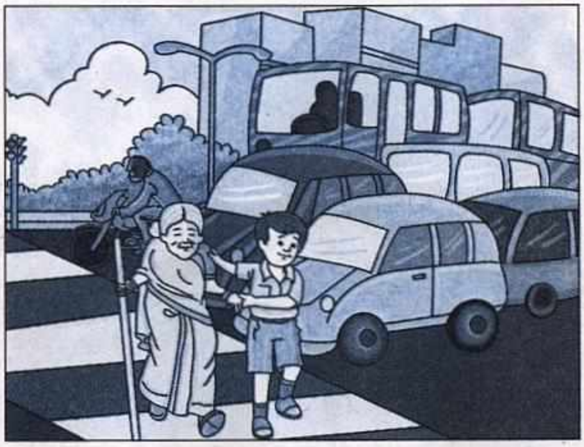

यह दृश्य किसी महानगर के चौराहे का है। लाल बत्ती होने के कारण गाड़ियाँ रुकी हुई हैं। फुटपाथ पर एक बच्चा एक वृद्ध महिला को सड़क पार करवा रहा है। एक व्यक्ति अपने स्कूटर को आधे फुटपाथ तक ले आया है। यह नियम के विरुद्ध है। यातायात के लिए बनाए गए नियमों का पालन न करने से ही दुर्घटनाएँ होती हैं। कुछ लोग हरी बत्ती होने का इंतजार नहीं करते और गाड़ी दौड़ाकर ले जाते हैं। ऐसा करते समय गाड़ियाँ परस्पर टकरा जाती हैं और दुर्घटना हो जाती है। अत: वाहन चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए।

5.

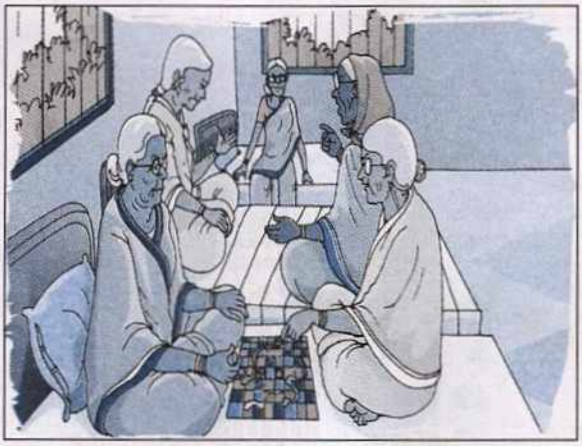

इस चित्र में एक वृद्धाश्रम का दृश्य नज़र आ रहा है। इस चित्र को देखकर हमारे समाज में फैली संवेदनहीनता की भावना उजागर हो रही है। हमारे माता-पिता या बुजुर्गों जो हमारी सामाजिक व्यवस्था के स्तंभ होते हैं, उन्हें जिस समय पारिवारिक सहयोग तथा साथ की ज़रूरत होती है उस समय वृद्धाश्रमों में भेजकर आज का युवक अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़ रहा है। यहाँ सभी बुजुर्ग एक-दूसरे के साथ बातें करते, सैर करते हुए, बैठकर कैरम तथा साँप-सीढ़ी जैसे खेल खेलकर अपना मनोरंजन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सभी के चेहरे पर दिखाई देने वाली मुस्कान बता रही है कि इस पल में वे सभी प्रसन्न हैं। यदि उनकी मानसिक स्थिति की बात की जाए तो निश्चित ही कहीं किसी कोने में वे अपने परिवार, अपने बच्चों की कमी अवश्य महसूस करते होंगे। लेकिन मेरा यह सोचना है कि आज की सामाजिक व्यवस्था को देखते हुए वृद्धों के लिए इससे बेहतर और कोई जगह नहीं हो सकती जहाँ वे अपने हमउम्र के लोगों के साथ आनंदपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

6.

इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर रोम-रोम सिहर उठता है। रेल दुर्घटना में इंजन सहित चार डिब्बे पटरी से उतर गए हैं। जिस दूसरी ट्रेन से वह टकराई है उसके भी दो डिब्बे क्षतिग्रस्त हो गए हैं। चारों ओर अफरा-तफरी का माहौल है। लोगों की चीख-पुकार से सारा वातावरण गूँज उठा है। सभी लोग असमंजस की स्थिति में नज़र आ रहे हैं। कुछ यात्री अपने साथ के यात्रियों की सहायता में जुटे हुए हैं। सेना के जवान भी लोगों की सहायता

के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हैं। एक बच्चा अपने मृत माँ के पास बैठा रो रहा है। उस बच्चे के रोने को देख आस-पास के लोगों के हृदय भी पीड़ा से भर गए हैं। ऐसा लगता है कि यह आपदा प्रकृति के प्रकोप की नहीं बल्कि मानवीय भूल का परिणाम है। ऐसी दुर्घटनाओं को सावधान रहकर रोका जा सकता है। काश! मनुष्य अपनी लापरवाही को थोड़ी लगाम देना सीख जाए।

• अभ्यास-प्रश्न •

- **दिए गए चित्रों को देखकर 20-30 शब्दों में उनका वर्णन कीजिए।**

1. पुस्तकालय का दृश्य

2. जन्मदिन का दृश्य

3. अस्पताल का दृश्य

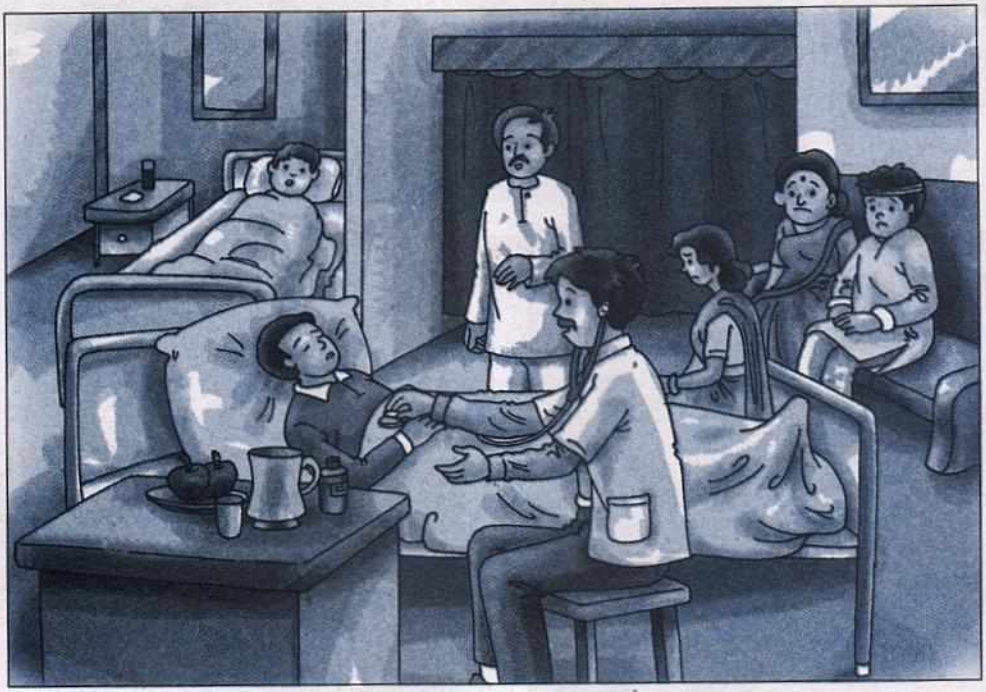

4. पिकनिक का दृश्य

5. वृक्षारोपण का दृश्य

6. बाल-श्रम का दृश्य

7. पार्क में खेलते बच्चों का दृश्य

8. होली के त्योहार का दृश्य

9. समुद्र तट का दृश्य

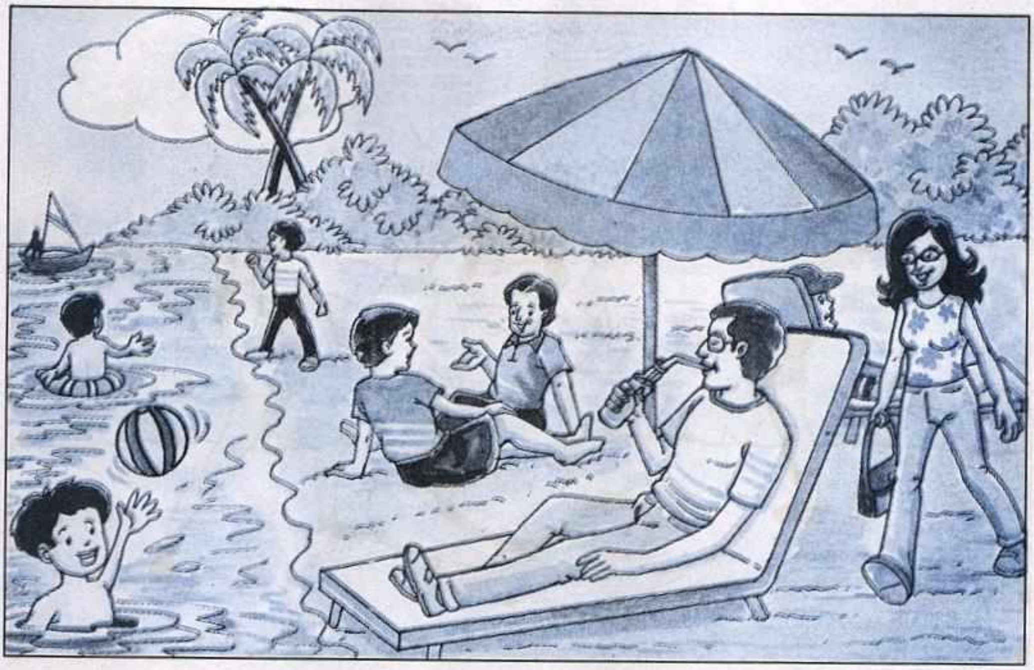

10. चिड़ियाघर का दृश्य

11. योग का महत्त्व

12. स्वच्छ भारत अभियान

13. सड़क दुर्घटना का दृश्य

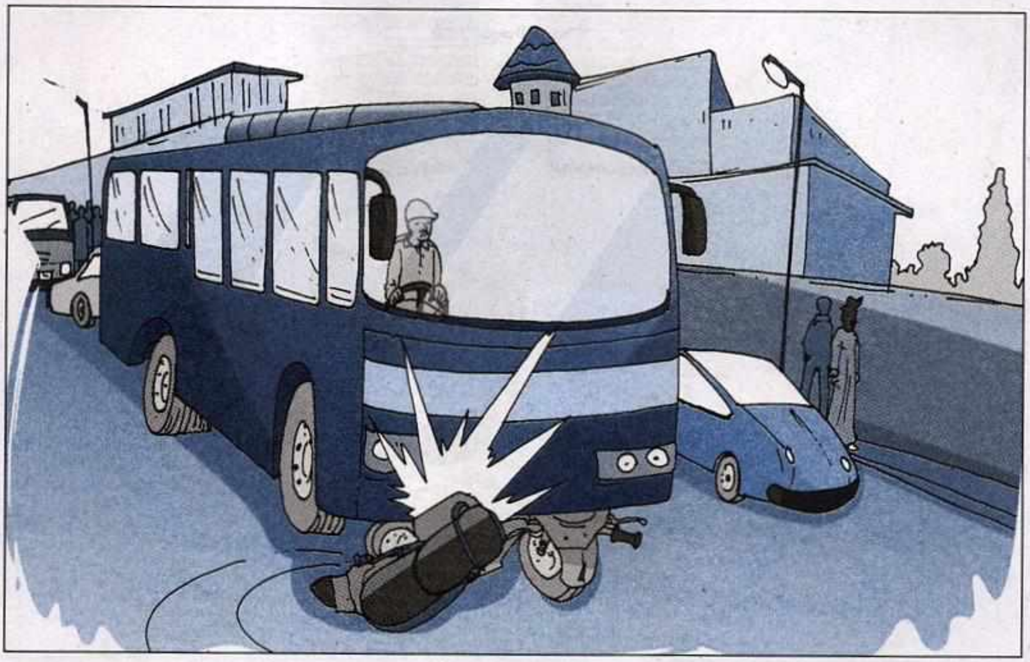

14. मतदान दिवस

15. साक्षरता अभियान

16. भारत–अनेकता में एकता।

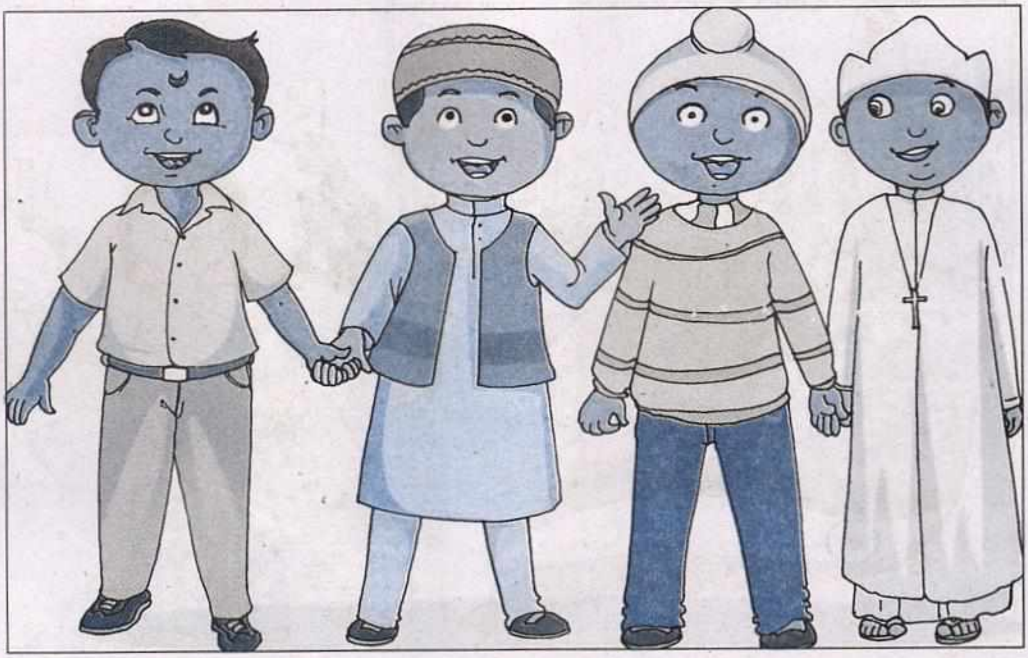

17. नोटबन्दी (Demonetisation) का एक दृश्य।

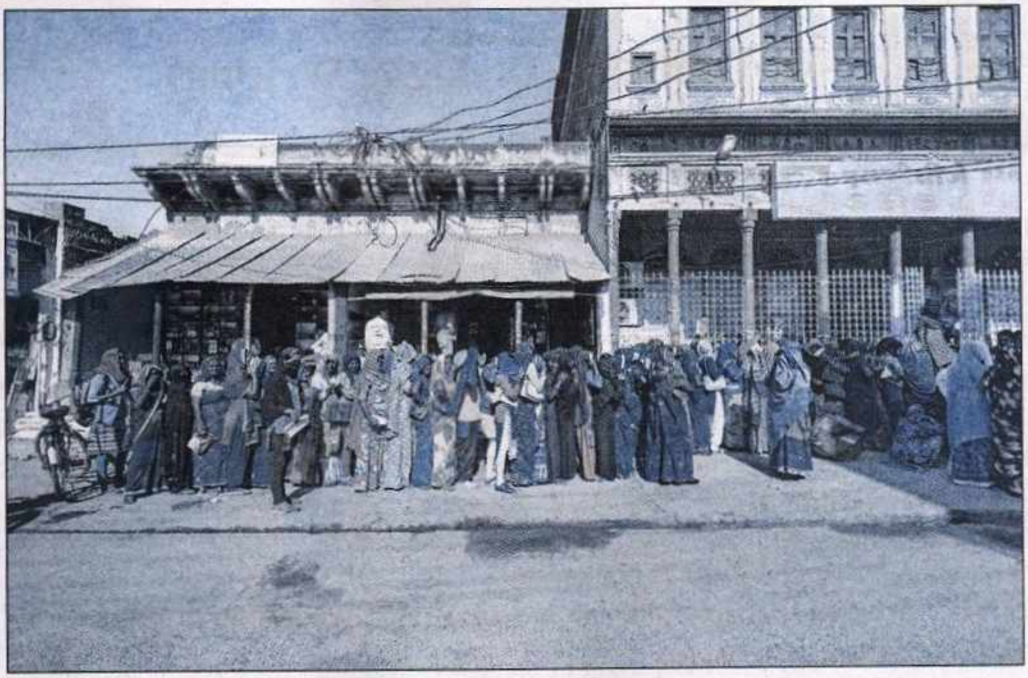

18. मोबाइल का सड़क पर प्रयोग करती हुई महिला।

□□

4 संवाद-लेखन (Dialogue Writing)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में परस्पर व्यवहार करने के लिए वह अधिकतर बातचीत का सहारा लेता है। यह बातचीत दो-तीन या अधिक व्यक्तियों के बीच हो सकती है। बातचीत को हम संवाद भी कहते हैं। यह संवाद (बातचीत) आमने-सामने भी हो सकता है और फोन के माध्यम से भी।

दो, तीन या अधिक व्यक्तियों की परस्पर बातचीत को ज्यों का त्यों लिखना संवाद-लेखन कहलाता है। संवाद व्यक्तियों के नाम लिखकर उनके द्वारा बोली गई बात को (ज्यों-का-त्यों) उसी रूप में लिख दियां जाता है।

संवाद-लेखन अपने आप में एक साहित्यिक विधा का रूप लेता जा रहा है। चलचित्रों, नाटकों तथा एकल अभिनय में भी संवाद महत्त्वपूर्ण होते हैं। किसी भी प्रसंग, घटना या कहानी के लिए संवाद लिखते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

1. संवाद में प्रभावशाली, सरल और रोचक भाषा का प्रयोग होना चाहिए।
2. विचारों को तर्कसम्मत रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।
3. देश काल और व्यक्ति के अनुरूप संवाद की शब्दावली एवं भाषा का चयन करना चाहिए।
4. संवाद में स्वाभाविक प्रवाह बना रहना चाहिए।
5. संवाद छोटे व रोचक होने चाहिए।
6. कहानी या घटना को आगे ले जाने वाले होने चाहिए।
7. उचित मुहावरों व शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।
8. चरित्र को बखूबी प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।

आइए संवाद-लेखन के कुछ उदाहरण देखें–

उदाहरण–1

मालिन, सेविका और महारानी के बीच संवाद–

महारानी : (एक सेविका से) मालिन कहाँ है? जरा बुला तो सही, उस मालिन की बच्ची को।
मालिन : (डरती हुई सेविका के साथ महारानी के चरणों में शीश नवाते हुए) आदेश हो महारानी।
महारानी : अरी तू मालिन है कि नागिन?
मालिन : जो भी हूँ हुजूर की सेविका हूँ, राजमाता!
महारानी : सेविका नहीं है तू, जान की दुश्मन है हमारी।
मालिन : हे भगवान्, हे भगवान् यह क्या कह रही हैं राजमाता!
मेरा अपराध तो बताइए।
महारानी : अब अपराध पूछ रही है। चोरी और सीना जोरी। देख हमारे शरीर पर नील पड़ गए हैं। हम रात-भर सो नहीं सके।
एक सेविका : ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
दूसरी सेविका : ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
तीसरी सेविका : स्वास्थ्य तो ठीक है राजमाता का?
चौथी सेविका : कोई चिंता तो नहीं राजमाता आपको?

महारानी	:	अरी, चिंता-विंता नहीं। इस मालिन के कारण हम रात-भर सो नहीं सके। करवट-पर-करवट बदलते रहे। जगह-जगह से हमारी छाल छिल गई है।
मालिन	:	क्षमा माँगती हूँ राजमाता! क्षमा माँगती हूँ।
एक सेविका	:	क्या मालिन फूलों की सेज सजाना भूल गई थी राजमाता?
महारानी	:	नहीं, यह निर्दयी फूलों की सेज लगाना तो नहीं भूली पर ऐसे फूल चुनकर लाई, जिनसे हमारे सारे शरीर पर नील पड़ गए।

उदाहरण–2

मम्मी, पापा और पिंटू के बीच संवाद–

पापा	:	(पिंटू की ओर आते हुए) क्यों पिंटू, किससे घुट रही थी, बाहर सड़क पर?
पिंटू	:	मेरा एक नया मित्र बना है पापा, घसीटाराम।
पापा	:	(खीजते हुए) वह गंदा लड़का, रद्दीवाला!
पिंटू	:	वह गंदा लड़का नहीं है पापा, बहुत सीधा-सच्चा है।
पापा	:	मूर्खों वाली बात मत करो। ऐसे गंदे बच्चों से नहीं मिला करते।
मम्मी	:	(पिंटू के पापा की हाँ में हाँ मिलाते हुए) हाँ-हाँ पिंटू, तुम्हारे पापा ठीक कह रहे हैं। तुम पढ़ने-लिखने वाले बच्चे हो। तुम्हारा-उसका क्या साथ?
पिंटू	:	पर मम्मी! मैंने तो उससे वायदा किया है। मैं उसे अपने जन्मदिन की बहुत सारी मिठाई दूँगा।
पापा	:	ठीक है, ठीक है। मिठाई तुम उसे दे देना। पर वह तो चला गया।
पिंटू	:	चला नहीं गया पापा! वह तो उपहार लेने गया है, मुझे देने के लिए।
मम्मी	:	उपहार लेने गया है?
पिंटू	:	हाँ मम्मी! वह कहता था, मैं तब तक मिठाई नहीं खाऊँगा, जब तक उपहार नहीं दूँगा। मुझे सभी ने उपहार दिए हैं ना।

उदाहरण–3

सत्यव्रत और ऋषि के बीच संवाद–

सत्यव्रत	:	(निकट पहुँचकर पाँव छूता है और चरणों में बैठ जाता है।) बहुत दूर से आया हूँ महाराज।
ऋषि	:	देवी सरस्वती ने भेजा है?
सत्यव्रत	:	हाँ महाराज। पर आप इस सूखे वृक्ष के नीचे बैठकर क्या कर रहे हैं?
ऋषि	:	एक-एक चुल्लू पानी दे रहा हूँ, इस पेड़ की जड़ में। (ऋषि घड़े से पानी लेकर पेड़ की जड़ में डालता जाता है)
सत्यव्रत	:	कितने दिन हो गए महाराज, आपको यह काम करते हुए?
ऋषि	:	पाँच वर्ष हो गए हैं, बेटे।
सत्यव्रत	:	पर वृक्ष तो अब तक हरा नहीं हुआ।
ऋषि	:	नहीं हुआ, और शायद होगा भी नहीं।
सत्यव्रत	:	क्यों महाराज? ऐसा क्यों है?
ऋषि	:	साधना से प्रकृति अपना नियम नहीं बदलती है, बेटे!

सत्यव्रत : फिर इस साधना का लाभ ही क्या है, महाराज?

ऋषि : वही, जो तुम्हारी साधना का होगा। तुमने विद्वान बनने के लिए तपस्या की, लेकिन विद्वान नहीं बन सके। विद्वान बनने के लिए जिस तपस्या की आवश्यकता है, वह तुमने नहीं की है और सूखा पेड़ काटकर नया वृक्ष लगाने का जो परिश्रम है, वह मैंने नहीं किया। इसलिए न तो तुम्हें विद्या आई और न हरे वृक्ष की छाया मुझे मिली।

उदाहरण–4

दो पटरी पर दुकान लगाने वालों के बीच संवाद–

मटरुमल : हर माल पाँच रुपए में। हर माल पाँच रुपए में। आओ-आओ भाइयो, बहनों हर माल पाँच रुपए में। हर माल पाँच रुपए में। लुटा दिया, लुटा दिया। (मटरुमल के पास बैठा उसका साथी बोलता है।)

खचेडूमल : क्यों रे मटरु! आ गया सुबह ही सुबह धंधा करने।

मटरुमल : मजबूरी है यार, धंधा न करूँ तो खाऊँ कहाँ से?

खचेडूमल : क्यों बात बना रहा है यार! दोनों हाथों से लूट रहा है पब्लिक को। पाँच रुपए में तीन का माल भी ना देवे है, अंधी काट रहा है, अंधी।

मटरुमल : अबे दूर के ढोल सुहावने ही लगे हैं, आदमी को (फिर आवाज़ देता है। हर माल पाँच रुपए में। हर माल पाँच रुपए में। लुटा दिया, लुटा दिया)

खचेडूमल : अरे! लुटा दिया मत कह। सच बोल, सच।

मटरुमल : और क्या सच बोलूँ। सच तो बोल ही रहा हूँ, यार खचेडू।

खचेडूमल : नहीं यार तू बोल, लूट लिया, लूट लिया पाँच रुपए में, आओ-आओ।

उदाहरण–5

कुछ पुरुष और स्त्री के बीच संवाद–

पहला पुरुष : (सिर हिलाकर) पानी अभी तक नहीं आया। क्या होगा प्रभु!

पहली स्त्री : राजा के आदमी कहते हैं कि पीने का पानी खत्म होने को है।

दूसरा पुरुष : और खेती को सींचने वाली नहरें भी तो सूख गई हैं।

दूसरी स्त्री : ताल ही सूख गया तो नहरें कैसे चलेंगी?

पहला पुरुष : नहरें नहीं चलेगी तो खेत सूख जाएँगे।

दूसरा पुरुष : ताल है तो नहरें हैं।

पहली स्त्री : नहरें हैं तो खेत हैं। खेत हैं तो अन्न है।

पहला पुरुष : ताल है तो बिजली है। बिजली है तो कारखाने हैं।

दूसरा पुरुष : न खेत, न कारखाने।

दूसरी स्त्री : न पानी, न बिजली।

पहली स्त्री : इसका मतलब भूख-प्यास।

पहला पुरुष : इसका मतलब मौत।

(सब एक-दूसरे को देखते हैं, फिर एक साथ बोलते हैं।)

सब : ताल के सूखने का मतलब है कि मौत हम सबको खा जाएगी। हम सब मर जाएँगे।

उदाहरण–6

कछुआ और दो हंसों के बीच संवाद–

कछुआ : भाइयो! झील का पानी सूखने वाला है। दो-चार दिन बाद यह पानी इतना भी नहीं रहेगा, जितना अब है।

हंस एक : हाँ भाई कछुए! और पानी के बिना हम कैसे जिएँगे! तुम भी पानी के अंदर रहते हो और हम भी नदी का किनारा नहीं छोड़ सकते।

हंस दो : पानी के बिना तो हम मर जाएँगे। इस वर्ष इतना सूखा पड़ा है, जितना पहले कभी नहीं पड़ा था।

कछुआ : (चिंतित भाव से) अब क्या करें! अपनी जान कैसे बचाएँ।

हंस एक : हम तो भाई उड़ने वाले प्राणी हैं। उड़कर किसी और देश में चले जाएँगे। तुम क्या करोगे? तुम तो उड़ भी नहीं सकते।

हंस दो : पर हमारे साथ एक परेशानी है, कछुए भैया। हमारा तुम्हारा वर्षों पुराना साथ है। हम तुम्हें अकेला छोड़कर नहीं जाना चाहते।

हंस एक : और ऐसा कोई उपाय भी नहीं है कि हम तुम्हें अपने साथ ले जाएँ।

कछुआ : (चिंता के साथ दोनों हंसों की बात सुनते हुए) क्या तुम सचमुच मुझे अकेला छोड़कर चले जाओगे?

हंस एक : हम नहीं चाहते कछुए भैया, हम ऐसा नहीं चाहते। पर इस संकट से निकलने का उपाय तो निकालो।

उदाहरण–7

पढ़ाई को लेकर तीन बच्चों के बीच संवाद–

नवनीत : राजीव, अगर तुम भी पढ़ाई पर ध्यान देते और मेहनत करते तो तुम्हें इस तरह लज्जित न होना पड़ता।

राजीव : तुम ठीक कहते हो नवनीत। पर मेरा मन पुस्तकों में नहीं लगता। जो पढ़ता हूँ, वह याद ही नहीं हो पाता है।

सौरभ : जब मन इधर-उधर भटकता है, ध्यान किसी एक चीज़ पर केंद्रित नहीं होता, तब ऐसा ही होता है, राजीव।

राजीव : पर आज मैंने यह देख लिया कि मेहनत करने वाले बच्चों का कितना सम्मान होता है। उन्हें कितना महत्त्व दिया जाता है, विद्यालय में भी और घर पर भी।

नवनीत : इसके बाद भी तुम मन लगाकर पढ़ने की कोशिश नहीं करते राजीव देखो, नहीं पढ़ोगे तो बड़े आदमी नहीं बन पाओगे।

राजीव : मैं यह बात अच्छी तरह समझता हूँ। प्रधानाचार्य जी ने तुम दोनों की प्रशंसा में बहुत कुछ कहा।

सौरभ : इस बात से शिक्षा लो। इस वर्ष जी लगाकर मेहनत करो ताकि तुम भी वही सम्मान पा सको।

नवनीत : हमें दुख है कि तुम उत्तीर्ण नहीं हो सके। हम लोगों से तुम्हारा साथ छूट रहा है। पर हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। तुम भी पढ़-लिखकर बड़े आदमी बनो, बहुत बड़े विद्वान बनो और सम्मान प्राप्त करो।

सौरभ : आज से प्रण कर लो कि सारी बातें छोड़कर पढ़ाई में ध्यान लगाओगे। यह बात गाँठ बाँध लो कि जीवन में शिक्षा ही तुम्हारे काम आएगी, कोई और चीज काम आने वाली नहीं है।

राजीव : (वचन देते हुए) मैं संकल्प करता हूँ कि एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनूँगा, चाहे इसके लिए मुझे कुछ भी क्यों न करना पड़े।

उदाहरण–8

माता-पिता के आदर को लेकर शिक्षक और विद्यार्थी के बीच हुआ संवाद–

(घर में बालक, अपने माता-पिता के साथ बैठा है। उसका शिक्षक उसे कुछ बातें समझाता है।)

शिक्षक : बबलू, तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे लिए क्या-क्या करते हैं?

बबलू : नहीं, गुरु जी!

शिक्षक : तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए खाना बनाती है, तुम्हारे कपड़े धोती है।

बबलू : हाँ गुरु जी! मेरी माँ मेरे लिए यह सब करती हैं।

शिक्षक : जब तुम बीमार पड़ जाते हो, सारे-सारे दिन, सारी-सारी रात जागकर तुम्हारी देखभाल करती है। तुम्हारे लिए डॉक्टर बुलाती है। औषधि लाती है। तुम्हारे लिए परहेज के खाने तैयार करती है।

बबलू : हाँ, गुरु जी! मैं पिछले दिनों बीमार पड़ गया तो मेरी माँ ने यह सब कुछ किया।

शिक्षक : तुम्हें मालूम है तुम्हारे माता-पिता तुम्हें कितना लाड़-प्यार करते हैं–तुम्हारे लिए सभी दुख-कष्ट सहने के लिए तैयार रहते हैं ये। यदि तुम्हारी माताजी या पिताजी तुम्हें किसी बात पर डाँटते हैं.......

बबलू : हाँ डाँटते तो हैं, गुरु जी!

शिक्षक : तुम्हें मालूम है, वे तुम्हें डाँटते क्यों हैं? जब तुम कोई गंदी बात करते हो, वे तुम्हें आगे ऐसी बातें न करने के लिए डाँटते हैं। तुम्हें सुधारने के लिए ऐसा करते हैं।

उदाहरण–9

ताजमहल की सैर को लेकर मित्रों के बीच संवाद–

(सभी मित्र तांगे में बैठ कर आगरा स्टेशन से चलते हैं और ताजमहल के सामने आकर उतरते हैं)

सब : (खुश होकर) अरे, वाह! कितना सुंदर है यह ताजमहल!

रचना : यह तो सारा का सारा सफेद संगमरमर का बना हुआ है।

अनुभव : दीदी, तुम तो पहले भी यहाँ आ चुकी हो। हमें ताज के बारे में सब कुछ बताओ।

श्रेया : हाँ, हाँ, तुम पूछो, मैं सब बताऊँगी।

विशाल : यह तो बहुत ही सुंदर है–किसने बनवाया था?

श्रेया : यह मुगल सम्राट शाहजहाँ ने बनवाया था।

रचना : किसलिए दीदी?

श्रेया : अपनी प्यारी बेगम मुमताज महल की मृत्यु के बाद उसकी याद में बनवाया था।

अनुभव : इसको बनवाने में बहुत पैसा और बहुत समय लगा होगा?

श्रेया : पैसा भी लगा होगा। इसको तैयार करने में बीस हज़ार मज़दूर लगाए गए और उन्होंने इसको बीस वर्षों में तैयार किया।

रचना : ताजमहल बहुत ही सुंदर और आकर्षक बनवाया गया है।

उदाहरण–10

पिता और बच्चों के बीच अनुशासन को लेकर संवाद।

राहुल : देखो, राघव! तुमने बिना पूछे आदित्य के बस्ते में से पुस्तक ले ली। यह बहुत बुरी बात है।

राघव : इसमें क्या हो गया?

राहुल : यह बात गलत है–किसी की कोई वस्तु उससे पूछे बिना लेना ठीक नहीं। इसको अनुशासनहीनता कहते हैं।

निखिल : पापा! अनुशासनहीनता किसे कहते हैं?

राहुल : किसी नियंत्रण, आज्ञा और बंधन में रहना ही अनुशासन है। अनुशासन में रहने के लिए बुद्धि और विवेक की आवश्यकता है।

ऐश्वर्या : अनुशासन में रहने के बहुत लाभ होंगे?

राहुल : हाँ बेटी! अनुशासन हमारे जीवन को सार्थक और प्रगतिशील बनाता है। विद्यार्थी को संयम और नियम में रहना अनुशासन ही सिखाता है। जीवन को सफल बनाने में यह बहुत सहायक है।

राघव : क्या अनुशासन जीवन में चरित्र को उज्ज्वल बनाने में सहायक होता है?

राहुल : बिल्कुल, बेटे! चरित्र-निर्माण की नींव अनुशासन तो डालता ही है। मानसिक विकास भी इसी के द्वारा विद्यार्थी में ढलता है।

उदाहरण–11

दो व्यक्तियों के बीच गाँव में नए शौचालयों से आए परिवर्तन पर संवाद।

व्यक्ति-1 : नरेंद्र मोदी के 'स्वच्छता अभियान जन-आंदोलन' ने तो भारत के कई गाँवों को नया जीवन दे दिया है।

व्यक्ति-2 : तुम्हें पता है मोदी जी ने इस योजना के लिए 60 हजार करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया है।

व्यक्ति-1 : देश के अनेक गाँवों में आज भी शौचालय न होने से स्थिति बड़ी कष्टकर है।

व्यक्ति-2 : हाँ, खासकर महिलाओं के लिए। लेकिन आजकल काफी कुछ बदल गया है।

व्यक्ति-1 : तुम्हें पता है हरियाणा के अति पिछड़े जिला मेवात के किसी गाँव में भी शौचालय नहीं था लेकिन आज इस गाँव को राष्ट्रपति द्वारा 'निर्मल ग्राम' का पुरस्कार मिला है।

व्यक्ति-2 : केवल इसी गाँव की बात नहीं है। यह परिवर्तन अनेक गाँवों में देखा गया है।

व्यक्ति-1 : धीरे-धीरे हमारा देश बदल रहा है। सभी लोगों में जाग्रति आ रही है।

व्यक्ति-2 : गाड़ियों में बने शौचालयों को भी आधुनिक बनाया जा रहा है। 2016-17 तक सभी स्टेशनों पर बने शौचालयों को भी बेहतर बनाया जा रहा है।

व्यक्ति-1 : दोस्त कुछ भी कहो, देश को स्वच्छ और सुंदर बनाने के इस अभियान ने बहुत बड़ा परिवर्तन ला दिया है।

व्यक्ति-2 : अब हमारे देश को प्रदूषण रहित करने के इस प्रयास में निश्चित ही सफलता मिलेगी।

• अभ्यास-प्रश्न •

1. संवाद का मनुष्य जीवन में क्या महत्त्व है?
2. संवाद-लेखन के समय किन बिंदुओं पर ध्यान रखा जाना आवश्यक है?
3. निम्नलिखित विषयों पर संवाद-लेखन कीजिए–
   - दो मित्रों के बीच आने वाली छुट्टियों में कहीं बाहर घूमने चलने के लिए संवाद।
   - अपने पड़ोसी की बुराइयाँ करते हुए दो गृहणियों के बीच बातचीत।
   - अपने विद्यार्थियों के लिए दो शिक्षिकाओं के बीच बातचीत।
   - शिक्षक दिवस के कार्यक्रम को लेकर विद्यार्थियों के बीच बातचीत।
   - अपने जन्मदिन के लिए आमंत्रित कर रहे एक मित्र की दूसरे मित्र से बातचीत।
   - दादी और पोते के बीच आने वाली दीपावली के त्योहार को लेकर बातचीत।
   - स्कूल पिकनिक पर जा रहे तीन मित्रों के बीच बातचीत।
   - पिता और पुत्र के बीच नई घड़ी लाने को लेकर हुई बातचीत।
   - अध्यापक और शिष्य के बीच पढ़ाई को लेकर हुई बातचीत।
   - सब्ज़ी वाले और दो महिलाओं के बीच बातचीत।
   - घर-घर सामान बेचने वाली लड़की और गृहणी के बीच हुई बातचीत।
   - बस कंडक्टर और यात्री के बीच हुई बातचीत।

5 विज्ञापन-रचना (Advertisement Making)

'विज्ञापन' शब्द अंग्रेज़ी के Advertisement का हिंदी अनुवाद है, जिसका अर्थ सार्वजनिक सूचना, सार्वजनिक घोषणा या ध्यानाकर्षण है। उपयुक्त शब्दों में कहें तो विज्ञापन सूचना या अपील का ललित प्रस्तुतीकरण है।

विज्ञापन शब्द दो शब्दों के योग से बना है–वि + ज्ञापन। 'वि' उपसर्ग है और उसका अर्थ होता है–'विशेष'। 'ज्ञापन' शब्द का अर्थ है–'सूचना का ज्ञान'। इसका मिश्रित अर्थ सामान्य रूप में 'किसी वस्तु या तथ्य की विशेष जानकारी देना' स्वीकार किया गया है। यद्यपि इसका पाश्चात्य भाषिक पर्याय लैटिन-भाषी 'एडवर्टर' से ग्रहण किया गया 'एडवर्टाइजिंग है' जिसका अर्थ उस भाषा में 'टू टर्न टू' यानी 'किसी ओर मुड़ना है। दूसरे शब्दों में, कहें तो किसी के प्रति या किसी की ओर आकर्षित होना या किसी को आकर्षित करना ही इसका अर्थ है। वास्तव में, विज्ञापन किसी समुदाय विशेष के लोगों को संबोधित करने का ऐसा माध्यम है, जो उन्हें वस्तुओं के क्रय करने या किसी वस्तु या सेवा की उपलब्धता या साख वृद्धि के लिए प्रेरित करता है।

''विज्ञापन प्रचार का ऐसा साधन है, जो बिना किसी राजनीतिक, धार्मिक या सांप्रदायिक दबावों के जनता या उपभोक्ता में अपने लिए आवश्यकता या रुझान उत्पन्न करता है तथा अपनी उत्तमता और उपयोगिता की बातें दुहराकर उपभोक्ता की क्रय सामर्थ्य का विकास करता है।

विज्ञापन का उद्देश्य उत्पादक को लाभ पहुँचाना, उपभोक्ता को शिक्षित करना, विक्रेता की मदद करना, प्रतिस्पर्धा को समाप्त कर व्यापारियों को अपनी ओर आकर्षित करना और सबसे अधिक तो उत्पादक और उपभोक्ता से संबंध अच्छे बनाना होता है। विज्ञापन अपने ज्ञान, विचार, उत्पाद, अनुसंधान, खोज एवं आविष्कारों के प्रदर्शन का वह सार्थक मंच है जो न केवल उपभोक्ताओं, पाठकों, दर्शकों अथवा श्रोताओं को उस मूलभूत वस्तु, ज्ञान अथवा उत्पाद की जानकारी प्रस्तुत करता है अपितु उसे संबंधित बाज़ार में उपलब्ध अभी तक की श्रेष्ठतम कृति करार करते हुए बदले में भारी आर्थिक प्राप्ति अथवा खरीद हेतु भी पाठक, श्रोता अथवा उपभोक्ता को प्रेरित करता है।

विज्ञापन की आवश्यकता

विज्ञापन की आवश्यकता निम्न प्रकार से प्रस्तुत की जा सकती है–

1. नए उत्पादों या नए विचार को प्रोन्नत करना।
2. अपने उत्पादों की विशेषताओं की ओर ग्राहकों को आकर्षित करना।
3. अपने उत्पादों के संबंध में अपने मत की पुष्टि करना।
4. अपने मत की पुष्टि के लिए उचित वातावरण तैयार करना।
5. अपने विरोधियों के तर्कों को गलत बताना।
6. जनमत जाग्रत करना।

7. उत्पाद की बाज़ार में पूर्व-निर्मित छवि को सँभालकर रखना।

8. कड़ी स्पर्धा के कारण बाज़ार में लुप्त होते उत्पाद को पुनः स्थापित करना।

9. उपभोक्ताओं की आदतों को अपने उत्पाद के पक्ष में बनाए रखना।

10. उत्पाद के प्रति दीर्घ अवधि तक विश्वास पैदा करना एवं उसे लंबे समय तक बनाए रखना।

विज्ञापन में किन बातों पर ध्यान रखा जाना चाहिए

अपने उद्देश्य के अनुरूप एक अच्छे विज्ञापन में इन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए–

1. वह उपभोक्ताओं को आकर्षित कर सके। उन्हें प्रभावित कर सके। उन्हें किसी भी प्रकार अपने पक्ष में ले आए।
2. जनमानस में अपने ब्रांडेड नेम की छाप बना सके।
3. अपनी लोकप्रियता पा सके।
4. लोगों को लंबे समय तक उत्पाद का नाम याद रह सके।
5. वह सूचनाप्रद हो।
6. उपभोक्ता को यह समझाने में सफल रहे कि इस उत्पाद को खरीदने में ही समझदारी है।

विज्ञापन के उद्देश्य

1. **उत्पादों का व्यापक प्रचार**–अत्यंत गुणवत्ता वाला उत्पाद भी तब तक उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित नहीं कर सकता जब तक उसकी गुणवत्ता एवं महत्ता को उपयुक्त तरीके से उपभोक्ताओं तक पहुँचाया न जाए। अतः आवश्यक पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों आदि में स्थान क्रय करके विज्ञापन प्रकाशित करवाना जिससे अपने उत्पाद की विशेषताओं एवं गुणवत्ता से उपभोक्ताओं को परिचित करवाया जाए।
2. **उत्पाद के प्रति व्यापक अभिरुचि जाग्रत करना**–विज्ञापन का उद्देश्य, उत्पादित वस्तु, माल, अनुसंधान अथवा सामग्री के प्रति जनसमुदाय में व्यापक अभिरुचि का निर्माण करना। यदि कोई उत्पाद बाज़ार में उपलब्ध उत्पादों की तुलना में गुणवत्ता, मूल्य, लागत, स्तरीयता के कारण अत्यंत उपयोगी व महत्त्वपूर्ण हो तो इस सबकी जानकारी संबंधितों तक संप्रेषित करने में विज्ञापन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. **वितरण और विक्रय में बढ़ावा**–विज्ञापन का उद्देश्य महज उत्पादित वस्तु की जानकारी ही उपभोक्ता वर्ग तक पहुँचाना नहीं है बल्कि किए गए अथवा दिए गए विज्ञापन के तहत संबंधित उत्पाद के समुचित वितरण एवं इसकी खरीद में वृद्धि करवाना भी है।
4. **उत्पाद के समानांतर संस्थागत प्रतिष्ठा में वृद्धि**–विज्ञापन का उद्देश्य उपभोक्ता समाज को इस बात से भी अवगत कराना है कि संबंधित उत्पाद को उत्पादित करने वाली ऐसी प्रतिष्ठित संस्था है जो विश्व बाज़ार में अपनी अलग पहचान रखती है।

5. **उत्पाद संबंधी तुलनात्मक ब्योरा**–विज्ञापन का उद्देश्य उत्पादों की संगत सूचना के साथ-साथ संबंधित उत्पाद के बाज़ार में पूर्व ही उपलब्ध उत्पादनों से प्रतिस्पर्धात्मक स्तरीयता घोषित करते हुए उपभोक्ताओं को संबंधित उत्पाद की उत्कृष्टता से भी अवगत कराना है।
6. **वैज्ञानिक चेतना का विकास**–विज्ञापनों का उद्देश्य निरक्षर व अशिक्षित समाज में फैल रहे बेबुनियादी अंध-विश्वासों का निराकरण करना, नई जानकारियाँ प्रस्तुत कर वैज्ञानिक चेतना का विकास करना भी है।
7. **उपभोक्ताओं का ध्यानाकर्षण**–यह बात अत्यंत सावधानीपूर्वक देखे जाने की होती है कि जिस उत्पाद के संबंध में विज्ञापन जारी किया जा रहा है क्या वह उपभोक्ताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाने में सक्षम है या नहीं। इसमें विज्ञापन की भाषा, मौलिक रंगीन चित्र इस प्रकार के हों कि तपाक से उपभोक्ता को अपनी ओर आकर्षित कर ले।
8. **आकर्षक नारे व शीर्षक**–उत्पाद का विस्तृत विवरण वह प्रभाव नहीं छोड़ पाता जो न्यूनतम शब्दावली सहित प्रयुक्त छंदोबद्ध नए नारे कर पाते हैं। एक छोटी-सी आकर्षक व मन को छू लेने वाली भाषिक प्रयुक्ति भी बड़े-से-बड़े उत्पाद को खरीदने के लिए उपभोक्ता अथवा पाठक को प्रेरित कर देती है।
9. **उपभोक्ताओं में विश्वास जगाना**–उत्पाद के प्रति उपभोक्ताओं में भरपूर विश्वास निर्मित करने का जिम्मा भी विज्ञापन का ही होता है। उत्पाद की गुणवत्ता के साथ-साथ यह भी विश्वास दिलाना कि यदि संबंधित उत्पाद त्रुटिपूर्ण सिद्ध होता है, जो बिना किसी अतिरिक्त आर्थिक भार के उसी स्तर का नया उत्पाद निशुल्क रूप से विक्रेता कंपनी उनके घर पहुँचाएगी, उपभोक्ताओं में उत्पाद के प्रति निश्चिंतता पैदा करती है।
10. **उत्पाद-विक्रय संबंधी आकर्षक योजनाएँ**–उपभोक्ताओं तक उत्पाद संबंधी 'विज्ञापन' को पहुँचाने तथा आर्थिक रूप में उन्हें उत्पाद को खरीदने हेतु प्रेरित करने में तत्संबंधी उत्पाद के विक्रय की आकर्षक प्रोत्साहन योजनाओं का भी प्रमुख स्थान होता है। निश्चित रूप से उपभोक्ता नई सुझाई गई योजना की ओर ही तीव्रता से आकर्षित होता है।

विज्ञापन के माध्यम

जो संचार माध्यम हैं, वही विज्ञापन के भी माध्यम हैं। विज्ञापन संचार के लिए ही होते हैं। इसलिए विज्ञापन के लिए सूचना-संचार के सभी तरह के माध्यम अपनाए जाते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं, ये माध्यम इस प्रकार हैं–

1. मुद्रण माध्यम – समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ।
2. इलैक्ट्रॉनिक माध्यम–
   (क) श्रव्य माध्यम – रेडियो, मुनादी आदि।
   (ख) श्रव्य दृश्य माध्यम – टेलीविज़न इंटरनेट।
3. चलचित्र माध्यम –फिल्म।
4. अन्य माध्यम – आउट डोर, होर्डिंग, पर्चे, पोस्टर, बैनर, प्रदर्शनी, स्टीकर, उपहार, डायरी, कलैंडर आदि।

विज्ञापन के प्रकार

विज्ञापन कई प्रकार के हो सकते हैं। कुछ निम्नलिखित हैं–

1. **अनुनेय विज्ञापन (Persuasive Advertisement)– ये विज्ञापन उपभोक्ताओं के मन में आकर्षण पैदा कर, अपनी पैठ बनाने के लिए होते हैं।**

2. **सूचनाप्रद विज्ञापन (Informative Advertisement)–** ये विज्ञापन शिक्षाप्रद, सूचनाप्रद, उपभोक्ता समाज के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने अथवा बौद्धिक-आध्यात्मिक उन्नति से संबंधित होते हैं।

3. **संस्थानिक विज्ञापन (Institutional Advertisement)**–ये विज्ञापन व्यावसायिक अथवा अन्य संस्थाओं द्वारा अपनी गति-प्रगति अथवा साख बढ़ाने के उद्देश्य से प्रसारित–प्रकाशित किए जाते हैं।

ब्रिटानिया कंपनी अपना 10% सालाना मुनाफा
अनाथ बच्चों के लिए दान में देगी।

4. औद्योगिक विज्ञापन (Industrial Advertisement)– जो कच्चे माल, उपकरण आदि की क्रय में वृद्धि के उद्देश्य से किए जाते हैं।

5. **वित्तीय विज्ञापन (Financial Advertisement)**–जिनका संबंध मुख्य रूप से आर्थिक गतिविधियों से होता है; जैसे–शेयर खरीदने आदि के विज्ञापन।

6. **वर्गीकृत विज्ञापन (Classified Advertisement)**–ये विज्ञापन संक्षिप्त, सज्जारहित तथा अल्प व्ययकारी होते हैं। शोक संवेदना, विवाह, बधाई, खोया-पाया, क्रय-विक्रय, आवश्यकता, नौकरी, वर-वधू आदि से संबंधित विज्ञापन इसी श्रेणी में आते हैं।

पूर्वोत्तर रेलवे सूचना

रोजगार सूचना संख्या 01/2011 रेलवे सुरक्षा बल/रेलवे सुरक्षा विशेष बल में (पुरुष एवं महिला) कान्सटेबल की भर्ती के संबंध में।

... www.ner.indianrailways.gov.in से डाउनलोड कर लें।

मुख्य सुरक्षा आयुक्त/रेसुब, गोरखपुर

कार्यालय मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ), दिल्ली

ओल्ड सेंट स्टीफन कॉलेज बिल्डिंग

कश्मीरी गेट, दिल्ली

जन-सूचना

... 22.05.2013 ... (www.ceodelhi.nic.in) ... 29.05.2013 ...

DIP/0410/13-14

विशेष मुख्य निर्वाचन अधिकारी, दिल्ली

7. **राजनैतिक विज्ञापन (Political Advertisement)**–प्रजातांत्रिक गणराज्यों में राजनैतिक विज्ञापन अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। अपने दल के प्रचारार्थ भिन्न-भिन्न तरह के आकर्षण नारें बनाकर तथा प्रलोभनों का पिटारा खोलकर प्रत्येक नेता जनता का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करती है। लोगों को लुभाने वाले वादे तथा अपने दल की झूठी छवि इन विज्ञापनों का मुख्य आधार होती है।

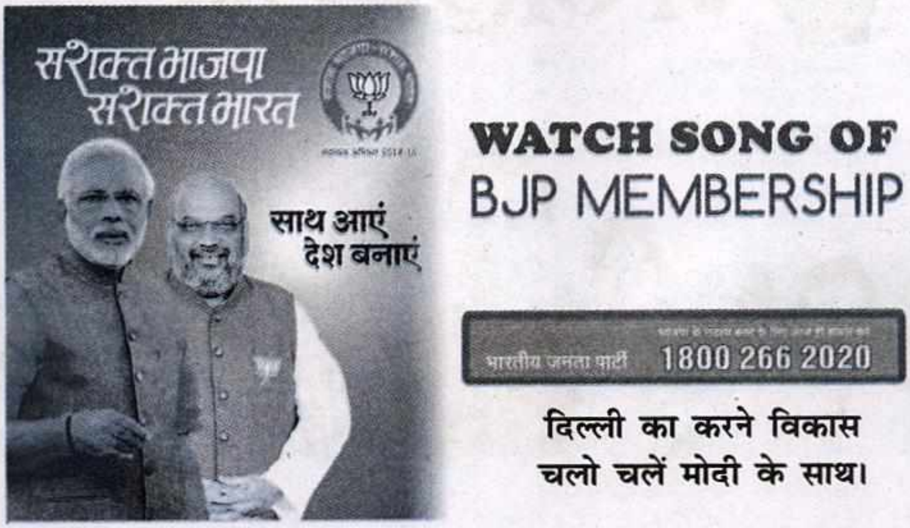

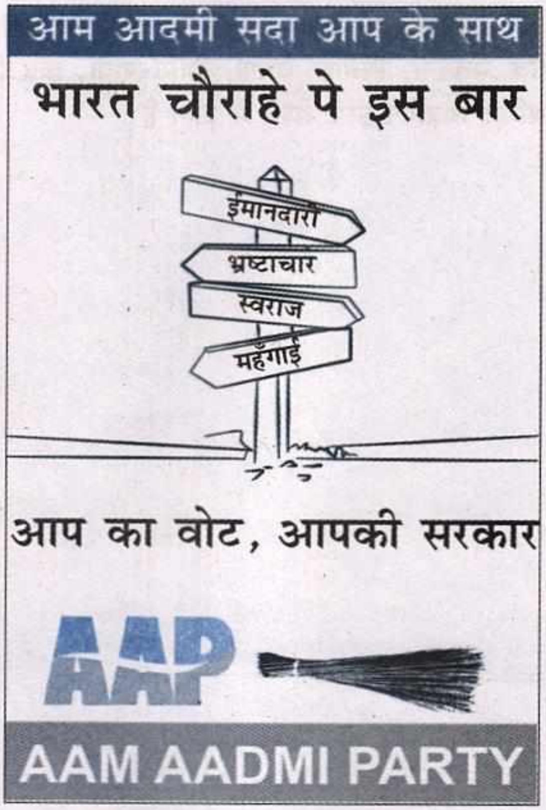

आम आदमी सदा आप के साथ
भारत चौराहे पे इस बार
ईमानदारी
भ्रष्टाचार
स्वराज
महँगाई
आप का वोट, आपकी सरकार
AAP
AAM AADMI PARTY

काँग्रेस का हाथ सबके साथ
मैं नहीं, हम

इनके अतिरिक्त स्मारिका आदि के विज्ञापन, जनमत तैयार करने वाले शिक्षाप्रद विज्ञापन, सरकार की उपलब्धियों, जैसे प्रचारात्मक विज्ञापन भी होते हैं।

Advt. No. NCAOR/23/13

राष्ट्रीय अंटार्कटिक एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र

(पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, *भारत सरकार के अधीन के एक स्वायत्त निकाय)*

हेडलैंड सडा, वास्को-द-गामा, गोवा- 403804

वॉक-इन-इंटरव्यू

राष्ट्रीय अंटार्कटिक एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र (एनसीएओआर), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय को विविध परियोजनाओं के तहत निम्नलिखित पदों की पूर्ति के लिए प्रत्याशित उम्मीदवारों की तलाश है. पद, एक वर्ष की शुरुआती कालावधि हेतु परियोजना माध्यम पर एवं अस्थाई है. निर्धारित पात्रता शर्तों की पूर्ति करने वाले उम्मीदवारों को एनसीएओआर में **12.06.2013** (बुधवार) को वॉक-इन-इंटरव्यू के लिए आमंत्रित किया जाता है.

क्र. सं.	पद श्रेणी	पद संख्या	योग्यता एवं अनुभव	दायित्व स्वरूप
परियोजनाः "दक्षिण महासागर अध्ययन"				
1	रिसर्च साइंटिस्ट बी	01	आवश्यकः योग्यता (i) पोस्ट ग्रेज्युएट लेवल पर कम से कम 60% अंकों के साथ मान्यताप्राप्त यूनिवर्सिटी से मरीन बायलॉजी/ जोलॉजी में मास्टर्स डिग्री. (ii) अनुभवः संबंधित क्षेत्र में दो वर्ष का शैक्षणिक/ आरएंडडी अनुभव वांछनीयः जोप्लैंकटन (Zooplankton) नमूने का विश्लेषण (संवर्ग पहचान एवं जैव मात्रा अनुमानन, उसके पश्चात डेटा इंटरप्रेटेशन) एवं वैज्ञानिक समुद्री यात्रा	वैज्ञानिक समुद्री यात्रा में सहभाग; जोप्लैंकटन (सूक्ष्म एवं मध्यम) नमूना एकत्रित करना, जीवजाति विविधता की पहचान, द्वितीय उत्पादकता का अनुमानन
परियोजनाः भारतीय आर्कटिक कार्यक्रम				
1	रिसर्च साइंटिस्ट बी	01	आवश्यकः योग्यता (i) पोस्ट ग्रेज्युएट लेवल पर कम से कम 60% अंकों के साथ मान्यताप्राप्त यूनिवर्सिटी से माइक्रो बायलॉजी/ बायोटेक्नोलॉजी/ बायोकेमिस्ट्री/मरीन बायलॉजी में मास्टर्स डिग्री. (ii) अनुभवः संबंधित क्षेत्र में दो वर्ष का शैक्षणिक/ आरएंडडी अनुभव.	आर्कटिक क्षेत्र में लॉजिस्टिक तथा साइंटिफिक कार्य.

विस्तृत विज्ञापन के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.ncaor.gov.in देखें.

समाचार-पत्रों में जिस प्रकार विज्ञापन छपते हैं, उन्हें चार भागों में बाँटा जाता है–

1. वर्गीकृत विज्ञापन
2. सजावटी या डिस्प्ले विज्ञापन
3. वर्गीकृत डिस्पले विज्ञापन
4. समाचार विज्ञापन

टेलीविज़न विज्ञापन के प्रकार

टेलीविज़न से विज्ञापन दो प्रकार के प्रसारित होते हैं–

1. प्रायोजित कार्यक्रम
2. समय विज्ञापन

टेलीविज़न मीडिया का एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो सभी आयुवर्ग को एक साथ प्रभावित करता है। आज टी०वी० विज्ञापन प्रत्येक वर्ग, लिंग और आयु संवर्ग के लिए प्रसारित होते हैं।

1. **प्रायोजित कार्यक्रम**–इसके अंतर्गत कार्यक्रम के पूर्व तथा पश्चात् प्रायोजक का नाम तथा अन्य विवरण प्रसारित किए जाते हैं। अधिकांश व्यावसायिक संस्थान मनोरंजन युक्त कार्यक्रमों या धारावाहिकों के लिए प्रायोजना कार्य करके अपने एकाधिकार प्रसारण का अधिकार प्राप्त कर लेते हैं। अनेक बार कार्यक्रम के प्रायोजक सामूहिक रूप से एकत्र होते हैं। इससे यह लाभ रहता है कि कार्यक्रम के आरंभ, मध्य और अंत तक सभी के विज्ञापन क्रमबद्ध रूप से प्रसारित हो जाते हैं। इससे टेलीविज़न संस्थान और प्रायोजक दोनों को आर्थिक दृष्टि से लाभ ही रहता है।
2. **समय विज्ञापन**–इस प्रकार के विज्ञापनों में वस्तु के गुणों, मूल्य तथा आवश्यक जानकारी दी जाती है। टेलीविज़न में समय विज्ञापन की अवधि 10-15 सेकेंड ही होनी है।

   विज्ञापन में निम्न बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है–

   1. प्रस्तुतीकरण 2. नाटकीयता
   3. प्रदर्शन 4. स्लाइड विज्ञापन
   5. विश्वसनीयता 6. संगीतमयता

विज्ञापन कॉपी लेखन

कॉपी लेखक को विज्ञापन कॉपी बनाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, ताकि उपभोक्ता को यह पता चल सके कि–

1. विज्ञापन वस्तु कहाँ मिल सकेगी?
2. आश्वस्त हो सके कि उत्पादक उसके लिए लाभप्रद होगा।
3. विज्ञापन अपनी रुचि और विचार के अनुरूप लगे।
4. उत्पाद क्रय करने की इच्छा या चाह अनुभव करने लगे।
5. विज्ञापन सहज और बोधगम्य लगे, दावे पर अविश्वास न हो।
6. विज्ञापन का प्रत्येक वाक्य एवं शब्द रुचि के अनुकूल प्रतीत हो।
7. विज्ञापन की भाषा अपने परिवेश के प्रतीक लगे।
8. विज्ञापन का मूल कथ्य या वस्तु उसे संतुष्टि की गारंटी देता है।
9. विज्ञापन पारस्परिक एवं सांप्रदायिक सौमनस्य पर स्वाभाविक प्रभाव उत्पन्न करे।
10. प्रतिस्पर्धी वस्तुओं के अवगुणों के उल्लेख के स्थान पर अपने गुण-वैशिष्टय तथा विज्ञापन अपने उत्पाद की श्रेष्ठता सिद्ध करता हो।

इसके अतिरिक्त कॉपी लेखक को निम्न बिंदुओं पर भी अपना ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है–

1. शीर्षक–शीर्षक के बिना किसी भी विज्ञापन की सज्जा या ले-आउट की कल्पना नहीं की जा सकती। शीर्षक विज्ञापन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। कॉपी लेखक को विज्ञापन का प्रथम प्रारूप (ड्राफ्ट) तैयार करते समय यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि जो भी शीर्षक लिखा जाए वह उपभोक्ता, पाठक का ध्यान आकर्षित कर सके। शीर्षक सरल एवं प्रभावपूर्ण तरीके से कम-से-कम शब्दों में संदेश की ओर संकेत करने वाला होना चाहिए।

जैसे– Glucose – Parle Product

50 – 50 – Britania

नवरत्न तेल

झंडू केसरी जीवन

2. उपशीर्षक–विज्ञापन में मात्र शीर्षक लेखन से ही काम नहीं चलता है। कॉपी-राइटर इस बात पर विशेष ध्यान देता है कि शीर्ष पंक्ति में जो कहा जा चुका है, उसके बाद भी उपभोक्ता को विज्ञापन से पुनः कुछ और भी अवगत कराया जाए। यह उपशीर्षक वास्तव में शीर्षक और मुख्य दृश्य के बीच सेतु या पुल का कार्य करता है। शीर्षक पढ़ने के उपरांत पाठक या उपभोक्ता के मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर उपशीर्षक में निहित होता है।

3. मुख्य कथ्य (बॉडी कॉपी)–कॉपी लेखक शीर्षक एवं उपशीर्षक लिखने के बाद वस्तु या उत्पाद के संबंध में विस्तार से बताने के लिए मुख्य कथ्य का प्रयोग करता है। मुख्य कथ्य के द्वारा लेखक उपभोक्ता के मन में इच्छा शक्ति और क्रय-शक्ति जगाता है। यह कथ्य आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं तुलनात्मक दृष्टि से युक्त होता है। लेखक इस बात का ध्यान रखे कि मुख्य कथ्य इतनी छोटी न हो कि ग्राहक की जिज्ञासा को अधूरा छोड़ दे या इतनी बड़ी भी न हो कि पाठक पढ़ते-पढ़ते ऊब जाएँ। मुख्य कथ्य के अंत में पाठक को कुछ करने की सलाह दी गई हो, जैसे–आज ही खरीदें, मुफ्त सेम्पल के लिए लिखें, अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें, तुरंत संपर्क करें आदि।

4. उपसंहार–विज्ञापन में उपसंहार या बेसलाइन का महत्त्व कम नहीं है। कॉपी लेखक विज्ञापन के अंतिम चरण में मुख्य कथ्य समाप्त करते समय प्रेरणादायक वाक्य संरचना से विज्ञापन का सार या निचोड़ प्रस्तुत करता है।

जैसे–सर्वो डालो जान डालो इंडियन आयल

5. विज्ञापन सज्जा (ले-आउट, चित्र)–विज्ञापन में सज्जा (ले–आउट, चित्र, रंगों का चुनाव, खाली जगह, टाइप सेटिंग आदि) का विशेष महत्त्व है। विज्ञापन सज्जा के अंतर्गत चित्र किसी भी कलाकार से बनवा सकते हैं। विज्ञापन में संतुलित, प्रभावशाली रंगों का चुनाव किया जाना चाहिए। विज्ञापन की प्रस्तुति उसके आकर्षक-मुद्रण एवं टाइप-सेटिंग पर निर्भर होती है।

6. ट्रेडमार्क एवं लोगो–सभी विज्ञापनों में ट्रेडमार्क या संस्थान का पहचान चिह्न एवं लोगो लगाया जाता है। इसी से विज्ञापन पर दृष्टि जाती है। विज्ञापन के स्वरूप में परिवर्तन होता जाता है; परंतु उसके ट्रेडमार्क एवं लोगो से उपभोक्ता तुरंत पहचान लेते हैं; जैसे–

निरमा – नाचती हुई लड़की

जगवार कार – चिह्न

ट्रेडमार्क पंजीयन करा लिए जाते हैं और किसी कंपनी की अपनी संपत्ति होते हैं। इसी प्रकार लोगों में कंपनी का नाम इस ढंग या शैली से लिखा या तैयार किया जाता है, जो कंपनी के चरित्र एवं कार्यकलाप या उसके उद्देश्य से मिलता-जुलता होता है।

ट्रेडमार्क या ट्रेड नाम अथवा ब्रांड नाम भी होते हैं–बाटा, टाटा, बिरला, जे०के०, एच०एम०टी०, इसके साथ ही नामपरक-अशोक मसाले, रामदेव हींग, एम०डी०एच० मसाले, महेंद्र ट्रैक्टर्स, एटलस साइकिल, हीरो मोपेड, लखानी चप्पल, हेरीसन ताले, गोदरेज अलमारी आदि।

ध्यान रहे ट्रेडमार्क या ट्रेड नाम कभी दूसरे की कॉपी नहीं किए जा सकते।

7. नारा (स्लोगन)–एक योग्य विज्ञापन कॉपी लेखक सुंदर, प्रभावशाली और सटीक नारा (Slogan) उत्पादों के लिए लिखता है। आकर्षक वायदों एवं आकर्षक 'जुमलों' का प्रयोग कर वह उपभोक्ता को आकर्षित करता है। कभी-कभी स्लोगन पढ़कर ही वस्तुएँ खरीदी जाती हैं; जैसे–

- ठंडा का मतलब कोका कोला

× × × ×

- सर्फ की खरीददारी में ही समझदारी है

× × × ×

- लाइफब्वॉय है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ

× × × ×

- ठंडा-ठंडा कूल-कूल (नवरत्न तेल)

× × × ×

- Life is good — LG

× × × ×

- खुशियों की होम डिलिवरी – डॉमिनोज़

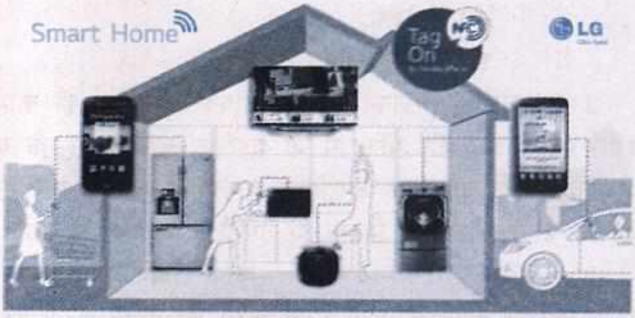

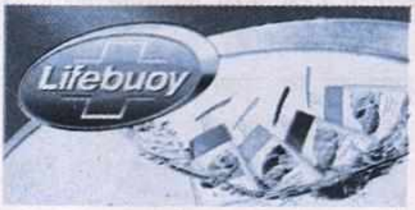

विज्ञापन कॉपी की भाषा

विज्ञापन कॉपी लेखक को संबंधित वस्तु या लक्ष्य का पूरा ज्ञान होना चाहिए। कॉपी लेखक को निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है–

1. विज्ञापित वस्तु की संपूर्ण जानकारी
2. उपभोक्ता वर्ग की क्रय-शक्ति
3. विज्ञापन निर्माता का बजट
4. विज्ञापन का माध्यम (समाचार पत्र/टेलीविज़न)

विज्ञापन लेखक स्वयं को ग्राहक मानकर विज्ञापन-लेखक का कार्य करता है, जिससे यह समझ सकता है कि ग्राहक को कैसी वस्तु की ज़रूरत है, वस्तु कब, कहाँ और कितने में मिलेगी? उपभोक्ता की उसमें रुचि जगाए। कॉपी लेखन में कल्पनाशीलता एवं रचनाशीलता का होना ज़रूरी है; जैसे–

- वाशिंग पाउडर निरमा, दूध-सी सफ़ेदी निरमा से आए
  रंगीन कपड़ा भी खिल-खिल जाए।
  सबकी पसंद निरमा/वाशिंग पाउडर निरमा।

× × × ×

- कुछ मीठा हो जाए (कैडबरी)

सुपर निरमा

शृंगारिक भाषा का प्रयोग–

विज्ञापन की भाषा में शृंगारिक भाषा का विशेष प्रयोग किया जाता है। मनुष्य आज के तनावपूर्ण वातावरण में जिस

प्रकार जीवन व्यतीत कर रहा है उसमें यदि कोई काव्यमय पंक्ति सुंदर शब्दावली सहित कोमल भावनाओं को स्पर्श करती है तो वह विज्ञापन कितना सुखद अनुभव देता है। उपभोक्ता क्षणभर के लिए आनंदमय सतरंगी संसार में पहुँच जाता है। इस प्रकार विज्ञापनदाता अपने विज्ञापनों को और अधिक प्रभावक बनाने के लिए इस शृंगारिक वातावरण को उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार के कुछ विज्ञापन देखिए–

1. कल को नन्हीं पिया घर जाए
   क्राउन आज भी साथ निभाए
   क्राउन टी०वी०
2. अपना सुनहरा सपना साकार कीजिए।
   ताजे फूलों की महक वाली पॉन्ड्स क्रीम अपनाइए।
3. पल-पल महके ऐसे
   पहला प्यार हो जैसे
   नया जय सौंदर्य साबुन
4. एक बार हो जाए शौक जिस अंदाज का
   सदा साथ रहे जिंदगी का वो जायका
   लिप्टन ग्रीन लेवल चाय।

विशेषणों का प्रयोग

विज्ञापन की भाषा में जहाँ शृंगारिक भाषा का प्रयोग होता है। वहीं विशेषणों का भी अधिक प्रयोग किया जाता है। वस्तु की विशेषता को एक अथवा अधिक विशेषणों द्वारा वर्णित किया जाता है। जैसे–

1. केवल एक विशेषण का प्रयोग–
   – त्वचा में ज्योति जगाए – रेक्सोना।
   – गोरेपन की क्रीम – फेयर एंड लवली।
   – एक टूथपेस्ट मसूड़ों के लिए – फॉर्‌हेन्स
   – मजेदार भोजन का राज – डालडा
   – ताजगी का साबुन – लिरिल
   – सुपररिन की चमकार ज्यादा सफ़ेद
2. दो विशेषणों का प्रयोग
   – खून को साफ़ करके त्वचा को निखारे–हमदर्द की साफी
   – पाँच औषधियों वाला पाचन टॉनिक–झंडु पंचारिष्ट
   – बेजोड़ चाय, किफ़ायती दाम–रेड लेबल चाय
   – ताजगी व फुर्ती के लिए हॉर्लिक्स
   – आप अपना वक्त और ईंधन बचाइए,
   युनाइटेड प्रेशर कुकर लाइए।

3. तीन या अधिक विशेषणों का प्रयोग–

- मुझे चाहिए एक साफ, स्वच्छ स्नान–100% संपूर्ण नया डैटॉल सोप।
- अलबेली और निराली, ज़्यादा गारंटी वाली–टाइमस्टार घड़ी।

- डबल डायमंड चाय
  स्वाद में, तेज़ी में, आपके ख्यालों सी ताजगी।
- भीनी-भीनी सुगंध युक्त
  चिपचिपाहिट रहित केश तेल
  स्वस्थ केंश-सुंदर केश (केयो कार्पिन केश तेल)

कुछ अन्य उदाहरण

1. सपना साड़ी सेंटर
   - बेहतरीन रंग
   - आकर्षक डिज़ाइन
   - फैन्सी व डिज़ाइनर साड़ियाँ
   - दुल्हन की साड़ियाँ
   - दुल्हन के लहँगे

दुल्हन के लिए विशेष 10% की छूट

आकर्षक छूट
के साथ

पंजाबी सूट के भव्य विक्रेता
सरोजनी देवी रोड, अमृतसर

2. सम्राट पेंसिल
   - सुंदर लिखावट
   - प्रभावशाली रंग
   - लंबी चलने वाली
   - सस्ती व सुंदर
   - बच्चों के लिए मात्र एक विकल्प
   - लिखो तो लिखते ही चले जाओ

इस्तेमाल करो तो जानो

सम्राट पेंसिल हो जिसके पास,
करें सब उस पर नाज़।

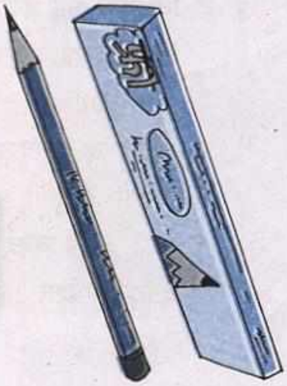

3. हिंदी पुस्तक वाटिका

- मनोरंजन व ज्ञानवर्धक पत्रिकाएँ व पुस्तकें
- कहानी व कविता संग्रह
- बच्चों के लिए आकर्षक ईनाम

आकर्षक छूट तथा ईनाम के साथ

यहाँ पा सकेंगे देश और विदेश के प्रख्यात लेखकों की पुस्तकें

4. राजस्थान वाला मिठाई और नमकीन भंडार

- राजस्थान की मशहूर मिठाइयाँ
- स्वादिष्ट घेवर और पिन्नी के विक्रेता
- शुद्ध देशी घी से बनी
- खुद भी खाओ, अपनों को भी खिलाओ।

मीठी मिठाई मीठे अवसरों के लिए

एक बार खाओ तो खाते ही रह जाओ।

5. अपना मोबाइल

विशेष–दबंग निर्माताओं का एक आकर्षक उपहार

- आकर्षक स्क्रीन
- कम कीमत
- विशेष सुविधाएँ
- बेजोड़ रंग
- सबसे विशिष्ट व सबसे अलग

आकर्षक कवर के साथ 10% त्योहार की की छूट

6. नीम दंत मंजन

- ताज़गी से भरपूर
- दाँतों की कीड़ों से सुरक्षा
- मसूड़ों की मज़बूती
- मुँह की सड़ान को दूर करे
- मज़बूत, सफेद और स्वस्थ दाँतों के लिए
- प्राकृतिक आयुर्वेदिक दंत मंजन
- पायरीया दुर्गंध आदि में लाभ

साँसों को दे ताज़गी

7. रमणिका शैम्पू

- गिरते बालों का एकमात्र इलाज
- रमणिका शैम्पू लगाए बार-बार
- बालों का पोषण करे
- बालों का गिरना रोके
- बालों को सफेद होने से रोके
- रूसी की समस्या से छुटकारा दे
- लंबे और सेहतमंद बालों के लिए
- शुद्ध आयुर्वेदिक तत्वों का अभूतपूर्व मिश्रण

विश्वास की झलक
बालों में, इरादों में

बालों की हर समस्या के लिए अपनाएँ,
रमणिका शैम्पू

8. रेनबो छाता

- उच्चतम गुणवत्ता
- कम कीमत
- आकर्षक रंगों में
- बच्चों के लिए छोटे व सुरक्षित छाते उपलब्ध
- 100% गारंटी

बर्षा से अपने बच्चों को बचाना,
रेनबो छाता ही लाना।

वर्षा के मौसम में 20% की छूट

9. **केशव चूर्ण** (परिवार की सेहत का राज केशव चूर्ण को अपनाना)

- ऐसिडिटी से छुटकारा
- कब्ज़ से छुटकारा
- पेट के लिए रामबाण
- बच्चों, बूढ़ों व सभी के लिए उपयोगी
- जीवन के लिए वरदान
- विशेष आयुर्वेदिक तत्वों से बना हुआ

बच्चे-बूढ़े सभी की पसंद
केशव चूर्ण

10. रफ़्तार शब्दकोश

- बच्चों को बनाइए शब्दों का सिकंदर
- सदैव आगे ही आगे
- बुद्धि का विकास सदैव बच्चों के साथ
- बढ़ाएँ ज्ञान का भंडार
- शब्दों के अर्थ के साथ उनके विलोम व पर्यायवाची का ज्ञान

विद्यार्थियों को विशेष 25% की छूट

• अभ्यास-प्रश्न •

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विज्ञापन किसे कहते हैं?

(ख) विज्ञापन की आवश्यकता पर अपने विचार अभिव्यक्त करें।

(ग) विज्ञापन में किन बातों पर ध्यान रखा जाना आवश्यक है?

(घ) विज्ञापन के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

(ङ) विज्ञापन के कितने भेद हैं? नाम सहित परिचय दीजिए।

(च) टेलीविज़न के विज्ञापन की क्या विशेषता है? उनके प्रकार का विस्तार में वर्णन कीजिए।

(छ) विज्ञापन कॉपी लेखन में किन बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता है?

2. निम्नलिखित के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए–

(क) 'गंगा' ठंडा पानी

(ख) मच्छर मारने की टिकिया या स्प्रे के लिए

(ग) हिंदी की एक साप्ताहिक पत्रिका के लिए

(घ) एक टूथपेस्ट के लिए

(ङ) एक वॉशिंग पाउडर के लिए

(च) एक पेन के लिए

3. निम्नलिखित विज्ञापन के लिए आकर्षक नारा (स्लोगन) लिखिए–

(क) बिरला सीमेंट

(ख) लक्मे प्रसाधन सामग्री

(ग) एशियन पेंट्स

(घ) क्वालिटी आइसक्रीम

(ङ) अप्सरा पेंसिल

(च) लखानी हवाई चप्पल

(छ) अंकल चिप्स

(ज) झंडू बाम

❑❑

6 सूचना-लेखन (Notice Writing)

'सूचना-लेखन' कम-से-कम शब्दों में औपचारिक शैली में लिखी संक्षिप्त जानकारी होती है। यह आम व्यक्तियों तथा संगठनों द्वारा उपयोग में लायी जाती है। इसका प्रयोग जन्म तथा मृत्यु की घोषणा करने, घटनाओं जैसे उद्घाटन व सेल, सरकारी आदेशों की जानकारी देने, किसी विशिष्ट अवसर के लिए आमंत्रण देने, किसी कर्मचारी को नौकरी से बरखास्त करने या कर्मचारी द्वारा नौकरी छोड़ने की सूचना देने के लिए किया जाता है। इन सूचना-पत्रों को एक खास बोर्ड पर लगाया जाता है। किसी भी स्कूल या संगठनों में खास जगह पर ये बोर्ड लगाए जाते हैं। जबकि सरकारी विभागों द्वारा जारी सूचना भिन्न-भिन्न समाचार-पत्रों में भी छापी जाती है।

सूचना-लेखन का तात्पर्य है–किसी विशेष सूचना को सार्वजनिक करना।

'सूचना' किस प्रकार लिखी जाए–

एक प्रभावशाली सूचना-लेखन की कला को अभ्यास द्वारा ही सीखा जा सकता है इसे लिखने के लिए कुछ सामान्य बिंदुओं का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है। आपके द्वारा लिखी सूचना पूर्ण जानकारी देने वाली तथा सरल और प्रभावशाली भाषा में लिखी होनी चाहिए।

एक अच्छी सूचना के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का समावेश किया जाना आवश्यक है–

1. जिस संस्था, स्कूल या ऑफिस द्वारा इसे जारी किया जा रहा है–उसका नाम
2. जिस दिनांक को इसे जारी किया जा रहा है
3. सही शीर्षक जो सूचना को स्पष्ट करे
4. एक आकर्षित करने वाला नारा या स्लोगन
5. सूचना लिखने का उद्देश्य जैसे–मिटिंग, किसी ओर ध्यान आकर्षित करने, आम जनता को, सामान्य जानकारी आदि
6. समय का सही और पूरा विवरण–दिनांक, समय, स्थान, प्रोग्राम, कितने बजे से कितने बजे तक।

आइए कुछ सूचना-पत्र के नमूने देखें–

1. औपचारिक या अनौपचारिक मिटिंग के लिए निम्नलिखित जानकारियाँ दी जानी आवश्यक हैं–

- दिनांक
- समय
- स्थान
- ऐजेंडा/उद्देश्य
- किस-किस को आना है
- विशिष्ट निर्देश
- संपर्क किए जाने वाले व्यक्ति का नाम/पता

2. किसी Event (कार्यक्रम) की जानकारी देने के लिए निम्नलिखित जानकारियाँ दी जानी आवश्यक हैं–

- नाम
- उद्देश्य/अवसर की जानकारी
- दिनांक
- समय/अवधि
- स्थान
- आवश्यक शैक्षणिक योग्यता/पात्रता/शर्त
- संपर्क पता
- आवश्यक जानकारी
- अवसर से संबंधित कोई विशिष्ट चिह्न या लोगो

3. सूचना खोया और पाया (वस्तु या व्यक्ति से संबंधित)

- वस्तु खोया/पाया
- दिनांक
- समय (अंदाज़न)
- स्थान
- कोई पहचान चिह्न (रंग, आकार, सामग्री)
- सामग्री
- किसे संपर्क किया जाए/कब और कहाँ

4. नाम बदलने की जानकारी देते हुए जारी की गई आम सूचना के लिए आवश्यक जानकारी–

- ध्यान आकर्षित करने वाले शब्द
- जिस नाम का अभी प्रयोग किया जा रहा है
- पता
- नया नाम
- नाम बदलने का कारण

5. निकट भविष्य में संगठित किए जाने वाले दौरे/मेले/प्रदर्शनी/कैंप आदि की जानकारी देने के लिए जारी की गई सूचना में निम्नलिखित जानकारियों का समावेश किया जाना आवश्यक है।

- जिस नाम का अभी प्रयोग किया जा रहा है
- पता
- नाम और स्वभाव
- अवसर की जानकारी
- स्थान
- उद्‌देश्य – जानकारी, जागरूकता, अपील, आमंत्रण इत्यादि
- दिनांक / समय
- शुरुआत / अंत
- खर्चा / प्रवेश शुल्क
- समय.........दिनांक से..........दिनांक तक
- स्थान (दौरे के लिए)
- विशिष्ट निर्देश (जैसे–क्या करें और क्या न करें, संपर्क करने का समय आदि)
- संपर्क करने के लिए पता

सूचना लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए–

- विशिष्ट जानकारियों को बड़े अक्षरों में लिखा जाना चाहिए; जैसे–संस्था का नाम, कैप्शन आदि
- तारीख का स्थान सदैव ऊपर सीधे या उल्टे कोने में या फिर नीचे सीधे या उल्टे कोने में हो।
- पूरी सूचना एक निश्चित चौकोर में लिखी जानी चाहिए।
- जिस विशिष्ट व्यक्तित्व के द्वारा सूचना जारी की जा रही है। उसके हस्ताक्षर उसकी पदवी तथा नाम सहित।
- पूरे वाक्य न लिखकर संकेतों के माध्यम से लिखा जाना चाहिए।
- शब्द सीमा का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

आइए सूचना-लेखन के कुछ नमूने देखें–

1. छात्र-परिषद की बैठक के लिए सूचना-पत्र

सूचना

दिल्ली पब्लिक स्कूल

बुलंदशहर

विद्यालय में अनुशासन एवं सफ़ाई की समस्याओं पर छात्र-परिषद की बैठक आज मध्यावकाश में प्रधानाचार्या के कार्यालय में होगी।

छात्र-परिषद के सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

प्रधानाचार्य

25 जुलाई, 20XX

2. आगामी माह में होने वाले वार्षिकोत्सव से संबंधित तैयारी के लिए विद्यार्थी परिषद की बैठक (Meeting) के लिए सूचना-पत्र।

सूचना

विद्यार्थी परिषद
सरदार बल्लभभाई पटेल विद्यालय, दिल्ली

1 नवंबर, 20XX

प्रिय मित्रो,
आगामी 25 नवंबर, 20XX को 'वार्षिकोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है। इसी से संबंधित व्यवस्था को लेकर कुछ आवश्यक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए छात्र-परिषद की बैठक दिनांक 2 नवंबर, 20XX को 'सभागार' में मध्यावकाश के समय होनी निश्चित हुई है।
छात्र परिषद के सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।
राहुल शर्मा
सचिव
विद्यार्थी परिषद

3. आप मॉर्डन स्कूल, बारहखंभा रोड, हिंदी साहित्य परिषद के सेक्रेटरी हैं। स्कूल में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को आमंत्रित करते हुए एक सूचना-पत्र लिखिए।

सूचना

हिंदी साहित्य परिषद
मॉर्डन स्कूल, बारहखंभा रोड

10 जुलाई, 20XX

अंत: स्कूल वाद-विवाद प्रतियोगिता

विद्यालय के सभागार में आयोजित अंत: स्कूल वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों के नाम निम्नलिखित आधार पर आमंत्रित हैं।

दिनांक – 20 जुलाई, 20XX
समय – सुबह 10 बजे
स्थान – स्कूल सभागार
विषय – सह शिक्षा विद्यार्थियों की प्रगति में सहायक

इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 12 मई, 20XX तक हिंदी साहित्य परिषद के सचिव को दें।
विनीत शर्मा
सचिव
हिंदी साहित्य परिषद

4. आप सांस्कृतिक परिषद के अध्यक्ष के रूप में स्कूल में आयोजित अंतः स्कूल नृत्य और गीत प्रतियोगिता के लिए सूचना-पत्र लिखिए।

सूचना

सांस्कृतिक परिषद
बाल भारती स्कूल, बनारस

26 जुलाई, 20XX

अंतः स्कूल नृत्य और गीत प्रतियोगिता स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त के उपलक्ष्य में आयोजित अंतः स्कूल नृत्य और गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

दिनांक – 15 अगस्त, 20XX
समय – प्रातः 9 बजे
स्थान – स्कूल सभागार
प्रतिभागी – 8 से 10 बच्चे
कक्षा – छह से दस तक

इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 30 जुलाई, 20XX तक सांस्कृतिक परिषद के सचिव को दें।

वरुण रॉय
अध्यक्ष
सांस्कृतिक परिषद

5. आप नाट्य कला परिषद के सचिव हैं। स्कूल ने अन्तः विद्यालय नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया है। अपने स्कूल के विद्यार्थियों को इसकी जानकारी देते हुए एक सूचना-पत्र लिखिए।

सूचना
अंतः स्कूल नाटक प्रतियोगिता
नाट्य कला परिषद
हैपी स्कूल, दरियागंज, नई दिल्ली

20 जनवरी, 20XX

स्कूल के द्वारा आयोजित अंतः स्कूल प्रतियोगिता के लिए आप सभी आमंत्रित हैं।

दिनांक : 5 फरवरी, 20XX
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : स्कूल सभागार
प्रतिभागियों की संख्या : 10

प्रविष्टियाँ प्राप्त करने की अंतिम तिथि 30 जनवरी, 20XX दोपहर 2:00 बजे तक

रवि खन्ना/ऋतु कालरा
सचिव
नाट्य कला परिषद

6. **आप विद्यार्थी परिषद के सचिव हैं। आप स्कूल के विद्यार्थियों के लिए एक दीवार पत्रिका शुरू करने जा रहे हैं। इसी से संबंधित लेख, कविता, कहानी तथा स्कूल समाचार विद्यार्थियों से आमंत्रित करें।**

सूचना

विद्यार्थी परिषद
सेंट जेवियर स्कूल, सिविल लाइंस

24 अगस्त, 20XX

प्रधानाचार्य विद्यार्थी परिषद के साथ हुई एक मुलाकात में स्कूल में कुछ दीवार पत्रिका बनाने का निर्णय लिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मकता और कलात्मकता को उभारना है।

आमंत्रित है – लेख, कहानी, कविताएँ

शब्द सीमा – 300 से 400 शब्दों तक

जमा करने की तारीख – हर महीने की पहली तारीख

संपर्क करें – दिशा बजाज, XI A, संयोजक

सचिव

विद्यार्थी परिषद

7. **राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय द्वारा आयोजित चित्रकला कार्यशाला से संबंधित सूचना-पत्र।**

सूचना

विद्यार्थी
राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय
मंडी हाऊस, नई दिल्ली

30 मई, 20XX

सूचना–चित्रकला कार्यशाला

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली तीन विभिन्न आयु वर्ग समूहों (कनिष्ठ समूह 5-8 वर्ष, मध्य समूह 9-12 वर्ष तथा वरिष्ठ समूह 13-17 वर्ष) के प्रत्येक आयु समूह में विद्यार्थियों की चित्रकला कार्यशाला का आयोजन कर रहा है।

इच्छुक विद्यार्थी अपने नाम का पंजीकरण राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के स्वागत काउंटर पर प्रातः 10:30 बजे से सायं 4:30 बजे तक प्रति छात्र रु० 500/–पंजीकरण शुल्क अदा कर सकते हैं। पंजीकरण 21 और 22 मई 20XX को 'प्रथम आओ प्रथम आओ' के आधार पर किया जाएगा तथा प्रत्येक समूह में 50 विद्यार्थियों के पूरा होने के पश्चात बंद कर दिया जाएगा।

कार्यशाला का संचालन 10 दिनों के लिए 27 मई से 5 जून 20XX तक प्रातः 10:30 बजे से मध्याहन 1.00 बजे तक किया जाएगा।

कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को ड्राइंग बोर्ड, कागज़, रंग, ब्रुश, रंग-पट्टिका आदि सामग्री स्वयं लानी होगी।

अभिभावकों एवं भाग लेने वाले विद्यार्थियों को कार्यशाला संबंधी मामलों में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय के निर्णयों का पालन होगा।

निर्देशक

8. **गुमशुदा लड़की की तलाश के लिए अखबार में छपा सूचना-पत्र।**

सूचना

गुमशुदा लड़की की तलाश

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यह लड़की जिसका नाम रेशमा पुत्र अजायब खान निवासी 16140 शास्त्री अपार्टमेंट, दरियागंज, नई दिल्ली, उम्र सात साल, कद 3 फुट 3'', चेहरा-गोल, रंग-गोरा, शरीर सामान्य, आँखें-काली, बाल-काले व छोटे, लाल रंग की जैकेट और काले लाल रंग के प्रिंटेड पजामा और पैरों में हरे रंग की प्लास्टिक की हवाई चप्पल पहने हुए है जो दिनांक 02-07-20XX को हैप्पी स्कूल, दरियागंज क्षेत्र से लापता है।

यदि किसी भी व्यक्ति को इस गुमशुदा लड़की के बारे में कोई जानकारी या सुराग मिले तो निम्नलिखित को सूचित करने की कृपा करें–

ई मेल **abc @ cde. in. com** इंस्पेक्टर/ ए एच टी यू/ दरियागंज/ नई दिल्ली

फैक्स : 01123956738

दूरभाष : 9811100011

01123863421

9. **विद्यालय पत्रिका के लिए रचनाएँ आमंत्रित करते हुए एक सूचना-पत्र लिखिए।**

सूचना

विश्वभारती स्कूल,

द्वारका

15 जुलाई, 20XX

विद्यालय पत्रिका 'सरगम' जनवरी माह के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित की जानी है। सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के लिए वे स्वरचित लेख, कहानी, कविता, हास्य-व्यंग्य लेख, पहेलियाँ, चुटकुले आदि का योगदान मुझे अप्रैल 15, 20XX तक देने की कृपा करें। आपकी कृति सुंदर अक्षरों में लिखी हुई या टाईप की हुई हो।

सरिता शर्मा

कक्षा-XI 'बी'

संपादन–विद्यालय पत्रिका

10. **स्कूल विकास कमेटी में आप विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त हैं। कमेटी की बैठक अगले सप्ताह आने वाले नए वर्ष में शामिल की जाने वाली गतिविधियों के बारे में विचार-विमर्श करेगी। आप इस अवसर की तैयारी के लिए स्कूल के विद्यार्थियों से उनके द्वारा शामिल की जा सकने वाली गतिविधियों की सूची आमंत्रित करते हुए एक सूचना-पत्र तैयार करें।**

सूचना

प्रस्तावित कैलेंडर-2017-2018 के लिए

10 मई, 20XX

स्कूल विकास कमेटी प्रस्तावित कैलेंडर अगले सप्ताह मुख्य गतिविधियों को निर्धारित करेगी। निम्नलिखित विषयों पर आप सभी के सुझाव आमंत्रित हैं। आपके सुझाव मुझे 15 मई तक मिल जाने चाहिए।

- अंत: विद्यालय प्रतियोगिताएँ
- अंत: कक्षा/ वर्ग प्रतियोगिताएँ
- मेले
- विज्ञान या साहित्य मेला
- शिक्षण गतिविधियाँ
- पिकनिक/भ्रमण/ट्रेकिंग
- देश-विदेश सदभावना मेला
- अन्य गतिविधियाँ

रचना गर्ग/स्वाति मिश्रा
विद्यार्थियों के प्रतिनिधि

11. **आपका स्कूल (सेंट जेवियर स्कूल) गरीब बच्चों के सहायतार्थ एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन कर रहा है। शिक्षा मंत्री ने अपनी उपस्थिति से इस अवसर को सुशोभित करने की स्वीकृति प्रदान की है। आप स्कूल के हेड बॉय/हेड गर्ल हैं। स्कूल के विद्यार्थियों के लिए इस अवसर पर योगदान देने के लिए सूचना तैयार कीजिए।**

सूचना

सेंट जेवियर स्कूल

सांस्कृतिक संध्या

10 जनवरी, 20XX

हमारा स्कूल 15 मार्च, 20XX को गरीब बच्चों की सहायतार्थ एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन कर रहा है। इस सांस्कृतिक संध्या का आयोजन शाम 5 बजे स्कूल के सभागार में होगा। आप सभी से इस कार्यक्रम की सफलता के लिए सहयोग आमंत्रित है। इस अवसर की शोभा बढ़ाने के लिए हमारे शिक्षा मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित हैं। अपने रिश्तेदार व दोस्तों सहित आप आमंत्रित हैं।

टिकट–₹ 50

हेड बॉय

12. आप बाल भारती पब्लिक स्कूल, दिल्ली के हिंदी साहित्य परिषद के अध्यक्ष हैं। आपके स्कूल में होने वाली 'इंटर हाउस हिंदी प्रतियोगिता' के बारे में स्कूल के विद्यार्थियों को जानकारी देने के लिए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

सूचना

हिंदी साहित्य परिषद

बाल भारती पब्लिक स्कूल, दिल्ली

12 सितंबर, 20XX

अंत: हाउस प्रतियोगिता

हिंदी साहित्य परिषद निम्न प्रतियोगिताओं के लिए प्रतिभागियों का नाम आमंत्रित करती है जिसका आयोजन स्कूल सभागार में 2 अक्टूबर से किया जाएगा।

1. वाद-विवाद प्रतियोगिता 2 अक्टूबर, 20XX प्रात: 11 बजे
2. आशुतोष प्रतियोगिता 3 अक्टूबर, 20XX प्रात: 12 बजे
3. गीत-अभिनीत प्रतियोगिता 4 अक्टूबर, 20XX प्रात: 11 बजे

इन प्रतियोगिताओं के लिए प्रत्येक हाउस से दो-दो प्रतिभागी आमंत्रित हैं। प्रतिभागियों का नाम देने की अंतिम तिथि 27 अक्टूबर है।

देवेश शुक्ला
अध्यक्ष
हिंदी साहित्य परिषद

13. आपका स्कूल ग्रीष्मावकाश में दिल्ली से गोवा की यात्रा का आयोजन कर रहा है। इस यात्रा से संबंधित सूचना-पत्र लिखिए।

सूचना

लोटस वेली स्कूल, नई दिल्ली

15 अप्रैल, 20XX

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जा रहा हैं कि हमारा स्कूल दिल्ली से गोवा की यात्रा का आयोजन कर रहा है। यात्रा से संबंधित जानकारी इस प्रकार है–

दिनांक – 20 मई से 30 मई तक।
मूल्य – ₹ 12,000/–प्रति विद्यार्थी
योजना – प्रचलित स्थानों पर जाना, समुद्री यात्रा का आनंद, अन्य आकर्षक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ।

इच्छुक विद्यार्थी 20 अप्रैल तक अपने नाम कक्षा अध्यापिका को दे दें।

अध्यक्ष
विद्यार्थी परिषद

14. आपके स्कूल ने कश्मीर की सुंदर वादियों की सैर का आयोजन किया है। विद्यार्थियों तक इसकी जानकारी देने के लिए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

सूचना

सैर-सपाटा

विश्व भारती पब्लिक स्कूल, नोएडा

10 सितंबर, 20XX

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जा रहा है कि हमारा स्कूल आगामी छुट्टियों में कश्मीर की सैर का आयोजन कर रहा है। यात्रा से संबंधित जानकारी इस प्रकार है–

दिनांक : 20 अक्टूबर से 26 अक्टूबर

मूल्य : ₹ 10,000/– प्रति विद्यार्थी

योजना : कश्मीर की सुंदर वादियों की सैर, डल झील की सैर, शिकारे की सैर

इच्छुक विद्यार्थी 20 अप्रैल तक अपने नाम कक्षा अध्यापिका को दे दें।

अध्यक्ष

विद्यार्थी परिषद

15. 12वें अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन प्रगति मैदान में किया जा रहा है। अपने स्कूल के विद्यार्थियों को इसकी जानकारी देते हुए सूचना-पत्र लिखिए।

सूचना

अमर ज्योति विद्यालय, दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला

5 फरवरी, 20XX

12 वें अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन किया जा रहा है जिसकी जानकारी निम्न प्रकार है–

स्थान : प्रगति मैदान, हॉल नं० 14, 15, 16, 17

तारीख : 15 फरवरी से 25 फरवरी 20XX

समय : सुबह 11 बजे से शाम 7 बजे तक

प्रवेश शुल्क : विद्यार्थियों के लिए प्रवेश मुफ्त है

सभी विद्यार्थियों से इस पुस्तक मेले में जाने का अनुरोध है।

अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ जाने के लिए निम्नलिखित से संपर्क करें।

राशी गर्ग/मनीष लांबा

अध्यक्ष

साहित्य परिषद

16. इस ग्रीष्मावकाश में हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा रंगमंच कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उसी की जानकारी देते हुए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

सूचना

हिंदी अकादमी, दिल्ली

(कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग, दिल्ली सरकार)

18 मई 2013

इस ग्रीष्म प्रेमचंद हैं बच्चों के संग बाल रंगमंच कार्यशाला-20XX

अकादमी दिल्ली के विद्यार्थियों के 8 से 16 वर्ष तक के विद्यार्थियों की चहुँमुखी प्रतिभा के विकास हेतु दिल्ली के अकादमी कार्यालय में प्रात: 9 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक बाल रंगमंच कार्यशाला का आयोजन करने जा रही हैं। इस कार्यशाला में अकादमी द्वारा चयनित निर्देशकों व सह निर्देशकों द्वारा प्रेमचंद की बाल कहानियों का नाट्य रूपांतर कर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को एक महीने तक अभिनय कला का प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा नाट्य विद्या की बारीकियों से अवगत कराया जाएगा। 20 मई, 20XX से 19 जून, 20XX तक चलने वाली इन कार्यशालाओं में तैयार किए गए नाटकों का मंचन भी करवाया जाएगा।

कार्यशाला में भाग लेने वाले इच्छुक विद्यार्थी अकादमी के कार्यालय में 18-19 मई, 20XX को प्रात: 9 बजे से साक्षात्कार के लिए उपस्थित हों। साक्षात्कार से पूर्व विद्यार्थी और उनके अभिभावक को केंद्र में ही उपलब्ध एक प्रपत्र भरना होगा। जिसमें विद्यार्थी का नवीनतम पासपोर्ट साइज का फोटो, जन्म-तिथि, प्रमाण-पत्र और विद्यालय के पहचान-पत्र की सत्यापित छाया प्रति भी लगानी होगी। आयु की गणना 1 मई, 1997 से 30 अप्रैल, 2005 तक के आधार पर की जाएगी।

सचिव

(सोसायटी) वाराणसी

17. आप संस्कृति सर्वोदय समाज के सचिव हैं। अपनी सोसायटी के सदस्यों को आगामी बैठक (मीटिंग) की जानकारी देने के लिए एक सूचना-पत्र लिखिए।

सूचना

संस्कृति सर्वोदय समाज (सोसायटी),

वाराणसी

समाज के सभी सदस्यों को यह सूचित किया जा रहा है कि समाज की कुछ समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए एक बैठक रखी गई है।

दिनांक – 20 दिसंबर, 20XX

समय – शाम 6 बजे

स्थान – सामुदायिक केंद्र

सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे बैठक में उपस्थित होकर अपने अमूल्य विचारों से अनुगृहित करें।

डॉ० अंशुमन अस्थाना

सचिव

18. आपके मुहल्ले से एक लड़की को अगवा कर लिया गया है। उसी से संबंधित सूचना आपको अखबार में देनी है। विस्तृत जानकारी के साथ सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

सूचना

अगवा की तलाश

16 अगस्त, 20XX

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक लड़की जिसका नाम वसुधा पुत्री श्री रामविलास यादव, निवासी इलाहाबाद, 31, बारा खेड़ा नगर, सिविल लाइंस, इलाहाबाद। यह लड़की दिनांक 10 जुलाई, 20XX को थाना क्षेत्र सिविल लाइंस, इलाहाबाद से अगवा हो गई है जिसका ब्योरा इस प्रकार है—उम्र 15 वर्ष, कद 5 फुट 2 इंच, चेहरा लंबा, रंग गोरा, जिसने नीले रंग की जींस पैंट व क्रीम रंग की टॉप पहनी है। इस संदर्भ में प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 92/14 दिनांक 10 जुलाई, 20XX को थाना सिविल लाइंस, इलाहाबाद में दर्ज की गई है। पुलिस के भरसक प्रयास के बावजूद अभी तक इस लड़की का कोई पता नहीं चल पाया है।

जिस व्यक्ति के पास इस लड़की के बारे में कोई जानकारी हो तो कृपया निम्नांकित थाने पर सूचित करें।

थाना अध्यक्ष

थाना सिविल लाइंस, इलाहाबाद

फोन : 0532-23541111, 23841212

• अभ्यास-प्रश्न •

1. आपके विद्यालय ने पच्चीस वर्ष पूरे कर लिए हैं। इसी उपलक्ष्य में आपके स्कूल ने रजत जयंती समारोह मनाने का निश्चय किया है। आप विद्यार्थी परिषद के सचिव के रूप में अपने स्कूल के विद्यार्थियों से इस समारोह को सफल बनाने के लिए सहयोग की माँग करते हुए सूचना-पत्र लिखिए।
2. आपके विद्यालय में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन किया जाने वाला है। आप विद्यालय के खेल सचिव की पद पर हैं। अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को इस अवसर पर होने वाले भिन्न खेलों की जानकारी देते हुए तथा सहयोग की माँग करते हुए एक सूचना-पत्र लिखिए।
3. आपके विद्यालय में ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन हो रहा है। विद्यालय के हेड बॉय होने के नाते इस शिविर की सफलता का भार आप पर भी है। अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को इस अवसर पर अपना योगदान देने के लिए आमंत्रित करें।

4. आपकी कीमती घड़ी विद्यालय के प्रांगण में कहीं खो गई है। घड़ी की विस्तृत जानकारी देते हुए एक सूचना-पत्र लिखिए जिसे अपने विद्यालय की दीवार पत्रिका पर लगाना है।

5. आप अपने विद्यालय के N.S.S. कैंप के नेता हैं। अपने विद्यालय के सूचना बोर्ड के लिए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए जिसमें कैंप के लिए सहयोगियों को आमंत्रित किया गया हो।

6. आपको अपने विद्यालय के खेल-मैदान में से कुछ पैसे पड़े मिले हैं। अपने विद्यालय की दीवार पत्रिका पर लगाने के लिए इसी से संबंधित एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए जिसमें सही व्यक्ति को पैसों की पूर्ण जानकारी देकर पैसे ले जाने को लिखा हो।

7. विवेकानंद पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य के रूप में आप अपने विद्यालय में शुरू किए जाने वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रम की सूचना देने के लिए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए। यह सूचना-पत्र आम जनता के लिए दैनिक अखबार में दिया जाना है।

8. आपने अपना वॉलेट दिल्ली से मुंबई जा रही राजधानी ट्रेन में गलती से छोड़ दिया है। दैनिक अखबार में सूचना देने के लिए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए जिसमें वॉलेट की विस्तृत जानकारी तथा उसमें रखे सामान की सूची लिखी हो।

9. गांधी जयंती के अवसर पर खादी ग्रामोद्योग भवन, कनॉट प्लेस, चाँदनी चौक तथा ग्रीन पार्क की शाखा में 'सेल' लगाई जानी है। इसी से संबंधित एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए जिसको 'नवभारत टाइम्स' दैनिक समाचार-पत्र में दिया जाना है।

10. आप एक समाज-सेवक हैं। आप अपनी कॉलोनी में एक सफ़ाई अभियान का आयोजन करना चाह रहे हैं। अतः अपनी सोसायटी की दीवार पत्रिका पर लगाने के लिए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए जिसमें इस अभियान के कार्यक्रम का पूर्ण ब्योरा दिया गया हो।

11. आपके विद्यालय ने अंतर्विद्यालय खेल, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसी अवसर पर आप विद्यालय में एक छोटे से समारोह का आयोजन करना चाहते हैं। इसी से संबंधित एक सूचना-पत्र अपने विद्यालय की दीवार पत्रिका पर लगाने के लिए लिखिए।

12. आपसे अपना पेंसिल बॉक्स विद्यालय में खो गया है। अपने पेंसिल बॉक्स को वापस पाने के लिए एक सूचना-पत्र लिखिए जिसमें उस बॉक्स में रखी सभी वस्तुओं की जानकारी दी गई हो। पाने वाले को अपनी वस्तुओं को लौटाने की प्रार्थना करें।

13. साक्षरता अभियान के अंतर्गत आप अपने विद्यालय के विद्यार्थियों से सहयोग चाहते हैं। सभी से सहयोग की अपील करते हुए एक सूचना-पत्र लिखिए जिसमें उनसे इस अभियान में अपना योगदान देने के लिए है।

14. आपकी कक्षा अध्यापिका के निरीक्षण में आपकी कक्षा को सूरजकुंड के मेले में जाने की अनुमति प्रदान की है। अपने विद्यालय की दीवार पत्रिका के लिए इसी सैर-सपाटे विस्तृत जानकारी देते हुए एक सूचना-पत्र लिखिए।

15. बनारस सिल्क मिल्स, बनारस अपने द्वारा निर्मित सिल्क साड़ियाँ तथा ड्रेस मटीरियल की सेल लगाना चाह रहे हैं। दैनिक अखबार में इसी से संबंधित जानकारी देने के लिए एक सूचना-पत्र लिखिए।

❑❑